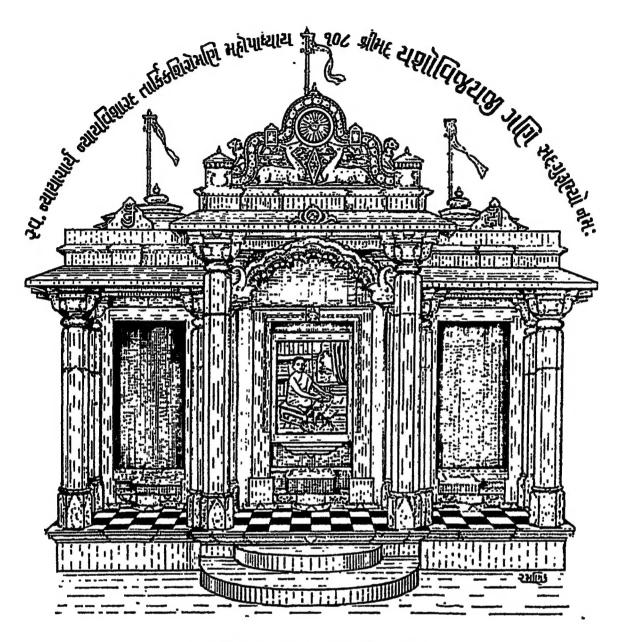
न्यायविशारद न्यायाचार्य महोपाघ्याय श्रीयशोविजय स्मृतियन्थ



संपादकः पू. ग्रुनिमवर श्रीयशोविजयजी





न्यायविशारद न्यायाचार्य महोपाध्याय श्रीयशोत्रिजय स्मृतियन्थ





न्यायविशास न्यायाचार्य महोपाच्याय श्रीयद्योचिजयस्मृतिग्रन्य

9011

公

প্রকার্যক :---

यद्योसारती प्रकाशन समिति है. रावपुरा महाजनगर्छा, घडोहरा.

쇼

5040

公

मृत्य रू. १२-८-०

公

Nyaya Visharad Nyayacharya, Mahopadhyaya Shri Yashovijay Smruti Granth,

Published by

Yashobharati Prakashan Samitee, Add. Raopura; Mahajana Gali; BARODA.

1957

Price

Rs. 12-8/-

公

प्रिन्टींग : नयन प्रि. प्रेय, नवप्रमात प्रेय तथा वसंत प्रि. प्रेय, सुहक वयन्ति दलाळ, घीकांटा, अमदाबाद. प्रकाशक : यथोमारती प्रकाशन समिति तर्फयो वक्षोल श्रीनागकुमार नाथामाई मकाती तथा दााह खाळचन्द् नंदलाळ वढोदरा.





॥ जयन्तु वीतरागाः ॥

आमुख

्याजे माननीय विद्वानोना करकमलमां "न्यायविद्यारद न्यायाचार्य महोपाच्याय श्रीयशोविजय स्मृतिग्रंथ" अपण करवामां आवे छे. एमां अनेक विद्वानोए विविध दृष्टिए आहेखेली महोपाच्याय श्री. यशोविजयजीना जीवनने स्पर्शती विविध प्रकारनी सामग्रीनो संग्रह थया छे. महोपाच्यायश्रीनुं जीवन सागर जेवुं गंभीर अने प्रेरणादायी जीवनसाधनाना महा तरंगोथी कमरातुं अने छलकातुं हतुं, एनो कांहक साक्षात्कार आपणने प्रस्तुत स्पृतिग्रंथना अवलोकनथी थइ शकरो. प्रस्तुत ग्रंथ मिवयमां उपाध्यायश्रीना विशिष्ट जीवनचरित्रना छेखकने मार्गदर्शक थइ पडशे. आ दृष्टिने छक्षमां राखी मारा प्रस्तुत आमुखमां हुं पण श्रीअपाध्यायजी महाराजना जीवनने समग्रपणे स्पर्शती केटलीक महत्त्वनी वीगतोनो उमेरों करं छुं.

जन्म, दीक्षा अने अध्ययन

महोपाच्याय श्रीयशोविजयजीनो जन्म क्या वर्षमां थयो हतो ? एनो उल्लेख आपणने मळतो नथी, पण श्रीकांतिविजयजीकृत सुजसवेलीभासमां "तेमनो जन्म कनोहा गाममां थयो हतो, मातानुं नाम सोमागदे अने पितानुं नाम नारायण शेठ हतुं. तेमनुं पोतानुं नाम जसवंत हतुं अने मोटाभाइनुं नाम पद्मसिंह हतुं. पंडित श्रीनयविजयजी महाराजना उपदेशथी बनेय भाइओए एकी साथे पाटणमां दीक्षा लीधी हती" एम जणान्धुं छे. दीक्षा लीधा पछी तेमनो अभ्यास कई रीते अने कोनी पासे थयो ! —ए तेमां जणान्धुं नथी; तेम छतां उपाच्यायश्रीना गुरु, पितामहगुरु अने प्रिपतामहगुरु विपे प्राचीन हस्तलिखित प्रंथोनी पुष्पिकाञ्योमां "तार्किक—शान्दिक—सिद्धान्तिकशिरोमणीयमान सुविहितपरम्परामधान महोपाध्याय श्रीकल्याणविजयगणि". आदि विशेषणो जोवामां आवे छे, ए उपरधी संमवतः अनुक अभ्यास तेमणे पोनाना गुरु प्रगुरु आदिना सानित्यमां ज क्यों हशे अने ए रीते उपाच्यायजी संस्कृत प्राइत व्याकरण, साहित्य, तर्कशाल, सेवान्तिक आदि विशयमां टीक टीक अगान्छ वच्या हशे अने परंगन थण हशे. परंगु दार्शनिक अने नक्यत्यायनुं विशिष्ट ज्ञान तो तेमणे बनारसमां गटाचार्यना सानित्यमां ज मेळ्युं हनुं. ए निर्विश्व हक्तीकत छे.

पांडिस्य

रुपाच्यायलीनुं पांडित्य मात्र प्रंथोना अध्ययन के वाचन मुधी ज मर्थादित न हतुं, तेमनुं पॉडिंग्य घर्णुं ऊंडुं धनं न्यापक हुतुं, ए आपणे तेमणे रचेला प्रंथराशि उपरथी समजी कल्पी शकीए छीए. संस्कृत—प्राकृत—गृबराती आदि अनेक मापाओ, छंद—अछंकार—काञ्य आदि साहित्यप्रेथी, जैन आगमो, कमवाद अने जैन तरवज्ञानना प्राणरूप अनेकान्तवाद उपर तेओश्रीनुं विखतोमुखी आधिपत्य हतुं. प्राचीन अने अर्वाचीन वन्नेय न्यायप्रणाष्ट्रिकाओने तेमणे एक सर्खा रीते पचावी हती. पोताना जीवनमां तेओ सर्वदेशीय विशाळ प्रथराशिनुं अवगाहन अने पान करी गया हता. तेओश्री समर्थ तत्विंतक अने प्रीढ प्रथकार हता. जैन संप्रदायमां रहेली खामीओनी 'तलस्पर्झी समीक्षा करनार पण हता. ए ज कारणसर तेमना युगमां तेओ साधु यतिवरी अने गृहस्थ श्रीसंघने बणा कडवा थइ पडचा हता, अने तेथी तेमनी तथा तेमना श्रंयराशिनी अक्षम्य उपेक्षा के अवज्ञा थई हती. तेम छतां तेमना पांहित्यने छाचे तेवी निर्भयता अने घीरता तेमनामां सदाय एक घारी रीत टकी रह्यां हतां. सापणने जाणीने व्याधर्य अने दुःख शाय तेवी बाबत छे के—तेओशीना अनेकानेक प्रयो ह्यामग बीजी नक्छ थया सिवाय ज रही गया है. जैन श्रीसंघना सीमाग्यनी ए खरेखर खामी हे के-तेने त्यां सिद्धसेन दिवाकर, यशोविजयोपाच्याय आदि जेवी ज्ञानस्वरूप विमृतिओ देष्य वनी छे. श्रीसिद्धसेन दिवाकरे तो विश्वतिद्वात्रिक्षिका प्रथमा अंतमां पोता माटे "द्वेप खेतपट" एवं विशेषण पण आख़े छे, ए एक विचारवा जेवी वस्तु छे, पूनाना मांडारकर इन्स्टीरज्ञुटना संप्रहृनी विंशति-ह्यात्रिंशिकानी प्राचीन ताहपत्रीय प्रतिमां "द्वेट्य म्वेतपर" ए प्राचीन विशेषण आजे पण सचवाएछं छे. आवी ज फरियाद आचार्य श्रीहरिभद्र, आचार्य शीछांक, श्रीयशोविजयोपाच्याय आदिए पण पोताना प्रंथोमां करी छे.

ग्रंथनिर्माण

उपाध्यायश्रीए पोताना जीवनमां विशास ग्रंथरिशनुं निर्माण क्युँ हुतुं. सनेक विषयोने स्पर्शतो तेमनो ए ग्रंथरिश हे. तेओश्री प्राचीन—अर्वाचीन बनेय न्यायप्रणासीओमां पारंगत होना स्तां तेमणे पोताना ग्रंथोमां नन्यन्यायनी सरिणने न अपनावी हो. गमे तेवी नानो के मोटो, दार्शनिक के स्नागिक, कमेवादिवपयक के सनेकान्तवादिवपयक, स्तुति के स्तोत्र आदि गमे ते विषयनो ग्रंथ होय, तेमां उपाध्यायजीनुं नैयायिकपणुं क्रस्त्रया सिवाय क्यारिय रह्युं नथी. एकना एक विषयने तेओ गमे तेटली वार चर्चे तो पण तेमां नवीनता न नोवामां सावे, ए उपाध्यायश्रीना चितन सने प्रतिपादननी महत्ता अनं विशेषता हो. उपाध्यायश्रीए पोताना जीवनमां केटला ग्रंथो स्था हता है तेनी निश्चित संख्या क्यांय नोंधाई नथी, तेम स्तां तेमणे पोते पोताना ग्रंथोमां नाते व ने ने ग्रंथोनां नामोनो स्क्रेस क्यों हो, ते हारा साणवा मळे हे के— आने सापणे तेमना संख्यावंघ ग्रंथोना दर्शनथी न

नहिं, नामश्रवणथी पण वंचित छीए. जेम जेम तेमना अलम्य प्रथोनी प्राप्ति थती जाय छे तेम तेम तेमना नवा नवा अलम्य प्रंथोनां नामो मळतां ज जाय छे. हेल्हां वर्षोमां अणधारी रीते तेमना **अ**प्राप्य जे प्रंथो प्राप्त थया, ते द्वारा अलभ्य प्रंथोनां नामो जाणवामां पण आव्यां छे. एटले आपणे निरंतर अप्रमत्त रही आपणा स्थान—स्थानना नाना—मोटा ग्रंथभंडोरोमां तेओश्रीना अलम्य ग्रंथोने काळजीपूर्वेक शोधवा-तपासवाना ज रहे छे. जो शीणवट पूर्वक आपणा प्राचीन ज्ञानभंडारोने तपासीझं तो आशा छे के - हजु पण आपणे तेमना अनेक प्रंथो मेळवी शकीशुं. छेल्छां वर्षोमां ज्ञान-भंडारना ख़ंतभर्या अवलोकनने प्रतापे आपणे नीचे मुजवना सत्तर प्रंथो मेळवी शक्या छीए-? अरपृशद्गितवाद अपूर्णनी पूर्णता २ आत्मख्याति ३ आपंभीयचरितमहाकाव्य अपूर्ण ४ काव्यप्रकाश टीका खंडित, ५ कृपदृष्टान्तविदादीकरण अपूर्णनी पूर्णता ६ प्रमेयमाला अपूर्ण ७ वादमाला ८ वादमाला अपूर्ण ९ विजयप्रभस्रि क्षामणक विज्ञिन्तपत्र १० विषयतावाद ११ वैराग्यरित किंचिदपूर्ण १२ स्याद्वादरहस्य (छघु) १३ स्याद्वादरहस्य स्याद्वादरहस्य (वृहद्) अपूर्ण १५ सिद्धान्तमंजरी शब्दखंड टीका १६ योगविन्दुअवचृरि १७ योगदृष्टिसंपुचय अवचृरि अपूर्ण. भा सत्तर प्रथो पैकी नव प्रंथो अधूरा ज मळ्या छे, वे प्रंथो के जे पहेलां अपूर्ण मळ्या हता ते पूर्ण थया छे अने बाकीना छ प्रथो नवा संपूर्ण मळ्या छे. आ प्रथो सूरिसम्राट् श्रीविजयनेमिस्रीघरजी म०, श्रीविजयउदयस्रीश्वरजी म०, श्रीविजयमनोहरस्रिजी म०, पं० श्रीरमणीकविजयजी अने श्रीयशोविजयजी म० थादिना परिश्रमपूर्वकना ज्ञानभंडारोना अवलोकनथी प्राप्त थया हे. उपरोक्त प्रंथीना उपलक्ष अवलोकनथी श्रीपृज्यलेख, सप्तभंगीतरंगिणी न्यायवादार्थ आदि अलम्य प्रंथोनां नामो नवां पण जाणवा मळ्यां छे. श्रीपूज्यलेख ए कोई सामान्य विज्ञान्तलेख नथी, परंतु ए एक दार्शनिक पदार्थोंनी चर्चा करतो प्राइ.त भाषानो पत्ररूप प्रंथ ज हतो. सन्तर्भगीतरंगिणी ए नामनो दिगंबराचार्यकृत प्रंथ होवानी जाण तो भाषणने हती ज, परंतु श्रीउपाध्यायजी महाराजे पण ए नामनो ग्रंथ रच्यो हतो ए जाणवामां आन्युं होई हवे दरेक विद्वानीए सप्तभंगीतरंगिणी नामना प्रथमी प्रति कोई पण भंडारमां होय तो तेने चोकसाइथी तपासवी जोइए. उपाच्यायश्रीए न्याय-विशार्द थया पछी सो प्रंथोनी रचना करी त्यारे तेमने न्यायाचार्य तरीके संबोधवामां आव्या हता. ए सो प्रंथो कया ! तेना कशो पत्तो नथी. परंतु तिङन्चयोक्ति निपयतानाद कान्यमकाशटीका अलैकार-चुडामणिटीका बगेरे साहित्यिक प्रथो न होइ शके ! ए विचारवा जेवो प्रश्न छे. एज प्रमाणे रहस्य-पदांकित १०८ अंथो रचवानो तेमनो संकल्प हतो, ते पैकीना केटला प्रंथो तेमणे रन्या हता अने पोताना ए संकल्पने तेओ सर्वीशे पार पाडी शक्या हता के नहिं!-ए बात पण अञ्चात ज छे. आज मधीमां **छापणे तेमना रहस्यपदांत प्रमारहस्य, नयरहस्य, स्याद्वादरहस्य, भापारहस्य अने उपदेशारहस्य ए.** पांच प्रंथीनां नामीने जाणी शक्या छीए. आ सिवाय बीजा कोई गहरवपदांत प्रंथना नामनी उन्हेस आपणने तेमना कोई प्रथमांथी हुजी सुधी मळ्यो नधी. एटडे आ विषयमां केम बन्धुं हुई। ए एंकारपद

वस्तु छे. आटली वात संस्कृत-प्राकृत प्रंथो विषे थई. गृतराती मापामां एण द्रव्यगुणपर्यायरास, सन्यक्तवन्तुएपदी-पट्स्थानकरास, जंब्स्वामिरास, श्रीपालरास जेवी माटी कृतिओ अने वीजी मध्यम अने छन्न शाली मध्यानकरास, जंब्स्वामिरास, श्रीपालरास जेवी माटी कृतिओ अने वीजी मध्यम अने छन्न शालाकराती कृतिओ उपर वालाववोषो - गृतराती अनुवादो एण रच्या छे. ए रचनाओ जोतां आपणुं छद्य एक वात तरफ खास जाय छे क—नेम तेओश्रीए दार्शनिक आदि विषयोने संस्कृत—प्राकृत मापामां आलेख्या छे तेज रीते तेमणे संस्कृत—प्राकृत मापाथी अपरिचित तस्वज्ञानरिसक महानुमावोनी जिज्ञासा पूरवा ए विषयोने गृत्वराती मापामां पण कृतायों छे. दार्शनिक, तास्विक, चार्चिक आदि गंभीर विषयोने छोक्रभोग्य मापामां कृतारवा माटेनी विरल्जनमुख्य कुश्चलता उपाध्यायश्रीमां केवी हती! अने तेओश्री पोताना वक्तव्यने परिमित शब्दोमां गय के कवितामां केवी रीते आलेखी शकता हता! तेनुं मान आपणने तेमनी दृष्यगुणपर्यायरास वालाववोष सहित, सम्यक्तवन्तुप्यदिका वालाववोष सहित, श्रीपालगस चतुर्थलंड, विचारविंदु, तस्वार्थ वालाववोष, ज्ञानसार वालाववोष, अध्यानमनतपरीक्षा वालाववोष आदि कृतिओ द्वारा थाय छे. आले तेओश्रीनी आवी मापावद नानी—मोटी रचनाओ एकंदर पचास उपरांत प्राप्त थाय छे. तेमना प्रथराद्यानी संपूर्ण यादी स्वृतिप्रथना संपादक विद्वान सृतिवेर आ प्रथने छोते आपा छे.

उपाध्यायजीनी स्वहस्त छिखित प्रतिओ

उपाध्यायनी महाराजे ने ने अंथो रच्या हता, ते वघायनी निह, तो पण नोवपात्र गणी दाकाय एटडी तेमणे रचेडा प्रंथोनी निश्चितरूपे मानी शकाय तेवी स्वहस्तिङ्खित प्रथमाद्रशृद्धप प्रतिको आचे आपणा ज्ञानमैंडारोमां जोवा मळे छे. — १ अस्पृशहतिवाद्नुं प्रथम पत्र २ आर्षभीय महाकाव्य अपूर्ण ३ तिङ्चयोक्ति अपूर्ण ४ निशासुक्तिप्रकरण ५ विजयप्रभस्रिक्षामणक विज्ञन्तिपत्र ६ सिङान्तमंजरी शन्दसंड टीका अपूर्ण ७ जंबृस्वामिरास, आ सात प्रतिओ मारा पोताना संप्रहमां छे. १ आरायक-विरावकचतुर्मेगी स्वोपज्ञ टीकामह पाटण तपागच्छना मंडारमां छे. १ अञ्चालमसार २ प्रमेयमाछा अपूर्ण ३ द्रव्यगुणपर्यायरास वालाववोच, १ धर्मपरीका स्वीपज्ञ टीकामां उमरण, व्या चार प्रैयो अमदाबाद पगर्थाञ्चाना—सैवेगीडपाश्रयना ज्ञानमंडारमां छे. १ आत्मख्याति २ गुरुतत्वविनिश्चय प्रंथनो अंतिममाग ३ नयरहस्य ८ माणरहस्य ५ वादमाला ६ चादमाला अपूर्ण ७ स्यादादरहस्य ८ मार्गपरिद्यदि, ९ वैराग्यकस्पछता १० योगविन्दुअवचूरि ११ योगदृष्टिसमुञ्चयअवचृरि अर्ग १२ स्याद्रादरहस्य (बृहद्) अपूर्ण. आ वार प्रतिओ अमदावाद देवशाना पाडाना ज्ञानमंडारमां छे. १ तत्त्वार्थवृत्ति २ वैराग्यरति किचिदपूर्ण ३ स्तोत्रत्रिक १ स्वादादिसिद्धिप्रकरण-टीका त्रूटक अपूर्ण, या चार प्रथो अमदावाद हेलाना ज्ञानमंडारमां छे. या उपरांत मारी घारणा प्रमाणे डेळाना मंहारमां १ टपदेशरहस्य २ कर्मप्रकृतिहत्ति ३ वीरस्तुति न्यायखंडखाद्य स्वीपज्ञ वृत्तिसह आदि प्रंथो पण उपाच्यायजी महाराजना स्वहन्तिलितिज होना लोहए. न्यायालोकनी प्रति सुरत जैनानंदपुन्तकाष्ठयमां .छे. योगर्विधिकावृत्तिनी प्रति सावनगर श्रीआत्मानंद जैन समामां

रहेला भक्तिविजयजी म०ना ज्ञानभंडारमां छे. १ विपयतावाद अने २ स्तोत्रावली—स्तोत्रिक, आ वे प्रंथो खंभात श्रीजैनशाळामांना श्रीनीतिविजयजी महाराजना ज्ञानभंडारमां छे. अप्टसहस्री पूना भांडारकर इन्स्टीटचुटमां छे. १ काज्यप्रकाशटीका त्रूटक अपूर्ण २ वादमाला, आदि प्रंथो पूज्य सूरिसम्राट् श्रीविजयनेमिस्रीखरजी म०ना संप्रहमां छे. मानविजयोपाध्याय कृत धर्मसंप्रहनी संशोधित अने परिवर्षित करेली प्रति पूज्यपाद आचार्य श्रीसिद्धस्रीखरजी म०ना विद्याशाळाना ज्ञानभंडारमां छे. आ सिवाय तेमना हरताक्षरनी म्रान्ति करता अनेक प्रंथो जोवामां आज्या छे ते छतां जेने विपे चोक्कस लात्री नथी थई तेनां नामोने अहीं जतां कर्यी छे.

खरहाओ, जे आजे आपणा सामें विद्यशन छे, ए जोतां आपणने प्रतीति थाय छे के—तेमनी तलस्पर्शी विचारधाराओना प्रवाहो केटला अविच्छिल नेगथी वहेता हता? साथे साथे तेमनुं प्रतिमापूर्ण पांडित्य, मापा, विषय अने विचारो उपरनुं प्रमुख एटलां आश्चर्यजनक हतां के तेमनी कलम अटक्या विना दोडी जती था खरहाओमां देखाय छे. आने समये तेओ शाही कलम कागळ के लिपिना जाडा—पातळापणा आदिनो विचार करवा जराय थोभता नहोता. तेमनी रचनाओना आ खरहाओमां चेर—मूस पण घणी ओछी जोवामां आने छे. परंतु स्याहादरहस्यना खरहामां विषयनी गंभीरताने लीधे के गमे ते कारणे घणीज चेर—मूस शई छे. आवा मूळ खरहाओने "प्रते" "वीचू" ए नामोधी ओळखता हता. भापारहस्य प्रंथनी प्रतिमां "भापारहस्यवीचू" एम लखेलुं छे. वैराग्यकल्पलतामां "वैगग्यकल्पलतापरडो" एम लखेलुं छे. विशायकल्पलतामां "वैगग्यकल्पलतापरडो" एम लखेलुं छे. विशायकल्पलतामां अविक्ता आठो साथाल छे.

आ उपरांत उपाध्यायश्री पोता माटे काम पडे अन्यकृत प्रंथोनी नक्को पण करी छेता हता. मंडारोमां आवी केटलीक प्रतिको जोवामां पण आवी छे. भावनगरना ज्ञानभंडारमां हरिभद्रसृरिकृत अष्टकृती प्रति तेओश्रीना हरताक्षरमां छे. पगथीआना उपाश्रयना ज्ञानभंडारमां विश्वतिहार्शिशकानी प्रति श्रीनयविजयजी - श्रीयशोविजयजी गुरु - शिष्ये मळीने छली छे. देवशाना पाडाना ज्ञानभंडारमांथी रुद्रनाथ वाचरपित भहाचार्यकृत वादपिर छेदनी प्रति तेओश्रीण जाते ज छलेली मळी आवी छे. पं. श्रीमहेन्द्रविमलगणिना देवशाना पाडाना ज्ञानभंडारमांथी मळेली दादशारनयचक उपरनी श्रीसिह्वादि गणि क्षमाश्रमण विरचित टीकानी प्रतिनी नक्छ तेमना तेमज तेमना साथीओना हाथे छतायेली छे. आ प्रति तो जैनशासन अने वाङ्मयना शृंगारक्षय गणाय. आ प्रतिनो परिनय प्रस्तुत न्मृतिग्रंथमां जुदो छापयामां आव्यो छे. आ बधुं जोतां अने विचारतां तेशोश्रीना अप्रमत्तभाव अने सततोधोगिपणा माटे समर्थ योगिओने पण मान जागे तेदी दात छे. व्यवासनत जावन महापुरपो पण पोताना जीवननी समग्र भावनाओने क्यार्य परिपूर्ण करीने विक्षमांथी विदाय छे. एम वनतुं ज नथी. अने तेथी ज आजे तेमना प्रमेयमाछा, कर्मग्रहात अवपृति, आप्रीय चित्र महा महाप्रत्य

आदि प्रेथो रचातां रचातां अधून गई। नयेश्वाच बोबामां आवे हे. संसारमां शुनशुनान्तरे क्योरक क्योरक व आवी विशिष्टझानसंग्रन संस्कारी विश्वतिको चनतना प्राणीकोना पुण्यराशियी आकर्षाईने अवनार हे हे. जेमना अवतार्थी विश्व क्षतक्क्य थड़ जाय हे. अने ए विश्वतिको विकने अपूर्व वारसी अपन क्रांन विदाय थड़ जाय हे.

द्यानमंदार्

उपाय्यायज्ञी नहाराज्ञतो एक ज्ञात्मेहार — एउटे विकिष्ट पुस्तकोतो संप्रह हतो. ए क्रये स्थळे हतो तेती नाहिती आपगते नळ्डी नथी, पग ते चन्र विकिष्ट होतो जेह्रए — एसं र्यका नथी. एसतो ए मेहार आजे बीलगई गयो छे. ए पग एक आध्येती वात छे के तेनना पोताना प्रेशोनी पोताना हायती नक्रको पण जुदे जुदे स्थळे विलगएडी जोवानां आवे छे. कचन दर्शके मानी सावरनतीमां पवरावद्या माटे छह चवाता पानाना संप्रहमांथी योगविधिकाहित कादि चेवा प्रेसो मळी आव्या छे. आन केन थ्युं हेहो ! — ए एक अगऊककी समस्या च छे. आन छतां तेननो पुस्तकसंप्रह — ज्ञानमेहार हती, ए आरणे देवज्ञाना पाडाना संदारनां अळेकारचूहानित, उनादिगनिवदरण आदि प्रेसोने अते नळ्डा "संवत्र १७४५ वर्षे चेत्र शृदि ५ श्रीयशोधिकयगणिचित्कोरो इयं प्रतिः पं० श्रीपानिवत्वयगणिना निज्ञानुरूणां चित्कोरो मुक्ता पुष्पार्थम् ॥ " इत्यादि टल्केलो हारा निविद रीते जानी शकीए छीए.

गुद-शिष्यनुं बात्मुख्य अने मिक

महोपाब्यय श्रीतयिववयं महागव अने श्रीयशोविवयं महागव — आ गुरुशिय्यनी कोही, मु अनेद्रमावतुं एक शुद्ध प्रतिक व हतुं. श्रीतयिववयं महागां गोताना प्रामिय कितृयोग्य वालिश्यां प्रेयां केम सहा पाल्या है. दीशाना श्रम्थी कार्त्सी चीवतम्य तेओए तेमनी विता करी हे अने सहकार श्रायो है. ममादवायी हरूने श्रीयरक्ती कर्म्या कर्म सुद्धांनी तेमणे श्रीयशोविवयं की महागवने वासक्यमयों साथ आयो है. पोताना शिव्यने अन्यास क्रमवन माटे तेओश्रीए कार्यानो प्रवास सेवयों हतो, अने साथ रही देखे महायता करी हती. श्रीयशोविवयोगाध्याय के प्रेयो एवे तेनी विशिष्ट शुद्ध नक्रके पम तेओ वांत करता हता. हादशास्त्रयक्त, सिद्धेनीया हार्गिशिका विगेष श्रीती शुद्ध प्रामाणिक नक्रको करवामां पम तेमनी सहाय हती. वीग्यक्रव्यक्ता, नयगृहस्य, प्रतिमाशत्रय अदि ग्रीती तेओग बर्खेशी नक्षको आवे पम वोवा मले है. श्रीयशोविवयं महागवमाटे श्रययन श्रीत्मी त्ययोगी दग्यायं श्रीती तेमणे नक्षको करी हती. सामुद्धायिक विषम प्रसेगीनो पम तेशीशी प्रेताना शिव्यना सहकार क्रम वास्त्रयश्ची राया नशी. आवा गुणमंद्धार परस्तुर प्रयो श्रीयशोविवयंनी मशी पम अन्तर्थ श्रीयशोविवयंनी मशी पम अन्तर्थ श्रीयशोविवयंनी मशी पम अन्तर्थ श्रीयशोविवयंनी मशी पम श्रीयशोविवयंनी मशी पम अन्तर्थ श्रीयशोविवयंनी मशी पम अन्तर्थ श्रीयशोविवयंनी मशी पम अन्तर्थ श्रीयशोविवयंनी मशी पम अन्तर्थ श्रीयशोविवयंनी मशी पन्तर्थ अर्थ श्रीयशोविवयंनी सहस्तर्थ श्रीयशोविवयंनी स्थानी वीवर्य श्रीयशोविवयंनी स्थानी वीवर्य श्रीयशोविवयंनी स्थानी वीवर्य श्रीयशोविवयंनी स्थानी वीवर्य श्रीय श्रीयशोविवयंनी स्थानी वीवर्य श्रीयशोविवयंनी स्थानी वीवर्य श्रीयशोविवयंनी वीवर्य श्रीयशोविवयंनी स्थानी स्थानी है. श्रीय ग्रीयर्यो वीवर्यो श्रीयर्थी वीवर्यो वीवर्यो स्थानी है. श्रीयर्य श्रीयर्थी वीवर्यो वीवर्यो वीवर्यो स्थानी है. श्रीयर्थी श्रीयर्थी वीवर्यो वीवर्यो वीवर्या हीव्य श्रीयर्थी है. श्रीय ग्रीयर्थी वीवर्याची वीवर्यो वीवर्यो स्था स्थानी है. श्रीय श्रीयर्थी श्रीयर्थी वीवर्याची वीवर्याची हीवर्याची है. श्रीयर्थी श्रीयर्थी वीवर्याची वीवर्याची स्थाय्यो है. श्रीयर्थी हीवर्याची हीवर्याची हीवर्याची हीवर्याची है. श्रीयर्थी हीवर्याची हीवर्याची हीवर्याची हीवर्याची हीवर्यो हीवर्याची हीवर्याची

रनेह, वात्सल्य अने मिक्तनी कर्मिओने अनुभवी केटली मलकाती हुशे ए तो तेआ जाते. के जानी ज जाणी शके.

उपाध्यायजीनी अनेकरूपता

मानवरवभाव सामान्य रीते हंमेशां संयोगवशवर्ता ज छे. अने प्रसंग आवतां तेमां विविध भावो जागी ऊठे छे. एटले उपाध्यायजीना प्रंथी अने तेमना जीवनप्रसंगीनो आपणे विचार करीए तो तेमनामां अनेक भावो जोवामां आवे छे. तेओश्री एकांत गुरुभक्त हता. एज कारणसर तेमणे गुरुतत्वविनिध्ययना प्रारंभमां " अम्हारिसा वि मुक्ता पंतीप पंडियाण पविसंति । अणां गुरुभत्तीए कि विल-सियमन्भुयं इत्तो ? ॥ " एम गायुं छे. पोताना विचारो माटे तेओ भडग अने निर्भय हता. न्यायालोकना अंतमां तेमणे ''अस्मादशां प्रमादग्रस्तानां चरणकरणहीनानाम् । अञ्घी पोत इवेह मवचनरागः भुभोषायः॥ " एम छखी पोतानी वास्तविक अपूर्णताने व्यक्त करी हे. कचारेक पोतानी प्रनथ रचनाना विषयमां विषम वातावरणनो अनुभव थतां तेमना अंतरमांथी "अनुग्रहत एव नः कृतिरियं सतां शोभते, खल्पलपितैस्तु नो कमपि दोपमीक्षामहे। " तेगन "ग्रन्थेभ्यः सुकरो ग्रन्थो मूढा इत्यवजानते । " इत्यादि कटु अने हृद्यनो उकळाट दर्शावती उक्तिओ पण नीकळी पढी छे. प्रतिमाशतकनी टीकामां "एतेन छुम्पाकानां मुखे मपीकृर्चको दत्तः।" ए प्रमाणे सांप्रदायिक कठोरताने रज् करता पण तेओ जोवामां आवे छे. दारीनिक पदार्थनुं विवेचन करतां दार्शनिकोनी अहंता पण जोवा मळे छे. सीमंधरजिनविनतिस्तवन आदिमां साधुजीवन अन गृहस्थजीवननी सदोवता जोई ते उपर कटाक्ष करता पण तेथो देखाय छे. अने ज्ञानसार, अध्यात्मसार, द्वात्रिंशद्द्वात्रिंशिका अने सुजसविलासमाना आध्यात्मिक पदोमां तेओ मध्यस्थमान, असाम्प्रदायिकता अने सगरसमां झीलता दृष्टिगोचर थाय हे. द्वात्रिशदृहात्रिशिकानी २० मी द्वात्रिशिकामां "मदृष्-भिरुक्तम् " एम छलीने तेओश्रीए दिगंबराचार्यकृत प्रन्थनी साक्षी आप्या पछी आ प्रमाणे जणान्युं छे- " न च एतद्वाथाकर्तुर्दिगम्बरत्वेन महर्पित्वाभिधानं न निरवधम् ' इति मृद्धिया शंकनीयम्, सत्यार्थकथनगुणेन व्यासादीनामपि इरिभट्टाचौर्यस्तथाभिधानादिति" अर्थात " आ गाथाना कर्ता भाचार्य दिगंबर होवाधी तेमने गहर्षि तरीके उखवुं योग्य नथी- एवी कोइए शंका न करवी. कारण के तात्विक वस्तुने कहेवाना गुणने प्यानमां लई श्रीहरिभदाचार्ये व्यास क्षाहिने पण महर्षि तरीके जणान्या है. " आ प्रमाणे तेओश्री विविधभावीर्था भरपूर देखावा छतां समप्रभावे विचार करतां तेको तारिवक ज्ञान अने शुद्धजीवनसाधनाना पिपासु साधक महापुरुष हता.

मुजसवेलीभास

श्रीयशोविजयजी मल्ना जीवनचरित्रने लगती ट्रंक माहिती आपणने मुनि श्रीकांतिविजयजी (अनुमान महोपाध्याय श्रीवनयविजयजीना गुरुभाई)ए एचेडी चार दाळ वर्ने ५२ गाथा प्रमाण सुजसवेलीभासगांशी मळी आदे हो. जेनो ट्रंक सार आ प्रमाणे हो.

" गूबरातमां इतोडं नाम गाम, नागवण नाने व्यापारी अने तेनी परनी सोमागरं, तेनने परमसिंह कते बसवेत नामे पुत्रो हता. सं. १६८८ मां श्रीनयिक्तयनी पंडिते हुणोरमां बोमासुं इर्यु. त्यांथी क्रनोडं गया. एमना उपदेशयी वसवेते कर्महरूपुर पाटममां श्रीनयिक्तयनी पांचे देखा द्वांथी. नान बरोहितय गर्ख्युं. मोटामाई परमसिंह पम सामे व देखा द्वांवी क्रने नाम पश्चविक्तय राख्युं. बरोविक्तयनीए [गुरपांचे] अम्यास क्रयों. दि० सं० १६९६मां अन्यावत्मां संवस्तय काट क्रव्यान क्रयी. एमनी प्रतिमायी प्रसन्न थई शा० वननी मृग नामण शेंट श्रीनयिक्तयनी म०ने क्र्युं के—आ सामु (बरोविक्तयनी) श्रणास्थोग्य हे, ममसे तो हेमाचार्यनी क्रिया श्रीरणार्थी यरोविक्तयनीए क्राशीवर्ड रूप दर्शनने। अन्यास क्रयों क्रिने न्यायदिशाख थया. बननी मृगप बरोविक्रयनीना पटन माटे वे ह्नार सोनामहोत्तुं सर्च क्रयुं. मर्गने पाण अमदाबाद आव्या. श्रीसेचे तेननो सत्कार क्रयों. नागोरीकाळानों क्रव्यं. महवतकाननी सना समस्य क्रवार अव्यान क्रयी. एसी प्रसन्न यई बरोविक्यनीन स्थायाय पर्वी क्रापता माटे नहवतकाने बाते व श्रीविक्तयदेवस्तिन विक्ति क्रयों क्रने सं. १७१८ मां तेननी स्थाय पर्वी श्रीर देननी व्याव्याय पर्वी श्रीर तेननी स्थाय क्र्ये क्रये वर्षेत्र क्रवेति क्रये क्रये संत हमानी स्थाय क्रवेति स्थाय पर्वी क्रया पर्वी श्रीर तेननी वर्षेत्र कर्मे स्थाय क्रया स्थाय पर्वी श्रीर तेननी स्थाय क्रये क्रये क्रये संत संग्रीवासी क्रया. स्थाय पर्वी प्रमुख पर्वी क्रये क्रये संत स्थाया स्थाय पर्वी प्रमुख पर्वी क्रये क्रये क्रये स्थाय क्रये संत त्राव्याय पर्वी क्रये वर्षेत्र क्रये क्रये क्रये क्रये स्थाय स्थाय स्थाय पर्वी प्रमुख क्रये श्रीर क्रये हें.

उपाध्यायजीना समझाछीन (१) मुनिको सुनसंबर्छामासमा आटर्छा विगत ग्लू क्र्रा हे. परंतु आजे आपणा सामे बीजा पुरावाओं विद्यमान हे ते जोडां मासमांना संबद्धो गने ते कारणे विसंवदित देरे हे.

- १. मासनां ' उपाध्यायश्री इनोहानां चन्न्या हना. ' ए इने माठापितानां नाम आपवानां आव्यां हे, पण चन्मसंदन अने दीक्षासमये उपाध्यायश्रीनी वय केटकी हती! ते विषेमासकार मीन हे.
- २. पासकार उपाध्यायश्रीनी दीकानुं वर्ष सं. १६८९ (१) समाक्षुं हे. एरंतु काले बाएणा साने श्रीतयविवयमी नहाराजे श्रीवसदिवयमी म० माटे सं. १६६३ मां क्खेल मेहपर्वतनी विवयर, तेमव श्रीययोदिवयमी महाराजे सं. १६६५ मां क्खेल हैमवातुषाटनी प्रति कने सं. १६६९ मां छखेल उन्नतपुरन्तवन कादि विधनान हे. ए स्थितिमां मासकार आंद्रज्ञ दीहासंदरनो मेळ केम वेसे १ ए एक कोयदा देशी दीना हे.
- ३. सं. १६९९मां अम्यास्यासमां आठ अवदान ऋषी पछी यद्योदिसयमी त्रीनप्रत्योगा, सास ऋरीनव्यत्यायना अन्यास माटे झाठी सवातुं मासको समाव्हें है. ज्योर न्यादातृहस्य सेवा समर्थ प्रत्यानी रचना सं. १७०१मां ऋपद्याम पासना आंदरेही गाममां क्रिये हे अने ते पहेली प्रमारहस्य, श्रीर्व्यकेस, बादमाना आदि संस्थानेव समर्थ दार्थीनक आदि प्रत्योनी रचना तेजी करी चून्या है. एउटे ए प्रश्न समी याद है के तेजी ऋछी पहांच्या क्योर है अव्ययन केटने समय कर्तु है अने

न्यायाचार्यपद मेळववा पहेलां जे सो प्रन्थोनी रचना करी ते क्यारे करी ! आ वधी विचार करतां १६९९ मां काशीए जवुं असंगत ज ठरे छे.

४ स्वर्गवासने लगतुं अंतिम चोमामुं उपाध्यायजीए डमोइमां कर्युं, परंतु एनुं वर्ष भासकारे १७४३ आप्युं छे ए विचारणीय छे. कारण के उपाध्यायश्रीए प्रतिक्रमणहेतुगर्भस्वाध्यायगां

" मुरति चोमासु रही रे, वाचक जस करि जोडी, वइ० ।

युग युग मुनि विधु वत्सरइ रे, देयो मंगल कोडी वह० ॥६॥ "

ए प्रमाणे १७४४ नुं चातुर्मास सुरतमां कर्यानुं जणात्र्युं छे. अगियारअंगनी सजझायोने अंते पण "युग युग मुनि विधु वच्छर्इ रे, श्री जसविजय उवझाय, टोड०। मुरत चोमामु रहो रे, कीथो ए सुपसाय, टो०॥६॥ " आ रीते सं० १७४४ नुं चातुर्मास मुरतमां रह्यानुं जणान्युं छे. केटलाकनुं मानवुं छे के 'युग ' शब्दथी वे संख्या छई '१७२२ वर्ष ' मानवुं, पण 'युग ' शब्दथी मुख्यपणे चार संख्या छेवाय छे. ए दशामां अहीं वे संख्या छेवी ए एकाएक घटमान करवुं किटन छे. ए निर्णय एक रीते थइ शके के — जो आ वे स्वाध्यायनी के वेमांथी कोई एकनी सं. १७४४ पहेलां छित्रेष्ठी प्रति मळी आवे. एटले आ निर्णय करवा माटे आपणे भंडारोनी तपास करवी रही.

आ रीते विचार करतां एकंदर भासकारनी संवतने लगती वातनो कोई मेळ मळतो नथी. एटले उपाच्यायजीना जीवनचरित्र अंगेना आ प्रश्नो विद्वानीए पुनः गंभीर रीते चर्चवाना ज रहे छे. अंतिम निवेदन

अंतमां सीनावती निवेदन छे के—ज्ञानतेजोमृत्तिं महोपाच्यायश्रीए जे घरा उपर पोताना पुनीत जीवननी समाप्ति करी समाधि लीघी हती, एज घरामां अवतार लेनार एज नामधारी मुनिवर श्रीयशोविजयजी ' यशोविजयसारस्वतसत्र '' ऊजववा पूर्वक आपणने एक अपूर्व स्मृतिग्रंथ अपण करे छे. तेनो आपणे सी धन्यवाद प्रदानपूर्वक वे हाथ पसारीने स्वीकार करीए छीए.

तेओ उपाध्यायजी महाराजश्रीना जीवनने स्पर्शतो बीजी विशिष्ट कृति आपणने आपवा माटे प्रयस्तरील छे. ए आपणा सौ माटे सिवरीप आनंदनी बात हे, सौने जाणीने आनंद धरो के—श्रीयशोविजयजी अने तेमना गुरु-प्रगुरुश्रीनी जीवंत प्रेरणाथी आवी एक कृति माटे प्रो० भाईश्री हीरालल रसिकलाल कापडीया—जेओ एक सुबीग्य विशान केसक हे—प्रयस्त करी रहा है.

आ उपरांत उपाध्यायजी महाराजनी अर्च रचनाओंने प्रकाशित करवा माटे पण तेओ उद्यमशील हो, ए ते करतां य विशेष आनंदनी वात हे. आपणे सी आशा रालीए हीए के था वधी सामग्री आपणने सत्वर प्राप्त थाय ।

— मृनि पुष्पविजय





॥ श्रीवाचकवरस्यो नमः ॥ प्रकाशकीय निवेदन

त्रेनधर्मना नहान प्रमावक, भारतीय विम्ति, कृषीव्रकारता, गुजरातना ज्योतिर्वर प्र त्रपाव्यायजी मगवानना जीवन कने इवनने स्परीता जेखीयी सपृत 'न्यायिविशारद न्यायाचार्य महोपाध्याय श्रीयशोविजय स्मृतिग्रन्य ' प्रगट करतां आजे कमने अव्यन्त आनंद थाय हे व्यु आनंद तो एयी थाय हे के आवो प्रयन अमृत्यूष्ट्री थयो हे. ने वळी तेओशीना नाम साथे संबद्धाएकी, नवी स्थपाएकी 'श्रीयशोभारती प्रकाशन समिति ' तरक्यां बहार पढे हे. ए रिते समिति प्रकाशननी दिशामां पहेलुं हम मर्ग रही हे.

भगवान जिनेन्द्रदेवना शासनना विश्वकृत्याणकर सिद्धान्तो अने हेनी पवित्र संस्कृतिना संवाहको, रक्षको अने प्रचारको आचार्यो उपाध्यायो अने श्रमण साबुको छे. चेको विश्वना मानवीओने सत्य अने ज्ञाननो दिख्य सन्देशो संमछावे छे. मानवी हेने सांमछाने पोतानुं यथायोग्य कृत्याण साबै छे.

पृ. श्रीयशोवित्रयत्ती, उपाध्याय परे विराजमान हता. तेथी तेथीश्री उपाध्याय श्रीयशोविजयत्ती अथवा ए पर्तु नामान्तर 'बाचक' होबाथी बाचक श्रीयशोविजयत्ती तर्शके ख्यात यया छे. तेथीश्रीनी सनन ज्ञानोपासना, चारित्रनी सायना अतिउक्तर हती. तेथीश्रीए सिद्धान्तीना रक्षण स्तातर महान् फाछो आपीने खेरखर आपणा उपर अगव्य उपकारो क्यों छे. आवी एक महान विकृतिना महान कार्यने आ प्रत्यहाग नम्र अने नार्नाशी श्रद्धांजिल अपंग करवानो अमीए विनम्र प्रयास क्यों छे. अमारा आ प्रयासने श्रीसंय समाज के जनता वक्तर व्यावी छेहो, एम अमारे अन्तःकरण कहे छे.

आ प्रत्यने मुख्यपणे वे विभागमां विभक्त करवामां आञ्चो छे. पहेलामां श्रीटपाच्यायजीनुं लीवन तथा कवन अने बीजामां लुदा लुदा विषयो उपर्ना निवंबोनो समावेश याय छे. आ उपरांत "श्रीयशोविजयजीनी मुर्तिनी प्रतिष्टा अने श्रीयशोविजय सारस्वतसत्रनो हेवाल " ए शीर्षक नीचे मुंबई—डमंई लिनसंघनां थ्येकी कनवणीओनो कार्यक्रम अने 'जैन' पत्रमां प्रगट थ्येको अहेवाल उरइत क्रीने छापवामां आच्यो छे. सारस्वतसत्र प्रसंग कांवेडा संदेशाओ त्यारपठी मुनिवर्ष श्रीयशो-विजयजी महाराज उपर व्यावेडा पत्रोमांथी उपयोगी नीवो एण संवर्षानां आवी छे अन्तमां हो.

श्रीयुत भोगीलाल सांडेसरा अने वकील श्रीनागकुमारे आलेखेलां संस्मरणो पण आप्यां छे. साम कुल ४६० पानांना लखाणथी प्रस्तुत प्रन्थ समृद्ध बन्यो छे.

स्त्रनी ऊजवणी पूर्वे विद्वानो उपर एक परिपत्र मोकलवामां आवेलो अने तेमां ' लेखो वगेरे छापी प्रसिद्ध करवामां आवशे ' एवुं वचन आपवामां आवेलुं, ते आजे पूर्ण थतां आनंद थाय हे.

एक ज स्थळे उपाध्यायजी अंगेनी वधुमां वधु जीवनसामग्री होय तो भविष्यमां तेमना विषे वधु अभ्यास करवानी के छखवानी कामना करनारने ते सहायम्त थइ पडे, ए दृष्टिन छक्ष्यमां राखी ' मुजसवेलीमास ' तथा अगाउ प्रगट थयेला, कोई कोई छेखोने मुधारी वधारीने दाखल कर्या छं, उपाध्यायजीनुं आधारमृत जीवन चरित्र हजू मुधी मळी आन्धुं नथी. जे कांड थोडी घणी विगतो मळे छे ते मुजसवेलीभासमांथी. बाकी रही दंतकथाओ. आम प्रती सामग्रीना अभावे तेमना जीवन—कवन साहित्यनी व्यापक अने ऊंडा अभ्यास प्वंक समीक्षा करनार व्यक्तिओ गणीगांठी छे. आ महापुरुपनी प्रगत्म विद्वता अने तेमोश्रीना महान व्यक्तित्वनी छाप तेमना ग्रन्थोना साचा अभ्यासको उपर पडे छे, तेनो परिचय विशाल जनता अने अन्य विद्वहर्गने थाय ए इष्ट छे. आ ग्रन्थ ते उदेशने सफल करी भविष्यना अभ्यासकोने अभ्यासमां प्रवेशवा प्रस्तावना रूप थई पढशे एवी आशा राखवी वधु पढती नथी.

छेखोने प्रन्थस्थ करवानो निर्णय टेवायो त्यारे कशी ज मुडी न हती अने रेतीमां ज नाव हंकारवामां आवेलुं. सर्भाग्ये पाछळथी हभोईना श्रीविजयदेवसुर जैन संघे, सारी एवी मद्द करी, तेम छतां तेनाथी पांच छ गुणो खर्च थयो छे आर्थिक संकोचना करणे प्रन्थने वने तेटलो सादो बनाज्या सिवाय छूटको न हतो. मुशोभनोना सौंदय करतां सादाईनी मनोरमता पण कदिक दिल हलावनारी होय छे. आवा सादा प्रन्थनी आंतरसमृद्धि ओछी नथी, एवी वानकोने खात्री आपीए छीए.

प्रेस वगेरेनी पागवार मुक्तिलीओने लीचे मुद्रण कामे त्रण त्रण प्रेस जोया. उतां वहेवुं जोईए के छेछे वसंत प्रिन्टींग प्रेस लि. ना संचालक भाई श्रीजयन्तिलाल दलाले अमारं आ कार्य पोतानुं मानीने उत्साहपूर्वक करो आप्युं छे. अने प्रेसना मुख्य कार्यकर श्रीज्ञान्तिलाल जाद अने तेमना सहकार्यकरोए पण पूर्ण सहकार आप्यो छे.

श्रीयशोविजय सारम्यतसवनी कवनणी तथा प् उपाध्यायजीना पवित्र हम्ताभरने लगता व्लोको तथा प्रन्थावरण नगेरे लापी आपवानुं काम अमनावाद दीपक प्रिन्टरीना मान्ति श्रीनटुमारण् करी धार्धुं हो. एन्थनुं आवरण उभोईना उत्सारी नित्रकार श्रीरमणिकवाल सुनिलाल जाते वैयार कर्युं हो. पहित श्रीश्रीवालाल प्रेमनेद शाह प्रुक्त संशोधन वगेरे कार्यमां लगानीएक महाय करी हो. वाहिता श्रीपकीरमाई वाहुमाईण् करी आन्धुं हो. आ सीनो अमे अनःकरणदुर्वक आभार मानीए हीए.

आ प्रत्यता संपादनतुं कार्ये अथथी इति सुधी अवयानकार परमपृत्य विद्वान मुनिवर्श्री यशोविजयजीए संमान्धं हे. संमान्धं हे एउछं च निह, एव उत्साह, खंत अने मिक्तमावपूर्वक तमान जवाबदारी उपाडी समय अने शक्तिनो सत्तत्र मोग आधी एर उतार्थं हे. तेमना आ ऋणनो अमे बहुमानपूर्वक स्वीकार करीए बीए. सायेमाये आ कार्य सांदे तेमने अनुहा आपनार तेओश्रीना विद्वाल गुरुदेवो परमपृत्य आचार्यक्षं प्रतापल्गिकरक्षं तथा परमपृत्य आचार्यक्षं धर्मस्रीकर्जो आदि सुनिवरोने अमे केम मुखी दाक्षीये ! प्रत्यकी कर्ष्यान्य सुविवरोने अने केम मुखी दाक्षीये ! प्रत्यकी कर्ष्यान्य सुविवराने 'आहत्व ' छात्री आपीने, तेम च वीजी रीते पण मुसहायक बननार वाणीता सालरवर्ष ए. मुनिश्री पुण्यविजयक्षी महाराजनुं ऋण तो हो मृह्यय !

मुशोयनकों हो तथा प्. टपाध्यायजीना इस्ताकरों नथा कन्य क्लोकों आपवानुं औदार्य दासदवा वरल, श्रीपहार्वर तैन विश्वालय अने तेना कार्यवाहकोना पण अमे रहणी हीए. ते ते मुनिवरों तथा श्री रिन्छाल दीपत्तें देसाई वर्गेर अन्य वेषुओए प्रत्यक्ष के परेक्ष गीते आ कार्यमां महद करी है, ते सीना अमे आनारी हीए हेस्के आर्थिक महद हाग प्रत्य प्रकाशनने शक्य वनावनार व्यक्तिओं अने संयोग अमे कनहद आमारी हीए. अने हवे पहां प्. त्याच्यायजी नहाराजना बनारा प्रत्य मुहण-कार्यमां तैन श्रीसंघ पोनानों सिक्षय आर्थिक महदार आपी प्. उपाध्यायजी मगवानना अनेक्षिष महाराजनों तैन श्रीसंघ पोनानों सिक्षय आर्थिक महदार आपी प्. उपाध्यायजी मगवानना अनेक्षिष महाराजनों तैन विनेति है.

अन्तर्मा द्या प्रत्यना बाचनयां हुनुक्षु वाचको उपाव्यायजीना तन्त्रमन्पूर मूळ्प्रत्योना अम्यास मादे प्रेरायअने तेमांथां कृत्यामकारो कर्ष्यमुन्तां प्रेरणा मळवा पोताना जीवनने उन्नत वनावे एव अभिज्ञाय !

देरापोळ हाधीम्त्राना महा द्वादि ५, र्च. २०९३ श्रीनागकुमार नाथामाई मकाती लाल्बंद नंदलल ग्राह मंत्रोत्रो:- श्रीन्गोमार्टी फ्रास्टन समिति. वडोदरा





संपादकीय निवेदन

जयन्तु जिनवराः । नमो स्वन्झायाणं ।

प्रमाराध्य परमोपास्य, प्रातःरमरणीय, प्र्यपाद साधुद्दार्नूल, तार्किकिद्दिरोमणि, न्यायिवशारद न्यायाचार्य महोपाध्याय श्रीयशोविजयजी महाराजना जीवन अने कवनथी संकलित 'न्यायिवशारद न्यायाचार्य महोपाध्याय श्रीयशोविजय-स्मृतिग्रन्य' नुं संपादनकार्य सद्भाग्ये मारा शिरे आन्युं, अने आजे ते कार्य शासनदेव—गुरुनी कृपाथी, मित्रमुनियरो, विद्वानो अने अन्य सहायकोनी शुभेन्छाथी पूर्णाहुतिने पण पाम्युं, एमाटे आनंद थाय छे अने लांवा समयथी सेवेला स्वप्नानो एक भाग आकार हे छे, तेथी संतोप प्रगटे छे.

रसोई गंधता घणुं घणुं कष्ट अनुभवाय छे, पण ज्यारे ते तैयार थाय छे त्यारे, तेना आनंदमां प्रविक्तियानुं कष्ट के खेद विसारे पडे छे. एमांय रसोई जो मुंदर, स्वादु अने पफ बनी होय तो तेनो संतोप अने आनंद कोई जुदो ज होय छे. पण जो रसोई अमुंदर, वेस्वादु अने अपफ बनी होय त्यारे तेनो असंतोप अने खेद रही जाय छे. मारा माटे पण कंईक एवं ज वन्युं छे. प्रारंभथीज प्रेसना प्रतिकृत संजोगो, खंतीला कार्यकरनो अभाव, एटले काम लंबायुं. नूथायु, आद्यातीत विलंब भतां एनी पाछळ निराशा आवी अने एणे नानोशो कंटाळो पण जमो कयों, परिणामे आ अंकने अंगे सेवेलुं स्वानुं पूर्ण आकार न लई शक्युं, तेटलो विपाद छे. छतांय अन्तःसामग्रीनुं जीवंत चैतन्य मारा विपादनी विस्पृति करावे छे.

स्मृतिग्रन्थमां शुं छे ?

आ स्मृतितन्थने वे विभागमां वहेंनी नांखवामां भाज्यो हैः पहेला विभागने 'महोपाध्याय श्रीमद् यशोनिजयजी जीवन-कवनदर्शन ' नाम आणुं है. आ विभाग ३२॥ फोर्म एटले २६० १९ठो रोक्यां है. बीजा विभागने 'अन्यविषयक नियन्धो ' ए नामश्री रज्ञृ कर्यों है. आ विभाग, लगभग १० फोर्म एटले ७५ एटमां समाह धाय है, त्यार पहाँ वक्षील श्रीयुत नागकुमार ना० मकाती तथा श्रीयुत जमुभाई जैनना संपादन नांचे पू. उ. श्रीयद्योविजयगुरुषंदिर-मितिष्टा अने श्रीमद् यशोविजयसारस्वत सत्रनो मृविस्तृत हैवाल, तार-टपालना संदेशाओं तथा यह श्रीम

दिशन नित्र हो. श्रीमुत सोगीजाउ सहिसन तथा वकीज श्रीमुत नागकुमार मकातीए कांटेखेंडां संस्मर्गो वर्गेर, अने अन्तमां टपाध्यायती मगवानना प्रत्योनी वसु शुद्ध अने विशिष्ट प्रत्ययादी* आपी हो. जा रीते आला प्रत्यनी ग्रम्म संख्या २९० यह है.

आ अंद्रमां साम्बीकी महागज तथा श्राविकाना छेखने पण खास स्थान आणुं छे; कारण के केन संवनां का वे अंतो ज्ञानना क्षेत्रमां घणां दुवेष्ठ रह्यां छे, तेथी का अंतोमां पण आ दिशामां केई क उसाह वर्षन थाय.

एक बातनो गीतवर्षक उद्धेल करवे। चोईए के समितिए छेलकोन छेलो छलवा नांट दोहधी वे नास चेटछी करपसनय-नर्यादा आंपछी; वटी, उपाध्यायदी कंगे व कईक छलवा आप्रह सेवेछो ज्यारे बीदी बाजुए उपाध्यायदीना चीवन उपर छलवा माटे, आज सुधी नहीं चेवी काची सामग्री विस्मान नहती, खोटो वर्ग तेमनो चीवन-कवनशी अपितिवत हतो, आ संजोगोमां कार्यसागरमां-गळ.वृह ड्वेछा विदृहर्ग पासेथी बीदिक सानग्री नेळवदी, ए केटछै मुस्केछ कार्य छे ते तद्विह्योथी छहात नथी. एटछे व समितिए ज्यां नात्र पंदर्गक छेलोनी आहा गांदेछी त्यां वारणाथी द्विगुणाविक छेलो नेळवी शक्ती, ते लेर्ला, स्थातनान एप्यश्लोक महापुरुषना एप्यवळने व आमारी हतुं.

युजसबेकीयास अंगे

पू. टपाष्यायजी सगवानना जीवननी टूंकी नोंव नात्र 'सुजसवेडीसास' नामनी चार ढाउमां विसक्त अएडी, ५२ कडीओमां पूर्ण थती एक नानकडी गूजराजी पबकृति रजू करे हे (जे कात्र्यकृति का ज कंकना २२५मा एएटमां छे) कापणा दुर्मान्य का कृति दिवाय एमना जीवन कंगे बीजी कोई व्यवस्थित नोंवो, विविव घटनाओ, विश्वरप्रदेशो, शिष्यसंपत्ति कने प्रत्यनामो दगेर वावतो कंगे कोई खास सानधी मलना नथी. वर्णा वर्णा वावतो टपर कंबारपट व पश्राप्छो छे; एम छतां सुजसवेडीकारे एक महापुरुषनी जीवनकटनाने पथमां गूंबीने तेओधी विषे के कई परिचय खायो छे ते अमृतपूर्व छे ने अदितीय छे; तेथी जैन संव खंग्छर ! तेमनी खोदिंगाण छे.

डपाच्यायजीनो जन्मसमय क्यो ?

अहीं एक बाउ दिचारवानी छे. सुदसवेडीकोर द्यन्मनी साछ के तिथि द्यावी नथी. मात्र दीक्षावर्डीदीका ने टपाच्यायपदनी साछो द दणावी छे, पण तिथि दणावी नथी. स्वर्गगमननी साछ म्पष्ट दणावी नथी, तिथि पण दणावी नथी. दीक्षानी साछ १६८८ दणाच्या वाद १० वरसना

^{*} એએ શંન: ઇરતયરિત પ્રસંધનાં તમામ પ્રત્યાનું પ્રમાણ, શાયા, વિષય, સ્થાપ્ટેરત, કેના શાયનમાં શખી, તેની દરતપ્રતિ કર્યા છે, સુદિત કૃતિના પ્રકાશક કેપણ દવેરેર અનેક દરીકતા સાયેની સુવિસ્તૃત પ્રત્ય-ય દી આપવામાં આવશે

[÷] શ્રીમદાવીર જૈનવિદાવયના શ્રીવિજયવદ્ધમહૃદિ સ્મારક અંકર્મા પટના પરિચયમાં દૃષ્ટિ કે પ્રેસ દેવથી 'લન્મ-સ્વર્ય'રમનની સહેત મેલે છે, એકું છપાયું છે તે વરાવર નથી માટે સુધારી લેકું

गाळा बाद १६९९ नी अवधान कर्यांनी साल नोंघे छे अने त्यार पढ़ी काशीगमन सूचवे छे, पण ते क्यारे !—ते निपे मीन सेने छे. आगळ चालतां काशी अने आग्रामां [४+३] सात वर्ष रह्यांनी उल्लेख करे छे. पण ते माटे चोकस सालनिर्देश नथी करता; गुजरातमां पुनरागमन क्यारे थयुं ! वगेर हकीकतो उपर पण संपूर्ण अन्धारपट छे.

१६८८ नी दीक्षा जणावीन सीधो १६९९ नो, ने त्यांथी सीघा उपाच्यायपदार्पणनो १७१८ नो, ने छेवटमां डभोई चातुर्मास कर्यांनो १७४३ नो, आम चार संवतोनो ए उछेख करे छे. आ सिवाय बीजी कोई तवारीख के साल नोधी नथी.

सुजसवेहीकार, उपाध्यायजी श्रीविनयविजयजीना गुरुश्राता ज होय तो, तेओ तेमना समयना कवि होवा छतां, तेओए प्ररतुत कृतिमां महत्त्वनी हकीकतोनी केम कशी नोंध न लीधी !-ते घटना खरेखर ! एक कोयडो बनी जाय छे.

अने उपाध्यायजी तो, खरेखर ! त्यागमय अने निस्पृह जीवन जीवता जैन महर्गिओनी परंपराने ज अनुसर्या छे. एटले स्वजीवननी नोंध अंगे तेमणे तो केवळ उपेक्षा ज सेवी छे.

आयुष्य केटलुं ?

सुजसवेलीनी संवतीनी सचाईने उपलब्ध अन्यान्य उक्षेत्रोए पडकारी छे. मुजसवेलीना आधारे उपाध्यायजीनी धावरदा ६० थी ७० वर्ष अंदाजी शकाय, ज्यारे अन्य साधनी ९० थी १०० वरसनुं आयुष्य नक्षी करी आपे छे. सुजसवेलीकारे दीक्षा १६८८ मां जणावी छे; तेओश्रीन बालदीशित गणीने, दीक्षानी वय आठेक वर्षनी जो कत्पीए तो जन्म संवत १६८० आसपास अंदाजी शकाय.

हवे वि. सं. १६६३ मां खुद उपाच्यायजीना गुरुजी श्रीनयविजयजीए उपाच्यायजी गाटे चीतरेला मेरपर्वतनी आकृतिवाळा पटमां उपाच्यायजीने, ए बखते 'गणि' तरीके उद्देल्या हो, त्यारे तेमभी दीक्षा कचार गणवी ! जन्म कचारे कन्पनो ! बळी तर्कभाषा, दशार्णभद्रसञ्ज्ञाय वगेरेनी प्रतिओने अन्ते मळेला उद्धेखो जीतां तेकोश्रीनो जन्मसमय साहजिक रीते पाछळ जाय, एटळे के १६४० थी १६५० वसेनो कल्पी शकाय. स्वर्गगमन तो १०४५ पहेलां ज थयुं हो ए हकीकत निर्विवाद हो. एथी तेकोशीने शतायुः मानवागां कोई वाध जणातो नथी.

१६९९ मां राजनगरमां अवधान-धारणाशिकना प्रयोगो कर्या पदी ज काशी गयानी बात सुजसबेलीकार करे छे, पण तथी ते तुरत ज गया हे के बे-चार बरसी बाद ! ते सूनवता नथी. आना अचूक निर्णय माटे अन्य साधनी गवेपवां जोईए.

फालधर्मनी तियि फई?

उपाच्यायजीनुं भाषुच्य अने स्वर्गगमननां संवत अंगे विद्वानीमां पनासेक दरस्यी महभेद

चांचे है. एमां कालहमेंनी साच तर्रांके मोटो माग (७७४नो उद्धेत करतो आत्र्यो है, ज्यारे वस्तुरिश्चित तेशी जुड़ी है. हतां आम केम चार्त्युं हही ? एना कारणमां प्रधान कारण तो पाहुकानो शिलांचेत ज हांगे है. एना हपर "१७४५ नी साढ अने मागसर सुदि ११" छन्त्युं है. प्रधम प्रथम केणे अचे क्यांक्रमाईथी छन्ताम बांच्युं हही तेणेन प्रस्तुत साछ—तिशिने कालवर्षनी साछ—तिशि चांहर करी दीशी हही ! कने पही तो छीटे छीट एहु उद्धेत करता गया हही ! परिणाने आएणा मीतिया पंचांगीमां पण आ खोटी तिश्चिनो उद्धेत्त शर्द रही है. एरेनु ते साछ नथी तो जन्मनी के नथी रहांगीमनन्ती! माटे चांछी आदती आ मृत्ये सावर सुधारी देशी कोईए. प्रस्तुत १७४५नो उद्धेत ते तो अमदाबादनी पाहुकानी प्रतिकानो है.

आशी एक बात नि:शंक्रपणे निष्टित यह जाय छे के तेओ १७४५ ना मागसर सुदि ११ पहेंछा रबर्गवासी थया हता. पण ते क्योर ! ते निर्णय करवानी रहे छे.

युज्ञसंबद्धीकोर् गाण्छा—

" सत्तरत्रयार्छि चोषासु रहा, पाटक नगर डमोई रे; विद्दां सुरपदवी अणुसरी, अणसणिकरि पाविक घोई रे."

या पद्य उपाध्यायक्षी हमोईमां केलातु न्यानुं रपष्ट जणावे हे. पण न्यर्गगमन चातु-मांसमां यहुं के ते पट्टी यहुं है ते विषे ते संपूर्ण मीन हे. जोके आ इतिनी साझेए मार् गृंका क्यां करी हे, तेथी तेने केटछुं वक्त आपनुं ते सुंक्षणनी विषय हे; एटडे ए बातने बाजू पर मूक्षण, पण उपाध्यायकीए क सुन्तरा चानुमांसमां वे गृज्यनी पद्यक्षित्रों वनावी हे; ए इतिमां एक्नानी साझ के जणावी हे, तेनुं अन्तिम पद्य आ प्रमाणे हे—

> मुरित चोमामु रही रे, बाचक जम करि जोडी, बह्० मुग-मुग-मृति-विधु बन्सरड़ रे, दियो मंगछ कोडी.

[प्रतिकः हेतुगर्भ मः]

युग-युग-मृनि-विधु बन्सरह रे, श्रीजसविजय उवज्झाय, टोड० मुरत चोपास रही रे, कीयो ए मुपसाय. टो॰ ॥६॥

[अगिवार अंग स॰]

उपरंश दके दर्शकोमां ए इतिको नन्यानी सान्ने ज्यादी है. आनं वर्ननां 'तृत तृत' शन्द वपरायो है. हां सदान ए है के, आ अन्द वे अने चार देने संख्यानो वाचक है; तो अहीं कई संख्या हेवी ? वेके चार ! आ माटे केटलाक दिशानो ग्रायी चारनी अ संख्या गणवानो आहह यगांत्र है; व्यार हुं नेथी जुदो पहुं हुं. अलवन्त प्रस्तुत निर्णय करवा माटे अलाट्य सादन तो कोई व नयी. परंतु अहीं ग्राप्तो अर्थ चार करवा करतां वे करवां वसु संगत है, एटहं अन्तःपरीक्षण

द्वारा अनुसन्धान करीने निर्णयनी नजीकमां जरूर जर्इ शकीए छीए. त्योर थोडोक विचारविमर्श करीए: जो वंने युग शब्दनो अर्थ चार चार करीए तो १७४४ नी सालमां सरतना चातुर्मासमां वंने रवाध्यायोनी रचना करी " एम निश्चित थाय, एटले जैन सायुना नियम मुजब कार्तिक सुद्धि चीदस सुधी (चातुमीस समाप्तिदिन) त्यां ज रह्या हता ते मुनिधित थ्युं. हवे पादका उपरना छेखगां १७४५नी साल अने गागसर सुदि ११ नी अंजनशलाका ने ते राजनगर-अगदावादमां कर्यानुं जणान्यं हे. तेमनो देह डभोईमां ज पडचो ते वात सुनिधित हे. सुरतनुं १७४४ नुं चातुर्गास कार्तिक सुद् चीदसे पूर्ण थाय. एटले बहेलामां बहेली बिहार कार्तिक सुदि पूनमे करी शके. पूनमे बिहार फरी डमोई तरफ प्रयाण कर्यु होय एम मानीए तो पूनम अने पादुकानी अंजन-प्रतिष्ठा (तेय अमदा-वादमां) वन्चेनो गाळो मात्र २७ दिवसनो छे. अहीयां विचारवानुं ए छे के, भाटला दिवसोमां, तेओ एकाएक विहार करे, सुरतथी ८० माईल दूर डभोई आवी पहोंचे, तुरतातुरत अनशन करवाना संयोगो कमा थाय: कालधर्म पामे: अने पाटा रेलगाडी के मोटरना साधन विनाना जमानामां अमदावाद समाचार पहोंची जाय, संगेमरमरनी कमलासनस्थ पादुका पण बनी जाय, अने **अंजन थई जाय-आ बधुं सं**भवित छागे छे खरुं ! मारो अंगत जवाब तो 'ना ' छे. छतांय घडीनर मानो के संभवित छे, तो पछी डमोईमां चातुर्मास कर्यांनी कई साल नक्षी करवी ! आ वधी विपमापत्ति टाळवा युगयुगनो अर्थ चार न करतां जो वे करीए तो वधी समापत्ति थई जाय. जोके युगयुगधी तो २२, २४, ४२, ४४ आम चार विकल्पो कल्पी शकाय छे. छतांय वीजां पुरावा-साधनो तपासवा अने विचारविनिमय करवा माटेनां हारो ख़ुझां ज छे.

जुपाध्यायजी अंगेनी केटलीक वावतो साफश्की ने परामर्श मागी रही छे, तेमांथी महत्त्वनी वावतो हुं रजू कर छुं.

१—" उपाध्यायजी काशीक गया त्यारे विनयविजयजी तेमनी साथे गया हता; त्यांना मामण महाचार्य जैनमुनिने भणाषे तेम न हता, तेथी ते बंने साधुओ नामांनर अने वेपांतर करीने रह्या, 'चितामणि ' नामनी त्यायप्रत्थ गुरुनी गेरहाजरीमां गुरुपत्नी पासेथी मागीने एकरातमां वेने जणाए कंटरथ करी दीधो "—आवी जे किंवदत्ती चाली धावी हे ते तहन सोटी है. श्रीयशोविजयजी साथे तेमना गुरु श्रीनयविजयजी ज गया हता. पण 'नय'नी आगळ 'वि' वर्षाने 'विनय' विजय वनी गयुं है. अन्य स्थळे पण 'श्रीनयविजय 'मांनी 'श्री' वरावर न वंनावाधी, ध्यमणा के प्रमादधी 'श्री'ने ठेकाणे 'वि' वांचीने विनयविजय करी नांख्युं है. बाकी अनेक पुगवाभीनी हक्तीकन निधित है के उपाच्यायजी साथे नयविजयजीज हजा. वळी विनयविजयजीनी सन्धर्मनादिकनी मानवारीधी पण विनयविजयजी न ज हता ए सनिधित बीना हो. एटके आवी दनतक्षाभी क्यारे के बीच्यी वेन थवी जोईए.

बीजुं काशीगमनमां गुरु, शिष्य साधे अन्य कया क्या मुनिवरी हता !

આ વાતની સાફ્ષી ઉપાધ્યાયજના મન્યોની અનેક પ્રશક્તિએક આપે છે.

- . २—टवर्णीना चार छेडे तेओ पाण्डियना गर्व स्वक चार ध्वलाओ वांपता हता; एमणे सुवर्णीसिद्ध मेळवी हती है, माफीपत्र छाल्यानी वात, यति सायेना सम्बन्धनी वातो, तेमना जीवन साये अघटमान छागती धात्रशयोक्तिमरी अन्य किंवदन्तीओ सम्यग् आछोचना मागी रही छे.
- ३-(१) न्यायिवशारद, (२) न्यायाचार्य, कन (३) उपाध्याय-आ त्रण पदवीओनो श्रीमदं स्वयं उद्घेख क्यों छे. १-३ आ वे पदवी कोणे ने क्यां आपी तेनो तो, तेओश्री तेम ल मासकार उद्घेख करं छे. पण नंबर वे बाळी पदवी क्या स्थळं कने कोने मळी? तेनो निर्देश नथी मळतो; तेमल; तेमणे जे सो प्रन्थो रच्या, ते क्या ? ते पण गैमीर विचारणा मागी छ छे.
 - ४-जन्मस्थान कनोडु व इतुं के केम ?
 - ५-योगांश्रो आनन्द्यनवी सायेनुं मिछन क्यारं ने क्यां थ्युं ?
- ६—कहेबाय छे के उपाध्यायनी सिनोर पाने नर्मदाना किनोर आवेछा निकोग गाममां घणो समय रह्मा हता. अने त्यां तमनो प्रश्यसंत्रह हतो, तो आ बात हां साची छे !
- ७—संमातनो बाद अने त्यां च काशीथी आवेछ विषागुरुनुं करेलुं गौरवर्ष्ण बहुमान ए इकीकत यथातय्य छे सरी ?
- ८—तेश्रोशीनो प्राण टेवा माटेना थऐंछा प्रयासो अंगे, तेमणे स्वयं श्रीशंखेखरजीना स्तवनमां ने इर्योहार काढ्या छ ते हुं सुचवं छ !
- ९—किविश्री बनारसीदास व्यक्तिनी कोई कोई पद्य रचना साये उपाच्यायजीनी पद्यकृतिनुं अक्षरदाः साम्य आहे छे, तो तेनो शो अर्थ ! अने तेम बनवानुं कारण हुं !
- १०—उपाध्यायनीन नेन नगत् आगळ हलका चीतरवा विरोधीओए कोई कोई कृति तेमना नाम चढावी दीवी छ ते अंगे.

आवी आवी अनेक हक्षीकतो चकासवानी छै,

खेदजनक घटना-

वाकी शासनना आवा एक परमप्रमावक, असाधारण विद्वान, महान सर्वेनकार, कृष्णिकशारद अविरत ज्ञानोपासना अने अखण्ड तत्त्वचिन्तना परिपाक रूपे ज्ञाननिधिनी समृद्ध अने अणमोष्ठ मेट आपनार, सत्यने माटे सतत झझ्मनार, क्रान्तिकारी संत, जैन संघमां पेंठजी शिधिजताओं सामें जेहाद जगावनार, सन्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रनी अहांडेक जगावनार, लाखिक चर्चाओ, बादविवादों द्वारा वस्तुना सर्वीर्गा सत्यने स्थापित करनार, हरेक पदार्थने के हकीकतोंने सर्वीर्गा दृष्टियां बोतां शासवनार, मीतिक अनुशासन उपर आध्यासिक अनुशासननी अनिवार्य आवश्यकतानी उद्योषणा करनार, ज्ञानांजनशङ्काकार्था अज्ञानतिमिरान्थोनां नेत्रोन्मिछन करनार, आत्मानी श्रुद्धि-

विशुद्धिना मध्यवर्तुलसमा, स्वरिचतज्ञानराशियी अनेकने प्रमावित करनार, जैन सिद्धान्तो अने तेनी परंपराना जागरुक रखेवाल, निश्चय अने व्यवहारनी तुलाना समधारक, मूर्ति अने मूर्तिपूजा प्रत्येना विरोधी आन्दोलनो, क्रियाशृन्य अध्यात्मवादीओनी मान्यता अने तेना प्रचार सामे शास अने तर्क बने हारा बुलंद सिंहनाद करनार, बीतरागदेवना सन्मार्गने सुरक्षित राखनार आ महापुरुपनी जीवन अने मीलिक विशेपताओनी नोंध, तेओश्रीना समकालीक अनेक मित्रमुनिवरो, विद्वानो होवा छतां केम कोईए न करी १ ए घटना एक प्रश्नार्थक बनी रहे छे. एम छतां तेओश्रीना साहित्य-कचनना—ओश्रावत्ता अम्यासीओए के परिचित जनोए जे कंई पीरस्युं हो, ते पण ओह्यं मृत्यवान नथी.

छेखकोने धन्यवाद

छेखकोए जुदा जुदा दृष्टिकोणधी, भिन्न भिन्न बनावो अने घटनाओधी, अने तेओधीनी सर्वांगी साहित्य-साधनानी विशेषताओधी तेओधीनुं वाद्य अने आम्यन्तर जीवनित्र उपसाववानो अने तेभोधीने भावभरी श्रद्धांजि भाषवानो खरेखर, (ट्रंकी मुद्दत छतां) स्तुत्य अने मुन्दर प्रयत्न क्यों छे, अने तेथी ज प्रस्तुत प्रयत्न सहु कोईना धन्यवाद मागी छे तेवो छे.

खरेखर, आ अंकमां प्रगट थयेली काची सामग्री भविष्यमां तेओशीनुं मुसंकल्पित, व्यवस्थावद अने रवतंत्र जीवनचरित्र आटेखवा माटेनी श्रेष्ट मृमिका पृरी पाइशे एमां शक नथी.

अंकना छेखो अंगे

सत्र-सिमितिए पोताना विनंतिपत्रमां खास करीने उपाध्यायजी महाराज अंगे ज छेखो छख़वा आप्रह करेछो, एटछे प्रथम पंक्तिना घणा विद्वानीनी समृद्ध ने अभ्यस्त कछम नो छाम छेवानुं अमाग माटे अदाक्य ज हतुं. खुद उपाध्यायजी महाराज अंगे पण सिमिति अभ्यसनीय छेखो पृग्ती संख्यामां मेळवी दाकी नथी. अही ए पण स्पष्ट करूं के मारा मित्रोनो मने एक अभ्यसनीय छेख छख्वा माटेनो आप्रह छतां, सकारण छखवानुं मुळतवी राखबुं पड्युं छे.

वीजुं ए के, उपाध्यायजी महाराजना जीवन—साहित्य भंगेनी सामग्री संघरवा पूरतो ज भा प्रयास होई, नाना गोटा, सामान्य के विशेष तमाम टेखीने स्थान भाषवा उपगंत वधुमां वधु प्राप्य सामग्री आपी छे, जेश्री केटलीक प्रेंप्रकाशित सामग्रीनुं पुनर्दर्शन पण करान्युं छे. आनंदनी यात ए छे के, आ अंकमां जैन संपना साधु—सान्धी, श्रावक-श्राविकारूप चार्य अंगींए भाग लीपी छे.

छेखोमां ज्यां ज्यां एक ने एक बात बेबडाती हता, नयो दिएकांण के कोई विद्यालता रजू फरनी न हती, तेम ज तेओश्रीना जीवनने परती जाळांडांखरानी केम बादी गएसी अमन् दरनकथाओं अने यपु पडती अनुचित अने जप्रग्तुन हकीकतो हती, तेनी ज मात्र बाददाकी करी है. ते मारे देसको समा करें !

साधे साधे ए पण स्पष्ट कर के आ अंकना केटलाक मुद्रिन हे खोगां वस्मीकी नाःचा

आवता केटलाक अनुचित्र प्रवाहों, विवानों अने हर्झकतो एण जोवा नल्लों. एण में जाणी जोईन ज तेनुं नारिताद न करतां अरिताब राख्युं हें, ते एटला ज नाटे के व्यवस्थित जीवनना अमाने, कालात्तरें नहापुरुषोता जीवनने फर्नी केवी केवी हर्झाकतों प्रदक्षिणा करती होय है, तेनी वर्तमान प्रजाने एयाल आवे.

मोहणी, चे देसकोनी चे हती बहुषा, तेंच रासी है. केटलाक देखी दुर्वाच्य होवाना कारणे, तेन च द्यारहोप के प्रेसदोपना कारणे, चे केंद्रे कृतिको रही गई देखाय ते बदल देखको अने वाचको क्षमा को !

प्. उपाध्यायजीए केरछी कृतिको रची हुनी ? तेनो चोळस संख्यानिर्णय करवानुं कोई सायन नधी. परंतु तेओश्रीनी कृतिकोमां खध्या बीजा फुटकर हुन्तपत्रमां मळेखी नीव सुद्धव हाछ तेनी निम्न संख्या नश्री करी शकीए-

माइत-संस्कृतमापानी कृतिओ

प्राष्ट्रत-संस्कृत मापाना टपछम्ब अने अनुपछम्य प्रत्थोनी कुछ संस्था ८३ नी छे; एमां टपछम्ब ६१ अने अनुपछम्ब २२ छे.

१—उपज्य ६१ मां ७६ मुद्रित करे १५ अमुद्रित हे.

२.—डएच्ट्य ६१ मां, ४६ प्रन्यो स्वहृतः मूच कर्ने श्रीकावाळा छे. केमांना ३७ सुद्रित क्षने ९ असुद्रिन हे.

३-अने शेष १७ अन्य आचार्यक्षत प्रत्यो उपरनी टीकाबाळा हे. एमांथी ९ सुवित अने ६ असुवित हे.

गृजरानी, पिश्र यापानी कृतिशो

उपल्बन्य-अनुपल्बन्य

गृतिर-निश्रमापानी इ.ट., उपच्च्य कने कनुपच्च, नानी-खोटी धईने ५८ इतिको है; तेनांश्री ५२ उपच्च्य कने एक कनुपच्च्य है. ५३, मांश्री ४५, तृदित कने ८, कमुदित है.

का उपनंत करव प्रश्रोतुं संशोदन कते संगादनकार्य एवं तेओशीए कर्ष्टु हे, ते अन्तर्मा आरोजी प्रत्यम्त्रीमां दर्शविष्टुं हे.

उपर नं. २-३ मां तपावेळी १५ संस्कृत कृतिको, क्रेन ८ गृत्तराती कृतिकोमंशी केरळीक कृतिकांतुं संशोधन धर्यु छे ने केरळाकतुं धर्दे ग्युं छे. कार्य गैमीत, गहन क्रेन विशास छे, ज्योर सादनोनी कराप छे. एन छतां ए दिशानां हम मांड्युं छे तो मुद्रे 'हानै: एन्या हानै: पन्या 'करतां करतां बोगाना अने श्रीमानीना सहकार अने शुमेन्छ। थी अने शासनदेवनी कृपाधी इष्ट टहेशनी मैं जिले पहाँची थुं. सत्रोत्सवनी उजवणी पछीनुं सरवैयुं अमाग माटे उत्साह जगाडनारुं वन्युं छे. सत्रोत्सवनी उजवणीए उपाध्यायजी परवे जैन-जैनेतर वर्गनुं ठीक ठीक ध्यान दोर्यु छे, अने एना ठीक ठीक छाभो पण सर्जाता जाय छे. वळी, एमनी कृतिओ शोधी काढवानी भावनाने पण वेग मन्यो छे; परिणामें सत्रोत्सव पछी ज नवीन पूर्णापूर्ण १३ कृतिओ उप्य थई छे, अने हजु अमदावादना भंडारमांथी वधु कृतिओ मळवानी संभावना छे.

आ तेर फ़तिओं अने सत्रोत्सव पहेछांनी नव फ़तिओं मळी कुछ २२ प्रतिओ मुद्रण मागी रही छे. तेमांथी अर्घा कृतिओंनुं संशोधन पूर्ण धवानी अणी उपग्छे. आ प्रन्थोनुं प्रकाशन वडोद्रानी यशोभारती प्रकाशन समिति तरफथी थनार छे.

- —ते उपरांत प्रशरतमिहिम उपाध्यायजी महागाजना तमाम प्रन्थोना आदि अने अन्तना मागो तियार थई गया छे.
- —सुमापितोनो संप्रह, सन्मित्तिक अंगेनी नोधो अने तारवण, तथा अन्य पृथक्करण वगेर तैयार थनार छे.
 - तेओश्रीनुं व्यवस्थित प्रमाणभून ' जीदन-ऋवन ' चरित्र पण तैयार करवानुं हे.
- ——भावि योजनाना संदर्भमां गुर्जिरसाहित्यसंवह भाग १-२ जे तेथोश्रीनी मृत्रभाषामां छषायेत्र नहीं होवाथी तेनी तेथोश्रीनी भाषामां ज पुनरावृत्ति कराववी.
- —तेमज शाखवातीसमुच्य टीका आदिनी पुनगष्टतिओ धन साथे साथे अध्युपयोगी गन्धोना अनुवादो पण प्रगट कराववा.

आटलं कार्य पार पहरो त्यारे उपाध्यायजी भगवानना श्रीसंघ उपरना भगाय भने अनिर्वननीय ऋणनी पूर्वार्थ पूरी कर्यो गणारो.

उपाध्यायजीतुं जीवन-कवन लखाई रहुं छे

अही एक आनन्दप्रद समाचार जणावुं के घणा बखतथी हैमसगीशनी जेन यशःमगीश छखवानी गारी भावना हती अने ए भावना आजे पण कभी ज है. दरमियान जाणीता थिदान थ्रा. श्रीयुत हीरालाल र. कापडीआने मळवानुं थ्रयुं. तेमनी पोतानी पासे उपाण्यायजी अंगेनी फेटलीक नौंधी है एवं तेमणे जणाव्युं. गने थ्रयुं के उपाण्यायजी अंगे छखवानी सामग्री एटली विशास अने विदुत्र हैं के कमने अंगे एक नहीं पण अनेक समीक्षाओं क्लाय तोरण कई ज लोड़े गर्भाः अने उपाण्यायजी अंगे जमणे जे बांच्युं-विवार्यु होय तेमनी द्वारित, निनन अने कलमने साम नई है थेरे, एटले का कार्यमी बरमाळा थ्री. कापडीशाना गळामां परेगदी हो. नेशे युराळ संगरकार अने विद्याह दिवाह दिवाह की मानवा समीक पण है एटले जापणने एक सारी मेट अर्थण करही एवं। खादा समीज !

सीथी बधु स्वहस्तपतिओ

बान मुग्रीमां कोई कोई विशिष्ट व्यक्तिना हस्ताक्षरवाळी प्रतिक्रो मछवा पामी छे. व्योरे एक भव्य भारतीय विमृतिना हस्ताक्षरो आपणेन मळे व्योर आपणेन खेरखर, आनन्द ने गौरवनो अनुभव थया वगर न रहे. तेओश्रीनी स्व-हस्ताक्षरी प्रतिक्रो आपणेन उपराउपरी मछवा पामी छे, तेनुं प्रमाण नोतां आद्रुठी वशी स्वहस्ताक्षरी प्रतिक्रो नेन संघना आवा अन्य कोई पण महर्षिनी हशे के केम रे ते सवाछ याय छे. आग्री नेन श्रीसंघ तो खेरखर बडमागी न छे. आजे तेओश्रीनी स्वहस्ताक्षरी त्रीस प्रतो मछी छे. ए आ नेन संघ माटे न निर्दे पण गुजरात अने राष्ट्र माटेनी एक गौरवप्ण घटना छे. एक तपरवी त्यागमृतिना हस्ताक्षरो ए कोई एक व्यक्ति के समाजनुं नहीं पण समप्र प्रनानुं राष्ट्रीय घन छे. अने ए रीते न एनुं जतन थतुं नोईए.

मुनिवरश्री पुण्यविजयजीनो फाळा

अहीयां मार सहर्ष फहे तुं लोईए के उपाध्यायजीनी स्वहस्ताक्षरी प्रतिको के अन्य साहित्यने मेळववानुं महरपुण्य श्रेष्ठ संशोधक, विद्वान मित्र मुनिवर श्री पुण्यविजयजी महाराजने फाळे जाय छे. अने हलु तेओ आपणने घणुं घणुं नतुं आपवाना च छे. तेओश्रीन उपाध्यायजी उपर अथाय गुणानुराय छे, तेथी तेओ वरसोथी उपाध्यायजीनी प्रन्थसामधी आदि अंगे मिक्त अने खंतमयीं पुरुपार्थ करता आध्या छे.

ते उपरांत उपाच्यायजी रचित प्रत्थोना सैशोधन अने प्रकाशनमां प्र्यपाद प्रीदप्रतापी स्रिस्प्राट् आचार्य थ्री विजयनेमिस्रीश्वरजी महाराज साहब तथा तेमना परिवारनो फाटो सहुथी बधु प्रशंसा न धन्यबाद मागी छ तेवा छे.

उपाध्यायजीना साहित्य अंगे कंईक

कोई पण महापुरुपनी साहित्यकृतिओ ए तेमनुं जीवन, तेमनी प्रतिमा, तेमना जीवननां उदात तस्वो, यहुश्रुतता अने तःकाळीन परिस्थितिनुं माप कादवानी आदर्श अने सचोट पाराशीशो गणाय छे.

ज्ञानमृतिं उपाध्यायजीनो चार चार माषाओमां रचायेछो विपुल अने समृद्ध प्रन्थराशि बोईए छीए त्यार तेओ नवसर्वननी रंगमृषि उपर एक सिद्धहस्त नटराजनी अदाथी न्याय, व्याकरण, साहित्य, अर्छकार, नय, प्रमाण, तर्क, आचार, अध्यात्म, तस्वज्ञान अने योगशाश्वस्वरूप छंग-भेगोहारा जाणे चित्तहार्श नृत्य करी रह्या होय तेबुं दृस्य खडुं करे छे. आम उपाध्यायजी जुदे जुदे प्रसेगे ज्ञावं रूपे देखा दे छे. एक वखते नव्यन्थायनी करूम हारा कठोर-कर्कशताथी व्याप्त हृद्य जोवा मछे छे, ज्यार वीजी वखते काव्यप्रकाश, अर्छकारचूहामणि आदि साहित्यार्छकारिक कृति-ओनी वृत्तिओ हारा मृदु अने मुकुमारताथी परिष्ठावित हैयानां पण दृशेन थाय छे; त्यारे कवि मव-मृतिनी 'वजाद्य कठोराणि मृदुनी कुसुमादिष '-ए उक्तिनुं स्मरण थई आवे छे.

वराग्यकल्पलता अने वैराग्यरित जेवी वैराग्यमय रचनाओ द्वारा तेमना हैयामां शान्तरसनी अने करुणानो गंगा--यमुना जेवो केवो स्रोत बहेतो हशे ते जाणी शकाय हे.

अष्टसहस्री विवरण जुओ, अने तमने उपाच्यायजीनी सोळे कलाए खीली ऊँठली विद्वत्प्रतिमानां तेजोमय दर्शन थरो ने मुखमांथी धन्य! अति धन्य! ना उद्गारा सरी पडरो. दार्शनिक शिरोगिंग एक श्वेताम्बर साधुए दिगम्बरीय कृति तेमज जैनेतर कृति उपर चलवेली प्रीढ कलम, ए तेओश्रीनी हार्दिक विशालता, उदात्त विचारो, सामाना शख द्वारा ज सामाने जवाब आपवानी अने परकीय प्रन्थो-द्वारा स्वसिद्धान्तोनुं समर्थन करवानी तेमनी लाखणिक कुशळतानुं अजोड दशंत पूरं पांडे ले.

तेओश्री विरचित के प्रत्वित अध्यास अने योग विषयक प्रभ्यो जोईए छीए त्यारे, तेओ एक सिद्ध योगी तरीके आपणी समक्ष खडा थाय छे. जैनेतर प्रम्थ पातंजलयोगदर्शन उपर टीका रची जैन योगप्रक्रियानुं समस्व बताववा साथे तेमांनी अपूर्णताओ दूर करवानुं तेमनुं साहम जोईए छीए त्यारे तेओश्रीनी सर्वीगी प्रत्युत्पन मेधाने नतमस्तके भावांजिल अपाई जाय छे।

वेदान्त प्रन्थो उपर टीका करवानुं खेडेलुं साहस, ए एमणे दार्शनिक क्षेत्रे साधेली ज्ञानसिद्धिनो एक सबळ पुराबो छे.

एमनुं जीवन-कवन जोतां टूंकामां एक वस्तु फलित थाय छे के आव्यात्मिक प्रवणता ए ज तेमनो अन्तश्चरप्राण हतो अने सद्धर्मतस्वप्रचार ए ज तेमनो वहिधर प्राण हतो.

अहीं मारे सगर्व कहेतुं जोईए के, मारी अल्प जाण मुजय, कोई दिगम्बर के जैनेतर विशन जैन श्वेताम्बर दार्शनिक प्रम्थ उपर टीका—विवरण करवा शक्ति के उदारता बनावी होय, तेवुं जाणवामां नधी. उयारे स्वेताम्बरोए केटलाये जैनेतर कृतिओ उपर अने दिगम्बर कृति उपर पण विविध टीकाओ रची पोतानी विशास्त दृष्टि अने उदारतानुं ज्वलंत उदाहरण पूरुं पाडचुं हे ध्यारे उदार कोग हो ने संकृतित कोण हो, तेनो निर्णय करवानुं वानको उपर छोटुं हुं. बीजो एक विशिष्टता ए मीनवी रही के आज सुधी साहित्यक्षेत्रे संस्कृत-प्राप्तत प्रन्थोना गुजराती अनुवादो गय—पद द्वारा थया हो, पग एक गुजराती भाषानी पयरचनानी अर्थ जिटलताने समजावया संस्कृत भाषानां टीका रचवी पटे ए गुजराती भाषाना पयमय क्षेत्रे एक अपूर्व ने नीधपात्र घटना हो. उपाध्यायजीना 'इल्यगुण पर्याय रास' प्रन्थ माटे आवुं बन्धुं हो.

अरे, गुजराती कृतिओने समजता गुजराती अनुवादी पण लखाया है.

उपाध्यायजी भगवाननी कृतिकोमां पण केटलीक कृतिको विशिष्ट क्यान धरावे हो. एकांधी अहीयां सर्वोपयोगी कृति तरीके ये कृतिकोनो उन्हेन्त करी शकाय: एक हे जानसार, अने दीको है अध्यानसार, आ कृतिको संस्कारसाहित्यमां मूर्णिय स्थान धरावे हैवी हो. आ कृतिको जैन उपगंत जिल्हर समाजने पण अत्युपयोगी छे. आ कृतिओ विश्वने कृत्याणनो साचो राह चींवे छे, जीवनने उच्चेंगामी वनाववा माटेनी मुचार प्रक्रिया रज् करे छे. खेरखर, वर्तमान युगनी प्रवा माटे आ अणमोछ मेट छे. सहु कोई माटे ए मुवाच्य अने मुपच खोराक छे. ए जोतां मारप्र्क कहेवानुं मन थाय छे के छोक्नसमृहमां आ प्रन्थनी हथुमां वयु प्रतिष्ठा थवी जोईए, अने आने सर्वमान्य अने सर्वप्राग्न करवा माटे 'गीता 'नो जेम आना उपर मिन्न मिन्न पद्धति अने विविध दिष्कोणथी, मुंदर शैंछी अने छोक्मोग्य मापामां अनुवादो, विवेचनो ने ज्याख्याओ पण थवां जोईए. अने एना प्रचारने ज्यापक बनाववामां सहुए मागीदार बनवुं जोईए. अणु—हाइड्रोजन अने कोबान्ट बोम्बना आरे आवींने उमेछा विश्व माटे अध्यापबादनां प्रचण्ड बळोने सखर जाप्रत करवां च जोईए. अने ए माटे आध्यापिक सिद्धान्तोनो छूट्थी बधुमां बधु प्रचार थवो जोईए. आवा सफ्छ प्रयत्नोहाग ज मानवजातनुं अज्ञान घटाडी शकाशे, आत्मवादने दवावां रहेछां मौतिकवादनां परिवळोने नार्था शकाशे अने फछतः मानव-चेतनानुं तेजोमय अर्व्वाकरण साथी शकाशे.

अहीयां प्रसंगोपात्त एक आंतरवेदना जणात्रुं के आजना विद्वानो अने शिक्षित वर्ग परदेशी विद्वानोनां नाम अने कामने जेटछं लाण छे, तेटछं आ म्मीना महापुरुपोनां नाम अने कामने लाणतो नथी; आ एक कमनसीव ने शरमलनक घटना छे. अरं ! खुद गुलरात्तना ल विद्वानो पोताना ल घरआंगणे प्रकटेछी आदी विज्ञ विभ्तिने कामथी तो पछी, पण नामधी पण व्यार न लाणे, त्यार आन्तरप्रान्तीय विद्वानोने तो आपणे छुं कही शकीए !

धीनी महादुःखनी वात ए छे के आपणा दिशनो बीना धर्मो अंग सार्ह ज्ञान धरावता है।य छे, व्यार पोताना आंगणे व रहेछा, गुलगता प्रवाना उन्हर्पमां सर्वोत्तम अने अलोड फाळो आपनार नैनधर्म अंगे के तेमना साधुपुरुषो अंगेनुं ज्ञान मेळवत्रामां खूब खूब पछात रह्या छे. अंर, तेओनुं घणीवार तो ओरमाया पुत्र जेनुं ज बछण कीवाय छे. हलारो वर्षथी बीनता नैनधर्मना ज्ञानना अमाने गुजरातना शिक्षण-विभागमां चाछता गुलरानी आदि भाषानां पुरतकोमां, अने अन्य साहित्यमां पण, व्यां व्यां मगवान महावीर के जैनधर्म विषे छए्युं छे त्यां त्यां दम विनानुं, छीछरं छए्युं छे अने केटलीक वार तो धर्मना मर्मनी समलणना अमाने खोटां विधानो करीने अन्याय पण क्यों छे; लाणे-अलाणे खोटी हकीकतो रज् थई गई छे. आ वधानां कारणोनी सभीक्षानुं आ स्थान नथी, परंतु विद्यानोने मारी सानुरोध प्रार्थना छे के, तेओ ऊंडा ऊतरे अने छखवा पहेलां जैन विद्यानोनो संपर्क साधा, हकीकतोनी चोकसाई करी पछी छखे, छए्या पछी पण मुयोग्य विद्याने बतावी पछी मुहित करे, तो अन्याय थवा नहीं पामे. आहा राखीए के हवेथां तेओ पोतानी ज्ञानसाधनामां जैन विद्यानो, किवेथो ने प्रन्थकारोने लक्षर स्थान आपने.

सपाध्यायजी महाराज ए परमारमा महावीरदैवना एक साचा अने शिस्तपाछक सैनिक हता,

अनेक गच्छो, संप्रदायो अने मतभेदोनां मोजांओथी घृषवता जैनकासनसागरमां तोफान चढेली धर्म-नीकाना ए साचा मुकानी हता.

उपाध्यायजी महाराजे पोताना जीवननां वधांय वपीं, जीवननुं सचकुं मुख, जीवननी तमाम कमाई जैनशासनने अपण करी दीधां हतां. जीवनना अन्तिम वर्ष मुधी साहित्यसर्जन, शासनसेवा अने धर्मरक्षाना खास देनार ए वीर पुरुप आपणी समक्ष सेवा, स्वार्षण अने पुरुपार्थनो आदर्श नमूनो म्कता गया छे. शासनमां बुहिमानो घणा पाके छे, परंतु फर्तव्यपरायणो अने नव्य सर्जको गण्यागांठचा ज पाके छे. उपाध्यायजी एक सर्जक अने क्रान्तिकारी पुरुप हता, तथी तेओश्रीए मार विट्यानो-आन्मभोग अने मुश्के छीथी मेळवेल सिहि ओने टकावी राखवा अपूर्व साहित्य सर्जन कर्युः, ए साहित्यनुं अत्ययन-अध्यापन ने प्रचार थाय ए माटे श्रीसंघे ' यशोनियापीठ ' जेवी एकाद संरथा रूभी करवी जोईए.

आजे गौतिक विज्ञान अने राजकारण ए ज जाणे जीवन में पूर्णिवराम होय, एवं। भावना धने मान्यता विश्वमां मजबून थई बंठी छे. बळी, प्रजानुं मानस अनामवादां अने तेरी विनारोधी सतत घेरातुं जाय छे. बीजी बाजु प्रजाना नेताओं अने प्रनारक साधनो तरफर्थी मात्र गौतिक साधनोनां सर्जन, संवर्धन के विवर्धनमां ज प्रजानी मुख-शांति अने आवादीनी सिद्धिओं समाणेली छे — आवी जोरशोरथी थई रहेली व्यापक उद्घोषणाओं हारा प्रजाना हृदय अने मगजमां सतत भयंकर विषयात थई रहाते छे. प्रजा धारमवाद के अध्यानमवादना कन्याण मार्गधी दूर मुद्दर हृदरेखाती जाय छे आ रीते ज्यारे भारतीय संस्कृतिनी भन्य प्रकाश अवराई रहाते छे, त्यारे खंरलर, आवा महर्गिओंनी आर्थ वाणी ज प्रजाने उगारी शक्को. कारण के उपाध्यायजी भगवानशी बाणी मानवजानमा साचा कर्तज्यने चीघे छे, मानवनी मानवताने समजावे छे, विश्वने प्रेरक प्रयाम आगे छे, भगल अने क्रत्याणना पवित्र राजगीनुं दर्शन करावे छे. माटे क्षेमनी बाणीनो खून स्वृत्व प्रचार थयो जोईए.

आजीवन सर्वांगोपकारी। पृथ्यपाद गुरुदेवोनुं संस्मरण अने आ कार्यमां महायक धनार दातावधानी न्याय-व्याकरण-साहित्यतीथे जय'नन्द्रविजयजी तथा सुनिश्री वानस्पतिविजयजीनी याद दो भुलाय ।

अन्तमां सरस्वतीना द्रपापाव, गुरूचरणकमत्रमा असंद उपासक, सामग्दर्गन-ज्ञान-वारिवना अनुपम आराधक, महान विचारक, महानत तस्वितक, बाचकवर महाराज्याम न्यायिक्याम्य न्यायाचार्यने श्रमे तेमनी स्वपर कन्याणकारक प्रज्ञाने अगणिन वेदन !

> यसंतर्पन्धी २०१३, अनदाबाद

-यशोतिमय



अनुक्रमणिका

बामुख प्रकाशकतुं निवेदन संपादकीय निवेदन मुनिधी पुण्यविजयजी मंत्रीयो

मुनिधी यशोविजयजी

श्रीयशोविजय जीवन-कवन दर्शन: विभाग पहें छो

गुणस्तुति अने जीवन - कवन

	ચુળાંજીલ અને ગાંધન	- कृष्ण	
	विषय	छेस्रक	पृष्ठ
2.	उपा. श्रीयग्रीचिजयजी गुणस्तुतिः	उपाध्याय धीमानविजयजी गणिवर	१
₹.	श्रीयशोविजयोपाध्यायगुणस्त्यनाष्टकम्	शुनिध्री जयानन्दविजयजी शतावयानी	ર
₹.	महोपाध्यायश्रीमद्यशोविनयनिद्रणिवय्योणां गुणस्तुत्यएकम्	मुनिधी हैमचन्द्रविजयर्जा	ર
ષ્ટ.	थीमद् यशोविजयजी गुणगीत	भुनिश्री यशांविजयजी	S
	छेखसंप्रह		
Į,	प. उपाध्यायजी भगवंतनां वचनो एटले	आचाय्यी विजयोदयमूरिजी	ب
ર	8182113116C	आचार्यथी विजयलिशम्हिजी	9
રૂ	श्रामद् यद्योषिज्ञयजी महाराज अने बानमार – कीतन	भाचार्यभी विजयप्रशापमृरिजी	9,
ક	प. उपाध्यायजी महाराज आजे पण अजरक्षमुर छे	आचार्यथी विजयपर्मप्रिजी	१२
4	श्रीयशोधिजयजीनी जन्मभूमि कनोह	सुनिधी पुग्यविजयनी	१६
R	त्पाच्यायजा श्रीयञ्जावजयंती महाराज अने तेथोश्रीतुं अद्भुत व्यक्तित्व	पं. श्री कनकविजयजी गणि	१९
O	घाचक यञोचिजय	पं. श्री भद्रंकर्यिजयजी	26
6	श्रीयशोचिनयजी महाराजना प्रन्थोतुं अध्ययन	पं. श्री भुरंघरविजयजी	36
Q	उपाध्याय श्रीमद् यछोचिजयजी महाराज अने तेमनी शासनसेवा	मुनिधी जम्बूबिजयजी	Şo
१०	श्रीयशोघिजयजी महाराजनां यघननां रहस्यो अने विशेषवाशो	मुनियी भानुविजयजी	ગુલ
55	महाराज •	सुनिष्री विकमविजयजी	५१
35	न्यायदर्शननुं स्वरूप	सार्घीथी स्गावतीयीजी	L, L
13	महोपाध्यायूजीप क्रेरेको उपकार	सार्घाधी मञ्जूनाशीजी	Ęo
18	त्रमर यशोविजयजी न्यायाचार्यन वंदन	थी दसमुख मासविषया	દૃ બ
30	न्यायाचायन वंदन	त्रो. हीएलाल र. कापिंडचा एम्. ए.	66
3 4	ताकिक – हरियाळी	29	દ્દ
१७	याचकत्रशर्तुं वंश्रयुक्ष	2)	υŽ

१८	श्रीयशोविजयजी महाराजनी जन्मभूमि कनोडा	थी क्नैयालाल आईशंकर दवे	હર
१९	श्रीमान् यशोविजयजी	डा. मणवानदास म. महेता	७३
		एम्. दी. थी. एस.	01
२०	श्रीमद् यशोविजयजीनुं जीवन अने प्राणप्रतिष्ठा याने आपणुं फर्तव्य	धीदुत निर्मत	বে
२१	यशःप्रकाश	थी एवीलदास फेदारीचंद संपवी	९३
ર્ર	बे ज्योतिर्धरोनी मिलनज्योत	थी निवलाल मी. पादराकर	68
२३	पूज्य श्री. यशोविजयजी उपाध्याय	थी त्रिभोवनदास सहै(चंद	१०४
રષ્ઠ	अढारमी सदीना प्रसर ज्योतिर्धर	थी मोहनलाल दीपनंद चोश्ही	305
२५	महान् ज्योतिर्धर पू. उपा. श्रीयशोविजयजी	श्री फतेहगंद संवेरनंद	११२
२६	उपाध्यायजी महाराज अने तत्कालीन परिस्थिति	थी राजपाल मगनलाल वहीरा	233
30	न्यायाचार्य, जैनस्योतिर्धर महोपाध्याय श्रीयशोविजयजी	थी मगनताल मीतिचंद शाह	१२१
२८	श्रीमद् महोपाध्याय श्रीयशोविजयजी	हा. नायमदास नेगधीमाई	१२४
२९	उपा. श्री. यशोचिजयजीतं भव्य जीवन	धी नरोत्तमदास भगवानदास	१२६
३०	योगीम्बर श्रीमद् यद्योविजयजीनी द्यानदीपिका - ' द्यानसार' अप्टक	थी अनरनंद मावती दाह	१२०
38	मदो. श्रीयशोघिजयजीप जैन संघ पर करेलो उपकार	थी चंदिका शेमचंद्र गांधी	१३२
३२	घाचक श्रीयशोविजयजी, पमनी मूर्तिनो अनुवरणविधि	थी गोर्पनदास बीरचंद	१३५
33	न्यायाचार्य श्रायशायिजयनी, पमनी गूर्नेर	थी गोरधनदास वीरसंद	કૃષ્છ
	कृतिभोनी साल्यारी		
इप्ट	अढारमी सदीना मदान ज्योतिर्धर महोपाध्याय	भागार्वधी विजयपत्रमृद्धिं।	\$60
	श्रीयद्मोविजयजी		
34	अढारमी सदीना मदान ज्योतिर्घर मदोपाघ्याय		
	श्रीयशोविजयजीकृत अन्यो	n n	\$ 20
38	जैनदर्शनतुं चितनकाव्य 'गानसार'	भी भी. के. शाद	7.0°
श्रुष्ठ	जैनसिद्धान्त अने संस्कृतिनो साचा प्रचार	मुनिधी मनग्बरपरी	२१४
3,5	श्रीमद् यशोविजयजी महाराज	मुनिधी भईक्रविजयभी	२१६
36	श्रीमद् यदोविजयजी	धी मोहनचान दर्गानंद देगाई	२ २०
So	"	धी नायरुमार मरानी	550
धर	श्रीयशोविजयजीकी जीवन - कार्य रूपरेमा	षं, भी मुगलालाः। संपरी	કર્ં
४२	श्रीमद्यदोचिजयवाचकानां वैदुष्यमाध्यान्मिकन्यं च	वं, श्री माग्यस्य चं	२३३
83	सुजसवेली भास - मृत	मुनियामी कानिनंदक्यकी	554
કક	मुजसबेर्हानो सार तथा टिप्पणो	मुनिधी यशीरिक्यरी	580
8.4	उपाध्यायजीनां वे अप्रसिद्ध गीनां		5,4,4
કક	नयचक	मुनिधी सुम्पवित्यक्ष	5,43

विभाग वीजो

बन्य विषयक निवन्धो

Ş	यरुणन्महेन्द्रो मयुराम्	हा. वायुदेवशरण अप्रवाल	3
	अध्यात्मतत्त्ववेत्ता श्रीमद् देवचन्द्रजी	थी अगरचंद नाहटा	9
	श्रीयशोविजयउपाध्यायकृते तस्वार्थगीवके-	थी भंदरहाल नाइटा	२६
	विवेचक - श्रीमद् ज्ञानसारजी		
ક	श्रीतत्त्वार्थगीतम् – बालावबोघ	27 29	38
	पू. उपाच्याय श्रीमेघविजयजी गुस्फिता-शर्दद्गीता	पं. श्रीरमणिक्षिजयजी गणि	કડ
	'पंचाख्यान' गत - यक - नालिकेर कथा	हा. मोगीलाल ज. संहिसरा	85
	त्रिपष्टिश्रलाकाना प्रथम पर्वना प्रथम सर्गतुं - समाजदर्शन	र्था. जयन्त प्रे. ठाकर एम् ए कोनिद	
6	अहिंसायमें अने तेनी संस्कृतिना विकासक्रममां उपयोग	थी प्रहाद चन्द्रशेखर दीवानजी एस्. ए. एल. एल. एस.	६१

*

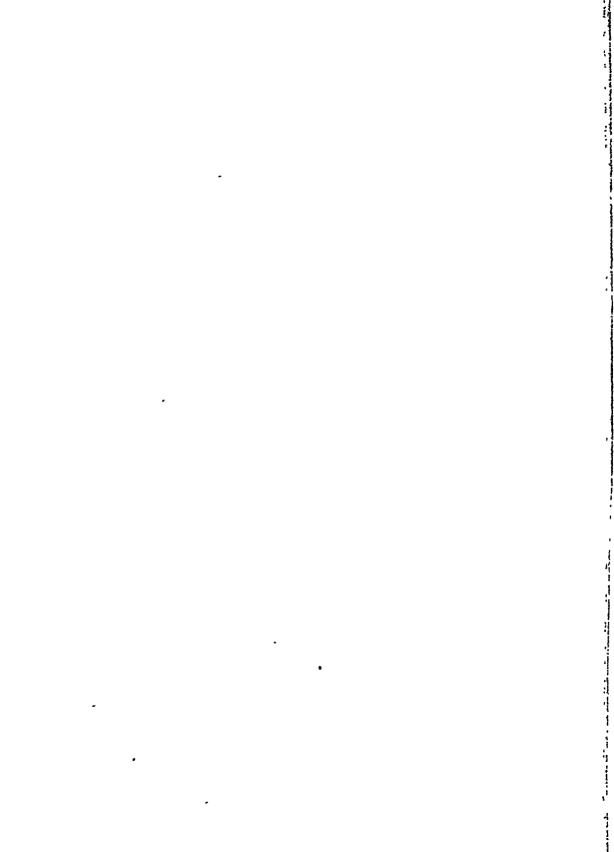
प्. इ. श्रीयशोविजयगुरुमंदिर मतिष्ठा

अने

'श्रीमद् यशोविजय सारस्वत सत्र'नो हेवाछ

ş	मुंबईनी आदा उजवणीनो कार्यक्रम	गुंगानुबादसमिति सुम्बई	96
	१ गुणानुवाद महोत्सव		
	२ श्रीयशोविजयजी गुणगीतो	धी पादराकर	
	३ ऊपाध्यायजीतुं समारक	जनप न्न	
ર	इमोई गुरुमंदिर प्रतिष्ठानी स्वागतपत्रिका	दमोई जैन थीयंघ	66
3	श्रीयशोवितय सारस्त्रतसत्र पत्रिका नै. १	थीयशोविजय सारस्वत सत्र समिति	80
ષ્ટ	श्रीयशोचित्रय गणिवरनी मूर्तिप्रतिष्ठानी कंकोत्री	डमोई चैन थीसंघ	९५
6	चलो डमोई [पोस्टर]	39 99	96
દ્	थीयशोविजय सारस्वत सत्र महोत्सव-	सत्र स्वागत समिति डमोई	९९
	निमंत्रणपत्रिका		
.6	प्रतिष्ठा अने सत्रसमितिनां नामो	27 20	१०२
6	उपाच्यायजी महाराजनी मन्य मृतिंप्रतिष्ठा तथा	5 -	१०२
	. श्रीयद्योविजय सारस्वत सत्र - पूर्ति	'र्वन ' पत्रमोधी	१०४
Q,	श्रीयशोविजयजी झान – साहित्य प्रदर्शनतुं	'केन ' पत्रमांधी	११८
	उद्घाटन		
१०	सबे पसार करेडा ठरावी	35 23	११९
११	र मोईतुं सुबद समायान	27 <i>2</i> 3	१२०
	-	y -	

१२	स्वागत प्रमुखतुं घक्तव्य	वा यासर्वंद जेठालाल	१२५
१३	सत्रउद्घाटनप्रसंगतुं वक्तव्य	श्रीप्रसन्तमुल यदानी	१२६
ર્પ્ડ	सत्रना प्रमुख - दार्शनिक पंडित श्रीईश्वरचन्द्रजीनुं प्रवचन	प. थी इश्राचंद्रजी	1,26
१५	आचार श्रीविजयधर्मस्रिजी महाराजनुं प्रवचन	ं जैन ! पत्रसंधी	१३५
१६	श्रीयशोविजयजी महाराजनुं प्रवचन	11 11	१३७
3,6	सत्र प्रसंगे आवेला लेख - निवन्धोनी यादी	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	7.8%
3.6	सारस्वत सत्र गीतगुंजन	थी पादराकर	रंदर
१९	धन्यवाद	तिन पत्रना तंत्रीक्षं	7,45
२०	सत्र तथा मुनिजी उपर सफळता इच्छता अने अभिनंदन आपता आवेला संदेशाओ		ર્ધક
રશ	श्रीयशोविजयसारस्यतसत्रनां संस्मरणो	डा. थी. भोगीलाल ज संदेगरा	262
२२	श्रीयशोषिजयसारस्वतसवनां संस्मरणो	धी नागरुमार ना. मकःनी	3.63
२३	श्रीयशोभारती प्रकाशन समिति पत्रिका	प्रकाशन मानिति यदोदरा	700
ર્ષ્ટ	श्रीमद्यशोविजयजीरुत ग्रन्धोनी यादी	मुनिधी यहोविजयकी	१९३

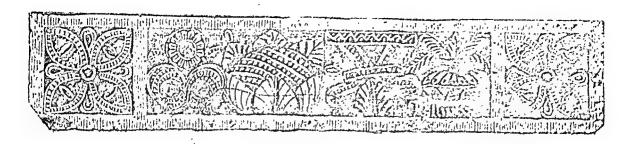




ન્યાર્યાવદારદ, ન્યાયાચાય, પ્રફ્રાંતિના મધાન તંતાંતઘર, સરત્વતી હત્યાં સાદ સિહકવિ, પર્કદોનાનાવ્યાવ, ન્યાય, વ્યાકરણ, સાહિત્ય, ક્યાંકાર, જન્દ તત્ત્વજ્ઞાન, કથા, આચારાપદેશ, અપ્યાય્મ, યાંગ આદે દર્વા બહોવપો ઉત્તર સંખ્યાબન્ય પ્રત્યા સ્થનાર, અદ્ધૃત વ્યક્તિશાહી, પૃત્યવાદ પ્રાવાન્સર તૃંગ • મહાપાધ્યાય ૧૦૦૮ શ્રીમદ્ યરાવિજયછ મહારાજ



ન્યાયવિશારક ન્યાયાચાર્ય મહાપાધ્યાયજી ૧૦૦૮ શ્રીમદ્ યસાવિજયાજી મદારાજના સમાધિર્મીકરમાં પધરાવેલી જ પવિત્ર ચરણુકમળ પાદુકા જ



न्यायविशारवन्यायाचार्यताकिकशिरोमणि महोपाध्यायश्रीमद्यशोविजयजीस्तुतिः

[स्तुतिकारः उपा. श्रीमानविजयजीगणिवरः]

सत्तर्केककेशियाखिळदर्शनेपु

मूर्द्धन्यतामधिगतास्तपगच्छधुर्याः ।

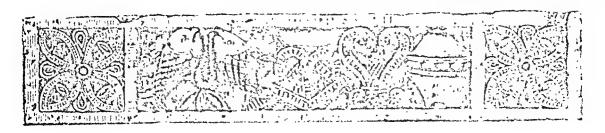
काश्यां विजित्य परयुधिकपर्षदोऽद्या -

विस्तारितप्रवरजैनमतप्रभावाः ॥ १ ॥

तर्कप्रमाणनयमुख्यविवेचनेन
प्रोद्बोधितादिममुनिश्रुतकेवलिखाः ।
चक्रुर्यशोविजयवाचकराजिमुग्व्या
प्रन्थेऽत्र मय्युपकृतिं परिशोधनाद्यैः ॥ २ ॥

- (૧) જે મહાપુરુષ સત્યતક ને કરવાવાળી સૂક્ષ્મ ખુદ્ધિવ3-અથવા ઉત્તમ તાર્કિક મેં થાના પરિશીલનવ પ્રેપર બનેલી ખુદ્ધિથી-સમગ દર્શનામાં શિરામિણલાવને પામ્યા છે, તપાગવ્છમાં અગ્રેસર છે, કાશીનગરમાં અન્ય દર્શનીઓની સલાને જતીને શ્રેષ્ઠ-સવેત્તિમ એવા જૈનમતના પ્રભાવને જેમને વિસ્તાર્યો છે,—
- (૨) અને જેઓ શ્રીએ તર્ક, પ્રમાણ અને નય આ ત્રણે ય પદાર્થીથી પ્રધાનપણે કરેલાં શાસ્ત્રીયતત્ત્વાનાં વિવેચનાવઉ કરીને પૂર્વકાળના શ્રુતકેવળીઓનું સ્પષ્ટ સ્મરણ કરાવ્યું છે; અને જેઓ શ્રીએ આ બંથનું પરિશાધન કરવાવઉ કરીને મારા પર ઉપકાર કર્યો છે, તે શ્રીયશાવિજયાપાધ્યાય વાચકસમૂહમાં મુખ્ય ગણાય છે.

[ઉપા^{દ્}યાય શ્રીમાનવિજયગિણવરે વિ. સં. ૧૯૭૧ની સાલમાં રચેલા 'ધર્મ'સંગ્રહ' તામના ગ્રંથની પ્રશસ્તિમાંથી, શ્લાે. ૧ઃ–૧૧]





भीगौतमस्यामिने नमः । श्रीमद्यशोविजयोपाच्यायग्रणस्तवनाष्टकम् ।

[वसन्ततिसका]

प्रदामवादिविक्यो मुनि येन लन्यः, पादी नमन्ति विवुधा नु विवादमुक्ताः । ध्यायन्ति नाम हृद्ये गुणिनो गुणजा, यम्याद्भुतं सुचिततं सुनयो नुवन्ति ॥ ॥१॥ श्रीमःसमो न मुदने जिनराजमको, यहभैममें निस्तिछं निहितं स्वचिते । शोणांश्चनंत्र विहतो ममतान्यकारो, विद्यामवाप्य मनसा वचसा हि तेन ॥ ॥२॥ जन्मोद्धि तरितुमाञ्च सदा कियावान् यज्ञानसिन्युतरणे विरला इलायाम् । जीयाजिनागम-ग्हस्यभरः युतकैः सञ्ज्ञानदर्गनचित्रिनिषेद्धि तस्य ॥ ॥३॥ र्य्यं व्यथायि बहु येन सुतर्कशास्त्रम् । गुर्वीश्वीरजिनशासनर्द्धणार्थे वेदान्त्रवीद-विपटादिविचाग्दक्षं नन्दन्ति वीक्ष निपुणास्तमहं नमामि ॥ ॥४॥ मोदं कुरूं ऽजनि 'कनोडुपुंर' मुजन्म, जन्या पिता विहितवान् यशवन्तनाम । यातो हि तेन यशसाय इह प्रसिद्धिः नन्दन्ति तस्य जनुषा जिनशासनानि ॥ ॥५॥ द्रस्या शिवं श्रमणसङ्खनाय सद्योऽ— इयन् शेषुपीजविभया जिंद्रमान्धकारम् । यस्य किया कल्पिकी घविनाशिका जा-नैः सर्वदा हितकरित्रदि स जीयात्॥ ॥६॥ यस्य श्रिया सक्त उदाखरहस्यमय्या घोशोमितो भविकसाश्चलनाः मकोपः । चिज्ञानवैभववरं प्रवरं मुनीनां जन्तोहिंतं शमयुतं सततं तमीदे ॥ ॥७॥ यञ्जानगौग्वविय्तिसरोऽवगाद्य सेवारता बुधजनाः सुखिनो भवन्तः। विचाविभाविहतमोहतमन्त्रपन्त्र - नः संभवन्ति भुवि नो जननाय मुक्ताः ॥ ॥८॥

> अवयानकार प्रथ धुनिश्री पशोविषयान्तेत्रासी शतावधानी सुनिश्री जयानन्द्विजयजी न्याय-स्याकरण-पादित्य तीर्य





॥ श्रीगौतमस्वामिनेनमः ॥ महोपाष्यायश्रीमद्यशोविजयजिद्गणिवय्यांणां गुणस्तुत्युष्टकस् ॥

[वैताछीयंटन्दः]

यशसा यस विश्वतात्मने निनर्धमैकनिवद्धचेतसे। विजयाय यशोऽभिधाय ते सदुपाध्यायवराय नौम्यहम् ॥ १ ॥ जितवादिगजेन्द्रसंहर्ति परितः प्रौदविभाविभासितम्। नगरेकविपश्चितं न को भुवि जानाति सुतर्कपण्डितम् ॥ २ ॥ मुनिना निजजन्मनाऽमुना महनीयेन 'कनोह' नामकम्। पुरमत्यधिकं पवित्रितं कुरुते किन्नहि सत्समागमः॥३॥ स्पृहणीयगुणं नयाभिधं विजयान्तं गुरुमाश्रितः सुधीः। तदुपासनया प्रपेदिवान् विमलज्ञानविभासिसिक्तयाम् ॥ ४ ॥ नगरीं श्रुतसिद्धिसाधिका-मथ काशीमधिगत्य मण्जुलाम् । चिरमेकमनाः सरस्वती-मुपतस्थे तमसो निवृत्तये॥५॥ समशास्त्रविमर्शकोविदः सदनेकान्तमतान्धिपारगः। हितकारिवरोपदेशकः किमु धन्यो न मुनीश्वरोऽवनी ॥६॥ रचिता विविधा गुणोज्ज्वलाः कृतयस्तर्कवितर्कमण्डिताः। विदुषा महता सुदुर्भहाः विदुधा याभिरहो चमत्कृताः ॥ ७ ॥ प्रश्मादीद्रगुणीवसंवृतः । जिनदर्शनतत्त्वदीपकः भविकवनयोधदायको गणिराजो नितरां विराजताम्॥८॥

[श्रीमन्नेस्यमृत देवचरणाव्जचश्चरीकायमाणी-हेमचन्द्रविजयो मुनि:]





ન્યાયવિશાસ્દ્ર, ન્યાયાચાર્ય સ્વ. મહાપાધ્યાય ૧૦૦૮ શ્રીમદ્ યશાવિજયજી ગુણુગીત

[शद-ऋषुपनि शषव शक्तशभ]

શ્રી યશેષિજયછ તારું નામ, કલ્યાણકારી મંગલ નામ, મંગલ નામ મંગલ નામ, વિદ્યાવર્ધક તારું નામ. શ્રી ૧ ન્યાયવિશારદ મનવિશરામ, પાયા પદ તે કાશી ઠામ, ચાંચ પાઠકપદ અભિરામ, આપા મુખ શાંતિ આરામ. શ્રી ૧ જનશાસનના છે৷ શાણુગાર, કીધી સેવા અપર પાર, શાસ્ત્રો રચી કીધા ઉપકાર, કહેતાં નાવે ગુણુના પાર. શ્રી ૩ કસરસ્વંતી વર દીધા સાર, કાવ્યા રચીયાં તે રસાળ, શ્રુતકેવલીના છે৷ અવતાર, સ્મરણ-મજન છે મુખકાર. શ્રી ૪ અજોહ પ્રભાવક મહાસુનિરાજ, શ્રદ્ધાંજલિ અપે જનસમાજ, 'સુયશ' વંદન લાખલાખ આજ, આપા આશોપ સીઝે કાજ. શ્રી ૧ પ

[सत्र प्रसंधे यवित्रेष्ट्रं भीत]

[३३ अनिश्री यहीविकय्छ]





पू. उपाध्यायजी अगवाननां वचनो एटले—

[લે: પરમપૂજ્ય વ્યાચાર્ય ૧૦૦૮ શીમદ્ વિજયનેમિસ્ટ્રીલર મહારાજન્તેવાસી પરમપૂજ્ય વ્યાચાર્ય શ્રીમાન વિજયાદયસ્ટ્રીલરજ મહારાજ]

૧. પરમાપાસ્યચરણ લગવત ઉપાધ્યાયછનાં વચના એટલે—

પ્રમાણ, નય, સપ્તભંગી, સકલાદેશ, વિકલાદેશ, નિક્ષેપ વગેરેના નિષ્કર્ષરૂપ સ્વરૂપ પ્રદર્શન સાથે પદાર્થોના સંસ્કૃત–પ્રાકૃત અને પ્રચલિત લાકભાષામાં ગદ્ય-પદ્યગભિ'ત ઐદમ્પય' વિચારપ્રદર્શ'ક દીવાએા.

ર. મગવંત ઉપાધ્યાયજીનાં વચના એટલે—

શ્રીજિનેશ્વરદેવ પ્રત્યેના અવિહડ ભક્તિરસ પ્રકટાવનાર પીયૂષના ઝરાએા. બાધિ-ખીજના અંકૂર ખીલવનાર પુષ્કરાવત'મેઘ. સુવર્ણ'મુદ્રામુદ્રિત टंकशाळी वचना. અબાધિત સિદ્ધાન્ત વાકયો.

3. પ્રગવંત ઉપાધ્યાયજનાં વચના એટલે—

સમ્યગ્દર્શ'નની નિમ'ળતા અને દઢતા કરાવવા સાથે પ્રભાવશાલી પ્રભુશાસન ઉપરના અસીમ પ્રેમભાવ અને બહુમાનને ઉત્તેજિત કરનાર પરમસાધના.

૪. મગવંત ઉપાધ્યાયછનાં વચના એટલં—

પદે પદે ન્યાયકાેટિની ઉચ્ચકક્ષાનું નિષ્કર્ષ, પ્રાવચનિક–તાિક કે, કામ ચન્થિક, સૈદ્ધાન્તિક આદિ પરમસ્વરૂપ યાવત્ धर्मसेच समाधि પરમસમરસ ભાવ અને પ્રભુ સાથે समापत्तिरूप એકાગ્રતા પ્રાપ્ત કરવાની સરિહ્યુ.

પ. યગવંત ઉપાધ્યાયછનાં વચના એટલે—

શ્રુતદેવલી ભગવંતાના અમાપ શ્રુતસમુદ્રનું અવગાદન કરવાને મહાનાવ, આત્માને પ્રભુધમંથી રસવેષિત તામ્રના સુવર્ણભાવની જેમ, અઝર ચાંજ મજીદરંબથી રંજિત વઝની જેમ રંગાવનાર નિર્મળ નિરૂપમ રસકુંપિકાના હરા.

દુ. પ્રગવંત ઉપાધ્યાયજીનાં વચના એટલે—

મિશ્યાત્વરૂપ દુર્ગ મપવેતા લેકવામાં વજા, પદાર્થ તત્ત્વવિષયક-સન્દેહ, વિપરીત જ્ઞાન-અજ્ઞાનાદિ ગાઢ અન્ધકાર, તાહવામાં જળહળતા સ્થ્ય.

છ. મગવંત ઉપાધ્યાયજનાં વચના એટલે—

પૂર્વના શૂતકેવળી બગવંતાનું સ્મરણ કરાવનાર અથાગ પ્રતિભાશાહી વેભવ.

આવી આવી અનેક ઉપમાંએ અને સુર્વલધ્ય પ્રશંસાને પાત્ર લગવાન મહાપાધ્યાયછ શ્રીયરોવિજયછ મહારાજર્શીની વિશાલ અને આદર્શ પ્રતિજ્ઞા તા જૂએ કે.

स्याद्धादार्थः कापि कस्यापि शान्त्रे यः स्यान् कश्चिद् रुष्टिवादार्णवीत्थः । तस्याख्याने भारती सस्युद्धा में भक्तिस्यक्तेनांग्रहोऽणी पृथी वा ॥

ભાવાર્થ — દિશ્વાદ (બાર્સું ગ્રાગ્તાંગ) ત્રસુદ્રથી પ્રકટયએલ સ્યાદ્રવાદ પદાર્થપીયૃષ કાઈના પણ શાગ્તમાં કાઈપણ વિભાગમાં, જે હાય તેનું વ્યાખ્યાન કરવામાં, સ્યાદ્રવાદ ઉપર પ્રકટ ઉદલસતી ભીઠત હાલાથી મારી છુન્દિ—વાણી સ્પૃદ્રાવાળી જ વર્ત છે. ભિક્તિની સ્પષ્ટતાથી શાહા—વધારમાં ન્હાના—મ્હાટામાં, સૃક્ષમ—સ્પૃત્તમાં, અહ્યુ–વિશાલમાં કાઈ ભાતના આગ્રહ— તકાવત નથી.

આ હતી તેઓ શ્રીની વિકસિત ઉદારબાવના.

આવા અનેક ગુણુગણુસાગર લગવાન ઉપાધ્યાયછ મહારાજ અને તેમની વાણીને વારંવાર વ'દન.



અદર્શ જિલ

[લેખક : પરમપૂજ્ય વ્યાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજયલિંગ્સ્ટ્રીધરેજ મહારાજ]

तत्त्ववाणीप्रकादोन येन व्याप्ता घसुन्थरा।
तं यद्योविजयं नित्यं यदाश्चन्द्रं नमाम्यहम् ॥१॥
तर्कदर्शनवेत्तारं नेतारं मुक्तिवर्तमंनि।
वर्शनत्रयदातारं श्रीयद्योविजयं स्तुवे॥२॥
काद्यां प्राप्तं पदं येन रम्यं न्यायविद्यारदम्।
न्यायाद्यायं घरेण्यञ्च तं यद्योविजयं भने॥३॥

૧. ઉપાધ્યાય શ્રીયશાવિજયછ અહારાલ-

એટલે શ્રી જિનેશ્વરમહારાજના અનુપમ જેનશાસનના અનન્ય લક્ત.

ર. ઉપાધ્યાય શ્રીયશાવિજયછ મહારાજ-

એટલે સત્તરમી સદીના જૈન શાસનના વિધાધિએા સામે ઝઝૂમનાર એક અદિતીય વિજયી સુભટવર.

૩. ઘહાૈપાધ્યાય લાગવાન શ્રીયશાવિજયછ સહારાજા—

એટલે અકાટ્ય યુક્તિએાના ભંડાર, ચરઘ્રસત્તરી અને કરઘ્રસત્તરીમાં દત્તચિત્ત એક અનુપમ શાળુગાર અને શ્રીજૈનશાસનની ચમક વધારનાર શ્રીજૈનશાસનના શાહુગાર.

४. वासम्भवर श्रीयशाविकयण सहाराल-

એટલે શ્રીજૈનશાસનના સ્વમતત્ત્વાને ખૂબખૂબ ખીલવટ આપનાર અને વિસ્તારથી વર્લું વનાર તાર્કિક ચકવિતે. દ્રાદશારનયચક લન્થપ્રેણેતા શ્રીસલ્લવાદી આચાર્ય ભગવંતની ગાંખી કરાવનાર અપૂર્વ સાહિત્યના સર્જનહાર શ્રીજેનશાસનના સ્થંભરૂપવાદી.

प. न्यायविशारह सद्धापाध्याय श्रीयशाविजयण सद्धाराज-

એટલે ૧૪૪૪ ગ્રંથના કર્તા આગાય ભગવંત શ્રીહિરિલદસ્રીશ્વરજ મહારાજની જેમ આગમાનુસારી આગમમાં નહિ એવા અદ્ભુત વિચારાનું પ્રદર્શન કરાવનાર આગ્રાય ભગવંત શ્રીહિરિલદ્રસ્રીશ્વરજ મહારાજના લઘુભ્રાતા.

इ. न्यायायाय पाठकशिरोमणि श्रीयशादिकयण महाराज—

એટલે રૂપકાલ કારથી સંસારની અસારતાના ઘોતક દર્ણતોને યાજવામાં સિદ્ધપિની હરાળમાં આવનાર સત્તરમીરાઠીના એક અપૂર્વ કથાનિર્માતા.

૭. ૩પાધ્યાય શ્રીયશાવિજયજી મહારાજા—

એટલે સંસ્કૃત, પ્રાકૃત, માગધી, મારવાડી, મેવાડી, શુજરાતી આદિ ભાષાએ!માં રામાંચક કવિતાકાર, વિપુલ સાહિત્ય સમર્પક, જેનધર્મના એક મદાન ધારીપુરુષ.

એટલે જેનશાસનના અનેક વિરાધીઓની વચ્ચે જેનગાસનની સત્યવાતાને કવિતામાં રચી તથા મુક્તિ–પ્રમુક્તિવાળા બન્યા રચી, વ્યાખ્યાનની વ્યાસપીકપરથી ખુલંદ ધ્વનિએ વ્યાખ્યાના આપી, વિરાધીઓની જડ ઉખેડનાર, વિરાધીએ તરફથી થતા આકરા ઉપસ્રોં સહવામાં એક મહાન ધીરપુરૂષ.

- કપાધ્યાય શ્રીયશે\ત્રિજય છ મહારાજા—
 એટલે જિનશાસનના રંગથી જ એકસ્કત.
- ૧૦. મહાપાધ્યાય શ્રીયશાવિજયછમહારાજા—એટલ ખડાદના વિષયેહી સંદેવ અનાસક્ત.
- ૧૧. **નાચકપ્રવર શ્રીયરોાવિજય**જી મહારાજા— એટલે જિન્માગમનાં બારીક તત્ત્વાને વિશ્વદ બનાવનારી વિગ્રારહામાં અને પ્રચા-રજ્ઞામાં પ્રસક્ત.
- ૧૨. પાઠક શેખર શ્રીયશાવિજયજી મહારાજા— જોટલ દુનિયાના અન્ય ધર્મતત્ત્વાથી શ્રીવીતરાગકથિત તત્ત્વાજ સારબૂત છે એવી ચિહિમાં જ સંસક્ત.
- ૧૩. न्यायविशारह શ્રીયશાવિજયજી મહારાજા— એટલે ચરહ્યુસિત્તરી અને કરણ સિત્તરીના પરમ ઉપાસક દેાઈ એક મહાન વિરક્તયાેગી.
- ૧૪. ત્રાચકપદ વિભૃપિત શ્રીયરાવિજયછ મહારાજા— એટલે લવિક દૃદયાના હાર.
- ૧૫. ન્યાયાચાર્ય શ્રીયરાતિજયછ મહારાળ— એટલે વિશિષ્ટ સ્થનાકાર.
- ૧૬. પાઠકેયવર શ્રીયરોાવિજયજી મહારાજા— એટલે અસત્ય તત્ત્વાના અનુપમ ખંડનકાર.
- ૧૭. ન્યાયવિશારદ ન્યાયાચાર્ય મધાપાધ્યાય શ્રીયરાવિજયછ મહારાજા— એટલે પરમપ્રભાવક શ્રીહીરસ્ટ્રીશ્વરજી મહારાજાના સમુદાયના પંડિતસાર. એએમશીજીને અમારી કેદદાનુકાંદિ વ'દનગ્રેણિ



શાસનપ્રભાવક ન્યાયાચાર્ય ન્યાયવિશારદ મહાપાધ્યાય શ્રીમદ્ યશાવિજયજ મહારાજ અને જ્ઞાનસાર-કીર્તાન

[લેખકઃ-પરમપૂજ્ય આચાર્ય શ્રીમદ્દ વિજય પ્રતાપસૂરીદ્વરજી મહારાજ]



ગતમાં એ જ યાગીપુરુષા વંદનીય હાય છે કે જેઓએ અહિક, પાર-લોકિક-કાર્યોથી તટસ્થ (પર) રહી આત્મકલ્યાણ વાસ્તે આત્મપરિણતિને નિર્મલ બનાવી છે, ઊલયલાકથી પર-શ્રેયામાર્ગ અપનાવ્યા છે. એમના ગુણાનું કિંચિત્ સ્મરણ કરવું એ પણ મહાસૌભાગ્યનું ચિન્હ છે. ધન્ય છે તેઓને કે જેઓ સદા ય તત્ત્વદૃષ્ટિ એવા એ પુષ્યપુરુષની સાક્ષાત્ છાયામાં

આવ્યા હશે. જેનું આત્મસમરણ ખાદ્યા-અલ્યંતર, કેવલ અધ્યાત્મમાં જ અવિગ્રળ છે, એમનાં ચરિત્રની ભાવનાની (અંશ) ગણનામાં આપણે પામર મનુષ્ય આવીએ તો એ સફ્લાગ્ય છે. એ મહાયાગિ પુરુષાના જે ઉદ્દગાર એ જ આગમ છે. કેમકે જેમના અધ્યાત્મસ્વરૂપ ઓતપ્રાત છે. તેની જે કંઈ વચનાવલી નીકળે તે સ્વપરકલ્યાણકારક જ હોય છે. એમનું જે આચરણ એ જ ચરણાનુચારા. તથા જે શબ્દાવકે ગુંથી (સાંકળી) એમની પ્રવૃત્તિને લખાય છે એ ચૂરણાનુયાગ એમના વિહાર એના જ તીથ° શબ્દ તરીકે વ્યવહાર હાઇ શકે છે. જેમ,-" બીજું તીરથ સેવના સખી તીરથ તારે જેહરે, તેહ ગીતારથ મુનિવરા સખી તેહ શું કીજે નેહરે."-તથા સંસારના કારણરૂપ માહપર જેણે વિજય પ્રાપ્ત કર્યો એ જ પરમાત્મપદના અધિકારી છે. એ શાસ ઉક્તિ, તાત્વિક દેષ્ટિએ ખુદ શ્રી ઉપાધ્યાયજ મહારાજના આશયથી તાે એ છે કે "પરમાત્માની કેવળ ઉપાસના અને જપ (ધ્યાન)થી પરમા-તમપદ નથી મળતું, પણ પરમાત્મા-પ્રતિપાદિત (કહેલ) માગ^લ ઉપર ચાલવાથી પરમાત્મા થઈ શકાય છે. આવા અનેક ગુણુપ્રભાન્વિત પૃત્ત્ય ઉપાધ્યાયજનાં ગુણ ગાન કે પ્રશંસા માટે આ લેખિનિમાં એ શક્તિ નથી કે એ પૃત્રયશ્રીનાં ચરિત્રના અંગ પણ લખી શકે? તા પણ એમના ઉપર અંતરંગ જે ઉપાસના-ભાવ અને સદ્યુરના ચરણકમળ રજના પ્રભાવથી મને શ્રહા છે કે એમના ચરણરજના સેવક એની કૃપાથી જરૂર કૃતકત્ય બની શાંકે છે. પરમપૂજ્ય શ્રીમાન ઉપાધ્યાયજી મહારાજનું અગાધ પાંડિત્ય, એ જ્ઞાનના મહા-સાગર, તેમના વિશુદ્ધ ચારિત્રાદિ ગુણા આજે આપણી સામે તેમના સ્થ્લ દેહ ન છતાં એનું પ્રત્યક્ષ ચિંતામણિ રત્નતુલ્ય વાહુમય, અનેક વિષયાથી ભરપૂર અનેક શાસ્ત્ર ગંથા કહી ખતાવે છે. એ પ્રભાની છાયાના મને આંશિક સ્પર્શન છતાં એમના વિષે કંઇ કહેવું એ કેમ ખને ? ફકત મારા લાભ ખાતર એ ગુરુપદના આરાધન માટે કંઈક આ પ્રયાસ છે. એએાશ્રીના અધ્યાત્મવિષયક શ્રંથા પૈકી **જ્ઞાનસાર** મુખ્ય છે. એમના અનેક શ્રંથા પૈકી પૃત્તય ઉપાધ્યાયછ મહારાજના શ્રીજ્ઞાનસારના ગ્રંથ એ ખરેખર જ્ઞાનસાર જ છે. વસ્તુત: સ્વઅનુભવના જ ખજાના ભર્યો છે. તેમાં ળત્રીસ સ્ષ્ષ્ટક–પ્રકરણ છે જેમાં એક એક પ્રકરણ પૂર્ણ વિષયનાં છે.

તે વિષયો જે કે અન્યશાસમાં હોવા છતાં એતું સંકલત સરક્ષ અને રાચક શૈલીથી કરવામાં આવ્યું છે. એકંદર આધ્યાત્મિકદૃષ્ટિએ પ્રતિપાદન કર્યું છે એ જ તેઓની પ્રતિભા અને અનુભવ જૈનેતર ભિન્નભિન્ન અનેક મત દર્શનના શાસ્ત્રીય અનુભવ એ એમની સૃદ્ધમ-દૃષ્ટિ જણાઇ આવે છે. આ ગ્રાનસાર બંચ કેટલા આધ્યાત્મિક ઉચ્ચકારિના છે. એ ઉપાધ્યાયછ શ્રી પાતેજ ઉપસંહારમાં પાતાના જ આત્મવિશ્વાસે રજ્યુકાર થતા અવાજે જણાવે છે કે-

स्पष्टं निष्टङ्कितं तत्त्वमष्टकैः प्रतिपन्नवान् । म्रुनिर्महोदयं ज्ञान-सारं समधिगच्छति ॥

[उपसंहार स्त्रो. ५]

ખત્રીસ અષ્ટકા વહે પ્રગટ નિર્ધારેલા તત્ત્વને પ્રાપ્ત થયેલા સુનિ, જેનાથી મહાન ઉદય છે એવા શુદ્ધ ચારિત્ર તથા પરા સુકિતરૂપ જ્ઞાનસારને પામે છે.

આગળ એતું જ શાસાધારે પાતે પ્રમાણુ આ રીતે આપે છે.

" सामाइअमाइअं सुअनाणं जान निंदुसाराओ । तस्स हि सारो चरणं, सारा चरणस्स निव्नाणं "॥

સામાયિકથી માંડી ચોદમા લાેકબિંદુસાર પૂર્વ સુધી શ્રુતજ્ઞાન છે, તેના સાર ચારિત્ર છે અને ચારિત્રના નિર્વાણ છે. જુઓ એ જ પુષ્ટના આ એક વધારે પુરાવા.

निर्विकारं निरावाधः, ज्ञानसारप्रुपेयुपाष् । विनिद्यत्तपराकानां मोक्षोऽत्रैव महात्मनाम् ॥

[उप॰ क्हो॰ ६]

વિકારરહિત અને બાધારહિત એવા જ્ઞાનસારને પ્રાપ્ત થયેલા અને પરની આશા જેની નિવૃત્ત થઈ છે એવા મહાત્માઓને આ જ ભવમાં બન્ધની નિવૃત્તિરૂપ માક્ષ છે:—

તથા આ શ્રંથ ઉપર એઓશી એ ગુજરાતી ભાષામાં ખાલાવખાધ રુપ અનુવાદમાં કહ્યું છે કે " બાલિકાનિ લાળ ચાડવા જેવા આ બાલાવબાધ નીરસ નથી. પરંતુ તે ન્યાયમાલારૂપ અમૃતના પ્રવાહ સરખા છે." જેનેતરમાં ભગવદ્ગીતાના આધ્યાત્મિકનાન તરીકે આદર છે. કિન્તુ એ મંતવ્યમાં ઘણાં મતાંતરા છે. જ્યારે આ શ્રંથ તા તેની રચના પ્રોઢ છતાં સુખાધ, હદયંગમ અને સ્વાધ્યાય માટે ખાસ ભાવવાહી પ્રસાદરૂપ નાનના ઉપનિ-પદ્રૂપ છે. જેમ જેમ વાચન, મનન કરાય; તેમ તેમ એના આંધ્યાત્મિક અનુભવ અને સ્વસ્વરૂપરમણ બની શકાય પરંતુ—

केपांचिद्विपयज्वरातुरमहो चित्तं परेपां विपा-वेगोदकँक्कतर्कमूर्च्छितमथान्येपां क्विराग्यतः। लग्नालकंमवीयकृपपतितं चास्ते परेपामपि, स्तोकानां द्व विकारमाररहितं तज्झानसाराश्रितम्॥

[प्रशस्ति स्तो २]

અહેા! કેટલાએકનું મન વિષયરૂપ તાવથી પીડિત થયેલું છે, બીજાઓનું મન વિષના આવેગ સરખા અને તત્કાલ છે ક્ળ જેનું એવા કુતક – કુવિગ્રારવેડ મૂર્િલ થયેલું છે, અન્યનું મન કુવૈરાગ્ય– દુઃખગર્ભિત અને માહગર્ભિત વૈરાગ્યથી કરડેલા છે હડકાયા કૂતરા જેને એવું, એટલે કાલાન્તર જેના કટુક વિપાક થાય તેવું છે. બીજાઓનું ચિત્ત અત્તાનરૂપ ક્વામાં પડેલું છે. પરંતુ થાડાઓનું મન વિકાર ભારથી રહિત જ્ઞાનસાર વડે આશ્રિત છે.—

ઉપરના ઉપાધ્યાયશ્રીજીના અનુભૂત ઉદ્ગાર મુજળ—

'' विरलास्तद्रसास्वाद्विदोऽनुभवजिखया ''

[अनुभवाष्टक क्ष्रो० ५]

એટલે કે અનુભવરૂપ જીલ વડે શાસ્ત્ર રૂપ ક્ષીરના રસાસ્વાદને બાળુનારા થાડા છે. એટલે શાસ્ત્રાન તે ખાદ્ય છે, અને અનુભવ તે અંતરંગ ખાબત છે.

તા પછી હું આ ગંથનું માહાત્મ્ય શું કહી શકું?

આ ગ્રંથ રચના-સમાષ્તિ, ગૂજરાત સિદ્ધપુરમાં શ્રી મહાવીરનિર્વાણ દિવાળીને દિવસે પૂર્ણ કરતાં આજ શ્રંથાન્તે પૂજ્ય ઉપાધ્યાયજીએ પાતે જ કહેલું માહાત્મ્ય રજા કરી ગુણ-સ્તવના પૂર્ણ કરૂં છું.

"આ ગ્રંથ પૂર્ણાન-દઘન આત્માના ચારિત્રલક્ષ્મીની સાથે પાણિગ્રહના મહાત્સવ રૂપ છે. વળી આ શાસ્ત્રમાં ભાવનાસમૂહરૂપ પવિત્ર ગામયવડે ભૂમિ લીપી છે. ચાતરફ સમતારૂપ જલના છંડકાવ કર્યો છે. રસ્તામાં સ્થળે સ્થળે વિવેકરૂપ પુષ્પની માલાઓ લટકાવી છે. અને આગળ અધ્યાત્મરૂપ અમૃતથી ભરેલા કામકું ભ મૂક્યા છે. આ બધું પૂર્ણાન-દધન આત્માને અપ્રમાદનગરમાં પ્રવેશ કરવામાં મંગલરૂપ છે." (પ્રશસ્તિ શ્લાક. ૩)

આ જ્ઞાનસારના અભ્યાસી અની અનેક આત્મહિતેચ્છ પુન્યવંતા આ જ્ઞાનસારરૂપ ચારિત્રગુણ પ્રાપ્ત કરી સ્વશ્રેય સાધે એ શુભેચ્છા.

> यत्र रोधः कपायाणां, ब्रह्मध्यानं जिनस्य च । शातव्यं तत् तपः शुढं, अविशिष्टं तु रुंधनम्॥

અર્થ:—જે તપમાં કપાયીના રાધ, ધ્રહ્મચર્યનું પાલન અને વીતરાગદેવનું ધ્યાન થતું હાય, તે જ શુદ્ધ તપ જાણવું અને ળાકીનું તા સર્વ લાંઘન માત્ર સમજવું.

॥ सक्छन्डिन्द्रिपन्नाय झामते गीतमगणघराय नमीनमः ॥ वायक्रशिरामण्डि न्यायायार्थः न्यायविशारह

યૃ. ઉપાધ્યાયજ મહારાજ આજે પણ અજર-અમર છે [લે:-પરમપુત્રય આવાર્ય શ્રીમદ્ વિજયધર્મસુરીશ્વરજ મહારાજ]

સ્ત્રી કેશર કિંવા કપુર ખરાગ્ર વગેરે લોતિક સુગંધી પદાર્થોની સુવાસ મર્યાદિત છે. પરંતુ સંત-સાકુંએના અંતરાત્મામાં પ્રગટેલ શ્રહા-સંયમાદિ સફ્યુહોની સુવાસ અમર્યાદિત છે. કસ્ત્રી કેશર વગેરે પદાર્થી પોતાની હાજરીમાં તો સુવાસ આપે છે; પરંતુ પાતાની ગેરહાજરીમાં સુવાસ આપવાની તે પદાર્થોમાં શક્તિ નથી. અને કદાચ સુવાસ આપે તો છે પાંચ કલાક મુરતી જ. જ્યારે સંત-સાકુ પુરુષા પાતાની હયાતીમાં તો

સુવાસથી મદ્યમદ્યા અગીયા સમાન હોય છે, પરંતુ તેઓનાં સ્વર્ગ ગમન ભાદ સેંકડે:—હેલ્લરી વર્ષો પર્ય'ત તે સંત પુરુષોના સદ્યુણેની સુવાસ વિશ્વમાં પરસ્પેક રહે છે. લોતિક પદાર્થોની સુવાસ કરતાં આત્માની સુવાસ દ્રશ્ય—ફેંગ્ર—કાળ અને લાવની અપેક્ષાએ અનંત્રસુણ અધિક છે. પાતાના જીવનમાં જે કાઇ મરનવે આવી આત્મસુણેની સુવાસ પ્રગટાવેદ છે. તે મહાપુરુષનું જીવન ધન્ય છે, સફદ છે, સાર્થક છે.

લગલગ આવશી અહીંસા વર્ષો અગાઉ વિશ્વમાં શ્રદ્ધા—સંયમની સુવાસ પાધરનાર, અંબી થયેલી ગ્રાન્સ્યોતિને વધુ સંતેજ કરતાર અને કડોકડીના સમયે ધર્મશાસનની સુંદર અંવરયને સુરક્ષિત રાખતાર ન્યાયજાર્ય ન્યાયજિશરદ વાચકશિરામણિ મહોપાધ્યાય શ્રીમાન ઘર્શાવિજયાં મહારાજ નામે એક સમર્ય મહાપુરુવની જેન શાસનને ગરવી રાખેરણિન તરફથી બેઠ પ્રાપ્ત થઇ હતી. પાટણ પાસે કન્દી હું ગામ એ સંતપુરુવની જન્મ- ધૃમિ હતી. માતા સાભાગદ અને પિતા નારાયણીના એ કુલફીપક પુત્ર હતો. જન્મ- અન્મની આસવાના પ્રતાપે બાલ્યવયમાં જ સંસ્કાર અને સમ્યગ્રદ્ધાનની પ્રતિશા એ કુલફીપકના સુખમંડલ ઉપર સ્પષ્ટ દેખાઈ આવતી હતી. છે ચાર વખત શ્રવણ કરવા માત્રમાં અખંડ બદ્યાનર સ્તેષ્ત્ર અરાબર કંસ્સ્થ થઈ જહે એ ગ્રાનપ્રતિલાનું પ્રયુપ્ત ફળ હતું.

સર્ગુરુના સમાગમ, અંતરના સાથા વૈરાવ્ય, માતપિતાની શુક્તાશિય સાથે સંયમના પુનિત માર્ગના સ્વીકાર, સંયમના સ્વીકાર પછી સતત શાસાલ્યાસ, શાસ્ત્રોનાં વધુ પરિશીલન માટે કાશી—જાલ્યા જેવા દ્રસ્વિદ્ધિ સ્થળામાં પૃત્યાલુદ્દેવ સાથે ગમન અને વર્ષો પર્યાત ન્યાય વગેરે સર્વાદ્ધિનો અપ્રમત્તભાવે અલ્યાસ તેમ જ તે અલ્યાસ દ્વારા પ્રગટ થયેલ સાચી પરીક્ષાશક્તિ અને સમન્યયશક્તિ વગેરે, એ સંતના છવન પ્રસંગાનું જેટલું વર્ણન કરીએ તેટલું અલ્ય છે. એ પવિત્ર સાધુ પુરુષે પાતાના અંતરમાં શ્રહા અને સંયમની અનુપમ આરાધના તેમ જ શુવદ્ધાનના સત્તન પરિશીલન દ્વારા દિવ્યપ્રકાશ પાલરનાર અત્મન્યોતિ પ્રગટારી એ પુન્યવિદ્ધિત્રો પાતાના અંતરમાં એ. અદ્દમ્ય જ્ઞાતમન્યોતિ

પ્રગટાવીને જ સંતાષ ન માન્યા, પરંતુ અનેક વિષયા સંખંધી સાહિત્ય સજેન તેમ જ સદુપદેશદ્વારા સંખ્યાળધ માનવ હૈયામાં એ દિવ્યપ્રકાશમય આત્મજયાતિના ઝગમગાટ પ્રગટ કરી અનેતકાલનાં અધકાર પટલાને દ્વર કર્યાં:

અનંતજ્ઞાની તીર્થ કર દેવાએ જણાવેલા અનંતશાંતિના માર્ગ ને સમજવા, એ માર્ગ ઉપર ચર્ચાર્થ શ્રદ્ધા થવી, તેમજ અનંતશાંતિના પુનિતપંચ પ્રયાણ કરવું. એ ઉત્તરાત્તર ચદ્યપિ વધુને વધુ દુષ્કર છે. પરંતુ એ બધા ય કરતાં અનંતશાંતિના પવિત્ર રાજમાર્ગમાં ડેગલે પગલે કંટક વેરનારાઓના સામના કરવા, સાથે વેરાયેલા કંટકા દ્વર કરી અનેકાનેક મુમુશ્રુ આત્માઓ માટે એ પવિત્ર રાજમાર્ગને સાફ અને સુરક્ષિત રાખવાનું કાર્ય ખૂબ જ વિકટ છે.

ેમીજ બધાય તીર્થ કર દેવાનાં ધર્મ શાસનની અપેક્ષાએ ચરમતીર્થ કર શ્રમણભગવાન મહાવીર પ્રભુનાં ધર્મ શાસનની પરિસ્થિતિ ખૂબ જ ભિન્ન પ્રકારની છે. કાળનું પરિખલ માના કે આત્માઓના પુન્યબલની ખામી માના, પરંતુ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરપ્રભુનાં ધર્મ શાસનમાં થાડા થાડા સમયને અંતરે કંટક પાથરનારી વ્યક્તિઓના વધુ પ્રાદુર્ભાવ થયા છે. શ્રમણ ભગવાન મહાવીરનાં નિર્વાણથી આજ સુધીનાં લગભગ અહીહજાર વર્ષોના ઇતિહાસનું સિંહાવલાકન કરવામાં આવે તા બોંદ્ધ વગેરે અન્યદાર્શ નિકાનાં આક્રમણ ઉપરાંત સ્વદર્શનમાં પ્રગટ થયેલ સેંકડા ગચ્છ—મત—સંપ્રદાયના ભિન્ન ભિન્ન ભેદોની હારમાળા આપણને જાણવામાં આવશે. સર્વોત્તમ જૈનશાસનની અદ્ભૂત શક્તિના હાસ કાઇ પણ કારણે થયા હાય તા પાતાના ઘરમાં પ્રગટેલા ભિન્ન ભિન્ન ગચ્છમતાની પરંપરા અને તે માટેના વધુ પડતા દુરાયહ જ છે.

ધમે શંશામાં જૈન ધર્મશાસનને સિંહસમાન ગહ્યું છે. અને ઇતર ધર્મશાસનાને અન્ય વનપશુઓની સાથે સરખાવેલ છે. અન્ય હાથી–ઘાડા વગેરે વન પશુઓથી સિંહને યત્કિ ચિત્ પણ ભય સ્થાન નથી હેલું. અન્ય વનપશુઓનાં પ્રચંડ આક્રમણના સામના કરવાની શક્તિ એ કેશરીસિંહમાં અવશ્ય હાય છે. પરંતુ એ જ કેશરીસિંહના પાતાના શરીરમાં જ જયારે રાગ થાય અને કીડાઓ પેદા થાય છે ત્યારે એ પ્રચંડ પ્રાણીની શક્તિના વિનાશ સર્જાય છે. જૈન ધર્મશાસન ઇતર ધર્મશાસનાથી કાઈ પણ સમયે પરાભવ પામ્યાનું નથી જાહ્યું. હરકાઈ પળે એ અનેક.ન્તવાદની અનુપમ ચાવી ધરાવનાર જૈનશાસનના પ્રત્યેક પ્રસંગે વિજય થયા છે. એમ છતાં જૈનશાસનની વર્ત્તમાનમાં જે શીર્ણ-વિશીર્ણ દશા છે તે એ જ ધર્મશાસનમાં પ્રગટેલા ગચ્છ–મત–સંપ્રદાયના સંખ્યાળ ધ કદાગ્રહી કીડાઓને આલારી છે.

ઉપાધ્યાયજી મહારાજના સમય એટલે જૈનધર્મશાસનની પેઢી ઉપર ટાંચ આવવા જેવા વિકટ સમય હતા. એક ખાજુથી ઇતર સંપ્રદાયામાં ધર્મના એાઠા નીચે ભાગ વિલાસનું સામ્રાજ્ય વૃદ્ધિ પામતું હતું. જ્યારે જૈન દર્શનના પાતાના આલિશાન મહેલમાં કાઇએ (શુષ્ક) અધ્યાત્મવાદના નામે, તો કાઈએ (સ્વરૂપ) હિંસાના નામે, કાઈએ નિશ્ચય- તયવાદના એક તીચે, તેા કાઇ એ ગ્રાનવાદના નામે આગ સળગાવવાના પ્રયત્ના શરુ કર્યો હતા. જેન ગ્રાસનની એ મ્હેશતના અમુક લિંદ વર્ગ એ આપના સેળ પણ થઇ ચૂક્યો હતા. એવા વિકટ સમયે એ સળગાતી આપના સંતાપની પરતા કર્યા સિવાય તે તે વ્યક્તિઓની સાથે વ્યક્તિકૃષ જરાપણ રાખ્યા વિના વાદ-વિશકા દારા, તે તે સ્થળાએ જઈને શાસ્ત્રીય દર્શોશ યુક્ત, મધૂરી ધમેરિશના દ્વારા અને તે તે વિષયનું સચાટ પ્રતિપાદન કરનાશ—સંસ્કૃત—પ્રાકૃત—હિંદી—યુજરાતી ભાષામાં સંખ્યાબંધ શાસ્ત્રબ્રન્યોની રચનાદ્વારા પૃથ પૃત્ર શીતલ જળના છંટકાવ કરીને પ્ ઉપાધ્યાયછ મહારાએ આગ એહવવાના લગીરય પુરુવાર્થ કર્યો હતો. તેમ જ તેઓએ પાતાના એ મંગલમય પુરુવાર્થમાં પૃત્ર સફ્ટતા પ્રાપ્ત કરી હતી. જેનધમંદ્વાસનની પેઠી ઉપર ઢાંચ લાવનારાઓને પરાસ્ત્ર કરી એ શાસનની પવિત્ર પેઠીને કરાકરિતા સમયે સુરક્ષિત રાખનાર આપણા પરમ તારક ગુરુદેવ ઉપાધ્યાયછ મહારાજ હતા.

પ્રત્નીય ઉપાધ્યાયછ મહારાજાને મળેલાં અનેક બિરુકો પૈકી લાયુ હરિસદ્રનું પર્ બિરુક છે. તે કે આરોધ્યપાદ આચાર્ય સમર્વા હરિસદ્રસ્રિ મહારાજ એટલે તે કાળ જેન-શાસતના એક સમર્ચ પ્રાણવાન અતેઠ મહાપુર્ય. એમ છતાં વર્તામાનકાળના છતો માઠે હરિસદ્રસ્રિ મહારાજની અપેશાએ પૃ ઉપાધ્યાયછ મહારાજ વધુ ઉપકારી હતા એમ કહેવામાં જરાય અતિશયોછિત નથી. હરિસદ્રસ્રિ મહારાજાએ ચૈત્યવસ્થિનો વગેરેનાં તથા બોહોના પ્રયલ આક્ષ્મણમાંથી જેન શાસનના અચાવ કર્યો અને સવિષ્યની પ્રજાનાં કલ્યાણ માટે સંસ્કૃત-પ્રાકૃત સાયામાં વિશાસ સાહિત્યનું અનુપમ સર્જન કર્યું. ત્યારે ઉપાધ્યાય મહારાજે પરદર્શનોના એકાનવાઢી સિદ્ધાન્તાથી જેનશાસતનું સંરક્ષણ કરવા ઉપરાંત જેન ધર્મના એક નિચે મિધ્યાત્વના એક પ્રચાર કરનારા અનેક કુમતિઓથી જેનશાસનને બચાવી લીધું અને લેળવાઈ જતા બદિક વર્ગને શુદ્ધ શ્રદ્ધા તેમજ સંયમ માર્ગમાં ટકાવી રાખ્યા. સંસ્કૃત તથા પ્રાકૃત સાયામાં સ્થાયેશ રિદ્ધારોજ્ય સંખ્યાયાંય શ્રદ્ધાનાં સર્જન ઉપરાંત આશ્રદ્ધ બેપાલ સર્વ ટેક્કને સમજ પડી શકે અને કેન ધર્મના નિશ્ચય વ્યવહાર વર્ગરે સર્વ સિદ્ધાન્તાનો સુગમત્વયા એક અય, તેન જ પ્રસુરક્તિમાં સાચેક્કાસની વૃદ્ધિ શ્રાય તે પ્રકારતું મિશ્ર (હિંદી ગુજરાતી) તથા ગુર્જરસ્ત્રામાં સંખ્યાળંધ સ્ત્રવત્રિક સાહિત્યનું સર્જન કરી લાવિપ્રજાને અવર્શુનીય શ્રુતાગાનો ખ્યાનો સોપી ગયા.

સાહિત્ર સર્જનમાં "શ્રદ્ધા અને સંયમની આરાધના એ જ મુક્તિનાં મંગલફાર છે" એવાં લાવલવાં પહોંની રચનાફારા તેમ જ પોતાનાં છવનમાં 'શ્રીસ્નીર' ન્યાયે એક ધારી પરિશ્નેશ શ્રદ્ધા તેમ જ સંચરની સાધના વડે વિશ્વની પ્રત્ન પાસે આદર્શ રજા કર્યો કે " ગમે તેટલું વૃદ્ધિ પામેલું પરંતુ શ્રદ્ધા અને સંચમ સૂન્ય ગ્રાન-વિગ્રાન સંસારની વૃદ્ધિનું કારણ છે. ત્યારે શ્રદ્ધા અને સંચમ સંપન્ન એાછું પણ ગ્રાન સુક્તિનું અસાધારણ નિમિત્ત છે. શ્રદ્ધા અને સંચમની બાવના

ાવનાનું જ્ઞાન-વિજ્ઞાન ઉપરથી શાભતાં પણ સુવાસ વિનાનાં આવળનાં ફુલ અથવા ઉપરથી ચળકાટ મારતા નક્લી દાગીના જેવું છે. જ્યારે શ્રદ્ધા તથા સંયમયુકત એાછું પણ જ્ઞાન સુવાસથી મઘમઘતા ગુલાબનાં પુષ્પ સરખું અથવા નાના પણ સાચા હીરા સરખું છે."

વંદનીય વાચકશિરામણિના સ્થૂલદેહ આજે આપણી પાસે વિદ્યમાન નથી. પરંતુ પાતાના જીવનમાં આરાધેલ રત્નત્રથના અનુપમ આદર્શ—તેમજ શાસ્ત્રીય સાહિત્યની સુધા સરિતા આપણી પાસે આજે હાજર છે. આપણે સહું કાેઈ એ અનુપમ આદર્શમાં આપણું નિર્મળ પ્રતિબિંબ સ્થાપન કરવા શક્તિમાન બનીએ, તે માટે તેએાની સાહિત્યસુધા સરિતામાં સ્નાન કરીએ અને એ શાસનસંરક્ષક મહિષિના આદેશ ઉપદેશાને આચરણમાં મૂકી '' અમારા ઉપાધ્યાયજ—અમારા વાચક જશ વિશ્વમાં અજર અમર છે." એવી મંગલ ઉદ્દેશષણ કરવાનાં અધિકારી બનીએ. એ જ શુભ કામના.

ء

विभेषि यदि संसारात् मोक्षप्राप्तिं च काङ्क्षसि । तदेन्द्रियज्ञयं कर्ज्तुं, स्कोरय स्कारपोरुपम्॥

અર્થ:—જો તું સંસારથી ભય પામ્યા હાય અને માક્ષપ્રાપ્તિને ઇચ્છતા હાય તા ઇન્દ્રિયાના જય કરવાને માટે પ્રચણ્ડ-પરાક્રમ ફારવ.

卐

अहं ममेति मन्त्रोऽयं, मोहस्य जघदानध्यकृत्। अयमेव हि नञ्पूर्वः, प्रतिमन्त्रोऽपि मोहजित्॥

અર્થ:-- ' હું અને મારું ' એ માહ રાજાના જખ્ખર મન્ત્ર છે અને તે મન્ત્ર સમય જગતને અ'ધ કરનારા છે.

આ મન્ત્રની આગળ નકાર મૂકવામાં આવે [અર્થાત્ ' હું કંઇ નયી ને મારૂં કંઇ નથી '] તેાએ જ મન્ત્ર માહરાજાને જિતવા માટેના પ્રતિમન્ત્ર ખની જાય છે.

[श्रीभह् यशे।विज्यक

ज्ञानसार]

વાચકવર શ્રીયશાવિજયજની જન્મભૂમિ

ક ના કુ

[લેખક:-પરમપૂત્ય શ્રીમદ્ પૃષ્યુવિજયુજ મહારાજ-આગમ પ્રભાકર,]

ગલગ ગાલીસ વર્ષ પહેલાં પાટણમાંના પ્રાચીન પ્રકીર્ણક પાનાએશના હગલા-માંથી અછુધારી રીતે "મુજમાવેલી "નું અંતિમ એક પાનું સો પ્રથમ મારા હાથમાં આવ્યું હતું. જેનું પ્રકાશન મુનિવર શ્રી જિનવિજયુઇએ "જ્ઞેનઆત્માનંદ પ્રકાશ"એ માસિકમાં કર્યું હતું. ત્યારથી એ ભાસની સંપૂર્ણ પ્રતિની શોધ પાછળ સીનું ધ્યાન દારાયું. અને "મુજસવેલી-ભામ"ની મંપૂર્ણ પ્રતિ ભાઇ મેહનવાલ દલીયાંદ દેસાઇએ પ્રસિદ્ધ કરી.

આ સાસની સંપૂર્ણ પ્રતિની પ્રાપ્તિથી ઉપાધ્યાયછ શ્રીયશાવિજયછ મહારાજ વિષેતી કેટલીક અજ્ઞાત વાતા આપણને જાણવા મળી. તે સાથે ઉપર્શું જા ભાસે ઉપાધ્યાયછ મહાર ગજનાં જન્મવર્ષ આદિ અને સ્વર્ગવાસવર્ષ વિષે સારે વિષમતા પણ ઊલી કરી છે. ઉપાધ્યાયછ મહારાજશીનાં જન્મવર્ષ આદિ વિષેના ગંભીર પ્રશ્ને તા આપણે આપણા સામે વિદ્યાના સાધના દારા જીદા લેખમાં જ વિચારીશું. પ્રસ્તુત લઘુ લેખમાં તા માત્ર ઉપાધ્યાયશ્રીછની જન્મભૂમિ વિષે જ ડ્રક નાંધ લખવાની છે.

પૃત્યપાદ વિશ્વिद्धानમૂર્તિ વાચકપ્રવર શ્રીયશોવિજયછ મહારજની જન્મભૂમિ "કનોહુ" હોવા વિપેની જે માન્યતા ગ્રાહું શઈ છે તે મને લાગે છે. ત્યાં સુધી, અહુ સંગત હોય તેવી નથી. કારણ કે "સુજસરેલીભાસ" માં તેના કર્તા સુનિવર શ્રી કોંતિ વિજયજીએ ઉપાધ્યાયછ મહારાજના જન્મ કર્યા અને કર્યા વર્ષમાં શ્રેષ એ હકીકત આપી જ નથી. તેએ તો માત્ર "પંકિત શ્રી નયવિજયછ મહારાજ વિ સં ૧૬૮૮માં કૃષ્ણુગેર શ્રામાસું કરી કનોઠ લાય છે." એ હકીકતથી જ ભાસસ્થનાનું પ્રયાણ આરંલે છે. આ સ્થિતિમાં ઉપાધ્યાયછના જન્મ કર્યા વર્ષમાં અને કર્ય સ્થ્યે શ્રેષ્ઠા—એ હીકકત તો અસ્પષ્ટ જ રહે છે. સુજસવેલીકારે ઉપાધ્યાયછનાં જન્મ વિષે કશી હકીકત નથી નોંધી એટલે એ પણ સંભવિત હોઈ શકે કે ઉપાધ્યાયછનાં જન્મ વિષે કશી હકીકત નથી નોંધી એટલે એ પણ સંભવિત હોઈ શકે કે ઉપાધ્યાયછનાં જેના વિષે શ્રેષ્ઠા હોય કનોડામાં આવી વસ્યા હોય ? આ વસ્તુ વિદ્ધાનોએ વિદ્યારવા જેવી છે. અસ્તુ, આ બધુ ગમે તે હો, તે છતાં ઉપાધ્યાય શ્રી યગ્રાવિજયછ મહેનો, તેમના સુર્વર શ્રી નયવિજયછ મહ સાથે સો પહેલાં સમાગમ કનાડામાં શ્રેષ્ઠા હતો એ હકીકત અનાબાધ હાવાથી તેમ જ ઉપાધ્યાયછ મહારાજની અલલલીલાના નિશ્ચિત પુર્યુષ્ઠામ તરીકે કનાડાની પાત્રન બૂમિનું આપણે દર્શન કરીએ તો અતિ સુર્યંગત જ વસ્તુ બને છે. એમાં હોશ પણ શ્રંકાને અવકાશ નથી.

' સુજસવેલીલાસ' દ્વારા ઉપાધ્યાયછ મહારાજ અને કનોહોના સંગંધ જ્યારથી જાણવામાં આગ્યા ત્યારથી એ પવિત્ર-પાવન યુષ્યમૂમિનાં દર્શન માટે અંતરમાં તાલાવેલી નગી હતી. પરંતુ આવા પુર્યધામનું દર્શન સુકૃતાદયના અભાવમાં એકાએક થવું શક્ય નથી હોતું; તેમાં પણ સાધુજીવીએ માટે વિહારકમમાં નહિ આવતા અમુક પ્રદેશનું દર્શન અશક્યપ્રાય: હાય છે. આમ છતાં આ વપે પાટણથી અમદાવાદ પાછા કરતાં પ્રથમથી નિર્ણય કર્યા મુજળ અમે પૂજ્યપાદ શ્રી ઉપાધ્યાયજી મળની બાળલીલાના પુર્યધામ કનાડાનું દર્શન કરી આવ્યા છીએ.

કનાેહા

પાટા થી મેસાણા તરફ જતી રેલ્વેલાર્ઇનમાં અને લગલગ બન્નેયના અધવગ્રમાં ઘેશુજ કરેશન આવેલું છે. ત્યાંથી ઘેશુજ ગામ પાણા માર્ઇલના અંતરે આવેલું છે. ત્યાંથી દક્ષિણ —પશ્ચિમ દિશામાં પછા છે ગાઉના અંતરે પુષ્ટ્યતીથે કનાડા આવેલું છે. એ ભૂમિના જે ઇતિહાસ સાંભળવામાં આવ્યા છે અને ત્યાં આજે જે શિવમંદિર, સ્મરણાદેવીનું મંદિર વગેરે વિદ્યમાન છે. એ જેતાં આપણને લાગે છે કે પ્રાચીન યુગમાં એ સ્થાન જરૂર સમૃદ્ધિ-શાળી હશે અને ઠીક ઠીક આખાદી લાગવતું હશે.

અત્યારે તો કનાડામાં લગભગ બસા ૨૦૦ એક ઘરાની આબાદી અને ઉપર જણાવેલ મંદિરા વિદ્યમાન છે. કનાડામાં કનાડીઆ પ્રાદ્યાણા અને કનાડીઆ પટેલાની વસતિ ધ્યાન એ ગ્રે તેવી છે. એક મંદિરમાં પાળીએ છે. તેના ઉપર લેખ છે, પણ પાળીઆ ઉપરના લેખાની લિપિ વાંચવાની કળા એ એક જુદી વિદ્યા હાઇ હું એ લેખને લક્દેલી શકરા નથી. પરંતુ લિપિનું સ્વરુપ એતાં એ લેખ મને ઘણા પ્રાચીન નથી લાગ્યા.

દોશુંજના એક ભાગ્યવાન શ્રાવક ભાઈ છેં: તિલકચંદને લઈ અમે ત્રણુ સાધુઓ— હું, મુનિ શ્રી રમિલુકવિજયજી અને મુનિશ્રી જયભદ્રવિજયજી ઘેશુજથી દશેક વાગે નીકળ્યા અને સાડા અગિયાર લગભગ કનાડા પહોંચ્યા અને ત્યાંના એક મંદિરમાં બેઠક જમાવી. અમને જોઈને ગામના લોકો એકઠા થઈ ગયાં. તેમને અમે ગામમાં પ્રાચીન સ્થળા, જૈન-મંદિર તેમ જ કાઈ પ્રાચીન પાદુકા આદિ અંગે પૂછ—પરછ કરી. ગામલાકોએ ત્યાંના પ્રાચીન મંદિરો આદિને લગતી વાતા કરી અને તેમની સાથે અમે ત્યાંના સ્થળા જેવા ગયા. ઉપર જણાવેલ શિવાલય, સ્મરણાદેવીનું મંદિર અને કેટલીક વાના સિવાય બીજી કાંઈ ત્યાં દેખાયું નથી. રેવાશંકરભાઈ નામના કનાડીઆ ખ્રાદ્મણના ઘરની પાસેના રસ્તા ઉપર જાના જમાનામાં એક મંદિર હતું. અને અત્યારે ત્યાં બહાર દેખાતા બે પચ્ચરા ઘણા ઊંડા છે વગેરે જણાવ્યું. પરંતુ આપણને ચમતકાર થાય તેવા કાંઈ જૈન અવશેષ કે શ્રીયશાવિજયજી મહારાજને લગતી કાંઈ હકીકત કે બીજાં કશુંએ જણાયું નથી.

ભાઇ રેવાશ કરભાઇ પાસે પ્રાચીન પત્રો તથા કેટલીક પ્રાચીન સામગ્રી છે એમ ગામ-લાકાએ જાણુવ્યું. પરંતુ એ ભાઈ ખહારગામ ગયેલ હાવાથી અમે તેમના પાસેની કાેઈ વસ્તુ ત્રિઈ શક્યા નથી. તેે કે આ સામગ્રીમાં યશાવિજયજી મહારાજને લગતી સામગ્રી મળવાના કાેઈ જ સંભવ નથી. તેમ છતાં આ ભાઈ પાસેની સામગ્રી તપાસવી તાે ત્રેઇએ જ. એક વૃદ્ધ ખ્રાક્ષણ લાઈ મળ્યા તેમણે જણાવ્યું કે વિ. સં. ૧૨૦૨માં અમારા ખ્રાદ્મણાનાં ત્રેત્રીસ પદા ઉત્તરમાંથી સિદ્ધપુરમાં આવ્યાં હતાં. જેમાં અમે કનેહીઆ પ્રાદ્મણા ત્રીજે પદે છીએ. એક જમાનામાં કનેહીમાં અમારાં બે હતાર ઘરા હતાં અને એ પ્રમાણમાં બીજ પણ વસ્તી અહીં હતી. ખરેા અહીંસો તો અહીં કંસણનાં ઘર હતાં. આ રીતે અહીંની બૃતકાલીન જહાજલાલી ઘણી હતી. અમારા અહીંના કનેહીઆ પ્રદાસણા કાઠીયાનાદમાં ગયા, ત્યાં પણ અમારા નામથી ગામનું નામ કનેહાજ પહેશું.

આ રીતે કનાડામાં પ્રકોર્ણક હકીકતા અને પ્રાચીન અવાંચીન સ્થળા જોવા મન્યાં છે. પરંતુ પૃત્રય શ્રી ઉપાધ્યાયછ મુ અંગેના કાઈ ઇતિહાસ કે સામગ્રી મન્યાં નથી. આમ હતાં એ ધ્યાનમાં રાખવા જેવી હકીકત છે કે કનાડામાં જે શિવાલય અને 'સ્મરુદ્ધા દેવીતું મેં દિર છે એ ચીલુકચયુગીન શિલ્પકળાથી વિસ્પિત છે.

આ પછી અમે વિચાર કર્યો કે લાટ તેમજ વહીવં ચાએના જૂના ચાપડાઓ માંથી ઉપાધ્યાય છુમ ને લગવી કાઈ હું છે કત મહી આવે—એમ ધારી અમે ત્યાંના લોકોને પૃછ્યું કે તમારે ત્યાંના લાટ તેમજ વહીવં ચાએ કાણ છે? એના જવામમાં મન્યું કે—એક તે! મેમાણામાં તીરચંદલાઇ નામના લાટ રહે છે તે છે અને બીજા એક વિમનગરથી આવે છે. બીજા લાઈનું નામ અમને મન્યું નથી. મેમાણે આવીને અમે વીરચંદલાઇની તપાસ કરી પરંતુ તે લાઇ બહારગામ ગયા હૈાવાથી એ તપાસ કરવાનું કામ તથા વીમનગરમાં રહેનાર લાઇ પાસે તપાસ કરવાનું કામ પાટણના સોજક લાઇઓને લગાવીને હું આવ્યો છું.

ઘેલુજથી અમે માટવ ગયા હતા. ત્યાં માંતલપુરના એક જૈન મહાન્યા, જેમની પાસે પ્રાચીન ગ્રાનમંડાર છે. અને જૂનાં એલીઓએ વગેરેના સંગ્રહ પણ છે. તે ઉપરાંત તેઓ જૂની વંશાવલીએ સંભાળવાનું કામ કરે છે. તેમને પણ આ વિષે સ્થના કરી છે. તેઓ તો કહે છે કે—અમારા પાસે તો અધા ઇતિહાસ છે અને અમારે ત્યાં આ હકીકત મળશે, પરંતુ લાધીવાર આપણી ભારતીય પ્રજના સાધુ, સંન્યાસી, ભાવાએ, યતિયા, વૃદ્ધ પ્રાક્ષણો, વૃદ્ધ પુરુષા વગેરે માટે લાગે વાતમાં માલ ન હોય તેમ કર્તા વાતા બનાવવામાં ડેવ એશ જ તેવામાં આવે છે. આમહતાં આવા સ્થળામાં શેકસાઈસરી ધંતે તપાસ કરવાથી સંભવ કે કે કોઇ હકીકત ક્યાંકથી મળી પણ આવે.

અ'તમાં અમારા નિરીક્ષણમાં કનેહામાંથી ઉપાધ્યાયછ મહારાજના અ'રો કેઇ એવી હકીકત નથી મળી, જે આપણને અમત્કાર પેદા કરે તેમ છતાં અમતા સાક્ષાત્ ત્યાં જવાથી એક વસ્તુ જરૂર બની છે કે કેટલાક બ્રમ સાંબી ગયા છે અને અમુક લતની માહીતી મળી છે.

ઉપાધ્યાયલ્ઇ મહારાજ અંગેની જે એ વાતા કરવામાં આવી તે ત્યાંના દાેકાએ ર્મ-પૂર્વક સાંભળશું છે અને બાદવા પણ દાવ્યા કે આવા મહાત્માનું સ્મારક અહીં કરવામાં આવે તા અમારા પણ ઉદય શાયા

અનંતલબ્ધિનિધાન-ગણધરેન્દ્ર શ્રીગૌતમસ્વામિત નમ: જૈન શાસનના સમર્થ પ્રભાવક, મહાન જ્યાતિર્ધર ન્યાયવિશારદ ન્યાયાચાર્ય. ઉપાધ્યાયજ શ્રીયશાવિજયજ મહારાજ

:અને

તેઓશ્રીનું અદ્ભુત વ્યક્તિત્વ.

[લેખકઃ-પૂ. પ. મહારાજ શ્રીમાન કનકવિજયજ ગણિવર.]



ન શાસનનાં વિશાલ આકાશપટપર અનેકાનેક શાસન પ્રભાવક મહાત્મા પુરુષા, સહસ્તરિમ સૂર્યની જેમ પ્રકાશમાન અની, અમર નામના મૂકી ગયેલા છે. કે જેમના અગણ્ય ઉપકારાને યાદ કરીને આજે પણુ આ હૈંશું શ્રહાપૂર્વક નમી પઢ છે. આ અધાયમાં યાકિનીધર્મસનું સમર્થ વિદ્વાન્ આચાર્ય શ્રીહરિભદ્રસ્રીશ્વર, કલિ-કાલસર્વજ્ઞ આ૦ શ્રી૦ હેમચંદ્રસ્રીશ્વર તથા ન્યાયાત્રાર્ય તાર્કિક

શિરામિણું ઉપાધ્યાયછ યશાવિજયછ. આ ત્રણેય પ્રભાવક મહાપુરૂષાના આપણા પર, જૈન સાહિત્યપુર, તેમજ પર પરાએ સમસ્ત સંસારપર અસંખ્ય ઉપકાર છે. એ કદિ ભૂલી શકાય તેમ નથી જ.

श्री હરિલદ્રસૂરિ तथा श्रीडेमચંદ્રसूरि-णा णन्ने મહાપુરુષાએ, સ્વયં સંયમી છવનમાં રહી, જેન સિહાંતા પ્રત્યેની અનન્ય નિષ્ઠાપૂર્વક જે ખહુવિધ સાહિત્યની સેવા કરી છે, એ ખરેખર ખૂબ જ મહત્ત્વની તેમ જ યશસ્વી છે. છતાં આ ખન્ને સૂરિદેવાના સમયની પરિસ્થિતિ એક રીતે સુવિધાલરી તથા અનુકૂલ હતી. એક હતા જન્મે પ્રાક્ષણ, રાજપુરાહિતના ઉચ્ચ સ્થાનપર વર્ષો સુધી રહેલા, અનેક દશ્વનશાસ્ત્રોના પારંગત અનીને સર્વધર્મના સિદ્ધાંતામાં નિષ્ણાત થયેલા, એમાં નિમિત્ત મળતાં હૃદયની સરલતાના યાગે યાકિની નામના જેન સાધ્વીજીના મુખથી ' दो चक्की 'વાળી ગાયા સાંભળે છે.' નવું જાણવાની જિજ્ઞાસાના કારણે તેઓ જેનાયાર્થના પુષ્યસમાગમને પ્રાપ્ત કરે છે. અને પરિણામે હરિલદ્ર પુરાહિત જેને સાધુ બને છે. હરિલદ્ર પુરાહિતમાં રહેલી પ્રકાંડવિદ્વત્તા, સમર્થ તાર્કિક શક્તિ અને સ્વ-પર દર્શન શાસ્ત્રોની નિપુણતા, આ ખધાયને સાચા માર્ગ મળતાં તેઓ સાહિત્ય-સંસારમાં પાતાની અગણિત રચનાઓદ્રારા યશસ્વી બની, અમર થઈ ગયા.

કિલિકાલ સર્વજ્ઞ શ્રી હેમચંદ્રસૂરી ધરના સમય, શાસન પ્રભાવના માટે અનેકવિધ અનુકૃલતા શુક્ત હતા. ગુર્જરભૂમિના પાટનગર અણુહીલ્લપુર પાટણમાં ધમે શ્રહાવાસિત ધનસંપન્ન શ્રેષ્ઠિવર્સ્યો તે કાલે અનેક હતા. રાજ્ય સત્તાપર તેઓના પ્રભાવ પડતા. સત્તાનાં સૂત્રા કેટલીક વેળા તેઓનાં હાથપર રહેતાં. જે કે જૈન શ્રેપ્ઠિવર્યોએ એના દુરુપયાંગ કહિ

કર્યા જાણ્યા નથી. ધર્મના ખાટા ઝન્નધી, સત્તાને તેમણે કદિ કલંક્તિ કરી નથી. આવા સમયમાં આ૦ શ્રી દેવચંદ્રસ્ર્િના શુભ હસ્તે ધંધુકાના માઢ ગ્રાતિય ચાર્ચીંગની ધર્મપત્ની સ્ત્રીરત્ન શ્રી પાહિનીદેવીનાં પ્રભાવશાળી પુત્ર ચંગદેવની દીક્ષા થાય છે.

એ ગાંગદેવ તે વેળા સામદેવ સુનિ ખને છે. પણ મુનિ સામદેવની તેજસ્વિતા, અસાધારણુ મેધા, અલાકિક પ્રતિભા, તથા મુનિર્મલ સચ્ચારિત્ર્ય—તત્કાલીન સર્વ કાંઇનાં માનસપર લાકાત્તર પ્રભાવ પાઢે છે. સાધુ સામદેવ આ હેમચંદ્રસ્તિ ખને છે. ગૂર્જરેશ્વર સિહરાજની રાજસભામાં તેઓ પાતાની અમાઘ પ્રતિભાધી આદરપૂર્વક સ્થાન પ્રાપ્ત કરે છે. ત્યાર ખાદ પરમાહિત્ ગૂર્જરેશ્વર મહારાજા કુમારપાળનાં રાજ્યશાસનમાં આગાય શ્રીના પ્રભાવ પરમાહિત્ ગૂર્જરેશ્વર મહારાજા કુમારપાળનાં રાજ્યશાસનમાં આગાય શ્રીના પ્રભાવ પરમાતકૃષ્ટ સ્થિતિના ખને છે. સાહિત્યના એકએક અંગને તેઓ પાતાનાં સર્જન- શક્તિદ્વારા નવપદલવિત કરે છે. વ્યાકરણ, સાહિત્ય, છંદ, ન્યાય, કાશ, નાટક ઇત્યાદિ વિષયામાં મીલિક સાહિત્ય કૃતિઓને તેઓશ્રી સાહિત્ય જગતને ભેટ ધરે છે.

જૈન સાહિત્યમાં પણ ત્રિષષ્ટિ શલાકા પુરૂષ ચરિત્ર–પર્વ ૧૦. વીતરાગસ્તાત્ર, યાેમશાસ્ત્ર ર્કત્યાદિ સાહિત્યસર્જના તેઓશ્રીની બહુસુખી વિદ્વત્તાના આપણને સુપશ્ચિય આપી જાય છે.

(२)

(૧૬મના ૧૭ મા શૈકાના ઉત્તરાર્ધના કાલની આ વાત છે. જેન શાસનના પરમ પ્રભાવક જગદ્ગુરુ આચાર્ય શ્રી હીરસ્રી લરજીના સ્વર્ગારાહેલુ લાદ, જેન સંઘમાં અનેક-વિધ વિક્રટપરિસ્થિત જન્મવા પામી હતી, ભલભલા સમર્થ સાધુપુરુપા આ સ્થિતમાં કિંકર્ત અમૃદ્ર જેવી દશામાં મૂકાઈ ગયા હતા. આંતરિક બાદ્ય-બન્ને પ્રકારના આ અનિ-પ્કનીય વાતાવરલુની અસર જેન ધર્મના પ્રત્યેક અંગાપર એાઇ-વત્તી જરૂર પડી રહી હતી. વિદ્રાન સાધુપુરુપા, શકિતસંપન્ન શ્રાવકવર્ગ, આ બધાયમાં મુખદ, શુભ પરિલામ આલી શકવાને માટે અસમર્થ બન્યા હતા. સંયમી, ત્યાગી નિર્શન્ય સાધુ મહાત્માઓના સમૃહમાં શિથિલતાએ પ્રવેશ મેળત્રી લીધા હતો.

વિદ્વા અને સંયમ બન્નેના સુમેળ ઘટતા ગયા હતા જગદ્ગુરૂ શ્રી હીરસૂરી ધરના યુષ્ય પ્રભાવ, તેજ તેમજ તેમણે સ્થાપેલું જાકય તુટતા ગયા હતાં

અષવા સંઘર્ષણ કાલમાં જૈનશાસનને, જૈનસાહીત્યની સેવાદ્રારા સમસ્ત સંસારને અજવાળનાર એક દિબ્યવિબૃતિના મુચેાગ પ્રાપ્ત થાય છે.

ગુર્જર્ભામે રત્નાની ખાલુ છે. ગુજરાત—મહાગુજરાતની ભૂમિ પૂર્વકાલથી અલાવધિ ધર્મ, કલા, વિજ્ઞાન, સાહિત્ય. અને સંસ્કાર, પરાપકાર સેવા, વગેરે પ્રાકૃતિક ગુણાથી સુપ્ર-સિલ છે, ગુજરાતની ભૂમિપર અનેક મહાન વિભૂતિઓએ જન્મ ધારલુ, પરાપકારમય આધ્યાત્મિકતા તથા સાંસ્કારિક સાહિત્ય સર્જન દ્વારા ઉન્નત છવન છવી, સંસારભરમાં અનુપમ પ્રખ્યાતિ મેળવીને યશસ્વી નામના પ્રાપ્ત કરી છવનને ધન્ય બનાવ્યું છે.

પૃ. ઉપાધ્યાયછ મહરાજ ગૂજ'રધરિત્રીનાં અણુમાલ નરરત્ન હતાં, ગૂજ'ર ભૂમિનાં મહાન સંતાન હતાં,

અમદાવાદ તથા પાટ્યુ-ગૂજરાતના તાળે પ્રાચીન ઐતિહાસિક મહાન શહેરાની વચ્ચે હાલના કલાલ ગામની નજીક 'કનાડુ' ગામમાં વિક્રમના સત્તરમા સૈકાના ઉત્તરાર્ધમાં તેઓશ્રીના જન્મ થયા.

જૈનશાસનના સંઘર્ષણુ કાલમાં આવા પુષ્યપુરુષના જન્મ, શાસનના ભાવિ માટે યાવત્ સંસાર સમસ્તના ભાવિ માટે ઉજવળ આશારૂપ ગણાય.

ભાળક યશવેતને માતાના સંસ્કારાના પ્રભાવે ન્હાની વયથી જ ધર્મપ્રત્યે રૂચિ છે. પ્રેકાલીન ક્ષયાપશ્યમના કારણે તેની ખુકિ, પ્રતિભા તથા સંસ્કારિતા કાંઈ અદ્ભુત છે, પિતા નારણ અને માતા સાભાગ્યદેવીના ખન્ને પુત્રો યશવેત તથા પદમશી, રામ—લક્ષ્મ-ભુની નેહીની જેમ પરસ્પરના સ્નેહથી સંકળાયેલા હતા. જગદ્ગુરુ શ્રી વિજય હીરસ્ર્રીશ્વ-રજીના પ્રશિષ્ય પંહિત શ્રી નયવિજય મહરાજના સુયાગ આ ખન્ને બાલકાને થાય છે. સાધુઓનાં જીવંનની નિર્મળતા, ઉત્તમતા તથા આત્મકલ્યાણ પરાયણતા નેઇ—સ્હમજ ખન્ને ભાઇઓ તે પ્રત્યે આકર્ષાયા, માતા પિતાની સમ્મતિ મળતાં તેઓ પાટણ શહેરમાં આ શ્રી વિજયદેવસૂરીશ્વરના વરદ હસ્તે વિ. સં. ૧૬૮૮માં ભાગવતી દીક્ષા મહણ કરે છે.

્બાળક જશવંતની વય આ અવસરે લગભગ ૧૩ વર્ષની હાેવી સંભવિત છે. લઘુ ખંધુ પદમશી-પદ્મસિંહની વય કહાચ ૧૦–૧૧ની ગણી શકાય. જે કે તેઓની કીક્ષા અવસ્થાની વયના ચાકકસ ઉલ્લેખે હજૂ સુધી મલતો નથી પણ એટલું તો કહેવું શકચ છે કે, તેઓએ આલ્યકાલમાં દીક્ષા શ્રહણ કરેલી છે.

જગદ્ગુરુ આ. શ્રી. વિજયહીરસૂરિજના પટ્ટપ્રભાવક આ. શ્રી વિજયસેનસૂરિજ હતા. તેઓનાં સ્વર્ગારાહેલું બાદ આ. શ્રી વિજય દેવસૂરિજ શ્રીહીરસૂરિમહારાજની પાટપર આવ્યા હતા. સુનિશ્રી યશાવિજયજના દીક્ષા કાલે સમગ્ર તપાગચ્છમાં બે માટા ભાગલા પડી ગયેલા હતા. તે કાલે આ. શ્રી. દેવસૂરિજનાં નેતૃત્ત્વમાં એક શ્રમણવર્ગ હતા. શ્રી. વિજયસાન દસૂરિજના નેતૃત્ત્વમાં હતા. શ્રી. વિજયસેનસૂરિજના વિદ્યમાનકાલમાં આ મતભેદ ધુંધવાતા હતા.

સાધુ યશાવિજયછ સમર્થશક્તિશાળી તથા તેજસ્વી ખુદ્ધિનિધાન હતા. પાતાના ગુરુ-વર્ધ્ય શ્રી નયવિજયછની સાથે કાશીદેશમાં દર્શનશાસ્ત્રોના અભ્યાસ માટે તેઓ પધારે છે. ન્યાય, વેદાંત, મીમાંસક તેમજ સાંખ્યદર્શનના સિદ્ધાંતાના તેઓ ખૂબ જ પરિશ્રમ પૂર્વક અભ્યાસ કરે છે. પ્રાચીનન્યાય તથા નવ્યન્યાયના અંથાનું પરિશીલન, મનન, નિદિધ્યાસન કરતાં કરતાં શ્રી યશાવિજયછ, ન્યાયદર્શનનાં રહસ્યને પ્રાપ્ત કરે છે. કાશી-અનારસની સ્થિરતા દરમ્યાન તેઓ પ્રખર વિદ્વત્તા મેળવે છે.

એ અવસર નવદીપ-મંગાલ પણ નવ્ય-ત્યાયગાએકાનાં અધ્યયન-અધ્યાપન માટે મુપ્રસિદ્ધ ક્ષેત્ર હતું. દક્ષિણમાં દેવગિરિનગર પણ વિદ્વાનાની ગ્રાનભૂમિ ગણાતું છતાં આ અધા કરતાં કાશીમાં દેવી સસ્તવતીના સાકાન નિવાસ મનાતા હતા. વિદ્વાના, પ્રકાંડપંડિતા દિગ્ગજ દર્શનગાઓઓની એ કર્મભૂમિ હતી. શ્રીયગ્રાવિત્યછને આવા સંક્રાંતિકાલમાં પણ દર્શનગાઓનાં અધ્યયન માટે અનુકૃલતા પ્રાપ્ત અર્ક, અને એમની ભૂખ દ્વડી, તેમણે સારી ખંતથી ગ્રાનામૃતનું ભાજન કર્યું. તેઓ પ્રાચીન તથા નવ્યન્યાય ગ્રામના ગ્રાતા સમર્થ પંડિત બન્યા. ત્યાંના વિદ્વાન ભ્રાદ્મણ પંડિતાએ તન્યાયવિશાસ્દ 'નું માન તેઓ-શ્રીની અસાધારણ વિદ્વાત્તાથી રંજિત થઇને દૃદયના અડુમાન પૂર્વક તેઓને સમર્પિત કર્યું.

(3)

શ્રીયગ્રાવિજયજીમદારાજેશીનાં સંચમીજીવનમાં જ્ઞાનગુણે, સુવર્ણ-સુગંધના સુમેળ શ્રાધ્યા. ઈનદર્શન પ્રત્યેની નિર્માલશ્રદ્ધા, સચ્ચારિત્ર્ય, અનુપમ વિદ્વના આ અધાય ગુણા ઉપરાંત, દ્દયની સરલતા, વિનમ્રશાંત્રપ્રકૃતિ, ગુણાનુરાગ ઇત્યાદિ તેઓનાં જીવનની અદિ-તીય વિશિષ્ટના દ્વી.

તે અવસરે સર્વ કાઈ શ્રમણવર્ગના તેઓના પ્રત્યે પરિપૂર્ણ આદરસાવ હતા. સાધુ—સાધ્વી સમુદાય ઉપરાંત, શ્રાવક—શ્રાવિકામંઘના પણ અત્યધિક પૃત્યલાવ તેઓ પ્રત્યે વર્તાતા રહ્યો. આ અર્ધ તેઓના પ્રબલ પુષ્યપ્રકૃતિનાં પરિણામરૂપ કહી શકાય, નજીકના કાલમાં જગદ્ગુરુ શ્રીવિજય હીરસ્ટ્રીશ્વરના સાધુ સમુદાયમાં જે ગંભીર ભેદ હંભા થયા હતા, તે આ અવસરે સંધાઈ જનાં પ્ આચાર્ય શ્રી વિજયદેવસ્ટ્રીશ્વરના પડપર ન કાલ પૃ આગ શ્રી વિજય પ્રબસ્ટ્રીશ્વર વિદ્યમાન હતા. તેઓશ્રીનાં વરદ હદને પૃત્રય શ્રીયશા- વિજયજીને વાચકપદ-હપાધ્યાય પદયી શ્રીસંઘ વિભૃષિત કર્યા.

આટ આટલા મનાબેદ, મંઘર્ષણ તેમર વિશેષા દાવા છતાં શ્રી મંઘતું, શમણ સમુ-દાયનું ખંધારણ તે અવસર અતિશય વ્યવસ્થિત હતું. સેંકેટા સાધુએાના નાયક ગચ્છપતિ તરીકે શમણ સંઘમાં આચાર્ય એકજ હતા. એકજ આચાર્યની આત્રાનુસાર તેઓશ્રીની સમ્મતિ મુજબ ગચ્છની સવળીએ વ્યવસ્થાઓ તે કાળમાં નિયમિતપણ ચાલતી હતી. ગચ્છમાં અનેક સમર્યો વિદ્રાના, પ્રભાવકા, સંયમધન ત્યાપી, ચારિત્રશીલ સાધુ મહા-ન્માઓ, આ બધાય એક જ આચાર્યશ્રીની મચીદામાં શિસ્તપૂર્વક રહી તેઓશ્રીની આત્રાને શિરસાવંદ્ય કરતા.

આ જ એક મહત્વનું કારણ, પૃત્ ઉપાધ્યાયછ શ્રી યશેહવિજયછ, ઠેઠ સુધી વ્યાચાર્યપક પર પ્રતિષ્ઠીન ન ઘઇ શક્યા, એમાં દાય એમ અનુમાન ઘઈ શકે છે.

પૃષ્ ત્રાશનપ્રભાવક આ૦ શ્રી હરિબદ સ્રીધર, પૃ કલિકાલ સર્વત્ર આ૦ શ્રી દેમચંદ સ્રીધર, આ બન્ને જૈન શાસન પરમયભાવક મહાપુરુષોનાં પળલે પગલે ઉપા ધ્યાયછ યશાવિજયજ મહારાજે નિજની તેજસ્વી પ્રતિભાના અસાધારણ સામર્ચ્યથી સાહિ-ત્યના પ્રત્યેક ક્ષેત્રમાં અત્યદ્ભુત ચમત્કાર સજ્યે છે.

આગીન તથા નવ્યન્યાય, વ્યાકરણ, સાહિત્ય, અલંકાર, છંદ, કાવ્ય, તકે, આગમ, નય, પ્રમાણુ, યાેગ, અધ્યાત્મ, તત્ત્વત્તાન, આચાર, ઉપદેશ, કથા, ભકિત તથા સિદ્ધાંત ઈત્યાદિ અનેકાનેક વિષયાપર સંસ્કૃત, પાકૃત, તેમજ ગૂર્જરભાષામાં વિશાલ પ્રમાણુમાં સાહિત્યકૃતિ એાનું સર્જન કરીને તેઓશ્રીએ જૈનશાસનના છેલ્લા લગભગ ૬૦૦ વર્ષમાં ખરેખર શકવત્તી ઇતિહાસ સજ્યે છે.

તેઓશ્રીની સાહિત્યકૃતિઓમાં અગાધ પાંડિત્ય જેમ જણાઈ આવે છે. તેજ રીતે ન્હાનું ભાળક સ્હેમ છે. શકે તેવી સરક્ષ દ્વાકભાગ્ય શૈકી પણ સ્પષ્ટ દેખી શકાય છે, જ્ઞાનસાર, અધ્યાતમાર, અધ્યાતમારનિષદ જેવા શ્રંથરત્ના દ્વારા તેઓશ્રીએ હિંદુસમાજમાં ખહુજ પ્રચલિત ગીતાનું તત્ત્વન્નાન, અલૌકિક દૃષ્ટિયે સઘળાયે શાસ્ત્ર શ્રાનાં દાહનરૂપે ગૂંથીને મૂક્યું છે. એકજ 'ન્નાનસાર'નું જે અધ્યયન, મનન, પરિશીલન આજે એકાશ્રચિત્તે કરવામાં આવે, આજના સભ્ય માનવસંસારને એ શ્રંથની વસ્તુની લેટ ધરવામાં આવે, તેા વર્તમાનનાં વિષમ વાતાવરણમાં અનેકવિધ વિસંવાદિતાઓ, સમશ્યાઓ કે મૂંઝવણાના વાસ્તવદશીં સચાટ ઉપાય આ 'ન્નાનસાર'ના પ્રણાધેલા તત્ત્વન્નાનમાં જગતને મલી શકે તેમ છે.

જૈનદર્શનના સ્યાદ્વાદવર્ગને, જૈનસિદ્ધાંતાની તત્ત્વવ્યવસ્થાને, તેનાં સર્વ સુસંવાદી શાસ્ત્રજ્ઞાનને તેઓશ્રીએ પાતાની નવ્યન્યાયની ભાષામાં જે રીતે સાહિત્યમાં ઉતાર્શું છે. તે ખરેખર અમૃત છે. તેઓશ્રીના એક એક ન્યાયબ્રંથનુ જ્યારે જ્યારે મનન, પરિશીલન કરવામાં આવે છે ત્યારે તેના સતત અભ્યાસી પ્રજ્ઞાશીલખુહિમાન માનવને પણ ઘડિ–ઘડિમાં તેઓના બ્રંથની એક એક પંકિતમાં નવુંજ તત્ત્વ જાણવા મલે છે.

શાળી અલ્પ, ભાવગંભીર એ તેઓશ્રીનાં ન્યાયમંથાની સ્વતંત્રશેલી છે. આ શૈલી આ. શ્રી. હરિલદ્રસૂરીશ્વરના મંથાના સતત પરિશીલનના કલરૂપ તેઓશ્રીને સહજ ખની હાય એમ કહી શકાય. પૃ. ઉપાધ્યાયજી મહારાજશ્રી દાર્શનિક વિષયોના પ્રકાંડ વિદ્વાન હતા. તત્કાલીન જે જે જૈન–જૈનતર દર્શનામાં પ્રખર વિદ્વાના વિદ્યમાન હતા, તે બધાયમાં તેઓશ્રીનું સ્થાન અદિતીય લેખાતું હતું.

તેઓશ્રીની પ્રત્યેક કૃતિ, તે તે વિષયની છેલ્લામાં છેલ્લી ઉત્કૃષ્ટ કહીએ તાયે ચાલે તેવી છે. શાસ્ત્રવાર્તા સમુચ્ચય—શ્રીહિરિભદ્રસ્ર્રિજીકૃતની 'સ્યાદ્વાદ કલ્પલતા 'નામની, ઉપાદ્યાયજી મહારાજે રચેલી ટીકા, જૈનદર્શનના પદાર્થોને નવ્યન્યાયની શૈલીયે પ્રતિપાદન કરનારી અદ્દન્ લુતતમ સાહિત્યકૃતિ છે. આ કૃતિમાં તેઓનું સ્ત્ર–પર દર્શનશાસ્ત્રો વિધેનું અગાધ પાંડિત્ય પંક્તિયે–પંક્તિમાં વ્યક્ત થાય છે.

દર્શ નશાસ્ત્રોના સમર્થ વિદ્વાન તેએાશ્રી, જ્યારે આચાર; ઉપદેશ, લક્તિ કે કાેઇપણ વિષયપર સર્જન કરવા છેસે છે, ત્યારે તે તે વિષયના સર્વજ્રેત્રાને–સર્વઅંગ–પ્રત્યં ગાને પરિપૂર્ણ રીતે સ્પર્શી ને તેનું સર્જન કરે છે. ખરેખર તેઓશ્રીની આ સર્વતો મુખી પ્રતિભા માટે આપણે તેઓશ્રીને કયા શબ્દામાં અંજલિ આપી શકીએ ?

તેઓશ્રીનાં જીવન તથા કવનવિષે આ ન્હાના લેખમાં અન્ય કેટ-કેટલું વિવેચન કરી શકાય!

આજે મેં કહા વધી થવા હતાં, તેઓશ્રીના જેવું અદ્દમુત વ્યક્તિત્વ, અસાધારણુ વિક્ષત્તા, જૈનદર્શન પ્રત્યેની અનન્ય નિષ્દા, તેમજ છવન પર્ય ત સાહિત્ય સેવા માટેના લગીરથ પુરુષાથ, તેઓશ્રીનાં નિવાંલુ ખાદ હજી સુધી કાે પણ વ્યક્તિમાં જવલ્લે જ આપણુને જોવા—સાંભળવા મળશે.

આવા અગિલુત ઉપકારાની અમીવર્ષા, આપણા પર વરસાવી, સંસાર સંમસ્તના સાંસ્કારિક સાહિત્યક્ષેત્રે મહાનકાળા નેાંધ્રાવી, પપ વર્ષના સંયમીન છવનમાં આઢ-આઢેલા અવિરત પરિશ્રમ કરી, સાંસારભરમાં યશસ્વી નામના મૂકી, અમર થઈ જનાર સંયમીશ્વર મહામના સમય સાહિત્ય સ્વામી ઉપા-દ્યાયછ શ્રી યશાવિજયછ મહારાજને આપણાં અનંત વંદન હા!

परेयां गुणदोषेषु, दिएस्ते विषदायिनी । स्वगुणानुभवलोकाद्-दिएः पीयुगवर्षिणी ॥

—-પારકાના ગુજુ-દ્વાપ જોરા તે વિપદિષ્ટ છે .અને આત્મગુજાાનુભવના પ્રકાશવાળી દપ્ટિ તે અમૃત વરસાવનારી છે.

[परमात्मपंच०]

[શ્રીમદ્ યરાવિજયજ]

ग्रानी तपस्त्री फियावान, सम्यक्त्वानप्युपग्रांतिर्द्धानः ॥ प्राप्नोति तं नैव गुणं कदापि, समाहितात्मा छमते शर्मा ये ॥

—ત્રુમાધિવાળા, પ્રશાન્ત અહમા જે રાષ્ટ્રોને પ્રાપ્ત કરે છે. તે રાષ્ટ્રો શાંતિ વિનાતા માછુમ કદ્રાપિ પ્રાપ્ત કરતા નથી; પછી તે માણુસ ંબલે ત્રાના, તપસ્ત્રી, ક્રિયાવાન કે સમ્યત્રદ્દપ્રિવાળા દ્રાય!

विराग्यकल्प॰ र

[શ્રીમદ્ યરાવિજયજ]

વાચક યશાવિજય

:' યાણી વાચક જસ તણી, કાેઈ નચે ન અધૂરી રે.' [લેખક:-પરમપૂજ્ય પં. મહારાજ શ્રીમાન ભદ કરવિજયછ ગણિ]



પદ્મ શ્રીપાળના રાસ વર્ષમાં છે વાર નિયમિત શ્રવણ કરનાર તથા વર્ષમાં બે વાર નિયમિત શ્રીસિહ્નચક્રની એાળીના વિધિયુક્ત તપ કરનાર ભાગ્યવાન્ શ્રદ્ધાળુ આત્માના કર્ણ દાેટરમાં એવી રીતે ગુંજારવ કરી જાય છે કે, તેની ઝણઝણાટી અને સ્મૃતિ વર્ષના ૩૬૦ દિવસ-માંથી એક પણ દિવસ ખસતી નથી. વાચક જસની વાણીમાં એવું શું છે ? તેના ખુલાસા વાણી વઉ કરવા અશક્ય છે. તેના સાંચા ખુલાસા ती तेनी वाशीना सतत सभागभर्भा रहेनार आत्माने अंतर्रात्भावडे क आधाआप थाय छे.

વાચંક યશાવિજય સમર્થ તાર્કિક છે. અસાધારણ કવિ છે, પ્રખર પંહિત છે. તેથી તેમની વાણીના સમાગમ સામાન્ય માણુસ કેવી રીતે સાધી શકે? એ પ્રશ્નના · ઉત્તરમાંજ ઉપાધ્યાય **યંશાવિજય**જી મહારાજનું અદ્વિતીય વ્યક્તિત્વ છુપાયેલું છે. શ્રી જૈનશાસન અથવા શ્રીવીરશાસનરૂપો ગગનાંગણુમાં અદ્વિતીય તેજસ્વી તારક્ષાએ આજ સુધી અનેકાનેક થયેલા છે, અને તેમના અદ્વિતીય જ્ઞાન પ્રકાશ આજ પર્ય ત અનેકાનેક ભગ્યાત્માંઓનાં અજ્ઞાનતિમિરને લેટી રહ્યો છે, એ વાત અતિસુપ્રસિદ્ધ છે. છતાં તેમાં પણ છેલ્લા છે અદિતીય તેજસ્વી તારકા 'શ્રીહરિભદ્ર' અને 'શ્રીહેમચંદ્ર'ના ઉપકાર કદી પણ ન ભૂલાય તેવા છે. તે બન્ને મહર્ષિ ચોાનું જ્ઞાન તેજ ઝીલ્યા વિના જ કાઈ જ્ઞાની ખન્યા દ્વાના દાવા તેમના સમય પછી કરી શકે, એવા એક પણ પંડિત જૈનશાસનમાં શાધી શકાય તેમ નથી. વાચક ઉમાસ્વાતિના ' તત્ત્વાર્થાધિગમ ' કે સિદ્ધસેન દિવા કરસૂરિના 'ન્યાયાવતાર' ભણ્યા વિના પંડિત થયાના દાખલા હન્તુ મળી શકે પરન્ત શ્રીહરિંભદ્રસૃરિનું 'શાસ્ત્રવાર્તા' કે શ્રીહેમચંદ્રસૃરિનું 'ચાગશાસ્ત્ર' ભણ્યાવિના જૈનશાસનનું પાંડિત્ય પ્રાપ્ત થયાના દાખલા તેમની પછીના સમયમાં ભાગ્યેજ મળે. વિશાળ અને વ્યાપક બ્રન્થરચનાઓનાં કારણે ભગવાન શ્રી હરિભદ્રસ્ટિ કે કલિકાલસર્વન્ન શ્રી હેમચંદ્રસૂરિતું સ્થાન જેનશાસનમાં અદ્વિતીય છે. હરિભદ્રસૂરિજીની ગ્રંથરચનાએ પ્રોદ છતાં માતાની જેમ હૃદયદ્રાવક છે. હિમ્ચંદ્રસૂરિજીની રચના સરળ છતાં સુમુક્ષુઓને

પિતાની જેમ માર્ગદર્શક છે. વાચક યશાવિજયજીની કૃતિએ પ્રોઢ છે, સરળ છે, માર્ગ-દર્શક છે અને દ્દયદ્રાવક પણ છે.

વાચક યશાયિજયમાં હિર્મદ્રાચાર્ય જેવી મધ્યત્ય મુહિ અને પરીક્ષક ગક્તિ તથા હિમચંદ્રાચાર્ય જેવી સન્માર્ગદેશક અને સન્માર્ગદેશક વૃત્તિ તરી આવે છે. તદુપરાંત પૂર્વના મહાન્ આગાયો ની જેમ ગુરુબક્તિ, તીર્ય લક્તિ, સંઘલક્તિ, શાસનપ્રેમ, ધર્મપ્રેમ સંસારબુગુપ્સા, સંવેગરસ, નસ્તા, હધુતા, સરળતા, દદતા, હદારતા, ધીરતા, ગંભીરતા, પરાપકારસિકતા ઇત્યાદિ અગણિત ગુણા જણાઈ આવે છે. અને એ બધા અપૂર્વ ગુણાના કારણે તેમની કૃતિઓ, એક નાનું બાળક પણ સમજ શકે એટલી હદ સુધીની સરળ અને એક પ્રોક્તમ વિદ્રાન પણ ન સમજ શકે, એટલી હદ શુધીની ગંભીર મળી શકે છે.

હિરિલાદ્રસૃતિ મહારાજે પ્રોકમાં પ્રોક ભાષામાં તથા હિમરાં દ્રસ્તૃરિ મહારાજે સરળમાં સરળ બાષામાં ઘણું યે લખ્યું છે. પરંતુ તે માત્ર છે જ બાષામાં, એક સંસ્કૃત, અને બીજી પ્રાકૃત. જ્યાં ઉપાય યરોાવિજયણ વાચકે પાતાના પૂર્વગામી મહાપુરુપાએ કહી તેની તે વાત પણ અપૂર્વ રીતીએ, નવીન શૈલીથી, વિદ્રાશાદ્ધા અને બાલચાદ્યા અને પ્રકાર એવી સચાડ રીતીએ આલેખી છે એટલું જ નહિ પરન્તુ તે પાતાના સમયની સમુસુલાએ સર્વ બાષામાં; સંસ્કૃત, પાકૃત, માગધી, અપદ્યંશ, ગૃર્જર કે મરૂધર એક પણ લાષા તેમણે જેનમાર્ગ આલેખવા માટે જતી કરી નથી; એ એક વાચક યરોાવિજયની વિશેષતા છે.

થીછ વિશેષના એ છે કે તેમની કૃતિમાં શી હરિભદ્ર આવે છે, શી હેમચંદ્ર પણુ આવે છે, શી સિદ્ધસેન પણ આવે છે અને શી જિનભદ્ર પણુ આવે છે. શ્વેતાંબર વાચક €માસ્થાંનજી પણુ આવે છે. અને દિગંભર આચાર્ય કુન્દ કુન્દ પણુ આવે છે. આ શાળા પણુ આવે છે અને પ્રકરણુ પણુ આવે છે, તકેમાં કહિન ''સન્મતિ તકે " અને પ્રકરણુમાં કહિનમાં કહિન કમમ્પથહી તો હપાંચાયજીમહારાજના પ્રિયમાં પ્રિય વિષયો છે. આ રીતે બધાને ન્યાય આપી શકે એવી અસાધારણ શક્તિ કપાંચાયજીમાં શી રીતે આવી? તેના હત્તર પાનાના બનાવેલા 'ગુરુતત્ત્વવિનિશ્ચય' નામના એક બ્રન્ચરનમાં તેઓશી ક્રમાવે છે.

તેઓશ્રી કહે છે કે:-

'अम्हारिसा वि ग्रुवस्वा, पैनीए पैडिआण पविसंति अर्था गुरुमतीए किं, विलसिअमञ्जूष इत्तो ॥ [गुरुज्वविनिश्चय १-२]

'અમારા જેવા મૂર્ખ પણ આજે ચન્થકારની પંક્તિમાં પ્રવેશ કરે છે, એનાથી અધિક ગુરુભક્તિના પ્રભાવ બીજો કરોા હાઈ શકે?'

મુજ્યવાના પ્રસાદ પણ તેમને પ્રાપ્ત થયા છે. અને એ પ્રસાદ વટ તેમની કૃતિઓમાં કાન્ય

ચાતુર્ય અને તક નૈયુષ્ય આવ્યું છે, એમ તેઓ પાતે પણ કખુલ રાખે છે. છતાં સરસ્વતી તેમને જ આટલી હદ સુધી પ્રસન્ન થવામાં કાઈ કારણ હાલું જ જોઈએ અને તે તેમની અદિતીય ગુરુભક્તિ અને અદિતીય નમ્રવૃત્તિ સિવાય બીજાં શું છે? નાનામાં નાની ત્રણ કડીની કૃતિમાં પણ પાતાના ગુરુને જેઓ ભૂલતા નથી, અને ઉત્કટમાં ઉત્કટ ચારિત્ર પાળવા છતાં જેઓ પાતાને 'સંવિજ્ઞપક્ષિક'થી અધિક માનતા નથી, તેવા સવેત્કૃષ્ટ પાત્રને જ દેવી સરસ્વતી વર આપવા તૈયાર થાય તેમાં કશીજ નવાઇ નથી.

अस्मादशां प्रमादग्रस्तानां-चरण-करण हीनानाम् । अब्धौ पोत इव - प्रवचनरागः तरणोपायः ॥ अभादभरत अने श्ररश्-५२श्थी शून्य, अवा स्थमारा जेवा

પ્રમાદપ્રસ્ત અને વ્યરણ-કરણથી શૂન્ય, એવા અમારા જેવા માટે શ્રીજિનપ્રવચનના અનુરાગ એ જ સમુદ્રમાં નાવની જેમ તરવાના ઉપાય છે,

न्यायाळोक]

[श्रीभइ यशाविकयल

किं बहुणा इह जह राग-होसा लहुं विलिज्जंति। तह तह पयष्टिअन्वं एसा भाणा जिणिदाणं॥

વધારે અમે શું' કહીએ, આ જન્મમાં રાગ−દેષ જેમ જેમ પ્રતળા પડે તેવી તેવી પ્રવૃત્તિ કરવી એવી આદ્યા જિનેશ્વરાની છે.

वपदेश रहस्य]

-[શ્રીમદ્દ યશાવિજયછ

*પાતાની લધુતા ખતાવતાં એક જગ્યાએ તેઓશ્રી કરમાવે છે કે-

अस्मादशां प्रमाद्यस्तानां चरणकरणहीनानाम्, अन्धी पोत इव प्रवचनराग एव तरणोपायः ॥ १ ॥

પ્રમાદગ્રસ્ત અને ચરણ-કરણ શૂન્ય, એવા અમારા જેવા માટે આ કલિકાલમાં શ્રીજિનપ્રવચનના અતુરાગ એજ સમુદ્રમાં નાવની જેમ તરવાના ઉપાય છે.

પૂજ્ય ઉપાધ્યાયજમહારાજ-

શ્રીયશાવિજયજી મહારાજના ગ્રન્થોનું અધ્યયન

[લે. પરમપૂજ્ય ૫'. શ્રી ધુર'ધરવિજયજી મહારાજ] (એક કૃષ્યિબિન્દ્ર)

વિચ્છિનન પ્રભાવશાલિ–ત્રિકાલાળાધિત શ્રી જૈન શાસનમાં શાસ્ત્રોના ખજાના એટલા વિપુલ અને ખટુમૃક્ય છે કે વર્તમાનમાં ઉપલબ્ધ સર્વ અન્યાતું સાંગાપાંગ અધ્યયન તા દૂર રહા પણ તેનું વર્ણિકાદર્શન–અર્થાત્ દરેક અન્યની વાનગીમાત્ર આખવા માટે એક જિંદગી–સંપૂર્ણ આયુષ્યવાળી એછી પડે.

જેન દર્શનનાં સર્વ સાહિત્યનું અનેક પ્રકાર વર્ગી કરણ કરી શકાય છે. તેમાં નીચ પ્રમાણે તેનું વર્ગી કરણ કરીને વિચારીએ તેા અધ્યયનની અપેક્ષાએ તે સમુચિત જણાશે.

- ૧. આગમ સાહિત્ય.
- ર. આગમાનુસારિ સાહિત્ય.
- a. તક^દ સાહિત્ય.
- જ, કથા સાહિત્ય.
- પ. પ્રકીર્ણ સાહિત્ય.

ઉપર પાંચ વિભાગમાં વહેં ચાએલ જૈન સાહિત્યના દરેક વિભાગ એટલા વિશાળ છે છે કે તેના પાર પામી શકાય નહિ.

ઉપાધ્યાયજના મન્યમાંથી મળતા નવા જ જ્ઞાનપ્રકાશ

એ જૈન સાહિત્યમાં પૃ ઉપા. શ્રી યશાવિજયછ સહારાજ વિરચિત શ્રન્થા અગ-ત્યનું સ્થાન ધરાવે છે. તેમના કેટલાક શ્રન્થામાં એવું સામર્થ્ય છે કે જે વાંચવાથી ઘણી જટતા દૂર થવા સાથે કાઈ નવા ગ્રાનપ્રકાશ મળતા હાય એવું પ્રતિપદ ભાન થાય છે.

પૃત્ય ઉપાધ્યાયછ મહારાજનું સાહિત્ય અનેક સુખ પ્રસર્યું છે. જે જે વિષયમાં તેઓશ્રીએ કલમ ચલાવી છે તે દરેક વિષય એવા તા તલસ્પર્શી રીતે ચર્ચ્યો છે કે વાચકને તેથી પૂર્ણ સંતાપ પ્રાપ્ત થાય.

વર્તમાનમાં સા ઉપરાંત તેમની કૃતિએ ઉપલબ્ધ છે,-તેમાંથી કેટલીક કૃતિએ

અને એ અને અભૂતપૂર્વસમાન છે. ન્યાયશાસ્ત્ર અને તે શાસ્ત્રે અપનાવેલી શૈલીમાં આલેખેલ તેમનું લખાણુ ખૂબ જ મહત્ત્વનું છે.

ન્યાય દર્શનમાં ગંગેશ ઉપાધ્યાય પછી નવ્યન્યાયની પ્રણાલિકાના આરંભ થયા અને તેના વિકાસ પૂજ્ય ઉપાધ્યાયછ મહારાજના સમયમાં પૂર્ણ ટાંચે પહોંચ્યા હતા એમ કહી શકાય, રઘુનાથ શિરામણિ, ગદાધર, જગદીશ વગેરેના નવ્યન્યાયના શ્રન્થા સ્ક્ષ્મ લર્કસરણમાં આગળ પડતા હતા. જેન દર્શનમાં એ શૈલીથી વિષયાનું પ્રતિપાદન પૂજ્ય ઉપાધ્યાયછ મહારાજે કર્યું –કર્યું એટલું જ નહિ પણ એવું કર્યું કે જરીપણ એાછાશ કે કચાશ રાખી નહિં. 'અષ્ટસહસી' 'શાસ્ત્રવાર્તાસમુચ્ચયની કેલ્પલતા ટીકા' 'અનેકાન્ત વ્યવસ્થા' 'નયાપદેશ–નયામૃત–તરંગણી' 'વાદમાલા' ન્યાયખંડખાદ્ય' દ્યાનાણુંવ' 'સાનબિન્દુ' 'તત્ત્વાર્થ ટીકા–પ્રથમઅધ્યાય' વગેરે શ્રન્થા જેતાં નવ્યન્યાયશૈલી ઉપરતું તેમનું પ્રભુત્વ તેમના પ્રત્યે ખુદ ગંગેશ ઉપાધ્યાયને પણ બહુમાન ઉપજાવે એવું છે. ઉપાધ્યાયછની કલમમાં ખંડનશક્તિ સાથે સમન્વય કરવાની શક્તિ હતી.

આ વાતમાનત પરીક્ષા, આ વાતમાક—મતદલન, પ્રતિમાશતક, ધામ પરીક્ષા, ગુરુ-તત્ત્વ વિનિશ્ચય, ૧૨૫ ગાથા આદિ સ્તવના, તેમની પરમત ખંડન કરવાની શક્તિના પૂર્ણ પરિચય કરાવે છે. તે સાથે જ્ઞાનબિન્દુ, વગેરમાં તેમની સમન્વયશક્તિના પરિચય મળે છે.

સમન્વય શક્તિ

સ્યાદ્વાદ કલ્પલતામાં એ સમન્વય શક્તિ કમનીય રીતે ખીલી છે. અષ્ટસહસી એ દિગમ્ખર શ્રન્ય ઉપર આઠ હજાર શ્લોક પ્રમાણુ અષ્ટસહસી રચીને સમસિદ્ધાન્તમાં અવિ-દેશ કેળવવાની તેમની વૃત્તિ ગૌરવ જન્માવે છે. અને તે પણ સમન્વય શક્તિના એક મકારના આદર્શ પૂરા પાંડે છે. તકેમાં કર્ક શ મતિ ચલાવવા છતાં તેમાં સાહિ-યની સુકુ-મારતા રમણીય હતી. વૈરાગ્ય સાથે સાહિત્યના સમ્બન્ધ જોડવાની તેમની શક્તિ વૈરાગ્ય કલ્પલતા, અધ્યાત્મસાર વગેરમાં સુન્દર જોવાય છે. જ્ઞાનસાર આદિ શ્રન્થામાં અધ્યાત્મ રસ એક સરખા નીતરે છે.

મૂર્તિ પૂજાની સિદ્ધિ માટે તે તેમનાં લખાણાએ ચમત્કાર કર્યો છે. એમનાં એ લખાણા વાંચવા માત્ર પણ વાંચી જનારના હુદયમાં જે મૂર્તિ પૂજાની સત્યતા ન જન્મે તે જાણવું કે તે ચેતન નથી. સ્તવના, સ્તુતિઓ, સ્તાત્રા વગેરે એકએકથી ચડીઆતા રચીને તેમણે બહ્તિયાગનું સાહિત્ય પણ ભરપૂર પૂરૂં પાડ્યું છે.

તેઓ જેવું ગદ્ય લખી શકતા હતા તેવું જ કે તેથી પણ વિશેષ સુન્દર રીતે પદ્ય લખી શકતા હતા. ગુજરાતી, પ્રાકૃત, સંસ્કૃત એ ત્રણ ભાષા ઉપરના તેમના કાળૂ પ્રા હતા. ભનારસીદાસને ઉત્તર આપતાં તેમણે વ્રજભાષામાં પણ કલમ ચલાવી છે. પદ્યમાં સ્થળે સ્થળે રાજસ્થાની ભાષાની ઝલક આવે છે તે તેમના સમયને અને તે પ્રદેશના વિદ્વારને આભારી છે, તેમનાં વચના ટ'કશાળી છે. તેઓશ્રીના પ્રન્થાન અધ્યયન થવું ઘટ

તેમના શ્રન્થાનું વ્યવસ્થિત અધ્યયન થવું આવશ્યક છે. તેમના પ્રત્યેની લક્તિ અને તેમને આપેલા આ ગ્રાન ખળનાનું ઋણુ તેમના ગુણાનુવાદ કરવા માત્રથી ઇતિશ્રી થતું નથી. ગુણાનુવાદ તો થતો આવ્યો છે અને થશે. પણ તેમના પછી અસા અકીસા વર્ષના ગાળા એવા ગયા કે જેમાં તેમના અનેક શ્રન્થા કાળના 'કવળ' અની ગયા. રહ્યા છે તે શ્રન્થા પણ તેનું અધ્યયન વધશે તા જળવાશે; નહિ તા જતે કાળે તે પણ અસુલલ થઇ પડશે. જેને જે વિષયમાં રસ હાય તે પૃત્ર્ય ઉપાધ્યાયજીના તે તે વિષયના શ્રન્થને વાંચે–વિચાર, કે કસ્ય કરે અને તે રીતે તેમના પ્રત્યેની લક્તિ વ્યક્ત કરે.

妈

र्विका भ्रमरी ध्यानात्, भ्रमरीत्वं यथाग्जुने । तथा ध्यायन् परमात्मानं, परमात्मत्वमाप्नयात् ॥

અર્ધ — ઇમળ ભ્રમરીતું ધ્યાન કરતાં કરતાં બ્રમરી સ્વરૂપ વની જાય છે તે પ્રમાણે પરમાત્માનું સત્તન ધ્યાન કરતાં આત્મા પરમાત્મ સ્વરૂપ વની જાય છે.

परमाःसपम्ब०]

[શ્રીમદ્ યશાવિજયજી

ઉપાધ્યાયજ શ્રીમદ્ યશાવિજયજ મહારાજ અને તેમની શાસનસેવા

[લેખક:-પરમપૂંજ્ય મુનિવર શ્રી જમ્ખૂવિજયછ મહારાજ]

ઉપાધ્યાયછ એટલે કુત્રિકાપશુ



નશાસનરૂપી મહાસાગરમાં જે અત્યંત તેજસ્ત્રી નંરરતના પ્રગટ થયાં છે તેમાં પૂજ્યપાદ વાચકવર્ષ ભગવાન શ્રી થશાવિજયજી મહારાજનું સ્થાન ઘણા ઉંચા દરજ્જામાં આવે છે. જે કે જગતે આજ સુધી ઘણા સમર્થ વિદ્વાના જેયા છે, પરંતુ ઉપાધ્યાયજી જેવા મહાપુરુષા તા તેમાંથી વિરક્ષ જ મળી આવશે. કાઈ વિદ્વાનાનું સાહિત્ય વિદ્વાનાને જ અધિકાંશે ઉપયોગી હાય છે, જ્યારે કાઇનું સાહિત્ય

સામાન્ય જનતાને જ અધિકાંશે ઉપયોગી હાય છે. પરંતુ આ મહાપુરુષની વિશિષ્ટતા એ છે કે તેમનું સાહિત્ય સર્વ વિષયવ્યાપક અને સર્વ જનાપયાંગી છે. તેમનું જ્ઞાન સર્વ- વિષયોમાં અગાધ હતું અને તેમણે એટલા ગધા વિષયો ઉપર સાહિત્યસર્જન કર્યું છે કે તેમના સમકાલીન વિદ્વાના પણ તેમને ''શ્રુત કેવલી''ની ઉપમા આપતા હતા. તેમ જ તેમને ક્રૂર્ચા જરાત્વા એટલે દાઢી—મૃછવાળો સરસ્વતી દેવીરૂપે વર્ણ વતા હતા. તેમણે કયા કયાં વિષયો ઉપર લખ્યું છે એ કહેવા કરતાં કયા કયા વિષયો ઉપર નથી લખ્યું એ કહેવું વધારે ઉચેત મણાય તેમને ભૂતકાળના ક્રુંત્રિકાપણુની ઉપમા આપી શકાય. જેમ દેવાધિષ્ઠિત ક્રુત્રિકાપણુમાં જે વસ્તુ માગવામાં આવે તે બધી વસ્તુ મળી શકે તેમ આ મહાપુરુષના સર્જનમાંથી પણ આપણુને દરેક પ્રકારનું સાહિત્ય મળી શકે છે. જેમકે સંસ્કૃત—પ્રાકૃત ભાષાના પ્રાચીન શ્રુંથા ઉપર દીકાઓ, અષ્ટક વગેરે સ્વતંત્ર પ્રકરણ શ્રુંથા, અનેકાંત અને નય વિષયના અનેક ન્યાયશ્રંથા, ગુજરાતી તથા હિંદી ભાષામાં સ્તવના, સજ્ઝાયા, રાસાઓ વગેરે વગેરે ઘણું સાહિત્ય તેમણે રવ્યું છે, કે જે ખાસ વિશિષ્ટ પ્રકાશ પાડનારૂં અર્થગં ભીર અને વિદ્વત્તાપૂર્ણ છે, અને જેને વાંચતાં ગ્રાનપ્રેમી કાર્ક પણ વિદ્વાનનું મસ્તક નમ્યા સિવાય રહે નહિ.

દાર્શનિક વિષયાના પારદ્દષ્ટા

દાર્શનિક વિષયના તા તેઓ પારદ્રષ્ટા જ હતા. તેથી તે વિષય ઉપર જ્યારે તેઓ

લખવા છેસે છે ત્યારે તેમની તે વિષયમાં પારંગતતા અને સર્વતન્ત્ર—સ્વતન્ત્રતા અપૂર્વ રીતે ઝળકી ઉઠે છે. તેમણે કરેલાં સ્ક્રમતમ દર્શનિક નિર્પણામાં ન્યાયના પ્રકાંડ વિદ્વાનાના પછુ પ્રછીવાર ચંચુપ્રવેશ પછુ થવા પામતો નથી. આશ્ચર્યની વાત તો એ છે કે કાશી એવી સરસ્વતીની નગરીમાં પછુ તેમણે માત્ર ત્રણ જ વર્ષ સુધી અભ્યાસ કરીને પછુ પરવાદિઓની પર્પદામાં વિજય મેળન્યો. અને તેથી જ કાશીના જ છાહ્યણુ વિદ્વાનાનાં મંડળે તેમના ગ્રાનથી અત્યંત સુગ્ધ થઈને તેમને ન્યાયવિશાત્રદ્યું બિરુદ આપ્યું એ કંઈ એપ્છું આશ્ચર્ય ગણય નહીં. નબ્યન્યાયને જૈનન્યાયમાં ઉત્તારવાનું લગભગ અશક્ય કાર્ય તો તેમણે જ શક્ય બનાન્યું અને એ કાર્ય એકલે હાથે પાર પાડીને જૈનદર્શનશાસના ઇતિહાસમાં તેમણે અમર સ્થાન પ્રાપ્ત કરી લીધું છે.

નવીન પદ્ધતિથી પ્રકાશન-અધ્યયનની જંરૂર

નવ્યન્યાયના અને ઉપાધ્યાયછ મહારાજે રચેલા ન્યાયના બ્રંથાના અભ્યાસીઓને આ સ્થળે મારી એક સૂચના છે કે હેમણાં નવ્ય-યાયનાં વ્યાપ્તિપંચક, સિંહવ્યાલક્ષણ, सिद्धान्तबक्ष्म वगेरे वगेरे के प्रकरिता अध्ययन करवामां आवे छे ते आस क्रीने ગંગેશ-ઉપાધ્યાયવિરચિત તત્ત્વચિંતામણિ ગંધના અનુમાન ખંડના જ લાગા છે. કાશી प्राह्मच विद्यार्थिको क्षेतुं क अध्ययन ४२ छे काने पछी अध्यापन पछ क्षेतुं क इरावे છે. આ લાગામાં ભરેલી ત્રવચ્છેન્દ્રકાવચ્છિત્રમય જરિલ ચર્ચાએા લક્ષે ખુદ્ધિને સુક્ષ્મ બનાવતી હાય પછુ તેમાં પદાર્થનિરૂપણ નહીંવત્ છે એટલે તેના હપાધ્યાયછ મહારાજના શ્રીઓ સીધા ઉપયોગ ભાગ્યે જ ચાય છે. ઉપાધ્યાયછ મહારાજના ન્યાયવિષયક શ્રીનું વિશક ગાન સરલતાથી પ્રાપ્ત કરવું હાય તા તેમણે જે જે સાહિત્યને નજરમાં રાખીને પાતાનું ન્યાયવિષયક સાહિત્ય સજ્યું છે તે સાહિત્યને આપદ્યું શાધી કાઢીને સનસુખ રાખવું નેઇએ. તત્ત્વચિંતામણિના અનુમાનખંડ સિવાય બીજા ખેટામાં પદાર્થનિરૂપણ અધિકુ છે. રાયલ એસિઆડીક સાસાયડી, ળંગાળ (કલકત્તા) તરફથી એ ખંડા ઘણા समय पूर्वे प्रशशित ध्येश हे. परिश्रम हरीने पञ्च के भरा मेजनना लोही के. नजी અત્યાર ને માશુરી, જાગદીશી, ગાદાધરી આદિ ટીકાંગ્રન્થા પ્રચલિત છે તેના ફ્રપાધ્યાયછ મહારાજે ખાસ ઉપયોગ કર્યો હાય તેમ જણાતું નથી. પરંતુ દીધિતિકાર રઘુનાથશિરોમિલ્ તથા પદ્મનાભમિશ્ર વગેરેના અંથાના ઉપયોગ કરેલા જેવામાં આવે છે. એ બધા મુદ્દિત-અમુદ્રિત શ્રંથા મિધિલા અને ખનારસ બાજીના પ્રદેશમાં મળવાના ખાસ જ સંભવ છે. એ બધી સામગ્રી મેળવીને ઉપાધ્યાયછ મહારાજના શ્રંથાનું નવીન પદ્ધતિથી પ્રકાશન અને અધ્યયન કરવામાં આવશે તો તે વિશક અને દિલ્ય અનશે. તેમ જ એ મહાપુરુષ નવ્યાન્યાયની શાલીને જૈનન્યાયમાં ઉતારવા દેવી રીતે સમર્થ થયા તેની પછુ સારી રીતે કુદ્દપના આવશે. અને આપણે પણ એ પ્રવૃત્તિને મીલિક સ્વરૂપમાં કેવી રીતે વિકસાવી ંશકીએ એની પણ સ્પષ્ટ દિશા હાયમાં આવશે.

જારિલ પ્રશ્નોના કરેલા ઉકેલા

તાર્કશાસના અધ્યયનથી સ્ફ્લમતમ થયેલી છુદ્ધિના ઉપયાગ તેમણે માત્ર દાર્શનિક વિષયમાં નહિ પણ લગભગ દરેક વિષયમાં કરેલા છે. તેથી જ્યારે તેઓ આગમિક વિષય ઉપર લખવા ખેસે છે ત્યારે પણ તેમની પ્રતિભા અલીકિક સ્વરૂપમાં ઝળકી ઉઠે છે. જેને પરિણામે સેંકડા વર્ષોથી નહીં ઉકેલાયેલા અનેક જટિલ પ્રશ્નોના ઉકેલ અને સમાધાન તેમણે કર્યાં છે. બધું આગમિક સાહિત્ય તેમને જિલ્લાએ જ રમતું હતું. તેમણે કરેલી ચર્ચાઓ એટલી બધી તલસ્પશી અને યુક્તિ તથા ઉપપત્તિથી પરિપૂર્ણ છે કે વાંચનારનાં વધી જૂના બ્રેમા અને સંશયો ક્ષણવારમાં દૂર થઈ જાય છે. कम્मपयडी ઉપર સૌથી માટી ટ્રીકા રચીને તે વિષયમાં પણ પાતાની પારગામિતા તેમણે સિદ્ધ કરી આપી છે.

જેવા જ્ઞાની તેવા જ ક્રિયાવાદી

આ મહાપુરુવની બીજી પણુ એક વિશિષ્ટતા એ છે કે જગતમાં વિદ્વાન ગણાતા કેટલાક, શુષ્કપાંહિત્યના ઉપાસક શ્રદ્ધા તથા આયરણથી શૂન્ય હાય છે. પરંતુ આ મહાપુરુષ સમર્થ વિદ્વાન હાવા છતાં પણ મદાન આત્મન્નાની હતા. દર્શન, જ્ઞાન તથા ચારિત્ર બધાને તેઓ ઘણું મહત્વ આપતા હતા. સમ્યગ્દર્શન મુક્તિના પાયા હાવાથી તેના ઉપર તેઓ ઘણા જ ભાર મૂકતા હતા. આથી જ તેમના ગુજરાતી આદિ સાષામાં રચેલાં સ્તવના—સ્તુતિ—સજત્રાય—રાસાએ વગેરેમાં બક્તિરસ તથા વૈરાગ્યરસ છલાે છલ ભરેલા દેખાય છે.

યાગમાંગુના આદ્ય વિવેચક

અધ્યાત્મદશાંમાં તેઓ કેટલા અધા નિમગ્ન હતા, રક્ષે તેમણે તે વિષયના અનેક શ્રંથા રચ્યા છે, તે ઉપરથી સ્પષ્ટ જણાઈ આવે છે. પ્. હરિલદ્રસૂરિ મહારાજે વર્ષુ વેલા યાગ માર્ગના તેઓ આદા વિવેચક છે.

મૂર્તિપૂજા ઉપરના ર'ગ

ં ઉપરાંત, પ્રતિમાશતક તથા સીમ ધરસ્વામીને વિનતિરૂપ સ્તવનાથી મૂર્તિ પૂજા ઉપર તેમના કેવા દૃઢ રંગ હતા, એ પણ જણાઈ આવે છે.

નયચક્ર જેવા મહાત્ર-થના કરેલ ઉદ્ઘાર

 અરામાં લગભગ ભયાં જ ન-કાલીન પ્રસિદ્ધ દર્શનાની સમીક્ષા કરવામાં વ્યાવી છે અને એકાંતવાદી ભયાં જ દર્શના ખાડાં છે એમ સિદ્ધ કરીને તેરમા સ્વાદાદ્વનુમ્ય નામના પ્રકરણમાં સ્વાદાદ્વરૂપી નાબિના આદ્ય લેવામાં આવે તા બધાં દર્શના અપેક્ષાએ અર્ધાતા સાચાં અની શકે એમ અતાબ્યું છે. આ આખાશંધનું મૃગ, પ્રાચીન એક ગાધા જ છે કે જે નીચ સુજબ છે.

विविनियममङ्गविन्यनिरिक्तन्वाद्रन्यकत्रचोत्रन् । जैनादन्यच्छासनमनृतं मत्रनीनि वैवर्म्यम् ॥ [नथयक ५. ७ व्या. स.]

આ એક જ ગાધા ઉપર મહુવાદીઇએ વિસ્તૃત બ્રાપ્ય રચેલું છે અને તે सयचक्रता નામથી એાળખાય છે. આ નયચક્રના પ્રારંભમાં તેમણે રચેલા મંગલશ્લાક નીચે મુજબ છે.

> व्याप्येकस्थमनत्ममन्तर्वाप न्यस्तं त्रियां पार्यः । व्यामोहं न, जगन्त्रनानत्रिमृतिव्यन्यासर्वारास्त्रद्वम् ॥ वाचां मागमतीन्य वाग्विनियतं गम्यं न गम्यं स्वचि-व्येनं शामनमृतितं जयति तर् द्रव्यायेरयायतः ॥

সা নথয় ছাঁথ উথং (প্রসন্ত্রস বিশ্বসনা সার্থা গ্রন্থনা হার্যার ইথি) আহার্যার হিন্দু ক্রিন্ত্রারিম্নাগ্রমণ্ডুত মঙাহার ন্যায়ানান্ত নামনা করিবিন্তুর আখ্যা প্রতিপ্রী ট ই কির্বু হার্যায় প্রসন্তর শহান্ত মঙাহার মানু মানুবার আ বৃদ্ধিনা ক উইই অ থনা ওবা.

દુર્દેવે લગવાન મકલવાડી ક્ષ્માશ્રમણે રચેટા નથચક્રમૃદનો આજે ક્યાંય પત્તો નથી. એનિહાસિક ઉરદેખો એનાં એમ લાંગે છે કે છેરલાં સાવારો વર્ષમાં આ મૃદ્ધાંય કાંઈ એ તેથા હાય એવા ઉરદેખ મળતા નથી. અત્યારે જે મળે છે તે સિંહસ્રિલિફાદિ ક્ષમાશ્રમણ એ રચેલી મયસક્રમૃતિ જ માત્ર મળે છે. અને તે પણ દેખકાને હાથે ઉત્તરાત્તર થયેલી અમૃદિઓથી લરપુર થઇ ગયેલી છે. કેટલાકનું એમ માનવું છે કે ઉપાધ્યાય છ મહારાજે નથચક્ર ઉપર ડીકા-ડિપણ આદિ કંઇક લખ્યું છે. પણ તે માન્યવા બરાબર નથી. ડીકા-ડિપણ લખવા કરતાં પણ અનિષ્દિશેષ મહત્વનું તે ચંચની રહ્યા કરવાનું કાંચે તેમણે કરેલું છે. હકીકત એમ છે કે મયસક્રમૃતિની પ્રતિ તેમના સમયમાં લાગ્યે જ તેવામાં આવતી હતી. કાઇક સ્થળે (પ્રાય: પાડણમાં) તેમના તેવામાં એ પ્રતિ આવી તેથી અત્યંત આનંદિત થઈ તે તેમણે એ પ્રતિ પહેલાં વાંચી હોંચી અને પછી વિદ્વાન સાધુઓનું વૃંદ સાથે રાખીને એક જ પખવાડીઆમાં આ મહાકાય ચંચતી અફરશા નવી કાંપી તૈયાર કરી લીધી. આ હકીકતની સ્મૃતિમાં, તેમણે એ નવા આદર્શ (કાંપી) તૈયાર કરી લીધી. આ હકીકતની સ્મૃતિમાં, તેમણે એ નવા આદર્શ (કાંપી) તૈયાર કરી હીધી. તેના આદિ લાગમાં નીચે પ્રમાણે ઉદ્ધે પ્રમાણે હતેના અદિ લાગમાં નીચે પ્રમાણે ઉદ્ધે તેના કર્યો હતી—

ઉપાધ્યાયજએ શ્રન્થાન્તે મૂકેલી પુષ્પિકા

भट्टारकश्री होरविजयस्रीश्वरशिष्यमहोपाध्यायश्रीकरयाणविजयगणिशिष्यपण्डितश्री-लाभविजयगणिशिष्यपण्डितश्रीजीतविजयगणिसतीर्थ्यपण्डितश्रीनयविजयगणिगुरुम्यो नमः।

प्रणिधाय परं रूपं राज्ये श्री विजयदेवस्र्रीणाम् । नयचक्रस्याद्श्री प्रायो विरलस्य वितनोमि ॥ एँ नमः ॥ अने अंत्य क्षांत्रमां नीचे प्रमाधे छट्टीण ध्येरि छते। —

पूर्व पं. यशोविजयगणिना श्रीपत्तने वाचितम् ।
आदशोंऽयं रचितो राज्ये श्रीविजयदेवस्ररीणाम् ।
सम्भूय यैरमीपामिभधानानि प्रकटयामि ॥ १ ॥
विबुधाः श्रीनयविजया ग्रुरवो जयसोमपण्डिता गुणिनः ।
विबुधाश्र लाभविजया गणयोऽपि च कीर्तिरत्नार्ज्याः ॥ २ ॥
सच्चविजयम्भयोऽपि च प्रयासमत्र स्म कुर्वते लिखने ।
सह रविविजयैर्विवुधैरलिखन्च यशोविजयविबुधः ॥ ३ ॥
ग्रन्थप्रयासमेनं दृष्ट्वा तुष्यन्ति सज्जना बाढम् ।
ग्रुणमत्सर्ज्यविता दुर्जनदृग् वीक्षते नैनम् ॥ ४ ॥
तेभयो नमस्तदीयान् स्तुवे गुणांस्तेषु मे दृढा मिक्तः ।
अनवरतं चेष्टन्ते जिनवचनोद्मासनार्थं ये ॥ ५ ॥

॥ श्रेयोऽस्तु ॥ सुमहानप्ययमुच्चैः पक्षेणैकेन पूरितो ग्रन्थः । कर्णामृतं पद्धियां जयति चरित्रं पवित्रमिदम् ॥ ६ ॥

ઉપરના ઉલ્લેખથી પૂ. વિજયદેવસ્ર્રિજના સમયમાં તેમણે આ શંધના આદર્શ (નની દાપી.) તૈયાર કરી હતી એ સ્પષ્ટ સમજી શકાય છે. તે કે અત્યારે તો હ. યશાવિજયજી મહારાજે તૈયાર કરેલા એ આદર્શ તથા જેના ઉપરથી તેમણે એ આદર્શ તૈયાર કરેલે હેના તે પ્રતિ એમાંથી કંઈ પણ મળતું નથી. પરંતુ તેમણે તૈયાર કરેલા આદર્શ ઉપરથી જ સાક્ષાત્ યા પરંપરાએ લખાયેલી અનેક પ્રતિએ જૈન અંધ ભંડારામાં આજે ઠામ ઠામ

१ आना पछी जयित नयचक्रनिर्जितिनःशैषिषश्चक्रियक्षान्तः । श्रीमह्मवादिस्रिजिनवचननभस्तछ-विवस्तान् ॥१॥ तद्मणीतमहार्थयधार्थन्यचक्राख्यशास्त्रविवरणित्रदमनुष्याख्याख्यास्यामः आ प्रधारने। ले ६१२५ आवि छे ते टीधाधार क्षणवान श्री सि'ढ्यूरिगिध्यादि क्षभाश्रभछ्रे ल धरेशे। छे. जयित नवचक्रनिर्जितआ धारिधाने। ६१२५ स्व व्यक्तिविक्षण विक्रम स्व वत् १४२२ मांश्री स्व धितश्वक्ष्युरिओ र्थेशी सम्यवत्वस्रातिवृत्तिमां भस्यवादिध्यामां पश्च आवे छे.

નેવામાં આવે છે. તેમાં ઉપર જણવેલા ઉપાધ્યાયછ મહારાજે કરેલા ઉદલેખા સચવાઇ રહેલા છે. પ્રારંભના ઉદલેખ તો ઘણી પ્રતિઓમાં મળે છે. અંતિમ ઉદલેખ સં. ૧૯૨૯માં લખાયેલી વિજાપુરની શીરંગવિમળજી જ્ઞાતમંદારની પ્રતિમાં તથા તેના ઉપરથી જ સંભવત: લખાયેલી કાશીના ચિતે શીહીરાગ્રંક્ષ્યની પ્રતિમાં મળે છે. માત્ર એક જ પ્રતિ અમારા નેવામાં આવી છે કે જે ઉપાધ્યાયછ મહારાજના આદર્શ પૂર્વે સં. ૧૬૫૦ આસપાસ લખાયેલી છે. બાકીની બધી નયગ્રફની પ્રતિએ ઉપાધ્યાયછ મહારાજે તૈયાર કરેલા આદર્શની કાંચીએ જ અમારા જાવામાં આવી છે.

સન્મતિતક શ્રન્થના કરેલા વિશાળ ઉપયાગ

ઉપરના ઉદ્દેખથી શ્રી વિજયદેવસૂરિ મડારાજતા સમયમાં તેમણે આદર્શ તૈયાર કર્યો હતા અને શ્રી દેવસૂરિજી મડારાજના ક્વર્ગવાસ મં. ૧૭૧૩માં થયા હતા. તેથી ઉપાધ્યાયજી મડારાજે મં. ૧૭૧૩ પહેલાં જ એ આદર્શ તૈયાર કર્યા હતા એ કપષ્ટ છે. ઉપાધ્યાયજી મડારાજના સ્વર્ગવાસ વિક્રમ સંવત્ ૧૭૮૩માં થયા છે, એટલે આદર્શ તૈયાર કર્યા પડા ઓહામાં આહાં ત્રીશ વર્ષ તા તેઓ જીલ્યા જ હતા. આ કાળમાં તેમણે ઘલું સાહિત્ય મર્જો છે. સમ્મતિવર્કના તા તેમના લેશામાં ઘવા જ માટા પ્રમાણમાં ઉપયાપ કરેલા છે. તેમણે હદા હદા લેશામાં સન્મતિની ગાલાએનાં કરેલાં વિવેચનાને એકઠાં કરવામાં આવે તા સમ્મતિવર્ક ઉપર એક સ્વતંત્ર ઢીકા તૈયાર થઇ લાય. સમ્મતિની અભયદેવ-સ્ફિટ્ટ ઢીકાના પણ ઘણા જ ઉપયાપ તેઓશ્રીએ કરેલા છે કે જેની મદદઘી મેં ઘણે સ્થળ સમ્મતિની ઢીકામાં શૃદ્ધિ પણ કરી છે, આમ છતાં નથચક્રના તેમણે કચાય પાસ ઉપયાપ કર્યો હોય તેમ દેખાતું નથી તેનું કારણ નયચક્રવતિની અત્યંત અગ્રહતા તથા મૂલના અભાવ વગેર લાગે છે. શુજરાતી ભાષામાં સ્લેશ સીમર્યસ્ત્રાનિને દિત્રતિ રૂપ ૨૫૦ કડીના સ્ત્રવનની ૧૬ મી ઢાળની બીજી કડીમાં જ તેમણે તથચક્રના ઉપયોપ કરેલા માત્ર માત્ર સ્ત્રાનની ૧૬ મી ઢાળની બીજી કડીમાં જ તેમણે તથચક્રના ઉપયોપ કરેલા માત્ર માત્ર સ્ત્રાના આવ્યો છે. કરેલા માત્ર માત્ર સ્ત્રાનની પર મી ઢાળની બીજી કડીમાં જ તેમણે તથચક્રનો ઉપયોપ કરેલા માત્ર માત્ર સ્ત્રાના આવ્યો છે. કરેલા અલ્યો છે.

"ચાર છે ચેતનાની દશા અવિનથા, ખહુ શયન શયન જાગરણ ચાર્થી નથા; મિચ્છ અવિરત સુયત તેરમે' તેહની. આદિ ગુણુકાણે નયચક્રમાંહે સુર્ણી." ર

આ કઠી સાથે સંગંધ ધરાવતા ભાગ નયચક્રવૃત્તિમાં બીજા અરમાં પુરુષવાદમાં આવે છે. અહીં નીચ નયચક્રવૃત્તિના ને ભાગ તથા તેના ઉપરથી મેં તૈયાર કરેલું મૃળ આપવામાં આવે છે—

નયચક્રમુળ---

नस्य च चनुमोऽनस्या वाप्रत्-सुम-सुपुप्त-तुर्रायात्रयोख्याः । नाथ बहुधा व्यवति-

¹ સ્થા સિરાય બીજે કાઈ સ્થવે. કેષાધ્યાયજી મહારાજે નયગ્રહતા કેષ્યોગ કર્યો દેાય તા તે જણા-વવા વિદાતીને વિત્તિ છે.

ष्टन्ते-म्रुख-दुःख-मोह-शुद्धयः सन्व-रजस्-तमो-विम्रुक्त्याख्या ऊर्ध्वतिर्यगधोलोकाऽविमा-गाः संज्ञ्यसंज्ञ्यचेतनभावा वा । नियता एवेता विम्रुक्तिक्रमात् । सर्वज्ञता वा तुरीयं निराव-रणमोहविद्यं निद्रावियोग आत्यन्तिकः ॥

નયચક્રવૃત્તિ—

तस्येवेदानीं स्वरूपदर्शनार्थमुच्यते – तस्य च चतस्त्रोऽवस्थाः । तस्य अनन्तरप्रतिपादित चैतन्यतन्वस्येमाश्रतस्था जाप्रत्युप्तसुपुप्ततुरीयान्वर्थाख्याः, जाप्रद्वस्था सुप्तावस्था सुपु प्रावस्था तुरीयावस्था, एताश्रान्वर्थाः । ताश्च बहुधा व्यवतिष्ठन्ते, चतुर्थीमवस्थां मुक्ता तिसृणामेकैकस्याः प्रतिप्रक्रियं संभादिभेदाल्लोकव्यवहारभेदाचानेकभेदत्वात् । चतुर्थी पुनरेक-स्वरूपेव विश्वद्धत्वात् । अथवा सापि स्वरूपसामर्थ्यात् सर्वात्मनेवानेकथा विपरिवर्तते, तद्यथा-

जं जं जे जे मावे परिणमति पयोगवीससादव्वं ।

तं तह जाणाति जिणो अपज्जवे जाणणा णित्य ॥ [आवस्यकनिर्युक्ति ७९४] कास्ताः? उच्यन्ते, सुख-दुःख-मोह-शुद्धयः सन्त्व-रजस्-तमो-विमुन्याख्याः। कार्याणि चासां यथासङ्ख्यं तिसृणां तद्यथा-प्रसादलाघवप्रसवाभिष्त्रङ्गोद्वपैप्रीतयो दुःख-शोषतापमेदापस्तम्भोद्देगापद्देषा वरणसदनापव्वंसनवीभत्सदैन्यगौरवाणि। चतुथ्यस्ति शृद्धं वैतन्यं सकलस्वपरिवर्तप्रपश्चसवैभावावमासनम् । अथवा अध्वतिर्घगघोलोकाविभागा वा यथासङ्ख्यमेव, ऊर्ध्वलोको जाग्रदवस्था, तिर्यग्लोकः सुप्तावस्था, सुप्रपावस्था अधोलोकः, अविमागावस्था तुरीयावस्था। संश्यसंश्यचेतनभावा वा, संज्ञिनः समनस्का देवमनुष्य-नारकंपश्चेन्द्रियतियश्चो जाप्रति, सुप्ता असंज्ञिनः पृथिन्यविष्ठायुवनंस्पतिद्वित्रिचतुरिन्द्रि-यामनस्कपञ्चेन्द्रियाः, काष्ठकुञ्चाद्यः सुपुप्ताः, भवनमात्रं भावः सर्वत्राचिभागा तुरीयाव-स्थेति । अत्राह-अविभागात्मनस्तस्यैवात्मनश्चतुरवस्यत्वात् कालमेदाभावाच चतस्रोऽपि प्रथमद्वितीयत्तीयत्तीयाख्याः स्युरिति, एतदयुक्तम्, यस्मान्नियता एचैता विमुक्ति-कमात्, सर्वज्ञता वा तुरीयमिति, सुषुप्तावस्थायाः स्थिरीभृतचैतन्यायाः सुप्तावस्था विम्रुक्तमलत्वाद् द्वितीया मिथ्यादृष्ट्यादिका, तृतीया सम्यग्दर्शन[ज्ञान]चारित्रात्मिका मुक्ति-प्रत्यासत्तेः, सर्वज्ञता चतुर्थी । तत् पुनस्तुरीयं निरावरणमोहविद्यम्, निर्गता ज्ञानदर्शनावरणमोहिवद्या अस्मिनिति निरावरणमोहिवद्यम्, मोहस्यैव महास्वापत्वात्। —**નયચક** (આત્માનંદ સલાતું સંરકરણ) પૃ. ૧૮૧

અમર યશસ્વી ઉપાધ્યાયછ

વસ્તુત: વિચાર કરીએ તો જૈનદર્શન એ કાઇ સંપ્રદાય નથી. પણ એક દિવ્ય તત્ત્વજ્ઞાન છે કે જે તત્ત્વજ્ઞાનમાં સર્વજીવાના એકાંતે કલ્યાણની અને શ્રેયની જ ભાવના ભરેલી છે. છે. આજના વૈજ્ઞાનિક યુગમાં પણ હિંસાના દાવાનળથી સંત\ત થયેલું જગત દીન અને અશરણ અની જે "ત્રાહિ ત્રાહિ"ને પાકારી રહ્યું છે તેને જોઈને કપા સાટ્ટ્રદય મનુષ્ય સર્વજીવવ્યાપક અહિંસા, મંત્રી અને કરુણાની ઉદ્દેશપણા કરતા જેનદર્શનના તત્ત્વનાન ઉપર મુગ્ધ ન થઇ જાય ! આવા જેનશાસનમાં જન્મેલા પૂ ઉપાધ્યાયછ મહારાજ માત્ર જેન-શાસનના જ અલંકાર રૂપ છે એમ નહીં, પણ સમગ્ર ભારત અને વિશ્વના અલંકારરૂપ છે. આ મહાવિભૃતિના જન્મ અને સ્વર્ળવાસ બંને ગુર્જસ્ભૃમિમાં થયેલાં છે. તેથી શુર્જસ્ભૃમિ તો ગોરવની વિશેષ અધિકારી છે. તેમની સ્વર્ગભૃમિ દર્ભાવતી (હેલાઇ) નગરીમાં તેઓશ્રીના અન્તિસંસ્કારને સ્થાને તેઓશ્રીના ઉપકારની પુષ્યસ્મૃતિનિમિત્તે શુરુમંદિર કરીને તેમાં તેઓશ્રીની મૃતિની પ્રતિષ્ટાપના અંગે મહાત્સવ તથા તેમના શુણાનુવાદ માટે 'શ્રી યશાન્ત્રપળ સારસ્વત સત્ર' યાજવાના કાર્યક્રમ અતિપ્રશંસનીય, અને અનુમાદનીય છે. પ્રતિષ્ટા સાથે સત્રની યોજના સુવર્ણમાં સુગંધની યોજના સમાન છે.

જે મહાપુરુષે મુમુક્ષુ છવા ઉપર અસીમ ઉપકાર કરેલા છે તે અમરયગ્રસ્વી ઉપાધ્યાયછ લગવાન શ્રીયશાવિજયછ મહારાજનાં પવિત્ર ચરણુકમલામાં કાેડિકાેટિવાર

વંદન હો!





राग-देयो हती येन, जगत्त्रय मयंकरी । स त्राणं परमात्मा मे, स्वप्ने चा जागरेऽपि चा ॥१॥

અર્થ'—ઝેછે ત્રણ જગતને લય કરતારા રાગ-દ્વેષ હછી નાંખ્યા છે, તે પરમાત્મા સ્વપ્તમાં તેમ જ જાગૃતિમાં પણ માર શરણ હો.

परमञ्योतिः यम्चर्विनतिका 1

[શ્રીમદ્ યરાાવિજયછ



પૂ. ઉપાધ્યાયજ શ્રીયશાવિજયજ મહારાજનાં-વચનનાં રહસ્યા અને વિશેષતાએા

[લેખક: પરમપૂજ્ય આચાય શ્રીવિજયપ્રેમસ્રીશ્વરજ મહારાજના શિષ્ય પરમપૂજ્ય મુનિશ્રીભાતુવિજયજ મહારાજ]

अज्ञानतिमिरान्धानां, ज्ञानाञ्जनशलाकया । नेत्रग्रुन्मीलितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः।



નંત ઉપકારી ત્રિલાકનાથ તીથ કર શ્રીમહાવી રહેવના વિરહકાળમાં વિદ્યમાન એમના સુંદર શાસનની બલિહારી છે કે જેમાં અનેકાનેક મહાપુરુષોએ એવા એવા ઉત્તમ શાસ્ત્રરત્નાની આપણુને લેટ કરી છે, કે જેના વડે આ કળિકાળમાં પણ આપણુને જાણે શ્રી સર્વજ્ઞપ્રભુની સાક્ષાત્ વાણીથી ઊપકૃત થયા છીએ.

પંચપરમેષ્ઠીના ચતુર્થપદે બિરાજમાન પૃ મહામહાપાધ્યાય શ્રીયશાવિજયછ મહા-રાજ આવા મહાપુર્ધા પૈકીના એક હતા. તે પણ અસાધારણ સર્વતાસુખી વિદ્વતાને ધરનારા! તેથી જ એમના સમકાલીન પૂ. ઉપાધ્યાય શ્રીમાનવિજયછ મહારાજે એમનેં શ્રુતદેવહી—ચોદપૂર્વીનું સ્મરણ કરાવનારા કહ્યા છે. પૂ ઉ. શ્રીમાનવિજયછ મહારાજની પણ મહાન વિદ્વત્તા એમના 'ધામ'સંગ્રહ' શ્રન્થમાંથી જાણી શકાય છે. એવા વિદ્વાનોને પણ એમ થતું કે આજના એક પૂર્વના પણ જ્ઞાનરહિત કાળમાં કાઈને વિચાર આવે કે ચોદપૂર્વના ગાતા મહિવે કેવા વિદ્વાન અને કેવા વ્યાખ્યાતા હોતા હશે, તો તેના પ્યાલ અસાધારણ સ્વ પર સમયવેત્તા—વ્યાખ્યાતા એવા આ પૂ. ઉ શ્રીયશાવિજયછ મહારાજથી આવી શકે:

ગુણાતુવાદનું કાર્ય કેટલું કહિન છે તે—

પૂ. મહામહાપાધ્યાય શ્રી યશાવિજયછ મહારાજની ગુણસ્તુતિ ગાવાનું કાર્ય ઘણું સુશ્કેલ છે, એમનામાં રહેલી વિસ્તૃત અને ગંભીર વિદ્વત્તા, સૂક્ષ્મએાધશક્તિ વગેરે જૈન દર્શન અને દર્શનાન્તરાના પ્રમાણ-પ્રમેયના વિશાલ બાધપૂર્વક ઠીકઠીક સમજાય નહિ ત્યાં સુધી એમના ગુણુ ગાવા જતાં એમને અન્યાય થઈ જવાના પુરા સંભવ છે. કેમકે પછી તા જે કંઇ અધૂરી ગુણસ્તુતિ ગવાય તેનાથી તો એમના માટે એમ જ લાગે કે આ પણ શું જેમ બીજા કેઇક આગળ પડતા માણસા થઈ ગયા, માત્ર તેવા જ એક આગળ પડતા મહાપુરુષ હશે ? દા. ત. એમ કહેવા જઈએ કે પ્ ઉપાધ્યાયછ શ્રીયશાવિજયછ મહા-રાજ 'ન્યાયવિશારદ' હતા, કેમકે એમણે વાદી સામે વિજય મેળવ્યા હતા; તેથી એમને

ક્ષાત્રીના પંડિતા તરફથી એ બિરુક આપવામાં આવ્યું હતું. આ ઉપરથી એમ બાસ ધાય કે જેમ બીજા પણ કાઇ વિદ્વાન કાઈ વાદ કરી જિત મેળવે તેમ પૂ ઉપાધ્યાયછ મહારાજ પણ છત્યા હતા. અને આજે પણ કેટલાક પંડિતાને દક્ષિણા વગેરે આપી ખુશ કર્યા દાય તા ને ય પદથી આપે; તેમ શું એમને નેવી પદથી મળી હતી દ

લાખા શ્લાકાના રચ્ચાયના ઉપાધ્યાયજી અને તેમની મહાનના—⁻

વળી એમ પણ બાંચે કે એએાશ્રી માત્ર વિદ્વાન હશે, અથવા સાધુ હશે તો સારા ત્રાધુ કહેત્રાથી ખીજા અનેક સાધુની જેમ એ પણ સાધુનાવાળા હશે. આવા ખ્યાસ આવવા સુડ્જ છે. પરંતુ તેથી અ-યાય એ થયા, કે કર્યા પૂ. કપાંચાયજી મહારાજની અસાધારણ વિદ્વતા. અપ્રતીમ સાધુતા, અનુષમ વિદ્વજનન્દ્રદયવાસિના વગેરે અલોકિક ગુદ્ધા ? અને કર્યા સર્ય આગળ તારા જેવી ફીકી કાંગે તેવી અન્યોની વિક્તા ? આ કોકેવાનું તાંત્પર્ય એ છે કે પૃ. ઉપાધ્યાયછ સહારાજની વિદ્વતા, ચારિવ, ઝાનશક્તિ, તૈનશાસનપ્રીતિ વગેરે ગુણા અવર્ષુનીય હતા. તે ગુણાને યથાર્થ બળદ કેંદ્ર નદ્રિ આપી શકવાનું કારણ શળ્દાેતી અદયના અને અનનુરુપના, તેમ જ એમના બ્રંથાના યથાસ્થિત અનુસવતી ખાસી છે. આ સાથે એ પણ એક દ્રક્ષિક્ત છે કે એમના 'વાર્દ્ધાંકિત' અને 'સ્ડસ્યાંકિત' ઘથા. તેમજ 'સિદ્ધાંતસત્પરિષ્ફાર' વગેરે ખાસ શ્રંથરતના આજે ઉપલબ્ધ નથી. ટ્રાઢલાખ (?) ન્યાય લખવાના ઉદર્કાળ મળા છે તે મુજબ પણ એટલા બંધ ઉપરાગ્ધ નથી એક યાેગવિંશિકાની જેમ બીજું ચાેગણીવીશી ઉપરતું એમતું વિવેચન મળતું નથી. આ બધી વસ્તુઓ એમની વિદ્વાને આપણા માટે અકલ-અમેય રાખી જાય છે. એક સિદ્ધાન્ત મતપરિષ્કાર લંઘનું નામ જ એવું છે કે જેમાં લાગે છે કે જેન આળમ શાસોમાં આવતા વિવિધમતાન્તરા મળે છે, તેના પરસ્પરના અવિધ્વાદી ગ્રમન્વય ને પણ *જોન*ં શાસનના ખાસ વિશિષ્ટ નથવાદના ગળ ઉપર કેવા સુંદર કરેલા હશે. જે આજે જો મળત તા અહેા! ગાપણ એક એવું અદ્ધુત આલંબન ધરાવત; જે સમ્યગ્દર્શનની અપૂર્વ નિર્માળતા, તત્ત્વાતું સુક્ષ અન્વેષણ. સિદ્ધાન્તના અપૂર્વ અર્થ-૨૯કર્યાના પ્રકાશ કરત ! શ્રીમદુના ચહાન ઉપકાર—

આમ છતાં આજે ગુણગાન ગાવા માટે તૈયાર થયા છીએ તે પ્રસંગે એ મડા કુરવું અધ્યાત્મી સાધુજીવન, વિકસિત શુતજ્ઞાનાદિ શુંણા અને અપૂર્વ લંશસમૃડનું નિર્માણ કરવાના મડાન ઉપકાર ઇત્યાદિ આપણા હૃદયને એવા આકર્યા લે છે કે, અતાકરણ મડાન બહિતબાવના પ્રસા વહેતા કરી દે છે. એ બહિતબાવના આંતરઝરા શીમદના શુભુ ગાવા માટે આવા સમારંબરૂપે કે સ્તૃતિરૂપ બડારવડી આવ્યા વિના રહી શકતા નથી.
'ઉપાધ્યાયજી' એવા મકર અને ગીરવળયાં નામથી એમની જ પ્રસિદ્ધિ—

ન્યાયવિશારદ ન્યાયાચાર્ય પૃ. મહામંદ્રાપાધ્યાય શ્રીષ્ણોવિજયજી મહારાજ શ્રીજૈત-સુંદર્મા ઉપાધ્યાયજી મહારાજના નામલી પ્રસિદ્ધ છે. યદ્યપિ જૈતદાસનમાં ઉપાધ્યાયછ પંદથી અલ કૃત અનેકાનેક મહાપુરુષા થઈ ગયા, પરંતુ કાં તા તેઓ પાછળથી પરમેષ્ઠીના ત્રીજ સ્રિપદથી અલ કૃત થયા તેથી, અથવા કેટલાક વિશિષ્ટ શાસ્તરચયિતા ન બન્યા તેથી ઉપાધ્યાયછના નામથી પ્રસિદ્ધ નથી પામ્યા. દા. ત જેમણે સુંદર બ્રન્થા નિમાંણ કર્યા છે તે ઉપાધ્યાયછ શ્રી. મેદાવિજયછ મહારાજ કે ઉપાધ્યાયછ શ્રી. વિનયવિજયછ મ કે ઉપાધ્યાય શ્રી. સાનવિજયછ મહારાજ સ્વનામથી પ્રસિદ્ધ છે પરંતુ આચાર્યો કે સુનિએા કરતાં ઉપાધ્યાયો અતિ નાની સંખ્યામાં પ્રસિદ્ધ છે. તદન્તર્ગત ચીદ પૂર્વોના પણ અસાધારણ વિદ્વા શ્રી. ઉપાધ્યાયછ મહારાજ પણ એવી અસાધારણ વ્યાપક વિદ્વત્તા ધરાવતા કે લગભગ કાઈ પણ વિષયમાં એમને પ્રશ્ન પૂછા તા એમ થઈ આવે કે ઉપાધ્યાયછ મહારાજ શું નથી જાણતા એ શાધવાનું કામ અશકય બની જાય.

ખાલ્યકાળ ને ગ્રત્થરચના—

ં અલૌકિક વિદ્વત્તાના મૂળ બીજ તરીકે પૂર્વ લવમાં એમણે અદ્દલુત ધર્મ આરાધના કરીને સુસ'સ્કારા અને પુરૂચળળ કમાઇ આવ્યાનું અનુમાન થાય છે. આ જીવનમાં ગુરુસેવા, વિનેય, સંચમ વંગેરે અતિઆવશ્યક શુણા પૈકી એમના એક મહાન શુણુ એકાગ્રતાના હતા, વિક્ષેપના અલાવના હતા. તે આપણને એમની બાલ્યવયમાં નેવા મળે છે. માત્ર માતાજની સાથે ઉપાશ્રયે જતા ત્યાં સંભળાવાતાં નવ સ્મરણ (સ્તાત્રા)નું એમણે એનું અવિક્ષેપ અવધારે કરી લીધેલું કે, એકવાર વર્ષાના કારણે એમનાં માતાછ નવ સ્મરણ સાંભળવા ન જઇ શકવાથી લાજન-પાણી લેતાં નહાતાં તેથી તે જ વખતે આ અલ્પવયસ્ક ખાળકે પાતે નવે સ્મરણ માંએ સંભળાવી દીધાં હતાં. એવી ખ્યાતિથી પ્રસિદ્ધ શ્રીમાનું ઉપાધ્યાયછ મહારાજ સ્વશાસ્ત્રોના સમર્થ શાસકાર હતા. પૂર્વાચાર્યોના શાસ્ત્રો પર દીકાર્યથા લખવા ઉપરાંત એધ્યાત્મ, ચાેગ, નથવાદ, પ્રમાણુરૂપ પંચ જ્ઞાન, કુમતાનું ખંડન વગેરે પર ખૂબ જ લખ્યું છે. એ એકેક શ્રંથની વિશેષતા ગાવા બેસીએ તાે લાગે કે અહીં કેવા આ અપ્વ યુંગયુરુષ, અપ્રતિમ વિદ્વાન અને અદ્ભુત શાસનપ્રભાવક આપણા નિકટના કાળમાં થઇ ગયા એ પણ આપણ કેવું મહાસીભાગ્ય! સંસ્કૃત-પ્રાકૃત તેા ખરું જ પેણુ શુજરાતી ભાષામાંય અનેક ૧૨૫–૧૫૦–૩૫૦ ગાથાનાં સ્તવના, સજગાયા, દ્રવ્યગુણુપર્યાય રાસ, ષદ્રશાન ચાપાઇ, ટળાં, જૈનાગમના પદાર્થી કાવ્યરૂપે સુંદર રીતે ઉતાર્યો છે કે જેમાંનુ રહસ્ય ગુરુગમથી કે સ્વાતુલવથી જાણતાં એમ ખ્યાલ આવે કે ગુજરાતી સજેન પણ શું આટલી ઉચ્ચ કાેટિનું ? આજના પ્રસંગે એમાંના એકાદ છે નમૂના નેઈ લઈ એ.

તેંએાશ્રીનાં સ્તવનાની ખૂર્ળીએા—

ŧ

એ યુગલાસ્કર મહિષિએ સ્વરચિત વર્ત માન ચાવીસ તીર્થ કરદેવાની સ્તવનાવલીમાં પ્રથમ તીર્થકર શ્રી. ઋષભદેવ પ્રલુજીના સ્તવનના પ્રારંભમાં લખ્યું છે કે—

" જગજીવન જગં વાલહો, મરૂદેવાના ન'દ લાલ રે, મુખ દીઠે સુખ ઉપજે, દર્શન અતિહિ આનંદ લાલ રે...

આના અર્થ અમ તા સામાન્ય શાગશે કે, હે જગતના જીવન, જગતને વહાદા, મરૂદેવાના નંદન, તમારું રાખ જેતાં સુખ ઉપજે છે, અને દર્શન કરતાં અતિઆનંદ થાય છે, પરંતુ જહીં પ્રશ્ન એ શાય છે કે પ્રસુર્તૃ મુખ જેવાં અને દર્શન કરતાં—એ સાથે:સાથે એક જ ક્રિયાની બે ઉક્રિય અર્થાત્ યુનરુક્તિ તે માત્ર એક જ ગાયામાં, ' ગૌરવ–દાવવના મહાન વિચારક ન્યાયવિશારદ કવિએ કેમ કરી ? ભય, એ જિજ્ઞાસા પર વિચારતાં જણાઈ આવે છે કે આના કાઇ રૂઢ અર્થે છે. તે એ કે, અહીં 'દર્શન અવિકિ આનંદ'માં 'દર્શન ' શબ્દર્શ સામાન્યપણે જેવાની ક્રિયા નથી લેવાની, પછુ સમ્યગ્દર્શન નામના પ્રથમ માણાપાય સમજવાના છે. લાવ એ છે કે, " કે પ્રસ્ક! લારા ઉપદેશેલા સમ્યરદ્ધાની જે આત્મા દુદયરપર્શના કરે છે, તેને એ દર્શનમાં અવિશય આનંદ થાય છે." તેમ "મુખ શકે" માં ' દીકે ' શબ્દથી માત્ર ' દેખતું ' એમ નહિ, કિન્દ્ર સ્વરૂપદર્શન અર્થ **ટેવાના છે. ત્યાં ' મુખ ' એ પ્રધાન અંગ છે, એના લક્ષ્ણ**થી સમસ્ત અંગીતું લક્ષ્ણ થઈ શકે છે, તેથી એમ કહી શકીએ કે પરમાત્માના મુખનું અર્થાત્ પરમાત્માનું અથવા પરમા-ત્માના સુખ્ય સ્વરૂપતું દર્શન કરતાં સુખ ઉપજે છે. આ દર્શન પણ પહેલાં તેા બ્રુવન્નાન-રૂપ, પછી ચિન્તઃ અર્થાત્ મનતરૂપ, પછી ભાવના—સંવેદનરૂપ સમજવાતું છે. બીજા श्रण्डामां १दीने दे। परमात्मस्वरूपने। द्राध, मीमांसा, प्रतिपत्ति क्रने सात्मीकृत प्रवृत्ति-રૂપ મુખદર્શન દેવાતું છે. હવે સમ્યેગ્રદર્શન અને પરમાત્મસ્વરૂપ–જ્ઞાનના મહિમા બહાશ્યો તેથી અતુમાન શાય છે કે, ચારિત્રના મહિમા એમાં ગાયા જ હેશે. તે વસ્તુ ' જગજીવન ' એ છે પદમાંથી મળી રહે છે. જગતને છવનરૂપ ટેાછ બની શકે? જે આત્મા મહાઅહિં-સક ક્ષેણ અને ચારિત્રધારી ક્ષેણ્ય તે. આરંભ-પ્રેમારંભની ક્ષિયામાં પહેદા તે જરાતના ત્રસ-રથાવર છવે!નાં છવન લૂંટી रक्को છે. ત્યારે પ્રસુ પોતે જગતના સર્વ છવે। પ્રત્યે स्वर्य મુવંશા જાહિં સ્ક લની, જગતનેય અજર-અમર શવાના જાહિંસામાર્ગ ભવાવી રહ્યા છે. તે માટે સાચું ભાવછવન આપી રજ્ઞા છે. અર્થાત્ જગતને જિવાર્ધ રજ્ઞા છે, માટે ' જગ્રહ્યન ' પદથી કહેવાય કે, પ્રદ્ય સ્વય' ચારિત્રિજીવનથી જગ્રાતના છવનમૂત કે. તેમ ' જગવાલકો ' પદ સ્થવે છે કે જગતને વહાલા તે જ અની શકે જે સંચમી હાય, ત્યાગી કેલ્ય, અને નિઃસ્વાર્થ પણે પારમાર્થિક ઉપકાર કરનારા **કેલ્ય. એક કુટું બના વ**ેરેને એ વહુ સાગી, સ્વાર્થી, અસંચમી અને કુઠું બ પ્રત્યે એપરવાહી રાખતા દેવય તે કુઠું બને તે એટદા વકાદા નહિ દાગે. જે સ્વયં માનપાનના દાદચુ કે અને જેને વાણી-વર્તાવ પર સંયમ નથી તે બીજાઓને પ્રમયે નહિ. પ્રદુ તા મહાનિકપૂર્ણ, મહાસંયમી, તપતની અને વિધી-पशरी है, मारे करातने वढ़ाहा है. साम 'काछवन' सने 'करावाहहा 'से है पश्ची श्रेभद्दे बारित-संघम अने दपने। महिमा पद् गाये। हे.

પૂ. ઉપાધ્યાયછ મહારાજની રહસ્યમર્સ હેપ્રિનીના એક બીએ હાંદર દાખદા લુઓ. એમના નચેલા શ્રી. નેમનાઘપ્રસના સ્તવનમાં સિજનવાની પ્રસ સામે ક્રિયાદ વધુંવી છે, એમાં રાજિયનીએ ત્રીછ કઠીમાં એમ કહ્યું કે કે— " ઉતારી હું ચિત્તથી રે હાં, મુક્તિ ધુતારી હેતુ, મેરે વાલમા ! સિદ્ધ અનંતે ભાગવી રે હાં, તે શું કવણ સંકેત, મેરે વાલમા…તારણથી૦ "

અહીં કહેવું એ છે કે, " હે સ્વામી! તમે નવ ભવના સ્નેહ વીસારી એક કલં કર્ય કુરંગના નિમિત્તને પામી મને છોહી જાએ છા, તેનું કારણ હું સમજું છું કે, તમે ધુતારી એવી મુક્તિ—સ્ત્રીના પ્રેમથી મને ચિત્તમાંથી અળગી કરી છે, પરંતુ પ્રભુ! તમને શું ખબર નથી કે એ તેા ગણિકા છે ? એના લોકતા અનંત સિહો છે. આવી ગણિકા જેવી તમને કસાવી રહી છે! એની સાથે તમે શા સંકેત કર્યા છે ? ચાથી કહીમાં આની પછી રાજીલ જે એમ કહે છે કે—

" પ્રીત કર'તાં સાહલી રે હાં, નિરવહતાં જ'જાળ, મેરે વાલમા "

તેના અર્થ એમ શાય કે, " અમારા નવ નવ લવના સ્નેહ ગણ્યા નહિ કે ટકાવ્યા નહિ, એ કેટલું અનુગતું છે? જગતમાં પ્રીતિ માંડવો સહેલી છે, પણ ટકાવવી કહિન છે. તમે મારા પર પ્રીત કરતા આવ્યા તા ખરા, પણ પાછી પેલી સુકિત મળી તેથી તેના પર આકર્ષાઈ મારા પરની પ્રીત ટકાવી શક્યા નહીં. એટલે વાત ખરી છે કે, પ્રીત કરવી સહેલી છે, પણ ટકાવવી સુશ્કેલ છે. ઉપર ઉપરથી આ અર્થ સાસે છે, પણ તેના રહસ્યમય અર્થ બુદાે છે.

તે એ રીતે કે, 'રાજિમતીને સખીઓએ જ્યારે બીજો વર શોધવાનું કહ્યું ત્યારે તેમને ધૃત્કારી કાઢી; એ વસ્તુ રાજિમતીના નેમનાથસ્વાસી ઉપર વકાદારીલયો પ્રેમ સચવે છે. આવા પ્રેમ ધરનારી આવે દેશની સન્નારીએ એક પતિ નક્કી કર્યા પછી બીજા પતિની વાત સાંખી શકતી નથી. ગલિંણી અવસ્થામાં સીતાછને રામે જંગલમાં મૂકાવેલાં-ત્યનવેલાં, ત્યાં સીતાએ પણ રામને કહેવરાવ્યું હતું કે, "મને છાડી તા લલે છાડી, તમને મારા કરતાંય ખીછ સારી પત્ની મળશે અને તેથી મારા વિના તમારા માક્ષ નહિ અટકે પર'તુ લાકવચનથી જેમ મને છાડી, તેમ જૈનધર્મને ન છાડતા. કેમ કે એને છાડચા પછી બીજો એથી વધુ સારા તા શું પણ એવાય સારા ધર્મ નહિ મળે, તેથી જૈનધર્મ વિના માક્ષ જરૂર અટકી જશે. " શ્રી. મલધારી હેમચન્દ્રસ્રિજી મહારાજ વિરચિત 'યુષ્પમાલા' નામના શ્ર'શમાં આ અધિકાર છે. તેમ અહીં રાજિમતી જ્યારે જીએ છે કે, શ્રી. નેમનાથ રવાસી મારા પરના નવ નવ ભવના સ્નેહને પણ છાડીને સુક્રિત પર નિશ્ચિતપણે રાગવાળા भन्या छे. ते। भारे कोमने चेतावी हेवा है, मुक्तिने। राग अर्थात् माक्षरुथि को सामान्य વસ્તુ નથી. પ્રશ્ન થશે કે, તે શું નેમનાથ નહિ સમજતા હોય ! પરંતુ વકાદાર અને પ્રેમાળ રનેહીઓનું દિલ જ એવું હાય છે કે સામાને ભલે જાણમાં હાય છતાં વધુ સાવધાન કરવા અવસરે એનું ધ્યાન ખેંચ એ હિસાબ રાજુલ કહે છે કે, " હે સ્વામી! તમે જુઓ કે અનંતા સિદ્ધ એવા પતિવાળી સુક્તિ પ્રત્યે પ્રેમ કર્યો તા લહે કર્યો, પણ ધ્યાન રાખને કે સુક્તિ પ્રત્યે પ્રીતિ કરવી સહેલી છે, પણ ઠેઠ સુધી ટકાવવી પણ મહાસુરકેલ છે. હછ અમારા પરની મીતિ ટકાવવી સહેલી; અમારા જેવી કુળખાલિકા સાથે મીતિ માંડયા પછી કહાચ તમારી

બ્લંથાપ શાય, તમે આકળા-ઉતાવળા શાઓ, વિશ્વાસમંગ કરા તાય અમે તમને તરહાદીએ નિંદ, તમે રીસાઓ હતાં અમે રીસાઈએ નિંદ, પણ આ સુકિંગ તો એવી છે કે, જે તમે જરાક લવના અભિનંદમાં-આનંદમાં તણાયા તો તરત તમને તરહાદી દે. જરાક જો તમે રીસાયા તો એ સુકિંગ પણ રીસાઈ જાય. સુકિંગની પ્રીતિ અખંડ ટકાવવા લવનિવેંદ, વિષય-વિરાગ અને ધર્મ-સવિંગ જાગતા અને ધીખતા રાખવા પડે છે, માટે મહર્ષિએ પણ પ્રાર્થનાસ્ત્રમાં પહેલું 'સવનિવ્યેશો' માગે છે. રાજિમની કહે છે કે, જેમ છેરી સર્પને ખેશાવેલો કે અગ્નિની હાળ સાથે રમત કરવી સુરકેલ છે, તેમ સુકિંગના રાગ ટકાવેલા સુરકેલ છે. એ માટે તા છવનલર સમસ્ત સંસારને અળબામણા રાખવા પડે છે. આટલું કહ્યા પછી પણ રાજિમતીએ જ્યારે કોશું કે નેમનાલ પાછા નથી કરતા, ત્યારે એમના સુક્રિંગ પ્રત્યેના દેહ પ્રેમને અને સુક્રિંગ તરફના પ્રયાણને જાણી પાતાના નિર્ધાર અહેર કરે છે કે, બહે વિવાદના અવસરે દાશ પર દાશ ન આપ્યા પણ દું દીશા લેતાં મારા શિર પર, હે જગનાથ! તમારાં દાશ સુકાલીશ.

અપૂર્વ રહસ્પાર્થી ભરેલા ગ્રન્થા—

પૃત્ય ઉપાધ્યાયછ મહારાજના શું શુજરાતી, શું સંસ્કૃત કે શું પ્રાકૃત દરેક પ્રકારના લંચા રહસ્ય લરેલા છે. એ રહસ્યો સમત્યા પછી અપૃતં સ્કૃરણ લાગે છે અને પદાર્થ વિવેચના પ્રભાવના કરે છે. દા. ત. એમના રચેલા 'અને કાન્તવ્યવસ્થા' નામના લંચમાં એક સ્થળ પ્રશ્ન કર્યો કર્યો છે કે, 'તત્ત્વાર્થ', મહાશાસ 'માં તત્ત્વા સાત કર્યા પણ આદ કેમ ન કર્યાં? કારણ કે, અસલ તા છવ અને અછર એ જ તત્ત્વ છે પરંતુ નેક્ષા-પયાંગી હૈયાપાદેય તત્ત્વ પૃથક અતાવવાં એઇએ. તેથી હૈય તરીકે આશ્રવ અને બધા લધા ઉપાદેય તરીકે સંવર અને નિજંરા કર્યાં. વળી, એ હૈયનું હાન અને ઉપાદેયનું ઉપાદાન શા માટે કહ્યું એ જિજ્ઞાસા શમાવવા પ્રયોજન તત્ત્વ તરીકે માણ બતાવ્યું. આમ તત્ત્વ સાત કર્યાં, પરંતુ એ પણ જિજ્ઞાસા રહે છે કે જેમ ઉપાદેયનું ફળ મોલ છે, તેમ હૈયનું ફળ મંત્રાર છે, તેથી મેશ્યની જેમ શંચારને એક પૃથક તત્ત્વ કહેલું તેઈએ. વળી, માશના પ્રતિયાગ તરીકે પણ સંસાર તત્ત્વ હેલું તેઈએ, તે કેમ ન લીધું શ પૃથ્ ન્યાયવિશાસ મહિષિએ આ પ્રશ્નનું શું દર સમાધાન એ આપ્યું કે, સંસારનું સ્વરૂપ તો બંધ તત્ત્વમાં વર્ણવાઈ જતાં નથી, દેમ કે એમાં તો આત્યાની સર્વ વિશ્ન અવસ્થા અને અને હોણનું પ્રમારીકરણ છે. તેથી માશ અને અને હાણોનું પ્રમારીકરણ છે. તેથી માશ તત્ત્વ સ્વર્ગ ત્રેષણે વર્ણવતું આવર્યક છે.

અિં એક દાખલા-' શાસવાતોસમુચ્ચય ' પર એમણે રચેલ ' સ્યાદાદ-કદપલતા ' શિકામાંથી લુઆ. આપણે ત્યાં મુખ્યાનુબ'થી મુખ્ય કે પાપ, અને પાપનુઅ'થી મુખ્ય કે પાપની એ સમજણ ચાલે છે કે એ મુખ્ય કે પાપના સાગવવામાં સવિષ્ય માટે નવા મુખ્યની સ્થિતિ ઊલી શાય તે મુખ્યાનુઅ'થી, અને પાપની સ્થિતિ ઊલી શાય તે પાયાનુ ખંધી; પરંતુ ઉક્ત શ્રંથમાં પૂજ્ય ઉપાધ્યાયછ મહારાજે એ સ્**ચ**્યું છે કે, જે પુરુય-પાપ ઉદયમાં લાવવા માટે પછુ હુંદયને મહામલિન કરનારાં પાપકાર્યો કરવાં પડતાં હાય તે પણ પાપનુખ'ધી કર્મ અને છે. તેથી ઊલદું જો હુદયની પવિત્રતા અને ટામળતા જાળવી રખાતી હાય તા ઉદયમાં આવતાં પુરુય-પાયના ચાંગે પાયાનુળ ધી કર્મથી ભચી જવાય છે.

'શાસ્ત્રવાતો 'ની ટીકામાં તથા 'નયાપદેશ,' 'ગ્રાનબિંદુ ' વગેરે ગ્રન્થામાં નવ્ય ન્યાય રૌલીના તર્કથી જૈન સિદ્ધાંત અને તત્ત્વાની વિશેષતા દર્શાવનારાં અદ્ભુત રહસ્યા અને પુદાશું –નિરૂપણુ વિપુલ પ્રમાણુમાં આ દર્શન–દિવાકર મહાત્માએ આપેલું છે. જે સૂક્ષ્મ, ખુદ્ધિગમ્ય અને નવ્યન્યાય સહિત દર્શનાની પરિભાષાના વિશાળ બાધથી શ્રાહ્ય છે. ' ગ્રાનિભ'દુ ' ગુંચમાં શ્રી. સિદ્ધસેન દિવાકર, શ્રી. જિનલદ્રગણુ ક્ષમાશ્રમણ અને શ્રી. મદ્ધ-વાદ્વીના કેવળજ્ઞાન અને કેવળદશ ન-ઉપયાગ અંગેના ત્રણ મતાના સુંદર સમન્વય સાધ્યા છે. એ જ શ્રંથમાં મધુસૂદન સરસ્વતીકૃત 'સિદ્ધાંતિબંદ ' શ્રંથમાંના પરિષ્કૃત અવિદ્યા– માયાના સિદ્ધાંતનું સુંદર નિરાકરા શ્રી. ઉપાધ્યાયછ મહારાજે કર્યું છે. ત્યારે 'કેમ પ્રકૃતિ'ની વિસ્તૃત ટીકામાં પ્રાર'લે નૃબ્યન્યાયની શૈલીમાં આઠે કર્મનો જુદી જુદી પ્રકૃતિએાની રહસ્યમય વ્યાખ્યા કરી છે. ગ્રંથની વચમાં વચમાં પછુ એમની અનેડ બુહિના ચમકારા અપૂર્વ એવા શંકા-સમાધાનામાં ઊપસી આવે છે. તેમજ શંથના અંતે સ્વાપત્ત ઉદય પ્રકરહ્યુમાં કર્મ સંખંધી અન્ય ગંચાના પદાર્થોનું સંકલનાખહ લબ્ય સંકલન કર્યું છે પછ્ આ ખર્ધા રહેરેયા અને ભવ્ય પદાર્થ રફાટ અહીં શે રજા કરી શકાય ?

શ્રુતકેવલીની ઉપમાને પામનાર મહર્ષિ—

યુ૦ હપાધ્યાયજ મહારાજ સ્વ-૫૨ શાસ્ત્રોના એટલા ળધા વિષયામાં પાર'ગત હતા કે એમને આપણે બહુશુત તરીકે એના વિકસિત અર્થમાં આપણા હૃદય સામે નેઇ શકીએ છીએ. એ ઉપરાંત એમની સવ તામુખી વિદ્વત્તા જ્ઞાનભ ડારનાં પુસ્તકામાં નહિ, પછુ એવો તો એમને અંતઃસ્થ હતી કે, પૂર્વે કહ્યું તેમ એમના સમકાલીન સમર્થ વિદ્રાન ઉપાવ થ્રી. માનવિજયછ મહારાજે એમના માટે 'સ્મારિત શ્રુતકેવલી 'તું વિશેષણ લગાડયું. શ્રુતકેવલી એટલે દ્રાદશાંગીમય જૈન પ્રવચનના રાતા.

ત્યારે એ એમના ' દ્રાત્રિ'શત દ્રાત્રિ'શિકા ' નામના ગ્રન્થમાં એમણે પૂર્વ આગાય'વય' શ્રી. હિરિસદ્રસ્રીશ્વરજીકૃત ' ચાગદેષ્ટિ, ' ' ચાગિલન્દ, ' ' ધાડશક ' વગેરમાંનાં અસ્કૃેટ સ્દ્રેરો ખાલ્યાં છે. દા. ત. ચાગની ચાથી દેષ્ટિમાં આવવા માટે પ્રાણાયામ નામના ચાગના અંગની સિદ્ધિ કરવાની વાત ' યાગદેષ્ટિ સમુચ્ચય ' શાસમાં કરી છે. પૂ. ઉપાધ્યાયછ મહારાજે એતું રહસ્ય વર્ણવતાં કહ્યું કે, આ પ્રાણાયામ તે ભાવ-પ્રાણાયામ સમજવા અને તેથી જ તેમાં શ્વાસાચ્છ્વાસ રૂપી દ્રવ્યપ્રાદ્યુતું રેચક, પૂરક, કું ભક નહિ પણ ખાદા ભાવરૂપી પ્રાહ્યુતું રેચન અને અ'તર ભાવરૂપી ભાવપ્રાછ્યુતું પૂરક લેવાતું છે. આવાં આવાં તેા કેટલાંચે રહસ્યા ખાલીને પૂ૦ ઉપાધ્યાયછ મહારાજે તૈન શાસનની વિશિષ્ટતા તા શું પણ સર્વો-

પરિતા સાબિત કરી આપી છે. 'દ્રાતિંગત–દ્રાતિંશિકા ' નામના બન્ય એ 'ધાંબદર્ષિ' વગેરે અનેક બ્રન્ધાના ઢાહનના સંબ્રદ્ધન્ય છે.

તેઓશ્રીની પાતંજલ ચાગ ઉપરની ઢીકા---

પૃત્ ઉપાધ્યાયછ મહારાજે 'પાર્જલ યોગદર્શન ' પર જે સમીક્ષા કરી છે તે પણ જૈન દર્શનની વિશિષ્ટતા પુરવાર કરે છે. યોગદર્શનકારે યાંગની વ્યાખ્યા 'चित्तकृत्तितियां' એવી કરી છે. પૃત્ર ઉપાધ્યાયછ મહારાજે એમાં સુધારા કરી કહ્યું કે, 'योगः 'क्डिस्ट'-'चित्तकृत्तितियाः ।' વાત પણ સાચી છે. સામાન્યથી કહેતાં તો ચિત્તવૃત્તિ માત્રના નિરાધ લેવાનું શય અને એ તો અંતિમ યોગની કક્ષામાં ઘટે, પણ પૂર્વની કક્ષાના યોગોમાં એ નિર ઘટે, કેમ કે ત્યાં શુલ ચિત્તવૃત્તિ ચાલુ હાય છે. એ વસ્તુ યાંગદર્શનકારને પણ માન્ય છે. નિયમ વળેરે યોગનાં અંગા તેટલી કક્ષાના યાંગને સાધી આપે છે, ત્યાં કાંઈ ચિત્તવૃત્તિ તાન સ્થગિત કે વિરુદ્ધ નથી, પરન્તુ એટલું છે કે, જે ચિત્તવૃત્તિ ચાલુ છે તે શુલ છે, પણ સંક્લિય નથી. જેથી 'યોગબિન્દુ ' લન્થમાં પણ જે અધ્યાત્મ, લાવના, ધ્યાન, સમતા અને ચિત્તવૃત્તિસંક્ષ્ય-એમ પાંચ યોગની કક્ષા રાખી છે, તેમાં અંત્ય સ્થિવાયના સારમાં શુલ ચિત્તવૃત્તિસંક્ષ્ય-એમ પાંચ યોગની કક્ષા રાખી છે, તેમાં અંત્ય સ્થિવાયના સારમાં શુલ ચિત્તવૃત્તિ તો સાલુ જ હાય છે.

આમ ઉપાધ્યાયછ મહારાજે ' દ્રવ્યગુષ્ધુપયોષના રાસ 'માં દિગંભર માન્યતાની સમીકા કરતાં તવ નવ અને ત્રણ ઉપનય તથા દરેક ઉપનયના અવાંતર પ્રકાશે અતાવી વધારાના એ નય-દ્રવ્યનય અને પંપોયનય તથા ત્રણેય ઉપનયની કદ્યના દેવી ત્રીસ્વક્રદ્ધ અને દ્રાપશુક્ત છે તેનું સુંદર આદ્રાચન કર્યું' છે. એમાં એમણે કહ્યું કે, સાન નવમાં પ્રથમ ત્રણ નયા સુદ દ્રવ્યનય છે અને પછીના ચાર સુદ પર્યાયનય છે. તા હવે આદમા અને નવમા એ છે જાદા દ્રવ્ય-પર્યાયનય કર્યા દેવા ! એવું જ, નયા કરતાં જુદા સ્વતંત્ર હપન્યોની કદ્યના પણ વાળાઇ અર છે. દેમ કે સાત નયના એ અવાંતર પ્રકાશે જ છે અથવા દરેશ કે સાત તર પૈકીના નયાના વિવિધ દાકાનો છે

ગૃદ સ્હસ્યાનું દર્શન—

પૂ. ઉપાધ્યાયછ મહારાજના અન્યાની વિશિષ્ટતાનું વખુંન કરતાં કરતાં તા અન્યાના બ્રન્થા ભરાય એમ છે. 'ખંડનખંડખાદ્ય ' યાને ' મહાવીરસ્તવ ' નામના બ્રન્થમાં લોહની મોલિક યાન્યતાએને તકેમાં અનુત્તીખું (નપાસ) કેરવીને અફબુત રીતિએ તકે પ્રમાણના લળ હપર એનું સ્થાર રીતે ખંડન કર્ફી છે. ત્યારે એના પરની સ્થાપન દીકામાં એમણે હદયનં કૃત ' આત્મતત્ત્વવિવક ' નામના બોહમતના ખંડન બ્રન્થ હપર દીધિતિકાર રચેલી દીકાની પંક્તિએ હપર અદભુત વિવેચન કર્શુ છે. 'ખંડનખંડખાદ્ય ' મૃળ તા માત્ર સોએક શ્લાકના બ્રંથ છે. દીકા પણ તેવી સંઈ અતિવિસ્તૃત નથી પરંતુ પૃ. હપાધ્યાયછ મહારાજ અન્યત્ર દલ્લખ કરે છે કે, બોહ ન્યાયના ખંડન માટે પોતે દોઢ હાખ શ્લાક (1) પ્રમાણ બ્રન્થ લખ્યો છે, ત્યારે અચંચો થાય છે કે, કેવી અસાધારણ વિકત્તા! કેવું ક્રન્ય

ઉપકારી સાદું જીવન ! કેવી શાસનસેવા ! એમની કૃતિઓનો યથાસ્થિત પાર પામી શકવા કે કાલ્ સમર્થ છે ? એ તો કેટલેક સ્થળે એમણે પાતે જ ટીકા—ટબારૂપે પાતાના બ્રન્થાનાં રહસ્યા ખાલી બતાવ્યાં છે તે પરથી જ લાગે છે કે, બીજા તેા અલુખાલ્યાં કેટલાંય રહસ્યા ખાલી બતાવ્યાં છે તે પરથી જ લાગે છે કે, બીજા તેા અલુખાલ્યાં કેટલાંય રહસ્યા હશે, જે રહસ્યા એમનાં કરેલાં અથવા એમના જેવા અદ્વિતીય વિદ્વાને કરેલાં વિવેચનના અલાવે અલુખાલ્યાં પડ્યાં છે. ' ગ્રાનસાર ' અબ્ટકના પહેલાં અબ્ટકમાં કહ્યું કે, ' સહ્વિદ્વાનન્દવ્ર્ળેન પૂર્ણ જાતદ્ અવેદ્વયતે' એથી એમ સ્વચ્યું કે શુદ્ધ સત્-ચિત્—આનંદ-પૂર્ણ જે સિદ્ધાત્મા, તે જગતને પૂર્ણ રીતે દેખે છે. આના પર સહેજે પ્રશ્ન થાય કે, ' જગત તેા અગ્રાન છે, દુ:ખી છે, એવી સ્થિતિમાં એ ચિત પૂર્ણ કે આનંદપૂર્ણ કયાં રહ્યું ? અને સિદ્ધ લગવાન તા સર્વંગ્ન છે, તા શું એમલે જગતનું દર્શન અયથાર્થ કર્યું ?' આ પ્રશ્નનું સમાધાન પૂ. ઉપાધ્યાયછ મહારાજે સ્વોપન્ન ટબામાં એક જ લીટીમાં આપ્યું છે કે, ' નિશ્ચય નયની દેબ્ટિએ આ બ્રાન્તિ નથી. ' આ એક જ લીટીમાં કેતું સું કર રહસ્ય ખાલી દીધું છે! જગતના જીવો પણ નશ્ચય નથશી સ્વરૂપે પૂર્ણ ચિત્ અને પૂર્ણ આનંદવાળા છે. આ વસ્તુ એ પણ સૂચવે છે કે, જગતના જીવો, સર્વંગ્ન જોયેલું આત્મા માત્રનું સ્વરૂપ જો નજર સામે રાખે, તા ઔપાધિક કમજન્ય ઉપદ્રવોમાં મૂં અવલુ કે અતુકૃલતામાં ગર્લન થાય.

શ્રીમદ્ર ઉપાધ્યાયજી મહારાજના બન્યામાં ભરેલાં રહેસ્ય કે જેના પર શ્રીમદે પાતે વિશ્વદીકરણુ નથી કશું, તેને સમજવા માટે જિનાગમ અને ન્યાયાદિ શાસ્ત્રોથી ખૂબ જ પરિચિત રહેવું જોઇએ અને સૂક્ષ્મ ખુદ્ધિથી વિચાર કરવો જોઈએ. નહિતર તા એમની પંક્તિઓના અગઢં અગઢં અર્થ કરવાનું થાય. દા. તા. 'અધ્યાત્મસાર' માં એક એક પંક્તિ છે—

> " नो चेद् भावापरिक्रानात् , सिध्यसिद्धिपराहतः ॥ दीक्षाऽदानेन भन्यानां, तीर्थोच्छेदः शसज्यते ॥ "

અહીં' એ પ્રકરનુ ચાલે છે કે દીક્ષા આપવા માટે—

" यो बुच्चा भवनैर्गुण्यं घीरः स्याद् व्रतपालने । स योग्यो भावमेदस्तु नोपलक्ष्यते ॥"

અર્થાત—જેને સંસાર નિર્ગું છુ લાગ્યા હાય અને મહાવત પાળવામાં જે અડગ હાય, તે ક્રીક્ષા માટે યાગ્ય ગણાય પરંતુ એના આત્મામાં છઠ્ઠા ગુણસ્થાનકના લાવ આવ્યા છે કે નહિ, તે જોવાનું નથી. કેમ નહિ ! એના ઉત્તરમાં—' નો चेद् माचापरिष्ठानात्…' એ શ્લાક કહ્યો છે. આમાં 'સિદ્ધ્વસિદ્ધિપराहृतः' એ સામાસિક પદના અર્થ બહાળા શાસત્રાનના અનુભવ વિના સ્વત: સમજવો મુશ્કેલ છે અને એવું પણ વાંચવા મળેલ છે કે, જેમાં કાઈએ એના લળતા જ અર્થ કર્યો હાય. કહેવું એ છે કે, ' નહિતર તા અંતરના પરિષ્ઠામની ખબર નહિ પડવાથી સિદ્ધિ અને અસિદ્ધિથી પરાહત દેવાથી દીધા નહિ અપાવાને લઈને તીર્થના ઉચ્છેદના પ્રસંગ આવે.' આમાં 'સિદ્ધિ અને અસિદ્ધિથી પરાહત

હોવાંથી 'એટલા બાગ ' દીક્ષા નહિ અપાવામાં ' હેતુ છે. તાત્પયે એ છે કે, 'અંતરમાં શૃદ્ધુ-ઠાદ્યાના બાવ હાય તા જ દીક્ષા આપવી એવો સામાના મત હાય તા પછી દીક્ષા અપાગ્રે જ નહિ. કેમ કે દીક્ષાનું દાન સિદ્ધિ અસિદ્ધિથી પરાયત છે. અથોત્ એ છઠ્ઠા શૃદ્ધાદ્યાના બાવની એ આત્મામાં સિદ્ધિ છે જ (પ્રાપ્તિ છે જ), તો હવે દીક્ષા આપવાથી કાંઈ વિશેષ નથી. તેમ એ બાવની અસિદ્ધિ છે, અર્થાત્ બાવ પ્રાપ્ત નથી થયા તો તમારા મત મુજબ દીક્ષા આપી શકાય નિદ્દ, તેથી દીક્ષા આપવી વ્યર્થ થાય. એમ અંતરમાં છઠ્ઠા શૃદ્ધાદ્યાના પરિદ્યામરૂપ બાવની સિદ્ધિ હો કે અસિદ્ધિ–ઉમય દયામાં દીક્ષા આપવી નિર્શંક છે. તેથી તો જગતમાં દીક્ષિતની પરંપરા જ નહિ રહે, એટલે જગતમાં શાસન કે તીર્થ જેવું કાંઈ નિદ્ધિ રહે અને એમ થતાં તીર્થના હચ્છેદ આવીને કાસા રહેશે. ' આવાં અનેક સ્થળા રહસ્યમર્થા છે.

ત્યારે 'નચાપડેશ' અને 'નચરહસ્ય' માં સપ્તભંગીનું સ્વરૂપ વર્ણવતાં ત્રીજ અવક્તન્ય ભંગ પર શુંદર જિન્નાસા ઊભી કરીને એનું વિશેષતાલયું સમાધાન આપ્યું છે. જિન્નાસા એ કરી છે કે, વસ્તુ પરસ્પર વિરુદ્ધ એવા ઉભય ધમંદ્રપે એકીસાંધ કહી શકાય કે નિદ્ધ ? કા. તા. ઘટને એક્વાર 'સ્પાત્ સત્' કહ્યો અને છીઇ વાર 'સ્પાત્ અસત્' કહ્યો ત્યારે એકીસાંધ કહો, ઘટ કેવા છે કે એના ઉત્તરમાં 'ઘટ અવક્તન્ય છે;' ત્યારે પ્રથ્મ એ ઊભો કરવામાં આવ્યો કે શા માટે અવક્તન્ય ? જેમ 'પુષ્પદન્ત ' શબ્દથી સ્વર્ધ ચંદ્ર બન્નેનું એક જ શબ્દથી નિવંચન થાય છે, તેમ અહીં પણ 'સત્ અસત્' બન્નેના એકીસાંધ નિવાચક અને સાંકેતિક શબ્દ કહીએ તો તેથી ઘટ વક્તલ્ય બન્મો ને ? અશીત્ એ સંકેતથી ઘટ સત્—અસત્ દસ્તયર્ય એકીસાંધ વક્તન્ય વના કમસર વાચક શબ્દ છે, તો તો પ્રસ્તુત સંબને તે ઉપયોગી નથી. એ એ એકીસાંધ સત્—અસત્ના લાચક છે, જાર્યાત્ યુગપદ્વાચક છે, તો તે વસ્તુ તો પ્રશાન્ત એ કે, ઘટનું સત્—અસત્તા ઉભયરૂપે એકીસાંધ નિવંચન થઇ શકે ? ત્યારે તમે કહેશા કે, હા, સંકેતથી થઈ શકે, ત્યારે સાંકેતિક શબ્દ મે કહેશા કે, હા, સંકેતથી થઈ શકે, ત્યારે સાંકેતિક શબ્દ મે કહેશા કે, હા, સ્વક્તથી થઈ શકે, ત્યારે તમે કહેશા કે, હા, સ્વક્તથી થઈ શકે, ત્યારે સાંકેતિક શબ્દ માટે શક્તાન કર્તા કર્યકારા કર્યકાર્ય એકીસાંધ નિવંચન થઇ શકે ? ત્યારે તમે કહેશા કે, હા, સ્વક્તથી થઈ શકે, ત્યારે સાંકેતિક શબ્દ માટે શક્તાન કર્તા કર્યકારા ?

અર્ચાત્ એકીયાર્થે સત્-અયત્ ઉભયમાં યાંકેતિક શબ્દની શક્તિ રાખવી પછી. તેના શક્યતાવચ્છેદક કાંભુ ? સત્ત્વ, અસત્ત્વ ક્તે કહા તો પાછા ત્યાં પ્રશ્ન રહેવાના કે એ સાંકેતિક પદથી સત્ત્વ અને અસત્ત્વનું નિવેચન એકીસાથે થવાનું કે કમિક ? એકીસાથે થવાનું એમ તો નહિ કહી શકાય. કેમ કે જે વખતે સત્ત્વ ઉચ્ચારાય છે ત્યારે અસત્ત્વનું નિવેચન નથી અને અસત્ત્વ ઉચ્ચારાય છે ત્યારે સત્ત્વનું નિવેચન નથી. ત્યારે વળી, ત્યાં સત્ત્વ-અસત્ત્વ બન્નેનું એકીસાથે નિવંચન કરનાર કાંઈ જીકા સાંકેતિક શબ્દ ક્લો કરશે તો પાછા એ જ પ્રમાણે એના શક્યતાવચ્છેદક અંગે પ્રક્ષ થશે. આમ અનવસ્થાના દાર્ષ આવી પડશે.

પૂર્ ઉપાધ્યાય મહારાજનાં શાસ્તરતામાં ઝળકતાં રહેરયા અને વિશિષ્ટ પદાર્થોનું શું વર્ણન કરી શકાય! આ તા સામાન્ય છવા સમજે એવા છટક નમૂના છે. ખાકી તા દર્શનના અને સૂક્ષ્મ તત્ત્વના અભ્યાસવાળાને સમજાય તેવાં તા કેટલાંયે રહેરયા છે પણ એટલું ખરું કે એ રહેરયા અને વિશેષતાએ સાથેની એમની શાસકૃતિઓમાં કહેલાં તત્ત્વા અને પદાર્થોનું શ્રવણ, ગાધ, મીમાં અને અનુભવન એ માનવજીવનને અજવાળી દે એવાં છે. આ માટે શ્રવણાદિ દરેકના ખૂબ જ અભ્યાસ જોઇએ. વાર'વાર શ્રવણ, વાચન, અને શ્રહણ તેમ જ વાર'વાર પરિશીલન અને અનુભવન—આત્મભાવન જોઇએ, અર્થાત્ એનાથી આત્માની સહજ મતિને ભાવિત કરી દેવી જરૂરી છે. જીવન ટૂં કું છે, અને એકલા ઉપાધ્યાય મહારાજના જ ચન્ચોના અભ્યાસ દીર્ધ કાળ ચાલે એવા છે. તેમ જ વ્યાપક ગાધ અને પ્રેરણા આપી જીવનને સફલ કરે એમ છે. એ વખતે જો એ રહેરયા અને વિશેષતાએ સાથેના એ પદાર્થોનું આત્મભાવન મૂકી કેવળ સાહિત્યક દેષ્ટિ, ઐતિહાસિક દેષ્ટિ, સમન્વય દેષ્ટિ, તુલનાત્મક દેષ્ટિ ઇત્યાદિના વિષય પ્રતિભાસરૂપ જ્ઞાનમાં જ પડી જવાય તા માનવ—જીવનનું અણુમાલ કર્તં વ્ય જે વિષયપરિણતિ અને સંવેદન જ્ઞાન, તે એમ જ અણુસાધ્યું રહી જાય.

શ્રદ્ધાવાદને વિકસિત કરવાની જરૂર—

तत्त्वतुं प्रतिकासज्ञान गमे तेवुं थाय, पणु को परिष्कृतिज्ञान अने तत्त्वसंविद्दन ज्ञान ન થાય તા તેની કશી જ કિંમત નથી. પરિષ્યુતિજ્ઞાન લાવવા માટે હૃદયનું વલશુ તે તે તત્ત્વના સ્પ્રુપને અનુરૂપ અનાવલું આવશ્યક રહે છે. દા. ત. આસવ તત્ત્વનું જ્ઞાન થયું. આસવતું સ્વરૂપ હેય છે; તા હૃદયનું વલણ હેયતાને અનુરૂપ નોઇએ. અર્થાત્ આસવ પ્રત્યે અનાસ્થા-અરુચિ અને તિરસ્કારલર્શું વલણ નેઇએ. આસવથી આત્માને લય લાગવા જોઈએ. જ્યાં આસવની વાત આવે ત્યાં અકર્ત'વ્યતા ભાસે, તિરસ્કાર આવે. આવા વલણ∙ વાળું આસવનું જ્ઞાન એ પરિષ્કૃતિજ્ઞાન છે. પછી તત્ત્વસંવેદનના જ્ઞાનની પ્રવૃત્તિમાં ઊતરવાની વાત આવે. અર્થાત્ આસવ પ્રત્યે લય, તિરસ્કારનું વલણ ઘયું ખર્ં, પરંતુ આસવના ત્યાગ નહાતા થઇ શકચો, આત્મા એનાથી તદ્દન અનાસક્ત અને અલિપ્ત નહાતા ખની શકચો. જયારે તત્ત્વસંવેદનમાં તાે આસવ પ્રત્યે સહજ અનાસક્રત બન્યાે, એનાથી અલિપ્ત થયાે. અર્થાત્ હવે અતરથી પણ આસવમાં પ્રવૃત્તિ નહિ, પરંતુ સવેદ્યા વિરતિભાવ થાય. આ વસ્તુ છવનમાં ખૂબ જ જરૂરી છે. તે માનવજીવનમાં જ શક્ય છે. તેના વિના કારા પ્રતિભાસ ત્રાનથી તા કાંઇ આત્મહિત સીઝતું નથી. એમ તા અભવ્ય પણ નવ પૂર્વ સુધીના પ્રતિભાસ.-ત્રાન સુધી પહેાંચી જાય છે. લ્યા, એણે સાહિત્ય કેટલું ખધું ખેડયું! પણ તેવા પ્રતિભાસ-માનમાત્રથી શું ? પરિછૃતિ અને સંવેદનના લક્ષ નિનાની ઐતિહાસિક દેષ્ટિની લાજગડ તે તે કાળના રીતરિવાજ અને ભાષાના સંશોધન, ઇતરા સાથે કેટલીક વસ્તુના સમન્વય– એ બધી દેષ્ટિએા હૃદયમાં નક્કર સંવેગજનક બાેધ નથી આપતી. પછી સંસારથી અલગ

અને અલિપ્ત થવાની વાત જ કર્યાં ? આજના ખુદ્ધિવાદના જેર પર પ્રમુરતા માગ્યવાદને ચાલતા કરવા હાય તા ઋષિ–મદ્દવિ ઓના તર્ક-યુક્તિપૃર્ણ ગંભીર વચના પર શ્રદ્ધાવાદને વધુ વિકસિત કરવા પડશે. એના બદલે નર્ધુ ખુદ્ધિવાદનું તાંડવ તા છતા વસ્તુએ જૈન કે આયંપ્રજાને સંસ્કૃતિના વિનાશ તરફ ઘસડી જશે.

પ્રતિ—એ ગુબ અભિલાષા છે કે, પૃંગ્ ઉપાધ્યાયછ મદારાજ જેવા મદ્ધિ એાનાં શાસ-રત્નામાંથી આપણે છવનમાં નષ્કર તત્ત્વકૃષ્ટિ, કેવળ પરિજૃતિ—મંવેદન જ્ઞાન તથા મંવેશ વિરાગાદિથી પરિપુષ્ટ આધ્યાત્મિકવાની ઉચ્ચ કક્ષાએ પદ્યાંથી, આંતરાત્મદશાના ઉદ્દશસિત અભ્યાસ પર પરમાત્મદશાને વરીએ. અજ્ઞાન કે પ્રમાદના દાપે કાંઈ પણ અયુકત લખાયું દાય તે અદલ મિચ્છામિ દુક્કદં.

Ø

फप्टेन लब्बं विश्वदागमार्थं, ददाति योऽसद्ब्रहदृषिताय। स खिद्यते यत्नश्रतोपनीतं, वीतं वपष्ट्रपरस्मिदेशे ॥१५३॥

—જેવ્યું ખૂત્ર દુઃખ વેઠીને સ્પષ્ટ એવા વ્યાગમના અર્ધ પ્રાપ્ત કર્યો છે તે જો અશ્વક્શ્યદ્ધી દૃષિત–ક્કાગ્રહીને આપે તા તે શ્રે'કદા પ્રયત્નથી ગેળવેલા બીજને ઉપર બૃધિમાં વાવતા એક પામે છે.

અખ્યાત્મસાર]

[શ્રીમદ્ર યરાવિજયછ

Ø

પ્રખર સ્યાદ્વાદી ઉપાધ્યાયજી શ્રી. યશાવિજયજી મહારાજ

[લેખક :-- પૂ૦ મુનિવર શ્રીમાન્ વિક્રમવિજયજ]

ન્યાયવિશારદ ન્યાયાચાર્ય શ્રી. યશાવિજયજી ઉપાધ્યાયજી મહારાજા જૈન શાસનની એક અમૂલ્ય વિબૂતિ હતા. તેઓશ્રીએ વિક્રમ સંવત્ ૧૬૮૮ માં બાલ્યાવસ્થામાં જ દીક્ષા ધારણ કરી હતી અને પાતાની અપ્રતિમ ધારણાશક્તિના પૂર્વપરિચય પાતાની માતાને બાલ્યાવસ્થામાં જ આપી દીધા હતા. તેઓશ્રીનું ચારિત્ર-પ્રલુકથિત શુદ્ધ અનુષ્ઠાન-ઘણું જ ઉચ્ચ કાેટિનું હતું. તેઓશ્રી બદ્મનિષ્ઠ, અડગ મહાયાગી હતા; એટલે કે તેઓશ્રી પંચમહાન્ વ્રતા પાલનમાં પૂષ્મ તત્પર રહેતા હતા. તેઓ કેવળ એકદૃષ્ટિવાળા ન હતા. તેઓશ્રીમાં જેવા ગ્રાનના પક્ષપાત હતા, તેવા જ ક્રિયાના પણ હતા. તેઓશ્રી કેટલાક ઇતર વિદ્યાનાની જેમ માત્ર કારા ગ્રાનના જ ઉપાસક નહાતા પણ ઉભયને સમાનપણ ન્યાય આપનારા હતા. તેઓશ્રી પ્રભુની આગ્રાને જ આવકારનારા હતા અને પ્રભુની આગ્રાને સંદેશ પાઠવતાં ગમે તેવાં વિદ્યા આવે છતાં ગલરાતા નહિ. આ જ વાત તેઓશ્રીએ શ્રી શં બેશ્વરજી પાર્શનાથ ભગવાનની સ્તુતિ કરતાં ઉચ્ચારી હતી:

" મિથ્યા મત હૈ ખહુ જન જગમેં, પદ ન ધરત ધરણી; ઉનકા હમ તુજ ભક્તિ પ્રભાવે, ભય નહીં એક કણી. "

આમ કહીને એમણે પાતાના હૈયામાં પ્રભુ પ્રત્યે રહેલો બક્તિ વ્યક્ત કરી; એટલું જ નહિ પણ સાથે સાથે પ્રભુની આજ્ઞા પાતાની નસેનસમાં વ્યાપ્ત હતી તેના પણ પ્રભુ પાસે

^{1.} પ્રસ ગ એવા બન્યા હતા કે, તેમનાં માતુષ્રાને હંમેશાં નવરમરણ સાંભળવાના નિયમ હતા, તેથી શ્રવણ કર્યા પછી જ પચ્ચક્ષ્માણ પાળતાં હતાં. એક દિવસ બનાવ એવા બન્યા કે, પાતાના ગામથી પૂ. ગુરુદેવના ઉ તાશ્રયે જતા વચમાં નદી આવતી હતાં. તે નદીમાં ચાતુમાંસના કારણે પાણી પુષ્કળ ભરાઈ ગયું હતું. જેથી તેમનાં માતુષ્રા ત્યાં જઇ શક્યાં નહિ અને નવરમરણનું શ્રવણ કરી શક્યાં નિંદ. આથી માતુભકત બાલવયસ્ક આપણા પૂ. ઉપાષ્યાયછ મહારાજે જનનીને પૃષ્ટયુ: " તું આજે પચ્ચક્ષ્માણ કેમ પાળતી નથી !" માતાએ કહ્યું: "મારે નિયમ છે કે, નવસ્મરણ સાંભળ્યા પછી જ પચ્ચક્ષ્માણ પાળવું." જશવંતકુમારે કહ્યું: " હે માતુષ્રી! ચાલા, હું આપને નવસ્મરણ સાંભળ્યા પછી જ પચ્ચક્ષ્માણ પાળવું." જશવંતકુમારે કહ્યું: " તેને કચાંથી આવડે!" ત્યારે જશવંતકુમારે કહ્યું: " હે માતુશ્રી! આપની સાથે હંમેશાં હું જ્યાશ્રયે આવતા હતા તે વખતે સાંભળતાં સાંભળતાં મને યાદ રહી મર્યા. " આવું સાંભળા ગમે તેવા માનવા એમ કહેવાને તત્પર થઈ જ્યા હે ધન્ય છે એમની ધારણાશકિતને!

એકરાર કર્યો. એમના હૈયામાં પ્રભુઆજ્ઞા પ્રત્યે જે અન્યદ પ્રેમ અને રસ યુતા તે તેએાશ્રીની એક એક રચના ઉપરથી માલમ પડે છે. તેએાશ્રીને પાતાની પ્રજાની પડી નહાતી પણ પ્રભુના ચિદ્ધાંતા સાચા છે તેને સાબિત કરવાની અને તેના નિષ્કર્ષ જનતા સમક્ષ સકવાની દેવામાં હોંગ હતી. તેએ શ્રીએ અમદાવાદમાં ત્યારે આઠ અવધાન કર્યાં ત્યારે તેમનાં અવધાના જોઈને પ્રસન્ન થયેલા 'સાર્ગ ધનજી સરા ' એ ગુરુદેવને વિનંતી કરી કે ' આ યુરો(વેજયછ તા બીજા હૈમચંદ્રાચાર્ય ચાય તેવા છે માટે તેમને કાશી વિદ્યાસ્યાસ માટે માકેકો.' તે વખતે ન્યાયવિદ્યાના દ્યાય તા કાશીમાં જ વહેતા હતા અને તે પહેલાં ભંગાળમાં એના પ્રવાદ વહેતા હતા. નવ્યત્યાયના વિકાસ કરનારા જગઢાગ, ગઢાધર આદિ દિગગજ વિક્ષાના ખંગાળમાં જ શઇ ગયા હતા: અને એ અધા નૈયાયિકાએ નવ્યન્યાયને ખૂબ ખૂબ વિકસિત કર્યો હતા. ત્યાર બાદ એ નવ્યન્યાયના પ્રવાદ અંગાળમાંથી કાશીમાં વહેવા ક્ષારુપા હતા તથી તે વખતમાં કાગી નવ્યન્યાયનું ધામ બન્સું હતું. તેએાશ્રી કાશીમાં નવ્યન્યાયનું અધ્યયન કરતા હતા પણ અંતરમાં તા પ્રભુના સિહાંતાને કાેઈ પણ વાદી ઋપસિંહાંત કહી શકે નહિ એ માટેનું મનામંઘન પણ ચહ્લ જ હતું. એ નવ્ય-ન્યાયને કાશીમાં જ રહી અભ્યાસ કરવા છતાં પ્રબુઆત્રાને સિદ્ધ કરવાના મનારથા પૃત્ર ખૂબ અળવત્તર અનતા જતા હતા. અને તૈયી જ એ શાસ્ત્રોના કાયદાએ અને સૂચા એમના પ્રબુષ્માર્સાકિત દેવાને હમમચાવી શક્યાં નહિ. એ જ કાર્યીમાં ઘણા અલ્પ સમયમાં તેમણે નબ્યન્યાયના લગલગ પૂર્ણ અભ્યાસ કરી લીધા. સાથે સાથે ત્યાં આવેલા એક મહાવારી કે જેની ગ્રાથ વાદવિવાદમાં ઊતરવાને કાર્યાના કેર્ક પણ પંડિત તૈયાર નહોતા, તે વખતે સ્યાદવાદના આ અનન્ય ઉપાસકે વાદવિવાદ કરવાની હિંમત કરી અને તેને પરાજિત કર્યો. તેઓશ્રીના આ મદાન વિજયથી અંબર્ક જઇને ત્યાંના પંદિતાએ તૈમને ' ન્યાયવિશારક ' તું બિટક આપ્યું.

સવૈશાસ પારંગત ઉપાધ્યાયછ—

નવ્યન્યાયની શૈકીમાં સ્યાદ્વાદના સિદ્ધાંતાને તેઓ કાશીમાં કરેશા અધ્યયનને લીધે જ ગૃંથી શક્યા. આમ તા તેઓશીમાં લંઘ રચવાની શક્તિ હતી જ, અને તેથી જ તેઓ સ્યાદ્વાદ સિદ્ધાંતને નવ્યન્યાયની રીતે હાળી શક્યા. આજે એ સ્યાદ્વાદ રસ્થી નીતરતા, ચરણકરણની બાવનાથી બરપૂર અને અકાટ્ય શુક્તિર્પી તરંગાથી વ્યાપ્ત લન્થા બદલલા પંઠિતાનાં શિર ટાહાવે છે અને અખંડ ચારિત્રવાનાને નતમસ્તક અનાવ છે. એમના કાઈ પણ લન્ય લુંઓ તો તેમાં ન્યાયની છાયા તા પડેલી જ હાય. તેઓ કેવળ ન્યાયશાસમાં જ નિપુણ હતા એટલું જ નહીં, પણ સર્વ શાઓમાં પારંગત હતા. એમની બન્યરચનાના અલ્યાસ કરીએ છીએ ત્યારે તેઓશી એક સમર્થ લન્ચકાર હતા એવી પ્રતીતિ આપણને થાય છે. એમની સંસ્કૃત કાવ્યરચનાઓ ત્રેઈ એ છીએ ત્યારે એમની એક કવિસસાટ તરીકની છાય આપણા દૃશ્ય પર અકિત થાય છે. ન્યારે એમની સફ કવિસસાટ તરીકની છાય આપણા દૃશ્ય પર અકિત થાય છે. ન્યારે એમના સ્યાદ્ વાદનાં નિર્પણા ત્રેઈએ છીએ ત્યારે તેઓ એક સ્યાદ્વાદના પુરસ્કતો તરીકે તરી આવે છે, ત્યારે સિદ્ધાંતની વાતા લખતા હોય ત્યારે એક આગમિક આચાર્યની કક્ષાએ પહોંચેલા

માલમ પહે છે, જ્યારે એમનાં કર્મ વિષયક વિવેચના વાંચીએ છીએ ત્યારે કર્મ—સાહિત્યના પ્રખર જ્ઞાતા તરીકેના ભાસ થાય છે, જ્યારે વ્યાકરણ વિષયક 'તિહન્વયાક્તિ' જેવા શ્રંથા જોઇએ છીએ ત્યારે પ્રખર વૈયાકરણની દિવ્દ તેમને લાધી હાય એમ દેખાય છે. અતીત કાળમાં થઈ ગયેલા મહાન આચાર્યોના ગુણા તેમણે પાતાનામાં સમાવી લીધા હાય એમ આપણને એમના શ્રન્થાવલાકનથી જણાઈ આવ્યા વગર રહેતું નથી; અને તેથી જ સિંહસેન દિવાકરજી મહારાજ, મલ્લવાદિસ્રીયરજી મહારાજ, હરિલદ્રસ્રીયરજી મહારાજ, વાદિદેવસ્રીયરજી મહારાજ, વાદિદેવસ્રીયરજી મહારાજ તથા હેમચંદ્રાચાર્ય મહારાજના એક એક ગુણ લઈને યાને ખધાના ગુણાના સમન્વય સાધીને યશાવજયજી મહારાજના ખુદ્ધદેહ ખન્યા હશે એમ કદ્યા વગર રહેવાતું નથી.

ષડ્દશેનની સાક્ષાત્ મૂર્તિ—

જયારે તેઓશ્રી ખોહોનું ખંડન કરે છે અને એના પૂર્વપક્ષ એવી રીતે પ્રતિપાદિત કરે છે ત્યારે સ્વયં વસુખંધુ, દિલ્નાગ અને ધર્મકીર્તિની યાદ આપે છે; મીમાંસકાની જયારે મીમાંસા કરે છે ત્યારે ભાદ અને પ્રભાશ્વની યાદ દેવડાવે છે, વેદાન્તને જયારે એ હાથમાં લે છે ત્યારે એક મહાન વૈદાન્તિકાચાર્ય લાગે છે, અને ચાગતું રહસ્ય સમજાવે છે ત્યારે ચાગાચાર્ય લાગે છે. સાચે જ, એઓશ્રી સાક્ષાત્ પડ્દર્યનની મૂર્તિ સમા હતા. ધન્ય છે સવ્વવાદ પરમેશ્વરના એ અસાધારણ પૂજારીને!

તેઓશ્રીએ 'નયચક્રશાસમ્' કે જેની રચના તાર્કિ કચૂડામિલ મલ્લવાદિસ્રીશ્વરભ્ર મહારાજાએ કરી હતી અને જેના ઉપયોગ આપણા જૈનાચાર્યોએ ખુબ એકિક કર્યો છે અને જેના માત્ર નામાલ્લેખ મલધારી હૈમચંદ્રાચાર્ય મહારાજાએ કર્યો છે તથા વાદિવેતાલ શાંતિસ્રીશ્વરભ્ર મહારાજાએ એ મહાન નયચક્રશાસ્ત્રના ઉલ્લેખ ઉપરાંત તેમાં આવતી એક દલીલ પણ પાતાની 'પાઇય' ટીકામાં લીધી છે; તે ગ્રંથ પૂ. ઉપાધ્યાયભ્ર મહારાજે એક પખવાડિયામાં જ વાંચી લીધા હતા અને તેની એક પ્રતિલિપિ કરાવી હતી. આથી તે 'નયચક્ર'ની પ્રશસ્તિમાં પૂ. ઉપા. યશાવિજયભ્ર મહારાજની રત્નુતિ જેવામાં આવે છે. તથા હાલમાં મળતી ઘણી ખરી પ્રતિઓની શરૂઆતમાં " પૈ–નમ:" જેવામાં આવે છે. તેઓશ્રીએ એ બ્રંથના 'સ'મતિતર્ક'ની જેમ ખૂબ છુટથી શા માટે ઉપયોગ નહીં કરી હોય તેનું સંશોધન કરનું જરૂરી છે, આજે તે શ્રંથનું સંપાદન અમારા પરમપુજ્ય પરમગ્રુજેર આચાર્ય શ્રી. વિજયલિષ્યસ્રીશ્વરભ્ર મહારાજ કરી રહ્યા છે અને તેના બ્રે ભાગ પ્રગટ થઈ ચૂક્યા છે તથા ત્રીજ ભાગનું સંપાદનકાર્ય ચાલુ છે.

પૂજ્ય યશાવિજય ઉપાધ્યાયછ મહારાજના શાસ્ત્રાવિષધ ઘણા જ ઊંઠા હતા. સૂત્રના કેવળ શબ્દાર્થો પર એમના ગાંધ નિર્ભર ન હતા પણ એમના ગાંધ એંદંપયાંધ હતા અને તેથી જ તેઓશ્રીએ ઠેકાણે ઠેકાણે જ્યાં જ્યાં સૂત્રાવિગાધની વાત કરી છે ત્યાં ત્યાં ચાર પ્રકારના અર્થની વાત કરી છે. એમણે એ ચાર પ્રકારના અર્થની વાત જેટલી વિશદ રીતે કરી છે તેટલી કાઈ પણ શ્રાંઘકારે કરી હાય એવું જાણવામાં નથી.

તેઓશ્રી ચાર પ્રકારના અર્થની પદાર્થ, વાકપાર્થ, મહાવાકપાર્થ અને એંદંપયોર્થની વાત કરે છે ત્યારે તેમાં પણ સ્વમતિકદયનાના દેાષ ન આવે તે માટે વાદિભૃષણ સલ્લ-વાદિસ્િ મહારાજ્ય 'દ્રાદશારનયચક્ર 'ના પ્રત્યેક ' અર 'ના અતે જેમ 'આર્ષ ' કહી પ્રમાણ દાંકયાં છે તેમ તેઓશીએ પણ ગાસોનાં પ્રમાણ દાંકયાં છે.

એ લગ્ય પ્રતિલાની પ્રતિમા સમા એ મહાપુરુપે ટાઇ પણ દેશણે સ્વતંત્ર કલ્પના કરી નથી પણ સિહસેન દિવાકર તથા મહલવાદિસ્રીશ્વરછ મહારાજ તથા જિનલદ્ર ગણિ સમાગ્રમણનાં લિલ લિલ વક્વગ્યોના સમન્વય સાધી પાતાના પૃત્યા પ્રત્યેના આદર બ્યક્ત કર્યો છે. એમની એ સમન્વયશક્તિના અજે આપણા શ્રમણસંઘ જે યાબ્ય ઉપયાગ કરતાં શીખી લાય તા આજે પરસ્પરની વિચારધારાઓની અથડામણ તથા સમાજમાં બ્યાપેટા કુસંપ સહેજે ડાળી શકાય.

એ પુર્વ પુરુષ પાતાના ગચ્છમાં ચાલતા મતલે દામાં જરા પણ પડ્યા નથી એમ તેમના 'ધર્મમંત્રહ,'ના સંશાધન તથા તેમાં કરેલાં ડિપ્યણા દ્વારા લાલવા મળે છે તેઓ શ્રીના સિદ્ધાંત્ર હતા કે દેશનાની એકતાથી શાસનની પ્રભાવના થાય છે. એએ શ્રીના ' ગુરુતત્ત્વવિનિશ્ચય' માં અતાવેદા એ સુંદર માર્ગ સહુ અપનાવે તા શાસનની સુંદરતામાં જરા પણ શ્રષ્ટ્ય રહે નહીં. આડલી મારી શ્રમણ સંઘ પાસે મુકેલી માત્રણી અવશ્ય સફળ થશે એવી આશા છે.

એ મહાપુરુષ નથી જ્ઞાનના જ ઉપાયક હતા એવું કચન કરનારા એમની ઝાન અને ક્રિયાની એ પાંખામાંથી માત્ર એક જ પાંખને આગળ કરનારા છે અને ક્રિયાની પાંખ પ્રત્યે દ્રશ્રંક્ષ કરનારા છે. તેઓશ્રી 'ગ્રાન–ક્રિયાભ્યાં માશ્રા 'એ સ્ત્રના સુસ્ત ઉપાયક હતા.

એ પ્રભાવક પુરુષ પુરુષતું સાંગામાંગ ચરિત આપણને મળી શકતું નથી પણ તેઓશ્રી જેમ ગ્રાનના પ્રભાવક હતા તેમ કિયાના પણ પ્રભાવક હતા. તેથી જ તેઓશ્રીએ જેમ શાસનપ્રભાવક આઠ કહ્યા છે અને સ્વાધ્યાયમાં ગાયા છે તેમ યાત્રા, પૂજા આદિ કાર્ય કરનારાઓને પણ—

' જબ નહિ હોવે પ્રભાવક એન્ડ્રવા, તવ વિધિ પૂર્વ અનેક; જાત્રા પૂજાદિક કરણી કરે, તેલુ પ્રભાવક છેક.' કહીને એ અતુષ્કાનાને પણ શાસનની પ્રભાવના તરીકે સ્ત્રીકાર્યો છે.

તે એ છીએ ૧૦૦ ગ્રન્થા કેવળ ન્યાયના લખ્યા હતા કે જેનું પ્રમાણ છે લાખ શ્લાક ધાય છે આથી બહાચાર્ય એમના ઉપર પ્રસન્ન થઇ તેમને 'ન્યાયાચાર્ય'નું બિરફ આપ્યું છે.

હું જ્યારે જ્યારે એ મહાપુરુષના શ્રન્યા વાંચું છું ત્યારે ત્યારે મને એમ જ શાય છે કે એ પાવન સાધુપુરુષની સમાધિની સમીપમાં જઈને અલ્યાસ કર્યું જેથી એમના બ્રન્યાનું રહસ્ય સરળ રીતે પામી શર્યું.

આવા સમન્વય સાધક, વિમજયવાદના મહાન્ ઉદ્દેશાયક, જ્ઞાનકિયાના અડેલ પૃજારી, મહામતિમાન્ પરમપુરુપાર્થી, એક્લા હાથે નવ્યન્યાયની રાેલીએ શત ગ્રન્થાની રચના કરનાર, વીરુધર્મના એ અવિહેક રાગીને કાેડિ કોડિ વંદન દાે!!

ન્યાયદર્શનનું સ્વરૂપ

[લેખિકા :— પૂ. આયાંશ્રી મૃગાવતીશ્રીજ]

ભારતીય દર્શનામાં છ દર્શના વેદમૂલક છે. જેમ કે વેદાન્ત, સાંખ્ય, યાગ, ન્યાય, વૈશેષિક અને સીમાંસા. આ છ દર્શનામાંથી ત્રલુ દર્શનાની મૂલ ભિત્તિ પરમાણવાદ છે. ન્યાય, વૈશેષિક અને મીમાંસા દર્શ નમાં પરમાણુએાથી જગતની સૃષ્ટિ ખતાવી છે. પૃથ્વી, જલ, તેજ અને વાયુના પરમાણ હાય છે એટલા માટે પૃથ્વી, જલ, તેજ અને વાયુ નિત્ય અને અનિત્ય એમ એ વિલાગામાં વિલકત છે. નિત્ય પૃથ્વી, નિત્ય જલ, નિત્ય તેજ અને નિત્ય વાયુ પરમાણુરૂપ છે, કાર્યપૃથ્વી, કાર્યજલ, કાર્યતેજ, કાર્યવાયુ અનિત્ય કહેવાય છે. પરમાણ નિત્ય અને સક્રિયપદાર્થ છે. તેનું સ્વરૂપ અત્યંત સૂક્ષ્મ છે આથી પરમાણના પરિમાણને, પારિમાંડલ્ય કહે છે. પરમાણુઓમાં ઈશ્વરની ઈચ્છા, પ્રયત્ન અને જ્ઞાનથી ક્રિયા ઉત્પન્ન થાય છે, એમાં જવાતું કાઈ કર્તૃત્વ નથી. પ્રલયકાલમાં પરમાણુ વિખરાઇ જતાં સંપૃષ્ણું સ'સારમાં વ્યાપ્ત ખતે છે, તેએામાં દ્વિયા હાવાથી એક પાર્થિવ પરમાણ બીજા પાર્થિવ પરમાણની સાથે મળે છે જેને દ્વચણુક કહે છે. ત્રણ દ્વચણુક મળવાથી ત્રસરણ થાય છે. ચાર ત્રસરેશુ મળવાથી એક ચતુરહ્યુંક બને છે, તે ચતુરહ્યુંકથી સૂક્ષ્મમૃત્તિકા અને છે, તેથી મૃતિપિ'ડ થાય છે, તેથી કપાલ ખને છે, તેથી ઘટ ખને છે. એ જ ક્રમથી જલીય પરમાણના પરસ્પર સંચાગથી જળની સૃષ્ટિ થાય છે. આ રીતે તેજ અને વાયુની સૃષ્ટિ થાય છે. આકાશ, કાલ, દિશા, આત્મા અને મન, આ પાંચ પદાર્થ નિત્ય છે. આમાં આકાશ, કાલ, દિશા અને આત્મા વ્યાપક છે પરંતુ મન અત્યંત પરમાણુસ્વરૂપ લઘુ છે. સૃષ્ટિની આ પ્રક્રિયા ન્યાયદશેન, વૈશેષિકદર્શન અને મીમાંસાદર્શનમાં સમાન છે. આથી આ ત્રણે દર્શનામાં પરમાણવાદ મુખ્ય છે. કેવળ એટલું જ અંતર છે કે મીમાંસાદર્શનમાં કર્મને પ્રધાનતા આપી છે. કમે અર્ધાત્ યજ્ઞાદિક ક્રિયા માનવાને સ્વર્ગ અપાવે છે. આ ત્રણ દર્શના સિવાય સાંગ્ય અને પાંતજલ યાેગદર્શનમાં પ્રકૃતિવાદ પ્રધાન વસ્તુવિષય છે સ'સારની રચના થાય છે. પ્રકૃતિથી મહત્તત્ત્વ, મહત્તત્ત્વથી અહ'કાર અને અહ'કારથી પંચતન્માત્રા, પંચતન્માત્રાથી પંચમકાભૂત પંચમકાભૂતથી સ્થૂલ જગતમાં ઉત્પન્ન થયેલા પદાર્થીની સૃષ્ટિ થાય છે. આથી આ દર્શનામાં પ્રકૃતિવાદનું વિવેચન કરેલું છે. વેદાન્ત-દર્શનમાં માયાવાદ પ્રધાન વસ્તુ છે. માયાથી જગતની સૃષ્ટિ થાય છે. સત્ત્વગુદ્ધ, રજેગુદ્ધ, તમાગુષ્યુ જેવી રીતે સાંખ્ય-યાગદર્શનમાં કહેલાં છે એવી જ રીતે વેદાન્તદર્શનમાં પષ્ટ એને સુષ્ટિનાં સહાયક કહ્યાં છે પરંતુ માયાને જ પ્રધાન સ્થાન આપ્યું છે. માયાનું સ્વર્પ વચનથી ખતાવી શકાતું નથી. તે સત્ છે યા અસત્ છે તે કહેવું કદિન છે પરંતુ શુદ્ધ સત્ત્વપ્રધાન સાથાની ઉપર ચૈતન્ય જ્રહ્મનું પ્રતિબિંબ પડે છે. પ્રતિબિમ્બિત ચૈતન્ય ઇલર યા હિરણ્યબને રૂપથી કહેવાય છે. તે જ ઈશ્વર જગતના સ્પ્ટા ને નિયન્તા કહેવાય છે. તે જ ઈશ્વર જગતના સ્પ્ટા ને નિયન્તા કહેવાય છે. ત્યારે માથા પાતાના કાર્યસ્પિતિ શુદ્ધ તત્ત્વણનદાસ શીન થઇ વ્યય છે ત્યારે મતુષ્ય શુક્રા થઇ શ્વય છે.

ન્યાય અને વેશેષિક દર્શનમાં ઇંધર આ રીતે મનાય છે. આત્માના છે લેક છે. જીવાતમાં અને તે છે તે સુખી, હૃંગ્યી થઇ શકે છે પરંતુ ઇશ્વર પરમાતમાં એક છે તેમાં નિત્ય જ્ઞાન, નિત્ય થત્ન, નિત્ય કંચ્છા વહે છે. તેતું અસ્તિત્વ ત્રહ્યુ કાલમાં અને ચીંદ ભુવનમાં સુર્વત્ર સમાન છે. તે ધર્મ ને અધર્મના અસાવધી સુખી અથવા દુઃખી નથી થઇ શકતાં. મુખ ને દુઃખમાં, ધર્મ અને અધર્મને નિમિત્ત કારણ કહે છે. છવ જે મુખી અથવા દુઃખી થર્ક શકે છે તેમાં ધર્મ ને અધર્મ રહે છે. યાગદર્યનમાં ઇધરની સત્તા માન્ય છે, कळेशकर्म-विपाकारुपैरपरामृष्टः पुरुपविशेष ईश्वरः। अर्थात् ४६४, ४५, विषाः ने आश्य ना ચાર પદાશેથી રહિત દેાય એવા પુરુષવિગેષને ઇશ્વર કહેવાય છે. સાંખ્યદર્શન નિરીયરવારી છે, કારણ કે તેમાં સવે સુરૂષ નિર્જાદ્ધ ને નિર્જિપ્ત છે. જલમાં કમદપત્રના સરખા તે પુરુષા સંસારમાં રહેવા છતાં તિર્દિપ્ત કહેવાય છે એટટા માટે સાંખ્યદર્શનના અહ્યુક્ષવાદ પ્રગત્ત છે. ન્યાયદર્શનના કર્તા ગીતમ ઋષિ છે. જેને અક્ષ્યાદ ઋષિ એવા ધીલ નામે પણ આપણે એાળખીએ છીએ. ન્યાયલાખ્યતા કતી વાતસ્યાયન કે. વાતસ્યાયન ભાષ્યતા ઉપર વાર્તિક રચનારા ભારકા*પ* કેઠ્યોતકર આચાર્ય છે. કેઠ્યોતકરે રચેલા વાર્તિ'ક ઉપર તેની શિકા ' ન્યાયવાર્તિ'ક નાત્યર્થ ' છે. તેની શિકા ઉદયનાચાર્યા વરચિત 'પરિશૃદ્ધિ' નામે છે. પરિશૃદ્ધિની ટીકા વર્ષમાનાપાધ્યાય રચિવ 'પ્રકાશ' નામક છે. આવી રીતે સૂત્ર, વાર્તિક, બાધ્યને અનુસરહ કરીને અનેક પ્રકીર્જ લેથો બનેલા છે. જેનાથી ન્યાયની શાખા, પ્રશાખા વધતી ગઈ છે. જાવી રીતે પાંચસા વર્ષ પહેલાં કેવળ પ્રાચીન ન્યાવના પ્રચાર હતા. પછીથી ગંગેશાપાધ્યાય નામે માટા નવાયિક વિદ્રાને ' તત્ત્વસ્તામણિ ' નામક નવ્યત્યાવના લંઘ બનાવ્યા; જે પાંચરા વર્ષથી સંપૃર્ ભાન્તમાં પ્રચરિત થઇ ગયેલ છે. ગંગેશાપાધ્યાય મિધિટાનિવાસી હતા. તેએાશ્રીના પુત્ર વર્ધમાનેત્પાધ્યાય ' તત્ત્વ-ચિંતામુખ્યાદેષ્ટ ' નામની ઢોકા બનાવી પરિત પશુધરમિષ્ઠ પાતાના સમકાશીન વિદ્વાનામાં · અપ્રતિદ્રેદી નેવાવિક હતા. તેઓ એ સમયમાં કુલ્યતિ કહેવાતા હતા અંગદેગથી સ્થુનાથ ચિરામણિ નામના વિફાન નિધિલાદેશમાં તેમની પાસે નવ્યન્યાય **બ**ણવા માટે ગયા. નવ્યન્યાયતું અધ્યયન કરીને અંબદેશમાં આવી 'તત્ત્વચિતામણિ-હીધિતિ' નામક ઠીકા તેમણે બનાવી. તે અવલંબીને જગદ્યેશ સફાયાર્થે 'જાગદીશી હોકા ' તું નિર્માણ કર્શ, પછીથી સશુરાનાથ-તકેવાગીરો 'તત્ત્વચિંતામણિરહસ્ય' નામક ટીકા બનાવો. પછી માટા માટા વિદ્વાનાએ આતા દેવર ગવેષવાત્મક અનેક પ્રકારનાં કોટપંત્રા લખ્યાં. આ રીતે બંગદેશ, મિથિલા. દક્ષિણ, કાર્યા, મહારાષ્ટ્ર અને મુજરાતમાં નવ્યન્યાય પ્રચલિત ઘયા.

ન્યાય અને વૈશેષકદર્શનમાં ભેદ—

વૈશેષિક દર્શનમાં ત્રણુ પ્રમાણુ માન્યાં છે. પ્રત્યક્ષ, અનુમાન અને શબ્દ. ઉપમાન-. પ્રમાણ એમાં ન માન્યું, કારણ કે તેના સમાવેશ અનુમાનની અંતર્ગત થાય છે. ન્યાય દર્શનમાં ચાર પ્રમાણ કહ્યાં છે. પ્રત્યક્ષ, અનુમાન, ઉપમાન અને શખ્દ. ચક્ષુરાદિ ઇંદ્રિયાથી જે ત્રાન થાય છે તે જ્ઞાનના સાધનપ્રમાણને 'પ્રત્યક્ષ પ્રમાણ ' કહે છે. વ્યાપ્તિ જ્ઞાનને અનુમાન પ્રમાણ કહે છે, યત્ર યત્ર ધૂમઃ તત્ર તત્ર અગ્નિ: ા આ સાહ્યુર્ય નિયમને 'બ્યાસિ' કહે છે; જેમાં પરામશે જ્ઞાન વ્યાપાર સ્થાનીય છે. સાદરય જ્ઞાનને ઉપમાન પ્રમાણ કહે છે. गोसदृशो गवयः। आ ७५भान प्रभाष्युनुं ७६।६२७ छे. आप्तोपदेशः शब्दः। आप्तपुरुपे।थी ઉપદિશ્યમાન શખ્દ પ્રમાણુ કહેવાય છે. આપ્તપુરૂષ તેને કહેવાય છે જે સર્વદા યથાથ વકતા હાય. પ્રાચીન ન્યાયમાં પદાર્થીનું વિવરણ કર્યું છે. આમાં સૂત્ર, વાર્તિક, અને ભાષ્યનું મહત્ત્વ અધિક છે. પ્રાચીનકાલમાં જે દેહાત્મવાદી દાર્શનિકા હતા તેના મતનું ખંડન કરવું એ લાખ્ય ને વાર્તિ'કનું પ્રધાન લક્ષ્ય હતું, પરંતુ પ્રમેય પદાર્થીનું નિરૂપણ સુખ્ય હતું. નવ્યન્યાયમાં પ્રમાણના વિચાર જ પ્રધાન રહ્યો છે. આથી ' તત્ત્વચિ તામણિ ' બ્ર'થમાં ચાર ખંડ છે. પ્રત્યક્ષખંડ, અનુમાનખંડ, ઉપમાનખંડ અને શબ્દખંડ. પ્રત્યક્ષખંડમાં ચક્ષુરાદિ ઇંદ્રિયાદ્વારા જ્ઞાન થાય છે તેનું દિઝ્દર્શન કરાવ્યું છે. પ્રમાણથી પ્રમેયના શુ સંબ'ધ છે એ ખતાવ્યું છે, ઇંદ્રિયાના વિષયની સાથે સંબ'ધ હાવાથી જ્ઞાન થાય છે. તે સંબંધને ન્યાયમાં સન્નિકર્ષ કહે છે. તે સંનિકર્ષના એ લેદ છે. લોકિક સન્નિકર્ષ અને અલીકિક સન્નિકર્ષ. અલીકિક સન્નિકર્ષ છે પ્રકારના છે. સામાન્ય લક્ષણ અને જ્ઞાનલક્ષણ, લીકિક સન્નિકર્ષ છ પ્રકારે છે. સંચાગ, સંયુક્તસમવાય, સંયુક્તસમવેદસમવાય, સમવાય, સમવેદસમવાય, વિશેષણવિશેષ્યભાવ. એક જેગથી ઉત્પન્ન થયેલ સન્નિકર્ષ કહેવાય છે; જેને જોગજ કહે છે. જોગજ સન્નિકર્ષ દ્વારા જોગીદ્યાક દેશબ્યવધાન અને કાલવ્યવધાન રહેવા છતાં વસ્તુને પ્રત્યક્ષ દેખે છે. આઘી યાગીઓની સામે દૂર દેશની વસ્તુ પણ હસ્તામલકવત્ દેખાય છે. યાંગી એ પ્રકારના છે. યુક્ત અને યુંજાન. યુંજાન સાધક યાગી હાય છે. તે ચિંતા કરવાથી જોગજ સન્નિકર્ષથી વસ્તુઓને દેખે છે, પરંતુ સુક્રત્રયાંગી સિલ્લયાંગી કહેવાય છે. તે સર્વદા વસ્તુએાને હસ્તામલકવત્ દેખે છે. આ જ પ્રત્યક્ષખંડમાં આત્મદર્શન પણ દેખાડેયું છે. બીજાના આત્માના બાધ અનુમાનઘી ઘાય છે. બીલાઓની પ્રવૃત્તિ જોઇ ને આત્મા છે તેમ બાધ થાય છે. જેવી રીતે ગતિથી સાર્શિન અતુમાન શાય છે. સ્વાત્માના પ્રત્યક્ષ અતુભવ થાય છે. રૂપ, રસ, ગ'ધ, સ્પર્શ', શુષ્ટ્ર ઇત્યાદિ નહીં રહેવાથી ખહિરિન્દ્રિયથી સ્વાત્માના બાધ થતા નથી પરંતુ મનઘીજ તેના બાધ ઘાય છે: આથી મનને ઇંદ્રિય માને છે, કારણ કે તે ગ્રાનનું સાધન છે. આટલં સમજ લું ખાસ જરૂરી છે કે શુદ્ધ સ્વાતમાના બાધ થઈ શક્તા નથી, જ્યારે તે આત્મા જણાય છે ત્યારે દાઈ ને દાઈ ગુણના સાચી આત્માના બાય ધાય છે. જેવી રીતે હું સુખી છું, હું દુઃખી છું, હું ઈચ્છાવાળા છું, હું યત્નવાળા છું ઈત્યાદિ બાધમાં આત્મા જેવા

વિશુષ્ય છે તેવી જ રીતે સુખ, દુ:ખ, ઇચ્છા, પ્રયત્ન વિશેષદ્યુર્પથી લાસિત શાય છે. **ળીજા આત્માને જાણવા માટે અનુમાન પ્રમાણની આવશ્યકતા છે. આ અનુમાન પ્રમાણ** અનુમાનખંડમાં કહેલું છે. વ્યાપ્તિગાન જ અનુમાન છે. પરમશે જ વ્યાપાર છે. વ્યાપારથી સુક્રત હાવાથી જ વ્યાપ્તિજ્ઞાન કરસ કહેવાશે. પ્રસિતિકરસને પ્રમાસ કહે છે. વ્યાપાર યુક્ત અસાધારણ કારણને કરણ કહે છે. અનુમિતિ ગ્રાનના માટે હેતુ આવશ્યક છે. હેતુ બે પ્રકારના છે. સદ્દેલું અને હેત્વાભાસ, સદ્દહેતુ જાલવા માટે હેત્વાભાસનું જ્ઞાન આવશ્યક છે. આવી રીતે ઉપમાનખંડમાં ઉપમાન પ્રમાણનું વર્ણન કર્યું છે. સાદ્ધ્ય જ્ઞાનને ઉપમાન કહે છે. गोसद्द्यो गंवयः। આ આતું ઉદાહુરછ છે. શબ્દખંડમાં શબ્દપ્રમાણનું વર્ણન કર્સું છે, તેથી શાબ્દબાધ થાય છે. શાબ્દબાધ માટે પરગાન તે કરહ છે અને પદાર્થગ્રાન ભ્યાપાર અને છે. અય બાધક શબ્દમાં રહેવાવાળી શક્તિ સહકારી કારણ છે. આ સામગ્રીથી શાબ્દ બાય કલ થાય છે. શાબ્દ બાયના માટે સંપૂર્ણ શાસ્ત્ર, પુરાણ અને ઇતિહાસ રચાર્યા છે. વેશેષિક્દર્શનમાં સાત પદાર્થી માન્યા છે. દ્રવ્ય, ગુજૂ, કર્મ, સામાન્ય, વિશેષ, સમવાય, અભાવ. ન્યાયદર્શનમાં સાળ પદાર્થી માન્યા છે. પ્રમાણ, પ્રમેય, સંશય, પ્રયાજન, દ્રષ્ટાંત, સિદ્ધાંત, અવયવ, તકે, નિલુંય, વાદ, જદય, વિત'ઢા, હેતુ, છક્ષ, જાતિ, નિશ્રહસ્થાન. વેંગ્રેપિક-દર્શનના નિર્માણકર્તા કણાદ ઋષિ છે. તેએાશ્રીનું બીજું નામ કેલ્લક્ષી છે. વૈશેષિકદર્શનની ઉપર ' ગ્રશસ્તપાંદ ' સુનિરચિત ભાષ્ય છે, જે ' પ્રશસ્તપાદમાખ્ય ' નામે પ્રસિદ્ધ છે. તે ભાષ્યના ઉપર મથિલી પ'હિત ઉદયનાચાર્ય' જે ' કિરણાવલી ' દીકા અનાવી છે, તેના ઉપર ભગીરથ ઠાકૂરની 'ટીકા' છે. વ્યામશિવાચાર્યની પણ 'ટીકા' છે. પ્રસિદ્ધ પંહિત રા કરમિશ્રે 'ઉપરકારક ' નામક સૂત્રની ઉપર વ્યાખ્યાન ખનાવ્યું છે. તેચોતે જ ' કહ્યાદ-રહેસ્ય ' નામક પ્રકરણ ગ્રંથ છે. વેશેનિક દર્શન નામ ચવાતું કારણ એ છે તે અપમાં એક विशेष पहार्थं भानेत है, विशेष पहार्थं तुं तक्षल आ है-नित्यद्रव्यवृत्तित्वे सति स्वतो क्याबृतत्वं विशेषत्वम्। अर्थात् ले वश्तु नित्यद्रव्यभां रहेवावाणी छे अने स्वतो ब्याबृत्त હાય જેના વ્યાવર્ત ક યા પરિચ્છેદક નથી. આના આશય આ છે કે જવ અને ગાધમમાં શું લેક છે ? આનાે ઉત્તર આ પ્રકારે છે ફેઃ—

આ બન્નેનું મૃળ કારછ પરમાણું ભન્ન છે. પુનઃ આ પ્રશ્ન જિઠે છે પરમાણું જ પરસ્પર ભિન્ન કેમ છે ? તેના ઉત્તર એ છે કે જવના પરમાણુમાં એક વિશેષ નામક પદાર્થ છે, જે પરમાણુના પરસ્પર લેદ કરી દે છે પરંતુ સ્વયં સ્વતાવ્યાવૃત્ત છે, તેના કાઈ અન્ય લેદક નઘી. આ વિશેષ પદાર્થને માનવાથી એ દર્શનનું નામ વેશેષિક દર્શન થયું. ન્યાયદર્શન એનું નામ એટલા માટે થયું કે અનુમિત્યાત્મક ગાનના માટે અનુમાનના ઉપયાગ કરવા પઠે છે. પાતાને અનુમિતિ ગ્રાન કરવા માટે પંચાવયવ વાકચના પ્રયાગ નથી થતા કિંતુ બીજાને અનુમિતિ ગ્રાન કરાવવા માટે પંચાવયવ વાકચના પ્રયાગ કરવા પઠે છે. આ પંચાવયવ વાકચને 'ન્યાય' કહે છે. આના આધાર પર ન્યાયદર્શન થયું છે. પંચાવયવ લાકચ આ પ્રમાણે કે-પર્વતો

विह्मान् आ वाक्यने प्रतिज्ञा कि छे. घूमात् आ हेतु थये। यत्र यत्र धूमः तत्र तत्र विहः, यथा महानसम् आ वाक्ष्य ६६। ६२७ क्षेत्रायुं. यस्मात् अयम् धूमवान् आ ६५नथ क्रिवाया. तस्मात् विद्वमान् आ निगमन क्रिवायुं. आ पंथावयव ज्ञानने न्याय क्रिके न्यायहर्शनने तर्हशास्त्र प्रख् हर्ड छे. तर्ह शण्डने। स्थे स्थर थाय छे हे स्याप्यारोप्येन व्यापकारोपः तकः अर्थात् व्याप्यना आराप करवाथी व्यापक्षना के आराप ते तर्क हिंदाय छे जेवी रीते धूमो यदि विह्नव्याप्यो न स्यात् तदा विह्नजन्यो न स्याद् धूभ ले विह्न-ગ્યાપ્ય ન હોત તો તે ઉત્પન્ન જ ન થઈ શકે. જે માટે વિદ્વાર્થી ઉત્પન્ન થાય છે એટલા માટે વિદ્વિના એ બ્યાપ્ય છે. આ તક પ્રમાણ દ્વારા ધૂમની સાથે વિહ્નની બ્યાપ્તિના નિશ્ચય થાય છે. આ પ્રમાણે વ્યાપ્તિજ્ઞાન હાવાથી ધૂમથો પહાડમાં અદશ્ય અગ્નિનું અનુમાન કરી શકાય છે. એટલા માટે તર્કની આવશ્યકતા છે ન્યાયદર્શનમાં કહ્યું છે व्यभिचारि-शक्कानिवर्तक अनुकूलस्तर्कः अर्थात् व्याप्तिज्ञानमां क व्यक्षियारीनी के शंका थाय छे, તેના નિવર્લ કે તર્ક છે. આથી વ્યાપ્તિજ્ઞાન સ્થિર થઇ જાય છે. વ્યાપ્તિજ્ઞાનને અનુમાન પ્રમાણુ કહે છે, તેથી અનુમિતિજ્ઞાન થાય છે. આ પ્રમાણે અનુમિતિ જ્ઞાનનું મૂલ કારણ તર્ક હાવાથી આ શાસને તર્કશાસ કહે છે. નવ્યન્યાયને વિશેષરૂપથી તર્કશાસ એટલા માટે કહે છે કે તેમાં પ્રમાણનું જ વિવરણ કરેલ છે. પ્રમેય પદાર્થીનું વિવરણ પ્રાચીન ન્યાય-શાસમાં અને વૈશેષિકદર્શન શાસમાં જે કર્યું છે તે જ માન્ય છે!

> यथास्थानं गुणोत्पत्तः, सुवैद्येनेव मेपजम् । बालाद्यपेक्षया देया, देशना क्षेत्रगाशिनी ॥१॥ गुणेनी ६८५ित वर्ता थे। अ पात्र भुक्ष्ण केम सारे। वैद्य तहनुरूण हवा आपे छे तेम आणा आहि पात्रानी अपेक्षाओं दुःभने। न.श धरनारी देशना आपवी कोर्धें अ. द्वांत्रिका]

મહાપાધ્યાયજીએ કરેલા ઉપકાર

[લેખિકઃ પૂ૦ સાધ્વી શ્રી. મંજીલાથીછ]

શ્રી. યશાવિજયછ મહારાજ જૈન આલમમાં શ્રી ઉપાધ્યાયછની ત્રંત્રાથી અતિ-પ્રસિદ્ધ છે. આ મહાપુરુષની આલપણથી જ કાઈ અજબ છુદ્ધિ હતી કે, તે જાણતાં સ્તષ્ધ અની જવાય. પાતાના છવનકાળમાં સ'સ્કૃત, પ્રાકૃત, હિંદી અને શુજરાતી આદિ સાષામાં હજારા શ્લાકપ્રમાણ શ્રંથાની રચના કરી, અનેક આત્માઓને પ્રતિષ્ઠાધ પમાડી, સેંકઠા પરવાદીઓને છતી, આ મહાપુરુષે શ્રી જૈન શાસનના ગૌરવશાળી વિજયધ્વજ ફરકાવ્યા છે, જે આજ સુધી સાહિત્યજગતમાં અલ્નમ રહેવા પામ્યા છે. તાકિંક રિશેમિણ:—

શ્રી જૈન શાસનના પરમ પ્રભાવક મહાપુરુપામાં (વર્ત માનમાં) છેલામાં છેલા ૨૫૦ વર્ષ ઉપર આ એક જ મહાન પરમ પ્રભાવક પુરુષ થયા છે. આ મહાપુરુષ એવા થયા છે કે, જેણે પાતાના છવનની બિલકુલ પરવા રાખ્યા વિના સાચા દિલ્હી જેટલા ઉપકાર કર્યો છે, તેટલા અત્યારે આપણને ઘણા જ લાલદાયક નીવઠચો છે. આજે પણ તેઓશ્રીનાં અનેક પુસ્તદેશ ઉપલબ્ધ છે. જે આપણે તેને મેળવવા તન, મન, અને ધનઘી ઉઘમ કરીએ, ને તેમના શ્રંથા વાંચી, લખી, આપણા છવનની અંદર તેએશ્રીનાં વચના ઇક્ષુરસની પેઠે ઉતારીએ, ને તેમનાં વચન પર વિધાસ રાખી અનુસરીએ, તા જ આપણે ખરેખર તેએશ્રીના શિષ્યા છીએ. બાદી તો ખાલી દિનિયા પર જેમ ઘણાય માણસા આવ્યા ને પરલાક ગયા તેની જ રીતે આપણે પણ રત્નચિંતામણે પામ્યા છતાં શુમાલ્યા જેલું ગણાશે. આથી આપણે એ મહાપુરુષનું છવન

અત મહાયુરુષની પૂર્વાવરઘાનું નામ જશવંતકુમાર હતું. જશવંતકુમારના જન્મ કન્હોહા નામના ગામમાં ધયા હતા. એ કન્હોહા ગામ ગૂર્જર દેશના અલંકાર તુલ્ય અહહિલપુર પાટણની નજીક કુલ્ગેર ગામ પાસે આવેલું છે. જશવંતકુમારના પિતાનું નામ નારાયણભાઇ હતું, અને માતાનું નામ સામાગદે હતું. અતે તેઓ હૈન વિલ્ક હતા. શ્રી હૈન શાસનથી સુમંસ્કારિત માતાપિતાના સુયાગે શ્રી. જશવંતકુમારને બાલ્ય વયમાં જ વરાગ્યની પ્રાપ્તિ થઇ હતી. આ આળકની માતાને પણ હૈનધમ પર એવી અલ્ય શ્રદ્ધા હતી દે, તેની કલ્યના પણ ન કરી શકાય. તેની માતાને એવા નિયમ હતા દે, 'સારામર સ્તાત્ર ' સાંભળા વિના અન્નપાણી પણ શ્રદ્ધ ન કરતું.

વાંચી. આપણે છવન તેલું ખને તેમ કરવા પ્રયત્નશીલ બનનું એઈએ.

એક વખત શ્રાવણુ માસના દિવસ હતા. આકાશમાં કાળાં ભમ્મર વાદળાં સપાટાળંધ દાહી રહ્યાં હતાં. ઉકળાટ પણ ઘણા જ હતા. વરસાદ જરૂર આવવા જ જોઈ એ, એવી આગાહી થઇ રહી હતી. એવામાં જ ભયંકર ગર્જનાએા થવા લાગી. કાન ફાંડી નાખે તેવા ગઢઢ ગઢઢ અવાજો થવા લાગ્યા. જાણે હુમણાં જ આકાશ તૂટી પહેરો. ઠંડા પવનના સુસવાટા થવા લાગ્યા અને વીજળી ચમક ચમક ચમકવા લાગી. આકાશમાં ઘનઘાર વાદળાં છવાઈ જતાં અધે ઠેકાણુ ધાળે દિવસે અધકાર વ્યાપી ગયા અને ઘડી એ ઘડીમાં તા એક કારમાં કડાકાની સાથે ધાેધમાર વરસાદ તૂડી પડચો. ચારે બાજુએ જળ બંબાકાર થઈ રહ્યું. જ્યાં જુએ ત્યાં પાણી જ પાણી. ત્રણ દિવસ થયા, પણ વરસાદ અધ રહ્યો નહિ, ખ'ધ રહે તેવાં ચિદ્ધી પણ જણાયાં નહિ, તે વખતે જશવંતકુમાર અમદાવાદમાં રહેતા હતા. તેમની ઉંમર ફક્ત સાત વર્ષની હતી. વરસાદ ત્રણ દિવસ સુધી લાગલાગઢ એકધારા ચાલુ રહેવાથી તેમની માતા પરમ પવિત્ર સ્તાત્ર સાંભળ્યા વિના ભૂપ્યા, તરસ્યાં ઘરની અંદર ખેસી રહ્યાં. ચાથા દિવસે જશવંતકુમારે વિનયપૂર્વંક પાતાનાં માતુશ્રીને નમસ્કાર કરીને પૂછ્યું કે, ' હે માતા ! ત્રણ દિવસ થયા શા માટે લાજન લેતાં નથી ? શા માટે ભૂખ્યાં સૂઇ રહા છા ? તમને શું દુ:ખ છે તે તા કહા. ' પુત્રનાં આવાં વહાલભર્યાં વચના સામળી માતાને એકદમ ઉમળકા આવ્યા. તેમણે એ લાહકવાયા પુત્રને હવ લેર છાતીસરસા ચાંપ્યા. ને કહેવા લાગ્યાં કે, 'હે પુત્ર! મારે એક એવા ગંભીર અભિગ્રહ છે કે 'ભક્તામર સ્તાત્ર 'નું શ્રવણ ન કરું ત્યાં સુધી ભાજન કરવું નહીં. ત્રણ દિવસથી વરસાદ અ'ધ રહ્યો નહિ અને મારી તબિયત પણ નરમ હાવાથી હું ગુરુજ પાસે જઇ શકી નથી, અને એ જ કારણે ભોજન **હેતી** નથી. '

પુત્રે કહ્યું: 'ઓહા, એમાં શું! તમે મને ત્રણ દિવસથી કેમ કહેતાં નથી? જે તમારે સ્તાત્ર જ સાંમળવાની ઇચ્છા હાય તા હું સંભળાવી દઉં.'

પુત્રનાં આવાં કાલાં વચન સાંભળી, માતા આશ્ચર્ય પામી બાલ્યાં કે, 'હે બેટા, ગપાટા હાંકતાં તો ઠીક આવહે છે. હજી તો ભાઇને એકઠા ઘૂંટતાં આવડતા નથી ને કહે છે કે, હું 'ભક્તામર સ્તાત્ર' સંભળાવું. વાહ જશાભાઇ! વાહ. દીકરા મારા બદુ જ હાંશિયાર લાગે છે.' એમ તેની માતાએ જસવંતકુમારની હાંસી કરી. પુત્ર વિનયપૂર્વ કન્મતાથી બાલ્યા કે, 'હે માતાજી! હું તદ્દન સાચું કહું છું. મને સ્તાત્ર જરૂર આવઠે છે. તમે આત્રા આપા તો હું બાલું, સાંભળા!' એમ કહી પુત્ર મધુર ક ઠે સ્નાત્ર બાલવા લાગ્યાઃ "ભક્તામરપ્રભુતમાલિમાસ્ત્રિપ્રભાલાં " આ પ્રમાણે પાતાના એટાને બાલતા તેઇ માતાને એકાએક આ અદ્ભુત બનાવ માટે આશ્ચર્ય ઘવા લાગ્યું અને મનમાં તરંગા આવવા લાગ્યા કે, હજી "જશા" નિશાળમાં ભણવા જતા નથી ત્યારે આટલું બધું શીખ્યા કચાંથી? આટલા નાના સુકામળ બાળક 'ભક્તામર' જેતું મહાન્ સ્તાત્ર કડકડાટ સુખેયો બાલી લાય, એ ખરેખર મહાન્ વિસ્મય પામવા જેવું છે. મનમાં આનંદ પામતી માતા પાતાના પુત્રને કહેવા લાગી કે, 'વહાલા બેટા! તને આ સ્તાત્ર આવડયું કપાથી?'

આ વચન સાંભળો, જરોા એક્દ બાલી ઊદયો કે, ' માતાજી એક દિવસે તમે મને તમારી સાથે ઉપાશ્રયે શુરુ પાસે દર્શન કરવા લઈ ગયાં હતાં, તે જ વખતે મેં આ સ્તાર સાંસ્તૃત્યું હતું, ત્યારનું મને યાદ રહી ગયું હતું.'

પોતાના ભાળકનાં આવાં અદભુત વચના ને સ્મરાષ્ટ્ર કાઇ એઇ માતાને પૃષ્ઠ આત્દ થયા. 'લક્ટામર' જેવું સંસ્કૃત કાવ્ય એક વખત સાંબળીને યાદ રાખનાર, પોતાના પુત્ર લવિષ્યમાં મહાન્ થયો, એવા વિચાર થવા લાગ્યા. વિચારા આવતાંની સાથે તેની છાતી ગજ ગજ લિછળવા લાગી, ને મનમાં અત્યંત આનંદ થવા લાગ્યા; માતાએ પોતાના બાળકના મુખેયી આ સ્તાત્ર સાંલળી અક્ષ્મ તપનું રૂડી રીતે પારછું કર્યું. એ પછી પણ પાછળથી ચાર દિવસ સુધી વરસાદ ચાલુ રહ્યાં; પરંતુ "જગ્રા" તેની માતાને આ સ્તાત્ર હંગાં સંભળાવતા અને તેમના અલગ્રહ પૃષ્ટું કરતા સાત્રમે દિવસે વરસાદ ગંધ રહેતાં "જગ્રા" અને તેની માતા ઉપાશ્રયે શરુદાંને ગયાં. એટલે શરૂમહારાજ તરત જ કહેવા લાગ્યા કે, 'હે સુશ્રાવિકા તમને તાં સ્તાત્ર સાંલળા વિના સાત દિવસના ઉપવાસ થયા હશે, નહિ વારુ!' તે સાંલળી, જશાની માતા બે હાથ એહી વિનયપૂર્વક બાલ્યાં કે, 'હે શુરુદેવ! આપની દૃપાથી હ' 'લક્તામર સ્તાત્ર' મારા આ નાનકડા સાત વર્ષના આળકના મુખેથી શવલુ કરતી ને મારા અલિશ્રહ પૂર્લ કરતી.'

આ સાંલળતાંની સાથે જ શુરુકેવની અમીલરી દૃષ્ટિ "જગા" ઉપર પહી. શુરુછ તેને લોઇ વિશ્મય પામી બાલ્યા કે, "શું આઠલા કુમળા બાળકે તમને એ સ્તાત્ર સંલળાયું?" મુદ્રાવિકાએ કહ્યું, 'લા, શુરુરાજ, આપના પસાયથી તેલું એક દિવસ નાપની પાસેથી તે સાંલળશું હતું, ત્યારથી જ આ સ્તાત્ર તેને કંકસ્ય થઇ ગયું હતું.' શુરુમહાનાજ તેા "જગા"ની આવી અદ્ભવત રાહ્તિ લોઇ તાલુબ થઈ ગયા. પાતાના મનના સમાધાન ખાતર તેમણે "જગા"ને સ્તાત્ર બાલવાની તરત જ આણા કરી. આણા ધતાંની સાથે જ શુરુતું વચન "તહિત્તિ" કહી "જગ્રા" આપ્યુંય સ્તાત્ર કડકડાડ બાલી ગયા. ત્યાર પછી શુરુમહારાજે બીલ લણા પ્રશ્નો પૂછ્યા, તેના પણ તેણે સુદર જવાબ આપ્યા. આ નાનકડા બાળકની આવી છુદ્ધિ લોઈ, શુરુમહારાજ અત્યંત્ત ખુશી થયા અને તેના માથે હાથ ફેરવીને શુધ આશીવાંક આપ્યા. આશીવાંક મેળવી જગ્રવતા ફુમાર અને તેના માલુશી ઘેર આવ્યાં. અહીં શુરુમહારાજ વિચાર કરવા લાગ્યા કે, બાળક બહુ જ તેજની લાગે છે. તેના મુખની કાંતિ ઉપરથી જ જણાય છે કે, તે બાળક લવિષ્યમાં ગ્રાપ્ટી કીર્તિ મેળવી નામના કાઢ્યો.

ગણિ નયવિજયછએ અમદાવાદના કેટલાક આગેવાના આગળ કહ્યું કે, 'તો " જો!" આલપણામાં આવિત્ર એક છુ કરે તો, તે ખરેખર શાસનના નેતા અને.' શ્રાવકોએ બીજે દિવસે તેની માતુશ્રીને એાલાવીને ખૂબ કપદેશ આપી, "જશા"ના કલાર માટે સારા પ્રમાણમાં તેની માતાને નીચે પ્રમાણે કહ્યું:—

'હે શુદ્ધ શ્રાવિકા, જો તારા પુત્રને ખાલ્યાવરથાથી જ ધર્મ શાસોનું જ્ઞાન આપવામાં આવે તો, તે ભવિષ્યમાં એક મહાન્ ધર્મો હારક પ્રભાવક પુરુષ થશે, કારણ કે તે બહુ યુદ્ધિશાળી છે અને તે પુત્ર તમારી કુષ્કોને દીપાવશે. માટે સંઘની વિનિત સ્વીનારી તમારા પુત્ર જશાને ગુરુમહારાજને અપંદ્ય કરો." જશાની માતા મૂળથી જ ધર્મિષ્ઠ એટલે મનની અંદર તરત જ વિચાર આવ્યો કે, જેને તીર્થ કરો પણ નમસ્કર કરે છે; તે જ સંઘ આજે જૈન શાસનને ઉજ્જવળ બનાવવા માટે મારા પુત્રરત્નની માગણી કરે છે; તા ખરેખર મારા પુત્રને મારે ગુરુમહારાજને અપંદ્ય કરવા જોઈએ; એમ વિચારી માતાએ ધર્મ યુદ્ધી પુત્રને અપંદ્ય કર્યો એટલે, સંઘે તેને ખૂબ ધન્યવાદ આપ્યા. પછી તા પંદિત શ્રી. નયવિજયજ મહારાજશીએ તે જશાને સં. ૧૬૮૮ માં અદ્યહિલપુર પાટણમાં જઈ ને દીક્ષા આપી. ગુરુમહારાજે તેનું નામ જશવિજયજી–યશોવિષ્યુ રાખ્યું. જશવત્વકુમારને પદમસિંહ નામે બીજા લઘુમાઈ હતા, તેમણે પણ પાતાના વડીલ ખંધુ સાથે દીક્ષા ગ્રહણ કરી, અને તેમનું નામ પદ્મવિજયજી રાખવામાં આવ્યું.

શ્રી. ઉપાધ્યાય મહારાજાએ ધર્માપદેશ અને વ્યાખ્યાનાદ્વારા સમાજમાં જાગૃતિ લાવવાના પ્રયત્ન કર્યો. તેઓશ્રીની વ્યાખ્યાન આપવાની રાક્ષી એટલી ઉત્તમ હતી કે, તે સાંભળતાં જ કાઇ પણ માણસ તલ્લીન થઈ જાય. ભાષાની સમજાવટ, પ્રસંગાચિત દાખલા– દલીલા, તત્ત્વજ્ઞાનના ઉપદેશ, અને શાન્ત રસના અદ્ભુત કાખૂથી શ્રોતાએ હાલવા લાગતા હતા. તેઓશ્રીનું ત્યાખ્યાન સાંભળવા માટે લાકા ઘણે દ્વરથી આવતા હતા અને વાહ વાહ ખાલતા.

એક દિવસ તેઓ જ્યાં સ્થંભન પાર્શનાથ ભગવાનનું તીર્થસ્વરૂપ ભવ્ય દેરાસર છે, એ ખંભાત નામે સુંદર નગરમાં આવ્યા. એક દિવસ વ્યાખ્યાનના સમયે એક વૃદ્ધ જેવા ડાસા સભામાં આવ્યા. તે ડાસાને દ્વરથી જેતાં જ શ્રી યશાવિજયછ મહારાજાએ તેમને નમસ્કાર કર્યા, એ જેતાં જ સભાની અંદર એઠેલા સર્વ જનાને અવનવા તરંગા આવવા લાગ્યા, અને અરસપરસ એકબીજાને ધીમે ધીમે કહેવા લાગ્યા કે આ બ્ખડી બારસ જેવા ડાસાને, આ મહાપુરુષે શા માટે નમસ્કાર કર્યો હશે ? પણ શ્રી. ઉપાધ્યાયજીએ તો તે ડાસાને સમ્માનપૂર્વ એસવા માટે આસન આપ્યું, પછી તેઓશ્રીએ શ્રોતાઓને જણાવ્યું કે, 'આ ઘરડા ડાસા મારા વિદ્યાગુરુ છે. કાશીમાં રહી મે' તેમની પાસે ન્યાય-વ્યાકરાયુના અભ્યાસ કર્યો હતા, તેમના હું મહાઝણી છું માટે તેમના યાગ્ય સત્કાર કરશા.'

ગુરુની આટલી સૂચના થતાં, ખંભાતના શ્રાવકાએ તરત જ કાળા કર્યો અને તે કાળા મિત્તર હજાર રૂપિયાના થયા. તે રૂપિયા એ ખ્રાહ્મણ પંડિતને દક્ષિણા તરીકે અપૈછ્ કર્યા. વિદ્યાગુરુ પાતાના શિષ્યનું આ સામશ્યે જોઈ ઘણા જ ખુશી ઘઈ ગયા અને શિષ્યને શુભ આશીર્વાદ આપી વિદાય થયા.

ખરેખર, આવા મહાત્મા અત્યારે કાઈ સ્થળે આપણા કમનસીએ મળતા નથી પરંતુ ને આપણે આવા મહાત્માનાં જીવનચરિત્ર વાંચી, લખી, તેઓશ્રીના એક સામાન્ય ગુલ પણ શક્ત કરીએ, તો ખરેખર આપણે સદ્દમાગી અની જઈએ; આકી આપણે તેઓ-શ્રીના નામે અત્યારે કીર્તિ મેળવીએ છીએ, અને તે ઘણી જ સારી વાત છે પરંતુ જે આપણે આપણી સાચી દાનત રાખી તેમના ગુણામાંથી એકાદ ગુણનું પાલન કરીએ તો જ આપણે આવા મહાન પુરુપાની નામના રાખી કહેવાય. ખરેખર, જે આપણે તેમના સાચા જ શિષ્યા હોઇએ, અને આપણને આપણા દેવ, ગુરુ અને ધર્મ દપર સંપૂર્ણ શ્રદ્ધા હોય તા આપણે તેઓશ્રીનાં વચનાને અનુસરી માયા, બૃદ, પ્રપંચ, હુચ્ચાઇ તેમજ દરેક ખરાબ વ્યસનોના ત્યાંગ કરવા જ જોઇએ.

શાઝાધાર સિવાયના બીજો એક પણ અક્ષર ઉચ્ચાર્યા સિવાય તંઓ શ્રીએ પોતાનું ભવલી ગૃપણું સાબિત કરી આપ્યું છે. તેમનાં રચેલાં રતવના આદિ એટલાં બધાં સ્રરળ, રસિક અને બાધપદ છે કે, આજે પણ આવશ્યક એત્યવંદનાદિમાં તે હવે પૂર્વક ગાઈએ છીએ. તેઓ શીની નાનામાં નાની કૃતિમાં પણ તકે અને કાબ્યના પ્રસાદ તરી આવે છે. આવા એક પ્રાસાદિક કવિ, સુક્તિમાર્ગના અનન્ય ઉપાસક, અખે હ સેવેગી, શુલુરતરતનાકર, નિબિઠ મિચ્યાત્વ ધ્વાંતદિનમણિ, પ્રખર જિનાણા પ્રતિપાલક અને પ્રચારક મહાપુરુષનું સ્મરલુ જૈનોમાં કાયમ રહે તે માટે આપણે જેટલા પ્રયત્ના શાય તેટલા પ્રયત્ના કાવા આવશ્યક છે. આ મહાપુરુષની સાચી બક્તિ તેમની કૃતિઓના પ્રચાર કરવામાં રહેલી છે. આ પ્રસંગે એક વાત ધ્યાનમાં રાખવા જેવી છે કે, આ મહાપુરુષની ફૃતિઓ ઘણી ગંભીર છે. શ્રી જિનાગમરૂપી સસુદ્રમાંથી ઉદ્ધરિત થયેલો છે, તેથી તેના રહસ્યના પૂરપૂરા પાર પામવા માટે આગમ શાસ્ત્રાના પારગામી ગીતાર્થ પુરુપોના ચરણેની રેવાના આશ્રય એ જ એક પરમ ઉપાય છે. આ મહાપુરુષની કૃતિઓના ગુરુપાના સરણેની રેવાના આશ્રય એ જ એક પરમ ઉપાય છે. આ મહાપુરુષની કૃતિઓના, સમ્યગૃફાન, સમ્યગૃફાને એ સામગ્ર આફિતરૂપી માણમાર્ગની આશ્રધનામાં ઉતરે તો સમ્યગૃફાન, સમ્યગૃફાન અને સમ્યગ્ર આફિતરૂપી માણમાર્ગની આશ્રધનામાં ઉતરે તો સમ્યગ્રફાન, સમ્યગૃફાન અને સમ્યગ્ર આફિતરૂપી માણમાર્ગની આશ્રધનામાં ઉતરે તો સમ્યગ્રફાન, સમ્યગૃફાન અને સમ્યગ્ર આફિતરૂપી માણમાર્ગની આશ્રધનામાં ઉતરેત્રા પ્રગતિ ધાય અને આત્માના અનંત સખ્યાસારમાં નિરાલાધ આનંદ પ્રાપ્ત શાય.

ખરેખર, આ મહાન્ પુરુષતું છવનચરિત્રં જેટલું ક્ષ્મીએ તેટલું એાર્ષ્ટું છે; પરંતુ અત્યારે મારી જહેળુદ્ધિથી વધારે ક્ષમી શકાય તેમ નથી. માસે, એ માસે વારંવાન આવા મહાન્ પુરુષના તથા જૈનધર્મને ક્ષત્રતા નિંગ થા કાઢી, ઈનામી યાળનાએ કરી તન, મન અને ધનથી શાસનની જેટલી ઉત્તિ થાય તેટલી કરવા પ્રયત્નશીક રહેતું જોઈ એ.

અમર યશાવિજયજી

[લેખક : પં. શ્રી. દ્લસુખ માલવિણયા]

ભારતીય દર્શ નાની વિભિન્ન પર પરાચાના નિર્માણમાં ખાસ એક વ્યક્તિના નહિ પણ સરખા વિચારા ધરાવનાર એક વર્ગની ખુન્દિ કાર્ય કરે છે. તે તે વર્ગમાંની કાઇ એક વિશેષ વ્યક્તિ જ્યારે તે વર્ગના વિચારાને વ્યવસ્થિતરૂપ આપે છે ત્યારે તે તે પર પરા તે તે વ્યક્તિ વિશેષને નામ પ્રસિદ્ધિને પામે છે. પણ તેના અર્થ એ નથી કે તે વ્યક્તિએ તે તે પર પરાને વ્યવસ્થિત કરી એટલે પછી બીજાઓએ કશું જ કરવાનું રહેતું નથી.

'ભારતીય ન્યાયદશ'નને ગીતમે વ્યવસ્થિત કર્યું' એટલે તેનું દર્શન ત્યાં જ સમાપ્ત થાય એમ નથી. બીજું ગૌતમમાં જે મૂળ વિચારા વ્યવસ્થિત થયા છે તેનું સમર્થન કરનારા આજ પછુ વિદ્યમાન છે અને એ જ હકીકત ભારતીય બધાં દર્શના વિષે કહી શકાય.

ભગવાન મહાવીર જૈન ધર્મ કે દર્શનને જે વ્યવસ્થિતરૂપ આપ્યું તેના વિષે પણ ઉકત ન્યાયે કહી શકાય કે તેમાંનું અધું તેમનું પાતાનું હતું જ નહિ પણ સરખી વિચાર-ધારા અનુસાર એક વર્ગના વિચારાનું પ્રતિબિંળ તેમની વ્યવસ્થામાં હતું. જે વસ્તુ એક વ્યક્તિની હોય છે, તે તેના મૃત્યુ પછી ભુલાઈ જાય તેવા સંભવ છે પણ જે વસ્તુ એક વર્ગની હોય છે તેના આત શીઘ આવતા નથી. એ જ કારણ છે કે ભારતીય દર્શનાની પરંપરા લંખાય છે અને તેને અનુસરનાર એક વર્ગ હોય છે. પશ્ચિમમાં એથી ઊલટું બને છે. ત્યાં જે કાર્શનિકા થયા છે તે માટે ભાગે વૈયક્તિક દર્શનને મહત્ત્વ આપે છે. પરિણામે તે તે દર્શનિકાની પરંપરા બહુ લંખાતી નથી. જેને કંઈ કહેવું હાય છે તે પૂર્વ દાર્શનિકના સમર્થનમાં નહીં પણ તેના ખંડનમાં જ માટે ભાગે કહે છે. પરિણામે પ્લેટા કે કાન્ટની પરંપરા ઘડાતી કે લંખાતી નથી પણ તેઓ એકલા અડ્લા જેવા રહી જાય છે.

અપાવી પરિસ્થિતિમાં ભારતીય દશે નામાં ટાઈ પણ દાર્શ નિકને સ્વતંત્ર દાર્શ નિકનું પદ મળતું સંભવિત નથી. પણ એના અર્થ એ પણ નથી કે ભારતના દાર્શ નિકાને પાતાનું કશું જ દેવાનું પણ હાતું નથી.

દિહનાગ, ધર્મકીર્તિ, વાત્સ્યાયન, ઉદ્યોતકર, શાંકરાચાર્યં, રામાનુજ, વાચસ્પતિ, કુમારિલ, પ્રશસ્તપાદ જેવા મહાન ભારતીય દાર્શનિકાએ કાઈ નવું દર્શન ભલે ન સ્થાપ્યું હાય, પરંતુ પાતાનાં દર્શના માટે જે કંઈ તેમણે કર્યું છે, તે એક સ્વતંત્ર દાર્શનિકના કાર્ય કરતાં જરા પણ ઊતરતું નથી. તે જ પ્રમાણે નૈન દર્શન વિષે પણ કહી ગ્રકાય દે

સિહસેન, સમન્તલદ્ર, જિનલદ્ર, અકલક, હરિલદ્ર, વિદ્યાનંદ કે યશાવિજયછ જેવાઓએ જૈન દર્શનના નિરૂપણમાં જે ફાળા આપ્યા છે તે તેમને સ્વતંત્ર દાર્શનિકા તરીકે લહે યશ ન અપાવે પરંતુ તેમનાં કાર્યોનું મહત્ત્વ તેથી કંઈ એાછું થતું નથી. તેનાં કારણાના વિચાર પણ અહીં થાંડા કરી લેવા એઇએ.

ન્યાયદર્શન કે વૈશેષિકદર્શન લેદમૂલક દર્શન છે અને તેને મતે આત્મા જેવા પદાર્થો નિત્ય છે. તેથી વિપરીત વેદાંતમાં અલેદને પ્રાધાન્ય છે. જ્યારે બીદ્ધ દર્શનમાં બધી જ વસ્તુઓ ક્ષષ્ટિક—અનિત્ય છે. ગૌતમ કે કુષ્ટાદે લેદની સ્થાપનામાં જે દ્રલીલા આપી હાય તેનું નિવારણ વેદાન્તે કરવું જ જોઇએ અને નિત્યની સ્થાપનાનું ઉત્થાપન બૌદ્ધોએ કરવું જ નોઇએ. આ પરિસ્થિતિમાં ભારતીય દર્શનામાં પારસ્પરિક ખંડનની પરંપરા ચાલે એ સ્વાલાવિક છે. એથી જ આપણે જોઇએ છીએ કે ન્યાયસૂત્રમાં પાતાના સમય સુધીમાં ન્યાય પર પરા સામે અન્ય પર પરામાં જે આશેપા થયા હતા તે બધાના ઉત્તર આપવાના પ્રયત્ન થયા છે અને પાતાની માન્યતાને નવી દક્ષીલાથી દઢ કરવામાં આવી છે. ન્યાયસૂત્રકાર પછી જે મોંહ વિદ્વાના થયા તેમણે ન્યાયસ્ત્રની સ્થાપનાને ઉત્થાપી હતી. તેના ઉત્તર વાત્સ્યાયને આપીને ન્યાયદશ નને દઢ કરવાના પ્રયત્ન કર્યો. પણ તેતું ખંડન દિલ્નાગે કર્યું અને ભી હપક્ષને સ્થિર કર્યો. આ રીતે ન્યાય અને બી હોતું જેમ વાગ્યુ હ થયું છે તેમ બીજા દર્શનાતું પણ પરસ્પર સુદ્ધ થયું છે. પ્રત્યેક દર્શનના પ્રસુખ વિદ્રાનતું એ કર્લાવ્ય મનાસું છે કે તેલું પાતાના સમય સુધીમાં તે તે દર્શન વિષે જે આક્ષેપા થયા હાય તેનું નિવારલ કરીને નવી દક્ષીદ્યા આપી પાતાના પક્ષને દઢ કરવા જોઈએ. આથી પાતાના પક્ષને દઢ કરવાનું કાર્ય કાઈ પણ નવી સ્થાપનાથી જરા પણ એાછા મહત્ત્વનું નથી. એ આપણને સહજમાં સમલાઈ લાય છે. આ વસ્તુસ્થિતિના પ્રકાશમાં વાચક યશાવિજયછના જૈન દર્શન અને તે દ્વારા ભારતીય દ્વાર્થનામાં જે કાળા છે તેના જ્યારે વિચાર કરીએ છીએ ત્યારે તેમન મહત્ત્વ આપણી આગળ ઊપસી આવે છે.

આશાર્ય મંગેશે ભારતીય દર્શનમાં નવ્ય ન્યાયની સ્થાપના કરી અને વિચારને વ્યક્ત કરવાની એક ચાકસાઈ ભરેલી પ્રહ્યાલીના આવિલાવ કર્યો. ત્યાર પછી બધાં દર્શનાને એ નવી શૈલીના આશ્રય લેવા વહ્યો છે. એનું કારણ એક જ છે કે કાઈ પણ વિચારને સ્પષ્ટ અને ચાક્કસરૂપમાં મૂકવામાં એ શૈલી જે પ્રકારે સહાયક બને છે તેવી સહાયતા પ્રાચીન પ્રણાલીમાં મળતી ન હતી. આથી શાસ્ત્રકારોને પાતાના વિચારા એ શૈલીના આશ્રયે વ્યક્ત કર્યા સિવાય ચાલે તેમ ન હતું. આજ કારણ છે કે વ્યાકરણ અને અલંકાર જેવા વિષયામાં પણ તેના આશ્રય લેવામાં આવ્યા છે. એ પછી તા બધાય દર્શના તેના આશ્રય લેવામાં આવ્યા છે. એ પછી તા બધાય દર્શના તેના આશ્રય લે તેમાં કશી જ નવાઇ ન લેખાય. પરંતુ એ શૈલીના ચારસા વર્ષના પ્રચલન છતાં જેન દર્શનમાં એ શૈલીના પ્રવેશ થયા ન હતા. ચારસા સાહાચારસા વર્ષના એ વિકાસઘી જેન દર્શન અને જૈન ધર્મ સંખંધી સમસ્ત સાહિત્ય સાવ વંચિત હતું. ભારતીય સાહિત્યના અધા શ્રેત્રે એ શૈલીના પ્રવેશ થયા છતાં પણ જૈન સાહિત્યમાં એ ન પ્રવેશી તેમાં જૈના-

ચાર્યોની શિથિલતાને જ કારણ માનલું જોઈ એ. કારણ, જો પાતાના શાસને નિત્યનૂતન રાખલું હોય તો જે જે અનુકૃલ કે પ્રતિકૃલ વિચારા પાતાના સમય સુધી વિસ્તર્યા હાય તેના યથાયાગ્ય રીતે પાતાના શાસમાં સમાવેશ કરવા આવશ્યક છે. અન્યથા તે શાસ બીજા શાસ્ત્રાની હરાળમાં ઊલું રહી શકે જ નહીં. એ ચારસા સાઢાચારસા વર્ષના વિકાસના સમાવેશ એકલે હાથે વાચક યશાવિજયજીએ જેનશાસમાં કર્યો છે. તેમના આ મહાન કાર્યના જ્યારે વિચાર કરીએ છોએ ત્યારે તેમની પ્રતિભાને નમન કર્યા વિના છૂટકા નથી ઘતા. તેમણે અનેક વિષયાના ગ્રંથા લખ્યા છે પણ તે ન જ લખ્યા હાત તા પણ તેમણે જે જૈન દર્શનને નન્ય ન્યાયની શેલીમાં મૂકીને અપૂર્વ કાર્ય કર્યું છે તેને લઇને તેઓ અમર થઈ ગયા છે.

અહારમી સહીમાં ઉપાધ્યાયછ મ. શ્રી. યશાવિજયછએ જે કાર્ય કર્યું તે પાછું ત્યાં જ અટકી ગયું. ત્યાર પછી ભારતીય દર્શનામાં પછુ કશા વિશેષ વિકાસ ઘવા નથી જે હાલમાં વીસમી સહીના પૂર્વા માં થયા છે. હાં. રાષાકૃષ્ણુ જેવાએ પશ્ચિમનાં દર્શનાના અભ્યાસ કરીને પૂર્વ અને પશ્ચિમના સમન્વય કરતું નૂતન વેદાંત દર્શન આપ્યું છે અને એ રીતે ભારતીય દર્શનામાંના વેદાંત પક્ષને અઘતન અનાવવાના પ્રત્યન કર્યો છે. પરંતુ આધુનિક દર્શન શાસ્ત્રમાંથી શાદ્ય કે ત્યાન્યના વિચાર કરનાર હજી કાઈ જૈન દાર્શનિક પાકચો નથી. એ ન્યાં સુધી નહિ પાકે ત્યાં સુધી વાચક યશાવિજયછ જૈન દર્શન વિષે અંતિમ પ્રમાણુ રહેશે, પરંતુ વાચક યશાવિજયછના આત્માને એથી સંતાપ ભાગ્યે જ યાય. તેમણે અન્યત્રહસી જેવા શ્રંધને દશમી સહીમાંથી બહાર કાઢીને અહારમી શતાન્યદીના બનાવી દીધા તે તેમના એ અન્યત્રહસીના વિવરસૂને ન્યાં સુધી કાઈ વીસમી સંદીમાં લાવીને ન મૂકે ત્યાં સુધી એમના આત્મા અસંતુષ્ટ જ શા માટે ન રહે? જૈન સમાજ તેમના સારસ્વત સત્ર નિમિત્તે એ સુકાઈ ગયેલા વિદ્યાસીતને ફરી સજીવન કરશે તો તેની બક્તિ સાચી અને મૃહયવાન ગણાશે.

नूनं मुमुक्षवः सर्वे, परमेश्वरसेवकाः । दूरासम्मदिमेदस्तु, तद्भृत्यत्वं निहन्ति न ॥

સલળા મુમુસુ ચ્યાત્માએ નિશ્વયે કરીને પરમેશ્વરના સેવકા છે. દૂર, નિક્ટ ચ્યાદિના બેદ તેમના સેવકપણાને જરા માત્ર હરકત કરતા નથી.

परमालापर्यावदातिका]

[श्री. यशाविक्रयळ

ન્યાયાચાર્યને વંદન

[શે. ત્રાે. દ્વારાલાલ ૨. કાપદિયા જેમ. એ.]

કન્દાહ (કમ્દાહ) ગામને જન્મદ્વારા ગૌરવાંકિત કરનારા, વેપારી નારાયઘની પત્ની સીભાગ્યદેવીની કૃષ્ટિને દિપાવનારા, પદ્મસિંહને સહાદરપદે સ્થાપનારા, પ્રારં નયવિજયને દ્વારે પ્રતિએષ પાસી પાટલમાં વિ. સં. ૧૬૮૮ માં મુવાનીના પ્રવેશ પહેલાં જ પ્રવલ્યા લહુલુ કરીને જગાવત મટીને 'યગ્રાવિજય' અનનારા, વિજયદેવસૂરિ પાસે વહી દીક્ષા દ્દેનારા, વિ. સં. ૧૬૯૬ માં 'અષ્ટાવધાની' તરીકેની નામના મેળવનારા, સાતેક વર્ષ પછી ઓરંગ્રેયના સુષા મહાળતખાનની સમકા ચઢાર અવધાન કરી એને આનંદિત કરી અને આશ્રયંચક્તિ કરનારા, પાતાના શુરૂ નથવિજયની સાથે કાશી જનારા, ત્યાં ત્રહ વર્ષ રહી શાહ ધનજ શૂરાના સદ્દશ્વ્યની સહાયતાથી એક લદારક પાસે ન્યાયાદિ વિવિધ અતૈત દર્શનોના સતત અને સળળ અભ્યાસ કરનારા અને એ ઝાનના જૈનાગમાં સાથે સુલગ સુમન્વય સાધનારા, એક સંન્યાસીને વાદમાં પરાસ્ત્ર કરી " ન્યાયવિશારદ" પદવી પ્રાપ્ત કરનારા, આશ્રામાં ચાર વર્ષ વસી તર્કશાસના વિશિષ્ટસાધ મેળવનારા, ' વીસસ્થાનક ' તપ કરી સંવમને ગ્રાભાવનારા, વિજયપ્રભસ્રિના વસ્ક ક્રેસ્ત વિ. સં. ૧૭૧૮માં વાચક (ઉપાધ્યાય) પશ્ચીથી વ્યલકૃત અનનારા, કૌન જગતમાં નવ્ય ન્યાયના શ્રી ત્રણેશ માંઠનારા, મુંસ્કૃત અને પ્રાકૃત ભાષામાં તેમજ ગુજરાદિ લાકગિરામાં મહામૃશ્યશાળી અનેકવિધ વ્યાગર વ્યક્રીમા કૃતિએ સ્થનારા, ત્યાયાચાર્યનું પદ પ્રાપ્ત કરનારા, " લઘુ હરિસદ્ર "નું भानवंतु जिर्इ धरावनार, "हितीय छेभंचन्द्र " तरीहे सम्भानित यनारा, त्रिविध स्थवि-रताने वश्नारा, इयाध्याय विनयविक्यमञ्जिना विश्वास-पात्र अननारा, तत्त्वविकय स्नाहि શિષ્યાથી ગાલનારા, વિ. સં. ૧૭૪૩ માં ક્લાઈમાં પાક્ટ વર્ષે સ્વગે સંચરનારા, અને એ જ નગરીમાં વિ. મેં. ૧૭૪૫ ની પાદુકા સ્થાપનાદ્વારા ચિરંજીવ અનનારા યુજેરહીરક, શાસનદીપક, સત્યગવેષક, નિર્ભય અને સમર્થ સમાદાચક, સમયવિચારક, " રે " પદના પ્રસ્થાપક, ચાેગવિશાસ્ક, પ્રતિભાશાહી, ગુણાનુંગ્રી, સ્યાદ્વાદી, સાહિત્યસ્ત્રામી અને તાકિક– શિરાયછિ યગ્રાવિજયગિલને સાદર અને સાનન્દ ટાેટિશઃ વંદન.

> अमः शास्त्राव्ययः सर्वो, यन्द्रानेन फलेग्रहिः। व्यातव्योऽयमुपास्योऽयं, परमातमा निरंत्रनः ॥ शास्त्र शंभधी स्थोः परिश्रंप केमतुं तान वश शास्त्र श्गवाद्या सने छे ते केश निरंत्रन परमात्मा ल भ्यान अत्य शाष्ट्र नथा ६पासना अत्य शाष्ट्र छे. गण्यक्यक्षिक्रक्षिः]

તાકિલ્ક-હરિયાળી

[સ્વાપત્ત વિવરણ સહિત] [લે. પ્રાે. હીરાલાલ ૨. કાપડિયા એમ. એ.]

> કીતિ મધ્યસ્થ ! તારી અનેરી કરે ક્લંકિત શાને ₹ ? રક્ષ રક્ષ મુજ અનુજ બધુને વિનવું છું હું કંઠી રે.-૧ વિનતિ સ્વીકારી અંતઃસ્થે ધાર્યો એને શીર્ષે અગ્રિમ વશે કર્સ સમથ[્]ન પ્રસરે શ્લાઘા વિશ્વે રે.-૨ વગી એના રાચ્યાે માથે મૂકી દાેપી રે, બૂલથી દં'ડા ઝાલી સત્વર આવી મળતાે રે.-3 વિજયપતાકા 4242 **क्टर**के તાર્કિકકેશ નામે ₹: એની વીણા ગુજેરી સંસ્કૃત સ્વાંગ સછને રે.-૪ નવ્ય ન્યાયની કીધી <u>પ્રતિષ્કા</u> ત્રીન જગતમાં જેદો રે; ક્ષરિયાળી એ વાચકની व्या રચી રસિકના નંદે રે.~૫

विवर्णु

હે મધ્યસ્થ ! તારી અક્લુત કીર્તિ'ને તું શા માટે કલંકિત કરે છે ? મારા પછી જન્મેલા મારા બાંધવને તું અચાવ, અચાવ. આ પ્રમાણેની વિજ્ઞપ્તિ કંકી એટલે કંકસ્થાની વ્યાંજન-પ્રસ્તુતમાં 'ફ' કરે છે.

આ હરિયાળીના ઉકેલનું સૂચન 'કીર્તિ' શબ્દથી કરાયું છે. 'ક્'ના અનુજ તરીકે ખ્યી ક્સુધીના વ્યંજના વર્ણુવી શકાય. આ પૈકી એકને મધ્યસ્થ અર્થાત્ અંતઃસ્થ ગળી જવા માગે છે. એ એઇ 'ક'ઠી' કહે છે કે તને મધ્યસ્થને આ શાહો નહિ. ૧

પ્રથમ પદ્યગત 'મધ્યસ્થ' 'અંતઃસ્થ' સમજવાના છે એ વાત બીજા પદ્યના પ્રારંભ વિચારનારને ઝડ રકુરે તેમ છે. અંતઃસ્થ તરીકે યુ, રૃ, લ્ અને વ્ એ ચાર અક્ષરા સુપ્રસિદ્ધ છે. આ પૈકી એકને '્' તરફથી વિજ્ઞપ્તિ કરાઇ છે કે મારા એક બધુને તું ગળી ન જતા—તારા પેડમાં સમાવી ન દેતો. આ સાંભળી એ અંતઃસ્થ એ વ્યંજનને પાતાને માથે સ્થાપે છે. આ ઉપરથી એ અંતઃસ્થ તે 'ય્' છે અને એણે ગળી જવા ધારેલા, પરંતુ આખરે મસ્તકે સ્થાપેલા અક્ષર તે 'ગ્'ના અંગ છે એ વાત ફલિત થાય છે અને એટલા પ્રતો હરિયાળીના ઉકેલ થાય છે.

સવે વર્ણોમાં આ અગ્રિમ ગણાય છે. એ આ 'ય્'ના સત્કૃત્યનું સમર્થન કરે છે અર્થાત્ 'ય્' સાથે ભળી જાય છે. આમ 'ય' એનું રૂપ બને છે. વિશ્વમાં કીર્તિ પ્રસરે છે એ દ્વારા હરિયાળીમાં ગુંધાયેલા નામની શરૂઆત 'ય'થી થાય છે એની પ્રતીતિ કરાવાઈ છે, કેમકે 'યશ' એ શ્લાઘાના પર્યાય છે. ર

'ય્' તાલવ્ય છે. આવા એક તાલવ્ય તે 'શ્' છે એ રાજી થવાથી 'ય'ની પાસે દાહતા દાહતા આવે છે. આવતી વેળા એ, આજે જેમ કેટલાક જીવાનિયાએ અને કાઈ કાઈ વાર વૃદ્ધો પણ માશું ઉઘાડું રાખી કરે છે તેમ ન કરતાં માથે દાપી ધારણ કરે છે. અહીં મેં 'માત્રા 'ને 'દાપી ' કહી છે. એવી રીતે કાનાને 'ઊ'ધા રાખેલા દ'દા ' કહ્યો છે. આ ણે બાબતના 'શ્' સાથે મેળ સાધતાં 'શા' રૂપ નિષ્પન્ન થાય છે, 3

ચાથા પદાના પાર લ ' વિજય 'થી થાય છે. એની પતાકા ચારે ખાજુ તાર્કિકના નામે ક્ર કે છે. આથી ' યશા ' સાથે વિજયનું જેડાણ અભિપ્રેત છે એમ સ્ચવાયું છે અને એ નામ તાર્કિકનું હોલું જોઇએ એમ કહી એ સાચું છે કે કેમ તેના નિલ્ય કરવાનું સાધન પૂરું પડાશું છે.

તાર્કિક યશાવિજયગણિએ દ્રવ્યશુદ્ધપર્યાયના રાસ રથી એને સવાપન્ન બાલા-વળાધથી વિભૂષિત કર્યો છે; આના ઉપયાગ દ્રવ્યાનુયાગતક છુાની રચનામાં કરાયા છે એ બાબત મે ચાથા પદ્મની બે અંતિમ પંક્તિમાં આલંકારિક રીતે રજ્ કરી છે. યશાવિજયજીની કૃતિને 'વીલું ' કહી છે, અને એને આધારે ભાજસાગર દ્વારા યાજાયેલી કૃતિ સંશ્કૃતમાં હાવાથી એને-એ વીલુંને સંશ્કૃત સ્વાંગ સજેલી વલુંવી છે. ૪

સુત્ર પાઠક તા આટલેથી જ હિરિયાળીના પૂરેપૂરા ઉઠેલ કરવા સમર્થ બને છે તેમ છતાં એ નામ જૈન જગત્માં નવ્ય ન્યાયના શ્રી ગણેશ માંડનારા એક ઉત્તમ વાચકનું છે એ વાત પાંચમા પદ્યમાં સ્પષ્ટપણે કહી રહીસહી શંકાનું ઉન્મૂલન કરાશું છે. અંતિમ પંક્તિ આ હિરિયાળીના ચાજકના-મારો સ્વલ્પ પશ્ચિય પૂરા પાઠે છે, મારા સફગત પિતાના નામનું હોતન કરે છે. પ

વાચક જશનું વંશવૃક્ષ

[લે. ત્રા. હોરાલાલ ૨. કાપહિયા એમ. એ]

જૈન શાસનની વિજયપતાકા કરકાવનારાઓમાંના એક અગ્રગણ્ય પ્રાતઃસ્મરણીય મુનિવર્ય તરીકે 'ન્યાયવિશારદ' 'ન્યાયાચાર્ય' ઉપાધ્યાય ઘશાવિજયગિલનું નામ ખૂબ જાણીતું છે. એમણે પાતાની કેટલીક ૧ગુજરાતી કૃતિઓમાં પાતાના 'જશ' એવા નામે ઉલ્લેખ કર્યો છે. ઉપાધ્યાય વિનવિજયગિલ એ વિ. મં. ૧૭૩૮ માં 'શ્રીપાલ રાજાના રામ' રચવા માંડયો હતા, એના છેવડના ભાગ આ ન્યાયાચાર્યે એ ગણ્રિ કાળધર્મ પામતાં પૂર્ણ કર્યો છે. એમાં એમણે પાતાને અંગે નીચે મુજબના ઉલ્લેખ ચાથા ખંડની બારમી હાળના અંતમાં કર્યો છે:—

"વાણી વાચક જસતણી, કાઇ નયે ન અધૃરી રે. ''

આ "વાચક જશ" તે 'ન્યાયાચાર્ય' જ છે. એ વાત આ રાસની અંતિમ ઢાલમાં એમણુ પાતાના જે પરિચય આપ્યા છે તે ઉપરથી ક્લિત થાય છે. અહીં એમણે કહ્યું છે કે— "શ્રી તયવિજયવિદ્યુધપયસેવક, મુજસવિજય ઉવજ્ઝાયાછ."

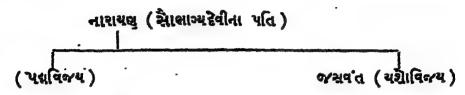
આમ એએ પોતાને 'જસવિજય' પણ કહે છે. 'રજસવિજય' નામની એક બીજી પણ વ્યક્તિ થઇ છે અને એમણે ધર્મધાયસ્તિએ ૩૨ ગાયામાં રચેલી લાગાનલિયાના આલાવેઓ ધ વિ. સં. ૧૬૬૫ માં રચ્યા છે. આ બાલાવેઓ ધના કર્તાના જ 'ન્યાયાયા ય' તરી કં 'પ્રતિમાશતક'ની પ્રસ્તાવનામાં તૈનાચાર્ય શ્રી. વિજયપ્રતાપસ્તિએ વીર સંવત્ ૨૪૪૬માં ઉલ્લેખ કર્યો હતા અને ત્યારબાદ એવા ઉલ્લેખ 'જંન સ્તાત્ર સંદાહ' (ભા. ૧)ની પ્રસ્તાવના (પૃ. ૯૦)માં પણ કરાયા છે, પરંતુ એ વાત વિચારણીય જણાય છે.

તત્ત્વાર્થ સૂત્ર ઉપર ૮૦ના રચનારનું નામ પણ થશાવિજય છે, પણ પં. મુખલાલ વગેરએ એમને ન્યાયાચાર્યથી ભિન્ન ગણ્યા છે, તેમ છતાં એ ૮૦નાની દાઘપાથીએ! તપાસવી તોઈએ જેથી આ પ્રકારના નિર્ણયને અંતિમ ગણવામાં કશી દરકત છે કે કેમ તે વિપે ક્રીથી વિગાર કરવાના રહે નહિ.

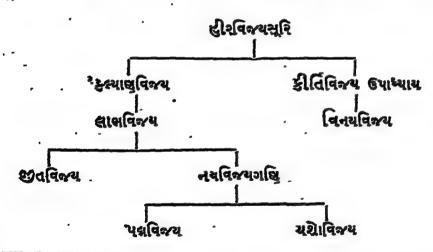
ય. એમની કેટલીક પાઇવ કૃતિઓની રૂપરેખા 'પાઇવ (પ્રાકૃત) ભાષાએક અને સાલિત્ય માં આલેખી છે, ત્યારે સંસ્કૃત કૃતિએક વિષે મેં 'જૈન સાહિત્યના સંસ્કૃત કૃતિના મં નામના પુરત-કૃષ્ઠા વિચાર કર્યો છે.

ર. દીરપ્રશ્નની એક દાયપાયો વિ. સં. ૧૧૫૨ માં લખાયેલી મહે છે. આ દીરપ્રશ્નમાં એક પ્રશ્ન કારતું નામ ' યશાવિજયત્રબુ ' એમ અપાયેલું છે.

ન્યાયાચારે પાતાની વિવિધ કૃતિએામાં પાતાને નયવિજયના શિષ્ય અને પદ્મવિજયના સહાદર તરીકે એાળખાવ્યા છે. 'સુજસવેલી' પ્રમાણે ન્યાયાચાર્યના પિતાનું નામ નારાયણ અને તેમની માતાનું નામ સૌશાચદેવી છે. એ હિસાબે સાંસારિક પશે એમનું વંશવૃક્ષ નીચે સુજબ દર્શાવી શકાયઃ—



ન્યાયાચારે ' પ્રતિમાશતક ' ઉપર સ્વાપત્ત વૃત્તિ રચી છે અને એના અંતમાં પાતાના 'ગુરુ, પ્રગુરુ વગેરેના પરિચય આપ્યા છે. અહીં એમણે હીરવિજયસ્રિયી શરૂઆત કરી છે. એમના પછી એમણે કસ્યાણવિજયના હૃદ્ય કરી, એ ક્લ્યાણવિજયના શિષ્ય તરીકે હ્યામવિજયના નામના નિર્દેશ કર્યો છે. એમના એ શિષ્ય તરીકે છતવિજય અને નય-વિજયના નામ આપ્યાં છે અને એમના ચરછુકમળના આશ્રય હેનાર તરીકે પાતાના નિર્દેશ કર્યો છે. આ પર'પરાની સાથે સાથે " શ્રીપાલ રાજાના રાસ" નામની કૃતિમાં એમણે વિનયવિજયગણિના જે પરિચય આપ્યા છે તેના વિચાર કરતાં એમનું વ'શવૃક્ષ નીચે મુજબ રજ્ય કરી શકાય:—



૧. આતી તોંધ મેં " ન્યાયાચાર્યને વંદન " એ શીર્યંક મારા લેખમાં લીધી છે. એમાં મેં એમની સ્ત્રાત્મક છવનરેખા આલેખી છે. જુએા : આ શ્રંચતું પૃષ્ક : ૬૮

ર. એમના પરિચય માટે લુઓ જે. ગૂ. ક. (સા. ૨. પૃ. ૨૦-૨૧).

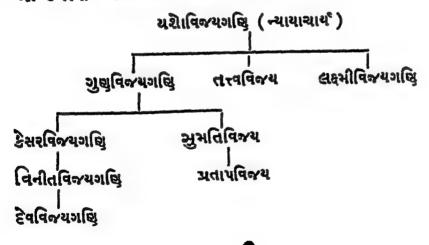
a. એમએ ' વૈરાદ ' નગરમાં 'ઇન્દ્રવિદાર' નામે રચાયેલા પ્રાસાદા પૈકી પાર્શ્વનાય-મ દિરની પ્રશસ્તિ રચી કે.

અમ તે એમની ગુરુપર'પરાની હકીકત ગણાય. એમના શિષ્ય પ્રશિષ્ય વગેરેનાં નામ માટે તે 'પ્રતિમાશતક'ની ઉપશું કત પ્રસ્તાવનામાં 'આઠ દૃષ્ટિની સન્નઝાય ' અને એના ટેળ્ળાને લિપિબદ્ધ કરનાર દેવવિજયે પુષ્પિકામાં કરેલા ઉલ્લેખની જે નેંધ લેવાઈ છે તેને ઉપયોગ કરવા ઘટે. એ ઉલ્લેખ ઉપરથી નાણી શકાય છે કે ઘશાવિજયગણિના એક શિષ્યનું નામ ગુણવિજયગણિ છે. એમના શિષ્ય કેસરવિજયગણિ છે. એમના શિષ્ય વિનીતવિજયગણિ છે અને એમના શિષ્ય દેવવિજયગણિ છે. આ દેવવિજયગણિએ વિ. સં. ૧૭૯૬ માં ઉપશુંકત સન્નઝાય લખી છે.

'જૈન ગુર્જર કવિએ ' (લા. ૨. પૃ. ૨૨૪–૨૨૭) માં તત્ત્વવિજયના ઉદલેખ છે. અહીં એમણે વિ. સં. ૧૭૨૪ માં રચેલ "અમરદત્ત મિત્રાનંદના રાસ" અને " ચાવીશી (ચતુવિ'શતિ જિનભાસ)" એ છે કૃતિની નાંધ લીધી છે. આ તત્ત્વવિજયે અહીં પાતાને નયવિજયના શિષ્ય વાચક જસવિજયના શિષ્ય તરીકે એાળખાવ્યા છે. આ ઉપરથી ન્યાયાચાર્યના એક અન્ય શિષ્યનું નામ તત્ત્વવિજય હતું એ જાણી શકાય છે. વળી, અહીં (પૃ. ૨૨૭ માં) તત્ત્વવિજયના ભાઈ તરીકે લક્ષ્મીવિજયગણિના ઉદલેખ છે.

•યાયાચાર્ય 'સીમ'ધરસ્વામીનું સ્તવન ' (૧૨૫ ગાથાનું) જે રવ્યું છે તેની એક નકલ એમના સંતાનીય પ્રતાપવિજયે કરી છે. આ પ્રતાપવિજયે એના અંતમાં પાતાના પરિચય આપ્યા છે. એ ઉપરથી બેઇ શકાય છે કે એએ સુમતિવિજયના શિષ્ય અને ગુણવિજયગણિના પ્રશિષ્ય થાય છે. આ ગુણવિજય તે ન્યાયાચાર્યના શિષ્ય છે.

સ્મા ઉપરથી ન્યાયાચાર્યના શિષ્યર–પ્રશિષ્યાદિના નિર્દેશ નીચે મુજબ થઇ શકેઃ—



૧. નુએ જે. ગૂ. ક. (ભા. ર. યૃ. ઢ૯).

ર. શ્રી કાપરિયાંગ્યે ઉપાધ્યાયજીના જે શિષ્યોનાં નાગા જબાવ્યાં છે તે ભાગનમાં વધુ વિચારણા કરવી જરૂરી છે, જે યથાપ્રસંગે કરારો. સંપા.

શ્રી. યશાવિજયજી મહારાજની જન્મભૂમિ કનાહા

[લેખક : શ્રીયુત કનૈયાલાલ ભાઇશાંકર દવે]

ઉત્તર ગુજરાતના સારાયે પ્રદેશ ઐતિહાસિક દેષ્ટિએ કેટલીયે વિશિષ્ટતાએ ધરાવતા હોઇ, તેનાં શહેરા, ગામઠાંએા, તીશે અને મંદિરોના ઇતિહાસથી ગુજરાતના સાંસ્કૃતિક ઇતિહાસમાં અપૂર્વ ફાળા નાંધાવ્યા હોવાનું માલમ પઠશું છે. વીર વનરાજે પાટલની દેષ્ટિસમાં અપૂર્વ ફાળા નાંધાવ્યા હોવાનું માલમ પઠશું છે. વીર વનરાજે પાટલની દેષ્ટિએ ચેતનાનાં પૂર આવતાં, ત્યાંના સમાજ મહાનગરની છત્રછાયામાં નિવાસ કર્યાં બદ લેના ગર્વ અનુસવવા લાગ્યા. મૃગરાજથી આરંભી સિદ્ધરાજ અને મુમારપાળના રાજ્યકાળ દરમ્યાન, આ પ્રદેશના પ્રનાવગ ગુજરાતની બીજી પ્રનાઓમાં પટણી કે પાટલવાહિયા વરીકે લાગ્યશાળી મનાવવા લાગ્યા. ટુંકમાં અલ્હિલપુરની સ્થાપના ઘવાથી, ઉત્તર ગુજરાતની સમગ્ર પ્રનાએ પ્રનાએ સાંસ્કૃતિક દેષ્ટિએ પૂબ વિકાસ સાધ્યા હોવાના કેટલાયે પુરાવાએા આજે આપલને મળી આવે છે. તેના કારણે જ આ વિશાગમાં ચારે ભાજી ઇતિહાસ, કલા, અને પ્રાચીન સંસ્કૃતિનાં કેટલાયે અવશેયા વેરવિએર થયેલાં જ્યાં ત્યાં પડેલાં એવામાં આવે છે. આવા પ્રાચીન ઐતિહાસિક રમારકામાં " કનાઢા " ગામ જે ષ્ડદર્શનવેત્તા, ન્યાયાચાર્ય, ન્યાયવિશારદ, મહાપાધ્યાય પૂ. યશાવિજયજી મહારાજનું જન્મસ્થાન છે, તેની ઐતિહાસિક તેમજ સામાજિક દૃષ્ટિએ સામાન્ય પિછાન અત્રે રજૂ કરવાના પ્રયત્ન કરવામાં આવે છે.

કેનાડા ગામ કયારે વસ્યું અને કાેછું વસાવ્યું, તેની ઐતિહાસિક તવારીખ કાેઈ સ્થળેથી મળી નથી પરંતુ તે દશમા—અગિયારમા સૈકાથી પછુ પ્રાચીન હાેવાના પુરાવાએ હિપલખ્ય થાય છે. ચીલુકચોના રાજ્યકાળમાં પ્રાંતા, જિલ્લાએ અને તાલુકાઓને મંડલ, વિષય અને પથક તરીકે એાળખવામાં આવતાં. અર્થાત્ તે કાળે તેનાં આવાં નામા રાખવામાં આવેલાં હતાં એમ પ્રાચીન તામ્રપત્રા અને શિલાકેખાના આધારે જાણી શકાય છે. 'પરમ પૂ. યશાવિજયછ મહારાજનું જન્મસ્થાન કનાેડા ગામ ગંભુતા પથકમાં આવેલું હતું, એમ ચીલુકય કહ્યું દેવના વિ. શે. ૧૧૪૦ ના એક તામ્રપત્ર હપરથી માલમ પડે છે.'

ગાં ભૂતા એ હાલના ગાંભૂ ગામનું સંસ્કૃત રૂપ છે. તે વહું જ પ્રાચીન હાઇ પૂર્વ

૧. "ગુજરાતના ઐતિદાસિક શિલાલેખા " લા. ૨, પા. ૧૧ટ, ૧૪૬, ૧૫ટ, ૧૬૧ વગેરે

ર. " સુદ્ધિ પ્રકાસ " યુ. ૯૮, ફેબ્રુમ્મારી ૧૯૫૧ 'સાલંકો યુગનાં બે અપ્રકટ તાઝપત્રા '.

કાળમાં નાનું સરંખું શંહેર હશે એમ જહાય છે. કારલ કે તેને તાલુકાના મુખ્ય રયળ તરીકે પસંદ કરવામાં આવ્યું હતું. આ પથકમાં કુલ ૧૪૪ ગામ આવેલાં હતાં. આ જ ગામમાં રહી શીલાંકાચાર્યે (જૈન) ' આચારાંગ સૃત્ર ' ઉપર ટીકા લખી હતી. શીલાંકાચાર્ય ઇસ્વીસનના આઢમા સૈકામાં થયા હાવાનું માનવામાં આવે છે, એટલે ગાંભૂ ગામ આઠમા સેકા પૂર્વેનું હતું એમ તા ચાક્કસ જહાય છે. ગુજરાતની રાજધાની અલ્હિલપુરની સ્થાપના સમયે તે વિદ્યમાન હતું. વનરાજના મહામાત્ય નિન્નય શેઠને ગાંભૂશી ત્યાં આલાવવામાં આવ્યા હતા એમ ' ચંદ્રપ્રભચરિત્ર 'ની અત્ય પ્રશસ્તિ ઉપરથી જાલું શકાય છે. દું કમાં ગાંભૂ—સં ગંમૃતા એ ઐતિહાસિક ગામ છે અને આઠમા—નવમા સેકામાં તે સારી વસ્તી ધરાવતું સમૃહ ગામ હતું. એટલું જ નહિ, પણ ત્યાં અને તેની આજુળાજીના પ્રદેશમાં જૈનોની માટી વસ્તી હાવાના કારણે જૈન ધર્મના પ્રચાર ત્યાં સારી રીતે ફેલાયા હાવાનું જાણી શકાય છે. સં. ૧૧૪૦ નું કર્ણ દેવનું દાનપત્ર આ હકીકતને પૂરવાર કરતું હાઈ ગાંભૂ નજઢીક આવેલ ટ'કાવવી હાલના ટાકાડી ગામના શ્રીસમિતનાથ ભગવાનને (મ'દિરને) જમીનના અમુક ભાગ અર્પલ કરવામાં આવ્યા હાવાનું તેમાં જલ્યાવ્યું છે.

આ તાસપત્રમાં જ્યાવેલી દાનભૂમિ કનાડા ગામની પૂર્વ સીમામાં આવેલી હોવાની તેમાં નાંધ છે. તેમાં કનાડાનું કાણાદા નામ આપેલું હોવાથી, કનાડાનું પ્રાચીન નામ કાણાદા હતું એમ જાણી શકાય છે. ગંભૂતા અર્થાત્ ગાંભૂ અને કનાડા અંને નજીકમાં જ આવેલાં હાઈ ગાંભૂથી પૂર્વમાં કનાડા આશરે ચાર માઈલ દ્વર આવેલું છે. મહેસાણાથી પાટલું જતી રેલ્વે લાઈનમાં બીલું સ્ટેશન ધીણાજ આવે છે. ત્યાંથી પશ્ચિમમાં આશરે ચાર માઈલ દ્વર કનાડા ગામ રૂપેલું નદીના કિનારા ઉપર વસેલું છે. 'શ્રીસ્થળપ્રકાશ 'માં તેનું કનકાવની નામ આપેલ હાઇ, યાસિક (નની) સંત્રાવાળા ઓદિચ્ય બ્રાહ્મણોને મળરાજે દાનમાં આપ્યાના તેમાં ઉલ્લેખ છે. 'શ્રીસ્થળપ્રકાશ 'નું કનકાવની નામ કનાડાનું સંસ્કૃત નામ વિદ્વાનોએ ખતાવ્યું હોવાનું જણાય છે. પરંતુ લાકજીર, અને પ્રવ્યવર્ગમાં તો તેનું કનાડા કે કાણાદા નામ જ વધુ પ્રચારમાં આવ્યું હતું, એમ તાસપત્ર ઉપરથી જણી શકાય છે. આ દાન લેનારા યાસિકા (નનીઓ) આજે પણ કનારિયા નની તરીકે એાળખાય છે. તેઓનાં કેટલાંચે કુદું બા પાટલુ, અમદાવાદ, સિહપુર, હળવદ વગેરે ગુજરાત—કાઠિયાવાડનાં કેટલાંક ગામામાં અહીંથી જઇ સેંકડા વપીથી નિવાસ કરી રહ્યાં છે. આજે આ ગામમાં પણ તેઓનાં કેટલાંક ઘરા વિદ્યમાન છે.

આ ગામ મૂળરાજે ખ્રાહ્મણાને દાનમાં આપ્યું હતું એમ ' શ્રીરઘળપ્રકાશ ' કહે છે. પરંતુ દાનપત્રના આધારે ત્યાં વાલ્રિયાઓની પણ સારી વસ્તી હતી એમ જાણ્યા મળે છે. આગળ ઉદલેખ આપ્યા છે તે સાલ'કી કેલ્યું દેવના દાનપત્રમાં, જે કનાડા ગામની બૃમિ-જમીનનું દાન આપેલું છે, તેની ચતુઃસીમા જલ્યાવતાં આજીબાજીનાં ખેતરો ધરાવતા તેના માલિકાનાં નામા આપ્યાં હાઈ, વિલુક હરસુખા, વિલુક હરીયા, વિલુક સ્વસ્થિ, વિલુક

३. " स्यभुज्यमानगंभृताप्रतियद्धचतुधात्वारियद्वधिकप्रामशतान्तःपतिनः "......३-०४०.

પાસ, વિશ્વરૂપ વગેરે વૈશ્યાનાં નામા તેમાં લખેલાં છે. આથી ત્યાં વાહ્ય્યાઓની સારી વસ્તી હતી એમ તાે જરૂર લાગે છે.

આજ કનાહાની બ્મિમાં પરમ પૂન્ય યશાવિજયછ મહારાજ નારાયણ નામના ક્રેષ્ઠીને ત્યાં સૌભાગ્યદેવી માતાથી પ્રાદુર્ભાવ પામ્યા હતા. પૂર્વના સંરકારબળે અને નય-વિજયછ જેવા ગુરુના સદુપદેશથી વરાગ્ય પ્રાપ્ત થતાં, પાતાનાં ભંને બાળકા—જશવંત, અને પદ્મસિંહને નારાયણ શ્રેષ્ઠીએ ગુરુને સોંપ્યાં. આ બંને બાળકાને પાડણ લાવી, સંસ્કારી બનાવતાં દીક્ષા આપવામાં આવી, અને બંનેનાં અનુક્રમે યશાવિજય તથા પદ્મવિજય નામા શખ્યાં. યશાવિજયછએ કાશી જઈ ન્યાય, ત્યાકરણ, સાહિત્ય, અલંકાર અને દર્શનોના લોઠા અભ્યાસ સાધી ન્યાયવિશારદ તેમજ ન્યાયાચાર્યની માટી ઉપાધિએ! (બિરૂદા) પ્રાપ્ત કરી. તેમને પાતાની વિદ્યાના પ્રચાર કરવા સેંકઠા શ્રંયા અનેક વિષયો ઉપર લખ્યા છે, જે તેમની અગાધ વિક્રત્તા અને પ્રકાંઠ પાંહિત્યના ખ્યાલ આપતાં, તેમની ઉદ્યમ શક્તિના સંપૂર્ણ પરિચય કરાવે છે. આચાર્ય હેમચંદ્ર અને હરિસદ્રસ્ર્રિની હરાલના આ મહાન આચાર્ય જૈન, જૈનેતરાના દર્શનશાસ ઉપર અનેક શ્રંયા લખી મહાન ઉપકાર કર્યો છે. એટલું જ નહિં, પણ તેમની જન્મબ્ર્મિ કેનોઢા જે એક નાનકહું ગામહું હતર ગુજરાતના પ્રણામાં આવેલું છે તેને ખ્યાતકીર્તિ બનાવ્યું છે.

કનાડા અને તેની આલુબાલુના પ્રદેશ આજે તા શુષ્ક દેખાય છે, પરંતુ ત્યાંનાં પ્રાચીન અવશેષા જોતાં, પૂર્વકાળમાં તે ખૂબ સંસ્કારી હશે એમ તા જરૂર હાગે છે. આ ગામમાં શિલ્પ સ્થાપત્યના નિયમ પ્રમાણે તૈયાર થયેલ અગિયારમા-ખારમા સકાતું એક પ્રાચીન મંદિર આજે પછુ તળાવના કિનારા ઉપર વિદ્યમાન છે. તેના સ્તંભા, તારણા, જંવાએા, યૂમટા, અને કહ્યાયના વગેરેમાં કલાકારાએ અપૂર્વ ક્લાસીપ્ડવ રજૂ કર્યું લાઈ, saारिसिक विद्रानाने मुन्ध जनावे तेवुं तेतुं स्थापत्य तेमक रखनाविधान जनावेबुं छे. ઉત્તર શુજરાતમાં આવાં કેટલાંચે પ્રાચીન મંદિરા છે પણ આ મંદિરનું સ્થાપત્ય અનાર્પું વ્યતે કલાવિધાનની દેખ્ટિએ વ્યનન્ય છે. આ મંદિર કચારે ગંધાયું વ્યતે કાેણે બંધાવ્યું તેની માહિતી આપનાર એક પણ શિલાલેખ કે પ્રશસ્તિ મળી નથી. પરંતુ તેનું ભારકરે, સ્થાપત્ય, અને કલાવિધાન એવાં તે ખારમા-તેરમા શ્રેકાથી અર્વાચીન તેા નથી જ. અર્થાત્ તે ભારમા—તેરમા સૈકામાં અધાર્યું **હશે એમ ચાક્કસ લાગે છે. આ પ્રાચીન ક**લાપ્રાસાદના ગર્ભગૃહની દ્વારશાખાએા, અને મંદાવરમાં કાતરેલાં શિલ્પા ઉપરથી તે દેવીના પ્રાસાદ દોવાતું જલાય છે. આ પ્રાસાદના ગર્ભદ્વારની શાખાઓમાં અને ખાલુએ દેવીઓનાં રૂપા કાતરેલાં છે. શિલ્પમાં એવા નિયમ છે કે, એ દેવના ગર્ભદ્વાર બનાવવા **હાય તેનાં રૂ**પા તેની શાખામાં કોતરવાં. આથી આ દેવીના પ્રાસાદ છે તેમાં શંકા નથી. 'સ્કંદ'ના ' ધર્મારણ્ય પુરાદ્ધુ ' માં બહુરમરદ્યા કેવીના કલ્લેખ માકેરાની આસપાસનાં કેવીપીઠામાં

Y. 'शिरपरतास्त्र' रून व, म्ही । १८व

આવેલ હાઇ, માહેરાથી સાત કાસ દૂર ઉત્તરમાં તેનું સ્થાન જણાવ્યું છે. તેમાં જણાવેલ ખહુંસુપણું તે જ આ બહુસ્મરણા દેવીનું સ્થાન છે. કેનાડિયા જાની કુટું બની બહુસ્મરણા દેવી કુલાંબા ગણાતી હાઇ, તેના જ આ પ્રાચીન પ્રાસાદ શિલ્પસ્થાપત્યના એક અપ્રતિમ દેવીપ્રાસાદ છે.

આ મંદિર પશ્થરખંધ ભાંધેલ હાઇ શિલ્પરથાપત્યના નિયમે તેનું કલાવિધાન, યાગ્ય માન અને પદ્ધતિપુર:સર ખનાવેલું છે. મંદિરની શરૂઆતમાં ફરતી જગતી (ઓટલા) ખનાવેલ હાઇ, તેના ઉપર એ, ત્રણ પગથિયાં ચડી મંડપમાં દાખલ થઇ શકાય છે. શિલ્પના નિયમે તેની પીઠમાં ભીટ, જાડંબ, કિલ્યુકા, છાજિકા, ગ્રાસપટ્ટી, ગજઘર, નરથર વગેરે યાગ્ય માન પ્રમાણે બનાવતાં મંડપને ફરતી વેદિકા, આસનપદ અને કક્ષાયના ખનાવેલાં છે. વેદિકા અને કક્ષાયનામાં કેટલેક ઢેકાણે રૂપા કાતયાં છે, જ્યારે માટે ભાગે તેમાં ઊલા પટા કાતરવામાં આવેલ છે.

આ મંદિરતા મંડપમાં કુલ ૧૮ સ્તં ભા મૃક્યા હાઈ, ત્રણુ બાજીએ બદ્રો બનાવ્યાં છે. આવા ત્રણુ બદ્ર અને બાર પદવાળા મંડપને 'પ્રાસાદ શિલ્પ'માં " મૃગનંદન" નામ આપવામાં આવ્યું છે. અધાયે સ્તંભા લદ્રકની સંજ્ઞાવાળા હાઈ, ઉપરથી અપ્ટાંશ, અને નીચેથી ચતુરસ આકારના બનાવેલ છે. આ બધામાં પણવનાં શિલ્પા ઉત્તમરીતે કાતયાં હાઇ, તેની નીચે જુદાં જુદાં પક્ષીઓનાં રેખાંકના દારેલાં છે. આ દરેક સ્તંબમાં પ્રિકેટ મૂકવા નાનાં નાનાં સાલ કાચેલાં હાવાથી, તે દરેક ઉપર ક્રાંસડાઓ મૃકવામાં આવ્યા હશે એમ જરૂર લાગે છે, પરંતુ આ મંદિર છર્લું ઘવાથી તે પડી ગયાં લશે એમ જશાય છે. ડા. બજે સે કરેલી ઉત્તર ગુજરાતના પ્રાચીન મંદિરાની (સવે') તપાસમાં દરેક સ્તંભા ઉપર મદનિકાઓ મૂકેલી હાવાની નોંધ તેના રિપાર્ટમાં છે. ' આધી દરેક સ્તંભા હપર પ્રિકેટ મૂકેલા હતા, જેમાં જુદા જુદા વાદ્યો વગાડતી મદનિકાઓનાં શિલ્પા કેતરેલાં હતાં, એ હકીકત સ્પષ્ટરીતે લણી શકાય છે.

મેંડપ અને મંદિર વચ્ચે નાનું બલાનક (બલાછુ) બનાવેલું છે, જે બંનેને સંલગ્ન કરે છે. ગર્ભદાર ત્રિશાખાશુકત બનાવેલ હાઇ તેમાં વચ્ચે રૂપસ્તંબ અને બંને બાજી પત્રશાખા તથા પદ્મવશાખા બનાવેલી છે. રૂપસ્તંબમાં બંને બાજીએ દેવીઓનાં રૂપા દાતરેલાં છે. મંદિરની જ'લામાં માઢરા તથા સુલુકનાં પ્રાચીન મંદિરાથી માક્ક રૂપકામ ખીચાખીચ રીતે દાતરેલું છે. તેમાં દરેક દિશાના દિક્પાલા ઉપરાંત ખ્રહાદિ દેવાનાં અને દેવીઓનાં સ્વરૂપા મૂકેલાં છે.

પ્રાચીન શિલ્પરથાપત્યની દુષ્ટિએ આ મંદિર ગુજરાતનાં કેલારથાપત્યામાં સારું એતું સ્થાન ધરાવે છે. ગુજરાતના બીજા પ્રાસાદાની પેઠે કેનાડાનું આ મંદિર પણ મુસ-

પ. ' સ્કેંદ પુરાષ્ટ્ર '—' ધર્મોરણ્ય ખાંડ ' કરોા. પર

દુ. ' વ્યાર્કિયોલોજિક્ષ સર્વે' એક તાર્ધન ગુજરાત ' પા. ૧૧૨

લમાના પ્રહારથી થયી શક્યું નથી અને તેથી આ મંદિરતાં કેટલાંક શિર્દ્યા, પ્રતિ-માઓ વગેરે યોહેલણે અપ્રે ખંડિત થયેલાં હોવાનું જણાય છે. ઈ. સ. ૧૩૯૨–મં. ૧૪૪૮ માં કનાડા અને ગાંભૂ વચ્ચે, ગુજરાતને પચાવી પહેલ સ્વા રાસ્તીખાન અને દિલ્હીથી નવા નિમાયેલા સ્વા ઝફરખાન વચ્ચે લારે યુદ્ધ થયું; જેમાં ઝફરખાને રાસ્તીખાનને અહીં હરાવી નસાડથો હતા. ત્યારખાદ ગુજરાતના વહીવડ ઝફરખાને હાથમાં લીધા, અને અહીં છત થઇ એટલા માટે યે:દે દ્વર જાનપુર નામનું ગામ તેના રમારકમાં વસાવ્યું, જે આજે પણ વિલમાન છે. આ વખતે મુમલમાનાએ આ મંદિરનાં શિલ્પાને ખંડિત કર્યાં હાય એમ માનવાને કારણ છે.

આ ગામમાં ખીર્જી પણ આહું એક કશાધામ દ્યામેશ્વર મહાદેવતું મંદિર હતું. જેમ બહુસ્મરણા કનાહિયા જાતિની કુલાંબા છે, તેમ તેમના ઇપ્ટેટવ દ્યામેશ્વર મહાદેવ ગણાય છે. આ દ્યામેશ્વર મહાદેવતું એક પ્રાચીન મંદિર ટા. બજેંદ્ય જ્યારે સં. ૧૯૩૧ માં કનાડા આવેલા ત્યારે તેના મંડપ વિશ્વમાન હતા, જેતું સુંદર ચિત્ર તેમના રિપાર્ટમાં આપેલું છે. આજે તા તેતું નામનિશાન બચવા પામ્યું નથી.

આ સ્વિષ અહીં માટપ, વીરતા, ગારાક, ગાંધુ વગેરે નજીકનાં ગારામાં આવાં સુંદર પ્રાચીન મહિરાનાં અવશેપા, કલાના રસિક વિદ્યાનાને આમંત્રી રહ્યાં છે. કનાડા ગામ પાપ, યુત્રપુરુષ યરોપ્રિવજયજી મહારાજનું જન્મરથાન છે, જેના યુનિત પદરજથી તે પવિત્ર અને ખ્યાતકીર્તિ બન્યું છે. તેવી જ રીતે તે એતિહાસિક અને શિલ્પક્લાની દૃષ્ટિએ પણ વધુ મહત્ત્વ ધરાવતું હોઇ, ત્યાં અને ત્યાંની આજીશાજીનાં ગામામાં કેટલાંયે શિલ્પ-સ્થાપત્યા પ્રાચીન કલાજીલ્પનું પ્રદર્શન રૃષ્ટુ છે. આવા યુત્રપુરુષ, અને પવિત્ર મંતની જન્મભૂમિનાં દર્શન કરી, તેમાંથી ઇતિહાસ અને પ્રાચીન શિલ્પક્લાની પ્રેરણ પ્રાપ્ત કરવા, ઇતિહાસ-કલાના રસિક વિદ્યાના જરૂર તેની સુલાકાત દેશે એમ ઇચ્છું છું.

न रागं नापि च हेर्ष, विषयेषु यहा बडेत ! बीहासीन्यनियनात्मा, तहाप्नाति परं महः॥ इत्तरीन कात्मां निरान कात्मा क्यारे विश्वेषां राष हे हेर्पते पानदे। नधी त्यारे परम क्योदिने वे प्राप्त हरे हे.

रामकोदिशहर्विकृतिकृति

[अ] यशाविक्यश

૭. ' ગ્રુજરાતના સંસ્કૃતિક ઇતિહાસ' ખંદ ૧, ૧૧. ૧૬૨

શ્રીમાન યશાવિજયજી

[લેખક : ડૉ. શ્રીયુત ભગવાનદાસ મનઃમુખભાઇ મહેતા, એમ, બી. બી. એસ. મુ'બઇ]

જે વિરક્ષ વિભૂતિ ૩૫ મહાન્યો તિર્ધા રા જિનશાસનના ગગનાં ગણમાં ચમકી મયા છે, તેમાં શ્રી યશાવિજયજીતું રથાન સદાને માટે અમર રહેશે. કલિકાલસર્વજ્ઞ શ્રી હૈમચન્દ્રાચાર્યજી પછી અત્યાર સુધીમાં શ્રી આનંદઘનછ આદિના અપવાદ સિવાય તેવી પ્રખર શ્રુત–શક્તિવાળા બીજો તત્ત્વજ્ઞાની મહાત્મા થયા હાય એવું જણાતું નથી. એમની પ્રતિભા કેટલી અસાધારણ હતી અને એમનો છુહિમત્તા કેવી કુશાબ્ર હતી, એ તા એમની સક્ષમ વિવેકમય તીક્ષ્ણુ પર્યાક્ષાચના પરથી સ્વર્ય જણાઇ આવે છે, અને આપણને તાર્કિકશિરામણ કવિકુલગુરુ સિહસેન દિવાકરસૂરિનું સ્મરણ કરાવે છે. એમની દુષ્ટિવિશાલતા ને દુદયની સરલતા કેટલી ળધી અદ્ભુત હતી અને સર્વ દર્શના પ્રત્યેની એમની નિરાગ્રહી માધ્યસ્થ્ય વૃત્તિ કેવી અપૂર્વ હતી. તે તે એમની સર્વ દર્શનાની તલસ્પશી નિષ્પક્ષપાત મીમાંસા પરથી પ્રતીત થાય છે, અને આપણને પડદશંનવેત્તા મહર્ષિ હરિલદ્રસૂરિની યાદ તાછ કરે છે. વાલ્મયના સમસ્ત ક્ષેત્રને વ્યાપ્ત કરતું એમતું મીલિક સાહિત્યસર્જન કેટલું બધું વિશાળ છે અને કેવી ઉત્તમ પંક્તિનું છે, તે તા એમના ચલણી સિષ્ટા જેવા ટ'કારકીર્ણ પ્રમાણબૂત વચનામૃત પરઘી સહેજે ભાસ્યમાન થાય છે, અને આપણને કલિકાલસર્વંત્ર શ્રી લેમચંદ્રાચાર્ય છતું પ્રત્યક્ષ દર્શન કરાવે છે. અધ્યાત્મ-ચાગ વિષયના એમના અભ્યાસ દેટલા બધા ઊંઠા છે અને આત્મજ્ઞાન-ધ્યાન પ્રત્યેની એમની અભિરુચિ દેવી અદ્ભુત છે, તે તેા એમના અધ્યાત્મ-યાગ વિષયક શ્રંથ-રત્ના પરથી સ્વયંસિદ્ધ ઘાય છે, અને આપણને યાેગરાજ આન'દઘનછ<u>ન</u>ં સ્મરજ કરાવે છે. આમ આ મહાત્મા પ્રતિભામાં નવે સિદ્ધસેન દિવાકરના પુનરવતાર હાય. દાર્શનિક અભ્યાસમાં જાણે લધુ હરિસદ્ર હાય, હુતગ્રાનમાં જાણે ખીજ હેમાગાર્ય હાય, અધ્યાત્મવિદ્યામાં જાણે આનંદઘનજીના અનુગામી હાય એમ આપણને સહેજે પ્રતિભાસે છે.

આ પાતાના મૂછાળા અવતારને-' ફ્ચાંલી ગારદ'ને દેખી સરસ્વતીને લજ્જના માર્યા સંતાઈ જતું પડશું! આ સાચેસાચા વ્યાખ્યાનવાચસ્પતિ (જગદગુરુ) વાચકવરની વાચા સાંભળો વાચાલ વાચસ્પતિ (ત્રિદશગુરુ) અવાચક થઈ ગયા! વાલ્મયની લંગ-ભૂમિમાં કવિતાસુંદરીને યયેચ્છ નચાવનારા આ સત્કવિની યશસ્કેન્તિંથી પ્રતિપશીએનનં મસ્તક ધાળાં ને મુખ કાળાં થયાં! જ્ઞાનીએાના દૃદયાકાશમાં વહેની અધ્યાત્મ જ્ઞાનમંત્રાને મા ભગીરથે અવનિને પાવન કરવા પૃથ્વી પર અવતારતાં પ્રાણીઓના વિસાવરૂપ પાપમલ ક્યાંય ધાવાઈ ગયા !

આમાં લેશમાત્ર અતિશયોક્તિ નથી. હા, ન્યૂનોક્તિના સંભવ છે ખરા ! એમના સમકાલીન શ્રી કાંતિવિજય મુનિએ ' મુજસવેલી ' માં એમને લત્ર ભાવાંજલિ અર્પા છે કે—

> "ક્ર્યાલી સારક તણાછ, બિરુદ ધરે સુવિક્તિ; ખાલપણે અલવે જિણેછ, લીધા ત્રિક્શ ગુરુ છત. લઘુ ખાંધવા હરિભક્તા રે, ક્લિયુગમાં એ થયા બીજો રે; છતા યઘારથ ગુણ સુણી, ક્લિયણ ખુધ કા મત ખીજો રે. સ'વેગી સિરસેહરા, ગુરુ જ્ઞાનરયણના દરિયા રે; કુમત તિમિર ઉચ્છદ્યા, એ તા બાલારુણ દિનકરિયા રે."

અવાંચીનાની જેમ તેમના નામ પાછળ ઉપાધિઓની લાંબી લંગાર નહિ લાગેલી છતાં, આ સીધા સાદા 'ઉપાધ્યાયછ' પણ આચાર્યોના આચાર્ય ને ગુરુઓના ગુરુ ચવાને પરમ યાજ્ય છે. યશઃશ્રીના પડછાયા પાછળ દોડનારા આધુનિકાની પેઠે તેઓ તેની પરવાહ નહિ કરતા છતાં 'ચશઃશ્રી' હતા તેમના પીછા છાડતી નથી! અધ્યાત્મરસ પરિસ્તિ વિના શાસના લાર માત્ર વહેનારાને નિર્માલ્ય તત્ત્વવિદ્ધીન ચર્ચાઓમાં શાસના શસ તરીકે ઉપયોગ કરનારા આગમધરા તા લણાય છે, પણ અધ્યાત્મ પરિસ્તિપૂર્વંક શાસના રસાસ્વાદ હૈનારા ને શાસના તાત્વિક પ્રતિપાદનમાં કેવળ આત્માર્થે સદ્વપયાગ કરનારા તેમના જેવા નિરાશ્રહી ને પરિસ્ત સાચા આગમરહસ્યવેદી શ્રુતધરા તા વિરક્ષા જ છે. પ્રસ્તુત શ્રી કોતિવિજયછએ કહ્યું કે તેમ 'બીજા શતલક્ષ—કોડ સદ્યાણીએ પણ આને ન પહોંચે.'

" જશ શિર્ષાપક શાસનેછ, સ્વસમય પરમત દક્ષ; પાંહુચે નહિં કાેઈ એહનેછ, સુગુણ અનેરા શતલક્ષ. પ્રભવાદિક શ્રુતકેવલીછ, આગે હુંઆ પઢ જેમ; કલિમાંહે જોતાં થકાછ, એ પણ શ્રુતધર તેમ. વાાદ વચન–કસણિ ચઢાછ, તુજ શ્રુત–સુરમણિ ખાસ; ખાધિ વૃદ્ધિ હેતે કરેછ, બુધજન તમ સ્મસાસ." —સુષ્

આ પુરુષરતને પામી ન્યાય ન્યાયપાલું પામ્યા, કાવ્ય સવ્ય બન્યું, અલંકારને અલંકાર સાંપડયો, રસમાં સરસતા આવી, કરમાયેલી શ્રુતવલ્લરી નવપલ્લવિત થઇ, યાગ કલ્પતર ક્લભારથી નમ્ર બન્યા, યુક્તિ આગ્રહ્યાં મનથી સુક્ત થઇ, સુક્તિ જન્મુક્તપાલું પ્રત્યક્ષ થઇ, લક્તિમાં શક્તિ આવી, શક્તિમાં વ્યક્તિ આવી, ધર્મમાં પ્રાષ્ટ્ર આવ્યા, સંવેગમાં વેગ આવ્યા, વેરાવ્યમાં રંગ લાવ્યા, સાધુતાને સિદ્ધિ સાંપડી, શાસનનું શાસન સાલવા લાગ્યું, કલિકાલનું આસન ડાલવા લાગ્યું, દર્શનને સ્વરૂપદર્શન થયું, સ્પર્શનાનને

અનુકૂળ સ્થાન મળ્યું, ચારિત્ર ચારતાર્ય બન્યું, વચનને કસાટી માટે શ્રુતચિંતામણિ મળ્યા, અનુભવને મુખ ભેવા દર્પણ મળ્યું. તત્ત્વમીમાંમા માંમલ બની, દર્શનવિવાદા દુર્ભલ ઘયા, વાઢાનાં બંધન ત્રૂટયાં, અખંઢ માક્ષમાર્ગ વિશ્વમાં વ્યાપી રહ્યો, અધ્યશ્રદ્ધાની આંધી દ્વર થઈ, દંભના પઢદા ચિરાયા, કુગુરુઓના હેરા તંબૂ ઊપડયા, વેષવિડ બંદાને વિડ બના ઘઈ, શુષ્ક ગ્રાનીઓની શુષ્કતા સુકાઇ, ક્રિયાજ હાની જઢતાની જઢ ઊખડી અને ધર્મ તેના શુદ્ધ વસ્તુધર્મ સ્વરૂપે પ્રસિદ્ધ થયા. આવા શુભ્રસમુદ્રનું શુષ્યાન દેમ ઘાય ? શુષ્ટ્રદેષી મત્સરવંત દુર્જનાની પરવાઢ કર્યા વિના શ્રી કાંતિવિજયછ પણ કહે છે દે—

" શ્રી યશાવિજય વાચક તણા, હું તા ન લહું ગુણ વિસ્તારા રે; ગંગાજલ કણિકા થકી એહના, અધિક અછે ઉપપારા રે. વચન રચન સ્યાદ્વાદનાં, નય નિગમ આગમ ગંભીરા રે; ઉપનિષદા જિમ વેદનાં, જેમ કવિ ન લહે કાે ધીરા રે. શીતલ પરમાનદિની, શચિ વિમલ સ્વરૂપ સાચી રે; જેહની રચના–ચંદિકા, રસિયા જણ સેવે રાચી રે."

ઇત્યાદિ પ્રકારે કવિજનાએ જેમના ગુણાનુવાદ સુક્તક દે ગાયા છે, એવા આ સુકૃતી ચરોાવિજયછ પાતાની અમર સુકૃતિઓથી સદા જયવંત ને છવંત જ છે. 'સુકૃતિ એવા તે રસસિદ્ધ કવીશ્વરા જયવંત છે, કે જેની યશઃકાયમાં જરા—મરણજન્ય ભય નથી'— આ શ્રી ભતૃં હરિની ઉક્તિ શ્રી યશાવિજયછના સંગંધમાં અક્ષરશઃ ચરિતાર્થ ઘતી દેખાય છે, કારણ કે પાતાની એક એકથી સરસ ઉત્તમ કાવ્યમય સુકૃતિથી જયવંત એવા આ કવીશ્વર પાતાની યશઃકાયથી સદા છવંત છે; યશઃશ્રીના વિજયી થઇ ખરેખરા 'યશા-વિજય' થયા છે. શબ્દનયે યથાર્થ 'યશાવિજય' એવંબૃત નયે 'યશાવિજય' અન્યા છે!

આવા મહાપ્રતિભાસંપન્ન સંરકારસ્વામી સેંકઠા વર્ષોમાં કાઈ વિરદ્યા જ પાકે છે. પ્રખર દુર્શનં અભ્યાસી પં. સુખલાલછ કહે છે તેમ ' કેન સંપ્રદાયમાં ઉપાધ્યાયછનું રધાન વૈદિક સંપ્રદાયમાં શ'કરાચાર્ય જેવું છે. ' પણ આવા સમર્ધ તત્ત્વદ્રષ્ટા કાંઈ એકલા કેન સંપ્રદાયના જ નહિ, પણ સમસ્ત ભારતના ભૂપણરૂપ છે. આ ભારતભૂમિ ધન્ય છે કે જેમાં આવા તત્ત્વદ્રષ્ટા પુરુપરતના પાકે છે. અને આવા સંપ્રદાયથી પર, વિશ્વાસી વિશાસ દિષ્ટવાળા મહાતમા કાંઈ એકલા કૈનોના જ નથી, એકલા ભારતના જ નથી, પણ સમસ્ત વિશ્વના છે.

એમનું ખરું છવન તે આધ્યાત્મિક-આત્મપરિષ્ઠૃતિમય આદર્શ ' મુનિઇવન ' છે. પાતાના છવનસમય તેમણે અપ્રમાદપણે યથાકન મુનિધમાંના પાલનમાં, શાસનની પ્રભાવનામાં, સત્તિકિયાતારમાં, અને પ્રમાણબૂત એવા વિપુલ સાહિત્યસર્જનમાં સુવ્યનીત કર્યો છે. શુજરાતી, સંસ્કૃત, પ્રાકૃત અને મારવાડી-એ ચારે ભાષામાં તેમણે આબાલવૃદ્ધ સર્વને ઉપયોગી એવું વિવિધવિષયી ટેકારોષ્ટ્રં સાહિત્ય સત્યું છે. તેમના મુખ્ય વિષયા ન્વાય, સમાજસુધારહ્યું, અધ્યાત્મ, ચાંગ, ભક્તિ આદિ છે. એક કા ન્યાય વિષયના જ તેમછે એક સા ગંઘ રચ્યાથી 'ન્યાયાચાર્ય' પદ મળ્યાના તેમછે પાતે જ ઉલ્લેખ કરેલા છે. તેમજ 'રહસ્ય' પદાંકિત એક સા ગ્રંથ રચવાની પ્રતિજ્ઞાના ઉલ્લેખ પછુ તેમછે પાતે જ કરેલા છે. આમ હાલના ક્રિકેટના ઉત્તમ ખેલાડીએ (Century Batsman) જેમ આ સાહિત્યના ખેલાડીએ વાર્મય—ક્રીડાંગણમાં સદીએ નેંધાવવાની જ વાત કરી છે! અને સવંત્ર પ્રમાણબૂત હાઇ ચિરસ્થાયી ક્રીર્તિને લીધે નાંટ આઉટ જ (Not out) રહ્યા છે! જેમ ઉત્તમ: ખેલાડીના બાલે બાલે રસિક પ્રેક્ષક લાકા હ્યાંવેશમાં આકૃતિ પાકારે છે, તેમ આ સાહિત્ય મહારથીના બાલે બાલે બાલે તત્ત્વસ્થક વિદ્વજ્યના 'ધન્ય ધન્ય'ના હવેનાદા કરે છે! પરમ તત્ત્વચિતક શ્રીમદ્ રાજચંદ્રછએ અંજિલ આપી છે કે—" યશાવિજયછએ શંથા રચતાં એટલા ઉપયોગ રાખ્યા હતા કે તે પ્રાયે કાઈ ઠેકાણે ચૂક્યા નહાતા."

આમ અક્ષરદેહમાં જેના અક્ષર આત્મા પ્રતિવિધિત શાય છે, પ્રત્યક્ષ ચૈતન્ય ચમ-ત્કાર જણાય છે, એવા આ મહાત્માનું અધ્યાત્મ છવન તેમની કૃતિઓના આલ્યંતર દર્શન પરથી વિચક્ષણ વિવેકીઓ અનુમાની શકે છે. તેમની એક એક કૃતિ એવી અમૃદ્ય અને અપૂર્વ તત્ત્વસંભારથી ભરેલો છે કે, તે પ્રત્યેકનું વિહંગાવદ્દાકન કરવા માટે પણ અનેક દ્દેખમાળા એઈએ; પણ અત્રે તેટદા અવકાશ નથી, એટલે અહીં તા યત્રતત્ર શહતા દિલ્ટપાત કરીને જ સંતાષ માનશું.

તેમના સમકાલીનામાં ઉપાધ્યાયછ વિનયવિજયછ, આનંદવનછ, સત્યવિજય ગણી, માનવિજય ઉપાધ્યાય આદિ વિશિષ્ટ વિદ્ધદ્દમંડ હી હતી. તેમાંય ખાસ કરીને શાંત સુધારસનું અનુપમ સંગીત કરનારા શાંતમૂર્તિ મહા મુમુક્ષુ શ્રી વિનયવિજયછ તો એમના સહાધ્યાયી પરમાર્થ મુદ્દુ હતા. આ વિનયવિજય અને યશાવિજયની નોહી સુપ્રસિદ્ધ છે. બન્ને ગાઢ પરમાર્થ મિત્ર અને ઉત્તમ કારિના શાંત મુમુદ્ધ હતા. ઘેર ઘેર રસપૂર્વ ક વંચાતા સુપ્રસિદ્ધ 'શ્રીપાલ શસ ' તો આ બન્ને મહાત્માઓની સંયુક્ત કૃતિ છે. શ્રી વિનયવિજયછએ એના પૂર્વ ભાગ રચ્યા, ત્યાં તેમના શંદેરમાં દેહાત્સર્ગ થયા, એટલે તેમના પરમાર્થ મિત્ર શ્રી યશાવિજયછએ તેના ઉત્તર ભાગ રચી ઉત્તમ મિત્રકાર્ય કર્યું. છેવટે ત્યાં શ્રી યશાવિજયછ પરમ આત્મકલ્લાસથી ગર્માં છે કે—

'' માહરે તા ગુરૂચરછ પશાય, અનુભવ દિલમાંહિ પેઠા; ઋતિ વૃદ્ધિ પ્રગદી ઘટમાંહે, આતમરતિ હુઇ બેઠા રે... …સુજ સાહિબ જગના તદા."

શ્રીમાન્ આનંદઘનજીના દર્શન—સમાગમ એ શ્રી યશાવિજયજીના જીવનની એક ક્રાંતિકારી વિશિષ્ટ ઘટના છે. તે વખતના રૃઢિચુસ્તપણાને વળગી રહેનાર સમાજ એવી પરમ અવધૂત જ્ઞાનદશાવાળા, આત્માનંદમાં મગ્ન રહેનારા, આત્મારામી સત્પુરુપને એાળખી ને શકેયો, ને આ ' લાભાનંદ છ'ના (આનંદ ઘન છતા) યથે મછ લાભ ન ઉઠાવી શકયા; ઘર આંગણે ઊગેલા કલ્પવૃક્ષને ન આરાધી વાંછિત કલથી વંચિત રહ્યો. એ સમાજનું મહાદ ભાંગ્ય અથવા કરાલ કલિકાલના – દુઃષમ કાલના મહાપ્રભાવ! પણ તેનું તેવાને ખેંગ, Like altracts like, લાહ મું ખક લાહને ખેંગ એ ન્યાયે શ્રી યશાવિજય છ શ્રી આનંદ ઘન છેને તેમના યથાર્થ સ્વરૂપમાં આળખી શકયા, – જેમ શ્રી દેવવંદ્ર છ કહે છે તેમ–

'તેહ જ એહના જાણુંગ, લાકતા જે તુમ સમ ગુણરાયજી. '

તેવા જ તેવાને ઓળખે. સાચા અવેરી જ અવેરાત પારખી શકે. તેમ તે સમયે પશુ શ્રી યશોવિજયછ જેવા વિરલા રત્નપરીક્ષક જ શ્રી આનંદઘનછ જેવા મહાપુરુષ રત્નને તેમના યથાથે સ્વરૂપે ઓળખો શક્યાં. આ પરમ અવધ્ત-ભાવનિર્ગં આ આનંદઘનછના દર્શન—સમાગમથી શ્રી યશોવિજયછને ઘણા ઘણા આત્મલાલ ઘયા, અત્યંત આત્માનંદ થયા. આ પરમ ઉપકારની સ્મૃતિમાં શ્રી યશોવિજયછએ મહાગીતાથં આતંદઘનછની સ્તુતિરૂપે 'અષ્ટપદ્ધી ' સ્ચી છે. તેમાં તેમણે પરમ આત્માલલાસથી આનંદઘનછની સુક્તકં ઠે ભારાભાર પ્રશંસા કરી છે. ત્યાં તેઓશ્રી કહે છે કે, માર્ગમાં ચાલતાં ચાલતાં આનંદઘનછ ગાતા હતા અને આનંદપૂર્ણ રહેતા હતા. એવી મસ્ત દશામાં તેઓ વિહરતા હતા, આત્માનુભવજન્ય પરમ આતંદમય અહેત દશામાં વિલસતા હતા. આવા પરમ આત્માનંદમય યાગીધરના દર્શન—સમાગમથી પાતાને આનંદ આનંદ થયા, પારસમિશ્રના સ્પર્શથી લોહું જેમ સાનું ઘાય, તેમ આનંદઘન સાચે જ્યારે ' યુજશ' મળી, ત્યારે હું ' સુજશ' આતંદ સમા થયા. અર્થાત્ પારસમિશ્રમા આનંદઘનછના સમાગમથી લોહ જેવા હું યશોવિજય યુવર્ણ ખન્યો. કેવી ભગ્ય ભાવાંજિલ !

- ' મારૂગ ચલત ચલત ગાત આન'દઘન પ્યારે, સદન આનંદ ભરપૂર, " "કાઇ આન'દઘન હિંદ્ર હી પેખત, જસ રાય સંગ ચહી આયા;
- ુ આન**ે દેવન આનંદરસ ઝીલત, દેખત** હી જસ ગુણ ગાયા."
- " આનંદઘર્તકે સંગ સુજસ હી મિલે જળ, તળ આનંદ સમ ભયા સુજસ; પારસ સંગ લાહા જો કરસત, કચન હાત હી તાકે કસ. "
- " એરી આજ આનંદ ભયા ધેરે!
- તેરા મુખ નિરખ નિરખ, રામ રામ શીતલ ભયા અધાઅંગ: "શુદ્ધ સમતારસ ઝીલત, આનંદઘન ભયા અનંત રંગ. એરી."

આ ઉપરથી અહીં એક વિચારણીય રસપ્રદ પ્રમંગ ઉપસ્થિત થાય છે કે, આવા ન્યાયના એક ધુરંધર આચાર્ય, પડ્દશંનના સમર્પ વેત્તા, સકલ આગમરહસ્પના લાલ, વિદ્વદિશ્વરામિષ્ઠ યશાવિજય જેવા પુરુષ, આ અનુમવયાગી આનંદઘનજીના પ્રથમ દર્શન-સમાગમે લાગુ મંત્રમુગ્ધ થયા હાય એમ આનંદતરાંગિલીમાં એંદ છે. અને તે યેગી-શ્વરની અદ્ભુત આત્માનંદમય વીતરાંગ દશા દેખીને સાનંદાશ્રયં અતુભવે છે! અને પાતાની સમસ્ત વિદ્વત્તાનું અભિમાન એકીસપાટે કુગાવી દઈ, ખાળક જેવી નિર્દોષ પરંમ સરળતાથી કહે છે કે, ' ક્રાેઢા જેવા દૂં આ પારસમણિના સ્પર્શથી સાનું બન્યા !' અદેા! કેવી નિમોનિતા! કેવી સરળતા! કેવી નિદં ભતા! કેવી શુજુચાહિતા! આને ખદલે બીજો કાઈ હાત તા ? તેને અભિમાન આડું આવી ઊલું રહેત કે, ' હું ' આવટા માટા ધુરંધર આચાર્ય, આટલા બધા શિષ્ય-પરિવારના અગ્રણી ગચ્છાધિપતિ, સમસ્ત વિદ્વત્સમાજમાં સુપ્રતિષ્ઠિત–આવા જે ' દું ' તે શું આવાને નમું ? ' પણ યશાવિજયજી એાર પુરુષ હતા, એટલે આનંદ્રધનજીના દિવ્ય ધ્વનિ તેમના આત્માએ સાંભળો ને તે સંતના ચરણે હળી પડ્યા. શ્રી યશાવિજયછેને અહીં પ્રત્યક્ષ અનુબૃતિ થઈ હાય એમ જણાય છે કે આ અનુસવજ્ઞાની પરમ યાંગી પુરુષની પાસે માર્ટુ શાઝજ્ઞાન (Theoretical knowledge) શુ-ચરૂપ છે, માટુ મીં હું છે; કારણ કે અધ્યાત્મ વિનાનું-આત્માનુલવ વિનાનું શાસ એકરા વિનાના મીંડા જેવું છે દું આટલા વર્ષ ન્યાય, દર્શન આદિ સર્વ આગમ-શાસ ભરૂચા, પણ દ્યાંલું જ રહ્યો. પણ આ અત્મન્નાનના નિધાનરૂપ, પારસમિલુ આન'દઘનના જાદુધ સ્પર્શથી લાહા જેવા દું સાનામાં ફેરવાઈ ગયા ! એવા સંવેદનથી એમના આત્મા પરમ ભાવાવેશમાં આવી જઇ શ્રી આનંદઘનજીને સર્વ પ્રદેશથી નમી પડ્યો એમ પ્રતીત ચાય છે. આમ યગ્રાવિજયજીના પરમાર્થ ગુરુ આ આનંદ્રવનજીના પ્રસંગ ઉપરઘી વર્ષ-માનમાં પણ જે કાઇ વ્યલ્પશ્રુત વ્યવ્ઞાની જન યત્રતત્રથી કંઇક શીખી લઇ પાતાને જ્ઞાની માની એસવાના કાંકા રાખતા હાય તેને ઘણા ઘટા લેવા જેવું. છે. અને આ સુદ્દી ખાસ લક્ષમાં લેવા યાગ્ય છે.

આવા આનં દયનછ જેવા પરમાર્થ શુરુના ચરણે જેણે અધ્યાત્મ, યાગ, લક્ષિતની પ્રેરણાનું પીયૂપપાન કર્યું હતું, એવા શ્રીમાન્ યશાવિજયછ એક આદર્શ સમાજ મુધારક અને પ્રખર ધર્મા હતારક તરી કે મુપ્રસિદ્ધ છે. એ ખાસ નોંધવા જેલું છે કે તેમના મુધારા આધુનિકાની જેમ ચઢાતદા સ્વચ્છં દાતુયાયી નથી, પણ નિર્મલ શાસપ્રાગોતુયાયી ને શુદ્ધ આદર્શવાદી છે. લગવાન પ્રણીત મૃળ આદર્શ માર્ગથી સમાજને બ્રષ્ટ શયેદા દેખી, ચૃદ્ધચાને તેમજ સાધુઓને વિપરીતપણે—વિમુખપણે વર્તાતા નિદાળી, ક્ષુદ્ર નિર્માલ્ય મતમતાંતરાથી અખંડ ઢીન સમાજને ખંડખંડ—છિન્નબિન્ન થયેદા લાળી, તેમનું લાવના-શીલ સાચી અંતરદાહવાળું દૃદય અત્યંત દ્રત્રીભૂત થયું હતું—કકળી ઊઠ્યું હતું. એટલે જ તે સમાજના સદા દ્રર કરવાના એકાંત નિર્મલ કેદ્ધાર્થી તેઓશ્રીએ લગવાન સીમ'ધર પાસે 'સાદી ત્રણસો' ને 'સવાસા ગાથા'ના સ્તવનાદિના વ્યાજઘી કરેણુ પાદાર પાડયો છે કે, 'હે લગવના! આ જિનશાસનની શી દશા!' અને તેના બહાને કેવળ નિષ્કારણ કરુણાઘી પ્રેરિત થઇ સુયુપ્ત સમાજને કેટલીક વાર સખત શબ્દપ્રહારના 'ચાબખા' મારી ઢઉંહપો છે—જાશત કર્યો છે; તથા ગૃદ્ધચના ને સાધુના હચિત આદર્શ ધર્મ સ્પષ્ટપણે સર્વત્ર શાસાધારપૂર્વંક મીઠાશઘી રહ્યુ કરી, સમાજને ઘરી વળેલા કુમાધુઓ ને કુશરુઓની નીઠરપણે સખત છાટકણી કાઢી છે.

તેઓશ્રી શ્રી સીમ'ધરસ્વામીજને સ્તવતાં વિનંતિ કરે છે કે, 'હે ભગવન્! કૃપા કરાંને મને શુદ્ધ માર્ગ ખતાવા! આ ભરતક્ષેત્રના હાેકાએ ભગવાન જિનના અનુપમ શાસનના જે હાલહવાલ કર્યા છે, તે નેઈને મારું હૃદય ચિરાઈ જાય છે, એટલે આપની પાસે પાકાર પાડું છું. આ વર્ત્તમાન દુઃષમ કાલના અંધશ્રદ્ધાળી, ગાડિયા પ્રવાહ જેવા, મતાશ્રદ્ધી, વક્ઠ-જડ લાેકા કાેઈ સાચી વાત કહે તાે તે સાંભળવાને પણ તૈયાર નથી! તેને કંઈ કહેલું તે અરણ્યમાં પાક મૂકવા જેલું છે! એટલે મારી શાસનદાઝની વરાળ હું આપની પાસે ઠાલલું છું.

' જુઓ ! કાઇ લોકો સ્ત્રવિરુદ્ધ આચારે ચાલી રહ્યા છે, ને સ્ત્રવિરુદ્ધ બાલી રહ્યા છે. આવા કાઇ જેના એમ કહે છે કે, 'અમે ભગવાનના માર્ગ રાખીએ છીએ-અમે છીએ તા માર્ગ ચાલે છે!' આ તે હું કેમ શુદ્ધ માનું? આ લાકા ખાટા ક્ડ-કપટવાળા આલંખન દેખાડી મુખ્ય-ભાળા લાકને પતિત કરે છે, ને આજ્ઞાભંગરૂપ કાળું તિલક પાતાના કપાળે ચાઢે છે!'

" ચાલે સૂત્ર વિરુદ્ધાચારે, ભાખે સત્ર વિરુદ્ધા; એક કહે અમે મારગ રાખું, તે કેમ માતું શુદ્ધા રે. જિન્છ! વિનતડી અવધારેા. આલ'ખન ફૂડાં દેખાડી, મુગધ લાકને પાડે; આણાલ'ગ તિલક તે કાળું, થાપે આપ નિલાડે રે…જિન્છ૦"

વળી, બીજે કાઈ એમ કહે છે કે, "જેમ ઘણા લાક કરતા હાય તેમ કર્યે જતું, એમાં શી ચર્ચા કરવી ! 'મહાજન ચાલે તે માર્ગ ' કહો છે ને તેમાં જ આપણને અર્ચા-પૂજા પ્રાપ્ત થાય છે." ત્યારે શ્રી ઘશાવિજયજી તેના સાયુસાવૃતા જવાળ આપે છે કે, આ જગત્માં અનાર્થોની વસ્તી કરતાં આર્ય લાકાની વસ્તી ઘણી એછી છે. આર્યમાં પણ કીન ઘાડા છે, તે જૈનમાં પણ પરિણત જન-આત્મપરિણામી, સાચા કીનત્વથી ભાવિતાતમાં એવા જેના ઘાડા છે, અને તેમાં પણ શ્રમણ અર્થાત્ સાચા સાધુગુણથી સંપન્ન એવા સંતજના ઘાડા છે, આદી માથું મુંડાવ્યું છે એવા વેપધારી દ્રવ્યલિંગી સાધુઓ તા ઘણા છે, અને તમે જે મહાજન-મહાજન કહા છા, તે તા જિનાત્તા-જિનશાયન પાળના હાય તે 'મહાજન' છે, બાકી માત્ર મુખે શાયન-શાયનની બાંગ મારતા હાય તે મહાજન નથી. જેની પૃંકે ટાળું ચાલતું હાય એવા અત્તાની બહે ગગ્ઇને ચલાવનારા-આચાર્ય કહેવાતા હાય, તો પણ તે મહાજન નથી, એવું ધમંદાય ગણીનું વચન વિચારી, મનને બાંગું મ કરા!

"આર્ય થાડા અનારજ જનઘી, જૈન આર્યમાં ધાડા; તેમાં પણ પરિણત જન ધાડા, શમણ અલપ-ઝઢ માડા. કે જિન્છ! અજ્ઞાની નવિ હોવે મહાજન, જે પણ ચર્લવે ટાળું; ધર્મદાસ ગણી વચન વિચારી, મન નવિ દીજે બાળુ, કે જિન્છ: " ભાગવાન આગાંએ યથાનખ્યપણે ચાલતા એવા એક જ શાધુ દાય, એક જ સાધ્યો દાય, એક જ શાવક દાય, એક જ શાવિકા દાય, તા પણ તે આગાયુકાને 'સંવ' તામ ઘટે છે, બાકી તા અસ્થિયં ધાત છે, એમ શ્રી ભદ્રબાદુસ્તામીજીએ 'આવસ્યક સ્ત્ર' માં કહ્યું છે, યાટે નિજ હેર્દ-સ્વચ્છં કે ચાલતા દાય તે અગાની છે, તે તેની નિશાએ ચાલતાશ પણ અગાની છે. આવા અગાની એ ગચ્છતા ધણીરણી ચર્ક પડી ગચ્છતે ચલાવે તા તે અનંત સંસારી છે. એ ખંડખંઠ પંદિત દાય-' ઈધર દધર કંઈ નાળવાયાળા દાય' તે કાંઇ ગાની નથી. ગાની તા જે નિશ્ચિત સમય નાણે તે છે, એમ 'સંપતિસ્ત્ર'માં સ્પષ્ટ કહ્યું છે. બાકી એ સમયના-સિહાંતરૂપ અખાંઠ વસ્તુના વિનિશ્ચય ન દાય, તા જેમ જેમ અદુશ્યત્તે, બદુજનને સંમત-માનીના દાય, અને જેમ જેમ ઝાઝા શિષ્યપરિવાસ્થી પરિ વરેદા દાય, તેમ તેમ તેમ તા જિનશાસનના વૈરી છે-દુશ્મન છે.

"અણાની નિજ છે કે સાંલે, તેમ નિશ્રાય વિદારી; અણાની જો ગચ્છને ચલવે, તે ના અતંત સંસારી. રે જિનેટ ! ખેડ ખેડ પંડિત જે દુાવે, તે નિવ કહિય નાણી; નિશ્ચિત સબય લહે તે નાણી, સંપતિની સહિનાણી. રે જિનેટ ! જિમ જિમ અહુશુત અહુજનસંખત, અડુ સિપ્ય પરવર્ષિયા; તિમ તિમ જિનેશાસનના વયરી, જો નવિ નિશ્ચય દરિયા. રે જિનેટ ! "

ઇત્યાદિ વચનાથી તેઓશ્રીએ દાંકાની અધ્યશ્રદા પર મુખત કુકાર-પ્રદાર કર્યો છે, અને પાતાની પાછળ ધાર્દું ટાંગું ચલાવનારા અજ્ઞાની ગચ્છાલિપતિઓને મહાજન માનનારાઓની બ્રાંતિ બાંગી નાખી છે, તેમજ નિશ્ચય જ્ઞાનથી રહિત-સખંદ વસ્તુ તત્ત્વના જ્ઞાનથી રહિત એવા અદ્યુશ્ત-થણા વિદ્યાન તથા થણા દાંકપ્રિય તથા સંકંદા શિષ્યાના પરિવારથી પરિવરેલા કહેવાતા ગ્રુઝઓના બ્રાહ્મ દાકમાકથી ને વાળાદ લસ્સી અંબઇ જનારા મુખ્ય જેનાને તેવા અજ્ઞાનીઓથી સાળવાઈ ન જવાની રમષ્ટ એતવણી આપી છે.

કાઇ લોકો એમ કહે છે કે, 'લાગાફિક કપ્ટે કરી અમે સિક્ષાવૃત્તિ કરીએ છીએ તે મુનિયાર્ગ છે,' તેના શ્રી યગ્રોવિજયછ જવાય આપે છે કે, તે માનવું મિચ્ઘા છે, કારણ કે માચા મુમુસુપણ વિના—આત્માર્થીપણ દિના જનમનની અનુવૃત્તિએ ચાલવું, જનમનરંજન કરવું, લાકને ગુટું દેખાડવા પ્રવર્ત્તવું, તે માર્ગ હોય નહિ. વળી એ માત્ર કપ્ટે કરીને જ મુનિયાર્ગ પ્રાપ્ત થઇ જેતા હાય, તા મળદ પણ સારા ત્રણવા એકએ, કારણ કે તે વાપડા લાર વહે છે, તડકામાં બમે છે ને બાદ પ્રદ્રા અમે છે! માટે માત્ર વાદ્ય કાયકદેશાદિકથી કાંઇ મુનિયાલું આવતું નથી, અને તેવા પુરુષની જે ભિષ્ણ છે તે લશકરણી પીરુષની સિક્ષા છે.

"જેં કંઇ સુનિ આરંગ પાવે, ભળદ થાયે તેા સારા; ભાર વહે જે નાવડ ભમના, ખમના ગાદ પ્રદાસ રે જિન્છ! સાદે પાપ અનુબધા પાપે, બલદુરુણ જિન બિક્ષા; પૂરવ સવ વત ખેડન કુક્ષ એ, પંચ વસ્તુની શિક્ષા રે જિન્છ!" વળી કાઇ એમ કહે છે કે, 'અમે લિંગથો તરીશું, મુનિના-સાધુના વેષ, દ્રવ્યલિંગ અમે ધારણ કશું' છે તેથી તરીશું; અને જૈન લિંગ એ મુંદર છે. ' તેા તે વાત મિશ્યા છે— ખાટી છે, કારણ કે શુણુ વિના તરાય નહિ, તથારૂપ મુનિપણાના—સાધુપણાના—નિર્શં ઘ-પણાના—શ્રમણપણાના શુણુ વિના તરાય નહિ,—જેમ લુજા વિના તારા ન તરી શકે તેમ. તેમ જ કાઈ નાટિકયા—વેષવિડંળક ખાટો સાધુના વેષ પહેરીને આવે, તાે તેને નમતાં જેમ દાષ છે, તેમ સાધુશુણુ રહિત એવા વેષવિડંળકને—સાધુવેષની વિડંળના કરનાર જાણીને નમીએ તાે દાષના પાય જ છે.

"કાઇ કહે અમે લિ'ગ તરશુ', .જૈન લિ'ગ છે વારુ; તે મિથ્યા–નવિ ગુણ વિભુ તરિયે, ભુજ વિભુ ન તારે તારુ. રે જિનછ! કૂંટ લિંગ જિમ પ્રગટ વિડંખક, જાણી નમનાં દાપ; નિધ'ધસ (?) જાણીતે નમતાં, તિમ જ કહ્યો તસ પાપ રે જિનછ!"

ઇત્યાદિ અનેક પ્રકારે તેએાશ્રીએ સમાજના સહા સાફ કર્યો છે, લાકાની અધ્યદ્ધા ઉડાડી છે અને તેઓને સત્ય શ્રદ્ધા પ્રત્યે દોયાં છે. સાથે સાથે તેઓએ સુસાધુઓના–નિર્ગં ઘ વીતરાગી સુનીશ્વરાનાં લક્ષણા સ્પષ્ટપણે ખતાવી આકર્શ સુનિપણાની–નિર્ગં ધપણાની ભારા-ભાર પ્રશંસા કરી છે. જેમ કે—

> "ધન્ય તે મુનિવરા રે, જે ચાલે સમભાવે; ભવસાયર લીલાએ ઊતરે, સંયમ ક્રિરયા નાવે. ધન્ય૦ ભાગ પંક તજી ઉપર ખેઠા, પંકજ પરે જે ન્યારા; સિંહ પરે નિજ વિક્રમ શૂરા, ત્રિભુવન જન આધારા. ધન્ય૦ જ્ઞાનવ'ત જ્ઞાની શું મળતા, તન મન વચને સાચા; દ્રવ્ય ભાવ ગુધા જે ભાખે, સાચી જિતની વાચા. ધન્ય૦"

તે મુનિવરા ધન્ય છે કે, જે સમબાવે-રાગદેષ રહિતપણે ચાલી રહ્યા છે! જે આત્મ-પરિષ્ઠુતિમય શુદ્ધ કિયારૂપ નીકાવડે આ ભવસમુદ્રને લીલામાં-રમત માત્રમાં પાર ઊતરી જાય છે! ભાગ-પંક છાડી દર્છ, જે તે ઉપર ઉદાસીન ઘર્ષને પંકળ-કમલની જેમ ન્યારા ઘર્ષને છેકા છે, સિંહની જેમ જે આત્મપરાકમી શૃરવીર છે-પાતાના આંતર શ્રુક્ષ્યાને હષ્ણવામાં વીર છે, ને જે ત્રિળુવન જનના આધારરૂપ છે, જે પાતે જ્ઞાનવંત-આત્મનાનો છે ને જ્ઞાની પુરુપા સાથે ઢળીમળીને રહે છે, જે તન, મન, વચને સાચા છે, અને જે દ્રવ્ય-ભાવઘી શુદ્ધ એવી સાચી જિનની વાચા વદે છે, સાચા વીતરાગપ્રણીત માર્ગના ઉપરેશ આપે છે, એવા તે નિશંધ મુનિવરાને-શ્રમણાને ધન્ય છે!

તથારૂપ મુનિગુણ ધારવા જે વ્યસમાં હોય, પણ જે શુદ્ધ પ્રરૂપક હોય, તે સંવિજ્ઞપાસિક પણ જિનશાસનને શાભાવે છે; કારણ કે સરળ પરિજાગી, નિરં'લી હૈં.ઈ પાતાના સાધુપણાના દાવા કે ડાળ કરતા નથી, પણ સાંવિજ્ઞ પાસિક છીએ, એમ સરળતાથી કહે છે. ઇત્યાદિ વાત પણ ત્યાં વિસ્તારીને ચર્ચી છે. પણ જેનામાં સાચું આદશે મુનિપણું પણ નથી, ને જે નિર્દ લ સંવિત્તપાસિક પણ નથી, ને પાતે સાધુ છે, મુનિ છે, આચાર છે, એમ માટાઈમાં રાચે છે; અને બાહ્ય ફિયાના હાળડમાક ને આહંબર કરે છે, તેની ભવ-અરઘટમાલા ઘટે નહિ. એવા કહેવાતા દ્રવ્ય સાધુઓ કે દ્રવ્ય આચારો પાતાના શિષ્યસમુદાય સંચે છે, પણ મનને ખંચતા નથી! અને શ્રંય ભણી ઢાકને વંચે છે—છેતરે છે! તેઓ કેશ લ્ંચે છે, પણ માયાકપટ છાડતા નથી! આવા જે હાય તેના પાંચ ત્રતમાંથી એક ત્રતનું ઠેકાર્ણ રહેતું નથી!

" માચે માઢાઇમાં જે ઝુનિ, ચલવે ઢાકડમાલા; શુદ્ધ પ્રક્ષપણ ગુણ વિણ ન ઘટે, તસ ભવ અરહકમાલા…ધન્ય૦ નિજ ગણ સંચે, મન નવિ ખેંચે, શ્રંથ ભણી જન વધ્યે; હુંચે કેશ ન મુંચે માયા, તે ન રહે વ્રત પંચે…ધન્ય૦ "

જે યાગ-શ્રંથના લાવ લાલતા નથી અને લાયુ તા પ્રકાશતા નથી, અને દ્વાગટ માટાઈ મનમાં રાખે છે, તેનાથી શુલ્લુ દ્વર નાસે છે! જે પરપરિલ્યુતિને પાતાની માને છે ને આર્ત્તાલ્યાનમાં વતે છે, અને જે બંધ-માક્ષનાં કારલુ લાલુતા નથી, તે 'પાપ શ્રમલુ' તા પહેલે શુલ્લુકાથું છે; તે અજ્ઞાની દંભી સાધુઓ પાતાને લાલે છઠ્ઠે શુલ્લુકાથું માનતા હાય, પછ્યુ તે તા પહેલા શુધ્લુકાથું જ વતે છે.

> " યાગ થ'થના ભાવ ન જાથે, જાથે તો ન પ્રકાશે; ક્રાક્ટ મારાઇ મન રાખે, તસ ગુણ દૂરે નાશે…ધન્ય૦ પર પરિણતિ પાતાની માતે, વરતે આરત ધ્યાતે; ખ'ધ માક્ષ કારણ ન પિઝાતે, તે પહિલે ગુણકાથેુ…ધન્ય૦ "

ઇત્યાદિ પ્રકારે કુસાધુએાની-કુગુરુએાની સખત ઝાટકસ્ત્રી કાઢી નિમેલ સુનિપસ્ત્રાના આદશેની ત્યાં સુપ્રતિષ્ઠાં કરી છે.

આમ અનેક પ્રકારે આ મહાપ્રભાવક ધર્મ ધુરંધર મહાત્મા યશાવિજયાએ શુદ્ધ માર્ગ પ્રભાવના કરી, ભારતનું ભૂપલ વધાર્યું, જગતને ઉત્તમ તત્ત્વનાનની ભેટ ધરી, અને સમાજની વિવિધ પ્રકારે સેવા કરી અનન્ય જનકલ્યાણ કર્યું. આવા પરમ ઉપકારી પુરુષનું જગત્ કેટલું ભધું ઋણી છે!

ગૂર્જરભૂષણ ન્યાયવિશારદ ન્યાયાચાર્ય ઉપાધ્યાયછ શ્રી સદ્ યશોવિજયજનું જીવન અને પ્રાણુપતિષ્ઠા યાને આપણું કર્તવ્ય

[લેખક : શ્રીયુત નિર્મલ]

ઉપાધ્યાયછ, લઘુહરિલદ્ર કે દ્વિતીય હૈમચંદ્ર તરીકેની ખ્યાતિ પ્રાપ્ત કરનાર ગૂજેર દેશની મહાન વિભ્રતિરૂપ શ્રીજિનશાસન પ્રભાવક યશાવિજયછ મહારાજશ્રીના છવન ઉપર અનેકાનેક લેખા આજે આવવાના સંભવ છે. કારણ કે ઉપાધ્યાયછ પ્રત્યેની હાર્દિક લિક્ત સહુ કાઈ વિદ્વદ્વર્ગ કે આમજનતાના દિલમાં એક યા ખીછ રીતે પણ છલાછલ ભરેલી છે.

જો કે તે મહાપુરુષે પ્રાચીન કાળની પદ્ધતિએ આત્મપ્રશંસા નહિ કરવાના કારણે યા ખીજા કાઈ પણ કારણે, પાતે તા કાઈ પણ સ્થળે પાતાના જીવનના ઉલ્લેખ સરખા પણ કર્યા નથી. પણ તેઓશ્રીના સમકાલીન પૂ. કાન્તિવિજયજી કૃત " સુજસવેલીલાસ " નામના ગ્રંથ ઉપરથી જે કાંઈ સ્પષ્ટાસ્પષ્ટ ખીના મળે છે તે પ્રસિદ્ધ થયેલ છે. છતાં જન્મ દિવસની નાંધ કાઇ પણ જગ્યાએ જેવામાં આવતી નથી.

ઉપાધ્યાયછ મહારાજને વિદ્યાના અવતાર કહીએ તેા પણ તે અતિશયાકિત ભરેલું નથી. કારણ કે તેમના કાળમાં તેમણે એટલા બધા વિદ્યાના ફેલાવા કર્યો હતા કે સામાન્ય જનતા પણ શ્લાકબદ્ધ કે ન્યાયભાષામાં વાતચીત કરી શકતી હતી.

ન્યાય, ત્યાકરણ, કાવ્ય, કેાશ, ધર્મશાસ, યાગ વગેરે કાઈ પણ વિષય એવા ન હતા કે જેમાં ઉપાધ્યાયછ મહારાજે કંઇ ને કંઇ લખ્યું ન હાય. બીજા શ્રંથકારાના સંસ્કૃત—પ્રાકૃતનાં ભાષાંતરા ગુજરાતી કે હિંદીમાં થાય ત્યારે ઉપાધ્યાયછ મહારાજના ગુજરાતી ભાષાત્મક ' દ્રવ્ય—ગુણ—પર્યાય 'ના રાસનું સંસ્કૃતમાં ભાષાંતર થયું હતું, એ તેમની અપૂર્વ શ્રન્થકાર તરીકે સામચ્યે જણાવતી વિશિષ્ટતા છે.

ઉપાધ્યાયછ મહારાજે સાહિત્ય દ્વારા જૈન શાસનના ખહાળા ફૈલાવા અને કુમત વાદીઓના હઠાગ્રહનું સુંદર શૈલીમાં નિરસન કર્યું છે. આજથી લગભગ અઢીસા વર્ષ પૂર્વેના એટલે તે મહાપુરુષના કાળ એવા હતા કે જે તેમના જેવા વિદ્વત્તાપૂર્ણ પુરુષ ન પાક્યા હાત તા જૈન સમાજની શી પરિસ્થિતિ હાત તેની કલ્પના સરખી પણ ન આવી શકે. તેઓશ્રીએ જૈન સમાજને સભર અને ઉન્નત રાખવામાં મહાન લાગ આપ્યા છે. તેમજ ગ્રંથરત્ના રૂપી માટા વારસા આપ્યા છે.

ઉપાધ્યાયછ મહારાજે તર્ક, આગમ, અધ્યાત્મ અને યાગના વિષયમાં સેંકઠા વિદ્રદ્ ભાગ્ય બ્ર'શાની રચના કરી છે, એટલું જ નહિ પણ પદા, સજ્ઝાયા, સ્તવના, રાસાએા વગેરે ખાલાપભાગ્ય ગુજરાતી સાહિત્યની અદિતીય રચના કરવી પણ તેઓ ચૂકયા ન હતા. ર્ચુંતામ્ખર, દિગ'ખર કે સ્થાનકવાસી ત્રણેય ફિરકારૂપ જેન દર્શનમાં નવીન ન્યાયની શૈલીમાં ઘ'ચ સર્જન કરનાર તરીકે આદિ કે અ'તરૂપ અદ્યાપિ પર્ય'ત તેએ જ છે.

ટેલિકાલચર્વત્ર શ્રી હેમચંદ્રસ્રિ પછી મહારામચ્ચેશાલી વિદ્રાનાની ગણનામાં ઉપાધ્યાયજની તુલના કરી શકે તેવા મહાવિદ્રાન્ જાણવામાં કે સાંભળવામાં આવ્યા નથી જેથી દ્વિતીય હેમચંદ્ર કહેવામાં અતિશરોકિતને જરાય સ્થાન નથી.

ચાગિવિષયના પ્રથમ વિવેચનકાર વિરદ્ધકિત ૧૪૪૪ લંઘના પ્રણેતા હરિસદ્રસ્રિ થયા છે. તેમના વચનાના ભાવને ઊઠાણપૂર્વક સમજી તેમના લંઘાની ઢીકા તેમજ સ્વતંત્ર પ્રકરણા રચનાર આપણા નાયક ઉપાધ્યાયજી મહારાજ જ છે, જેથી તેમનું હશુ હરિસદ્ર નામ સંપૂર્ણ સ્વરૂપે અન્વર્ષક છે.

વિદ્યાધામ કાશીમાં રહી વિદ્યાભ્યાય કરતી વખતે એક અજેય પહિતશિ રામણું વાદ માટે આવી ચઢવા. જેને જીતવામાં કાશીના યમર્ચ વિદ્યાનાનું સામધ્ય પર્દા પડ્યું ત્યારે ગુવાંત્રા મેળવી પૃ. ઉપાધ્યાયજી મહારાજે જીત મેળવી. તેથી કાશીના વિદ્યાનાએ સેત્રા મળી "ન્યાય વિદ્યાર" બિટુદ આપ્યું. ત્યારબાદ સાં જ ન્યાયના વિષયને લગતા માં અંધાની રચના કરવાથી તેઓશીને "ન્યાયાચાર્ય" બિટુદ મળ્યું તેવા પણ કલ્લેખ મળી આવે છે. તેઓશીએ બીહાદિ દર્શનાની એકાન્તવાદી યુક્તિઓનું ખંદન કરતા એ લાખ 'લાંક પ્રમાણ ન્યાયબંધ' ' હાંકત ૧૦૮ બંધ અને " બિન્દુ" પદાંકિત મા બંધ એમ કેટલાય બંધાની રચના કરી છે. પણ દુઃખની વાત એ છે કે આ બધા બંધા હાલમાં ઉપલબ્ધ નથી. જે કાંઇ સાહિત્ય ઉપલબ્ધ છે તે તે! માત્ર તેમની રચનાની દૃષ્ટિએ ૧૦ ટકા જ હાય તેમ લાએ છે. તેમના પછી તેમના શિષ્યોમાં કે પરંપરામાં પણ તેવા કાંઇ વિદ્યાન્ થયા હોય તેમ લાએ છે. તેમના પછી તેમના શિષ્યોમાં કે પરંપરામાં પણ તેવા કાંઇ વિદ્યાન્ થયા હોય તેમ લાગતું નથી. નહિ તો અઢીએ! વર્ષ એટલા ટુંકા કાળમાં બધું સાદિત્ય નષ્ટપ્રાય કેમ બની જાય ?

ઉપાધ્યાયછ મહારાજશીએ ' તત્તાથં-સાધ્ય' ઉપર દીકા રચી છે. તેમાંના માત્ર પ્રથમ અધ્યાય જેટલા જ લાગ મળે છે. જેના ઉપર વર્ત માનાચાર્ય શ્રીમદિત્યદર્શનસરિછ મહારાજશીએ દીકા રચેલ છે. તેની પ્રેચકાપી કરતાં હતાં ત્યારે મને પદે પદે વિચાર કરતાં તેઓશ્રીનું એક એક ઈકા:કીવ્યું વચન અગાધ પાંદિત્યપૃષ્ટું લાગવા સાથે નવીનતા અપત્તું હતું, તાં દર્શય અધ્યાયની દીકા મળી હાત તાં આજે મળતી બીજી તત્ત્વાર્થની દીકાઓમાં કાઈ અનેરી લાત પાડત, અને ઘણું બાદ્યા વિચારવાનું મળત. છતાં આજે જે બંધા મળે છે, તે પણ આપણે માટે તાં એટલા અધા છે કે તેને સારી રીતે વાંચવા વિચારવા માટે સારુંય જીવન પૃષ્યું નથી.

આપણું લેલે ઉપાધ્યાયછની પ્રતિમાની પ્રતિષ્ઠામાં મગ્ન હોઈએ પણ તેમની વાસ્ત્રવિષ્ઠ પ્રાદ્યુપ્રતિષ્ઠા તેા ત્યારે જ ગણી શકાય કે મન, વચન અને કાયાને નીચાવી લાવિની પ્રળતે ઉપકૃત થવા માટે અથાગ પ્રયાસ શર્ક તેમના ખનાવેલા બ્રાંચાતું વાચન, મનન અને પરિશીલન કરીએ, અનુપલબ્ધ શ્રંથાની શાધખાળ કરીએ, તેમજ તેમનાં વર્ચના પ્રમાણે યથાશકય માર્ગના પાલનરૂપ એાછામાં એાછી જરૂરિયાતાથી આપણા જીવનને નિલાવવા જેટલા સ્વાર્થત્યાં કેળવીએ, કે જેમાં અંશતઃ પણુ ભૂતમાત્રની સેવાના ફાળા આવે. તે રીતે તેમના પગલે અનુસરીએ તો જ આપણે તેમના સાગ્રા ઉપાસક અને સેવક છીએ અને તેમણે આપેલા વારસાને જાળવી રાખ્યા ગણાય. નહિતર વારસામાં મળેલી વસ્તુના દુરુપયાં કરનાર અકુલીન પુત્રની જેમ આપણે પણુ એવા મહાપુરુપાને અન્યાય આપી રહ્યા હાઇએ એમ શું નથી લાગતું ! તા અને તેટલા તન, મન, ધન ખરચી તેમના અપ્રકાશિત શ્રંથોને પ્રકાશમાં લાવવા અને પઠન-પાઠનના માટા વર્ગા ઇનામી અને ઉપાધિઓની યોજનાપૂર્વંક પણ ઊલાં કરવાં હાલના તળકે અતિઆવશ્યક છે.

ઉપાધ્યાયજ સમય તાર્કિક વિદ્વાન્ હતા, એટલું જ નહીં પણ તેએ લારાલાર આધ્યાત્મક જ્ઞાની પણ હતા, એ તેએાશ્રીના અનાવેલા 'અધ્યાત્મસાર, અધ્યાત્માપનિષદ, જ્ઞાનસાર ' વગેરે ગ્રંથોથી સ્પષ્ટ માલમ પહે છે.

પૂર્વ મહાપુરુષા જિનલદ્રગણિ ક્ષમાશ્રમણ તથા સિદ્ધસેન દિવાકરનાં પરસ્પર વિરુદ્ધ દેખાતાં છતાં નયાપેક્ષ વચનાને આગ્રહ રાખ્યા સિવાય બરાબર સંગત કરી આપવામાં ઉપાધ્યાયછ મહારાજશ્રીની તુલનાત્મક દૃષ્ટિએ અજબ કામ કર્યું છે તે આજના આચાર્થપુંગવોએ ધડા લેવા જેવું છે.

તેમના જીવનને લગતી કેટલીક કિંવદ'તીએ ચાલી આવે છે, અને તેમાં તથ્ય હોવાની સંભાવના ઘણી જણાય છે. તેમાંની કેટલીક ટ્ર'કાણમાં અહી' આપવામાં આવે છે:-

- (૧) ભાલવયમાં માતાની સાથે ઉપાશ્રયે પ્રતિક્રમછુ કરવા જતાં એક વખત ઉપાશ્રયમાં પ્રતિક્રમછુ કરાવનાર કોઇ ન હતું, ત્યારે માતાને બહુ ખેદ થયા. બાલકે ખેદનું કારણુ પૂછતાં માતાએ જણાવ્યું કે, પુત્ર! આજે મારું પ્રતિક્રમણુ રહી જશે. કારણુ કે આજે ઉપાશ્રયમાં કોઇ પ્રતિક્રમણુ કરાવનાર નથી. ત્યારે પુત્રે માતાને કહ્યું: 'તમે જરાય દુ:ખ ન લાવા, હું પ્રતિક્રમણુ કરાવું, અને માતાને આશ્ચર્ય પમાડતા બાલકે આપ્યુંય પ્રતિક્રમણુ ખરાબર કરાવ્યું. ઉપાશ્રયે માતાની સાથે જતાં સાંભળવા માત્રથી યાદ રહી ગયું હતું. આ હકીકત શુરુમહારાજે જાણતાં ભાવ મહાપુરુષની ગણતરીએ માતા પાસે પુત્રની માગણી કરી, અને માતાએ પણ તે માગણી ખૂબ હ્રષ્ પૂર્વક આવકારી હતી. *
- (૨) ઉપાધ્યાયછ મહારાજ કાશીથી અભ્યાસ કરી તાજા જ આવેલા અને સાંજે ગુરુમહારાજ સાથે પ્રતિક્રમણ કરતાં સજ્ઝાય બાલવાના સમય થતાં ગુરુમહારાજે બાલવી શરૂ કરી ત્યારે શ્રાવકાએ ગુરુમહારાજને સૂંચન કર્યું કે, 'સાહેળ! આપના વિદ્વાન શિષ્ય કાશીમાં અભ્યાસ કરી આવ્યા છે તા તેમને સજ્ઝાય બાલવા કહા, તા કંઇક નવું સાંભળવા અને જાણવા મળે.' ગુરૂ છએ કહ્યું કે, 'બાલ ત્યારે.' ઉપાધ્યાયછ મહારાજે કહ્યું કે,

^{*} આ પણ એક દંતકથા છે. સંપા.

'સાહેળ! સજ્ઝાય તેં આવહતી નથી.' ત્યારે શ્રાવદામાંથી દાઇક બાલી લેઠયું દે, " બાર વર્ષ કાશીમાં રહી શું ધાસ વાઢ્યું !" ઉપાધ્યાયછ મહારાજ તા ચૂપ રહ્યા. પણ ખીજે દિવસે સજ્ઝાયના અવસર પામી આદેશ માગી સજ્ઝાય કહેવા માંડી. વખત ઘણો વીતવા માંડયો, બધા અકળાયા પણ ઉપાધ્યાયછ મહારાજે તો સજ્ઝાય ખાલવી ચાલુ જ રાખી. ટકાર કરતાર ટકાર કરવામાં પણ ઉતાવળા હાય છે, તેમ અકળાઇ જવામાં પણ સહુથી આગળ હાય છે. એટલે ટકાર કરતાર શ્રાવક જ કહ્યું: 'હવે કયાં સુધી ચાલશે !' જવાબમાં ઉપાધ્યાયછ મહારાજશીએ કહ્યું કે, " કાશીમાં બાર વર્ષ વાઢેલા ઘાસના આ તા પૂળા બંધાય છે." આથી ટકાર કરતાર શ્રાવક ઝંખવાણા પઢી ગયા અને ક્ષમા યાચી સ્તુતિ કરવા લાગ્યા.

(3) કેલિકાલસવેત્ત હેમચંદ્રસૂરિ, ઉદયન મંત્રી, પરમાર્હત કુમારપાળ, વસ્તુપાળ, તેજપાળ આદિના સુવર્ણમય છવનથી જવલંત અને નવાંગી દીકાકાર શ્રી અલયદેવસૂરિ મહારાજથી આરાધ્ય સ્થંભન પાર્યનાથના નામે સ્થંભનપુર તરીકે પ્રસિદ્ધ થયેલ ખંભાત શહેરમાં ઉપાધ્યાયછ મહારાજ એક વખત વ્યાખ્યાન આપી રહ્યા હતા. સભા તેમની અમૃત વાણીના શ્રવહુમાં એકતાન હતી. ઉપાધ્યાયછ મ. શ્રીના વિદ્યાનુ એક વખત દરિદ્રાવસ્થામાં આવી ગયેલ અને પોતાના શિષ્ય ઉચ્ચકાદિના વિદ્વાન અને પ્રખર વ્યાખ્યાતા બનેલ છે એમ જાણી તેમની શાધ કરતા કરતા ખંભાતમાં ભરાબર ચાલુ વ્યાખ્યાનમાં જ આવી પહોંચ્યા. ઉપાધ્યાયછએ પછુ આવનાર વ્યક્તિને એકદમ એાળખી લીધી. અને જેતાંવે ત જ પરિસ્થિતિનું માપ કાઢી લઈ વાણીના પ્રવાહ એકદમ વિદ્યાની મહત્તામાં ફેરબ્યા અને અંતે જાણાવ્યું કે, મારામાં આજે જે કંઈક અંશે પહુ વિદ્વત્તા કે વકતૃતા જોઇ શકા છા તે આ આગનતુક વ્યક્તિના જ પ્રભાવ છે. એમ જણાવી વિદ્યાગુરનું એાળખાદ્યુ આપવા સાથે ગ્રાન, ગ્રાની તથા ગ્રાનનાં સાધનાનું બહુમાન સ્યુચતું એવું અસરકારક વ્યાખ્યાન આપ્યું કે જેથી પારિસિ ભણાવવા સમયે એઠેલા સમય શ્રાવક—શ્રાવિકાગદ્યે પાતે પહેરેલાં સર્વ આભ્યદ્યો શુરુનાય વિદ્યાગુરુના ચરણે ધરી દીધાં જે તે જમાનાની ગણતરીએ ૨૦ થી ૪૦ હજરની કીમતનાં હતાં. ધન્ય છે તેમની વાણીને અને ભાલુક શ્રાવકાની ઉદારતાને!

આપણે પછુ તેમના જ શિષ્યો અને શાવદા છીએ. તેઓશ્રીના સાહિત્ય માટે જેટલું કરીએ તેટલું એછું જ છે. એટલે તેમના સાહિત્યના પ્રચાર, પદનપાદન, અપ્રગટ અંધાનું પ્રકાશન, અને અલભ્ય અંધાની પૂર્તિ કરીએ એ જ તેમની સાચી અને મહામૂલી પ્રતિષ્ઠા છે અને પ્રતિષ્ઠાદિનની સાત્વિક ઊજવણી છે; એટલું જ જણાવી તે બાબતમાં આપણે સહુને સામર્થ્ય અને પ્રેરણ આપવા શાસનદેવ પ્રત્યે પ્રાર્થના કરી ઉપાધ્યાયછના સંબંધમાં અધ્રા, અબ્યવસ્થિત કે કૃતિ રહેવા પામેલ લેખન અદલ ક્ષમા યાચી અટકી જાઉં છું.

યશઃપ્રકાશ

[લેખક : શ્રીયુત છળીલદાસ કેશરીચ'દ સંવવી]

(રાગ-સુના સુના ખેકરાર હમલાંગ)
તુમ શાસનકા શિરતાજ, દુનિયા કિયા તે ઉદ્ધાર;
આવા આવા મેરે દ્વાર, શાઉ મેં હૃદિ ઉજિયાલકે--તુમે૦
ન્યાયવિદ્દ ન્યાયકા આચાર્ય હૈ, હેમ હરિભદ્રસમ પ્રાતિભ હૈ;
કિયા શાસનકા ઉદ્ધાર, કર્ તુમસે પુકાર,
સત્ર સારસ્વત આજ, શાઉ મેં હૃદિ ઉજિયાલકે--તુમે૦
મેરે શાસનમે ઝદિદ્ર અપાર હૈ, મેરે શાસનમે વૈભવ અપાર હૈ,
મેરે શાસનકી કીર્તિ અખંડ હૈ, મેરે શાસનમે દાનકા પ્રવાહ હૈ,
દુ:ખ ઇતના હી યાર, જ્ઞાન દીપક પ્રગટાય,
કરું તુમસે પુકાર, શાઉ મેં હૃદિ ઉજિયાલકે--તુમે૦
જ્ઞાનગંગાકું ભહેલાઇ હૈ, જ્ઞાંન ઝરેલાંકા કૈલાસ હૈ,
કરું વિનતિ આ વાર, સુના નિર્મલ દિલદાર,
આવા આવા મેરે દાર, શાઉ મે હૃદિ ઉજિયાલકે--તુમે૦

अज्ञातवाग्विवेकानां, पण्डितत्वाभिमानिनाम्। विपं यद् वर्तते वाचि, मुखे नाशीविपस्य तत्॥५॥

વાણીના વિવેકને નહિ જાજુનારા અને પાંડિત્યનું અલિમાન કરનારાની વાણી અને મુખમાં જેવું ઝેર દેાય છે એવું તા સર્પનું ઝેર પણ હાતું નથી.

द्वात्रिशिका]

[શ્રી. યશાવિજયજ

卐

ખે જયોતિ ધ^રરાની મિલનજયાત ઉપાધ્યાયજ શ્રી યશાવિજયજી અને અવવૃત આનંદધનજી [આલેખક—શ્રીયુત મણિલાલ ગે. પાદરાકર]

¹¹ વાણી વાચક જસતણી-કાેર્ક તથે ન અધૃરી રે. ¹⁷

" कान्ताघरनुषास्त्रादाद्युनो यङ्ज्ञायने मुलप्॥ विन्दुः पार्ने तद्द्यात्मग्राह्मस्त्रादमुलोद्घेः॥ "

કાન્તાના અધરામૃતના આસ્વાદથી યુવકાને જે મુખ ઘાય છે, તે મુખ તેા અધ્યાત્મ શાસના આસ્વાદથી ઘનાર મુખર્પ મમુદ્રની પાસે એક બિન્દુ સમાન છે.—અધ્યાત્મસાર.

[राम-इंगो]

જય સરસત સરસ ગરેયા!

નય^ર અજય મુષ્યા રસરેયા,³
અજય તું ન્યાયવિશારક તાકિંક, યુતંત્રર થન વરસેયા,
અક્ષ્મુત જ્ઞાની મુરમભ્રિ લહેરે, લઘુહરિસક લહુરિયાં.
હેમચંક મુમરાવત હરપળ, ગ્રંથ બહુલ રચેયા.
સદ્દ લક્ષણ સદ્દગુણ નિજગુણ, સ્વાતુસવ નિત્ય રમેયા.
ક્લ્યગુણ પર્યાય મુનય, નિક્ષેપ સંગ સમરેયા.
ગર્જન યેગાધ્યાત્મ સ્વગુણ, રસ રાસ રમણ રસર્વયા.^૪
ડાલત દિલ આનન્દ્રથન પેખત. આનંદ પંષ્ય ચહેયા.
શાસન મુલદ મુપાદક વાચક, ઉષાધ્યાય બિર્સ્ટયા-પાદશદર

" सर्वदर्शनिक्याचो, विश्ववन्द्यो मुनीखरः । झानी ध्यानी ममोर्मक्तो, विरागाणां शिरोमणिः ॥ १॥

૧. શ્રીષાળ સત્ર, ખંડ ૪, દાળ ૧૨.

२. नष-श्रीभद्दना भुदुशी नषविक्रयक्त, स्थलनष्, न्याप.

રસ્વૈયા–દાનાયૃતરસ પીતાર–રસ્યૃતિ.

૪ " મુશ્જૂ વ્યાનંદધન મિટને, મદાજ્યાત જગાવી જે, વિદ્વુધ જન વ્યન્તરે પ્રધ્રો, સદા એ જર્લા રહે; રમાર્ષ્ઠ સારસ્વત સત્રે, નિષ્ધાક્ષર એ શહે, વ્યતે વિદ્દુદ્ધતા દેવે, નિજનંદ સદા શહે."—સેખક

शुद्धधर्मीपदेष्टा च, जैनशासनद्योतकः ॥ ध्यानिनामग्रणीर्मान्यो, भावचारित्रसाधकः ॥ २ ॥ अध्यात्मोद्धारकः पूज्यः, समतानन्दभाक् च यः ॥ आनन्दधनयोगीशः, जीयाद् भारतमण्डले ॥ ३ ॥ [श्रीबुद्धिसागरजी]

મહામૈયા લગવતી શારદાના ઉત્સંગે અતિ લાહથી ખેલી ખેલી મસ્ત બનેલા, કુર્ચાલી શારદતું^પ વિરલ બિટુદ પામેલા, વારાણસીના ગ'ગા કિનારે દેવી શારદાને આરાધી પ્રકટ દશેન અને વરદાન પામેલા, ગિર્વાણ ગિરામાં ન્યાયતકે આદિ ગૂઢ વિષયા પર ૧૦૮ મહાલું શા આલેખી કાશીના પ્રકાંઠ વિદ્વત્તાવાળા પંડિતા દ્વારા જેમને ન્યાયાચાર્ય. ન્યાયવિશારદ પદ અપેજી કરાયું છે એવા, ગુજર લાષામાં અનેક ગહન વિષયો પર સંખ્યામંધ મહાર્થીના સ્થયિતા, જન્મથી સંસ્કારસંપન્ન. પ્રથમ થઈ ગયેલા પ્રભવાદિ છ શ્રુતકૈવળી જેવા શ્રુતચાેગસ પન્ન શ્રુતધર, શતલક્ષ સદ્દગુણી, શ્રુતગ્રાનસુરમણિ, સૂક્ષ્મદ્રષ્ટા, ગુદ્ધિનિધાન, જ્ઞાનવારિધિ, સકલ શાસ્ત્રપાર ગત, અન્વીક્ષિકી વિદ્યાધારી, મહાન્ સમન્વયકાર, પ્રખર નૈયાયિક, ભગવાન શ્રી હરિભદ્રસૂરિ પછી જેમ શ્રી હૈમવાં દ્રસૂરિજી તેમ તેમની પાછળ શાસનસંરક્ષક ધમે સેનાપતિ, દ્રવ્ય અને ભાવથી શુદ્ધાચાર ક્રિયાપાલક, વાદિમદભ'જક, સકલ સુનિશેખર, દ્રવ્યાનુયાગના દરિયા ઉલ્લ'ઘી જનાર, શાસન માટે ઝઝનાર, મહાન્ અધ્યાત્મન્નાની, પરમગુણાતુરાગી, આલખ્રદ્યાચારો, સ્વનામધન્ય ઉપાધ્યાયછ શ્રીમદ્ યશાવિજયછ મહારાજ અને મહાન અવધૃત, અધ્યાતમ જ્ઞાનમસ્તીમાં સદાદિત મસ્ત, ગિરિ-ગુફા કાતરામાં અંતરાત્મદશામાં ખેલનાર, યાગ, અધ્યાત્મ જ્ઞાન, ત્યાગ, તપ, તિતિક્ષાદિ વિષયા કસાઠસ ભરી આત્મ-પ્રભુને ગાનાર, અલખ, અનાહતના ગાન ગવૈયા એવા શ્રીમદ્ આનન્દઘનછ-એવા છે ભારતવર્ષના યાગાધ્યાત્મ-જ્ઞાન-જરોતિષ'રા પરસ્પર અપરિચિત એવા, જ્યારે પરમ જિજ્ઞાસ દેષ્ટિએ મળ્યા હશે. ત્યારે ઉભયે કેવા નિજાત્માનંદ લુંટથો હશે ? જ્ઞાનસરાવરની પાસે કેવી સુરસ લહાણુ લીધી-દીધી હશે ? જાણ્યા તેવા જ પ્રમાણ્યા હશે ત્યારે કેવી અને કેટલી હવાં-મત્ત દશામાં પરસ્પર લેટી પડ્યા હશે ? કેટલા આદર, આનંદ, ઉલ્લાસ પ્રક્ટયો હશે. વૃદ્ધિ પામ્યા હશે ? પરસ્પરનાં મુખદશંન ખાદ, અંતરાત્મદશાના દર્શને કેવા પ્રમાદ ઊછાવા હશે ? કેવા સ્થળ, સમય, સંનેગે એ અદ્ભુત પ્રસંગ નમ્યા હશે ? એ હુકીકત પ્રત્યેક ગુણાનુરાગી, આત્મહિતાથી, ગ્રાનિષયાસુ, આધારક, વિચારક અને તત્ત્વન ચિન્તકને જરૂર પ્રમુદિત કરનાર ખનશે એમ માની આ જ્યાત પ્રકટાવવા પ્રયત્ન કરું છું.

આ ખન્ને મહામાનવાની સાઘંત જીવનગાથા ઉપલબ્ધ છે તેટલી શાધવાના અમારા પ્રયત્ના વર્ષોથી ચાલુ છે. અત્યાર સુધીમાં આ દિશામાં શાધખાળના ઘણા પ્રયાસા સેવાયા છે:—

પ. કુર્યાલી શારદ-મૂછાળી શારદા.

૧. ' શ્રી. જાનન્દધન પદમંત્રદ્યું' લાવાર્થ, ગું. ૧૯૬૯માં કે ખાયા, જેમાં શ્રીમદૃતાં ૧૦૮ પદા પર વિસ્તૃત વિવેચન માટે અદ્યક્ષદ્મચારી, પંચમટુવતઘારી સ્વ૦ મુહિસાગર-સુરીશ્વરે આ એ મહાયુર્ગુપોને આહેખ્યા છે.

(આ પ્રધનાં ડેમી સાઈઝનાં ૧૦૦ પૃષ્ટ નક્ષર દકોકન રહ્યુ કરે છે. શી વ્યાનન્દયન છરત્યરિતની ક્ષ્યરેખા ૧૦૧ પૃષ્ટ રેપ્ટિ છે.–બુટેરા શી વ્યષ્યાત્મનાન પ્રસારક મંદળ લક્ષ્ટ કરેલ શી. છુ. સૂ. અંચનાળા અત્યાંક ૨૫. આ ગ્રાંચ પ્રક્રેટ થયા ભાદ તેની ત્રીષ્ઠ આકૃતિ પ્રક્રેટ કરવાની તૈયારી છે.)

- ર. શ્રીમદ્ ખુહિસાગરસ્રિજિએ શ્રી યશેષિજયછ છવન વિશે, વડાદરાના શ્રી સંપતરાવ ગાયક્વાડની વિનંતીએ પાદરા હતા ત્યારે વડાદરા ગુજરાતી સાઉત્ય પરિષદ માટે લખેદો, પરિષદમાં વંચાયેલા વિસ્તૃત નિર્ણય સં. ૧૯૬૮ માં હખાયલા છે.
- 3. આ સિવાય આ વિષય પરત્વે, તૈન સાહિત્ય પ્રકાશના વિકાસ માટે પરમ પ્રુટુવાર્ય સેવનાર સ્વર્ગ માહનહાલ દહીચંદ દેસાઇએ પ્રગ પ્રકાશ પાડ્યો છે. ' જેન સાહિત્યના સંશિપ્ત ઇતિહાસ.' સં. ૧૯૮૯ તથા અન્ય અનેક દેખા દ્વારા આ આળત તેમણે પ્લગ અર્ચી-પ્રકાશી છે.
- ૪. સ્વર્ગ ચાલીચંદ્રલાઈ કાપરિયાના શ્રી. આનન્દ્રવનજી માટેના સંશાધનાત્મક પ્રયત્ત પ્રસંશનીય દ્વા. આ કપરાંત મારબીવાળા ટાંગ્ વલ્લલદાસ નેવૃસી, સુંઅર્ધવાળા ટાંગ્ લગવાનદાસ મગ મહેલા વળેરેના પ્રયાસા ચાલુ જ છે.
- ય. સ્ત્ર. આચાર્ય છી. બુલિયાગરયૂરિજીએ આ છે ત્યાતિક રાતું મિલનચિત્ર યુંદર રીતે રહ્યુ કર્યું છે.

અમારા આશય આ છે ત્યાતિકરિયાની મિલન્ડ્રિયાત કેવી ને કેટલા લાપલ્યમાન દુશે? કેટલા શુગાતુરાળ શાકન્યા હશે ? તેમાંથી જગતને નવીન શું મન્યું વ્યાર મળે તેમ છે ? વાણીના અમૃતસોત કેવા વદ્યો હશે એનું કર્યાન કરાવવાના છે.

જેન શાસનધારી, આગમાના અકલુત જ્ઞાતા ઉપાધ્યાયછ શ્રીમદ યશે.વિજયછ મહારાજ ફરતા ફરતા ગિરિશજ આશુ તરફ લાય છે, તે સમયે તેઓ સાધુઓમાં વહુ-શ્રુત ગણતા. તેમણે સાંમત્રશું કે, એક અવધૃત જેવા હૈન સાધુ શ્રી આનન્દ્રથનછ અધ્યાન્યજ્ઞાનમાં ઊંડા ઊનરી ગયા છે, તેમની ઉપદેશશેદી—દ્રમ્યાનુંયાળ આદિમાં અકલુત છે, યાંગાનુલવ ચમતારી છે, એકાકી વિચરે છે, શુકાઓમાં યાંગ માથે છે. કવચિત જ જનસંપર્ધ માધે છે અને આછુછની આમપામ ડુંગરાઓમાં અલખની ધૃત મચાવી રહ્યા છે. આશે તેમના પત્તો મળે તેમ તેમને મળવાની ભાવના ચેવતા હતા, અને પાત્રે પણ અધ્યાત્મજ્ઞાનના ઉપદેશ આપવા શાલ્યા હતા. આ વાલુ અવધૃત આનન્દ્રથનછએ પણ ઉપાધ્યાયછની અપૃત્ર વિક્તાની પ્રશ્રં માં સંવળી હતી. મિહાંત-પારામી, ફરાળ એવા ઉપાધ્યાયછ પાતાની નશકના પ્રદેશમાં વિચરતા હતા તે સંલળી

શ્રી. આનન્દઘનજ * ઉપાધ્યાયજને મળવા એકારી ચાલી નીકળ્યા. એક ગામમાં ઉપાશ્રયમાં થ્રી. યશાવિજયજી વ્યાખ્યાન વાંચે છે. સાધુએા, યતિએા, શ્રાવક, શ્રાવિકાએા એકવિત્તે શ્રવણ કરે છે. શ્રી. આનન્દધનજી જીર્ણું –વસ્ત્રધારી સાધુ, યતિએા લેગા એક બાજુ બેસી ગયા ને વ્યાખ્યાન શ્રવજ કરવા લાગ્યા. ઉપાધ્યાયજી અધ્યાત્મન્નાન પર અસરકારક શૈલીમાં **૦યાખ્યાન કરવા લાગ્યા અને અનેક તકેાંથી અધ્યાત્મન્નાન પરત્વે વિવેચન કરવા લાગ્યા**. વ્યાખ્યાનની ઝડી વરસવા લાગી, શ્રોતાવગ^ડ એકચિત્તે વ્યાખ્યાનરસમાં તલ્લીન ખની માથાં ધુણાવવા લાગ્યા. સીના મુખ પર આનંદ છવાઈ ગયા ને એકીઅવાજે બાલવા લાગ્યા— "વાહ! આપના જેવા અધ્યાત્મના ઉપદેશ દેનાર આ કાળને વિષે કાઈ નથી. ઉપાધ્યાયજીએ આખી સલામાં પાતાના વ્યાખ્યાનની અસર શ્રોતાએા ઉપર કેવી અને કેટલી પડી છે તે નેઈ લીધું. સૌ રસતર**ે**ગાળ બન્યા હતા—માત્ર એક છર્જું વસ્ત્રધારી વૃદ્ધ સામાન્ય સાધુ તરક તેમની દષ્ટિ જતાં તેને આ વ્યાખ્યાનથી વિશેષ પ્રમાદ થયા જણાયા નહિ, તેથી તેમણું પૂછ્યું: ' હે વૃદ્ધ સાધુ ! તેં વ્યાખ્યાન ખરાભર સાંભળ્યું ? અધ્યાત્મન્નાનના વ્યાખ્યા-ુંનમાં તને સમજણુ પડી કે ?' શ્રી. આનન્દઘનજી બાલ્યા કે, " આપશ્રી અધ્યાત્મજ્ઞાનના વ્યાખ્યાનમાં શાસ્ત્રોથી ઉત્તમ દક્ષતા દાખવા છા." આ સાંભળીને ઉપાધ્યાયજી તેમના સામે નાઈ રહ્યા. ખુખ વિચારને અંતે તેમનું નામ પૂછતાં તેએાશ્રી પાતે જ શ્રી. ગ્યાનન્દઘનછ છે એમ જણાતાં તેમણે વિનયથી જણાવ્યું કે, "મેં વિવેચન કરેલા શ્લાક પર આપ 'વિવેચન કરા.'' આથી શ્રી. આનન્દઘનજીએ ઉપાધ્યાયજીના અતિઆગ્રહેવશ પાટ પર બેસી તે જ શ્લાક પર વિવેચન કરવા માંડશું. ત્રજુ કલાક વીતી ગયા તે જ્જાયા નહિ. શ્રોતાવર્ષમાં ંઆનન્દની લહરીએા લહેરાવા લાગી. આનન્દઘન**છ**ની નાભિમાંથી તન્મથપણે પરિલામ પામીને જે શખ્દા નીકળતા હતા, જે રસ રેલાતાે હતા, જે સ્પષ્ટીકરણ થતું હતું તેનું ઉપાધ્યાયજ અરાખર ધ્યાન રાખતા હતા. અધ્યાત્મ ગ્રાનરસમાં જેમનું ચિત્ત પરિહ્યુમી ગર્યુ છે, રામરામ રંગાઈ ગયાં છે એવા શ્રી. આનન્દઘનજીના શખ્દામાં ગ્રાન અને વિરાગની એવી ઉત્તમ છાયા છવાતી હતી કે જે અકૃત્રિમપણે—સ્વાભાવિક જણાતી હતી. તેની ઉપાધ્યાયંજી પર ખૂબ અસર થઈ. તેઓ પાતે પણુ એ આનંદઘનમાં ઘરાઈ ગયા અને તે સમયે શ્રી. આનન્દેવનજીના સાચા આત્મદર્શનની ઝાંખી તેમને થઈ. અંતરમાં તેમના પ્રતિ પુજ્યભાવ પ્રકટથો, નયનામાં હર્ષાતિરેક ઉભરાયા અને પ્રેમપૃર્ગંક સ્તુતિ કરી ખંનેએ પરસ્પર ગુણાતુરાગભરી ગ્રાનગાશી કરી. અધ્યાત્મગ્રાનની અસલિયત, તેતું પરિણમન અને પરિપાક અને પાત્રતા શ્રી. ઉપાધ્યાયજીને સમજાયાં અને પાતાને આ પ્રસંગ ધન્ય ઘડી જેવા લાગ્યાે. અધ્યાત્મજ્ઞાનનું સાર્યું રહસ્ય તા તેના સ્વાનુસવ અને પચન છે, ને તા જ તે જીવન પલટા-વનાર અને પ્રાંતે આત્મપલટા સ્વભાવ પામીને રસમાં ઝીલી શકે અને કામ કાઢી જાય. ખંને મિત્રા જેવા ખૂબ આત્મનાનાંદ લૂંટી છૂટા પડ્યા, પછુ ઉપાધ્યાયછની નસેનસમાં,

^{· &}quot; ઉપાધ્યાયજીના છવન આસપાસ સારી નરસી અનેક દંતકયાએ જેડાઇ ગઇ છે તે રીતે આ પણુ એક દંતકથા છે. આની વાસ્તવિકતા માટે ચકાસણી કરવી રહી. સં'પા૦

રામરામમાં અધ્યાત્મ રસરંગ છવાઈ ગયા. મિલન પછીના તેમના તમામ ગ્રંથામાં એ સ્પષ્ટ ધાય છે. છ્યા પક્યા પછી પણું પુનઃ કયારે મળાશે? એ લાવના લાગૃત રહી ગઈ, અને શ્રી. આનન્દવનજતું સમરજુ દ્વયમાં અંકાઈ ગયું. ઘાય વખત બાદ તેમને શ્રી. આનન્દ વનજના મિલનની તીવ ઝંખના લગી. પૃવેં અનુલવેલ અધ્યાત્મરસાસ્ત્રાદ પુનઃ માછુવા તત્પર ખન્યા અને આપ્યુ પહાઢ તરફ ચાલી નીકળ્યા. ત્યાં પહોંચી પ્રથમ તીર્થોધરાજને દર્શન, સ્પર્શને જઈ પછી ત્યાં ફરતા બાવાએ! વગેરેને પૃછપરછ કરવા માંડી કે, શ્રી. આનન્દવનજી કયાં મળશે? અન્તે શાધ કરવા માંડી. આ અવધૃત તો નિરૂપાધિક, સુંદર પરમાણવાળું, ચિત્ત કરે તેલું સ્થળ મળતાં જ આસન જમાવે; પછી ગુફા હોય કે કાતર કે શિલા તપાસ કરતાં સમાચાર મત્યા કે એક મસ્ત્ર સાધુ અમુક શુફામાં છે. ઉપાધ્યાયજી તરત જ લાં પહોંચી ગયા અને મિત્ર આનન્દવનજી શુફામાંથી બહાર નીકળે તેની રાહ લેતા જ્ઞલા.

શ્રીમદ્ આન-દર્શન શ્રાન સમાધિમાંથી મુદ્રત થઈ હમણાં જ શુકામાંથી અહાર નીકળતા હતા. આન-હષ્વંક આત્મળાન આતા હતા. મુખ પર દિવ્ય આનંદની ચેનલરી છાયા છવાઈ હતા. નયનામાં અષ્વં શમરૂર ઉલરાતો હતો. રામરામ વિકસ્તર થયાં હતાં. ધીર ગંભીર પગલે અહાર આવ્યા ને ઉપાધ્યાયજીએ તેમને આ અદ્ભુત દશામાં જેયા. શ્રીમકે ઉપાધ્યાયજીને મિલનની તીત્ર જિણાસાલરી તાલાવેદીલયાં જેયા. બનેનાં નયના મળ્યાં. શ્રી. આન-દરનજ ઝડપથી ઉપાધ્યાયજી તરફ ધર્મ્યા, બને લેડી પડ્યા. આનંદ ગાનદાય થયા. બનેનાં નેત્રો મારફત આંતર શુળાનુરાય પ્રેમલાવ જ્યાહળવા લાગ્યા. ઉપાધ્યાયજીના આનંદ ઉદલાસ પળ અપ્વં હતા, બને પ્રેપ્ય વિદાન હતા, ભાવમર્યા કવિ હતા, પરસ્પર અનુલિત અનુરાગવાળા હતા. બનેએ એકપીઅનાં દૃદયાની નિર્મળતા, લાવના, શુળાનુરાગિતા, પ્રેમ લેયાં, ભર્યાં, અનુલચ્યાં હતાં અને બને સર્વચ્રેષ્ટ કવિ હતા, એટલે સાચા ઉદલસિત ચિત્તવાળા સુકવિ જ્યારે રંગમાં આવી જઈ દૃદયની લાવનાને પ્રકટ કન્યા મયે છે ત્યારે તે કાત્ર્યસ્તરરૂપે ઝરવા લાગે છે. તે વસ્તુને સાફાત્ કરે છે. આ તેન ત્રાહ્મત્ સરસ્ત્રતી પુત્ર! અધ્યાત્મ ધર્મના બને મહાન સ્ત્રભા. બનેની જીદ્રવાએમ ભાવનાસાગર વહાવવા તત્પર અની જીદી અને ઉપાધ્યાયજીએ પ્રયમ અડપરી હપાડી ગાવા માંદી:—

અષ્ટપદ્ધી

i

્(સય-કાનદા)

મારમ ચલત ચંલત ગાત. આનંદવત પારે, રતુત આનંદ ભરપુર, મારમગ તાકા સરૂપ ભૂષ ત્રિતું લાક થે ત્યારા, ભરસત મુખ પર ત્રૂર, મારમગ ૧ સુમતિ સખીકે સંગ, નિત નિત દારત, કબહુ ન હોત હી દૃર. મારગ૦ જરાવિજય કહે સુતા આનંદ્રઘન, હમ તુમ મિલે હઝૂર. મારગ૦ ર

₹

આનંદઘનકા આનંદ સુજશ હી ગાવત, રહુત આનન્દ સુમતા સંગ. આનંદ૦ સુમતિ સખી એાર ન બલ આનંદઘન, મિલ રહે ગંગતરંગ. આનંદ૦ ૧ મનમંજન કરકે નિમળ કિયા હે ચિત્ત, તા પર લગાયા હે અવિહડ રંગ; જસવિજય કહે સુનત હી દેખા, સુખ પાયા ખાત અભ'ગ. આનંદ૦ ર

8

(રાગ–નાયકી, તાલ–ચંપક)

આનંદ કાેઉ નહિ પાવે, જોઇ પાવે સાેઇ આનંદઘન ધ્યાવે. આગ આનંદ કાેનર્પ, કાેન આનંદઘન, આનંદગુણ કાેણ લખાવે. આ૦ સહજ સંતાેષ આનંદગુણ પ્રક્ટત, સળ દુવિધા સીઢ જાવે. આ૦ જસ કહે સાે હી આનંદઘન પાવત, અંતરજ્યાેત જગાવે. આ૦

૪ (રાગ–તાલ–ચ[°]૫ક)

માન'દ ઠાર ઠાર નહિ પાયા, આનન્દ આનન્દમે સમાયા. આ૦ રતિ અરતિ દાઉ સંગ લીય વરજિત, અરથને હાથ તપાયા. આ૦ કાઉ આન'દઘન છિદ્ર હી પેખત, જસરાય સંગ ચઢી આયા. આ૦ આન'દઘન આન'દરસ ઝીલતા દેખત હી જસ ગુણ ગાયા. આ૦

> ्ष् ज्यायर

(રાગ–નાયકી)

આન' દ કાે હમ દિખલાવા, આo કહાં ઢુંકત તું મૂરખ પંછી, આનન્દ હાર ન બેકાવા. આo ૧ એસી દશા આનન્દ સમ પ્રકાત, તા સુખ અલખ લખાવા, જોઈ પાવે સાેઈ કહુ ન કહાવત, સુજસ ગાવત તાકા વધાવા. આo ૧

(:ાગ–કાનડા, તાલ–રૂપક)

આનન્દકી ગત આનન્દઘન જાણે, આ૦ વાઈ સુખ સહજ અચલ અલખ પદ, વા સુખ સુજસ બખાને. આ૦ ૧ યુજરા વિલાસ અભ પ્રકેર આનન્દ્રસ, આનંદ અક્ષય ખળતે. આંદ અમી દશા જળ પ્રકેર ચિત્ત અંતર, માે હી આનન્દ્રઘન પિછાને. આંદ ર

એરી આજ વ્યાનન્દ ભયા ધરે, તેરા મુખ નીરખ નીરખ, રામરામ શીતલ ભયા અંગ અંગ. એરીટ શુદ્ધ સમજબ સમતાસ્થ ઝીલત, વ્યાનદ્દ્યન ભયા અંગ અંગ. એરીટ દ એસી આનંદ દશા પ્રકેશ ચિત્ત અંતર, તાકા પ્રભાવ(પ્રવાદ)ચલત નિર્મલ ગંગ: વાહી ગંગ મુખતા દાઉ મિલ સહે, જસવિજય સીતલકે મુંગ. એરીટ ર

1

અતન્દવનકે સંગ સુજસ હી મિલે જખ, નખ આનન્દસમ ભર્યા સુજસ. પારસ સંગ લાહા જો ક્રેસ્સન. ક'ચન હેત હી નાકે કસ આગ દ ખીર નીર નીમિલ રહે આનન્દ જસ, સુમતિ સખીક સંગ ભર્યા હે એક રસ. ભાવ ખપાઇ સુજસ વિલાસ ભર્ય, સિદ્ધ સ્વકૃષ લીયે ક્રસમસ. આગ ર

શ્રી. ઉપાધ્યાયછતું અતિ આતૃર મિલન, ત્યાકુલ-દૃદયે શુકા પાસે આવલું અને શ્રી. આન-દઘનછતું આત્મગાન ગાતાં ગાતાં મસ્ત આત્મદર્શનમાં શુકા ષહાર નીકળલું. ષ્રનેનાં પરસ્પર દર્શન-અતિ પ્રેમપૂર્વંક ષ્રનેના હપેંદ્રગાર અને લેઠી પડલું. નયનામાંથી અદ્દુપુત આનંદનું ડ્યકુલું, રામરાજીનું વિકસ્ત્રર થલું આમ આ બે મહાન ત્યોતિષદાની મિલનન્યોત કેટલી ત્યલંત-એકરૂપ-અદ્ભુત હઠો ? એને એનાર પહારનાં ઝાર-પાપાણ અને કુદ્દસ્ત સિવાય કાળુ હાય? પછી તે હપાધ્યાયછ હળાંવેશમાં, શુણાનુર મ દિલ્સે શ્રી. આન-દઘનજીને જેવા આત્મરૂપ મામ સૂચ્યે છે તેવા જ અંતરાદ્દ્રગાસ્ત્રપે ચીતરવા પ્રશ્નાની કાત્યલહેની ઉછાળ છે. એમ એક પછી એક આઠ પદ નવાં ખનતાં લાય છે-ગવાતાં લાય છે અને પ્રતિ એ કાત્ય સ્થતરીમાં છે છે.

આ અપ્રયક્ષના જવાળરૂપે શી. આન-દઘનછ પણ તરત જ એક અપ્રયક્ષ ઉપાધ્યાયદાના શળાતુવાદની અનાવે છે જે હાલ ઉપલબ્ધ નથી છતાં 'શ્રી. આન-દઘનછ પદમંશ્રહ ભાવાર્થ'માં શ્રીમદ્ સહિસાબરસ્રિશ લખે છે કે, "શ્રીમદ્ આન-દઘનછએ શ્રીમદ્ ઉપાધ્યાયદાના શુંભું ના રાગ વંડ તેમની અપ્રયક્ષ હ્રયોદ્યારરૂપે રચી છે. ઘણા જેના તરફથી એ પ્રમાણે શવણ કર્શું છે. વિનાયુરવાળા અધ્યાતમાપ્રેમી શા મુસ્સંદ સ્વરૂપચંદે (જેમણે પાતા અધ્યાતમાપ્રેમી શા મુસ્સંદ સ્વરૂપચંદે (જેમણે પાતા અધ્યાતમાપ્રેમી શા મુસ્સંદ સ્વરૂપચંદે (જેમણે પોતા અધ્યાતમાપ્ર કર્યા છે, એમણે) કર્યું હતું કે, "મેં મુસ્તમાં મંદ પ્રદેપપત્રી સાલ લખલામાં આન-દધનછએ ઉપાધ્યાયછ માટેની રચેદી અપ્રપદ્મ વાંચી છે." અધ્યાએ મુસ્તમાં તપાસ કરી હતી પણ અમાને તે હાથ લાગી નથી. એ અપ્રપદ્મમાં ઉપાધ્યાયશ્કના શ્રોફોનું વર્ણન છે. ઉપાધ્યાયછ બીતાર્થ અને આળમાના આધાર સત્ય-

ઉપદેશક છે, તેમનામાં ઘણી લઘુતા છે, ગુણાનુરાગમાં રંગાયેલા હૃદયવાળા છે, જૈનશાસનના રક્ષક—પ્રવર્તંક અને પૃશું પ્રેમી છે. જૈનશાસનના ઉદય કરવા માટે પરિપૃશું આત્મભાગ આપનાર છે. વ્યવહાર અને નિશ્ચય નયથી જૈનધમ પ્રવર્તંક છે. જૈનશાસનની હૃદયમાં ઊંદી દાઝ ધારણ કરનાર અને વિશાળ દષ્ટિવાળા છે. વૈરાગ્ય અને ત્યાગમાં તત્પર આત્માના ગુણા પક્ટ કરવાની પરિપૃશું ઇચ્છાવાળા છે. એ પ્રકારે ઉપાધ્યાયજીના ગુણાની એમાં રતુતિ કરી છે.

શ્રીમદ્ આનન્દઘનજીને તથા શ્રીમદ્ ઉપાધ્યાયજીને અત્યંત ગાઢ પ્રેમ હાવાનું નીચલું પદ * સાક્ષી પૂરે છે. કારણુ કે પાતાના હૃદયના ઊભરા સત્યમિત્રની આગળ પ્રકટ કરી શકાય છે. આ ગ્રંથમાં પ્રકટ થયેલાં પદા ઉપરાંત આ પદ છે.

'' નિરંજન યાર ગાયે કૈસે મિલેંગ, નિરંજન૦ દૂર કેપ્યું મે' દરિયા હુંગર, ઉંચે બાદલ નીચે જમીયું તલે. નિ૦ ધરતીમે` ઘડુતા ન પિછાતું, અગ્નિ સહુ તા મેરી દેહી જલે. નિ૦ ચ્યાનન્દઘન કહે 'જસા' સુના બાતાં, યેહી મિલે તા મેરા ફેરા ડળે. નિ૦ મ

હવે આપણે ઉપાધ્યાયજીએ કરેલી અષ્ટપદીના સંક્ષેપમાં ભાવાર્થ નેઈએ :—

ગુણાનુરાગની મૂર્તિ રૂપ ઉપાધ્યાયભ્યે આન-દઘનભની જે સ્તુતિ કરી છે અને તેમાં આન-દઘનના આત્મા, કે જે આન-દઘન અર્થાત આનં દસમૂહમાં રમતા હતા, તેની સાથે મુમતિના સંખંધ સરસ રીતે વર્લું બ્યા છે. પ્રિય આન-દઘનભ ચાલ્યા આવતા હતા, મુખ પર લાસ્ય વિલસતું નહાતું, આત્મધ્યાનનું ઘેન આંખમાં રમતું હતું, રામરાજી વિકસ્વર બની રહી હતી, યાગાનુસવના રસ પ્રકટપણે રેલાતા હતા તે વખતે પ્રમળ મિલનાત્મુક ગુણાનુરાગી ઉપાધ્યાયભ મહારાજ આતુરતાથી તેમના સામે એઈ રહ્યા છે તે વખતે—

'જશવિજય કહે સુના આનન્દઘન, હમ તુમ મિલે હઝ્ર.'

્રશ્રી. આનન્દઘનછ કહે છે:—

'સ્યશરસ મેઘનકે હમ માર.'

પ્રશસ્ય ધર્મ – ગાન – રાગથી ખંને – પરસ્પરને જાશે અંતરમાં ઉતારી – સમાવી રહ્યા છે. આ પ્રસંગે ખંનેની કેવી દશા થઈ હશે? યશાવિજયજી કહે છે કે આન-દમાં મસ્ત આન-દઘનજી છે એમ મેં સાંભળ્યું હતું અને રૂબરૂ મેં તે જ પ્રમાણે જોયું અને તેથી હું અભંગ સુખ પામ્યા છું. આવા ઉદ્ગારા કાઢીને તેઓશ્રી સાધુદશાની આન-દખુમારીના પવિત્રતાના જગતને ખ્યાલ આપે છે. આન-દનું હાટ નથી, આન-દ કાઈ હાટ – વાટ કે ઘાટમાં નથી. જે આન-દના ઘનીભૂત આત્માને ધ્યાવે છે તે જ આન-દ પામે છે—

" જસ કંહે સાહી આનન્દ્રઘન પાવત, અન્તર જ્યાત જગાવે. "

^{*} સારાભાઇ નવાળે પાતાના તરફથી મંદ્ર ૨૦૧૦માં ખહાર પાડેલ 'આનન્દયન પદ્ય રતનાવલી 'ની પ્રસ્તાવનામાં કંઈ પણ આધાર આપ્યા વિના યશાવિજયજી એ જ પાછલી અવસ્થામાં 'આનન્દયન પદ' નામધારી બન્યા હતા આવું જે સાહસિક વિધાન કર્યું છે તે અંગેના ચર્યા–જવાબ ઉપાધ્યાયજી ભગવાનના તૈયાર થનારા જીવનચરિત્રમાં અપાશે. સં'પાo

કૈપાધ્યાયજ કહે છે કે આત્માના આનન્દ તો આત્માનું ધ્યાન ધરીને આનન્દથનજ પામે છે અને આત્માની અનુસવ જ્યાતિ પ્રકરાવે છે. કેટલાક આનન્દથનજનાં છિટ્ટો દેખતા હતા અને નિન્દા કરતા હતા, તે વાતને પ્રકટ કરતા છતાં અને આનન્દથનજની સ્તુતિ કરતા છતાં કૈપાધ્યાયજએ—

> " કાે આનત્રવન છિડ હી પેખન, જસરાય સંગ ચંદી આયા; આનત્રવન આનત્રસ ઝીલત, કેખન હી જસગુજુ ગાયા. "

આ ઉદ્ગારા વલા ગંભીર અને ઉચ્ચ સાવપૃષ્ટું છે. આથી ઉપાધ્યાયજના દ્ધમાંથી ક્રિક્તા શબ્હતરગાની શહેરીએ વડે, તેમના આત્માની શુણાતુરાગગીલતા કેટલી બધી વધી હશે તેના ખ્યાલ આવે છે. આન-હ્રયન સમાન પાતાની છ્યાને, ઉપાધ્યાયજએ—

" એસી દરા આનત્સન પ્રકાન, ના સુખ અલખ લખાયા "

ઇસ્થાદિ સ્તુતિશબ્દો વડે કંચ્છી છે. આન-કદશાને આન-દવનછ નહી શકે અન્ય મતુષ્યા તાે તેમતું દ્દય કયાંથી અવગાયી શકે? એમ વદતા છતાં ઉપાધ્યાયછ—

> " આનન્દ્રી ગત આનન્દ્રવન જાણું." " એસી દર્શા જય પ્રકેરે ચિત્ત અન્તર, સાહી આતન્દ્રવ પિષ્ઠાને. "

આ પ્રયાણે દ્રશ્યેદ્વાર પ્રકટ કરે છે. અધ્યાતમતાના શ્રંત પ્રદેશમાં વિચરીને જેલે આતમાતું ધ્યાન ધ્યું છે અને આનંદની ખુમારી દીધી છે એવા પુરુષ ખરેખર આનન્દયનછને વસ્તૃતા એપાખી શકે છે. ઉપાધ્યાયછએ આનન્દયનની દ્યાને લણી હતી, કારણ કે આનન્દયનના આનન્દ શ્વરાઓવાળા દ્દયની દેદ પારે તેઓ ગયા હતા. આનન્દયનજનું શાન્ત પ્રમન્ન આતંદ્રી મુખ દેખતાં શ્રીપદ્ જ્યાંચાયછના દ્દયમાં આનન્દ પ્રકટયો અને પાતાના આત્મામાં શીતલતા પ્રકટી એ જ લાવને તેઓ—

"એરી આજ આતત્ક ભયે৷ ધેરે, તેરેા મુખ નીરખનીરખ રાેપ્રરાેમ શીતક ભયે৷ અંગઅંગ."

એ પ્રમાણે દ્દયોદ્ગારાના શબ્દા કારા ષ્રહાર કાકે છે. શ્રીમદ્ આનન્દવનજની અધ્યાત્મકશાના રંગ શ્રીમદ્ કપાધ્યાયજના દ્દયમાં રંગાઈ ગયા હતા અને તેએ પણ આનન્દવનજ સમાન ષની ગયા હતા. અર્થાત્ તેએ પણ અધ્યાત્મદ્ભાતના અત્યંત રસિક ષ્રની ગયા હતા, તે જ લાવને આનન્દવનજને મળતાં આ પ્રમાણે કહે છે—

" આનન્દરૂત કે સંગ મુજબ હી મિલે જય, તબ આનન્દરમ ભયા મુજબ: પારુક સંગ લાહા જો ક્રુસન, કંચન દ્રાન હી તાકે કરા "

દુકરોક્ગર કાહીને આનત્કવનની સંગતિથી પેલાના વિચારા પણ અધ્યાલ્મર્પે થઈ ગયા એમ દ્યારે છે. આનત્કવનજીની સંગતિથી શ્રીમક્ થશે વિગયજી ઉપાધ્યાયનું અધ્યાલમન્દ્રાત લસ્ક વશ્ય થયું અને અધ્યાત્મ રંગ શાચ્યો એ ગ્રસ્ટિક શય છે. આ પછી ઉપાધ્યાયજીએ અધ્યાત્મન્દ્રાનના લેથા સ્લવાનું કાર્ય આર્કેસ્ટ્રાંન અધ્યાત્મન્દ્રાર, અધ્યાત્મન્દ્રાન પ્રતિપદ્ધ, દ્વાનસાર અને પદ્દે વેગેરમાં શ્રી. ઉપાધ્યાયજીએ અધ્યાત્મન્દ્રાનના બદ્દલ સ્ત

ભર્યો છે કે જે ગ્રંથા વાંચતાં લબ્ય જીવા આત્માનન્દમાં લીન ખની જાય છે. વિસ્તારભરે અષ્ટપદીના અતિસંક્ષિપ્ત ભાવાર્થ આપ્યા છે.

શ્રી. આનન્દઘનજીએ ઉપાધ્યાયજી મહારાજની સ્તુતિ કરી છે તે અષ્ટપદી તાે અનુપ-લખ્ધ છે, પણ તે કયાંય અસ્તિત્વમાં તાે હશે જ. વિદ્વાના, તત્ત્વચિન્તકાને તેની શાધ પ્રતિ લક્ષ આપવા વિનંતી કરું છું.

આધ્યાત્મિક ગ્રાનરસ એ જ સાચા અમૃતરસ છે. તેનું પાન કરેલું તે વિખુધાના જ ભાગ્યમાં લખાયું છે. ગ્રાનીઓ જ અધ્યાત્મગ્રાનરૂપ અમૃતરસ પાન કરે છે. ગ્રાની પુરુષાના હૃદયમાં સર્વ સમાઈ જાય છે તેમનું ગ્રાન કાેઇ રીતે માપી શકાતું નથી.

ઉપાધ્યાયજી યશાંવિજયજીના ગુણુના વિસ્તાર પમાય તેમ નથી. તેમના ઉપકારા અનહદ છે. વેદની ગંભીર રચના જેમ ઉપનિષદો છે તેમ જ સ્યાદ્વાદના નયનિગમ આગમથી ગંભીર તેમની કૃતિઓ છે કે જેનું રહસ્ય ધીર જેના પણ પામી ન શકે. એમની રચનાઓ ચંદ્રિકા જેવી શીતલ પરમાનંદદાયક, શુચિ, વિમલસ્વરૂપા અને સત્યપૃષ્ છે. હિરિભદ્રસ્રિના લઘુળાંધવ એટલે કલિયુગમાં એ એક બીજા હિરિભદ્ર થયા છે.

ઉપાધ્યાયજી મહારાજ વિચરતા વિચરતા હેલાઈ પધારેલા ત્યાં ૧૭૪૩માં અનશનપૂર્જ સમાધિસહિત દેહવિલય પામ્યા. ત્યાં સમાધિસ્તૂપ કરવામાં આવ્યા છે જે ચમતકારી ગણાય છે. આમ સંવેગીશિરામણિ ગ્રાનરત્નસમુદ્ર અને કુમતિતિમિર ઉચ્છેદવા માટે ખાલારુણ દિનકર શુરુ અદશ્ય થયા.

મિલનજરાત-પર ઘણું લખી શંકાય તેમ છે, પણ વિસ્તારભય પણ ઊલા જ છે. જિજ્ઞાસુઓએ તે તે વિષયના ગંથા અવલાકવાનું સૂચન અહીં બસ ગણાશે.

> " સુયશ—આનન્દના મિલને, મહાજ્યાતિ જગાવી જે; વિભુધ જન અ'તર પ્રકટા, અભિલાયા હમારી છે. "



निममस्यैव वैराग्यं, स्थिरत्वमवगाहने । परित्यजेत् तां प्राक्षो, ममतामत्यनर्थदाम् ॥१॥

(ચિત્તની) રિયરતા લાવવામાં નિર્મલ માનવીના વૈરાગ્યની જેમ જ વિદ્વાન પુરુષે અત્યંત અનર્થ કરનારી એવી મમતાના ત્યાગ કરવા જોઈએ.

षप्यात्मसार सटीक तृतीय प्रयन्य]

[શ્રીમદ્ યરોાવિજયછ



પૂજ્ય શ્રી. યશોવિજયજી ઉપાધ્યાય

્રિક છવાસું]

[લેખકઃ શ્રીયુન ત્રિભુવનદાસ લહેસ્વ'દ શાહ]

શ્રી. યશાવિજયજીનાં ગ્રાન અને કૃતિએા વિશે જેટલું જાણવામાં આવ્યું કે તેનાથી ઘણા અશે ન્યૂન તેમના છવનઘટક વિશે જણાયું કે, અલ્કે જે જણાયું કે તે પણ અનિશ્ચિત દાવાથી નહિવત્ કહીએ તા પણ ચાલે. જેમ કે—

ત્તેમની જન્મસૂમિ ટાેઇ કત્તર ગુજરાતના કાલાેલ પાસેના કન્કાેઠ ગામે જણાવે છે તાે કાઈ આઝાની તળેડીમાં કહે છે; તો વળી કાઈ કાક્યિવાડમાં ('જૈનધર્મ પ્રકાશ' સં. ૧૯૮૩ના ચૈત્ર અંક) કહેતારા પણ છે. જન્મગ્રાલનું પણ તેમ જ છે. કાેઈ તેમનું આરૂપ્ય ૧૫–૬૭ વર્ષનું કહે છે તા કાઈ ૯૦-૯૫ પછુ કહે છે. પરંતુ આ અધા તેમના દેહાંત સં. ૧૯૪૩ -૪૫ના મહા સુદ ૫ = વર્સ તપંચમીના કહે છે જ. (સં. ૧૭૪૩ વાળા કહે છે કે આને લગવી જે વખવી અમદાવાદમાં કાવરાઈ. હવી તેની સાલ સં. ૧૭૪૫ છે ને પછી હેલાઈ મુકામું તે લગાવાઈ છે. બાદી દેહાત્મળે તેા સં. ૧૭૪૩ માં થયા છે. સં. ૧૭૪૫ તે તા મોત્ર બ્રમણા છે.) જે મૃત્યુતિયિ સાથે વાર કે નસત્ર શખાયું હાત તા પાકા નિર્ણય જરૂર થઈ શકત. દય-દે વર્ષનું આયુષ્ય કહેનાસએાના મત એમ છે કે, સં. ૧૬૮૦ માં ૧૮ वर्षनी डिंभरे डीझा अपार्ध हती. ज्यारे स्प वर्षवाणा (ज्ञानविजयेश कृत जैनाचार्य पृ. ૧૦૮ થી ૧૧૬) કહે છે કે, તેમણે સં. ૧૬૫૫ માં ગ્રંથ લખ્યા છે. (તા તા લગલગ ૧૦૦ ઉપરતું આયુષ્ય ગણવું રહે.) જેમ જન્મસ્થાન અને સાલ અનિશ્ચિત છે તેમ ગ્રાતિ વિશે પછુ ગેરસમજ છે. કાઈ તેમને ખ્રાહ્માજુકુગમાં જન્મ થયાનું માને છે (જેમ ગાતમ-સ્વામી ઇ૦ પ્રાક્ષણ ખાળીએ જન્મી, જૈનધર્મમાં કીક્ષા લીધી છે તેમ) તા કાઈ વેલ્યકામના પિતા નારાયણ અને માતા સાકાવ્યદેવીના પેટે જન્મ માને છે. તેમનું નામ જશવંત અને સાર્કનું નામ પદ્મસિંહ જણાવે છે. આ પાજીયની હઠીકત વિશ્વસનીય એ ઉપરથી જણાય છે કે પાતે સાત વર્ષના હતા ત્યારે 'ભક્તામર સ્તાત્ર' એક વખત સાંસળવાથી કંક્સ્ય કરી શકયા હતા. તેમ જ તેમની માતાની સાથે ઉપાશ્રયમાં પ્રતિક્રમણ વખતે જતા હતા અને ત્યાં જે સૂત્રો ભણાવાતાં તે સાંભળી યાદ કરી શીધાં હતાં. જેથી એકદા ખૂબ વરસાદને લીધે માતાને ઉપાશ્રય જવાનું ન અનતાં, ઉદાસી થઈ ગયાં હતાં ત્યારે આ પુત્ર જશવંતકાલે વેર પ્રતિક્રમણ કરાવ્યું હતું અને માતાજીએ પ્રશ્ન પુષ્ટેલ ત્યારે આ બધી હકીકતના સ્વમુખે ઘટસ્ફ્રાટ કર્યો હતા.

સુનિશ્રી પાતાની વિદ્વત્તાથી પ્રજામાં બહુ માનનીય થઈ પડયા. જ્યાં જાય ત્યાં લોક લેગા થઈ પાછળ પાછળ જાય. આ દશ્ય દેખી તે વખતના અધ્યાત્મયાગી શ્રી. આનન્દ-ધનજીએ વ્યાંગમાં જણાવેલ કે, "જશા! દુકાન અચ્છી જમાઈ હય."

કહે છે કે, તેમણે ૧૦૮ શ્રંથા રચ્યા છે, જેમાંના કેટલાક સુલભ છે, તેમાંના ૫૮ ગુજરાતી ભાષામાં હતા જ્યારે એક હિંદી જૈન સાહિલ્યકારના કથન પ્રમાણે તેમનું જવન- ચરિત્ર જે અંગ્રેજમાં પ્રસિદ્ધ થયું છે ને સુલભ છે, તેમાં નાનામાટા થઈ ને ૫૦૦ સંસ્કૃત શ્રંથા રચ્યાનું જણાવેલ છે. તેમને સંસ્કૃત, માગધી, હિંદી ને ગુજરાતી એમ ચાર ભાષા ઉપર કાળ્યુ હતા. વળી, જેમ હરિભદ્રસૃરિએ विरह અંક પાતાની કૃતિના અંતે વાપયોં છે તેમ આમણે रहस्य અંક વાપયોંનું જણાયું છે. આવા કેટલા શ્રંથા હશે તે જણાયું નથી; પરંતુ ગુજરાતીમાં અનેક રાસા રચ્યા છે જે ઉપરથી કેટલાક પંડિતાએ મશ્કરીમાં કહેલું કે, " રાસડા તે ક્રાસડા" છતાં કાઈ જાતના રાષ ન કરતાં દ્રવ્યગુળપર્યાયના ન્યાયશ્રંથ ગુજરાતીમાં જ રચીને, અનેક વિદ્વાનોને સમાલાચનાર્થે માકલ્યા હતા. કાની તાકાત હતી કે યથાર્થ રીતે તે સમજે? અંતે સ્વહસ્તે તેના ઉપર વિવેચન કરી—ટીકાર્પ બહાર પાડ્યું ત્યારે જ આ વિદ્વાના શાંત બની મુખ્ય થયા.

આવી તેમની ખ્યાતિ, અમદાવાદમાં જ્યારે નાગારી સરાઇમાં ઊતર્યાં ત્યારે ગુજરાતના સૂળા મહાળતખાનના કાને પહોંચી ત્યારે તેમને બાલાવી સન્માન કર્યું. ત્યાં સભા સમક્ષ ૧૮ અવધાના કરી સભાને રંજિત કરી. વાજતેગાજતે તેમને સ્થાને પહોંચાહયા. (જેમ અકળર બાદશાહે હીરવિજયસૂરિના જ્ઞાનથી ચકિત થઈ આદર કર્યાં હતા તેમ) આ હકીકત 'સુજસવેલી ભાસ'માં છે. આ પ્રમાણે પ્રજામાન્ય અને રાજમાન્ય હાવાથી શ્રીવિરભગવાનની સીધી પાટપરંપરાએ ન હાવા છતાં, જેનામાં પ્રવેશેલી ક્રિયાશિયિલતાના, સત્યવિજય પંત્યાસના સહકાર લઈ ઉદ્ધાર કર્યાં હતા અને શાસનપત્ર પણ સ્વહસ્તે કાઢ્યું હતું, જેમાંનું એક, મિતિ ૧૭૩૮, વૈશાખ સુદ ૭ ગુરુવારનું, સુનિ જિનવિજયજીએ પ્રસિદ્ધ કર્યું છે (જુએા: 'આત્માન'દ પ્રકાશ ૧૯૭૨ પાલ માસના અંક) આ પ્રમાણે સાધુસમુદાય ઉપર તેમના ખૂબ પ્રભાવ હતો.

તેમની માતૃભક્તિ, ગુરુભક્તિ, વિનયશીલતા, નિરિભમાનપણું વગેરે સદ્દગુણું ના ઉપરમાં યથાચિત ખ્યાલ અપાઈ ગયા છે જેથી વિશેષ નુકતેચીની કરવાની જરૂર નથી. લોકો તેમને "જ્ઞાનનિધિ"ના ઉપનામથી સંબાધતા. હરિભદ્રસૂરિ ને કલિકાલસવંત્ર હેમચંદ્રસૂરિ જેમ પાકચા છે, તેમ યશાવિજયજી ઉપાધ્યાયે પણ નામ રાખ્યું છે. તેમના સમકાલીન તરીકે અમદાવાદના નગરશેઠ શાંતિદાસ શેઠ, વિજયત્તિલકસૂરિ, ધમંસાગર ઉપા૦, સત્યવિજય પંત્યાસ, શ્રી આનન્દઘનજી વગેરે કહી શકાય. તેમણે રચેલ શ્રંધાની ટીપ તા બહુ માટી છે અને તે આ સત્ર ઊજવતી સમિતિએ બહાર પાડી છે તે મેળવી જેવા જેટલા અવકાશ રહ્યો ન હાવાથી મૌન સેવું છું. ઉપાધ્યાયજીના કેટલાક અધિકાર શ્રી "જેન" પત્રના ૧૪–૧–'૪૫ના પૃ. ૧૫ ઉપર પ્રગટ થયા છે એટલું જ્યાવી અત્રે વિરસું છું.

અહારમી સદીના ૫ખર જ્યાતિર્ધર

[લેખક:--શ્રીયુત માહનલાલ દીંપચંદ ચેહસી]

૧. સંસારી જીવનની આંખી:—

ગુજરાત પ્રાંતના કર્લાલ તાલુકા નજીકના 'કનાડું' નામના ગામમાં આપણા આ મહાન જ્યાતિષ્દ જન્મ્યા લારે કેવાં ગ્રહા હતા અને કશું ચાવડિશું કે કશું નક્ષત્ર હતું એ ભાલુવાનું સાધન હજી ઉપલગ્ધ થયું નથી; છુતાં ભાવિ કારકિર્દીના માપે માપતાં એટલું તા વિના શંકાએ કહી શકાય કે આ કુળદીપકના જન્મકાળે શુભ સુકૂત અને શુભ ચાેગ વર્તા હતા. પિતાશ્રી 'નારાયછું અને માતુશ્રી 'સાલાગદે' એ પુત્રનું 'જસવંત'નામ રાખી આનંદિત બન્યા હતા. થાડાં જ વર્ષોમાં અંધવબેલડીરૂપે જસવંતને 'પદ્મસિંહ ' મત્યા. વ્યવકારી જવન જવતાં આંનાનુકહા કુટુંબમાં ઉછરનાર બાકુડાંચાને દેવદર્શન અને ્રગુરુવંદનના સંસ્કાર ગળચૂચીમાંથીઃ મન્યાં હતા. એમાં પછુ માતા–પિતાના સંસ્કાર ઉપરાંત પૂર્વભવના પુરુષથી જસવંતની સ્મરજુશક્તિ ખાલ્યકાળથી જ વધતી ચાલી હતી. ' સુજસવેલી ભાસ 'માં જેની નોંધ નથી છતાં જે લાકવાયકા પૃત્રયશ્રી છુહિસાગરસ્રિજી અને સાક્ષરવર્ષ શ્રીયુત માહનવાલ દક્ષીયંદ દેસાઈ પાતાના નિર્જયામાં આલે પે છે- 'વરસાદના કારણે માતા ઉપાશ્રયે ન જઈ શક્યાં અને 'લક્તામરે સ્તાત ' ન સાંલળી શક્યાં, પછુ બાળક એવા જસવંતે એ સંભગાવ્યું.' એમાં ં તથ્ય હા કિંવા ન પણ હા, છતાં વર્ષોના વહેવા સાથે યશાવિજય સુનિ 'બ્રન્યાં પછી જે સાધના જસવેતના આત્માએ હરી છે અને એમાં પ્રત્રાના જે ચમકારા દર્ષિગાચર થાય છે, એ જેતાં કહેતું જ ૫૩ કે, ' પુત્રનાં લક્ષણ પારણા-માંથી જહાય ' એ ગુજરાતી કહેવત અક્ષર્શ: સત્ય લાગે છે. જસવંત જેવા સંસ્કારી આળક માટે બક્તામરનું રટણ અસંભવિત ને ગેણાંય. વિહાર કરતાં શ્રી નથવિજયજી મહારાજ કુસુગેર (પાટલુ સમીપના) ગામથી 'કનાકું ' પધાર્યા. તેએાની વેગચલીની વાણી શ્રવલ્ કરવાના યાત્ર ઉપરાક્ત- ળધનજોડીને સાંપડથો. ઉજ્ઞયના હૃદયમાં સંસાર છાડી દઈ સંયમના માગે સંચરવાનાં ઝરાષ્ટ્ર કૃ્ટવા માંડ્યાં. એની જડ દક્ષ્પણે ઊંડી ઊતરવા માંડી. સંતાકુકડીના આશ્રય લીધા વિના ખુલ્લો અંતરે મનની વાત વહીદા સમક્ષ વહીલ બ્રાતા જસવંતે મૂકી. પદ્મત્તિકે એમાં સાથ પૂર્યો. ગુરુકપદેશથી ધર્મજકસ્થની પ્રાપ્તિ જેમને થયેલી છે એવા માતપિતાએ કહ્યું કે, 'તમારું કલ્યાણું થાુંએા, ગુરુ મહારાજ સાથે વિહારમાં ચાંઢા સમય કુરા, તલવારની ધાર સમા ગારિત્રપાલનના અભ્યાસ પાઠા અને અંતરના અવાજ પારખા. સાચા સાધુ ખેતા.

ર. શુરુ અને શિષ્યા રાજનગરમાં :—

શ્રી નયવિજયજી મહારાજ વિચરતાં વિચરતાં પાટલુમાં પધાર્યાં. તેઓ સમાટ અકખર ભાદશાહ પ્રતિબાધક જગદ્ગુરુ શ્રી વિજયહીરસ્ટ્રીશ્વરજીની ચાંથી પાટે આવેલા, અને પં. લાભવિજય ગિલાના બીજા નંબરના શિષ્ય હતા. શ્રી લાભવિજય ગિલા ઉપાધ્યાય શ્રી કેલ્યાલ્ય વિજયજીના શિષ્ય થાય. શ્રી કેલ્યાલ્ય વિજયજીના તે શ્રી હીરસ્ટ્રીશ્વરજીના પ્રથમ શિષ્ય છતાં પટ્ધરપહ્યું એ કાળે વંશઉતાર આવતું ન હોવાથી, ગુરુમહારાજની પાટે તેમના ગુરુલાઇ વિજયસ્તેનસ્ટ્રિ આવેલા. તેમની પછી વિજયદેવસ્ટ્રિ આવ્યા. તેઓશ્રીના વરદ હસ્તે સં. ૧૬૮૮માં દીક્ષિત થયેલા ઉક્ત બન્ને લાઈ એ, અનુક્રમે મૃનિ યશાવિજય અને મુનિ પદ્મવિજયજીના સોહામણા નામા વડીદીક્ષા વેળા પાત્રયા. આ પવિત્ર વિધિ પાટલુમાં બની. એ કાળે દીક્ષિતોની વય અનુક્રમે આર અને દસ વર્ષની હોવાનું સંભવે છે.

મુનિશ્રી યશાવિજયજી સમયના વહેલુમાં ઝડપથી આગળ વધતાં વારસામાં પ્રાપ્ત કરેલ અગાધ છુહિબળના પરચા ખતાવતાં થાડા સમયમાં સ્ત્ર—પર શાસ્ત્રોના જ્ઞાતા ખન્યા. રાજનગરમાં ગુરુ સાથે પધાર્યા. સં. ૧૬૯૯માં સભાજના સમક્ષ આઠ અવધાન (દરેક વિભાગની આઠ આઠ વસ્તુઓ, યાદદાસ્ત્રીના ખળે કહી ખતાવી. અર્થાત્ ચાસઠ ચીજોના કમવાર જવાખ આપી) કર્યાં. ઊગતા મુનિશ્રીની આવી અનુપમ શક્તિ નિહાળી શાવક શ્રેષ્ઠી ધનજી સ્ત્રા એટલી હદે આહ્લાદ પામ્યા કે, જેથી તેઓએ ગુરુજીને આ શિષ્યને કાશી જેવા વિદ્યાધામમાં માકલી વ્યાકરત્યુ, ત્યાય આદિ કઠિન શાસ્ત્રોમાં નિપુલ્યુ ખનાવવા વિનંતિ કરી. અને એ અંગે ખરચ કરવાની હાદિ'ક ઇચ્છા પ્રગટ કરી. શ્રી નયવિજયજી મહારાજને શેઠની વાત પાછળનું રહસ્ય ગળે ઊતરી ગયું. એટલું જ નહિ પલ્યુ આ નાની ઉ'મરના શિષ્યમાં રહેલી પ્રતિભા નીરખી, જૈનશાસનની પ્રભાવના એના દ્વારા થવાની આગાહી થઈ અને શિષ્ય સહિત કાશી તરફ વિહાર કરવાના નિર્ધાર કર્યો.

૩. સૂર છૂપે નહિ ખાદલ કાર્યા :—

મુનિશ્રી યશાવિજયજીએ બ્રાહ્મણ વિદ્યાગુરુ પાસે પૃષ્ટું વિનય સાચવી ન્યાયશાસ્ત્રમાં પૃરુપૃ રું અવગાહન કર્યું. ષટ્દર્શનના અભ્યાસ પણ બરાબર કર્યા. પ્રાચીન ન્યાય તેમજ નવ્ય ન્યાય અને એ ઉપરાંત કઠિન એવા 'તત્ત્વચિંતામિલું' નામના શ્રંથના પણ તાગ કાઢી લીધા. આ સંબંધમાં 'મુજસવેલી ભાસ ' હસ્તગત થયા ન હતા ત્યારે એમના વિશે કંઈ કંઈ વિલયુલુ વાતા પ્રયક્ષિત હતી અને એની નોંધા અગાઉ જે નિબંધાની વાતા કરી છે એમાં નાંધાયેલી પણ છે. એ ઉપર આજના યુગમાં વધુ ભરાસા ન મૂકીએ તા પણ એટલું તા વિના સંકાચ કહી શકાય કે, શ્રી નયવિજયજીએ પાતાના આ શિષ્યને શાસનના જયાતિર્ધર ખનાવવા પરિશ્રમ વેઠવામાં કચારા રાખી નથી. અને એ જ રીતે તરુલુ શિષ્યે પલુ ગુરુ-મહારાજની આંતર વૃત્તિ અવધારી લઇને બીજી કાઈ પલુ બાબતમાં મન ન પરાવતાં શકય ઉતાવગથી કાશી આગમનના હતુ પાર પાડવામાં પીછેકઢ નથી દાખવી. 'વિનય વિના વિદા

નહીં 'એ જ્ઞાની વચન આંખ સામે સદૈવ રમતું રાખી, ખ્રાહ્મણ વિદ્યાગુરુના પૃરેષ્ટા વિનય સાચવી, તેમની પાસે હતું તે તો મેળવી લીધું પણ એ સાથે તેમના આશીર્વાદ પણ પ્રાપ્ત કર્યા. કાશીમાં ભરાયેલી વિદ્વાનાની સભામાં વિજય પ્રાપ્ત કરી 'ન્યાયાચાર્ય' અને 'ન્યાય-વિશારદ' જેવી બહુમાનસ્ત્ર્યક પદવીઓ મેળવી, પાતાના જ્ઞાનના પરચા દર્શાવી, વિદ્યાગુરુ માટે પ્રશંસાનાં પૃથ્પા પથરાવ્યાં. અને સાથાસાથ ભગવંતદેવ શ્રી વર્ધમાનસ્વામીના ગ્રાસનના એક સામાન્ય નિગ્ધ પાતાના સાધુછવનને જરા પણ ક્ષતિ પહોંચાડયા વિના, એના પર ગુરુમહારાજની કૃપા વર્તાતી હોય તેાં, કેવું અદ્ભુત કામ કરી શકે છે, એ પાતાના દરાત્વથી પુરવાર કર્યું. આ વિદ્યાગુરુ પાતાની દશા પલટાવાથી, શિપ્યને શાધતા શાધતા ખંભાત પધાર્યા હોય, અને ચરિત્રનાયકના એકાદ ક્ષશારાથી એ કાળના સ્થંભન તીર્ધના શ્રીસંથે ખ્રાહ્મણ મહાશયને ધનથી નવાછ દીધા હોય તો એમાં કંઈ જ આશ્ચર્ય નથી.

૪. 'ઉપાધ્યાય' પદની પ્રાપ્તિ :-

સુનિરાજ યશાવિજયજીના સિતારા ચળકતા હતા. વિહાર કરતાં તેઓ આગ્રા પધાર્યા. ત્યાં સ્થિરતા કરી પાતાના ગ્રાનમાં ઉમેરા કર્યાં. અમદાવાદમાં જ્યારે પગલાં માંડયાં ત્યારે તા તેમની વિદ્વત્તાની—કાશી જેવા પંડિતાથી ભરપૃર શહેરમાં વિજયધ્વજ ક્રરકાવ્યાની—કીર્તિ-ગાથા પ્રસરી ચૂકેલી હોવાથી સમાટ એપારંગઝેબના સ્ત્રા મહાબતખાંએ બહુમાનપૂર્વક પાતાના દરખારમાં તેડાવ્યા અને મુનિશ્રીની અવધાનશક્તિ નજરે નિહાળી, એ વેળા શ્રી ચતુવિધ સંઘના હૃદયમાં મુનિરાજને 'ઉપાધ્યાય' પદવી આપવાની ભાવનાલહરીઓ સ્વતઃ ઉભરાઈ રહી. એના પડેયા એ વેળાના પડ્યર શ્રી વિજયદેવસૂરિના શિષ્ય શ્રી વિજયપ્રભસૂરિના અંતરમાં પડયો: સંવત ૧૭૧૮માં શ્રી યશાવિજયજી વાચક-ઉપાધ્યાયપદથી અલંકૃત થયા.

ત્યાગી શ્રમણના છવનમાં ચામાસા સિવાયના કાળમાં જુદા જુદા સ્થાનના પાદવિહાર ધર્માપદેશ અને દેશકાળને અનુલક્ષી સાહિત્યનું સર્જન સામાન્યતઃ અશ્રસ્થાને સંભવે. એ કાળે ધર્મપ્રભાવના, ઇતર દર્શના સાથે તત્ત્વચર્યા અને પાતાના સમગ્ર ગચ્છની સારસંભાળ રાખવાનું વિશિષ્ટ કાર્ય અચ્છાધિપતિના શિરે ગણાતું. વર્તમાન કાળની માફક આચાર્યપદવી વંશપરંપરાગત ઊતરવા માંડી નહોતી. એટલે એવા મહાન વિદ્વાન, પ્રભળ પ્રતિભાશાળી ઉપાધ્યાયછ આચાર્યપદ મુધી નથી પહોંચ્યા, એથી આશ્ચર્ય પામવાનું કારણ નથી.

પં. મુખલાલજી જણાવે છે તેમ વાચક શ્રી યશાવિજયજીએ પાતાના અસરકારક ઉપદેશ પછીના સમય લેખિનીને દેશકાળનાં એ ધાણુ પારખી, દ્રુતગતિએ ચલાવવામાં ભતનાના મૌલિક ગંધા રચવામાં વ્યતીત કર્યો છે. એમાં વાદ-વિવાદ અને ખંડન-મંડનના વિષયા છે, તેમ તત્ત્વનાં અને સહિતનાં વિવેચના પણ છે જ. વિદ્વાનાને ચમહૃતિ ઉપનાવે તેવા ત્યાયપૃષ્ટું આલેખના તેમ જ પૃવે થઈ ગયેલા પ્રતિભાસ પત્ર આચાર્યોનાં મંતર્યા અવધારી લઈ એ ઉપર કરેલ સમન્વય અને કહિન ગંધા પરનાં દીકા-દિષ્પણા પણ ઉપલબ્ધ ધાય છે.

પ. આનંદઘનજ અને યશાવિજયજ

અધ્યાતમ માર્ગના આ ળંને યાેગીઓ સંખધી લાેકવાયકાઓ તા જાતજાતની પ્રવતે' છે. અહીં એના ઊંડાલુમાં ઊતરવાનું પ્રયાજન નથી. એટલું તાે નિશ્ચિત છે કે, પ્રખર યાેગી આનન્દઘનજી મહારાજના સમાગમ પછી જ ઉપાધ્યાયજી મહારાજ શ્રી યશાેવિજયજીમાં અધ્યાતમદિષ્ટ ઘણા માટા પ્રમાલુમાં ખીલી ઊઠી છે અને એ પછીના શ્રંથામાં એનાં નિતરાં દર્શન થાય છે. શ્રીમદ્ આનન્દઘનજી માટે ઉપાધ્યાયજી 'અષ્ટપદી' રચે છે અને મંગલાચરલુ વદે છે કે:—

" आनन्द्घनके संग सुजस ही मिले जय, तव आनन्दसम भयो सुजस। पारस संग लोहा जो फरसत, कंचन होत ही ताके कस ॥आनन्द०॥ "

એમાં યાગીવરની મહત્તા અને પાતાની લઘુતા અતાવનાર ઉપાધ્યાયજી ઉપર તેમના પ્રભાવની આભા કેવી પથરાઈ હશે એના ખ્યાલ સહજ આવે છે. એ પછીની 'परमगुरु जैन कहो क्यूं होवे 'ઇત્યાહિની રચના સ્વત: બાલે છે અને 'कपायमुक्तः परमः स योगी' જેવાં ટંકશાળી વચના કલમમાંથી સવે છે. આ સિવાય તેએાશ્રીના સમકાલીન જૈન-જૈનેતર વિદ્વાના પણ પ્રખર પ્રજ્ઞાસંપન્ન ગણાય છે. એ સવધના વિસ્તારથી ઉલ્લેખ કરવા એ આ નાનકડા નિખંધમાં શકય નથી. છતાં નામનિદેશ કરવાની અભિલાષા રાકી શકાય તેમ ન હાવાથી થાડાક અહીં જણાવ્યા છે. એ ઉપરથી ઉપાધ્યાયજી મહારાજની અદ્ભુત શક્તિના, અનાખી પ્રતિભાના અને વિશિષ્ટ સર્જનના ખ્યાલ આવશે.

આઠ જ્ઞાનિમળસૂરિ—ઉપાધ્યાય યશાવિજય છેને 'વાચકરાજ' તરીકે સંબાધન કરનાર આ સૂરિજીએ, ઉપાધ્યાયજીએ બનાવેલાં ઘણાં સ્તવના પર ટીકાઓ રચી છે. તેઓ ઉપરના ખંને અધ્યાતમયાગીએ પ્રત્યે બહુમાન ધરાવતા હતા.

હિપા૦ વિનયવિજયછ—પરંપરાની નજરે આ હપાધ્યાયછ શ્રી યશાવિજયછના કાકાગુરુ થાય; કેમકે તેઓ વિજયહીસ્સૂરિ, હપા૦ કીતિ'વિજયછના શિષ્ય હતા. એટલે ત્રીજી પાટે હતા જ્યારે શ્રી યશાવિજયજી પાંચમી પાટે થયેલા છે. 'લાેકપ્રકાશ' 'શ્રીપાલ રાસ' અને 'પુરુયપ્રકાશ'ના સ્તવનની રચનાથી આ વાચક મશકૂર છે.

ઉપાટ માનવિજયછ—' ધર્મસંગ્રહ ' ગ્રંથના કર્તાં ઉપાર્ગ માનવિજયછ ઉપાધ્યાયછ માટે સુંદર શ્લાકમાં જલાવે છે, જેના અંગ્રેજમાં મા. દ. દેસાઈ નિમ્ન પ્રકારે ઉલ્લેખ કરે છે:—-

"He has got prominent knowledge in all schools of philosophy by his intellect sharpened by true logic; and is the formost among the Tapagachha."

પ' ર સત્યવિજય ગાિશુ—આ પવિત્ર સંતના સંબંધમાં માે. દ. દેસાઈનાં નિમ્ન વચના પૂર્ણ પ્રકાશ પાથરે છે અને એમાં ઉપાધ્યાયછ વિષે પણ વાત આવી નય છે. "A great deciple of Shri Vijaysinh Suri went to heaven in S. Y. 1756 eleven years after Shri Yashovijayji. He taking permission of his Guru made a great reformation in the decipline of the monks who had become corrupt and degraded at the time. It is said Yashovijayji heiped him very much in this noble and uphill work by writing on, preaching about and severly criticizing corruption and religions degeneration."

જેનેતર વિકાનામાં - રોકાવરી કાંકાના જાંબર ગામમાં જન્મેલ શ્રાક્ષણ નાસ્યષ્ટ્ર, પાછળથી રામકામ તરીકે પ્રસિદ્ધિ પામ્યા અને જેઓ શિવાલ્ડ મહારાજના શુરૂ મનાય છે તે, તુકારામ કે જે અલંગ નામા મરાઠી કાર્વનાના સ્થયિતા છે તે, શુજરાતના લદ્યાલા કવિ પ્રમાનંદ, શીખાના શુરૂ તેમબડાદુર, શુરૂ ગાવિકસિંહ અને હિંદીના સુપ્રસિદ્ધ સંચ સમાયણના કર્તા તુલસીકામ સમકાલીન હતા. આ પ્રમારે, લાસ્તવપંતા ચારે પૃષ્ટામાં વિવિધ ધર્માના ક્ષેત્રપ્રદેશ પર જે ધ્રુવતારકા ઝળકી લગા એમાં ઉપાધ્યાયલ શરીલિક વલ્ડ પણ છે, જે જીદવસંપન પર બિરાજે છે.

સાક્ષરવર્ષ શ્રીકૃત માહનશાસ દર્શીયંદ દેશાઇના કાર્ગ્દોમાં ઉપાધ્યાયછ મહારાજનાં શ્રુવનને અંજિલ આપતાં નિમ્ન વાકયો હરેકાઈ ગ્રાફ્રુ મહારાજ થા તે વિદ્વાન શ્રાવકને પાતાના જીવનને ઉત્નત અનાવવા માર્ગદર્શક નીવટ તેમ છે. એમાં સાચી શક્તિનાં નિતસં દર્શન છે, દેવળ આભાસ નથી.

"He was one of the few parent minds which India has produced. And both metaphysics and logic owed fillal obligations to his unbounded genius. He by composing more than one hundred and eight (168) Sanskrit works has added a monumental share to the literature of the world.

Some of his works are valuable as revealing many of the darker symptons of our religions and social disease."

વિક્રમ સંવત ૧૭૪૩ની સાક્ષમાં આ પ્રખર દ્રયોતિકાર, ઉપરેશ અને સર્જનમાં, વિરેચન અને કરતમાં, પાતાની પ્રભા વિસ્તારતા વડાદરા સંસ્થાનની પ્રાચીન એવી દર્ભાવતી નગરીમાં આગના હતાઈ ગામમાં સદાને માટે આ ભારતવર્ષની ભૂચિ ઉપરથી વિદશ્ય શકે સ્ત્રોપે સંત્રોપાં, સં. ૧૭૮૫માં અસ્તિકાદની ગત્યાએ શીસ્ત્રો તેઓશીની પાદુકા સ્થાપન કરી.

એ જ બૂમિના એક લિયતા સાંકુજીને-ઉપાધ્યાયજના નામની સરબાઈ હેલાથી, છેલ્લી મહીના આ મહાન તાર્કિક ને ખાલ જૈન સમાજમાં જ નહીં પણ જૈનેતર વિદ્વાન વર્ષમાં સવિષ્ટેપ માણેતા કરવાની તમના ઉદ્દેશની. એ અનુષમ સહિશે માહમથીની ઘરતી પર સુંદર પ્રમાણમાં ઝિશાયા અને એના પ્રત્યક્ષ ક્લાસ્વરૂપે પાદુકાની પવિત્ર હૃસિ પર રમહીય દેવકુલિકાનાં દર્શન થાય છે. એમાં એ પ્રતિભાશાળી ઉપાધ્યાયજી જૈન સમાજને આગાહી કરી રહેલા દરિગાચર થાય છે. એ આગાહીનું હાદ' આજના જૈન સમાજ સમજે તે ભગવાન શ્રી મહાવીરદેવના સંદેશ વિશ્વમાં ગુંજતા થાય. એથી અહિંસાનું સામ્રાજ્ય સર્જાય અને ચાતરક સાચી શાંતિના કુવારા ઊડી રહે. "જૈન' જ્યતિ શાસનમ્"ના ધ્વનિ ગાજી રહે. છ. અ'તરધ્તનિ સંભળાય છે કે?—

ગુરુમૂર્તિની પ્રતિષ્ઠા એ તો ઉપાધ્યાયજના અંતરને એાળખવાની પ્રથમ ભૂમિકા છે. આ તીથે આવી સૌ કાઈ એમનાં દર્શનથી પવિત્ર થાય, ગુણુસ્મૃતિ કરે અને સ્વશક્તિના ખળે જે સાહિત્યના વારસા તેઓશ્રી આપણુને – જેન સમાજને ચરણુ ધરી ગયા છે, એના યાગ્ય રીતે – દેશકાળને ખંધ બેસે તેવા સ્વરૂપે માત્ર પાતાના સંપ્રદાય કે ધરપૂરતા નહીં, પણ સારીયે દુનિયાની જનસંખ્યાને ઉપયોગી નીવઠે એવી પદ્ધતિએ પ્રચાર કરે. અમૃત વાણી સમાં એ વચનાથી હજારા ને લાખાનાં હૃદયકમળ વિકસ્વર થાય એ કરતાં સાચી સ્મૃતિ આજના યુગમાં અન્ય કઈ સંભવે ?

卐

विपयैः कि परित्यकै-नागिति ममता यदि । त्यागात् कञ्जुकमात्रस्य, भुजगो नहि निर्विपः ॥२॥

જો મમતા જાગી કોર્ડ તેા વિષયા છાડવાથી શું ? જેમ સામ કાંચળીને છેડડવા માત્રથી ઝેર વિનાના બનતા નથી.

अध्यारमयार्-सर्टीक] [श्री

[શ્રીમદ્ર યશાવિજયછ

卐

[ક્ષેખક : ચીયુત કૃતેચંદ ઝવેરચંદ]

" વાણી વાચક યરા તણી કાર્ક નંધ ન અકૂરીજી"

આ વાચક થશ તે કેાલું ! વાચક થશ એટલે મહાન જ્યાતિકાર ઉપાધ્યાય શ્રીમદ્ થશાવિજયજી; જેમણે સ્વરચિત ' શ્રીપાળ રામ્ર 'ની ઢાળ ખારમીમાં, અને તેને વ્યનુસરીને રચેલી નવપદજીની પૂજામાં ઉદ્યા દક્ષેખ કર્યો છે.

આ મહાયુગુષના જન્મ અછુદિલપુર પાટ્યુની આત્રપાસ કન્હાેડા ગામમાં સત્તરમા ર્રોકામાં થયા હતા, તેમ અનુમાન કરી ગકાય છે. તેએ નતે એાસવાળ હતા. અલ્યા-વસ્યામાં તેમના પિતાશ્રીનું મૃત્યુ થયું હતું. તેમની સ્મરસ્થ્યક્તિ આક્ષપસ્થી તીવ્ર હતી. તેમનાં ચાતુશ્રીને દરરાજ ગુરુની પાસે જઈને હપાશ્રયમાં 'ભક્તામર સ્તાત્ર ' સાંકળવાના નિયમ હતા. ચામાત્રામાં એક વખતે વસ્સાદની ચાર્ટા હેલી થવાથી, તેમજ પાતાનું શરીર નરમ હાવાથી, માતાજી શુરુ પાસે જઈ ' લક્તામર સ્તાત્ર' સાંલળી શક્યાં નહીં. એમના નિયમ એવા હતા કે, ' મક્તામર સ્તાત્ર ' સાંસત્યા સિવાય બિલકુલ અન્ન હેલું નહીં. **ઉપરના કારણ્**થી ત્રણુ દિવસના ઉપવાસ થયા. સાઈ " જગ્રા "ની ઉંમર તે વખતે પાંચ છ વર્ષની હશે. વેચા દિવસે જગ્રાએ પાતાની માતાને પૃષ્ટશું કે, ' હે માતુશી! તમા અન કેમ લેતાં નથી ? ' ત્યારે માતાએ કહ્યું કે, 'હે પુત્ર ! દું 'લષ્ટતામર સ્તાત્ર ' સાંલખ્યા સિવાય બિલકુલ લાજન લેતી નથી. જગાએ વિનયથી કહ્યું કે, 'તમારી ઇંચ્છા હાય તો હું તમાને 'લક્તામર સ્તાત્ર' સંભળાતું. માતા આઢ્યાં પાસી બાલ્યાં કે તે તને ક્યાંથી આવડે ? યુત્રે કહ્યું: 'દે માતુથી! તમે મને તમારી સાથે ઉપાશ્રયમાં શુરુ પાસે દર્શન કરવા તેડી જતાં હતાં, તે વખતે હું પણ ' લક્તામર સ્તાત્ર' સાંભળતા હતા, તે મને યાદ સ્ત્રી ગર્ફો છે. માતાએ સંલગાવવાનું કહ્યાથી પુત્રે એક પણ ખૂલ સિવાય ' ભક્તામર સ્તાત્ર ' સંલગાન્યું. તે વખતે ગુરુ શ્રી નયત્રિજયજી ત્યાં પધારેલા હતા. આ ગાલ અવસ્યામાં તેમની ચાદ્યક્તિના નમૂના છે; ત્યાર પછી તેમણે સં. ૧૬૮૮માં દીક્ષા શીધી. સં. ૧૭૧૮માં ઉપાધ્યાય પદથી એમને મળી, મં. ૧૭૪૩માં રહ્યાઈ (દર્ભાવતી) નગરીમાં તેઓશ્રી સમાધિપૂર્વક કાળધર્મ પાસ્યા.

' नत्त्रार्थ'કારિકા 'માં શ્રીમદ્દ ઉમાસ્ત્રાતિ વાચકે પ્રમુ શ્રી વર્ધ'માનસ્ત્રામી સંબંધમાં કહ્યું કે हे, "माचित्रमात्रो मनेष्यतेकेषु" અર્થાત્ જન્મજન્માંતરના સંસ્કારા પછી તીર્ધ'કરપછ્યું મળેલું છે; તેમજ 'ભગવદ્ગીતા 'માં પણ કહેવામાં આવ્યું છે કે, " ગુનીનાં શ્રીમતાં **નેદે** યોગસ્રણે પ્રનાયત્તે " અર્થાત્ પૂર્વ જન્મમાંથી યાગબ્રષ્ટ થયેલા આત્માના જન્મ પવિત્ર કુટુંબમાં થાય છે અને એ જન્મમાં યાગમાર્ગની શરૂઆત કરે છે; તેમ ઉપાધ્યાયજી શ્રીયશાવિજયજી માટે પણ કહી શકાય.

એકવીશ દિવસ પર્ય ત 'ષેં'ના ખીજથી સરસ્વતી દેવીનું એમણે આરાધન કર્યું' હતું. એકવીશમા દિવસની રાત્રિએ સરસ્વતી દેવી સાક્ષાત્ હાજર થયાં અને તેમને વરદાન માગવા કહ્યું. શ્રીયશાવિજયજીએ જૈન શાસનના ઉદ્ધારાથે' શાસ્ત્રો રચવામાં સહાય માગી. સરસ્વતી દેવીએ કહ્યું: " તે પ્રમાણે થાએ!!" એમ કહી દેવી અંતર્ધાન થયાં.

એમને ઉપાધ્યાય પદ્ધી શ્રીવિજયપ્રસસ્ર્રિજીએ આપી હતી. તે વખતે યતિએમાં ચાલતા શિથિલાગારને દૂર કરવા શ્રીસત્યવિજયજી પંન્યાસની સાથે મળી કિયોહાર કર્યો હતા.

જેમ શ્રીમાન્ હરિલદ્રસૂરિજીએ સ્વરચિત अંચાને છેડે " विरह " શખ્દ રાખેલા હતા, તેમ શ્રીમદ્ ઉપાધ્યાયજીએ સ્વરચિત अંચની શરૂઆતમાં 'વેંद्ર' શખ્દ સંકેતરૂપે રાખેલા છે.

ઉપાધ્યાયજીના શ્રીઆનંદઘનજી સાથે સમાગમ થયા હતા. આણુની યાત્રા કરી તેટલામાં શ્રીઆનંદઘનજીની શાધ કરતાં તેઓ મળી ગયા. આનંદઘનજી કે જેઓ અધ્યાત્મયાગી હાઈ, પાછળથી એકાંતવાસમાં રહેતા હતા; તેમના તરફના પ્રત્યભાવથી ઉપાધ્યાયજીએ 'અષ્ટપદી ' રચી છે. તેના નમૂનારૂપે આ પદ્ય ધ્યાનમાં લેવા જેવું છે:

" આન'દઘનકે સ'ગ સુજસ હી મિલે જખ, તખ આન'દ સમ ભયા સુજસ; પારસસ'ગ લાહા જો ક્ષ્સત, કેચન હાત હી તાકે કસ. "

આ રીતે તેઓશ્રી પ્રખર વિદ્વાન હોવા છતાં કેવી ગુણુગાહી વિભૂતિ હતા! એમના સમકાલીન વિદ્વાન જ્યાતિષરા—ઉ૦ શ્રીમાનવિજયછ, ૫૦ શ્રીસત્યવિજયછ, હપા૦ શ્રીવિનયવિજયછ, વિજયદેવસૂરિ, વિજયમિંહસૂરિ, અને વિજયપ્રમસૂરિ વગેરે હતા.

તેઓશ્રીએ કાશીમાં વિદ્યાભ્યાસ કરેલા અને વાદમાં વિજય મેળવતાં ન્યાયવિશાસ્ત્રની પદવી આપવામાં આવી હતી. તેઓશ્રીના વરદ હસ્તે નિસ શ્રંઘા રચાયેલા છે. કેટલાક લબ્ય છે અને કેટલાક અલબ્ય છે. સંસ્કૃત અને પ્રાકૃત ભાષામાં ખનાવેલા 'અધ્યાત્મમત-પરીક્ષા, અધ્યાત્મસાર, અનેકાંતબ્યવસ્થા, તક પરિભાષા' વગેરે છેતાલીસ શ્રંઘા લબ્ય છે.

તેમના હાથતું શાસનપત્ર સંવત ૧૭૩૮ માં લખેલું તે ભાવનગરથી પ્રગટ થતા 'આત્માનંદ પ્રકાશ ' માસિક ૫૦ ૧૩, અંક : ૬માં પ્રસિદ્ધ થયેલું છે. ઘાઘામાં આવ્યા ત્યારે તેમણે 'સમુદ્ર અને વહાછુના સંવાદ'નું કાવ્ય રચ્યું; અને તેમાં મતુષ્ય છવનની દુર્લભતા ખતાવી ભવિષ્યની પ્રજાને એાધ આપ્યા. 'અધ્યાત્મમતપરીક્ષા, દિક્પટ ચારાશી બાલ' વગેરે ગ્રંથા તેમણે દિગાળર સંપ્રદાયનાં મંતવ્યા સામે રચ્યા છે.

તેમણું ગુર્જર ભાષામાં રચેલા 'દ્રવ્યગુણુપર્યાય રાસ' ઉપરથી દિર્ગાળર કેવિ શ્રીભાજરાજજી, 'દ્રવ્યાતુરાગતક'લા ' નામે વિદ્રદૃષ્ટાગ્ય ગ્રંથ સંસ્કૃતમાં અનાવ્યા છે.

સંવાસા, દોહસા અને સાડા ત્રલુસા ગાથાનાં સ્તવનામાં સ્થાનકવાસી મંતર્ગા સામે તેમ જ પડ્દેશના વાદીઓ, કે જેઓ એકાંત મતવાદીઓ ગણાય છે; તેમની સામે જેન દર્શનના સ્યાદ્વાદ મત પ્રખરંપણ રજૂ કરેલા છે; તદુપરાંત 'છાદાગીતા, સમાધિશતક, સમતાશતક, વીશ વિહરમાનનાં સ્તવના, અમૃતવેલી સજ્ઝાય, ચાર આહારની સજ્ઝાય, પંચ પરમેષ્ઠિગીતા, સીમંધરસ્વામીનું નિક્ચય—અવહારગર્ભિત બેંતાલીસ ગાથાનું સ્તવન, આઠ દ્રષ્ટિની સજ્ઝાય, માન એકાદરીનાં દોહસો કરપાણકોનું સ્તવન, અગિયાર અંગની સજ્ઝાય, સમ્યક્ત પડ્સાનકની ચાપાઈ, અતીત, અનાગત અને વર્તમાન ચાવીશીનાં સ્તવના, પદા, જિન સહસ્તામ વર્ણન, ચેડતી પડતીની સજ્ઝાય ' વગેરે શ્રંથા રચી ગુર્જર સાહિત્યસૃષ્ટિ ઉપર તેમણે મહાન ઉપકાર કર્યો છે.

જેમ તેમણે લાકલાય ત્રાદાં સ્તવના, જેમ કે-' જગછવન જગ વાલહા,' 'વિમલાયલ નિતુ વંદીએ'-વગેરે ત્રાહિત્ય રુપ્યું છે, તે રીતે 'જ્ઞાનપ્રાર' અને 'ત્રમધ્યાત્મસાર' એવા વિદ્રક્ષોં આ ગહેન ઉચ્ચ કાેટિના બંધાની રચના પછુ કરી છે. ઉપાધ્યાયજીએ કયા વિપ્રયામાં કલમ નથી ચલાવી એ કહેનું મુશ્કેલ છે. તેમણે ન્યાયના અનેક બંધા જેવા કે-' શાઝ્રવાર્તાસમુચ્ચય-ટીકા, નયાપદેશ, ન્યાયખંડખાદા, ન્યાયાલીક, નયરહસ્ય' વગેરે રુપ્યા છે. અન્ય દર્શનની માન્યતાને જેન દર્શનમાં ઉતારવાનું તેમનું અફલુત શામધ્ય' હતું. એમની કૃતિએ પ્રતિપાદક શેદીની અને પ્રસંગાપાત્ત ખંડનાત્મક શેદીની, સમન્યયવાલી, વિશદ દેશિલાલી, તર્ક અને ન્યાયથી લરપૂર અને આગમાનાં ગંભીર રહસ્ય અને ચિંતનવાલી પૃરવાર થઈ છે.

દર્શન, ગ્રાન, ચાસ્ત્રિ સાથે તપમાં પણ તેઓ સંયમી જીવનવાળા હતા. વીશસ્થાનકર્તું તપ તેમણે કર્યું હતું.

જે 'નવપદછ પૃજા ' એાળાંના દિવસામાં ચાલુ હાય છે તે તેમણે બનાવી છે. શ્રીચિંતય વેંજવગાદ્યુંએ 'શ્રીશીપાળ રાસ ' સં ૦ ૧૭૩૮માં બનાવ્યા, તેમાં સાડા સાતસા ગાથા સુધી ગામ ગંદેરમાં રાસ રચ્યા પછી તેઓ કાળધમ પામ્યા; આકીના રાસના વિલાગ કે જેમાં નવપદછની પૃજા આવી જાય છે, તે વિલાગ ઉપા૦ શ્રીયગાવિજયછએ પૃદ્ધ કેર્યો. આ રીને સહાધ્યાયીનું ઋજુ એદા કર્યું, અને જૈન જગતના ઉપકારી અન્યા.

જેવી રીતે શ્રીહેમચંદ્રાચાર્યજીના જીવનપ્રસંગાની તિથિએા અરાબર મળી શકે છે, તેવી રીતે ઉપાધ્યાયજીના જીવનપ્રસંગાની તિથિએા અને સાલ ચાઇટસરીતે ઉપલબ્ધ થઈ શકતી નથી, છર્તા 'સુજસવેલી લાસ' શ્રંથ કે જે તે સમયના સુનિ શ્રીકાન્તિવિજયજીએ લખેલ છે, તેમાં સં. ૧૭૪૩ માં શ્રીઉપાધ્યાયજીએ ડિલાઇમાં ચતુર્માસ કરેલ છે, અને ચતુર્માસ પછી કાળધર્મ (સ્વર્ગવાસ) પામેલ છે, એવી હિદીકત જણાવે છે. તેઓશ્રીની પાદુકા સં. ૧૭૪૫ માં ડિલાઇમાં પ્રતિષ્ઠિત થયેલી છે. વસ્તુતઃ પાદુકાના જિણે હાર—પ્ર મહારાજ શ્રીવિજયધામં સ્વિજ્ઞના વિદ્વાન શિષ્ય શ્રીયશાવિજયજી મહારાજ (જેમને માટે નજીકના ભવિષ્યમાં મંગલમય ઉપાધ્યાયજી પદપાસિ માટેની આગાહી મારી દિષ્ટિએ લાગે છે) જેમણે મુંબઇ—સાયખલામાં—સં. ૨૦૦૭ માં સ્વ૦ પ્ ઉપાધ્યાયજીની દેરીના જો દ્રાહિદાર અને જીવનચરિત્ર પ્રકાશિત કરવાના સમિતિદ્વારા નિર્ણય લહેર કર્યા હતા. તેઓશ્રીની જ હાજરીમાં તેઓશ્રીના ગુરુવર્યો હસ્તક સં. ૨૦૦૮ માં ત્રજી દિવસના મહાત્સવપૃવધ ડિલાઇમાં આરસના લગ્ય નૃતન ગુરુમંદિરમાં મૂર્તિની પ્રતિષ્ઠા તથા શ્રીયશાવિજય સારસ્વતસત્ર મહાત્સવ ઉજવાયા હતા એ આનંદદાયક ખીના હતી.

ચૌદસા ચુંમાલીસ (૧૪૪૪) ગ્રંથાના કર્તા યુગપ્રધાન શ્રીમાન હરિભદ્રસૂરિ પછી લગભગ એક હેજાર વર્ષે યશાવિજયજી ઉપાધ્યાય થયા છે, અને તે "લઘુ હરિભદ્ર" નામે સંખાધાય છે. સાઢા ત્રણ કોઢ શ્લાકાના રચયિતા, અઢાર દેશામાં અહિંસાના પ્રચારક અને કુમારપાળ રાજાના પ્રતિખાધક શ્રીહિમચંદ્રાચાર્યજી તથા અકખર બાદશાહના પ્રતિખાધક અને ભારતવર્ષમાં અહિંસાના ઢંકા વગાઢનાર શ્રીહીરવિજયસૂરિ પછી શાસનપ્રભાવક તરીકે ઉ૦ શ્રીયશાવિજયજીના અવતાર થયા; આવા જ્યાતિધર મહાત્માઓથી જેન શાસન અવિશ્વિષ્વપણે ટકી રહ્યું છે. અમુક યુગા પછી આવા મહાત્માએ પ્રગટ થવા જોઈએ, તેમ શ્રીમહાવીર પરમાત્માએ કહેલ છે, તે મુજબ જ જૈન શાસન એકવીશ હજર વર્ષા પર્યંત ચાલુ રહી શકશે.

શ્રી ઉપાધ્યાય જ એ એક સાે ગ્રંથ ઉપરાંત લગભગ એ લાખ શ્લાકાની રચના કરેલી છે. ઘણા ગ્રંથા તેમના અલભ્ય છે. 'ભાષારહસ્ય' નામના સ્વરચિત ગ્રંથમાં તેમણે જ કહેલ છે કે, "रहस्य" પદાંકિત ૧૦૮ ગ્રંથા કરવા નિર્ણય કરેલ છે, તેમાંથી માત્ર 'ભાષારહસ્ય' 'ઉપદેશરહસ્ય' અને 'નયરહસ્ય' મળે છે.

સ્વ૦ ઉપાધ્યાયજી મહારાજનું સાહિત્યજીવન અટલે સમ્યગ્ દર્શન, જ્ઞાન, ચારિત્રમય અપાર પાંહિત્ય, ભાલ પ્રદ્માચર્ય, સંયમ, તપ, ગુર્જર ભાષાસમૃદ્ધિ, વ્યવહાર અને નિશ્ચયદિષ્ટની સમન્વિતતા, તાર્કિકપણું, ન્યાય શ્રીકાનું ઉત્પાદન, નવીન ન્યાયનાં સર્જન, સરળમાં સરળ ગુર્જર ભાષાનાં સ્તવના, કાવ્યા અને પદાવાળું, તેમ જ 'અધ્યાત્મસાર' અને 'અધ્યાત્માન પનિષદ' જેવા ઉચ્ચકારિના શ્રીકાની સર્જકતાવાળું વગેરે વિવિધતાના સંમિદ્યષ્ટ્રપ્ રેકશાળી વચનમય જીવન.

પ્રસંગાપાત્ત કહેવાનું પ્રાપ્ત થાય છે કે, ગત વર્ષના દ્વિ૦ વૈદ્યાખ માસના શ્રી કાનજી સ્વામી તરફથી સાેનગઢથી બહાર પડતા 'આત્મધર્મ' માસિકમાં તેમને માટે "વ્યવદાર વિમૂહ" શબ્દ વાપરીને તેમને હલક્ટ રીતે ચિતરવામાં આવ્યા છે પણ તે કેવળ લેખકનું

તેઓશ્રી વિરચિત સાહિત્યના તક્ત બિનજનુલવતું પરિદ્યામ છે, જાગવા ઇરાદપૂર્વ કેમ્બન્ય કૃત્ય છે. તેમણે તેન અવદારની સુખ્યતા સખી નિક્ષય હિંગી ઓલ્તા, આપણ જેવા લસ્તકેઝના માનવીઓ માટે સમય શુષ્ટ્રસ્થાનક સુધી મર્યાકાર્વે અતાવી છે. કેવલી લગવંતને પણ તેરમા શુષ્ટ્રસ્થાનકમાં વ્યવહાર સાચવેલા પડે છે, તેથી જ લીચે કર પરમાત્માઓ અતુવિધ મંત્રની સ્થાપના કરે છે, એ સુપ્રસિદ્ધ છે. નવકારનાં પદાયાં પ્રથમ અરિહંત પદ તે વ્યવહાર જાને બીલું સિદ્ધ પદ તે તિક્ષ્ય છે. અરિહંત પરમાત્મા વગર અરૂપી સિદ્ધપદની એળાળાષ્ટ્ર કેલ્યુ આપી શકે ? એ વિશે ઉપાધ્યાયલ મહારાં સ્વયં કર્યું છે કે—

" તિશ્વય કૃષ્ટિ હૃદય ધરીજી, પાલે જે વ્યવહાર, પુરુષવંત તે પામશેજી, ભવસમુકૃતા પાર ^છ

આ મહાત્ ત્રોયતિષંર કે જેઓ પૃરં જન્મના અદૃલુત શ્યોપગ્રમ હઈને અવત્યાં હતા, તેઓ પદ્દશંનવેતા, ચેંકો લેચાના રચયિતા, ન્યાય, વ્યાકરન્ન, છંદ્દ, સાહિત્ય, અલંકાર, કાન્ય, તકે, સિહંત, આપ્રમ, નય, પ્રમાણ, સમસંગી, અધ્યાત્મ, પ્રેય, સ્થાદૃવાદ, આચાર, તત્ત્વનાન ઈત્યાદિ વિષયા ઉપર વિદ્વદૃત્તાચ્ય, તથા સામત્ય જનતા માટે શુજરાતી વગેરે સાકસાપામાં વિયુદ્ધ સાહિત્યના રસ્થળ ધરી ગયા. નથ્ય ત્યાપના ચાલ જેન વિદ્વાન, ત્યાયાચાર્ય ત્યાયવિશાસ્ત્ર અદિ બિક્રેકોને પ્રાપ્ત કરનાર શુળ-ત્રીયાતિષ્ટ રેતે આપણ અનેકશા વંદન હા.

'ઉપયિતિલવપ્રપંચાકથા' કે જે ગ્રેલ ડ્રેનર 'શેલિયમ ગ્રંચ્કૃત કંધ છે, તેમાંથી ગ્રાર ખેંચી ગુજંર લાયામાં શ્રીવિયળનાથના ક્તરનમાં એમણે—

> " તત્ત્વ પ્રીતિકર પાણી પાએ, વિમળા લાકે આંછછ; લાયણગુરૂ પરમાત્ર દીધે તત્ર, ભ્રપ્ત નાખે સવિ ભાંછછ. "

ધર્મ ત્રાપક માકશાસ્ત્રી (શુરુ)થી પ્રાપ્ત કરેલું સમ્યગ્ફર્શનરૂપ હત્ત્વ પીલિકર પાણી, સફ્ફાન ડ્રિટ્રિય નિર્મળ અંજન અને સચ્ચાસ્ત્રિટ્ય પરમાત્ર (શીર)નું સ્વરૂપ લાકશાયામાં ખડું કર્યું કે, તેમજ શ્રીસુવિધિનાથના સ્તરનમાં—

" યૂગ સ્વિ^લ તરૂઅર અધ શાખા રે, ક્રક્ષ પરંબુ એવી છે ભાષા રે: અચસ્પિત્રાળે અચસ્પિ કીધું રે, બક્તે સેવક ક્ષરુપ સીધું રે.

આ હલેકન ' શ્રી ભગવદુખીતા 'માં કહેલ જ્યાક સાથે કેટલીક મેળ આપ છે.

" कर्चम्लमयः शासं, अम्बत्यं शाहुत्व्ययं । छन्दांनि यस्य पत्राणि, यस्तं वेद स वेद्दिन् ॥"

આ ²લાકના રહ્યને આક્ષ્ય તર્નાકે વડારી પ્રદુષ્તિકા માટે લાકલાયામાં સમન્વ્ય કર્યો છે. દાહ્યા અને સાલ ત્રવૃદ્યા ગાયાનાં સ્તરતામાં નિક્ષ્ય નય અને વ્યવહાર નયથી લસ્પૃર ઉપદેશા છે. એમાં અપૂર્વ યુક્તિએથી મૃતિંપૃત સિદ્ધ કરી છે. છેર્ગ્ટે કહ્યું છે કે— " મુજ હાેજો ચિત્ત શુભ ભાવથી, ભવ ભવ તાહરી સેવ રે; યાચીએ કાેડી યત્ને કરી, એહ તુજ આગળે દેવ રે. તુજ વચન રાગ સુખ આગળે, નિવ ગહું સુરનર રાર્જ રે; કાેડી જો કપઢ કાેર્ક દાખવે, નિવ તજું તાેએ તુજ ધર્મ રે. "

આ છે તેમના અદ્ભુત શાસનરાગ અને અલોકિક પ્રભુભક્તિ!

આનં દસ્વિ ગચ્છના શ્રીવિજયાન દસ્વિજીએ સત્તરમાં સેકામાં રચેલા 'ધર્મસં શહ' ગ્રંથ કે જેની દીકા મહાપાધ્યાય શ્રીમાનવિજયગિલુએ કરી છે, તે ગ્રંથનું સંશાધન ઉપાધ્યાયછ મહારાજે કરેલ છે; તેના તાજેતરમાં જ ભાષાંતર સાથેના પ્રથમ વિભાગ પ્રકાશિત થયા છે. સં. ૧૭૩૯ માં 'શ્રીજ' ખૂસ્વામી રાસ' તેમણે ખંભાતમાં રચેલ તે તેમના પાતાના હાથના અક્ષરાવાળા પાનાંઓ સાથેના મળે છે.

આ રીતે તેઓશ્રી લક્તિપરાયછુ, રાનપરાયછુ, સંયમી અને તપપરાયછુ સાહિત્ય-છવન છવી ગયા છે, અને આપણા માટે વિવિધ સાહિત્યની વાનગીઓથી લરપૂર વારસો મૂકી ગયા છે, જેથી શાસનની પ્રભાવનાનું નિમિત્ત ખની પાતાના આત્મા ઉપર તેમ જ લવિષ્યની પ્રભા ઉપર મહાન ઉપકાર કરી ગયા છે. આવા મહાત્માઓ પાતાની છવનલીલા સંકેલીને સ્વગે સંચર્યા. શ્રીભતૃંહરિછના શખ્દામાં કહીએ તા આવી મહાન વિબૂતિઓ " अलंकरणं मुवः—પૃથ્વીના અલંકારરૂપ" છે. તેમ જ કવિ ભવબૂતિના શખ્દામાં " जयित तेऽधिकं जन्मना जगत्— હે મહાત્મન્! તમારા જન્મથી આ જગત્ જયવંત વર્તે છે." એટલું કહી ઉપસંહારમાં તેમણે જ રચેલા ' જ્ઞાનસાર' ગ્રંથના અંતિમ—સવ' નયાના આશ્રયવાળા સ્તુતિ—શ્લાક, તથા આત્મનાગૃતિ માટે તેમણે રચેલી ' અમૃતવેલી સજ્ઝાય'ની વાનગીરૂપ એક જ કાવ્ય સાદર રજૂ કરી વિરમું છું.

" अमूदलक्ष्याः सर्वत्र, पक्षपातचिवर्जिताः । जयन्ति परमानन्दमयाः सर्वनयाश्रयाः ॥ "

" નિશ્ચય નય અને વ્યવહાર નયમાં જ્ઞાનપક્ષ અને ક્રિયાપક્ષમાં, એક પક્ષગત-બ્રાંતિ તછને સર્વ નયાના આશ્રય કરનારા પરમઆનંદથી ભરપૂર (મહાપુરુષા) જયવંત વર્તે છે."

> " ચતન જ્ઞાન અજીવાળીએ, ટાળીએ માહ સંતાપ રે; ચિત્ત ડમડાલતું વાળીએ, પાળીએ સહજ ગુણ આપ રે. "

ઉપાધ્યાયજી મહારાજ

त्रभने

तत्क्षां यशिस्थति

[ક્ષેષક : શ્રીયુન રાજપાલ મગનલાલ વહેારા, ખાષ્ટ્યો]

ઉપાધ્યાય૭ના સમયના અધ્કૃણયુગ—

જેન સંઘમાં જેમ અવારનવાર જ્યાંતિષ્દે શતા રહ્યા છે, તેમ અધકારના સામના પણ સંઘને અવારનવાર કરવા પડ્યો છે. ઉપાધ્યાય શીમાન યશાવિજયછ મહારાજના સમય એવા અંધકાર શુપ્ત હતા એમ કહેવામાં હરકત જેવું નથી. સુનિઓના ગ્રાન્ટિયનાં ભારે શિથિલતા પ્રવેશી ચૂકી હતી. શીપૃત્યા અને યતિએજું પ્રત્રળ પૃષ્ટ હતું. સત્યધમીને આચરવા તા કાઈ તૈયાર ન હતું પણ સાંભળવાયે કાઈની તૈયારા ન હતા એવું તહાલીન પરિસ્થિતિ પરથી દેખાય છે. કુશુકુઓનું જેર, ધામધૂમની ધમાધમ, કુશુકુઓના કંદમાં ગૃહસ્થાનું પહનું, પૈત્રા લઈને ધમે અતાવવા ઇત્યાદિ, ત્યારે માત્રા પ્રમાણમાં પ્રવત્યાં હશે. કારણ પૃ ઉપાધ્યાયજી મહારાજની અનેક કૃતિએપમાં અંતરની એ વેદના તેમણે વ્યક્ત કરેલી છે. એટલું જ નહિ, પણ તેમના સમકાશીન શીમાન આનંદવનજી મહારાજ જેવા પરમયોગીને તત્કાલીન જનતા પિછાની શકી ન હતી અને એ હદે વાત પહેંચી કે તેમને લગનગ વનવાસી જેવું છવન છવલું પડ્યું!

ક્રિયાગોયિલ્ય દૂર કરવાની પરમાવશ્યકતા જણાતાં પંત્યાય શ્રીસત્યવિજયછ મહારાજે તે સમયે ક્રિયોહાર માટે કમર કર્યા હતી. ઉપાધ્યાયછ મહારાજના તે વાતને સંપૂર્ણ હાર્દિક ટેકા હતો. પરંતુ પરિસ્થિતિ એવી વિષમ હતી કે તેઓ શ્રીપંત્યાયછને કર્યા સક્રિય મદદ કરી શક્યા ન હતા. આ આખત વિગ્રે લેખકને સદ્દળત શ્રીમાતીઅંદરમાઈ કાપિયા યાયે વાત થયેલી ત્યારે તેમણે કહેલું કે એમ થવામાં ઉપાધ્યાયછ મહારાજના સમયની વિષમ પરિસ્થિતિ તો કારણમૂત હતી જ પરંતુ કંઈક અંગે તેમનું હ્લયોશબંલ્ય પણ હશે. અમે તેમ હો, પણ ત્યારની પરિસ્થિતિ સ્થક્ષ્માંના સાધકને અનુકૃષ્ઠ ન હતી એવાત ચારકસ

શ્રીમાન ગમાનંદવનજી યહારાજને પણ સ્તવન ચાવીશીમાં, ગચ્છના મતલેદો ત્યારે દેવા હતા અને સુગુરુના દેવા વિરહ પ્રવર્તતા હતા અને પત્ર મૂકવાનું પણ દેકાર્યું ન હતું તે વાત ક્રિય શબ્દોમાં વ્યક્ત કરવી પહી છે. એટલું જ નહિ, પૃ. હપાચ્યાયજીને, પોતે ઝાની અને શુદ્ધ સંયમી છતાં ત્યારના અતિવિષમ સંનેગાને વશવતી ને એકથી વધુ વખત માફી-પંત્રા લખી આપવાની ક્રજ પડી હતી ! કેટલી હદે કાળબળ તેમનાથી વિરુદ્ધ હરો તેના ખ્યાલ આ ઉપરથી આવી શકશે.

આચાર્યપદ મેળવી કેમ ન શક્યા ?—

આચાર્યપદની પરિપૂર્ણ યાગ્યતા તેમનામાં હતી. તેમની વાણી કાઈ પણ નયશી અધૂરી નથી એમ તેઓશ્રી પાતે ભારપૂર્વંક અને અધિકારપૂર્વંક કહે છે (વાણી વાચક યશતણી કાઈ નયે ન અધૂરી રે) ભાષામાં અને સંસ્કૃતમાં, ગ્રાનનાં સર્વ ક્ષેત્રોને તેમણે ખેડ્યાં છે. આવી પરમવિભૂતિ આચાર્યપદથી કેમ અલંકૃત થઈ ન શકી? ત્યારની જનતાએ કેમ ઔદાસિન્ય રાખ્યું હશે? વગેરે પ્રશ્નો આશ્ચર્યભાવે ઉદ્ભવે તેવા છે. આમ થવામાં કેટલાંક કારણા વિચારી શકાય. એક તાે એ કે એવી અંધકારમય પરિસ્થિતિને તેમણે ચલાવી લીધી નથી પણ તેમની કૃતિઓમાં ત્યારનાં પ્રત્યાઘાતી બળાના તેમણે ઊધડા લીધા છે. ખીજું, તેઓ જવનના પાછલા કાળમાં આનંદઘનજી જેવા યાગીવર – કે જેઓ જનતાથી દૂર ફેંકાઈ ગયા હતા–ના ભારે પ્રશંસક ખન્યા હતા. આ કારણાથી તે વખતની જનતા પર જેમનું પ્રચુર પ્રભુત્વ નમી ગયું હતું તેવાં ખળા અંતરાયભૂત બની ગયાં હાય તેમ સંભવે છે. શ્રીમદ્ યશાવિજયજી મહારાજની જેમ શ્રીમાન વિનયવિજયજી મહારાજ પણ આચાર્યપદને યાગ્ય છતાં તે પદ મેળવી શક્યા ન હતા. વર્તમાનમાં સામાન્ય ગ્રાનવાળા સાધુને કે ગઈકાલના દીક્ષિતને માટે આચાર્યપદ સુલભ બની ગયું છે, જ્યારે આવી મહાવિભૂતિઓને ત્યારના સંઘે ન સન્માની એ કાળભળની વિચિત્રતા જ સૂચવે છે.

સીહાઈ-સ'પ, અંકતા ને ઉદાર હૃદયના પ્રેરંકપ્રસ'ગ—

-

ખારા સમુદ્રમાં મીકી વીરડી જેવા એક ખનાવ પૂજા સાહિત્યમાં સ્મરણીય ખની ગયા છે તેની નાંધ લેવી આવશ્યક માનું છું.

ઉપાધ્યાયછ મહારાજના નિર્વાં પછી, આચાર્ય શ્રીજ્ઞાનવિમળસ્રિજીએ તેમજ ખર-તરમચ્છના આભૂષણુરૂપ આત્મજ્ઞાની મુનિ શ્રીદેવચન્દ્રજીએ ઉપાધ્યાયછ મહારાજના નામથી નવપદ પૂનની રચના કરી છે. એ પૂન્નની આદિમાં ભુજંગપ્રયાતવૃત્તમાં પ્. જ્ઞાનવિમલ-સૂરિજીએ દરેક પદની દૂં કી સ્તવના કરી છે. એ પછી ઢાળમાં, દરેક પદની સ્તવના પ્. દેવ-ચંદ્રજી મહારાજે કરી છે અને ત્યાર બાદ 'શ્રીપાલરાસ'ના ચાથા ખંડની અગિયારમી અને બારમી ઢાળા—જેના રચયિતા પૂ. ઉપાધ્યાયજી મહારાજ છે—માંથી, પ્રત્યેક પદને યાગ્ય ભાગ અલગ અલગ દરેક પૂન્નમાં મૂકેલ છે. અંતમાં માલિનીવૃત્તમાં પ્. જ્ઞાનવિમલસ્રિ મહારાજે અને કલશમાં પ્. દેવચન્દ્રજી મહારાજે પાતાનાં નામ વ્યક્ત કર્યાં છે. ભિન્ન ગચ્છના વિદ્રાના વચ્ચેની આ ઢાર્દિક એકતા અને ઉપાધ્યાયજી મહારાજ પ્રત્યેના આ બંને મહાત્માઓના અહાભાવ, સૌઢાદેનું સુંદર દર્શત પૂર્વ પાઢ છે, જે સાંભળતાં આપણા દ્દયને અસર કરે છે.

તે કાળમાં આવા પૃત્યોનું પણ ચરિત્રચિત્રણ બિલકુલ નિર્દે થતું કાય એમ જણાય છે. નિલ્તિર, પૃ. ઉપાધ્યાયછ મહારાજ કે આનંદઘનછ મહારાજના વ્યવસ્થિત છવનચસ્ત્રિ માટેની આપણી ઉતકંદા–ક્રયારનીયે તુમ થઈ હાત. પૃ. હપાધ્યાયછ મહારાજ માટે "સુજય-વેલીમાત્ર " નામક નાની કૃતિ મળે છે પણ તે યુસ્તિકા, તેમની વિશાળ વિદ્વત્તાના અદુ-વિધ પાસાવાળા જીવનને પૃણુંતયા ત્યાય નથી જ આપી શકવી.

ઉપાધ્યાયભ મહારાજ અને તેમના કાળની અત્ય વ્યક્તિએ તેમજ ત્યારના સંબેગા, સુડાયક ખુળા, અવરાધક ખુળા વગેર વિશે ગુવેપણા પૂર્ણ માહિતી અત્ય વિદ્વાનાના કુંચનમાંથી મળી રહેશે એ અપેક્ષા રાખીને આ તમુ આલુખન પછે કર્ફ છે.



कप्टेन हि गुणपामं, प्रगुणीकुरने मुनिः। ममताराञ्ची सर्व, मञ्जयत्येकहेलया ॥ ३॥

મુનિ સંકટ વેઠીને ગુજાના સરાદ હૈયાર કરે છે અને મમતા-રૂપી રાક્ષસી તેં। એક્ઝપારે બધું ક્ષ્યુંબૂ કરી જવ છે.

અધ્યાત્મસર : સ્ટીક] [શ્રીમદ્ પરીાવિજયછ

乐

ન્યાયાચાર્ય જૈન જયાતિધર મહાપાધ્યાય શ્રી. યશાવિજયજી

[લેખક : શ્રીયુત મગનલાલ માતીચંદ શાહ, સુરેન્દ્રનગર]

" नमोऽस्तु तस्मै देवाय, सगुणाय तपस्विने। ज्ञानध्यानवरिष्ठाय, नमोऽस्तु मे नमोऽस्तु मे॥"

સંસારમાં વિદ્યમાન મહાતમાઓની પૂજાલકિત અનેકરીતે થઈ શકે છે પરંતુ અવિ-લમાન મહાત્માઓની પૂજાલકિત તે ખહુમાનથી, શ્રહાથી અને દ્દયથી તેમના ગુણાનુવાદ ગાવાથી જ થઈ શકે છે. જયન્તીઓ ઊજવવી, સમારંભા કરવા કે ખીજી ઘણી રીતે તેમના ગુણાનુવાદા ગાઈ શકાય છે. આજના પ્રસંગ પણ એવા જ છે કે જૈન દર્શનના સુવિખ્યાત સંત, પ્રખર તત્ત્વરૂ, ઉત્તમ સાહિત્યપ્રેમી અને સર્વધર્મના ભાવને સમજાવનાર અઠંગ મહા-પાધ્યાય શ્રી યશાવિજયજી મહારાજને અંજિલ આપવાના છે તેમજ તેમનું સ્મરદ્યુ કાયમ રહે, ભક્તિભાવ વૃદ્ધિ પામે અને સમાજ તેમના જ્ઞાનના ચિરકાળ સુધી લાભ લે એવાં વિધિવિધાન કરવાના છે.

જેશું સંસારમાં જન્મ ધરીને યશકીર્તિના સંપૃષ્ઠું વિજય કરી પાતાના છવનમાર્ગને રાજમાર્ગ કે જ્ઞાનમાર્ગ અનાવ્યા છે કે જે માર્ગ આપણા માટે પરમ હિતાવહ છે, એવા પરમ પ્રતિભાવંત, જ્ઞાનવંત, શુલુવંત ઉપાધ્યાયછ મહારાજનું નામ લેતાં જ કાઈ અનેરા આનંદ અનુભવાય છે. જેમના ક્ષયાપશમ ઉત્તમ હતા, જેમની દર્શનશુહિની ગણના ઘઈ રહી છે, જેમનાં સંયમશીલનાં માપ કાઢ્યાં કઠલું છે એવા એક જેન સાક્ષરશિરામણિ, વ્યાખ્યાનવાચસ્પતિ સાધુ મહાતમાં વિશે કાંઈ લખતું એ સાધારણ ખુન્દિનું કામ નથી, વિદ્દાના જ તેમાં ચંગુપાત કરી શકે.

તેમનાં બનાવેલાં સંસ્કૃત-પ્રાકૃત પુસ્તકા તા એટલાં અધાં છે કે તેનું પૂ રું અવલાકન થઈ શકે નહીં. કદાચ કાઈ આગ્રહથી એનું નિરીક્ષણ કરવા ચાહે તા કરી શકે, પરંતુ તેમદ્દો પાથરેલા ગૃઢ તત્ત્વાર્થ એટલો વિશાળ હાય છે કે તે સમજવાને વિશિષ્ટ જ્ઞાનની જરૂર પડે.

તેમનાં ઘણાં પુસ્તકા સંસ્કૃતમાં છે. કાશીમાં રહીને તેમણે કેટલાંક વર્ષ સંસ્કૃતના અભ્યાસ કર્યાં હતા. સંસ્કૃતભાષા તા તેમને વરેલી હતી એમ કહીએ તા ચાલે. આ જ્ઞાનને માટે તેમને અજબ માન પણુ હતું, હૃદયના વિશ્વાસ હતા અને અચલ દહતા હતી. આજે આવી દઢતા ધારણુ કરનારા સંતા એાછા જ હશે. તેમનું દઢ મંતવ્ય 'ન્યાયખંડ ખાવ ' કે 'મહાવીરસ્તવ 'ના પહેલા ક્લાકમાં જ પ્રત્યક્ષ થાય છે.

- " એંકાર" જાપ જપી ગ'ગતદે વસીને, ઇચ્છા કરી કુશળ કાવ્ય અભાગ રીતે; આળા રચી સુરભિ પુષ્પ સમાન જેની, પૂજા કરે' પ્રભુષેદ વિધિથી જ તેની. [–વસંતતિલકા વૃત્ત]
- " એંકાર " છે ચિતામણિ પદ વ્યાદિમાં તેને જધું. ગંગાતદે વસી માન્ય વિષયે કાવ્યની ઈચ્છા કરું; વિકસિત સુગ'ધી પુષ્પ સરખા શબ્દને ત્યાં ગાકલું, હે વીર્! તારા પદકમળની એ વડે પૃજા કર્યું. [–હિંગીન છદ]

'ત્યાયખંડખાદ્ય 'ની રચનાના પ્રારંભમાં જ ઉપાધ્યાયછ મહારાજ મંગલાચરદ્ય તરીકે કલ્પવૃક્ષ "એંકાર" જે મરસ્વતીનું મંત્રખીજ છે તેનું સ્મરદ્ય કરીને પાતે ગંગાને કાં ઠે મ્રંસ્કૃત વિદ્યાના ધામરૂપ બનારમમાં રહી 'ત્યાયાચાય' અને 'ત્યાયવિશારક'ની માનવંતી પદ્યી મેળવી, મંસ્કૃત કાવ્યની નિયુદ્યુતા પ્રાપ્ત કરી છે તે અતાવવા વિદ્રાનાને રંજન કરવાના ઉલ્લામ પ્રગઢાવી પ્રશુ મહાવીરના મુગંધી યુપ્ય સરખા તત્ત્વન્નાનરૂપી શબ્દાની માળારૂપી શંધી કરી તે વઠે પ્રશુના ચરદ્યુકમળની પૂજા કરવાના ભાવ અતાવ્યા છે; એટલે કે આ કાવ્ય પ્રશુના તત્ત્વન્નાનની સ્તવનારૂપ છે એમ કહે છે.

'ન્યાયખ'ડખાવ' અન્થની મહત્તા—

ઉપાધ્યાયછ મહારાજનાં અધાં પુસ્તકા ગ્રાનની પરિપક્ષ્યતાથી હખાયાં છે. તેમાં 'ન્પ્રાયખંડખાદ્ય ' અત્ર ભાગ ભજવે છે. મારે 'ન્ય્રાયખંડખાદ્ય 'ના ગદ્યપદ્યાત્મક અનુવાદ કરવાંના હતો તેથી મારે તેના કેટલાક અબ્યાસ કરવા પડ્યો. આ પુસ્તકની મૂળ દૃતિ અને તેના ઉપર થયેલી અત્યંત વિક્તાભરી સંસ્કૃત ટીકા વાંચતાં જ માજ્સ થંભી બાય તેલું છે. એ કે તેમના મૂળ શ્લાકા અત્યંત અવરા નથી. કંક્સ્ય કરવા જેવા છે.

ઉષાધ્યાયછ મહારાજે 'ન્યાયખંડખાદ્ય'માં પ્રભુની સ્તુતિના ઉદ્દેશથી સ્યાદ્વાદનું જે નિર્મળુ કર્યું છે તે ચિન્તનીય છે. તેમણે પ્રથમ પ્રભુના અતિશયોનું વર્ણન કરી, વાણી અતિશયનું પ્રાધાન્ય અતાવી બૌહોના કૃષ્ણિકવાદના નિરાસ કર્યો છે. બૌહો દ્રવ્યનું લક્ષણ જે ' अर्थिकियाकारित्य ' કરે છે તેમાં થતા દ્રાય તેઓ અતાવે છે, તેમજ બૌહોની અન્વય અને બ્યતિરેક બ્યાપ્તિના દેાય સમન્વવે છે. બૌહો બીજમાં રહેલા બીજત્વને અંકુર ઉત્પન્ન ચવાનું કારણ રાષ્ટ્રે છે, પરંતુ તે વ્યાપ્તિ ખાડી છે. બીજ ઉત્પન્ન ચવાનું કારણ બીજન્વ સાથે ચહેકારી કારણે!—જમીન પાણી વગેરે લેઈએ જ, એ નિયમ સમન્તવી સોત્રાન્તિક, વૈસાપિક, શ્ન્યવાદ, વિજ્ઞાનવાદ, અનાત્મવાદ—આ બધાના સૂર જે 'ચન્ન સન્ન સ્ત્રિળક્રમ્,' ને એકાંત ગણાવી દ્રોપયુષ્ટન કરાવે છે અને પ્રભુના વ્યવહારવિશુદ્ધ નયને આધિપત્ય આપે છે, ત્યાર પછી

૧ ' ન્યાયખંડખાવ'ના મારા ગવયવાત્મક અનુવાદમાંથી.

કાળ અને દેશનું સ્વરૂપ સમજાવે છે. 'ન્યાયખંડખાદ્ય 'ના પહેલા ભાગ તા બીદ્ધના શૃશ્ચિક-વાદના પરિદ્ધાર કરવામાં જ પ્રા થાય છે. ન્યાય દર્શ નની કૂટસ્થ નીતિ પણ બતાવવામાં આવી છે. દ્રવ્યને એકાંત નિત્ય કે અનિત્ય માનવામાં ચતા દોષા બતાવી તેને નિત્યાનિત્ય કે કથંચિત્ નિત્ય માનવાની વ્યવદ્ધારવિશુદ્ધ નયની શ્રેષ્ઠતા સમજાવી છે. ત્યાર પછી દ્રવ્યની ઉત્પત્તિ અને નાશના હેતુ સમજાવી, વસ્તુમાં રહેલા ભેદાભેદ બતાવી પ્રત્યક્ષ અને પ્રત્યભિત્તાનનું સ્વરૂપ બતાવે છે.

આવી રીતે 'ન્યાયખંડખાદ્ય 'બહુ જ ખુદ્ધિપૂર્વ'ક લખાશું છે. મારે મારા અથે' અનુવાદ કરવાને કારણે તેના થાહા અભ્યાસ કરવા પડયો છે તે ઉપરથી હું આટલું લખી શકયો છું.

સંસ્કૃત કાર્ગ્યાના અનુવાદ કરવાનું કામ તો હું મારી શક્તિ મુજબ કરું છું. 'ભક્તામર સ્તાત્ર, ક્લ્યાલુમં દેર સ્તાત્ર, પ્રાર્થના અત્રીશી, સંવેગદ્રુમકંદલી, પરમાનંદ પચીશી, રત્નાકર પચીશી, સ્યાદ્વાદમંજરી, અધાગવ્યવચ્છેદિકા 'વગેરે કાર્ગ્યાના અનુવાદો શર્ક ગયા છે અને તે પુસ્તકારૃઢ પણુ થયા છે. આ અનુવાદો પછી 'ન્યાયખંડખાદ 'ના અભ્યાસ કરવાનું સદ્દભાગ્ય સાંપડ્યું, જેની પ્રેરણા તા મને 'જૈન ધમ' પ્રકાશ માંથી મળી. દૂં કમાં એ જ કે ઉપાધ્યાયજી મહારાજના જીવનના પરિચય વધ્યા અને હું મારા કાર્યમાં સફળ થયા. તેમજ આજના મંગળ પ્રસંગે અંજલિ આપવા ભાગ્યશાળી થયા એ અનહદ આનંદના વિષય છે. જો કે હું ત્યાં હાજર રહી શક્યો નથી તેના મને ખેદ થાય છે.

ઉપાધ્યાયજી મહારાજ વિશે તો લખવાનું ઘણું રહી જાય છે. તેઓ સાચા ભાવશ્રમણુ હતા, ધર્મવીર હતા, પરમ વિચારક અને પરમશ્રુત હતા. તે સર્વ ભાવા તેમનાં ગુજરાતી કાર્વ્યામાંથી પણ નીકળી શકે છે. ગુજરાતી કાર્વ્યા જૂની ગુજરાતીમાં લખાયાં છે, તે વખતે જેવી ગુજરાતી ભાષા ખાલાતી હતી તેવી જ લખાણી છે. એટલે આજની સુધરેલ ગુજરાતી આગળ નવાઈ લાગે તેવી છે. એમ છતાં આધ્યાત્મિક ભાવથી જરૂર ભરપૂર છે.

" ભવસાયર લીલાએ ઊતરે, સંવમ કિરિયા નાવે. ધન્ય તે૦ "

સાયર, કિરિયા અને એવા ખીજા શખ્દા જૂની ગુજરાતીમાં વપરાતા હતા આ દુદયભાવથી ભરપૂર હાવાથી ગુર્જર કાબ્યમાં પણ ઊંડા આધ્યાત્મિક ભાવ દર્શાવે છે. ' મુજસવેલી 'માં તેમને આચાર્ય' શ્રીહિરિભદ્રસ્રિજીના નાના ખંધુ ગળ્યા છે. તેમજ કળિ- યુગના શ્રુતધર ગણી અંજલિ આપવામાં આવી છે. આવા મહાપુરુપા ધર્મના ઉદ્ધાર માટે જ અવનીપર અવતરે છે, તેઓ ધર્માં ધુરંધર કહેવાય છે. જે હીલુ થતી આર્યસંસ્કૃતિને સજીન વન રાખે છે તેમના જન્મને ધન્ય છે. આજે આપણે તેમના ગુલ્યાનુવાદ ગાવા તૈયાર થયા એ એક અહાભાશ્યના વિષય છે. માંતે ઇચ્છીએ કે જૈનધર્મ સદા વિજયને પામા.

*

المنز مسرود

શ્રીમદ્ મહાયાધ્યાય શ્રી યશાવિજયજી

[લેખક : ઢાં૦ શ્રીયુત વદ્યભદાસ નેળુસીવાઇ]

" महात्यनां कोर्तनं हि थेयां निःश्रेयसास्पर्म्। "

અહેં કારના આવેશથી આવૃત્ત થયેલું જીવન પરમ કૃપાસાગર સદ્ગુરુદેવની કૃપારૂપી તલવારની તીક્ષ્યુ ધારાથી જ્યારે છેઢાઇને ઉજ્જવલ ખને છે ત્યારે તે જીવનની દશા દાઈ અનેરી જણાય છે. આ કચન ઉપાધ્યાયજી મહારાજના જીવન અંગે અક્ષરે અક્ષર મળતું આવે છે.

સાધુજીવન સ્વીકાર્યો પછી પણ અંતરત્રાન—અનુભવત્રાન પ્રાપ્ત થયા વિના શબ્દવિદ્યાની વિશાલતા, ખુહિની પ્રબગતા, તકે શક્તિની પ્રખરતા, બાહ્મવેય, બાદ્મકિયા અને બાદ્માચારને આડંબર, વિક્રત્તાની વિશાલતા અને વકતૃત્વકલાની વાચાલતા વગેરે અનેક બાદ્મશક્તિઓના પ્રભાવથી ગર્વિષ્ટ અનીને અહંકારની ઊંડી ખીલુમાં ગબડી ગયેલા એક વખતના જે યશા-વિજયજી હતા તેને સમુદ્રના અગાધ જલમાંથી વા પૃથ્વીતલના પાતાલ પ્રદેશમાંથી કે અધાગતિની ઊંડી ગર્તામાંથી ઉહરીને અનંત કૃપાળુ, કરુષ્ટ્રામાગર, પરમયેાગી મહાતમા આનંદઘનજીએ પરમતત્ત્વતું રહસ્ય સ્વરૂપ સમજાવી અહંકારના તિમિર પડેલાના પ્રલય કરીને, સમ્યગ્ત્રાન અને સ્વાતુલવ રૂપના અમૃતરય ચબાડીને પરમાર્થ માર્ગના સાચા પ્રેમી બનાવીને પાતાના આતમાના, સમાજના, ધર્મના અને શાસનના સાચા ઉદ્યારક બનાલ્યા.

અ'ધકારમાંથી અકળાયેલા માનત્રીને જેમ તેજન્વી સૂર્યનાં દેરીપ્યમાન કિરણા આકુળ-તાથી મુક્ત કરે છે, તેમ અહંકારરૂપી અ'ધકારના અન'ત ક્ષ્ટોથી દુઃખી થતા આત્માને સત્પુરુષરૂપી સૂર્ય સમ્યગ્રાનરૂપી જવલંત કિરણાનું દિલ્ય તેજ આપી અન'ત દુઃખથી, અન'ત આવરણાથી, અન'ત બ'ધનાથી અને અન'ત શવભ્રમજુના અસદ્યા સ'કટોથી મુક્ત કરે છે.

યગ્રેલિજયજી મહારાજશ્રીના જન્મ મં. ૧૬૬૫માં ગુજરાતના ધીણાજ પાસેના કન્હાંહુ ગામ થયા હતો. માતા મંરકારી, મદાચારી, ઉદાર, ધમંત્રિમી તથા શ્રદ્ધાવાન હતાં. પિતાશ્રી તેમની નાની વયમાં જ ગુજરી ગયા હતા. આક્યાવસ્થાનું તેમનું નામ જશવંત હતું. માતાનું નામ સોંસાચ્યદેવી હતું. ચાતુમાં સરહેલા સુનિ શ્રીનયવિજયજી પાસે માતાએ 'સપ્ટતામર' સ્તાત્ર માંસાવ્યા વિના અન્નપાણી ન લેવાની પ્રતિગ્રા કરેલી ત્યારે માત વર્ષના યગ્રાવિજયજી માતાની સાથે ઉપાશ્રયે જતા અને ગુરુ 'સપ્ટતામર સ્તાત્ર' મંમળાવતા તે તેમને યાદ રહી ગયેલું અને વરસાદની હેલીમાં માતાને ત્રસુ દિવસના ઉપવાસ થતાં ખરી હડીકત ભણવામાં આવતાં ચાયે દિવસે 'સપ્ટતામર' મંમળાવી માતાને પારહ્યું કરાવેલું. આવી તેા અદ્ભુત તેમની સ્મરણાદિત નાની વયમાંજ હતી.

ગુરુજીએ પુત્રની માગણી કરતાં સાભાગ્યદેવીએ સહર્ષ પાતાના બાળક ગુરુજીને સમય'લુ કર્યો અને તે દશ વર્ષની બાલ્યાવસ્થામાં દીક્ષિત થયા. પછીનાં દશ વર્ષમાં વ્યાકરદ્યુ, સાહિત્ય અને ન્યાયમાં નિષ્ણાત બન્યા.

આ મહાતત્ત્વજ્ઞાનીની ને એમના વિશાળ સાહિત્યની પુર્વસ્મૃતિ નાળવી રાખવી હાય તા આપણે તેમનાં વચનામૃતાની સ્વાધ્યાય રૂપે ઉપાસના કરવી ઘટે છે. તેમજ તે સાહિત્યનું પ્રકાશન કરી તેના બહાળા પ્રચાર કરી સસ્તે મૂલ્યે એવી જ્ઞાનગંગા વહેવરાવવી નેઈ એ, જેથી આબાલ વૃદ્ધ ગરીબ યા તવંગર તેના સરખા લાભ લઈ શકે.

શ્રીમદ્ ઉપાધ્યાયજી યશાવિજયજી મહારાજશ્રીની વિદ્વતા અથવા પંહિતાઈ માટે જેટલું કહીએ તેટલું એહ્યું છે. તેમનું પાંહિત્ય, તેમની કવિત્વશક્તિ, વાક્પટુત્વ, પદલાલિત્ય, અર્થગૌરવ અને રસ તથા અલંકાર તેમ જ પરપક્ષખંડન અને નિજપક્ષમંડન તેમના અનાવેલા શ્રંથામાં અનાયાસે દિષ્ટગોચર થાય છે. તેમના રચેલા અનેક શ્રંથા તેમના જ્ઞાનની અહું જ સારી રીતે સાક્ષી આપે છે. શાસ્ત્રોના વચનની અપેક્ષા શુદ્ધરીતે તેઓ સમજતા હતા અને તેથી કરીને તેમનું વચન સપ્રમાણ ગણાય છે.

સંવત ૧૭૪૩ના મહા સુદિ પના રાજ ડભાઈ મુકામે ૮૦ વર્ષનું આયુષ્ય ભાગવી તેઓ સ્વર્ગવાસી થયા.

દૂંકમાં, જેઓ ઉત્તમ તર્ક સંખંધી તીવ્ર ખુદ્ધિએ કરીને સર્વ દર્શનાને વિશે શિરામિલુ-પણાને પામેલા છે, જેઓ તપગચ્છને વિશે અંગ્રેસર છે, જેઓએ કાશીપુરીમાં પરદર્શનીઓની મુખ્ય સભાઓને છતીને જૈનધર્મના ઉત્તમ પ્રભાવ વિસ્તાર્યો છે, જેઓએ તર્ક શાસ્ત્ર, પ્રમાણુશાસ્ત્ર અને નયશાસ્ત્ર વગેરેનું વિવેચન કરી ઉત્તમ દર્શનશાસ્ત્રી તરીકે, ઉત્તમ પ્રકારના ભક્તકવિ તરીકે, ન્યાયના નિષ્ણાત તરીકે, પ્રકૃષ્ટ વ્યાખ્યાતા તરીકે અને સાધુસમાજના મુધારક તરીકે અને આદર્શ ધર્મ ઉદ્ધારક તરીકે જે નામના મેળવી છે તે મુવર્ણાક્ષરે અંકિત થઈ ચિરંજીવ રહેશે.

આવા મહાન મુનિની પુરુષસ્મૃતિ અખંડપણે સાચવી રાખવા માટે શ્રીસારસ્વત સત્ર દ્વારા જે સમારંભ ચાજ્યા છે તે પૃણું યશસ્વી નીવડે એવી હાર્દિ'ક પ્રાર્થના સાથે ચાજકાને અભિનંદન અર્પી આ લેખ પૃશું કર્યું છું.

*

Gulo श्री. यशोविकयलनुं सञ्य कवन

[લેખક : શ્રીયુત નરાત્તમદાસ ભગવાનદાસ]

[સું અઇમાં સં. ૨૦૦૬ના માગશર સુદ ૧૧ એટલે કે મીન અગિયારશે આગ્રાર્થ શ્રીવિજયપ્રતાપસૂરિજી મહારાજના પ્રમુખપેક શ્રીષશે વિજયજી મહારાજની જયંતી ઉજવાઈ હતી: તે ગેહીજીના ઉપાશ્રયમાં ત્રિકાર મેદની વચ્ચે સારી રીતે કૃતેહ પાસી હતી.

સં: २००७ના માગશર મુદ ૧૧ આચાર્ય શિવિજયપ્રતાપસૃરિજી તથા આચાર્ય શ્રીવિજયધ્રમંસ્રિજીની સંયુક્ત હાજરીમાં ભાયખલા મુકામે મંદિરના વિશાળ હાલમાં અદુ જ સારી હાજરી વચ્ચે તે જ જયંતી ઉજવાઇ હતી. પરંતુ આગલા વર્ષ કરતાં તે વર્ષે લણું મારા પ્રમાબુમાં ઉત્સાહ દેખાયા હતા અને કાર્ય પણુ ઘણું થયું હતું. તે વખતે ટસાઇમાંના યશાવિજયજી મહારાજના સમાધિમંદિરના છર્જ્યું હાર કરાવવાના અને ઉપાધ્યાયજી મહારાજનું જીવનચરિત્ર લખાવતું—આ બને કાર્યો પાર પાડવા માટે એક કંડ શરૂ કરવામાં આવ્યું અને એ દિવસના સમારંભમાં પ્. બને આચાર્યો તથા મુનિ શ્રીયશાવિજયજીના હપદેશ ને પ્રયાસથી અંદુ સાર્ગું કંડ એકત્રિત થયું હતું ને સમારંભ સફળ રીતે પાર પડયો હતા. ત્યારે સુંલઈને હપાધ્યાયછના જિવન અંગે ઘર્યું નવું ક્રાણુવાને મળ્યું હતું.

આ બધાનું સારું પરિભામ એ આવ્યું કે ડબાઇમાં શ્રીમદ્રના સમાધિમ દિરનું કામ શરૂ થયું અને ત્યાંના સ્થાનિક ગૃહસ્થાની સંભાળ તથા મહેનતથી સમાધિમ દિરના છાંદ્રોદ્ધાર થઇ ગયા. ખૂળી તા એ બની છે કે ઉપરના બન્ને આચાર્યોના શરૂ શ્રી વિજયમાહનસ્રિશના દેહાંત પણ ડબાઇમાં થયેલા હાવાથી તેમની સમાધિ પણ તેની પાસે જ છે.]

* * *

શ્રીમદ્ ઉપાધ્યાય શ્રી યશે વિજયજીનું છવન પ્રગટ થયેલી યાદીની પીસતાલીસ બાળતા ઉપરથી તારવી શકાય તેમ છે. સાથે તેમના ગ્રંથાની આપેલી ચાદી ઉપરથી પણ જણાય છે કે તેઓ ૧૭૭ શ્રંયના પ્રણેતા હતા. તેમણે અગિયાર શ્રંથ ઉપર ટીકાઓ લખી છે, તેત્રીસ શ્રંથા ગૂરુંર ભાષામાં લખેલા છે, બાર સ્વાધ્યાયગ્રંથા પણ લખ્યા છે. એમના ટૂંકા છવનમાં એમણે એટલું બધું કામ કર્યું છે કે, તેમણે એક પળ પણ શુમાત્ર્યા વિના સમયના સારામાં સારા ઉપયોગ કરી અવિછિત્રપણ સાહિત્યની સેવામાં જિલ્લી અર્પણ કરી છે.

ઉપાધ્યાયજના બંધા સંબંધી સ્વીમાં 'સમક્તિના સડ્યક ગાલની સન્ઝાય, અદ્યાર પાપસ્થાનકની સન્ઝાય, દ્રવ્ય–ગુજુ–પર્યાયના રાસ, દિક્પટચારાશોબાલ, શ્રીપાલરાસ (ઉત્તર ભાગ), સમાધિશતક, સમતાશતક, સસુદ્રવહા હ્યુસંવાદ, નવપદ પૂન, કુમિતિ ખંડન સ્તવન, નય રહસ્યળ ભિંત શ્રીસીમંધર સ્તવન, નવનિધાનસ્તવન, નિશ્ચય—વ્યવહારળ ભિંત શ્રીસીમંધર સ્તવન, સિદ્ધાં તિવારળ ભિંત શ્રીસીમંધર સ્તવન, સિદ્ધાં તિવારળ ભિંત શ્રીસીમંધર સ્તવન, અત્રિયાર અંગ સજગ્રાય, આઠ દ્રષ્ટિની સજગ્રાય; મિતિક મહ્યુગલ હતું આ અઢાર કૃતિઓ ગુજરાતી સહેલી ભાષા નહુનાર અને સમજનાર ભાઈઓને બહુ જ ઉપયોગી છે. 'સમકિતના ૬૭ બાલની સજગ્રાય' માટે કહેવાય છે કે ઉપાધ્યાયજીને કાઈએ મહેલું માર્યું કે તમે સંસ્કૃત પાકૃત ટીકાઓ અને રાસાઓ લખી નહ્યા છે પરંતુ ગુજરાતી ભાષાને ઉપકારક ઘાય એવું સમકિત ઉપર કંઈ લખી શકશો ! બીજે જ દ્વિસે પ્રતિક્રમણ નખતે ચાવીશ કલાકમાં પાતે તૈયાર કરેલી આ "૬૭ બાલની સજગ્રય" તેમણે બાલી બતાવી ત્યારે મહેલું મારનાર તા ઢરી જ ગયા અને તેણે વિનીતભાવે કર્યું કે માર્યું ગઈકાલનું કહેલું આપે તદ્દન ખાંડું કરી બતાવ્યું એ માટે આપના ઉપકાર માનું છું. સાચે જ, આપ ખરેખરા સમર્થ ગુજરાતી વિદાન છા.

'શ્રીપાલ રાનના રાસ'ના પૂર્વાંધ' ભાગ વિનયવિજયજી ઉપાધ્યાયે અનાવ્યા છે અને ઉત્તરાર્ધ ભાગ યશાવિજયજી ઉપાધ્યાયે અનાવ્યા છે પરંતુ તે અન્નેની દિશા ન્લુકી જ છે. યશાવિજયજી ફેવું સરસ કામ કરી શકે છે તેના આ રાસ અચૂક પુરાવા છે.

' અઢાર પાપસ્થાનકની સજઝાય ' તો હું જ્યારે નાના નવ વર્ષના હતા ત્યારે અમારે ભાવનગરમાં શેઠ કું વરજી આણું દજી, ગિરધર આણું દજી તથા ઝવેર ભાઈચંદ પ્રતિક્રમણમાં બાલતા, તેના ગું જરવ હજી સુધી હું ભૂલ્યા નથી એવી એ સુંદર કૃતિ છે.

4 ભાર ભાવના ' પણ યશાવિજયજી મહારાજે બનાવેલી ઉત્તમ કૃતિઓમાંની એક છે, જે જીવનને અજવાળનારી એક ઉત્તમ કૃતિ છે.

' જ્ઞાનસાર અષ્ટક ' ૨૫૬ શ્લાકના ગ્રંથ છે. સં ૦ ૧૯૫૦માં ભાવનગરમાં શા. દીપચંદ છગનલાલે ઢીકા સહિત છપાંચ્યા હતા, તેની પંત્યાસછ ગંભીરવિજયછ મહારાજે સુક્રતક દે પ્રશંસા કરી હતી અને કપૂરવિજયછ મહારાજે તેની પર વિવરણ લખ્યું હતું. અધ્યાત્મના એ ઉત્તમ ગ્રંથ છે.

'સમુદ્ર-વહાણુના સંવાદ 'એ ઉપાધ્યાયજીએ ઘાઘા ખંદરમાં રચ્યા હતા અને તે સમુદ્ર કાંઠે વહાણુના માટા કાક્લા નેઈને તાદશ ચિતાર ઉપરથી બનાવ્યા હતા, તે બતાવે છે કે ઘાઘાબંદરની નહાન્યાલી તે વખતે કેવી હતી!

'સીમંધર સ્વામીનું ૧૨૫ ગાયાનું સ્તવન ' તથા '૩૫૦ ગાયાનું નયગિલન્તિ સ્તવન ' એ બંને સ્તવનામાં તે સમયે આપણા જેનધમ કેવી પરિસ્થિતિમાંથી પસાર થતા હતા તેનું આબેડ્રૂબ ચિત્ર ખડું કરે છે.

' કુમતિખાંડન ' એ આત્મારામછ મહારાજે બનાવેલા "સમક્તિ કારપાંદાર" જેવું જ તે સમયના આપણા બાંને પદ્માનું કેવું ભયાંકર માનસ પ્રવર્તતું હતું તેનું ચિત્ર ખડું કરે છે. " આઠ દ્રષ્ટિની સજ્ઝાય" એ ઉપાધ્યાયછની અધ્યાત્મ વિષે સરળ અને મુગમ ભાષામાં અસાધારણ શક્તિ અતાવનારી અને ઉપકારક કૃતિ છે, જે છવ, એ સમજવાને યત્ન કરે તે તેના જીવનમાં પલટા લાવી દે એવી છે.

ચાગી આનંદઘનછ તથા ઉપાધ્યાય વિનયવિજયછ તથા ક્રિયાહદ્ધાર કરનાર શ્રીસત્યવિજયછ પંત્યાસ એ ત્રણે યગ્રાવિજયછના સમકાલીન હતા. યાગી આનંદઘનછ તે સમયના એક અદ્વિતીય પુરુષ હતા. પૈસાદાર કે કાેઈની પરવા કરતા નહિ અને જંગલમાં જઈને અવધૃત છવન ગાળતા હતા.

ઉપાધ્યાય શીવિનયવિજયજી તથા શીયગોવિજયજી બન્ને વચ્ચે બટુ જ પ્રીતિ અને સમભાવ હતો. તેઓ બન્નેએ વિચાર કર્યો કે જેનધર્મમાં ન્યાય સંબંધી શ્રી જે છે તેમાં કાશી જઈને અભ્યાસ કરીને ઉમેરા કરવાની બટુ જ જરૂર છે પરંતુ તે વખતનું કાશી બટુ જ રૃઢીચુસ્ત હતું. કાઈ પણ જેન સાધુને તે વખતના પંડિત બ્રાહ્મણા ન્યાય ભણાવે એ શક્ય ન હતું. તે વખતે વ્યવહારના માર્ગ પણ બદૂ જ સુશ્કેલ હતા.

એ બન્ને મુનિરાજોને સાધુવેશ છાડીને ગૃહસ્થના વેશમાં પંડિતા પાસે ત્યાય ભાગવાની જરૂર પડી, તે પણ સમય પરત્વે તેમણે સ્વીકારી હતી. ત્યાંથી પાછા આવ્યા પછી તેમણે ગુજરાતમાં અને કાઠિયાવાડમાં ઘણા પ્રવાસ કર્યો હતો. તેમનું જન્મસ્થળ પાટણ પાસે કનાડું કરીને ગામડું હોવાનું જાણાય છે.

એ વખતના ગુજરાતમાં મંદિરવાસી યતિએાતું અટુ જ નેર હતું, તે એટલે સુધી કે સુવેગી સાધુએાને ઉપાશ્રયમાં ઊતરવા પછુ દેતા નહીં. તે વખતે ઉપા. શ્રીવિનયવિજયછ, શ્રીયગ્રાવિજયછ તથા શ્રીસત્યવિજયછ પંત્યાસે હિંમત કરીને ક્રિયાઉદ્ધાર કર્યો.

વળી, ઉપાધ્યાય શ્રીયગ્રાવિજયજી મહારાજે અવધાના પણ કર્યાં હતાં.

પાલીતાલુમાં યદ્યાવિજયજી જૈન ગુરુકુલ, ભાવનગરમાં યદ્યાવિજયજી જૈન શ્રંથમાળા, પાલીતાલુમાં યદ્યાવિજયજી જૈન પાઠગાળા તથા એક વખત કાશીમાં શ્રી વિજયધાર્મસ્જિ તરફથી ગ્રલાવાયેલી યદ્યાવિજયજી જૈન સંસ્કૃત પાઠગાળા એ એમના નામ સાથે સંકળાયેલી સંસ્થાઓ છે. ડેસાઈમાં ઉપા. શ્રીયદ્યાવિજયજીના નામથી ચાલતી કેટલીક સંસ્થાએ પણ આમાં ઉપરી તેઈએ.

ઉપાધ્યાયજના શુરુનું નામ નયવિજયજ હતું અને ઉપાધ્યાયજ કેટલા ખધા વિનયી દતા તે 'સમકિતના સડસફ બાલ 'ની સજગ્રયના અંતમાં તેમણે જણાવ્યું છે કે–

" શ્રીનયવિજય વિશુધ પયસેવક, વાચક યરા એમ બાલે રે. "

એ ઉક્તિથી ઉપરથી જણાશે. અસલના વખતમાં ગુરુ-શિપ્યના જેવા પ્રેમભાવ અને ભક્તિભાવ હતા તેવા હાલ ખદ્દ થાડા દર્શાંતામાં જેવા મળે છે.

" ૩૫૦ ગાયાના સ્તવન 'માં એમણે જે કહ્યું છે તે ખટુ વિચારવા જેવું કહ્યું છે અને તેમાંથી જેટલા સાર તાસ્ત્રી શકીએ તેટલા સાર તાસ્ત્રી શકાય તા ઘણું સારું.

યાગીશ્વર શ્રીમદ્ યશાવિજયજીની

જ્ઞાનદીપિકા – જ્ઞાનસાર અષ્ટક

[લેંખક : શ્રીયુત અમરચંદ માવછ]

શ્રીમદ્ યશે વિજયછ ઉપાધ્યાય આપલા સમાજમાં મહાન તાર્કિક વિદ્વાન અને શાંત્રોના રંચયિતા તરીકે ગરંવી શુજરાતને આંગણે પ્રકાશિત થઈ ગયા. તેમની પ્રતિભાના કીંઘે પ્રકાશ અંઘાપિ સૌને પ્રકાશિત કરી રહ્યો છે. તેઓશ્રીના ન્યાયના અનેક શંધા તેમજ અંધાત્મયાગમાં શંધા પૈકી તેમણે 'જ્ઞાંનસાર અષ્ટક' શંધની, સાધક આત્માઓ માટે ખેરેખર એક દીવાદાંડીરૂપ રચના કરેલી છે. આ શંધ તેઓ શ્રીમદ્ની ઉત્તરાવસ્થામાં પરિપક્ષ યાગળળ વડે સર્વ શાસ્ત્રોના પરિચય કરી, પચાવી તેને તેના અમૃત સરખા રસ કરી, આત્માર્થીઓને પીરસી ગયા છે, જેનું પાન કરી આત્માર્થી સાધકા સહજ આનંદ અને સ્વયં શાંતિ પ્રાપ્ત કરી શકવા ભાગ્યશાળી થઈ શકે તેવા એ શંધ છે.

અમ શ્રંથમાં કમળપુષ્પની ૩૨ પાંખડીની જેમ ૩૨ અપ્દેશ છે, અને એકએક અપ્દકમાં આઠમાં અનુષ્ટુપષ્મ ધી શ્રીકા છે. તે શ્રંથ સંસ્કૃતમાં છે છતાં તેની ભાષા એટલી અધી સરળ અને હૃદયંગમ અને ભાવવાહી છે કે તે વાંચતાં આનંદ આનંદ થાય છે. આ અપ્દકૃં આપણી માતૃભાષામાં ગુજરાતી અવતરત્તું પાતે જ કરેલું છે અને ' જ્ઞાનસાર 'ના ભાવને ખૃષ્મ જ સ્પષ્ટ કર્યો છે. આપણે જેના પણ 'ગીતા 'ના જેવા પુસ્તકની માગણી કાયમથી કરી રહ્યા છીએ પણ આપણી પાસે આ સનદીપિકા 'ગીતા' જેવી જ છે તેના ઉપયાગ પણ કરતા નથી.

આ ' જ્ઞાનસાર ' શ્રંથ નિશ્ચય અને બ્યવહારની સંધિરૂપ છે. તેમાં જ્ઞાન-કિયાના પરમાર્થભાવે જે ઉપદેશ કરવામાં આવ્યા છે તે મુજબ સાધકા પાતાની સાધના અંતમું ખર્દિએ શરૂ કરે તા જરૂર તે જ્ઞાન સારરૂપ જ્ઞાનના તત્ત્વને પ્રાપ્ત કરી શકે. આપણે ત્યાં જેમ ' સમયસાર ' આદિ શ્રંથાને માટે એક તરફ પ્રવાહબદ્ધ વ્યવસ્થિત પ્રચાર ઘર્ષ રહ્યો છે, તેમ જ્ઞાનસારના આપણા પ્રત્ય વિદ્વાન સાધુમુનિશને દ્વારા સમાજમાં પ્રચાર થાય તા આપણી જે આધ્યાત્મિક ભૂખ છે તે ઘણે અંશે સંતાપી શકીએ. શ્રીમદે પ્રાપ્ત કરેલી મહાન વિશાળદિપથી દરેકમાંથી તત્ત્વના સાર શાધી શાધી, તેનું રસાયણ બનાવી આપણને આપ્યું છે. તેમાં ' સમયસાર 'નાર્ય સાર લીધા છે અને ' પ્રવચનસાર 'ના પણ સાર લીધા છે, 'ગીતા'યે લીધી છે અને અન્ય આગમ, વેદાંત આદિ શ્રંથાના પણ સારનિશાહ લીધા છે. તેઓશ્રીની એ પ્રાભાવિક વિશાળતા ' જ્ઞાનસાર 'માં ખરેખર દેદીપ્યમાન થયેલી તેવાય છે.

' ગ્રાનસાર 'માં નિશ્રયદૃષ્ટિ મુખ્ય રાખીને તે પ્રાપ્ત કરવા હતુદાં હતુદાં મહત્ત્વનાં અપ્ટેશ ક્રમબન્દ લખી, પૂર્ણાપ્ટ એટલે પૂર્ણ ભગવાન આત્માને સાધ્ય તરીકે મૂકી, બાકીનાં અપ્ટેશ સાધનરૂપે વર્ણું છે. છેવડે સર્વાનયાપ્ટકમાં આત્માને સમભાવમાં સ્થિર કર્યો છે. આત્માને પાતાનું સ્વરૂપ પ્રાપ્ત કરવા માટે જે જે સાધના પારમાર્થિક દૃષ્ટિએ જરૂરનાં છે તે તે સાધના સંપૂર્ણપણ આ અપ્ટેશમાં સમાવેશ પામે છે.

આ 'ગ્રાનસાર' શ્રંથ ઉપર મહાન તત્ત્વતરંગી આધ્યાત્મિક કવિ શિદિવચંદ્રજી મહા-રાજે 'ગ્રાનમંજરી' નામક મુંદર શિકા લખી 'ગ્રાનસાર'ના ભાવને ખદુ સ્પષ્ટ કર્યો છે અને સાધકને અંતર્મુખ થવા માટે, રાગફ્રેયનાં દ્વન્દ્રમાંથી છૃટવા માટે વિસ્તારથી તેમાં દર્શાવ્યું છે. આ શ્રંથની બે ત્રગુ જાતની આવૃત્તિએ મારા જેવામાં આવી છે. તેમાં છેલ્લી સ્વ. પંતિ-વર્ષ શીભગવાનદાસ હરખર્ચંદ દાશીવાળી આવૃત્તિ બહુ જ મુંદર શુદ્ધ અને વ્યવસ્થિત છે. આ શ્ર્યની આપણા સમાજમાં પ્રતિષ્ઠા થાય અને તેના ખૂબ ફેલાવા થાય એ જરૂરી છે. કારણ કે અત્યારના યુગમાં આધ્યાત્મિક વિકાસ જરૂરના છે. જડવાદના મહાન તાંડવ સામે આપણી આધ્યાત્મિક સમૃદ્ધિ જો જાળવી નહિ રાખીએ તે એ જડવાદના પૃર્ભા આપણે તાલાઇ જવાનું જ છે.

અમ ' જ્ઞાનસાર'ના ઉપર વિશદ અર્થ, જેમ ગીતાના અર્થા લુદા લુદા ગ્રાનીઓએ લીકી લીકી કરી, છવન માટે તેની ઉપયોગિતા દર્શાવી છે તેમ આધ્યાત્મિક શાંતિ પ્રાપ્ત કરવા માટે ' ગ્રાનસાર' જેવા એંચાની ખટુ જ આવશ્યકતા છે. તેના ઉપર વિવેચના—ગ્યાખ્યાના ધાય અને આધુનિક શુગના નવધુવંકાને પણ એમાં રસ પ્રાપ્ત ઘાય તે રીતે આધ્યાત્મિકતાનું સાચું સ્વરૂપ દર્શાવવા અને એ મહાપુરૂપની ક્રીપાવશીને દિવસે પૂર્ણ કરેલી દ્રીપિકાતુલ્ય ગ્રાનસારની જેમાત સમાજમાં પ્રગદાવવા તેમાં કરિલે પૂરી, તેના પ્રકાશ સમાજને આપવાની આવશ્યકતા છે. શ્રીમદૃનું ઋણ ચૂક્વવા માટે તેમની ગ્રાનજમાત પ્રગદ રાખવામાં આવે એ શ્રીમદૃનું સાચું સ્મારક છે.

સ્વર્ગ મનિત્ર શીકપૃંદવિજયછ મહારાજશીએ 'ગ્રાનસાર'ને અપનાઓ હતો અને તેના ઉપર સુંદર વિવેચન લખ્યું હતું જે તેમના લેખસંગ્રહ લાગ- દ તરીકે પ્રસિદ્ધ થયેલ છે. શીગ બારિવજયછ મહારાજશીએ પણ 'ગ્રાનસાર'ના બાવાર્ય લખેલ છે. અત્યારે આ ગ્રંથ વિપે વધુ પ્રકાશ પાડતાં વિવેચના લાભુવામાં નથી. સ્વર્ગ શીકું વરજીનાઈને જ્યારે દું પ્રથમ લાવનગરમાં મળ્યા અને આધ્યાત્મિક ગ્રંથ માટે માગણી કરી ત્યારે તેમણે મને 'ગ્રાનસાર' આપ્યા અને જણાવ્યું કે, 'આ અમૃત છે.' મને એ મહાયુરૂપનાં વચન સત્ય લાવ્યાં છે. એ 'ગ્રાનસાર'થી પ્રમુદિત થઈ તેની લાવવાડી 'ગ્રાનગીતા' નામક એક શતકની મનહરછં દમાં સં. ૨૦૦૧માં રચના મેં પ્રગટ કરી હતી. અત્યારે પણ મને 'ગ્રાનસાર' શ તિ આપે છે. સાધ્યની સિદ્ધિ માટે સાધકને સાધનરૂપ 'ગ્રાનસાર' એક 'ગીતા' જ છે એને દું પૂર્ણ પ્રેમથી વળગી રહ્યો છું. અનેક સુનિ મહારાજીનો પણ તે વિપે વ્યાખ્યાના

આપવા, પ્રચાર કરવા, તેના નાના નાના ગુટકાએા, માટા વિવેચનગ્રંથા છપાવી સમાજમાં છૂટથી વહેંચવા અને વાંચવા માટે જણાવું છું.

જયારે શ્રીમદ્ના હેલાઈખાતે 'સારસ્વત સત્ર' ઉજવાય છે ત્યારે મારી આ ઘણું વર્ષોથી દિલમાં વહેલી 'ગ્રાનસાર'ની સરિતાને સવે સમાજની આધ્યાત્મિક તૃષા તૃપ્ત કરવા સમાજને આંગણે વહેલી થાય, સર્વ પરેબારૂપી પાઠશાળાએમાં તે પાઠચક્રમ અને તેવી ભાવના સાથે વિરસું છું.

> " આત્મસિદ્ધિને પામવા, શ્રહવા જ્ઞાનના સાર, સ્વાધ્યાય કરજો સદા, 'અમર' શ્ર'થ જ્ઞાનસાર. "

> > 卐

अर्हमित्यक्षरं यस्य, चित्ते स्फुरति सर्वदा । परं ब्रह्म ततः शब्दब्रह्मणः सोऽधिगच्छति ॥२७॥

'અર્ડમ'એવા અક્ષર જેના ચિત્તમાં હમેશાં રકુરાય-માન થતા રહે છે તે આ શબ્દભ્રવયો પરમહ્યવની પ્રાપ્તિ કરી શકે છે.

દાર્ત્રિસિકા

િ શ્રીમદ્ યરોાવિજયછ



મહાે જી યશાવિજયછેના જૈન સંઘ પર કરેલા ઉપકાર

[ક્ષેખિકા : કુંગ્ર શ્રી. ચંદ્રિકા સામચંદ ગાંધી]

શ્રીમહાવીર પ્રભુ પછી શ્રીસુધર્મસ્વામીની ૬૦ મી પાટે શ્રીવિજયહીરસૂરિ મ૦ ના શિષ્ય ઉપાધ્યાય શ્રીક્લ્યાઘુવિજયછ, તેમના શિષ્ય શ્રીલાભવિજયછ ગણિ, તેમના શિષ્ય ઉપાધ્યાય શ્રીનયવિજયછ મહારાજ હતા, તેઓશ્રીના શિષ્ય શ્રીયશાવિજયછ મહારાજ હતા, તેઓશ્રીના શિષ્ય શ્રીયશાવિજયછ મહારાજ હતા. તેઓ મહાન્ શ્રુતધર, પડ્દર્શનશાસ્ત્રવેત્તા, ન્યાયવિશાસ્દ ભિરુદધારક, ત્યાયાચાર્ય, તાર્કિકશિરામિદ્યુ, કુમતના પ્રખર ઉત્થાપક, અનેક શ્રંથરત્નાના રચયિતા તરીકે સર્વત્ર પ્રસિદ્ધિ પાસ્યા છે.

તેઓશ્રીના જન્મ ક્રન્કાેડુ ગામમાં થયા હતા. તેમનું પૂર્વાવસ્થાનું નામ જસવંતષ્ટુમાર હતું. બાલ્યવયમાં જ વેરાગ્યર્સથી રંગાઈ પંહિત શ્રીન્યવિજયજી સહારાજ પાસે પાટણમાં દ્રીક્ષા અંગીકાર કરી હતી, અને ત્યારથી તેઓશ્રી સ્શાવિજયજીના શુભ નામથી ખ્યાત થયા.

સ્ત્રદર્શનનું સારી રીતે ગ્રાન મેળવ્યા પછી મંસ્કૃત ભાષા, ન્યાવશાસ્ત્ર અને અન્ય દર્શનોના અવ્યાસ કરવા માટે તેઓશ્રી સરસ્વતી દેવીના નિવાસસ્થાન સરખા કાશીનગરમાં પધાર્યા. ત્યાં તાર્કિક્ષ્ટ્રલમાત કર્યા પડ્ડાંનના અખંડ ગ્રાતા, સાતસા શિષ્યોને મીમાંસા અદિ શાસ્ત્રોના અવ્યાસ કરવતા એક લફાચાર્ય પાસે શ્રીયશાવિજ્યજી મહારાજે અવ્યાસ કરવા માંડયો. કુશાલાબુદ્ધિથી ન્યાય, મીમાંસા, બોદ્ધ, વેશેવિક આદિના સિદ્ધાંતા તથા 'શ્રિ'તામણિ' આદિ ન્યાયલંથાના પારગામી બન્યા. તેમજ માંખ્ય, પ્રભાકરસદ્દનાં મહાદુર્વંડ સ્ત્રો અને દાર્શનિક પરંપરાના મતાંતરા ભણી લીધા.

દરમ્યાન એક મંત્યાસી આડંબરપૂર્વંક કાશીમાં આવ્યા. કાેઈ તેને છતી ન શક્યું ત્યારે આ મહાતુલાવે ગુરુની આગ્ના મેળવીને મુર્વંજન સમક્ષ વાદ કરી છત મેળવી. આથી ત્યાંના પંડિતાએ લવિધ્યના મમર્થ શાસનપ્રસાવક શ્રીયશાવિજયછના લારે સતકાર કરી ત્યાયવિશાસ્ત્રની માનલરી માટી પદવી અપંદ્યુ કરી.

ત્યાંથી વધુ અભ્યાસ માટે તેઓ આગા આવ્યા અને ત્યાં એક પંહિત પાસે તક'– કર્કરા સિદ્ધાંત અને પ્રમાણકાસ્ત્રોના અભ્યાસ કર્યો તથા દુદ'મ્ય વાદી અની તાર્કિકશિરામણિ શ્રીયશાવિજયજીએ સ્થળે સ્થળે જીત મેળવી જયપતાકા પ્રાપ્ત કરી, શ્રી જૈનશાસનની અદ્ભુત પ્રભાવના કરી. ન્યાયના સા શ્રંથ રચવાથી અન્યમતના પંડિતા તરફથી ન્યાયાચાર્યનું ખિરુદ પાલુ તેઓશ્રીને મળ્યું હતું.

સૂત્ર, નિર્યુક્તિ, ભાષ્ય, ટીકા, ચૂર્ણિ એ પંચાંગીયુક્ત શ્રીજિનવચનના એક પણ અક્ષર ઉત્થાપનાર કુમતવાદીઓની, મુનિઓમાં શેખર અને કુમતાત્થાપક શ્રીયશાવિજયછએ અરાબર ખબર લઈ નાખી હતી.

દૂંહકોના ખંડન માટે તથા યતિઓમાં પ્રવેશેલી શિથિલતા દૂર કરવા માટે તેઓશીએ અનહદ પ્રયાસ કર્યો હતો. કુમતોનું સખત શબ્દોમાં ખંડન કરવાથી અનેક હશ્મના ઊભા થયા હતા પરંતુ વાચકશેખર મુનિવરે શત્રુઓની લેશમાત્ર પણ પરવા કરી ન હતી. દૂંહકો, યતિસમુદાય અને શિથિલાચારી સામે નિડરપણે ઊભા રહી તેઓશ્રીએ શાસનની અદિતીય સેવા અનવી છે.

તેઓશ્રીના વખતમાં હુંપકમતનું પ્રાગલ્ય વધતું જતું હતું. આથી મહાધુરંધર વિદાન શ્રીયશાવિજયજીએ સટીક ' પ્રતિમાશનક ' શ્રંથ બનાવી, સ્થાપનાનિશ્રેપનું સ્વરૂપ સમજાવી, ઘણા ભવ્યજીવામાં પ્રતિમાસ્થાપના, પ્રભુપૂજન વગેરેની દઢ શ્રહા ઉત્પન્ન કરી હતી.

પાતાના જીવનકાળમાં સંસ્કૃત, પ્રાકૃત, ગુજરાતી, હિન્દી વગેરે ભાષામાં લાખા શ્લાક-પ્રમાણુ ગંથાની રચના કરી અનેક આત્માઓને શ્રીજિનશાસનના રાગી બનાવ્યા હતા.

તેઓશ્રી સિદ્ધાંતના રહસ્યને ખહુ સારી રીતે સમજ્યા હતા અને તેથી જ જ્ઞાન કે કિયા અથવા નિશ્ચય કે વ્યવહારમાંથી કાઈ એકની પુપ્ટિ કરવા જતાં ખીજ માર્ગની ન્યૂનતા, લઘુતા કે અવગલુના તેમનાથી કદી થઈ નથી; માટે જ તેઓશ્રીનું વચન સપ્રમાલુ ગણાય છે એ તદ્દન વાસ્તવિક છે.

અનુપમ શ્રંથરચના, આગમનું વિશેષ જ્ઞાન, શાસનની અત્યંત સેવા, અતિ નિપુર્ૃતા, અરે ! એવા તાે સેંકડા અને લાખા શુણાને લીધે પ્ શ્રીહરિસદ્રસ્રિ મગ્ના લઘુળાંધવ, ખીજા શ્રીહેમચંદ્રાચાર્ય અને કળિયુગમાં પણુ શ્રુતકેવળીનું સ્મરણુ કરાવનાર તરીકેની અનેકવિધ ઉત્તમ ઉપમાઓ તે યુષ્યપુરૂષે પ્રાપ્ત કરી હતી.

સત્યમાર્ગના પરમ પ્રકાશક, મહાન્ શાસનપ્રભાવક શ્રીયશાવિજયજીની શાસરચના સાગર જેવી ગંભીર, ગંગાના તરંગા જેવી ઉજ્જવળ અને ચન્દ્રિકા જેવી શીતળ, નિર્મળ અને પવિત્ર હોવાથી સવ્યાત્માઓને પરમ આનંદ આપનારી છે, તેમજ તેઓશ્રીની કૃતિઓએ અનેક આત્માઓને આધિખીજની પ્રાપ્તિ કરાવી છે. સંખ્યાખંધ આત્માએના સમ્પગ્દર્શન નિર્મળ કરાવ્યાં છે, તથા અનેકાનેક અંતઃકરણોને શ્રીજિનશાસનના અવિહેટ રંગથી રંગી દીધાં છે. તેમજ શ્રીમદ્ આત્મારામજી મહારાજના શુરુદેવ, શ્રીમદ્ સુટેરાયજી મહારાજ વગેરે અનેક મહાત્માએને મિથ્યામાર્ગમાંથી ખરેડી સમ્યગ્માર્ગની શકા અને અનુસરજ કરાવ્યું છે.

તેઓશ્રીનાં રચેલાં સ્તવના આદિ એટલાં સરળ, રસિક અને બાધપ્રદ છે કે, આજે પણ આવસ્યક—ચેત્યવંદનાદિમાં માનભેર ગવાય છે. તેઓ શ્રીની નાનામાં નાની કૃતિમાં પણ તક અને કાવ્યના પ્રસાદ તરી આવે છે. આવા એક પ્રાસાદિક કવિ, સુક્તિમાર્ગના અનન્ય ઉપાસક, શુબુરત્વરત્નાકર, પ્રખર જિનાગ્રા-પાલક, અને પ્રસારક મહાપુરુષનું સ્મરબુ કાયમ રહે માટે તેને લગતા જેટલા પ્રયત્ના થાય, તેટલા પ્રયત્ના કરવા જરૂરી છે.

અતા મહાપુરુષની કૃતિએત મન, વચન અને કાયાની એકાબતાથી અલ્યાસ કરનારને સમ્યગ્ર દર્શાન, સમ્યગ્ ગ્રાન અને સમ્યગ્ ચારિત્રિક્પી માક્ષમાર્ગની ઉત્તમ આરાધનામાં ઉત્તરાત્તર પ્રગતિ કરાવી આત્મિક અનંત સુખસાગરમાં નિશ્ચિતપણે સ્નાન કરાવવાની શક્તિ ધરાવે છે.

દશે રિશાએાની અંદર વાદીએામાં વિજય મેળવવારૂપ, શરદ્ ઋતુના ચંદ્ર જેવા ધવળ સુયશને પૃથ્વી પર ફેલાવી નામ પ્રમાણે જ ગુણવાન મહામહાપાધ્યાય શ્રીયશેા-વિજયજીના દિવ્ય આત્માને ત્રિવિધે ત્રિવિધે વંદન હો.



परः सहस्ताः द्यारद्वां, परे योगमुपासताम् । हन्ताईन्तमनासेच्य, गन्तारो न परं पत्रम् ॥२८॥ देश्या वर्षथी येशभी इपासना धरनाः। शील कैनेत्रा, भरेभर ! करिइंटर्ना सेवा ध्या विना परभपदनी प्राप्ति ध्या स्था

ঃার্নিशিधा]

[શ્રીમદ્ર યરાવિજયજ

વાચકશ્રી યશાવિજયજી

अभनी भूर्तिने। अनावरण विधि

[લેખક : શ્રીયુત શા. ગારધનદાસ વીરચંદ, મુંબર્ષ]

[શ્રી. સૂલચંદછ મહારાજની પરંપરાના વિદ્યમાન સુનિ શ્રીયગ્રાવિજયછ મહારાજના પ્રયત્નથી સુંગઈમાં હમણું છે વર્ષથી મહાપાધ્યાય ત્યાયાચાર્ય શ્રીયગ્રાવિજયછના ગુણાનુવાદના સમારંભ થાય છે. ગઈ સાલે (સં. ૨૦૦૭ માં) એમના સમુદાય તરફથી ભાયખલાખાતે ઉપધાનક્રિયાની પ્રવૃત્તિ શરૂ હતી; એટલે સમારંભ પણ ત્યાં જ ગાઠવાયા હતા. એક તૈલચિત્ર હતાઈ ગામ ઘણા વખતથી કરાવેલું હતું તે ત્યાંથી મંગાવી તે તથા એમના કેટલાક ગ્રંથા ઉચ્ચ આસન ઉપર આકર્ષક રીતે સ્થાપવામાં આવ્યા હતા. સિવાય એમની કૃતિએા લબ્ય, અલબ્ય જેટલી જાણવામાં આવેલી તેની યાદી એ લાકડાના પાટિયા ઉપર આલેખી હતી. જરીના ઉત્તમાત્તમ ચંદ્રવા અને બીજી અનેક સુશાભિત વસ્તુઓથી પ્રસંગનું ગૌરવ વધાર્યું હતું.

વાચક થ્રી. યશાવિજયજીની પાલુકા હેલાઈમાં-શ્રીમાલી વાગાવાળા દરવાન બહાર-જ્યાં સ્મશાનબૂમિ છે એને લાગીને જૈન મુનિઓના મૃતદેહને અમિસંસ્કાર કરવામાં આવેલા, તેમના સ્ત્ર્પા છે તે ભેગી એક દેરીમાં પધરાવેલી છે. ઉપર સં. ૧૭૪૫ના માગશર મુદ ૧૧ના સમય આપેલા છે. આ ઉપરથી એ નક્કી કરવામાં આવે છે કે, " મહારાજના દેહાત્સર્ગ' અહીં થયેલા છે અને તે સાલ દિન આ નહિ તા તે પહેલાંના એકાદ બે વર્ષનું હશે.

શ્રીવિજયધામંસ્ર્રિજી માના શિષ્ય મુનિ શ્રીયશેષિજયજી મૂળે રક્ષેષ્ઠના છે. શાદ નાથાભાઈ વીરચંદના આગળ પડતા કુટુંગના તે પુત્ર છે; તેમના કુટુંબના ત્રક્ષેક યુવકા મુનિઅવસ્થામાં તેમની ભેગા છે.

કેટલાક શિષ્યા પાતાના શુરુની મહત્તા જ વધારવામાં મશુરૂલ હાય છે; તે દૃષ્ટિ તજીને શ્રીયશાવિજયજીએ જે શુજાનુરાગની ભાવનાને મૃતિમાંત કરી છે તે અભિનંદનીય છે. વાચક શ્રીયશાવિજયજી તરફ એમને કેટલા ઊંડા ભષ્ટિનબાવ છે તે એમણે અત્યારે ઉપાડેલી પ્રવૃત્તિનું પ્રતીક છે.^ર

૧. 'સુજસવેલી ભાસ પ્રસિદિયા અવ્યા પછી અર સાલ સં. ૧૭૮૧ની નિર્ધિત છે, તે પંદેશી તો અનેક તમે કરવામાં આવતા.

ર. તેમણે ઉપાધ્યાવજીની મૂળ દરીને સ્થાને આરમનું વ્યક્તિય મોદર દેખું કરવાનું આર્ગમાં દીધું છે (તે પરિપૂર્ણ થઈ ગયું છે.) અને દેતા ઉદયારન વિધિ મોદા સમારં સપૂર્વ કે થનાર છે.

અમ સાલે પણ એમના પ્રયત્નથી એમના અધ્યક્ષપણામાં મોન એકાદશીની સવારમાં ગાહીજના ઉપાશ્રયના વ્યાખ્યાન ખંડમાં સમારંભ યોજાયો હતો. ડેસાઇના ઊગતા જૈન તરુણ ચિત્રકાર પાસે તૈયાર કરાવેલું ઉપાધ્યાય શ્રીયશાવિજયછ મહારાજશીનું તૈલચિત્ર જે એ યુવાન લઈને આવ્યા હતા તેની અનાવરણ વિધિ થઈ હતી.]

શુનધર શ્રી. યશાવિજયજી ઉપાધ્યાયના જીવનની ચાંછસ શૃંખલાળ તે નોંધ લકાલીને કાઈ વિકાને કરી નથી એ દુઃખની વાલ છે અને કરી હશે તો ' સુજ્યવેલી ભાસ' સિવાય કાઈ હતા હાય આવી નથી જગદ્રશરૂ શ્રી. હીરવિજયસ્ટિના ' હીરસૌભાગ્યકાર્સ્ય' અને એવાં ખીજાં કાર્યોની વાલ ખાજીએ મૃદીએ તો પણ ઉપાધ્યાયશ્રીથી એાછી મહત્તા ધરાવનારા અને તેમના કાળને લાગીને ચનારાઓ પૈકીમાં ઉપાધ્યાય શ્રીદેવચંદ્રજીના ' દેવવિલાસ' મળે છે. શ્રી. સત્યવિજય પંત્યાસની પરંપરાના શ્રી. જિનેવિજય અને ઉત્તમવિજયજી તેમના વિદાન શિષ્ય શ્રી. પદ્મવિજયજીએ લખેલું પદ્મમય છવન પ્રગટ શેશું છે; જે પદ્મવિજયજીએ ઉપાધ્યાયજીના 'સાહી ત્રણસા આધાન સ્તવન' ઉપર ખાલાવેશાય લખ્યા છે: શ્રી. વિજયલક્ષ્મીસ્ટિની જીવનરેખા. તેમના ગર્જીના શિષ્ય પરિવારમાંના કવિબહાદૃર શ્રી. દીંપવિજયજીએ ' સાહમકુલપદ્ધવત્રી 'ના ગુજરાતી પદ્યમય પટ ઉપર આલેખી છે તથા અન્ય શિપ્યોએ પણ પૃથકૃ પૃથકૃ રેખાંકન કરેલું મળે છે. ર

આપણને અહીં આંગળ એ જ પ્રક્ષ ધાય છે કે યાર્ગિવસૃતિ શ્રીઆન દેશના અને મહાપાત્ર (ક્ષુતેસાંગર) યગાવિજયજી એવી કાઈ ગરિતાવસીમાં ઉપેક્ષણીય કેમ રહ્યા? શ્રી. માનવિજયજી ઉપાધ્યાયે પાંતાના 'ધર્માસાંબહે' શ્રંથ યગાવિજયજી પાસે સુધરાવ્યાનું લખ્યું છે અને તેમને ક્ષુતંકેવલી તરીકે એળખાવ્યા છે. એમ મેં શ્રી. ન્યા. વિ. ન્યા. તી. સુનિ શ્રીન્યાયવિજયજી પાસેથી વાતવાતમાં સાંબહ્યું છે. શ્રી. દેવગંદ્રજી ઉપાધ્યાયે 'જ્ઞાનસાર' અપ્રક ઉપર ફ્રાનમાં જેવી શ્રિકા લખનાં એમને માટે ઘણાં જ માનસાં વિશાહના વાપર્યા છે.

શ્રી. ગ્રાનિવમલસૂરિએ ઉપા. યગ્રાવિજયજીની પોગદિષ્ટની સજગપે ઉપર ભાળાવળાધ લખ્યા છે. તેમણે અને દેવચંદ્રજીએ 'શ્રીપાલ રામ માંઘી સિલ્ચક અંગેનો એ ઢાળાને યથાયાં અ રાતે ગાઠવી 'નવપદ પૃત્ત નું નિર્માણ કર્યું છે; પણ દાઇએ એમના જીવનના અથથી ઇતિ સુધીના બનાવાના યથાવત્ સંચંદ્ર કરવાના પ્રયાસ કર્યો નથી. આનું પરિણાંમ એ આવ્યું દે, અનુમાન જત્ય વાતાની પરંપરા લોકામાં ગ્રાહતી થઈ. આજના જેવા સાધન-સંપત્ર એ જમાના નહાતા. મુખકથા એ તે જમાનાનું મુખ્ય લક્ષણ હતું. કથાનકાએ પાતાની રીતિએ દરેક વસ્તુને બંધબેસતી કરી દીધી. સમાજ પ્રાકૃત હતા, ગ્રાનમ પત્તિ સ્વદય હતી, અત્યારે આપણ ત્યાં પશ્ચિમની વિદ્યા મધ્યાકાં આવીને સર્વત્ર પાતાના સ્વાન્ત

શ્રી. જિનવિજયજીએ પાદરામાં કાળ કરેલા ત્યાં તેમના સ્ત્રૂપ છે. ત્યાં આગળ પહેલાં તેમની અવસાન નિધિએ તેમનું છત્રન વંચાનું.

ર. આ વધા રામે.એક થી. માહનવાલ દેમાઈએ 'જેન ઐનિવાસિક રાસમાળા 'માં સંશોધન કરી કીકા સાથે આપ્યા છે 'જેન યુગ 'માં મેં તેને આધારે તેમનું જીવનવૃત્તાંત દેકમાં લખ્યું છે.

પ્રકાશ પાથરી દીધા છે. છતાંચે આપણી સ્થિતિ તા હજી પૂર્વવત્ છે. તા તે કાળ માટે તા શું કહેલું ? અસ્તુ.

પહેલું એ કહેવામાં આવે છે કે, શ્રી. યશાવિજય અને શ્રી. વિનયવિજય એ ળંને ગુરુલાઇઓ અથવા કેટલાકના કહેવા પ્રમાણે વિનયવિજય કાકાગુરુ હતા. ળંનેએ જશલાલ અને વિનયલાલ નામ ધારણ કરી પ્રાહ્મણ વિદ્યાર્થી તરીકે પાતાને ઓળખાવી કાશીમાં ત્યાંના પ્રાહ્મણ પંડિત પાસે અલ્યાસ શરૂ કર્યો. તેમના ન્યાયના સંપૃષ્ણ અલ્યાસ ભાર વર્ષે પૃરા થવા આવતં તેમને ખબર પડી કે, ગુરુ પાસે હજી એક માટા ન્યાયબંધ છે, જે એ ઘણી કાળજીપૂર્વક ગ્રુપ્ત રાખે છે અને કાઈને ભણાવતા કે જેવા સરખા આપતા નથી. આ બે મેધાવી શિષ્યોને એ બંધ ધારી લેવાની મહેચ્છા થઈ. આથી તે બંધ મેળવવાની તકની રાહ જેતા હતા. કાઈ કામસર ગુરુ પરગામ જતાં એ તકના લાભ ઉઠાવવાના એમણે નિર્ણય કર્યો. ગુરુપત્ની પાસેથી એ અલલ્ય બંધ યુક્તિથી માગી લઈ અડધા ભાગ જશે અને બાકીના વિનયે રાતારાત કંઠાબ કરી લીધા અને સવારમાં તે ગુરુપત્નીને પાછા આપ્યા.

આ હકીકતમાંથી આપભુને કેટલાક વિચારમુદ્દા ઊભા થાય છે.

(૧) વિનયવિજય અને જશવિજય એ ગુરુ લાઈ હતા ? કદી નહિ. એ ઉપાધ્યાય શ્રીજશવિજયજીના એકલા ગુજરાતી ગંધાથી જ સ્પષ્ટ થાય છે.

" તાસ પાટે વિજયસેન સુરીસર, તાસ પાટે વિજયદેવસુરીસર:

તાસ પાટે વિજયસિ હસ્ટ્રીસર, તે ગુરૂના ઉત્તમ ઉઘમઘી ગીતારથ ગુણ વાધ્યા:

તસ હ્વિતસીખતણું અનુસારંગ, જ્ઞાનપાગ એ સાધ્યા રે. (૨૦૬-૪)

શ્રીકલ્યાણવિજય વડવાચક, હીરવિજયગુરૂ સીસો:
ઉદયા જસ ગુણસંતિ ગાયં, સુર કિશર નિસંદીસા રે. (૨૯૮ ૬)

ગુરૂ શ્રીલાભવિજય વડપંહિત, તાસ સીસ સોભાગી:

શ્રત વ્યાકરણાદિક બહુમાંથ, નિત્ય જસ મિ લાગી રે. (૨૯૯-૯)

શ્રી ગુરૂ જીતવિજય તસ સીસો. મિતમાવંત મહતા!
શ્રીનયવિનયવિભુધ ગુરૂભાતા. તાસ મહાગૃષ્ટ્યંતા રે.
જે ગુરૂ સ્વપરસમય અભ્યાસર્પ, બહુ ઉપાય કરી કાસી:
સમ્યગદર્શન સુરૂચિ ગુરૂભિતા, મુજ મિત શુભ ગૃષ્ટ્વાસી રે. (૨૮૧-૯)

જસ સેવા સુપસાયઇ સદ્ધર્ભ, ચિતામિષ્ય મે લહિઉ. "

[८भेः लस सेवा-तेदनी सेवाइप ले प्रसाह तेद्धे ध्रशने सदल्यांदे चितामणि जिसेमणि नामे भद्धान्यायशास्त्र ते बद्धा-पाभ्येः.]—ऽभ्यभुव्ययंत्र-स्थान १७ स्वेत्पत होत

આ રાસની-સં. ૧૭૨૯ ભાદ્રવા વર્દિ ર દિને લિખી સાદ્રા કપુરમુત સાદ્રા સુરચ દે લિખાવિતમ્ ॥ છ ॥ –અંતે જણાવ્યું છે. " સારદ સાર દયા કરા, આપા વચન સુરંગ; તું ત્ઠી સુજ ઉપરે, જાપ કરત ઉપગંગ. તકે કાવ્યના તે તદા, દીધા વર અભિરામ; ભાષા પણ કરી કકપતરૂ–શાખા સમ પરિણામ."

[પૃતુઃ કરતાં—પૃત્વત્ પદાવલી તથા ગુરુપરંપરા આપી છે.]

'' ન'દ^૯ તત્ત્વ³ મુનિ^હ ઉદુષતિ^૧ સ'ખ્યા (૧૭૯૩), વરસ તણી એ ધારાછ; ખ'ભનયરમાંહી રહીય ચામામું, રાસ ર^{ચ્}યા છે સારાછ. ^છ (—શ્રી'જ'ખુરવામી રાસ '–મંગલાયસ્ત્ર)

*

(પૂર્વવત્–આચાર્ય તથા ગુરુપર પરા આપ્યા પછી---)

" શીરા તત જીતવિજયા વિશુધવર, નયવિજય વિશુધ તસ ગુરૂ ભાયા; રહીય કાશીમઠે જેહથી મેં ભક્ષે, ન્યાયદર્શન વિપુલ ભાવ પાયા. જેહથી શુદ્ધ લહિયે સકલ નય, નિપુણ સિદ્ધસેનાદિ કૃત શાસ્ત્રભાવા; તેહ એ સુગુરૂ કરૂણા પ્રભા તુઝ, સુગુણ વયણ રયણાયરી મ્રુઝ નાવા."

(- ટપ• ગાયાનું સ્તવન, ઢાળઃ ૧૭ માંથી)

" સરિહીર ગુરૂની ખહુ કીરતિ, કીર્તિ વિજય ઉવજ્ઝાયાઇ; શિષ્ય તાસ શ્રીવિનયવિજય વર, વાચક સુગુણ સોહાયાઇ. છ વિદ્યા વિનય વિવેક વિચક્ષણ, લક્ષણ લક્ષિત ઢહાઇ; સોભાગી ગીતારથ સાર્ય, સંગત સખર⁹ સતેહાઇ. દ સંવત સતર અડ્યાંસા વરપે, રહીય સંદર ચામાસેઇ; સંદ્યતણા આગહુથી માંડ્યો, રાસ અધિક ઉલ્લાસેઇ. હ સાર્ધ સપ્ત રાત ગાથા વિસ્થી, પહાતા તે સુરલાકેઇ; તેના શુષ્ટ્ર ગાવે છે ગારી, મિલિ મિલિ થોકે ચાકેઇ. ૧૦ તાસ વિદ્યાસ ભાજન તસ પૂર્ય, પ્રેમ પવિત્ર કહાયાઇ; શ્રીનયવિજય વિશ્વધ પ્યસેવક, સુજસવિજય ઉવજ્ઝાયાઇ. ૧૧ ભાગ ચાકતા પૂર્ય કરીને, તાસ વચન સંદેતેઇ.

- શ્રીપાલ ગ્રસ-(કળશમાંથી)

અમ ઉપરથી આપણે નેઈ શકીએ છીએ કે ઉપાધ્યાયજી શીયશાવિજ્યજી પાતાના સહાધ્યાયી તરીકે ઉપાધ્યાય શ્રીવિનયવિજ્યજીને જણાવતા નથી. ને હાત તા કાંઈ નહિ તા આ 'શ્રીપાલ રાસ 'માં અવશ્ય તે વિગ્રે તેમણે કહ્યું હાત.

^{ા.} સજ્જનાની સંગન ખનાવા છે. જો પાનાની સાથે હોન તેમ લખન શ્રીવિજ્યવિજયજીને વિશ્વાસ હતા કે શ્રીયરોહિજય આ અર્ધુગ રાસ પૂરા કરશે. એટલે બલામણ કરેલી જે ⊜પરથો આ રઃસ શ્રીયરોહ વિજયજીએ પૂરા કર્યો. વિશેષ ક્રાઇ સંખધ નથી; એ સ્પષ્ટ છે.

'સુજસવેલી ભાસ' કેટલાંક વર્ષો પૂર્વે હાથ લાગવાથી પ્રગટ થઈ છે. એ મુજબઃ શ્રીયશાવિજયજીએ અમદાવાદમાં સંઘ સમક્ષ અવધાન કર્યાં. તેમની આ ખુદ્ધિથી ચમતકાર પામી ત્યાંના એક આગેવાન શ્રાવકે તેમને વધુ અભ્યાસ માટે કાશી જવાની સગવડ કરી આપવા ઉતકંઠા અતાવી અને તે મુજબ પાતાના શુરૂ સાથે તેઓ કાશીમાં ગયા. ' 'સુજસવેલી ભાસ'ના કહેવા પ્રમાણું તેઓ ચારેક વર્ષ કાશીમાં અને ત્રણેક વર્ષ આચામાં રહ્યા. આચામાં એમને પ્રસિદ્ધ વિદ્વાન (દિગંબર) કવિ ભનારસીદાસના પશ્ચિય થયા હાવો તેનો અંગલે નીચેની માહિતીથી આપણુને તેના ખ્યાલ આવે છે.

"ચેતન માહકા સંગ નિવારા, ગ્રાન મુધારસ ધારા." એ પંકિતથી શરૂ થતું અને "તેસે જસ સત્તા સધી રે, એક ભાવકા હાય." એ બાલથી પૂરું થતું પદ, ગાથા ૧૫નું આશાવરી રાગમાં હાઈ, ઉપરાકત છે પંકિત સિવાય બાકીની બધી પંકિતએક 'સમયસાર'માં યથાવત છે. ' અધ્યાત્મમતપરીક્ષા', ' દિગ્પટ ચારાસી બાલ ' વગેરે દિગં બર મતને લગતાં પુસ્તકા કયાં અને કયારે બનાવ્યાં તે વિદ્વાનાએ સ્ક્રમાવલાકન પૂર્વક વિચારવા જેલું છે. પંડિત શ્રી. સુખલાલજએ 'તત્ત્વાર્થસ્ત્ર' ઉપર વિવેચન લખ્યું છે, તેમાં એમણે અનેક ચિતનીય વિષયોના પરિસ્ફાટ કરતા 'પરિચય' નામના નિબંધ જોડયો છે. 'તત્ત્વાર્થની ટીકાસમૃદ્ધિનું અન્વેષણ કરતાં—તેના ગુજરાતી બાલાવબાધ વિશે તેઓ કહે છે:

- "(झ) गणी यशोविजय, उपरके वाचक यशोविजयसे भिन्न हैं—ये कव हुए ! यह माछम नहीं.... टिप्पणकी भाषा और शैछीकां देखते हुए ये सब्दर्वां—अठारवीं शताब्दीमें हुए जान पड़ते हैं। इनकी उल्लेख करने योग्य दो विशेषताएं हैं।
- (१) दिंगंबरीय ' सर्वार्थिसिद्धि ' मान्य सूत्रपाठको छेकर उस पर मात्र सूत्रोंका अर्थपूरक टिप्पण छिखा है और टिप्पण छिखते हुए उन्होंने जहां जहां श्वेतांम्वर और दिगम्बरोंका मतमेद या मतिवरोध आता है वहाँ सर्वत्र श्वेताम्बरपरम्पराका अनुसरण करके ही अर्थ किया है।
- (२) गणी यशोविजयजी श्वेताम्बर हैं टिप्पणके अंतमें सेसा उल्लेख हैं (स्फुटनोट—" इति श्वेताम्बराचार्य श्रीउमास्वामिगण(णि)कृततत्त्वार्थसूत्रं तस्य वालाववोषः श्रीयशोविजयगणिकृतः समाप्तः। '') सूत्र, पाठमेद और सूत्रोकी संख्या दिगम्बरीय स्वीकार करने पर भी उसका अर्थ किसी जगह उन्होंने दिगम्बर परम्पराके अनुकूल नहीं किया। "

૧. ' સુજસવેલી ભાસ ' પ્રસિદ્ધ થઈ ત્યારે શ્રી. મા. દ. દેસાઈએ માકલેલી, તેમાંથી સ્મરણને આધારે લખું છું. આ તેમ જ બીજાં પુસ્તકા મારી પાસે–મારા લખવાના સ્થળ–નથી; જેથી તેમાં જોઈ ખાતરી કરવાનું બન્યું નથી.

રં. શ્રી. માં. દ. દેસાઈએ 'જૈનયુગ 'માં આખું પદ ઉતારી આ હક્ષાકત લખો હતી. મેં 'સમયસાર' નાની વચે વાંચેલા. કરી જોઈ જવાનું વ્યન્યું નથી. 'સમયસાર' હપલક જોવા મળતાં તેમાં આ હક્ષીકત છે.

a. 'તત્ત્વાર્થ વિવેચન ' હિંદી પૃષ્ઠ : ૫૬.

આતાં કેટલાંક કારણા પંહિતજીએ આપ્યાં છે. સિવાય કેટલુંક કહેલું અહીં પ્રાપ્ત થાય છે, તે આ પ્રમાણે છે :

વાચક શ્રીયશોવિજયજીના સમયની લગેલગ શ્રીસત્યવિજય પં-યાસના, શ્રીકપ્રવિજયના શિષ્ય ક્ષ્માવિજય, તેમના શિષ્ય જશવિજય થયા છે. એમણે કેટલીક સંજ્ઞાયા તથા પરચુરલુ સાહિત્ય લખ્યું છે. એમની એક કૃતિની સાલવારીના આધારે યા તે સમયના ખીજા યશોવિજયના લખાલું ઉપરથી માસ્તર શિવલાલે નામસામ્ય તેઈ લખેલું કે, ' ઉપાધ્યાય શ્રીજશવિજયના સ્વાલાસ સં. ૧૭૪૫ માનવામાં આવે છે, પહુ તે પછીની સાલવાળી આ કૃતિ તેમની મળે છે.' પહુ એ 'ગણી' હોવાનું એમની શિષ્યપર પરાના શુલ-વીર-વિજય કે એમના ચુરુલાઈ શ્રીજિનવિજયની પર પરાના કાઈ લખતું નથી એટલે એ ગણી હશે નહિ; પહુ ' દેતિ શ્રીલપાધ્યાય શ્રીજશવિજય ગણિકૃત દ્રન્યગુલ્પર્યાય રાસ સંપૃષ્ઠું;' ' જંબૂસ્વામી રાસ મં પણ તેઓ પાતાને ગણી લખે છે. વળી, એના હસ્તાક્ષરના કાગળમાં ' શ્રીલસહમેર હતેં શ્રીલા પાતાને ગણી લખે છે. વળી, એના હસ્તાક્ષરના કાગળમાં ' શ્રીલસહમેર હતેં શ્રીલા પાતાને ગણી લખે છે. વળી, એના હસ્તાક્ષરના કાગળમાં ' શ્રીલસહમેર હતેં શ્રીલા પાતાને ગણી લખે છે. વળી, એના હસ્તાક્ષરના કાગળમાં ' શ્રીલસહમેર હતેં શ્રીલા પાતાને ગણી લખે છે. વળી, એના હસ્તાક્ષરના કાગળમાં ' શ્રીલસહમેર હતેં શ્રીલા પાતાને સ્વયા શ્રીલ સ્વયાને સાથે છે. આ પત્રમાંથી આપણને ' સર્વાર્થસિહિડીકા' માન્ય સ્ત્રપાક ઉપર બાલાવાના સમયાનું કારણ જડી આવે છે. આ કાગળ અનેક વિષયો સાથે દિશેમ્બર-શ્રેતાંલર વચ્ચેના મતલેદ પૈકી સ્ત્રીમુક્તિ કે કેવલિ-કવલાહાર, કાળદ્રવ્ય વગેરે સંબધમાં પૃષ્ઠેલા પ્રક્ષોના ઉત્તરરૂપે છે.

"ये छिखों छे, ने केवड़ी कवेकाहार करइ पि।—रितणसे छुयति दिउं नथी छिखी (१) ते लिखतां प्रयोजक याई....हवं ते युगति जाण्यासे इच्छा छइ सा गदाघर महागत हस्ते 'अध्यासमनपर्गक्षा'से बाह्यविषेष हिन्तावी आवस्यां तेथी सर्व प्रीडयो ।

"प्रिम "एकादश जिने" (९—११) इन्छुं सूत्र छई प्रिम- एकादशिक्तेन इन्छुं सूत्र न छइ....दिगन्तर इत 'सर्वार्थसिदि-रीका' नांहि न सांति इन्छुं वाइर्थ्य छेतुं कहीडं छइ....बीजुं थे इनरी विचारी देखों । बाइर संपराये २२ स्कास-पराये १२ इत्यादि अनुक्रते "एकादश जिने" ए सूत्र चल्छुं तो विचारी देखों । बाइर संपराये २२ स्कास-पराये १२ इत्यादि अनुक्रते "एकादश जिने" ए सूत्र चल्छुं तो विचारी देखों । विचार संपराये २२ स्कास-पराये १२ इत्यादि अनुक्रते "एकादश जिने" ए सूत्र चल्छुं तो विचारी करिक र नेच्छे विचार प्रमियक्त-स्वराउंण्ड ' नच्छे इत्याख्यान करिट छइ जे ' एकेनाविका न दश एकादश एतावता ' एक नहिं—दश नहीं ते ११ इं परीसह नहीं ते इन्यों सनास व्याकरणविक्ट छइं हे ' श्रीस्याद्वादश्काकर ' मध्ये कहिड हे । केवलीने कदलाहार नान्या विना ए सूत्र दिगन्तरने मछतुं न छइं। "

આ ઉપસ્થી આપણને સહેએ સમજાય છે કે, 'સર્વાર્થમિકિ'ના પાઠના ખરા અર્થ શું નીકળે છે, તે અતાવવા તેના આળાવબાય લખ્યા છે. 'તત્ત્વાર્થ'ના અધ્યાય ચાચાના ૧૯ મા સ્ત્રને સંખ્યાલેકના કારદ્યું અપવાદે શ્વેતાઅરીય સ્ત્ર રાખ્યું હાય તા તે અનવાજોગ છે. (પૃષ્ઠ : ૫૬–૫૮)

મા પત્રમાં ^{શ્}વેતાંગર વિરુદ્ધ દિગમ્ગરીય માન્યતા, સાધુધર્મોપકરહ, સ્ત્રીસુક્તિ,

કાલદ્રવ્ય, કેવલિ-કવલાહાર-પૈકી કેવલિ-કવલાહરની ઘણી ઊંડી તત્ત્વાનુગામી ચર્ચા કરી છે; જેમાં એમણે ઘણા ગ્રંથાના આધારા ટાંકી શ્વેતાંબર-દિગમ્બર વિષયને સ્કુટ કર્યો છે. પ્રશ્નકાર વર્ગ તત્ત્વની જિન્નાસાવાળા હાઈ, તજજન્ય ન્નાનથી પરિચિત હાવા એઈએ, પણ સંસ્કૃત ભાષાના અનભિન્નપણાના કારણે તેમને તે ભાષામાં લખેલા ગ્રંથા ન સમજ્ય તે તેમની સમજમાં ઉતારવા માટે તેના બાલવળાધ અને મૂલ ગ્રંથા કરવાની તેમને જરૂર પડી હતી.

"अध्यातमसत परीक्षा—बालावबीव ' ए. योगदृष्टि ग्रंथ श्रीतानें अगो वर न रह्हं ते ग्रंथरो भाव सञ्झायरूपं वांध्यो छहं, ते पण-मोकल्स्युं: इहां—शिष्यजनना हितने अर्थहं अस्मत्कृत 'जैनतर्कभाषा ' अनुसार निश्लेप—नय योजनिका कहीहं छह्—"अहो 'जैनतर्कभाषा' मांहि लिख्युं छह् ने प्राकृतभाषाइ लेख मध्ये तुम्हने लिखीं जणात्र्युं छह् ए लखनह महाशास्त्र करी जाणत्रुं युक्त ज छहं. " ए अतिसूदम अर्थ छहं 'द्रव्यगुणपर्याय रास ' मध्ये अहो बखाण्यो छहं"।

"आ एनं दृशंतो छे—एटछे अठे धर्मकार्य मुखे प्रवर्ते छे अपरम्, थारा कागछ समाचार पाया. वांची वहु मुख थया। अत्र ज्ञानगोप्ठि गरिष्ठ एसी समा छे, जे देखा था सरखां ज्ञानप्रिय छाकनं घणुं मुख उपजे ते प्रीछजोः तथा न्याय मारो कर्ये। छे ते महिथी प्रतो पांच सात अठेथी छइ जाई, इन्छु सा गदाथर महाराजने छखा। वीजी महामण जे छिखणी होने ते छिखजो। परिणति ग्रुद्ध राखजो। शा. वच्छा, शां. तेजसी प्रमुखने पण कागछ छिखजो....आ पक्षमां समजदार धर्मप्रिय केट नएक छे ते छखजा।

એમની સભાના સલ્યોના આપજુને આ રીતે પરિચય મળે છે. હવે આપલે એમના કાગળની ખીછ વિગતામાં ઊતરીએ:

" अनन्यथासिद्धनियतपूर्ववितिकारणम् । अनन्यथासिद्धिनियतपश्चाद्भावि कार्यम् ' ए छक्षण छोक-व्यवहारे अवस्य मानवां तो स्वभाववाद युक्ति शून्य छई ए चिन्तामणितर्करो मार्ग ।

"कागळ २ जो.-'ऐं' स्वस्ति श्रीपार्श्विननं प्रणम्य-श्रीस्तम्मतीर्थनगरतो न्यायाचार्योपाय्याय-श्रीजस-विजयगणयः सपरिकराः सुश्रावकपुण्यप्रभावक-श्रीदेवगुरुमिककारक....संघमुख्य शाह हरराज, साह देवगज योग्यं धर्मेळाभपूर्वकिमिति ळिखन्ति । अपरम्....तथा खंमात मध्ये श्रावक सूत्र वावइ छह ते-हंदिया आज्ञा विरोधी अमिन प्रंथ छह ।

"बढ़ो छेख छिखावी मोकल्यो छड़ । सा गदात्रर थानई ठाउको मोकल्यो छड़ । तिणमां—नयः निक्षेपः प्रमाणरी मणा न रही छह....

"तथा—न्यायाचार्य विरुद्ध तो महाचार्यइ न्यायप्रंथ रचना करी देखी प्रसन्न हुइ दिऊँ छइ। प्रंथ समाप्ति छिख्या छई—

૧. એમના કાગળમાંથી આ બધા બાલવબાધનાં નામ એએ આપે છે. 'ગુર્જર સાહિત્ય સંત્રહ ' ભાગ ર માંથી ' દ્રત્ર્યગુજીપર્યાય રાસ ', 'જંખુસ્વામી રાસ ' કાગળા વગેરે ઉતારા લીધા છે.

" पृव न्याय-विधारद्त्वविरुदं, कास्यां ध्रद्तं तुर्वे-न्यांयाचार्यपदं ततः कृतधत-अन्थस्य यस्यापितम् । शिष्यप्रार्थेनया नयादिविजय-प्राग्नोत्तमानां शिशुः, तत्त्वं किञ्चिद्दिदं यशोधिजय इत्याख्या तदाख्यातवान् ॥ "

"न्यायप्रंथ २ लक्ष कीयो छह तो बीहादि करी एकांत युक्ति खंडी स्याद्वाद पहिन मांडी नह ए युक्ति जैन न्यायाचार्य विरुद्ध परिणन शिष्य लोक कहड़ तेई प्रमाग छई ने प्रीछ्यो ।"

આડલા ઉતારા ઉપરથી આપણે સ્પષ્ટ જોઈ શકીએ છીએ કે, હપાધ્યાય શ્રીયશાવિજય ગણિ ગુરુ શ્રીનયવિજયજ સાથે કાશીમાં વિશિષ્ટ ન્યાયના અલ્યાસાથે જાય છે. ત્યાં (६२) नाहि शास्त्रो साथे) तेमछे 'चितामणि-शिरोमणि ' मडान्यायशास्त्रनुं छंडुं अध्ययन કર્યું. આ અધી હકીકતામાં કાઈ જગ્યાએ તેએ પાતાના સહાધ્યાયી તરીકે શ્રીવિનયવિજય વિશે લખતા નથી. તેમ શ્રીવિનયવિજય ઉપાધ્યાયે પાતે કાશી ગયાનું, ત્યાં રહી અભ્યાસ કર્યાનું કે કાેઈ પદવી લીધાનું કે શીયશેષવિજય ગણિ પાતાના સહાધ્યાયી હાેવાનું લખ્સું હાય એવું જાલ્યામાં નથી. તેઓ ખન્ને શુરૂલાઈ કે શ્રીવિનયવિજય કાકાશુરૂ પછ્ હતા નહિ. રે શ્રીવિનયવિજય શ્રીકીર્તિ'વિજય વાચકના શિષ્ય હતા. તેમની ગુરુપર'પરા શ્રીહીસ વિજયસરિયી નારી પડે છે. શ્રીવિજયસેનસ્રિ પછીથી શ્રીધમેત્રાગર ઉપાધ્યાયના કારણે તપગચ્છના શ્રીવિજયદેવસ્રસ્થિ ' દેવસૂર ગચ્છ ' અને વિજયઆછું દસ્સ્થિ 'આહ્સુર ગચ્છ ' એમ છે કુંડા પડ્યા. તેમાં શ્રીયશાવિજયજી દેવસૃરિપરંપરાના આશ્નાયમાં હતા; જ્યારે શરૂમાં શ્રીવિનયવિજયજી શ્રીઆલુંદવિજયસ્રિના પક્ષમાં હતા, તે તેમણે 'મેવદુત 'ની પહેતિ ઉપર શ્રીવિજયસ્માણ દસ્રિને પર્યુપછના સમાપના-' વિઝ્રિપ્તિ ' પત્ર લખ્યા છે: કે તથા તેમની કેટલીક ગુજરાતી પદ્યકૃતિએામાં એમણે ખતાવેલી પર પરાચી પણ નક્કી થાય છે. આમ છતાં લારે આશ્ચર્યની વાત છે કે, લાકા તેમને શ્રીયશાવિજયના ગુરૂલાઈ, કાઈ કાકાગુરૂ તથા સહાધ્યાથી ખતાવે છે. એટલું જ નહિ પત્ર એક અગસ્ય અને અલબ્ય લંઘ,

^{1.} આ વિશે એમ કરેવાય છે કે, જૈન નામ ધુપાવી—પ્યાદાભુ નામ વિનશ્વિજયાં વિનયલાથ અને જશવિજયાં જોલાલ—નામથી પ્યાદાભુ પંડિત પાસે અબ્યાસ કર્યો પ્રતિષ્ઠિ વિઠાન શ્રી. સુખદાલજી સાથે આ વિશે વાત થતાં તેમનું કહેવું થયું કે, આ વસ્તુ ખેડી છે. તે વખતે કચ્કીશાં જૈન એક્સવાલાનાં ધણાં ધરા હતાં. એટલે તેમણે જૈન સાધુપભુાનું નામ અને સાધુપભું કાયમ રાખી અબ્યાસ કર્યો છે. તે વખતે મુશ્કેલી ઘણી હતી. અમારા વખતમાં પણ ઘણી હતી તે વખતે હેય જ. હાથ એટલી નથી.

२. अअगुरु श्री छटाविजयः श्रीत्यविद्यय पंटित तेदना गुरुश्रात-गुरुशार्ध संअधि थया. एकपुर-गिष्क्यात्–गाथाः २८० केट्रे-गुरुधें, २व-सम्पः ते–कैनग्रास्त्र, ५२-सम्प ते वेदान्त-तर्क अभुण तेदना व्यक्त्यासार्थे (४२यगुरुपर्याय गस-रोगे.) गाथाः २८१

ર. આ પત્ર પત્રાકારે-ટિપણા રૂપે નિધ-પ્રાંથાકારે લખ્યા છે, જે સંસ્કૃત કાચરૂપે એક દૂતકાવ્ય છે. તેની નક્લ દક્ષિણવિદારી શ્રીઅમરવિગ્યછ પાસે, તેમના વિદાન શ્રિપ્ય ચતુરવિગ્યછ પાસે જોઇ દત્તી. તેમના પુસ્તકસંગર (સંગ્રદ) દાલ ક્ષોઇ શ્રીયદેશવિગ્ય (ઉપાધ્યાય) પુસ્તકાલયના મકાનમાં છે; જે મકાનના ઉદ્ભવ તથા નામાસિલાન તેમની મહેનતનું કૃળ છે.

જે વિદ્યાશુરૂએ ગાપવી રાખ્યા હતા—તે શુરુની ગેરહાજરીનાં લાલ લઈ—ગુરુપત્નીને ઠગી—મેળવી તેનું છાનુમાનું અધ્યયન કરી લીધાનું સુદ્ધાં તેમને માટે કહે છે. આપણી લારે જિજ્ઞાસા વચ્ચે આનું આપણને સમાધાન મળે છે; જેના ઉલ્લેખ 'દ્રવ્યગુણપર્યાય રાસ ' અને પાતે લખેલા કાગળમાં 'चिंतामणि–शिरोमणि' મહાન્યાયશાસ્ત્ર નામે કરેલા આપણે જેઈ એ છીએ. આટલી ખુલ્લી રીતે લખેલી હંદીકત તે કેટલી સંગત કરવી? ઉપાધ્યાય શ્રીવિનયવિજયજીએ પાતાના 'શ્રીપાલ રાસ ' આરંભેલા તે પાતાના પછી વાચક શ્રીયશા-વિજયજીએ, પૂરા કરવાના સંકેત કરેલા તે સુજબ પૂરા કર્યાં; આટલા સંખંધ માત્રથી અનુમાનપરંપરાએ કેટલું વિલક્ષણ રૂપ ધારણ કર્યું, એ આપણા લાકમાનસના નાદર નમૂના છે આથી પણ આગળ વધી તેઓ કહે છે:

ગુરૂઝણ સ્વીકારતાં તેમની પાસેથી વિદાય ક્ષેતાં કહે છે: 'ગુરૂદેવ! અત્યાર સુધી અમે વિદ્યા માટે નામ-જાત ગાપવી છે; ખરી રીતે અમે બ્રાહ્મણપુત્ર ન હાઇ-જૈન સાધુ છીએ. એટ્સે અમારી પાસે તમને દક્ષિણામાં આપવાનું દ્રવ્ય નથી પણ આપને જ્યારે જરૂર પડે ત્યારે અમે તમને જે નામ, ગચ્છ વગેરે જણાવીએ છીએ તે પ્રમાણે પત્તો મેળવીને આવશા તા તમને ખનતી સહાય કરીશું. ' એમ કહી ગુરુના આશીર્વાંદ લઈ તેઓ બન્નેએ ગુજરાત તરફ પ્રયાજ કર્યું. કેટલાક સમય પછી જ્યારે તેઓ ખંભાતમાં હતા ત્યારે તેમના એ શુરૂજીને પૈસાની જરૂર પડતાં ત્યાં આવ્યા; તેમને દેખીને વ્યાખ્યાનપીઠ ઉપરથી ઊતરી તેમણું તેમના સત્કાર કર્યો. શ્રાતાઓને તેમની ઓળખાણ કરાવી: 'પાતે અત્યારે જે સ્થિતિમાં છે તે તેમના પ્રતાપ છે, જેથી તેમને ઉચિત પુરસ્કાર આપવા આવશ્યક છે. શ્રીસંઘને એવા નિદે'શ કર્યો, આથી સંઘે તેમને ૮૦ હજાર રૂપિયા તે વખતે જ કરી આપ્યા! ખં માતથી જેસલમેર લખેલા કાગળની હકીકત આગળ કહેલી છે, તેમાં આપણે શાસ્ત્રી ગદાધર મહારાજનું નામ વાંચીએ છીએ, જેઓની યાગ્યતા શું હતી અને તેઓને કેવા કામ માટે રાકેલા હતા-તેની માહિતી આપણને તેમાંથી મળી રહે છે. વિનયવિજયજી સંબંધે કાઈ ઉલ્શેખ તેમાં નથી. સાથે વિહાર કરતા હાય અને સાથે જ ખંભાતમાં ચામાસું હાય તા અનેક ઘટનાએાથી ભરેલા એ કાગળમાં તેમનું નામ ન હાય એ સંભવિત છે? એમના સાથે વિહાર કાઈ રીતે સિદ્ધ થતા નથી. તેમ પંડિતના નામે જે એક વાત ઊભી કરવામાં આવી છે, તેના કાઈ અંશ શાધ્યા જહતા નથી. એક માત્ર શાસ્ત્રી ગદાધર હતા એટલા જ પત્તો મળે છે.

ગામ-પરગામ, દેશ-વિદેશના સમાચાર મેળવવાનું સાધન માત્ર, આવતા જતા માછુસોના માંદેશી સાંભળેલી વાતા સિવાય ખીનું અત્યારના જેવું કાઈ સાધન કે પ્રદેશ પ્રદેશ વચ્ચેના પરિશુંત સંબંધ હતા નહિ. એક ગામથી ખીજે ગામ જવાનું પણ વિકટ હતું. એવા

૧. આવી વાતા મહિમા વધારવા—શુહિની તાજીખી ખતાવવા—કહેવામાં આવે છે; પણ તે કેવી અનર્થ— પરંપરા ઉપજાવે છે તે વિશે મારે એક જાણીતા તેરાપંથી સાધુ સાથેની વાતચીતમાંથી જાણુવા મળી તે કહેઃ 'તમારા યશાવિજયમાં સાધુપણું કર્યા આગળ રહ્યું !' મેં તો એ ખીનાને કાયમ રાખી ઘટતા જવાબ દીધા પણ આપણા સમાજ આવી દંતકથાએ માટે વિવેકપૂર્વંક વિચાર કરતા થાય તા સાર્

અધકાર સમયમાં એ કાંઈ ઘટનાંએ! અનની તેને લોકો પાન ની કદપના પ્રમાણે સ્થઈ લાકસમ્સુખ મુક્તા. આવી વાતા ઉપર કેટલા આધાર રાખવા તે વિચારકાને સ્યબ્દવટું પટે એમ નધી.

આવા જ એક પ્રકાર શ્રીઆતંદાત અને શીયશાવિજય વચ્ચેના છે. ખડાત્રાની સુષ્દ્ર શીયશાવિજયા યેપીનાજ શ્રીઆતંદવનજ માટે દર્શનાતુર દેઈ તંમની શેષમાં તીકળ્યા દેશ્ય એમાં શંકા લાવવાનું કારણ નધી. 'આતંદવન અડપદી સ્નૃતિ 'એ વાલ પુરવાર કરે છે.' કેટલાક 'આતંદવન' સંબાધનાર્થ વાપરેલ શબ્દને આત્માના આતંદ સ્વરૂપ પ્રનીક માને છે. પણ આપણે એ 'અડપદી 'ને સાવધાનતાથી સાંભળીએ તા એમ થી આતંદવન અક્તિના સ્પડ ધ્વિત નીકળે છે. માનનીય વિકાન શ્રીઆતંદશંકર કુવ કહે છે' તેમ 'એમના સ્ત્રીમાં પ્રાક્ષણ શાસ્ત્રી ધર્મ?)ના અભ્યાસ પુષ્ઠળ પ્રતીત શાય છે.' આપણે એમને આત્માના શુદ્ધ સ્વરૂપને અંગે ઉપતિષ્દા, વેદાંત વળેરમાં વપસંચેલા પૂર્ણાનવસ્ય, ' વિદ્યાનવસ્ય, ' વિદ્યાના શેર્ય એમ શ્રીયો શ્રીલાબાનંદ (વિજય) તું તબાદસુર છે, એ શ્રીયો શ્રીયો વજયલ્લનો ભાવમાં દતું. એટલે એમણે અડપદીમાં આત્માના

૧ અતુ અનુનિર્દેશ ' સાપુપરી ' વર્ષાર ' શીરુષાન દેશન–૧૬ આવાર્થ 'માં નેમના ચરિત્રનિર્ધાધમાં શામનિષ્ક શીર્ણાદ્રકારાષ્ટ્રી સર્વિર્દેશ) સ્થાપિકી છે.

^{&#}x27;उन्नामा—श्रीमिन्नस्त्र-शिन श्री एए तका उद्गरी है। उन्नामकीश दाखान, तकिया की से सेनानुम बहुत निर्मा था। इसने उन्होंने श्राम्यमान, श्राम्यमिनिय त्या सरीक बत्तीन मिनियों में स्थित सेनी विषयी पर रिक्स है। जिसमें जेन मरकीशों मुद्दम और श्रीमा मीमील करें के उत्तीत अन्य बरीन और के वर्षत्र है। जिसमें जेन मरकीशों मुद्दम और श्रीमाल करें के उत्तीत अन्य बरीन और के वर्षत्र कियान मी किया है। अध्यानमान के व्यापति है। अध्यानमान के स्थापति कियान मी किया है। अध्यानमान के अध्यान के अध्यान विषयी कियान की अध्यान की अध्यान की की स्थापति वर्षत्र के अध्यान की स्थापति की प्रति की की स्थापति की प्रति की स्थापति की प्रति की स्थापति की प्रति क

ર. ત્રીજી ગુજરાતી સહિત પશ્ચિદમાં રહ્યુ કરેલા નિજલ 'ગુજરાતના સંસ્કૃત સાદિત્વનું દિગદશ્વેન '

इल्डार –पृष्कितः

જ. ' યાત્રદર્શિતી અનજાય ' લાગા પ; તેન કેક્યોક પદ્મ

ય. ક્રાંતવાર નેવાપુક-અર્તરકાન લખ્દ છે. સનતામમાં-'તે તેર આતંદલન કોંદ્રકૃતે, અધ્યાનમ સુવસ્ય વિસ્તિકૃતિ' એ રીતે છે. (–ગ/જૂત્વામી અર્ધકૃત

શુદ્ધાનુભાવને લક્ષીને શખ્દની પસંદગી કરી હોત તે! તે चिदानन्द्घनના ઉપયોગ કરત. 'અષ્ટપદ્દી 'માં વાર વાર આનં દઘન શખ્દના કરેલા ઉપયોગ વ્યક્તિગત છે. એ અખ્ટપદ્દીની ઉત્પત્તિ જ કહી આપે છે. જેની પુષ્ટિ શ્રીઆનં દઘનજએ યશાવિજયજના કરેલા પદથી સહજ રીતે થાય છે. આ બે મહાતમાનું મિલન જે અર્થનું હતું તેમાં લાકોને નુદા જ અર્થ સમન્યયા. તે વિશે આમ કહેવાય છે:

- (૧) તેઓ (યશોવિજય) વિદ્યાના મદમાં આવી જઈ ખંડનમંડનમાં પડી ગયા હતા. એમનામાં આંતર વૃત્તિ નહાતી! તે આનંદધનજીએ તેમને કરાવી! અર્થાત્ આધ્યાત્મિકતા યશાવિજયમાં આવી હોય તા તે શ્રીઆનંદધનના સમાગમથી.
- (ર) શ્રીઆનં દેધનજીને પાતાના અંતકાળ નજીક જણાતાં પાતાના પાસેના લિખ્ધ—સિદ્ધિ અન્યને આપવાના ઇચ્છા થઈ આવી. આ માટે તેમના યશાવિજય ઉપર પસંદગી ઉતરતાં, કાગળ લખી તેમને બાલાવ્યા. તે પ્રમાણે યશાવિજય તેમના પાસે આવ્યા. એક વૃકતાના કથન મુજબ તો : તેમને છ માસ મુધી શું પ્રયાજને બાલાવ્યા છે તેની જાણ આનં દેધનજીએ કરી નહિ એટલે ત્યાં મુધી તેઓ એમ ને એમ પૈય રાખી બેસી રહ્યા! તે પછી પૈય ખૂટતાં પાતાને બાલાવવાનું પ્રયાજન પૃછ્યું. આનં દેધનજીએ કહ્યું : 'હવે કાંઈ નહિ. તમે પરીક્ષામાં નિષ્ફળ નીવડ્યા! મારા વિચાર તમારામાં પૈય—આંભીય કેટલું છે, નિમ મત્ય—અનિચ્છિતભાવ કેટલા છે તે તપાસી મારી પાસેની લબ્ધિ—સિદ્ધિ તમને આપવાના હતા પણ તમે અધીરા અન્યા. હવે તમે એને યાચ નથી.' આથી ઉપાધ્યાય વિલખા પહી એમ ને એમ પાછા કર્યાં. શ્રીઆનં દેધનજીએ પાતાની બધી લબ્ધ—સિદ્ધિ ભૂમમાં ભંડારી. (તે પહેલાં) બીજ વક્તાએ શાસનકામના ઉપયાગ માટે તેમણે સુવર્ણસિદ્ધિ માગી : એ રીતનું કહ્યું હતું. (મુંબર્ધના એક. ભાષ્યમાં).

હવે આપણે પ્રથમ માન્યતાના વિચાર કરીએ. શ્રીયશાવિજયા એ કાશીમાં રહી સવે શાસ્ત્રપાર ગતતા મેળવી; આથી એમની પ્રજ્ઞા જ્ઞાનના દરેક પ્રદેશ ઉપર કરી વળી, જેણે તેના અંશે અંશતું સમ્યગ્ સ્વરૂપ પ્રાપ્ત કર્યું હતું. આ પ્રાપ્ત ભાવના દર્શનપશ્ચા, મતાગ્રહવાદા, ધમે બ્રમા અને તેથી પ્રચલિત થયેલા ધમાં ભાસરૂપ અનુષ્ઠાના વગેરેના આંતર સ્વરૂપને સ્પર્શ તી હાય એમ આપણે નેઈ એ છીએ. એમને જે વસ્તુ નયાપેક્ષ લાગતી ત્યાં તેના સમન્વય કર્યો છે. મિશ્યાવાદરૂપે લાગી તેનું ખંડન કર્યું છે, જે બ્રમિત હતું તેનું સ્પષ્ટ ભાન કરાવ્યું છે, અને જ્યાં મૂઠતા તથા દુષ્ટતા હતાં ત્યાં સબળ હાથે કામ લીધું છે. એમાં આપણે એમની શાસ્ત્રવિશારદતા, તટસ્થતા, નિર્ભયતા અને નિર્મળતાનાં દર્શન કરીએ છીએ. તે સાથે આપણને એમના કલ્યાલુકર પ્રબળ યુરુષાર્થ પણ યાદ આવે છે.

તેમના સમયની સ્થિતિ ખ્યાલમાં લેતાં જેવાય છે કે, સાધુઓમાં ગ્લાનિકર શિથિલાચારે વાસ કર્યો હતા. તેઓ પરિગ્રહના ગ્રહથી ગ્રસિત થયેલા હતા. દ્રવ્યપ્રાપ્તિ એ જ ક્રિયાકાંડ તથા હ્યમાંતુષ્ઠાનાનું પ્રયોજન હાય એમ સમજતું હતું! એટલે એમાંથી ધર્મના પ્રાથ્ ઊડી ગયા હતા. " કાપાનલ ઉપજાવત દુજેન, મથન વચન અરણી; નામ જપું જલધાર તિહાં તુજ, ધાર્' દુ:ખહરણી. અખ માહે ઐસી આય ખની, શ્રી શખેવર પાસ જિતેસર મેરે તું એક ધણી." તેવી જ રીતે એમણે ઠેકાણે ઠેકાલે પ્રસંગ પામી પાતાની કથની કહી છે. તેમાંથી આપણે એમની ઊંડી વેદનાના નિઃધાસ સાંભળી શકીએ છીએ.

जो सम्मं जिणमग्गं, पशासए निक्सए णिरासेसे । स्रो मन्त्राण जणाणं, दीवसमी मनससुद्द्म्म ॥ ——(२८। निशीध)

ર. ગીતારથ જયણાવંત ભવ બીરુ જેંદ્ર મહંત, તસ વયણે લાક તરિયે, જેમ પ્રવદ્દશ્રું ભરદસ્યિ (૫) નિવ નિંદા મારગ કહેતાં, સમપરિણામે જેંદ્ર ગદમદતા. (૯).

જહાં દૂરણ એક કરાય જે ખલને પીડા થાય, તાપણ એ નિવ છાડિજે, જે સનનાનને સુખ દીજે.

-(३५० गाथा स्तवन.)

गीयं मणाइ यत्तं, अत्यो तस्त्रेन होइ नक्खाणं । उमएण य संज्ञतो, सो गीयत्यो मुणेयन्त्रो ॥ —(भदानिशीय)

अन्नाणी वक्त्वाणं, करेंद्र जो तस्स होड् पावफर्ल । नाणी वि जो न भासह, सो लहए नाणविग्धं स्तु ॥ ——(હितापटेश)

इक्को य होइ दोपो, व नायइ खलजणस्य पीड ति । तह वि पयदो इत्यं, दट्हुं सुयगाण अह तोसं ॥ तत्तो चिय जं कुसलं, तत्तो तेसिं पि होइ न हु पोडा । झुदासया पनिती, सत्यं निग्नोसिया मिगया ॥ —(३५० गाथा २तन्न, ४१० : ४)

૧. એક વક્તાએ કહ્યું હતું કે, યતિઓની અર્થદેશના સાથે હપાધ્યાયજીએ ઘણા ક્રાક પ્રહાર કર્યા, જેવી વધા યતિએ તેમની પાસે અઃવી વિનવતા લાગ્યા કે, 'મહારાજ! આપ આ પ્રમાણે ઉપદેશ કરશા તો અમારી દુઈશા થશે.' આથી ઉપાધ્યાયજીને દયા આવતાથી તેમની દાક્ષિણ્યનાથી-તેઓએ તે પછી પૂર્વતત્ત્વત્તું છોડી દીધું આ હક્ષીકતમાં કેટલું તથ્ય હશે કેમકે, હપાધ્ય યજી ત્યાં અનિષ્ઠ જોના ત્યાં નિર્ભોકપણે બોલ્યા વિના રહેના નહિ. એમનાં લખાણોમાં એમના નિડર સ્વભાવની છાયા સ્પષ્ટ જેવાય છે એ માટે જુઓ—

^{&#}x27; જે નિર્ભય માદગ ગાલે, તે કહ્યો દ્વીપને તાલે." —(૩૫૦ ગાયા સ્તરન, ઢાળ : ૪માંથી)

એમના શાસ્ત્ર લખવાના ઉદેશ શા હતા ? કટુતા આવી જવાનું કારણ શું હતું ? એમના આત્મા કેટલા નિલેપ હતા ? દિષ્ટ કેટલી સામ્ગ્રાહી હતી ? તે આપણે એમના શખ્દામાં જ નેઈએ :

" हमणां—सकल श्वेतांवर तर्क प्रंथ, दिगम्बरमत निर्देलक ज छे ए मोटो अंतर छे। ए दिगंबर मुक्ति छई, पिछ-जिन जांणें तो परीक्षक छोकने वडी खामी छई। रागद्वेपी नाम धरावणो टलें छई पिण मिध्यात्व आवई छई। 'छागमपनयतः क्रमेलक—प्रवेशः' न्यायः। उक्तं च हेमाचाँयैः 'अयोगव्यवच्छेद - द्वात्रिंशिकायाम्'—

" मुनिश्चितं मत्सरिणो जनस्य, न नाथ ! मुद्रामितशेरते ते । माध्यस्थ्यमास्थाय परीक्षका ये, मणौ च काचे च समानुवन्धाः ॥ २-२७॥"

अर्थ—हे नाथ! हे बीतरागदेव! एमइं सुनिश्चित छे, जे ते छोक मत्सरीरी मुद्रा अतिक्रमता न छहं, एता ता—मत्सरी ज छे। जे परीक्षक हुंता, मिणमां अने काचमां समानुवैध क० सरखें परणामे छइं, काच- रतनरो अंतर न देखा वहं मध्यस्थ रहहं, परीक्षक छोक अत्रिपय अर्थहं जिननें मछा बहं। बोजो— जिनरो निर्णय थाई ईनरो निर्णय करो परीक्षक गीतार्थरी आज्ञा प्रमाण कहाई। अनिश्चित अर्थ-साचोई कहई ता—परीक्षक अपवादमां पढह, उक्तं च 'सम्मितिमहातर्के '—

" प्यंता सन्भूयं, सन्भूयमणिच्छियं च वयमाणो । छोइ अंपरिच्छयाणं, वयणिज्जपहे पडइ बाई ॥ ३–५९ ॥ "

अर्थ—एकांतइं असदम्त अर्थ दूर रहो, सद्मूत अर्थ पणि जो अनिश्चित क० संदेहाकान्त कहाई तो—बादी छोकिक अने परीक्षक जे छोक तेहनो—बचनीयपथ क० निदामार्ग तेहमां पढे, ते माटे संदेह न करवो ।१

આ જ એમની ગ્રંથરચનાનું જીવનસરનું ધ્યેય રહ્યું હતું. એમની ગુલૂત્ર સારગાહી દિષ્ટ કેટલી વ્યાપક અને આત્માસિમુખ હતી ! તે તેમલે 'પાતંજલ યાગદર્શન ' ઉપર વૃત્તિ લખીને તથા 'અધ્યાત્મસાર 'માં 'ગીતા 'ના 'ક્લોકોનો સમન્વય કરીને અતાવી છે. દિગમ્બર માન્યતાનું લાંડ લતરીને ખુલ્લિગ્રાદ્ય રીતે ખંડન કર્યું છે. તથાપિ ધુર ધર નૈયાયિક શ્રીવિદ્યાન 'દિની 'અન્ટસહસી' ઉપર ટીકા રચી પાતાની ન્યાયાચાર્યતાને દિપાવી છે. એ વિશે આપણે વિદ્વાન પંડિત શ્રીસુખલાલજના શખ્દામાં એઈએ:

"(ग) वाचक यशोविजय....श्वेताम्बर संप्रदायमें ही निह किंतु सम्पूर्ण जैन संप्रदायमें सबसे अंतमें होनेवाछे सर्वोत्तम प्रामाणिक विद्वानके तोर पर प्रसिद्ध है। इनकी संख्यावद्ध कृतियां उपल्ब्य हैं, सत्रहवीं—अठारवीं शताब्दी तक होनेवाछे न्यायशासके विकासको अपना कर इन्होंने जैनश्रुतको तर्कवद्ध

૧. કાગળ : પૃષ્ઠ ૮૬–૮७.

ર. તત્ત્વાર્થસત્ર હિંદાવિવેચન-પરિચય : ('જૈનતક' ભાષાની પ્રસ્તાવના' માંથી ઉતારા જૈનપત્રે આપ્યા છે).

किया है और भिन्न भिन्न विषयी पर अनेक प्रकाण स्टिन्नकर जैन उत्वज्ञानके सूदन अन्यापका मार्ग तैयार क्रिया है (पृ. २६)

(य) ख़िल्स इति—माप्य पर नीमरी इनि उपाच्याय यशोदित्रयको है। यहि पूर्न निन्न जानी हो सत्रह्वी अठारवी शनाब्दी तक प्रान होनेबान भारनीय द्वीनशाबक दिकासला एक नमृता एवं करनी। ऐसी वर्तमानमें उपक्रम इस इतिका एक छोटेन खंडमे क्रहेनेला मन हो जाना है। यह नगड प्रथम अध्यायके उपर भी पूरा नहीं और इसमें उरस्की दो इतियोंक मनान हो शब्दशः भाष्यका अनुसर्ग कर विकरण दिया है। एसा होने पर भी इसमें जो गहरी नक्षंतुगामी चर्चा, जा बहुशुनता और जो माइन्कोटन दिखाइ देना है यह यशोदिनयको न्यायदिशास्त्राका निश्चय कराता है।

પણ તમે કહેશા કે આવું લખવાતુ તેમને પ્રયાજન શું હશે?—

" कि नामस्परणेन न प्रतिषया कि वा भिदा कानयोः, संबन्धः प्रतियोगिता न सद्भी मावेन कि वा इयोः। तद्वन्यं इयोव वा जदमने त्याच्यं इयं वा स्वया, स्यान् तकदित एव लुम्यकमुखे द्त्तो मधीकृत्वेकः॥ " —(प्रतिसादतः)

અમે કડીએ છાંએ કે તમે એના આંતર લક્ષમાં પ્રવેશા, અને પૃછા કે આ શબ્દો સપ્રયોજન છે કે નહિ? નિરૂપ, તેમાં સુખ્યત્વે સ્થાપનાનિરૂપનું સ્વરૂપ નય પશ્ને આગળ કરી તેમણે અત્યંત સ્કૂમ રીતે સમજ્યું છે.

જેને આ સમજવાની છુદ્ધિ નથી છતાં ધૃષ્ટતા કરે તેને ખીજે શે! જવાબ ઘટે? અર એવા દુરાષ્ટ્રદીઓની, ખાટા ક્રિયાર્ડ ગર કરનારાઓની, દાંભિકાની, અજ્ઞાનપ્રવત્ર કાની એમણે સખત હાથે ખબર લીધી છે. એ એમના જ્ઞાનપ્રકાશના તાપ છે, જે તાપ મિચ્ચાત્વના શિશિરનું વિસર્જન કરી સમ્યક્ત્વની વસંતને વિકસ્તિ કરે છે. વાણી અંગે તેઓ કહે છે:—

" નકે વિષય પણ કવિતું, વયણ સાદિત્યે સુકુમાર; અરિગજગજન પણ દયિત, નારી મૃદુ ઉપચાર " —(જંજ્હ્લાની રહ્ય)

હવે ધીલો મુદ્દો તોઈએ. આ વિષે અમને પાગવાર આઢશે શાય છે કે, કરી આ એ પુરુષોના અંતરમાં ઉત્તરી. તેમને પિછાનવાની, આવી વાતો પ્રચલિત કરનારાએએ વસ્તી લીધી છે? યા એટલી પરીક્ષક શક્તિ કેળવી છે? એ જનમંગ અલ્વાંચ્યુ—આનંદલને અન્ય વસ્તુઓમાંથી આનંદને ઉપાહી લઈ આત્મામાં જ સ્થાપિત્ત કર્યો છે. આત્મકર્શન, તેની તાલાવેલી, તેમાં જ મધાતા પ્રાપ્ત નિજ આનંદલન સ્વરૂપના સ્થાસ્વાદ—એ સિવાય અન્ય કોઈ વસ્તુ એમની નજર મમક્ષ નથી. 'એ જ નિરંજન એ જ પરમવન ' એટલી નિક્ષ્યાત્મક કરતા ધારણ કરનાર આત્માનંદીને લિપ્યસિદિના મંગ્યુલની ચિતાવાલા ચીતરના એમાં આપણી પામંરતાનું દર્શન નથી શતું?

અને એવી રીતે શુતસમુદ્રના પાનથી જેઓ પ્રજ્ઞાવાન છે, જે જે મહાંમાહ હરિને મેદાનમાં જતી લીધા છે, જે અને જેની દુવિધા અચિરાસુત શાંતિ (વિશુદ્ધ આંતમસ્વરૂપ પરંમાતમા) પ્રલુના ગુલુઆનમાં લુલાઈ ગઈ છે, જેમાંથી નિષ્પન્ન થતા સમતારસ–તેના પાનથી ચિદાન દેની માજ માલી રહ્યો છે, જેની આગળ હરિહર, પ્રદ્ધા, કે પુરંદરની ઋદિ કાંઈ વિસાતમાં નથી, જેને શાંતિ સ્વરૂપ પરમાત્મપ્રભુથી સમકિત દાન પામી–દીનતા ગઈ છે, જે તેને લખ્ધિસિદ્ધિના ઇચ્છુક દીન અને તે માટે ઉત્સુક અતાવવા તેમાં આપણી આલિશતા સિવાય બીન્તું શું છે?

ંગ્રંથમ વાત તાે—દેહ સિવાય કાઈ પણ વસ્તુ વગરના એકાકી અરષ્યમાં વિર્ચરતા, નિજાન દમાં મસ્ત આનંદઘન પાસે કાગળ, મસી, કાઠું આવ્યાં કચાંથી ? ગ્રામ–ગામાંતરના

- 9. अहश्रथेंऽनुधावन्तः, शास्त्रदीपं विना जडाः । प्राप्तुवन्ति परं खेदं, प्रस्त्तरुन्तः पदे पदे ॥५॥ अक्षानाहिमहामन्त्रं, स्वाच्छन्यज्वरलक्ष्वनम् । धर्मारामध्रधाकुल्यां, शास्त्रमाहुर्महर्षयः ॥०॥ शास्त्रोक्ताचारकर्ता च, शास्त्रहः शास्त्रदेशकः । शास्त्रेकदग् महायोगी, प्राप्नोति परमं पदम् ॥८॥ —रा.नसार-शास्त्राष्ट्रहः
- २. विद्वस्यचवकैरात्मा, पीतमोहासवो ह्ययम् । मनोचतालमुक्तालप्रपद्यमधितिप्रति ॥५॥ निर्मलस्फटिकस्येव, सहजं रूपमात्मनः । अध्यस्तोपाधिसंबन्धो, जडस्तत्र विमुद्यति ॥६॥ —-ग्रानसार—भेराहासुक्त

" હરાવ્યા અનુભવ જોર હતા જે, માહમલ્લ જગ લુંકા; પરિપરિ તેહના મર્મ દેખાડી, ભારે કીધા બૂઠા રે. મુજ સાહિય જગના તૂઢા.

ઉદક પયામૃત કરપ ત્રાન તિહાં, ત્રોજો અનુભવ મોઠા; તે વિહ્યુ સકલ તૃષા કિમ બાર્જિ, અનુભવ પ્રેમ ગરીઠા રે.'

—શ્રીપાલ રાસ, ખંક : ૪, હાળ : ૧૩. .

•यवहार कुरुष्ट्योच्वेरिष्टानिष्टेषु वस्तुषु । कल्पितेषु विवेकेन, तत्त्वधीः समतोच्यते ॥२२॥ —थे।भभेद-द्वात्रिंशिः।.

श्चानतपःशीलसम्यक्ष्वसहितोऽप्यहो ! । तं नाप्नोति ग्रुणं साधुर्यमाप्नोति शमान्वितः ॥५॥ ——য়ানমাং—शभाष्ट्रहः

- s. " હારે સુરવ**ટ–સુરતરૂકી સાભા, તે તાે માટી કાંઠાે** રે "
 - ---(શ્રીપાલરાસ : ખંડ ૪, ઢાળ : ૧૩–૧૨): '
- ૪. 'હમ મગન ભયે પ્રભુ ધ્યાનમેં' —એ આખું શાંતિનાથ સ્તવન.
- પ. 'ઋદ્ધિ-દૃદ્ધિ પ્રગટી ઘટમાંહી, આતમ રિત રાઇ બેઠા.' —(શ્રી. રા. ખંડ ૪, ૧૩–૧૧). 'કલેશ વાસિત મન સંસાર, ક્લેશ રહિત મન તે ભવપાર; જો વિશુદ્ધમન ધર તુમે આવ્યા, પ્રભુ તા અમે નવે નિધિ રિધિ પાયા.'

—(वासुपूज्य स्तवन)

बाह्यदृष्टिप्रचारेषु मुद्रितेषु महात्मनः । अंतरे वावमासन्ते, स्फुटाः सर्वाः समृद्धयः ॥१॥ ——মান सार—सर्वे सभृद्धिः બાલુકાર યશેાવિજયછના પત્તો મેળવી તેમને કાગળ પહેાંચાદનાર માલુસ તેમની પાસે કયાંથી? આ વિચારના વિષય છે.

ચાગાજનમાં યાગથી અનેક લિખ્ધસિદ્ધિઓ ઉત્પન્ન થાય છે. 'પાતંજલ યાગદર્શન' (ત્રીન વિબૃતિયાદ)માં ગ્રાન, મનાળળ, વચનળળ, શરીરબળ આદિ વિબૃતિઓ ચાગથી પ્રાપ્ત થવાનું તથા વૈક્રિય, આદ્ધારકલિધ, અવધિગ્રાન, મનઃપર્યવગ્રાન આદિ સિદ્ધિઓ યાગતું કળ હાવાનું વર્ણન છે. આ ઉપરથી આપણે એઈ શકીએ છીએ કે યાગવિબૃતિએ આત્માની વિશુદ્ધ સ્થિતિની સહચારી છે તેને છૂટી પાડી વિનિમયના પદાર્ય બનાવી શકાય એવી એ નથી હાતી. એ એ આપણી સમજમાં ઊતરે તે હપરની વાતાની સ્પષ્ટતા થઈ નથ.

આનં દેવનજી મહાયાગી હતા અને તેમને યાગવિબૂતિઓ હાવા વિષે કર્યા શક નથી. પણ યાગીપુરુષા યાગલિહાના ઉપયોગ કરતા નથી, એમ મહિષ શ્રીહિસિલદ્રાચાર્ય 'યાગદિસિમુસ્ચય 'માં કહે છે. પણ વિશેષદર્શી લોકા, 'વિક્રેમાર્વગ્રીય 'માંની ઉવધ્યાએ હવામાંથી પાતાની દિવ્યશક્તિ વદે લોજપત્ર ઉત્પન્ન કર્યું અને તે ઉપર લેખ લખી પુરુરવા રાજાને યાકદયા હતા, તેમ શ્રીઆનંદઘનજીએ પાતાની પાસેની દિવ્ય લિબ્ધસિહિથી આ બધું કર્યું! એમ મનાવવા પ્રયત્ન કરે તો આપણે એ માટે આશ્ર્ય પાસીશું નહિઃ પણ એમણે એટલું વિચારવા જરા યાલલું એઈએ કે, આપણે આ રીતે આ મહામાન્ય પુરુષાની કૂર મશ્કરી તો કરતા નથી ને ?

અમને પ્રશ્ન તો એ થાય છે કે, આવી ખાતમી મેળવી કેાં છે ? શું આનં દઘનછ એવા એહાપેટના-છીછરા મનના હતા કે તેમણે પાતાની આ મનાગત વાત બીજા આગળ પ્રગટ કરી! અને યશાવિજયજની બિનલાયકાત ઉદ્યાડી પાડી! યશાવિજયથી વધારે પાત્ર કાે હતું કે જેના આગળ આ પેટની વાત તેમણે કરી કે, જેણે લોકોને તેની જાણ કરી!

અથવા એમ તા કાંઈ હતું નહિ કે, કાંઈ મન:પર્યવ ગ્રાની આ બન્ને પુરુષના છવન ઉપર અથથી ઇતિ સુધી પાતાના ગ્રાનના સતત ઉપયાગ રાખી રહ્યા હાય અને તે લાકાને કહેતા કરતા હાય? આના કાંઈ સંતાપકારક જવાળ છે? વસ્તુતઃ આ વિશે બેમાંથી એકથે કાંઈ કહ્યું નથી. શ્રીયશાવિજયછતું આંતર મન કેવું હતું તે આ તેમની રચના જ તેમના ખુલ્લા પેડના એકરાર કરી ળતાવે છે:

जागति ज्ञानदृष्टियेन्, तृष्णाकृष्णाहिनाङ्गुळी ।

पूर्णानन्दस्य तत् कि स्यान्, देन्ण्दृश्चिकवेदना ! ॥४॥ ——ग्रानासार-पूर्णाधःछिन्द्नि ज्ञानदात्रेण, स्पृद्दाविषळतां युषाः ।

सुलशोपं च मूच्छी च, देन्यं यच्छित यत् फलम् ॥२॥ —ग्रानसार-निःश्प्राधः

૧. પંદિત સુખલાલજી કૃત 'ચોધા કર્યાં અંચના દિંદી અતુવાદ' પ્રસ્તાવના : પૃષ્ટ : ૫૩.

ર. કર્તા મલાકવિ કાલિદાસ

रूपे रूपवती दृष्टिदृष्टा रूपं विम्रह्मति। मज्जत्यात्मनि नीरूपे, तत्त्वदृष्टिस्त्वरूपिणी ॥१॥ भ्रमवाटी विहर्देष्टिर्भ्रमच्छाया तदीसणम् । अभ्रान्तस्तन्बद्दष्टिस्तु, नास्यां श्रेते सुखाश्चयाः ॥२॥ --- ગ્રાનસા>--તત્ત્વદ્દષ્ટ્રિઅષ્ટક. चित्ते उन्तर्यन्थिगहने, वहिर्निर्यन्थता हथा । त्यागात् कञ्चुकमात्रस्य, भ्रजगो नहि निर्विषः ॥४॥ -જ્ઞાનસાર–પરિગ્રહાષ્ટ્રક संसारे निवसन स्वार्थमुद्धाः कृद्धान्ववेश्वनि । लिप्यने निखिछो लोकां, ज्ञानसिद्धो न लिप्यते ॥१॥ नाहं पुद्गलभावानां, कर्तां कारयितापि च। नाजुमन्तापि चेत्यात्मज्ञानवान् लिप्यते कथम् ? ॥२॥ –ગ્રાનસાર–નિલે પાષ્ટ્રક शरीररूपञ्चावण्यग्रामारामधनादिभिः। जत्कपेः परपर्यायश्रिदानन्दघनस्य कः ॥५। निर्पेक्षानविच्छिना, न ते चिन्मात्रमूर्तयः। योगिनो गलितोत्कर्पापकर्षानस्पक्तना ॥८॥

આ ઉપર દરિ નાખ્યા પછી શું સમજાય છે? તમે કહેશા કે અને સહુ કાઈ કહે છે—આ આનંદઘનજી સાથેના—પાછલી અવસ્થામાં—થયેલા સમાગમનું આ ક્ળ છે, પણ તેમ નથી. આ એમનો યાત્રાહ્યાસસાધિન—આંતર મુખતા—સ્વસ્વરૂપ સ્થિરતા છે, તે જ ' દ્રવ્યગુણુ-પર્યાય રાસ 'માં' સહજરૂપમાં જોઈએ છીએ. એમાં એમણે 'પાતંજલ–યાત્રદર્શન 'માંના ' સમાપત્તિ સ્વરૂપના ખ્યાલ આ પ્રકારે આપ્યા છે:—

' अस्मिन् इत्यस्ये सति, इदयसत्त्रतो मुनीद्रः। इति ह्यदयम्थिते च तस्मिन्, नियमात् सर्वार्थसिद्धिः॥१॥ चिन्तामणिः परोऽसी. तेनेयं मवति समरसापत्तिः। सैवेइ योगिमाता, निर्वाणफळा [बुधैः] प्रोक्ता ॥२॥

૧. આ રાસ તથા ' સાડી ત્રથ્યુસેઃ ગાયાનું સ્તવન, 'દિશમ્ખરીય પ્રક્ષાચંદ્રસરિના ' સમાધિશનક 'તા ગુજરાતી અનુવાદ અને 'સમતાશતક ' સં. ૧૭૦૯ પહેલાં રચાયાનું અમારા બીજ લેખ 'ગુજરાતી કૃતિએાની સાલવારી 'માં સા^{બિ}ત કર્યું' છે.

क्षीणश्रुत्तरिमजातस्येव मणेर्ग्रहीतृप्रहणप्राह्मेषु तत्स्यतद्ञनता समापितः ॥१-४१॥
तत्र शब्दार्थश्चानिकस्यैः संकीर्णा सिनतर्का समापितः ॥१-४२॥
'५०५११७५५थि रास ' गाथा २७० थासायभाधमा —समापितलक्षणं चेदम्—
मगेरिवामिजातस्य, क्षीणश्रतेरसंशयम् । तात्स्यात् तद्जनत्वाच, समापितः प्रकीर्तिता ॥

" एड्डि इच्यानुयोग दिवारे-कियामार्गनिह पन-कादि प्रवर्तक शार्वत व्याने सगर्वत समानित हुड् । "

आ प्रमापे के अनुसर हुयें है ते इत्तेत्तर रहते। खों है अने के क हानमां राष्ट्रिया अनुस्ता प्रधा नेही एड़ेंक्ये। है, के अमर्ती 'ये। ग्रहार्तिश्रिया मां केट श्रिक्ति ही आ सिराय कोडशक, योगविधिका, योगविद्य योगविधिसमुख्य कितविद्यत्ति केता केत ये। ग्रह्मी साथ सम्मतितके, तस्त्रार्थ रहे दि हिंदी अने व्यवहारस्त्र, बृहद् करम्त्र केता अनेशनेश अधानां प्रमासे काथां है है केता दिसाय नथी. ज्या क स्थिति कोमना इपन भाषाना स्तरनमां पत्र है. (श्रातः १५ मां सुनिपहादां दश्र ह भागां यहां या। यहां प्रमास्त्र प्रश्री होगः ११ मां शुद्ध नयनी व्याच्या पत्री) समापत्ति व्यानने। व्यद्भव पष्ट तेमां वर्षाच्या है.

જેઓ અલ્યવયમાં મૃતિ થઈ, સ્વસિકાંત લહેલા. તરુલુ અવસ્યા શરૂ થતાં ઉપાધ્યાય શ્રીત્યવિજય શુરૂ માથે વિકેટ પાદવિદાર કરી કાશી વિશે વિદ્યા અર્થે પહોંચેલા ત્યાં અનેક ઉપયોગાં-પરિયદો વચ્ચે પેલાના સાસ્ત્રિ ધમંમાં અઠમ રહી મર્લ વિદ્યાને પેલાની કરી લઈ છે શાળ વ્યાક્યમાનું ત્યાય છો. રચી ત્યાયવિશાસદ, ત્યાયાઓમાં ભત્યા. લગવતી શાસ્ત્રાએ નગંગાતર ઉપર તેમના નામના નામ અપવાર્થી એમના ઉપર પ્રસન્ન થઈ સાક્ષાત દર્શન આપ્યાં તકે અને કાઓના વર આપ્યાં તથા લાયા પણ કરવતરૂ એવી કરી. એવા મસ્ત્વન્તીના કારીશ પુત્ર અને મુશિયાંન કરનાર મુકવિએ એન્યુત તકેલક કરી એન તત્વનાનના સ્ત્રમ અન્યાયના માર્ગ વેચાર કરી પહામદોષાંઆવાન્યાયક પદ્ધિનૃતિ વિશુક્ષ દેશના દેનાર, ધમિન-મુખ્યત્રોને વાતસ્થારી શાસ્ત્રાચારના માર્ગ સ્થાપનાર સર્થિ શાસ્ત્રાચારના માર્ગ વેચાર કરી પદ્ધારોષાં અર્થાયના અદ્યાર અદિવાર, ઉચ્ચ સારિતાસપક બની, વિરાયકો-કુમાર્ગાંગામીઓ અને પ્રવાસિકાના લગ્ન સારે ધેચેલી નિર્માલાધી—પુરુષામં બલાવી એ અન્યિના લગને અક્કુપિતલાને કર્યાય કરણાસાસર કર્મચાર્ગી, ગચ્છમાં વચ્ચ હતાં પણ અંતરસુએ ધ્યેય સ્વરૂપમાં મમારિક્ષ રહી સર્વત્રમાં પ્રદાની પેલ્યતાથી આત્માનુવત્રને પામેક મહાયોમી, આતંદયનજીની કહ્યાના દ્વાત્યોની આ મહાન આત્માની અનિ કેલ્ય કરી છે તે માંલતીએ:

१ अथार्य विक्रियाकोशयरे प्रविद्वी । स्टब्स्य ददः ख्राः, शुराद्विनिदेशेऽविद्य ॥ —(६:विश्वद धीर्यक्षितः)

का भारे 'शेत्रहान भी कामभूत भाग तथा हैशांबाहरून द्वीत क्रेरी

ર - આ પ્રવેશ ઉપર એમની કીકા છે. બીન્ડ પ્રવેશના અવારે 'વેલ્ડારે ક્ષિક્ષ, દાર્વિક્ષ, દાર્વિક્ષ કોર્ટિક્ષ ' જોરે તેમાં છે. આ મળતાના પારે 'ધાનોન્શ-વેલ્ડાર્જીન ' ધાનપૂર્વક તેનું. મુખ્ય અવલ દેતી છે.

માત તથારે કુદરિ દ્રાપ કેદરસાણને સાત હું સક્કાળ પદ કરો પૃત્યું શું મત લાગ. (ક)
 મ્લત પહલું દતનું પરિજાનને પ્રતેષ્ટેન, કરતો મુખ મંત્રા, હતે એ લાતની મીતા (પ)

^{—(} જંજૂરારી રાસ)

" મુજ મન અહ્યુ માંહે ભક્તિ છે, ઝાઝા રી રે તેહ દરીતા તું છે માછ રે; યાગી પણ જે વાત ન જાણે રે, તેહ અચરિજ કુણથી હુંગા તાણે રે. લધુ પણ હું તુમ મન નિવ માવું રે, જગગુરુ તુમતે દિલમાં લાવું રે; અચરિજવાલે અચરિજ કીધું રે, ભક્તે સેવક કારજ સીધું રે." —(સુવિધિજિન સ્તવનમાંથી)

વાચક શ્રીયરોાવિજયજીની છળી ઉપરથી વસ્ત્રાવરાષુ દૂર થતાં એમની ચિત્રમૂર્તિનું દર્શન તો થયું પણ રે એમના અંતર દર્શન માટે હતા એક પટ ખસેડવાની જરૂર હતી. એ કાર્ય મે આ રીતે યથાશક્તિ, યથામતિ કર્યું છે અને એ રીતે જે એ શ્રુતદેવતાની મૂર્તિ પ્રત્યક્ષ થઈ, તેના પ્યાલ આપુ છું.

" इयम्रचितपदार्थे। छापने श्रव्यशोभा, वृधजनहितहेतुर्मावनापुष्पवाटी । अनुदिनमित एव ध्यानपुष्पेरुदार्रभवतु चरणपूजा जैन-वाग्देवतायाः ॥१॥ "

મમ ર'ક જન પાસે પાતાનાં ફૂલ નહિ હાવાથી–આ એમની શ્રુતવાટિકામાંથી ચૂંટેલાં પુષ્પવઢ પૂજ કરું છું અને લક્તિથી ઉલરાતા હુદયે નતમસ્તકે વ'દન કરી કૃતાથ થાઉ છું.

કર્યા આ એ પાતે અને કર્યા લોક !--

જેહ અહંકાર મમકાર ખંધનં, શુદ્ધનયને દહે દહન જેમ ઈંધનં.-(૩૫٠ ગાયાનું સ્ત. ઢાળ ૧૧-૯)

१. पं. ग्रुसलानजी— उमास्वाति अपनेको वाचक कहते हैं इसका अर्थ पूर्विवित् करके पहेलेसे ही न्वेतां-घराचार्य उमास्वातिको पूर्विवत् रूपसे पहचानते आए हैं (तत्त्वार्थिविचन—परिचय प्रष्टः १८) स्थाविक्यूश प्रश्चामे क म्पर्थभा वायुक्त हता केथी स्थान पीकां पर्धा विश्वाहा छाडी से वापूर्यं छ.

२. समाधिर्नन्दनं धेर्यदम्मोली समताशयी । हानं महाविमानं च वासवश्रीरियं मुनेः ॥ इत्यादि-श्रीपुण्डरीकाध्ययनस्यायोंऽप्येवं माति ॥ द्र. ग्रु. रास ढाळ, ५, ८ गाथा २१ ने। वाळाववीध.

^{3.} तपःश्रुतादिनामतः क्रियानानपि लिप्यते । भाननाज्ञानसंपन्नो निष्क्रियोऽपि न सिप्यते ॥५॥ ——ग्रानसार—निर्देपाष्टरः

ર. દ્રવ્યગ્રુશુપર્યાય રાસમાં–આશીર્વંચન પછી આપેલું ક્રાબ્યઃ ગતપાર–તે પ્રાપ્તપાર–એહવા ગુરુ તે કહેવા છે ! સંસારરૂપ સાગર તેહના–તરશુતારજી વિષે…તરી સમાન જઈ–તરી એહવે ા નામ જિલાજને જઈ–તેહ મેં લાખી…સુજનને લક્ષા લાક, સત્સંગતિ કે૦ આત્મદ્રવ્યે પટ્-દ્રવ્યના ઉપલક્ષણુ એાલખશ્રુહાર તેહને–રમશ્રુિક સુરતરુ–જે કલ્પવૃક્ષ તેહની મંજરી સમાન છે. जसविजय સુધને જયકરી–જયકારણી–જયની કર્ણહારી અવશ્ય જસ–સૌભાગ્યની દાતા છે. એહની મગવદ્વાળી વિરં जीयात्–इत्याशोर्वादवचनम् ॥

ન્યાયાચાર્ય શ્રીયશાવિજયજી

ઐયની ગૂર્જર કૃતિએાની સાલવારી

[યેમ્ક : શ્રીષ્ટ્રત ગાસ્ત્રતકાસ વીસ્ચક્ર]

ઉપાध્યાય શ્રીયગ્રાવિજ્યજના જીવનતું માપ, સદ્ગત સાકર શ્રીમાહનશાહ દર્શચંદ દેસાઈ અને પંતિ શ્રીમુખશાદલ તથા યુસતત્ત્વેત્તા શ્રીજિનવિજ્યલ જેવા કેટલાદ પ્રતિષ્ટિત હેખદાને બાદ કરતાં સર્ગ દેશએ હેલ્લાચારિત વાતો અને પાતાના અનુમાન પર કાદયું છે. તેવાં બ્રાંત અનુમાના સચ વસ્તુને કેવી રીતે આવરી છે છે તે અને અગાઉના "એમની મૃતિના અનાવરસ્તિધિ" યુખમાં યુસ્વાર કરી અતાર્ચું છે. હવે અને આ લેખમાં એમના ગુજરાતી લેખોની સાદવાદીના વિષય હાથ ઉપર દર્શયું. તે એટલા માટે કે એમાંથી એમના જીવનના કેટલાક એકાલ આપણે લેહી શ્રાદીએ એમ છીએ. આ વિષયની ચર્ચા અને ચ્યારયાને કરીશાં.

ही है; पर इसमें एक नहीं कि कोइ वीद या कोइ वैदिक विद्वान आज तक ऐसा नहीं हुआ है जिसके प्रन्थके अवलोकनसे यह जान पडे कि वह वैदिक या वीद्यशासके उपरांत जैन शास्त्रका भी वास्त्रविक गहरा और सर्वव्यापी ज्ञान रखता हो। इसके विपरीत उपान्यायजी जैन थे इसलिए जैनशास्त्रका गहरा ज्ञान तो उनके लिये सहज था पर उपनिपद, दर्शन आदि वैदिक प्रन्थोंका तथा वीद प्रन्थोंका इतना वास्त्रविक परिपूर्ण और स्पष्ट ज्ञान उनकी अपूर्व प्रतिमा और काशी सेवनका ही परिणाम है।

ઉપાધ્યાયજીકૃત पातझळ-योगदर्शन-चृत्ति, तथा हारिमद्री योगविशिका-टीकातुं હિન્દી સારસહિત – વિક્રેમ સંવત્ ૧૯૭૮, ઈ. સ. ૧૯૨૨ માં સંપાદિત બ્રંથમાં તેના પરિચય આપતાં પંડિત સુખલાલે જે લખ્યું છે એ એમના શુજરાતી ઉપરાંત સંસ્કૃત, પ્રાકૃત સાહિત્યના અવગાહનની ભારે અગત્યતા સમજવે છે. પણ એ કઠણ કાર્ય પંડિતજીના અધિકારનું જ હાઇ એમના માટે રહેવા દઇશું. ધ

એમનું જીવન 'સુજસવેલી ભાસ 'નામની ગુજરાતી પદ્યકૃતિમાં સામાન્ય રીતે સંગ્રહાયેલું મળે છે, રે જેના કર્તા મુનિ શ્રીકાંતિવિજય કે જે તપગચ્છના શ્રીકીતિ વિજય ઉપાધ્યાયના શિષ્ય શ્રી વિનયવિજય ઉપાધ્યાયના શુરુભાતા હાય એમ મનાય છે. કાંતિવિજયે આ ગુરુભાતાના સંખંધ પાતાની 'સ'વેગરસાયન ખાવની' નામની પદ્યકૃતિમાં ખતાવ્યા છે. તેમ શ્રીવિનયવિજયાપાધ્યાયે 'હૈમલદ્યુપશ્ચિય ' વ્યાકરણ કવિ કાંતિવિજય માટે ખનાવ્યું

૧. પ્રસંગ પ્રાપ્ત થતાં પંડિતજીએ ઉ૦ યશાવિજયજી માટે ખે શબ્દો કહેવાની ઇચ્છાને રાકી નથી. એમાંના કેટલાકનું અવતરહ્યુ યથાસ્થાન પર અમે આપ્યું છે.

ર. શ્રી. માહનલાલ દ. દેસાઇએ સં. ૧૯૮૭માં 'જેન ગૂર્જર કવિએા' ભા. ર પ્રસિદ્ધ કર્યો, ત્યારે તેમને છૂટક-તૂટક 'સુજશનેલી ભાસ'ની પ્રતિ મળેલી તે આધારે તેમણે થાહુંક લખેલું. પછી આખી 'સુજશવેલી ભાસ'ની પ્રતિ મળતાં તે સં. ૧૯૯૦માં પ્રસિદ્ધ કરી; ત્યારે તેમણે નિશ્વપૂર્વંક પાતાના મત પ્રદર્શિત કર્યો.

^{3.} ખીજ કાંતિવજય તપત્રચ્છના શ્રીવિજયપ્રભસરિના શિષ્ય પ્રેમવિજયના શિષ્ય હતા. તેમણે સં. ૧૭૬૯માં માત્રશર મુદિ ૧૧ ના દિવસે 'એકાદશી સ્તવન' ક્લોઇના ચામાસા વખતે, 'મહાખલ—મલયસુંદરી રાસ ' સં. ૧૭૭૫માં વૈશાખ સુદિ કના દિવસે પાટણુમાં, ત્યાં જ સં. ૧૭૭૮ના માત્રશર સુદિ ૧ના રાજ 'ચાવીશી, અષ્ટમી ' વગેરે સ્તવના સાથે છેલ્લી સાલમાં 'સૌભાગ્યપંચમી મા. ગ.' 'શ્રી નિમિજિન સ્તવન ' સં. ૧૭૯૯ શ્રાવણ સુદિ પને રવિવારે પાલનપુરમાં રચેલ છે. એમની શિષ્યપરંપરા પણ લખે છે. (જે ગૂ ક લા. ૨. પૃષ્ઠ: પર ૧-૩૧)—એમણે 'સુજશવેલી ભાસ' રચાના ઉલ્લેખ મળતા નથી. એટલે આપણે ઉપરના દેસાઈના મત સ્વીકારીશું.

૪. શ્રીશુરુ હીરસ્રી'દના, શ્રીષ્ઠીતિવિજય ઉરજગય; તેહના ચરણ સુપસાયથી, મેં ષ્ઠીધી એહ સજગય. ગુરુભાતા ગુરુસારિખા, શ્રીવિનયવિજય ઉવજગય; ગ્ર'થ બે લાખ જેહણે કર્યાં, વાદી મદ ભંજનહાર.

તે સાથે પાતાના સંખંધની હંદીકત પણ કહી છે.^દ

આ ઉપરથી આપેલું શ્રીકાંતિવિજયછની યાંગ્યતા નક્કી કરીશું. એક તા તેઓ શુલુ-પરીક્ષક હાઈ શુલુના સાચા રાગી છે. ઉપાધ્યાય શ્રીવિનયવિજય અને યશાવિજયના તેઓ સમસામયિક હાવા છતાં બીજાઓની માક્ક તેજોઢેપથી ન દોરાતાં ઉપાધ્યાય વિનયવિજય પાતાના શુરુભાતા અને ઉપાધ્યાય યશાવિજય અન્ય સંઘાડાના હાવા છતાં તેમના શુશ્રેાનું પ્રામાલિકપણે વર્લુ ન કશુ છે. શ્રીયશાવિજયજીએ પાસચ્યા, કુશીલિયા, વેશવિઠંબક એવા કુચારિત્રિયા, પરિશ્રહી, મતાશ્રહી એવા વિપરીત પ્રરૂપકા સામે પ્રચંડ હાથે કલમ ઉપાડેલી એટલે એમના શત્રુઓ ઘણા હતા! તેમણે ઉપાધ્યાય શ્રીયશાવિજયને ઘણા ત્રાસ આપવા સાથે વિદ્યાના મદમાં લરપુર અભિમાની, લાકૈયણાના લાહુપી, અને એ માટે શ્રંથા ખનાવનાર બાદ્યભાષમાં રહીને ખંડનમંડનમાં પડી જનાર આંતર જ્ઞાનરહિત એવી એવી અનેક નિંદાઓ કરી છે. જ્યારે કાંતિવિજય એમને માટે કહે છે:—

" શ્રી યશાવિજય વાચકતા હું તો ન લહું ગુણ વિસ્તારા રે; ગંગાજળ કિલ્ફા થકી, એહના અધિક ઉપગારા રે. વચન સરસ સ્યાદ્વાદના, જસ નિગમ આગમ ગંભીરા રે; ઉપનિષદ્દા જિમ વેદના, જસ કિલ ન લહે કાેઇ ધીરા રે. શીતલ પરમાનંદિની, શૃચિ વિમલ સ્વરૂપા સાચી રે; જેહની રચના ચંદ્રિકા, રસિયા જણ સેવે રાચી રે. લઘુ બાંધવા હરિલદ્ધના, કેલિયુગમાં એ થયા બીજો રે; હતા યથારથ ગુણ સુણી, કેવિયણ બુધ મત ખીજો રે. સંવગી સિર સહરો, ગુરૂ ગ્રાનરયણના દરિયા રે; કુમત તિમિર ઉચ્છદવા, એ તા બાલારણ દિનકરિયા રે;

આ કૃતિમાં જણાવ્યા પ્રમાણે ઉપાધ્યાયજનું સં. ૧૭૪૩ ના હેલાઈના ચામાસામાં સ્વર્ગગમન થયા પછી, પાટણના સંઘના અતિઆપ્રહેથી આ કૃતિ અની છે, જેની સાલ સદ્ગત શ્રીસાહનલાલ દ. દેસાઈ સં. ૧૭૪૫ આસપાસ માને છે. એટલે તેની વિશ્વસનીયતા વિશે કશી શંકા રહેતી નથી.

कान्तिःविजयाख्यगणिनः, पठनकृते कृतिथियः सतीर्थ्यस्य ।
 विहितोऽयं यत्नः सफलः स्यात् सर्वप्रकारेण ॥

ચ્યા ગ્રંથ સ્ત્રાપત્ર ડીકા સિંદન સં. ૧૭૧૦ માં રાધનપુરમાં વ્યતાગ્યા છે. સં. ૧૭૧૨ ની હાથ-પાથીમાં ચ્યા વ્લાક પ્રશસ્તિ સાથે આપેલા છે. જૈતધર્મ પ્રસારક સભાએ ચ્યા વ્યાકરણ છપ.વ્યું છે તેમાં આ વ્લાક નથી.

ર. આ દાષારાપણ લેપ એટલા તોવરૂપે લેપિત છે કે તે હજા સુધી બૃંસાયા નયી કે ધસાયા નથી.

૩. " જૈન ગૂજેર કરિએ! " ભા. ૨, પૃ. ૧૮૧.

જયસામ પંડિત કે જે તપગચ્છની પર મી પાટે થયેલા આનંદિવમળ, તેમના સામિવમલ ઉપાધ્યાય, તેમના પાઠક હર્ષસામ, તેમના યશઃસામના શિષ્ય હાઈ જેમને 'ભાર ભાવનાની ૧૨ સજ્ઝાય ' 'ભાવનાવેલી ' સં. ૧૭૦૩ જેસલમેરમાં; 'ચાદ ગુલુ—સ્થાનક સ્વાધ્યાય ' આ પદ્યકૃતિઓ સાથે છ કમં બ્રાંથના ૧૭૦૦૦ શ્લાકસંખ્યા જેટલા (ગદ્ય) આલાવએષ ' સં. ૧૭૧૬ માં લખ્યા છે. તેઓ તેમજ ખીજ અનેક ગુલૂગ્ર પંડિત મુનિઓ જેમના અદેષ ચરલુ સેવે તે યશાવિજયજી કેવી મહાન વિભૂતિ હશે તેની કલ્પના કરા. શ્રીવિનયવિજય ઉપાધ્યાય જેમની ગીતાર્થતાનાં અહુમાન વાચક શ્રીયશાવિજયજીએ 'શ્રીપાલ રાસ 'માં કર્યાં છે, જે રાસ ઉ૦ વિનયવિજયે સ્થતાં રચતાં અધ્રે રહી જતા હતો તે પૂરા કરવા ઉ૦ યશાવિજયજીને ભલામણ કરેલી તે ઉપરથી તેમણે પૂર્ણ કર્યાં, જેમાં તેમણે પાતાની ગુલ્યુનુરાગિતા પ્રગટ કરી છે.

ઉપાધ્યાય માનવિજય, રે જેઓ તપગચ્છની અદ્યુસર શાખા, જેમના નામથી ઓળખાઈ તે ૧૧મી પાટવાળા વિજયાન દસ્સિના શિષ્ય શાંતિવિજય ગિલુના શિષ્ય જેમણે ૧૨મી પાટવાળા વિજયસ્તિના રાજ્યમાં 'નયવિચાર, ચાવીસી, સુમતિ–કુમતિ (જિનપ્રતિમા) સ્તવન ' તથા કેટલીક સજ્ઝાયા વગેરે લખેલી. તેમણે પાતાના 'ધર્મસંગ્રહ' ગ્રંથ યશા-વિજય પાસે તેમને શ્રુતકેવલી માની શાધાવેલા.

- ૧. ૫'ડિત સુખલાલજીએ એમના 'કર્મગ્રંથ ' ઉપરના વિવેચનમાં સૃરિ કલા છે. તેમનું કર્મગ્રંથ વિશે ત્રાન કેટલું ઊંકુ અને વ્યાપક હતું તે તેમણે કાર્મગ્રંથિક અને સૈહાંતિક મતમેદના વિષયમાં જે સૃક્ષ્મ આલાચના કરી છે તે ઉપરથી જણાઈ આવે છે. આ નોંધા પંડિત સુખલાલજીએ તારવી છે. બાલાવમાધની પ્રથમ પ્રતિ તેમના જ શિષ્ય કેલ્યાણસામે લખી હતી.
- ર. શ્રીમાનવિજય તપત્રચ્છના વિજયસિંદસરિના શિષ્ય જયવિજયના શિષ્ય હોઈ, 'શ્રીપાલ રાસ, સં. ૧૭૦૨ (૪) આસા સુદ ૧૦ સામવારે પીલવણુમાં લખ્યા છે, જેની શ્રીમાલવેદસે શાહપુરે સં. ૧૭૧૫ વૈશાપ્ય સુદિ ૭ શુધે–સચિત્ર પ્રતિ પત્ર ૩૧,૧૬ સે. લા. વડા. નં. ૧૧૭૧ છે, પણુ આ હપાધ્યાય નથી.
- 3. 'સુમતિ–કુમતિ રત• ના અંતે તપાગ-જના–ભદારક શ્રીવિજયાણું દસરિશિષ્ય પંડિત શ્રીશાંતિ-વિજયગણિ શિષ્ય મહાપાધ્યાય–પંડિતશિરામણિ શ્રીમાનવિજય ગણિઇ સજગાય ક્ષીધો–તેહના ટળાર્થ પણિ ધમાર્થા જનની પ્રાર્થનાઇ, ઉ. શ્રીમાનવિજયગણિએ લખ્યા, સં. ૧૭૨૮ ચૈત્ર સુંદિ પ રવી ભ. શ્રીવિજય-રાજસરિ–રાજ્યે સજગાય સં. પાંચી લિ. ૧૭૪૩ માગસર માસે શુક્લપક્ષે પ્રતિપદાતિથી ભૃગુવાર; સ્તંભતીર્થ …લખાપિત. (અમારાથી ધર્મસંત્રહની પદાવલી જોવાનું બન્યું નથી.)
 - ४. सत्तकैकर्कशियाऽिखलदर्शनेषु, मूर्धन्यतामधिगतास्तपगच्छष्पर्याः । काक्ष्यौ विजित्य परयूषिकपर्षदोऽप्र्या, विस्तारितप्रवर्णनमतप्रभावाः ॥ तर्कप्रमाणनयमुख्यविवेचनेन, प्रोद्बोधितादिमसुनिष्ठुतकेवित्त्वाः । सक्ष्येशोविजयवाचकराजिमुख्याः, प्रन्येऽत्र मय्युपकृति परिशोधनायैः ॥

તર્કે, પ્રમાણ, નયતું મુખ્યપણું જેમાં છે એવા વિવેચન વહે:જેમણે અગાઉના સુનિઓનું ઝુનક્રવલિપણું પ્રમાધ્યું છે એટલે પાતાના ત્રાનથી વ્યતાવી આપ્યું છે કે અગાઉના શ્રુતકેવલી આવા દ્વાય એવા અને વાયકગગુમાં મુખ્ય યશાવિજયે આ પ્રયમાં પરિશાધન આદિયી મારા ઉપર ઉપકાર કર્યો છે. –(ધર્મસંત્રહ રચનાસાલ સંવત ૧૭૩૮–ની પ્રશસ્તિ.)

શ્રીનયવિયળ, જેઓ તપગચ્છાચાર્ય શ્રીવિજયપ્રભ્રસ્તિની આગાશી મં. ૧૭૪૮ શ્રી ૪૯ માં મહિમાસાગરસ્તિ પાસે આચાર્યપદ્વી મેળવી ગ્રાનવિમલસ્તિ ભનેલા, તેમણે ઉ૦ યશેાવિજયકૃત 'ચાગદિ સજ્ઝાય ' તથા 'સાહી ત્રભુસા ગાયાના સ્તવન ' ઉપર ખાલાવળાય લખેલા, અને પાછળથી ખરતરગચ્છીય શ્રીદેવચંદ્ર ઉપાધ્યાય સાથે 'શ્રીપાલ રાસ 'ની યશેાવિજય વાચકકૃત પાછલી બે હાળાની 'નવપદ પૃક્ત 'માં સંચાજના કરી હતી. આ ગ્રાનવિમળસ્તિના મં. ૧૬૬૪ માં જન્મ, મં. ૧૭૦૨ માં દ્રીક્ષા, મં. ૧૭૨૭ માં પંડિતપદ, મં. ૧૭૪૮ (એક ખીજ મત પ્રમાણે ૪૯)માં આચાર્યપદ અને મં. ૧૭૮૨ માં ખંલાતના ચામાસા દરમિયાન—આસા વદ શુરુવાર ૮૯ વર્ષે સ્વર્ગવાસ થયો. એમણે સ્તવન, સજ્ઝાયા, શ્રાયો વગેરે ઘણું લખ્યું છે.

'જયસામ' આદિથી આપણ આટલી વ્યક્તિઓના પત્તો મેળવીએ છીએ. પ્રયત્ન કરતાં કહાચ ળીજાયે ઘણા જડી આવે. જે કે એમના સમયને આવરીને ઘણા પ્રસિદ્ધ—અપ્રસિદ્ધ—પંડિત સુનિએ છે. તેમના ઉ૦ યશાવિજય સાથે કેવી રીતના સંબંધ હતો, એ કહી શકવાનું કાઈ પણ પ્રમાણબૂત સાધન છે કે કેમ એ એક શાધના વિષય છે. પણ એ રીતે આ લેખને લંભાવવા ઇચ્છા નથી. છતાં એક વાત કહી દેવી જોઈએ કે— ઇપ્યાંશ ઘણા હતા—એને માટે કાંતિવિજય હૈયાની વરાળ કાઢતાં લખે છે:—

" છતા અધારવ ગુખુ સુભિ, કવિયાલુ બુધ મત ખીજો રે. "

ઉપાધ્યાય શ્રીયશે વિજયજની ગુરુપરંપરા-જગત્શર શ્રીહીર વિજયજના શિષ્ય વાચક કલ્યાળ વિજયશે શરૂ થાય છે. તેઓ શુજરાતના પાલખહીના પ્રાગ્યંશી સંઘવી આજહના પોત્ર રાજશી, તેના પુત્ર શિરપાળ શુજરાતના સુલતાન મહસુદશાહે (૧ લા બેમડા) લાલપુર ગામ લેટ આપ્યું. તે શિરપાલ એ ગામમાં સં. ૧૫૬૩ માં જિનમંદિર અંધાવ્યું. શિરપાલના પૌત્ર હરખશાને ત્યાં લાર્યા પૃંજશી ઠાકરશી નામ પુત્ર સં. ૧૬૦૧ આસા વક પ સામતારે જન્મ્યો. તે ઠાકરશીને શ્રીહીર વિજયસ્થિ સં. ૧૬૧૧ ના વંશાખ વક ૨ હિને મહેસાળામાં ક્રીક્ષા આપી કલ્યાળ વિજય નામ રાખ્યું. તે પછી સં. ૧૬૨૪ ના વંશાખ વદ ૭ ના દિવસે પાટલુમાં વાચક (ઉપાધ્યાય) પદ આપ્યું. બ્યાખ્યાનકળા ઘણી સરમ હતી અને ઉત્તમ ચાલ્ત્રિ પાળતા તેથી લોકો ઉપર સારી છાપ પાડી શકતા. તેમણે રાજપીપળામાં રાજ વચ્છ ત્રિવાહીની સલામાં ખ્રાહ્મળુ પંતિતોને શત્યા હતા. હાલના જયપુર-રાજ્યના વેશટનગરમાં અકખરના અધિકારી ઇદરાજે કરાવેલા વિહાર 'ઇદ્રવિહાર' નામના લગ્ય પ્રાસાદેશમાં પાર્યાનાય ખિળની પ્રતિશ સં. ૧૬૪૪ માં કરી હતી. આ પ્રાસાદેશમાં હાલ પાર્યાનાય મંદિર કહેવાય છે તે દિશં બરાના તાળામાં છે. આ પ્રાસાદની પ્રશસ્તિ લાલવિજયે રચી છે. આ કલ્યાળ વિજયે ધર્મસાળરના હ્રારામાં પાટણખાતે સારા લાળ

૧. 'પ્રાચીન લેખ સંગ્રદ, બાગ. ૨, નં. ૩૭૬, સંપા૦ શ્રીતિનવિજય.

લીધા હતા. ^૧ તેમના શિષ્ય લાભવિજય વ્યાકરણુયૂડામણુ હતા. ^૨ અકળર બાદ્શાહને મળવા શ્રીહીરવિજયસૂરિ પાતાના ૧૩ સાધુઓ સાથે ગયેલા તે પૈકી એક હતા. ²

આ પંહિત શ્રીક્ષાલવિજયજીના-શ્રીજીતવિજય અને શ્રીનયવિજય, જે વાચક શ્રીયશે!-વિજયના અનુક્રમે કાકાગુરુ અને ગુરુ હાઈ તેમના ઉપર એકસરખા શિષ્યભાવ રાખી કાશીના અલ્યાસ માટે પ્રભંધ કરેલા, જેના સ્વીકાર તેઓ 'દ્રબ્યગુષ્ધુપર્યાય રાસ ' 'સાડી ત્રાષ્ટ્રસા ગાથાના સ્તવન ' વગેરમાં ઉપકાર સાથે કરે છે. આથી શ્રીવિનયવિજય, જેઓ શ્રીહીરવિજયસૂરિના શિષ્ય કીર્તિ વિજયના શિષ્ય-તે યશે!વિજયજીના કાકાગુરુ હોવાની અને સાથે કાશીમાં અલ્યાસ કરવા જવાની ઘર કરી ખેઠેલી માન્યતા ટકી શકતી નથી. '

ં આની વિશેષ ચર્ચા આગળ અમે વાચક શ્રીયશાવિજયજીના કાશી અલ્યાસકાળની . આલાચનામાં કરીશું. જો કે આ વિશેની કેટલીક વિચારણા અમે અમારા અગાઉના લેખમાં તો કરી જ છે.

આટલી પૂર્વ મૂમિકા પછી હવે આપશે એમની મુખ્યત્વે ગુજરાતી કૃતિઓની સાલ-વારી તપાસીએ. એમના ગુજરાતી સાથે—સંસ્કૃત, પ્રાકૃત ગંથા લઈએ તાે કાલકમે ચાર ભાગ પડે છે:

- (૧) કાશીમાં અભ્યાસ કરવા જતા પહેલાંના શ્રી.
- (૨) કાશીમાં અલ્યાસના પરિષ્ણામે ન્યાયના છે લાખ ⁹લાકા યા ૧૦૦ લંઘ ન્યાયના રચ્યા, જેના કારણે તેમને ભદ્રાચાય તરફથી ન્યાયાચાય પદવી અપાઈ ^પ તે તથા ત્યાં રહી અન્ય રચેલી કૃતિઓ તથા આગ્રામાં રહી કરેલી કૃતિઓ.

હેમગુરુ સમ વડે શબ્દ અનુશાસને, શીસ તસ વિશુધવર લાભવિજયા –(૩૫٠ ગાયા સ્ત૦ ઢાળ ૧૭ ગા. ૧૨)

3. 'સુરીશ્વર અને સમ્રાટ' પૃ. ૧૦૯.

૧. ' એતિહાસિક રાસસંગ્રહ ' ભાગ ૪.

ર. ગુરુ શ્રી**લાલ**વિજય વડપંડિત, શ્રુતગ્યાકરહ્યુાદિક બહુમંચિ, નિત્યર્ધ જસ મતિ લાગીઃ —(૬૦૫. ગુ ૫. રા. ગાથા. ૨*૭*૯)

૪. આ ચર્ચા અમે અમારા બીજા લેખમાં કરી છે. અહીં અમે બીજાં પ્રમાણા રજ્ કરીએ છીએ. ઉપાધ્યાય વિનયવિજયના પિતાનું નામ તેજપાલ અને માતાનું નામ રાજથી. તેમણે સં. ૧૭૧૦ ના જ્યેષ્ઠ સુદ ૬ ને ગુરુવારે શત્રુંજય ઉપર ઉપ્રસેન (આગ્રા) નગરવાસી એાસવાલતાનીય દૃહશાખીય અને કુઢાડ-ગાત્રીય સા૦ વર્ષમાન (સ્ત્રી વાલહાદે) ના પુત્ર સા. માનસિંહ અને જીવણદાસ પ્રમુખ પુત્રાદિ પરિવારસહિત પાતાના પિતા (વર્ષમાન)ના વચનથી તેના પુષ્ય માટે આ સહસ્તકૃટ તીર્થ કરાવ્યું અને પાતાની જ પ્રતિશામાં પ્રતિષ્ઠિત કર્યું. તપગચ્છાચાર્ય શ્રીહીરવિજયરિના પટ્ધર આચાર્ય વિજયસનસરિના સિધ્ય વિજયસનસરિના સિધ્ય વિજયસનસરિની આતાથી હીરવિજયસ્તિ શિષ્ય મહાપાધ્યાય શ્રીકીર્તિવજયરિણના શિષ્ય ઉપાધ્યાય વિનયવિજયે એનો પ્રતિષ્ઠા કરી–આ લેખ ખરતરવસહી ટ્રુંકમાં શેઠ નરસી કેશવજીના મંદિરના ગર્ભાગારની બહારના મંડપ–૪૩ પંકિતમાં કાતરેલા છે (જાુઓ: લેખાંક: ૩૨, 'પ્રાચીન લેખ સંગ્રહ' લા. ૨, શ્રી જિનવિજયજી સંપાદિત.).

પ. " ન્યાયાત્રાર્ય પદ અપાવનાર આ સા શ્રંથા ક્યા તેના હજુ સુધી કાંઈ પણ પત્તો મળતા નથી…

- (a) કાશી છેડથા પછી વિ. સં. ૧૭૧૮માં વાચકપદ મળ્યું તે પહેલાંની કૃતિએા.
- (૪) ને પછીની કૃતિએા.
- (૧) પ્રથમ વિભાગની કૃતિઓ નક્કી કરવાતું કામ ઘણું કહતુ છે. એમનું ગુર્જર તથા અન્ય બાયાનું ગ્રાહિન્ય ઘણું પ્રગટ થઈ શ્રૃક્યું છે, કેટલુંક અપગટ છે—જેનાં નામ જાણાયાં છતાં હાથ નિહે ચરેલું અને અન્ય રીતે અત્રાત રહેલું પણ એમાં આમેલ છે. વિલુસ થયેલા બાગ પણ એછો ક્યાંથી દાય ? છતાં જે કૃતિઓ ઉપલખ્ય છે તેના અલ્યાસથી કોઈ ફળ પ્રાપ્તિ થાય તે ખરી જ.
- (૨) બીજા બાગના પત્તો નથી. તે કર્યા રહ્યો અને તેતું શું થયું ? એ એક માટે! દાયદા છે. કદાચ વિદારમાં ગાંધ ફેરવવાતું અતુદ્રગ ન હાવાના કારણે કાશીના જેન ઉપા-શ્રયમાં કે આગ્રાના શાસ્ત્રસંગ્રહમાં સામેલ કર્યો હાય.

" ચૈતન ચાહેકા સંગ નિયારા, ગાનસુધારસ ધારા ! "

આ પંક્તિ નીચે દિગંત્રરીય પંડિત બનારસીદાસના 'સમયસાર' નાટકમાંની પંક્તિ એાને આ પ્રમાણે મૂકી છે–

" તે રો' જસ સત્તા સર્ધરિ, એક ભાવકા હાય. ૧૫."

અને છેટલી પંક્તિપૃત્ર કર્યાજિત કરેલું પર-આગ્રામાં સંભવતઃ અન્યું હોય. 'અધ્યાત્મમતપરીક્ષા' એ સંસ્કૃત ગંધ કર્યાં, ક્યાર અને કેવા સંતિગા વચ્ચે અત્યા, તેના પરામર્શ આ લેખના વિષયની ગડારના છે.

(૩) ત્રીન બાગ માટે આપણી પાસે સાધના છે.

क દ્રેત્રયગુળુપર્યાય રાય-આ રાયની પ્રથમ પ્રતિ મે. ૧૯૧૧ ની એમના શુટ્ શ્રીનયવિજય પંતિ સિદ્ધપુરમાં લખેલી મળે છે.' આ રામ એમણે શ્રીવિજયસિદ્ધસ્રિના બળાધિયત્ય કાળે 'તેહની જે હિતરિક્સા, તેહને અનુસાર ' સ્થ્યાનું, તથા કાશીમાં અભ્યાય કરવાનું, ન્યાયવિજ્ઞારક ભિટ્ટક 'પામ્યાનું, 'ચિંતામિષ્ટિ,' ત્યાયશાસ્ત્ર ભજુવાનું, વળેરે હેક્ષકત આપલુંને એમાંથી પ્રાપ્ત શાય છે.

લાલમાં મધ્ય છે તે પ્રાપ્ત કરીતે બધા કાશોધા વ્યા દેશમાં આવ્યા પછીના રચેલા છે. કાશોમાં રચેલું પુસ્તક એક પણ લજા સુધી દરત્યન થયું નથી " (જે. ગ. ક. ભા. ર-બરોચિંગ્ય.) માં. દ. દેશ ઇ. સંન્યાર્સીને પ્રગસ્ત કરવાથી એ વિજયપ્રાપ્તિ કાળે 'બનારસા પાર્ચનાથની સ્તૃતિ ' કરી–આના અક્ષર દેહ માંઠ શું જાજાવામાં છે ક

२५. १७११ वर्षे पॅटिन अपविज्ञयोजना निरम्पितः संपन्न होमार्श्व-आग्राहमाने श्रीसद्भुप्तनारं विभिन्नः श्रीमग्रहस्थादिकपूर्वनारं विभिन्नः श्रीमग्रहस्थादिक प्रीमग्रहस्थादिक प्रीमग्रहस्थादक (१९-१५ पान्यापुरमंदार, वे १० १० १० १०, १०, १०)

ત્તપંગચ્છની ૬૦ મી પાટવાળા શ્રીવિજયદેવસૂરિએ વિજયસિંહસૂરિને વાચકપદં સં. ૧૬૭૩ પાટણુમાં, સૂરિપદ ૧૬૮૧ અથવા ૮૨ ના વૈશાખ સુદ ૬ ઇડરમાં અને ગણુાધીશપણું, સં. ૧૬૮૪ પાષ સુદિ ૨ બુધવારના નક્ષારમાં—મંત્રી જયમલે કરેલા ગણાનુત્રાના નંદિમહાત્સવપૂર્વંક આપ્યાં. અવસાન—શ્રીવિજયદેવસૂરિની હયાતીમાં જે અષાડ સુદિ ૨ ના (સં. ૧૭૦૯) અમદાવાદમાં શ્યું. ધ

આટલી કાળમર્યાદા ઉપરથી આપણને એટલું ચાક્કસ ભાન થાય છે કે, શ્રીયશા-વિજય ગણિ કાશીના અભ્યાસ વગેરે પતાવીને સં. ૧૭૦૭–૮ લગભગ ગુજરાતમાં પાછા ક્યાં હશે. તે એટલા ઉપરથી કે, ગુજરાતી કૃતિ 'દ્રવ્યગુણુપર્યાય–રાસ' જે સં. ૧૭૦૮ પહેલાંની રચના કરે છે, તેમાં એમના સંસ્કૃત તર્ક બ્રેશા–'અને કાંતવ્યવસ્થા' અને 'ભાષારહસ્ય' નામક ગ્રંથનાં અવતરણા મળે છે. તેમાં 'ભાષારહસ્ય'ના આરંભ કરતાં રહસ્યપદ વહે અંકિત એવા ૧૦૮ બ્રંથ રચવા ઇચ્છા વ્યક્ત કરે છે. ' જે કાશીના અભ્યાસ કાળ પછીની કતિઓ છે.

ख 'સાડી ત્રણુસા ગાથાનું સ્તવન ' પણ શ્રીવિજયસિંહસૂરિના ગચ્છાધિકારમાં રચાયું છે. તેમાં પણ 'રહીય કારીમિટે જેહથી મેં ભલે, ન્યાયદર્શન વિપુલભાવ 'પાયા.'ના હલ્ક્ષેખ કર્યાં છે. એટલે તે કૃતિ તે કાળમર્યાદાની છે.

મ 'એક્સો ને પચીસ ગાથાનું સ્તવન ' પહુ તેમાંના વિષય જેતાં ભેગાલેગું અનેલું લાગે છે. કાંઈ નહિ તો તે સં. ૧૭૧૮ ની પહેલાંની કૃતિ તો છે જ, કારહ્યું કે તેમાં કર્તાંએ જશવિજય ખુધ—એ રીતે પાતાના નામ અને પદવીનું સ્વ્યન કર્યું છે, એટલે તે વખતે વાચક થયેલા નહિ. તેમ એમાં કાશીના અભ્યાસ સંખંધી કાઈ સ્વાક હંકીકત નથી. એટલે એ જૂની થયેલી સંભવે છે, તે એટલી કે આ પહેલાં—આ હંકીકત તરત બનેલા આગળ દર્શાવેલા ગુજરાતી ગ્રંથામાં કહી દેવામાં આવી છે.

ગ્ર હવે 'સમુદ્ર વહાલુ સંવાદ ' ઘાઘામાં મુનિ-વિભુધ સંવત એ ઉપરથી 'જૈન ગુજ'ર કવિએા ' ભાગ ૨ માં સં. ૧૭૦૦ ની કૃતિ લખી છે પણ 'તપગચ્છ ભૂષણુ શાભતા, વિજયપ્રભસૂરિરાજ.' એ ઉપરથી સંવત ૧૭૧૧ કે તે પછીની કૃતિ છે. 3

૧. વિજયસિંહસરિ સં. ૧૭૦૯ માં સ્વર્ગવાસી થવાથી મૂળ વિજયદ્વવસ્રિતે ફરીથી ગચ્છ સંભાળવાનું પ્રાપ્ત થયું. ગા. વી.

ર. આમાંથી કેટલા પ્રથા રચાયા તે સંગ'ધે કાંઇ પણ હક્ષીકત મળી નથી. માત્ર આમાંના 'ભાષા-રહસ્ય, ઉપદેશરહસ્ય અને નયરહસ્ય ' નામના ત્રણ જ પ્રથા મત્યા છે. અલભ્ય પ્રથાની યાદીમાંં 'પ્રમારહસ્ય' તથા સ્યાદાદરહસ્ય 'નાં નામા માત્ર જેવા મળે છે.

^{3.} ૧૧ સી. પાટ વિજયપ્રભસસ્-જન્મ ૧૧૭૦ કચ્છ મનાહરપુરમાં (વરાહી ગામે), દીક્ષા સં. ૧૧૮૧, પં-માસપદ સં. ૧૭૦૧, સ્રિપદ સં. ૧૭૧• (૯!) ગંધાર ભંદરમાં વૈશાખ શુદિ ૧૦ તેના ઉત્સવ અમદાવાદવાસી અભેચંદ દેવચંદની પત્ની–સાહિયદેએ કર્યો. સં. ૧૭૧૧ અમદાવાદમાં સુરાના પુત્ર

પણ ને તરનની છે. 'કેવિ જશાવિજયે રચ્યા.' એ ઉપરથી માબિત છે. મં. ૧૭૦૦ માં શાશામાં રચેશા સંભવના નથી, કારણ કે તે વખને તા તેઓ કાશીના અભ્યામ માટે શરૂ માથે ઊપટે છે.

જુ ' સાધુવંદળા '–મું. ૧૭૨૧ વિજયાદગમી, ખંબાવ. હાળ ૮, ગાંધા ૧૦૧.

च 'પ્રતિક્રમણપ્રબંલિતુ-સ્વાધ્યાય'-ર્યા, ૧૭૨૨ સુરત ચામાસામાં.

જ 'અગિયાર અંગની સ્વઝાય '–મું. ૧૭૨૨ સુરત ચાબાસામાં. ધ

લ 'મીંન એકારગ્રીના ૧૫૦ કહ્યાળુકતું સ્તવન'—મું. ૧૭૩૨, અંબાવના ચાયાસા વર્ષતે દિવાલી ઉપર

જ્ઞ 'નિશ્ચય-અયવદારવિવાદ શ્રીશાંતિજિત સ્તવન '-ગ્રં. ૧૭૩૨, દાળ દ.

પ્ત 'સુપકિતપ્રદ્ધાનસ્ત્રકૃપની ચાપાઈ-અર્ધ (ટબા) સરિત '–સં. ૧૭૩૩, ચામાસું ઇદલપુરમાં. ડબાવાળી પ્રત, લંધાલંધ–સૂત્ર–દ્રીકા મિલને ૧૦૦૦ ²લાક છે. (પાનાં ૨૮–૧૭ આ. કા.)

ટ ' દેહિસા ગાયાનું હુંગ્રેક્પ મહાવીરસ્તવન '–સં. ૧૭૩૩, વિજયાદગ્રમી ઇટ**લપુરમાં** કે (પદ્યવિજય કર્યો).

ટ ' સંયમ્પ્રેલિવિચાર અજ્યાય '–સંત્રાપત્ર ટળાઅસિવ ઉપરાંત સાંયમપ્રેલિ પ્રરૂપણાના નામ બદામાં.

સ ' દૈક્ષ્યુનિ ભાસ, અધ્યિમુનિ લાસ, વાયુષ્યુનિ લાસ, ત્યકતપ્રણયર લાસ, સુધમે લાસ.' આ ધનછએ આદ લગ્દર ખર્ચી જબાદનાંતા નહિયદેલ્સવ, વંદનમંદાત્સવ–કાર્નિક વૃદ્ધિ રતા થયો. સં. ૧૯કરમાં નાંધારમાં પાનાના પદ્ધર નદીક વિશ્વયુન્તનહિની નિમણંક કરી. સં. ૧૯૪૯ એક સુદ ૧૨ દેવામાં સ્તર્યવાસ

ા. "માત ભંગાઇ મંત્રલ વિતા રે ફ્રેપ્ચંદ સાઇ કેશર, માંચેકશાવે કાઇ સાંક્રદયાં રે તિધિ શું અંત્ર અત્યાર " (૧૧ અંત્રતી સન્ત્રાય અને પ્રતિસ્થળ્યમંદેતુ બંગેતા અંત સાપ્ત ત્રાથા. ૧–૭ થી ઢેરેક-સાંચા જ છે.)

એમાં પાતાના વ્યત્મહત્રા દર્શાવી છે-" કર્મ વિરા છ પાળિયારે, પાલા દાંપ છે છાડી, તખત વખત દવે પામર્થ રે, તુઈ કહી કાઇકાડી "

ર. વ્યા ઇટલપુર-વ્યવદાવાદનું ક્રોઇ પરં હકે કે જુંએ:- ઇ.ત. શીક્ષન્યકન્વંચાયઇ સમાધના શ્રા રાજનજાને વિષે નિર્દ પ્રસિદ જે હૈય કેક્સિક્ત શીનાસ્ત્ર્યદ નાચના તેની પ્રાર્થના થકી સાકસાયાર્જે કરી નયપ્રસ્થાન એટલ નયમાર્થ, તેણે કરી વડસ્થાનકની વ્યાપના શીક્ષધો દર્શને કાજે શીધકાનિજ્યાલની કૃતિ ન્યાવૃત્તી 'એક પ્રતમાં નીચે પ્રથાસુના કનીના ચેલક મહે છે.

थेबाराचींदर्भचराकरमकान्द्रवांगम्, नागचंद्रकृताव्चापम्बद्धापंगरंगस्यज्ञाम् ।

गुपा को स्थाप समर्थितस्य तस्य तस्य तस्य तस्य स्थाप्त स्थाप्त स्थापता स

ર્ય. ૧૮૮૨ વર્ષ વેશાખ વીદ-૭ કરો ક્ષિખિતા યોપ્રિવણુડીમધ્ય ૧૬ પત્ર, પ્ર. કા. નં. ૯૭૮* દેશ્કી મુખ્યામુત સુવિવકો, કેલ્કો ધ્લા ઇનેજી, એ તવત મેં કોર્ય મુખ્ય

- 📽 ' આઠદરિ સજ્જાય '-(ગ્રાનિવેમલસુરિનાં ટળા).
- ण ' ध्रह्मशीता '–કડી ૩૦, ખંભાવ, સં. ૧૭૩૮.
- ત 'જં ખૂરાસ ' સં. ૧૭૩૯, ખંભાતમાં ચામાસું. સંખ્યા ૧૪૦૦ ગ્રંથાગ્રંથ, ઢાળ– દુહા સવ' મળી, તથા આંક સંખ્યાયે. (કવિની હસ્તલિખિત પ્રતિ સ્વ૦ પ્ર૦ શાંતિવિજયજી પાસે હતી. એ ઉલ્લેખ શ્રીકલ્યાણવિજયજીએ અમદાવાદ 'ગુજરાત સાહિત્ય પરિષદ'ના રિપાર્ટમાં પ્રગટ થયેલા તેમના લેખમાં કર્યો છે.)

द આ જ અરસામાં શ્રીવિનયવિજય કપાધ્યાયે શરૂ કરેલા 'શ્રીપાલ રાસ ' રાંદેરના સં. ૧૭૩૮ ના ચામાસામાં ૩૫૦ ગાથા રચાયા પછી તેમના અવસાન થવાના કારણે અધૂરા રહેલા તે ઉપાધ્યાય વિનયવિજયની ઇચ્છાને અનુસરી ઉપાધ્યાય યશાવિજયજીએ પૂરા કર્યો.

च ' हिङ्पटं ८४ मिखं गाथा-१६१.

न-प-फ-च 'ચાવીસી ' ત્રણ, 'વીશી ' એક.

म ' समिहितना ६७ धासनी सक्त्राय' – क्षण १२, गाथा ६८.

म ' અહાર પાપસ્થાનક સજ્ઝાય '–હાળ ૧૮.

य 'અમૃતવેલી સજ્ઝાય.'–સં. ૧૭૧૮ પહેલાંની કૃતિ હશે.

રં 'ચૌદ શુષ્યુસ્થાનની સન્ઝાય '-હાળ ર.

ં જ 'સમક્તિ સુખલડી સજ્ઞાય. '

વ 'ચાર આહારની સજ્ઝાય. '

'ं स 'કુંગુર પર સ્વાધ્યાય '–(કવિના સમયમાં સાધુ માટેની સ્થિતિ જણાવી છે)

श ' भुशुरू पर स्वाध्याय '-क्षण ४. सिरिणयित्रज्ञयगुरुणं । पसायमासज्ज सयल-कम्मकरं । प्रणिया गुणा गुरुणं साहुण जससिणए एतं ।-(४१) व्या ७५२थी व्या ६ति " भ्र. १७१८ पहेंक्षांनी भानी शहाय."

પ 'જરાવિલાસ '–૫૬ ૭૫–જુદી જુદી વખતેં ખનેલાં.

જ્ઞ[ા] અષ્ટપદી '–આનંદઘનજીની સ્તુતિરૂપ.

ळ ' પંચપમમેષ્ટિ ગીતા. '

क्ष ' સીમ ધરસ્વામીનું ૪૨ ગાથાનું સ્તવન '–ઢાળ ૪–નિશ્ચય–૦યવહાર નયગિલ'ત.

क ' कुशुर्नी सल्लाय '-ढाण ६ मां आ णील छे. पस्तो कुगुरुसन्झाप जिनवयणाओ फुढं भणिओ; सिरिणयविजयमुणीणं सीसेण जणाण वोहत्यं। आ पण् वायक्ष्यह मस्या पहेंदांनी लखाय छे.

- (ઋ) 'જિનસુદ્ધતામ વર્ણન છંદ'-૨૧ કડી. ભુજંબપ્રયાતવૃત્ત, આ પછુ ઉપલી કાંડીમાં આવે એમ છે.
- (आ) ' અડની પડનીની સત્ત્રાય ' અથવા ' સ્વિગ્નપશ્રીય વદનચંપેટા ' સ્વાય ऋषमजिन स्त्रचन-ऋषशिनराज सुज आज हिन अतिसंदेा. ' ४८ीः ६ ऋषमञ्जूष हिनकारी, ऋषम जिणंदा वजेरे.

ગાંતજિત સ્ત્રવન-'ગીતલજીન મોહ ખારા કરી દ; पद्मप्रमित्त स्त्र-'ઘરી ઘોલળે ચાંગ સલ્લા' જેમાંથી પ્રેરણા લઈ 'કૃષ્ણ કૃષ્ણ સાંલળે ગાંતિ સલ્લા' -એ પંક્તિથી શરૂ થતું ક્તવન-ક્તાંત્ર રીતે શ્રીશુબ-વીકિજયે રચ્યું છે. ગાંતિતિત સ્ત્રિંગ 'હેમ મળન લયે પ્રલુધ્યાનમે' પામ્ચેતિત સ્ત્રું 'એર સાહિળ તુમ હા પ્રભુ પાસ જીહંદા!' 'આખ માહે એસી આય અની, શ્રીમું ખેશર પાસ જિનેશર માહે તું એક ઘણી!' અંતરિક્ષ પાર્થનાથ ક્તાં, તૃતિલુવત્તિત સ્ત્રું 'આખ સફળ દિન સુજ તહેનું!' નવરૂચમાં, તૃતિતિત સ્ત્રું 'અજળ રૂપ દેખા માઈ જીનજીકા!' મિકાયઝ સ્ત્રું 'વિમલાચલ નિતુ વંદીએ!' નથા 'રઘાપના કુલક સત્યાય,' 'સંપમંશબિ સજાય' વળેર સજાયો. હસિયાળી-'કહેને પંતિ કાલું એ નારી, ' યતિષ્યં બત્રીશી અથવા સંયમ ભત્રીશી,' 'ગીતમસ્ત્રાની છંદ' આદિ અનેકાનેક ગલ-પહ સ્ત્રુંત્ર કૃતિઓ છે. તથા અનુવાદરૂપ-સં. ૧૭૦૯ પહેલાંની દિમંળર આચાર્ય પ્રમાર્થ ક્તું કૃતિઓ છે. તથા અનુવાદરૂપ-સં. ૧૭૦૯ પહેલાંની દિમંળર આચાર્ય પ્રમાર્થ ક્તું કે સ્ત્રું સ્ત્રું સ્ત્રું કહેને સાથે અને 'સ્ત્રું મારાય સ્તરક કહાર કરી, હેમવિજય સુનિ હત-' શ્રીહિમ-વિજય માટે કરેલા, આ કૃતિઓ માટે લાગે પ્રગૃ છે, પણ અપ્રગૃદ અને કાળના સુખમાં કેશી ચાલી ગઈ હશે તેના હિસાય મેળવેના કરેલું છે.'

એ જે દા તે દા ! પણ અત્યાર જે ગુજર કૃતિઓના ઉપર નિર્દેશ કર્યો છે, તે વધા 'સુજ્યવેલી લાસ' અને અત્ય કૃતિએા સંખ્યામાં સ્વલ્પાંત્રે, ગુજર કે અત્ય બાષાની

[.] ૧. પાટણના એક લંડારબોના છૂટક પાના પર ક્રાઈએ સં. ૧૭૬૭ વર્ષે કાલી સુંદિ ર દિને પત્તન– અધ્યે કે. શ્રી થટ્ટોવિશ્ય કૃતશેથા–આ અશાળાવાશી તોધુર્ણ અશિયાર અગ્નેતી ઠીષમાં છેશ્યું નામ આનંદ્યત બારોશી બાલાવેશેશ્વનું છે, દશર્શુ નામ 'કુપદર્શન્વિસ્ટાક્ટલ્' છે.

એક કુર્યાનિયાંના, દબ મન સ્તરન મો. ૧૭૩૨ પેલ સાંદિ છતે રમેશું એ નામ અહિન છે. પણ એમાં એમના નામના-પાનાના કથનને પ્રતિષ્ઠિત કરાવવા કાઈ મનાંચ આપા હમયા કમાં છે. સ્થનાંશ્વરી, અંતર્યન બનાંચા જેવા કે-' સાંતરિમારકારિક ધર્યું' કે, અવિનીતિ એ નામ; '—નયવિમાત શાયણી દિલ્લા વાચકના મો. ૧૦૪૨ના અવસાન પછી પાંચ વર્ષ મો. ૧૦૪૮ કે પ્રક્રમાં સાનવિમાત નામ ધારણ કર્યું, જે સાનવિમાત્રકારિ થાપ્રે-પશ્ચિત્રમાં ' પ્રતિવિમાત્રકારિ થાપ્રે-પશ્ચિત્રમાં ' સ્થિતિ સ્થાનારના મોંચા ' ધારણ માનાર્યા અને 'સાહી પ્રબંધો સાથાના સ્તરન ' ઉપર-નાનિયલસારિ ઘણા જ માનપૂર્વક વ્યાલાવેશાય કર્યા રિતે લખે કે નથા ' શ્રીપાય રામ માના કરવા ' ઉપર-નાનિયલસારિ ઘણા જ માનપૂર્વક વ્યાલાવેશાય કર્યા રિતે લખે કે નથા ' શ્રીપાય રામ માના કર્યા માના કરવા માના કર્યા માના કર્યા માના કર્યા માના કર્યા માના કર્યા કર્યા કર્યા સામાં છે, જે વિચારમાં કર્યા સાં સ્થાની ફિતે માની શ્રમાની નથી.

જે ન્યાયાગાય' શ્રીયશાવિજયજીના જીવનના ખાદ્ય અને અંતર અંગા નેવામાં દીપ તરીકે કામ લાગે એવી છે, એના મંદ્ર અને મંયાદિત પ્રકાશમાંથી જે અને જેટલું નેઈ શકાય તેટલું નેઈ લઈશું.

જન્મ અને દીક્ષા :

જન્મ કચારે થયા ? એ 'સુજશવેલી ભાસ 'કાર જણાવતા નથી. પણ સં. ૧૬૮૮ તેમના ગામ–ઉત્તર ગુજરાતનાં કલાલ પાસેના ખીજી રીતે પાટસૂથી થાડા ગાઉના અંતરે હેલું પણ છે–કનાડુમાં સુનિ શ્રીનયવિજયકુસુગેર, જેનું ઐતિહાસિક સંસ્કૃત, પ્રખંધામાં 'કુમારિગરિ' નામ મળે છે. એ પાટલુ પાસેના ગામમાં ચામાસુ રહી આવે છે, ત્યારે માતા સાભાગદે પાતાના 'જશવંત' પુત્રને લઈ વંદન કરવા જાય છે. જ્યાં ધર્માંપદેશ મળતાં હૃદયમાં વૈરાગ્યના ઉદ્દસવ થાય છે. આ હંદીકત તેમાં તેમણે કહી છે. આ ઉપરથી કહી શકીએ કે, આ બનાવ વખતે તેઓની ઉંમર આઠ કે અહુ તા તેર વર્ષની હશે. એટલે જન્મનું વર્ષ વિ. સં. ૧૬૭૫ થી ૮૦ લગલગ ધારી શકાય.

પાટા જઈ તે દીક્ષા લે છે. તે સં. ૧૬૮૮ માં જ શ્રી. માે. દ. દેશાઈના કહેવા પ્રમાણે માતાએ પણ સાથે જ દીક્ષા લીધી લાગે છે. અને આ પ્રસંગથી પ્રેરાઈ-બીજ પુત્ર પદ્મસિંહે પણ તે વખતે દીક્ષા લીધી, જેનાથી જશવંત ઉંમરે નાના છે જે 'લઘુતા પણ શુધે આગલાજ 'એ ભાસકારના કથનથી સ્પષ્ટ થાય છે. આ જશવંત-જશવિજય થયા પછી સહાદર પદ્મસિંહ જે પદ્મવિજય અને છે-તેમના માટે લખે છે.

'यः श्रीमद्गुरुभिर्नयादिविजयैरान्वीक्षिकीं ग्राहितः, भेम्णां यस्य च सग्र पद्मविजयो जातः स्रुधीः सोद्रः । यस्य न्यायविद्यारद्द्यविख्दं काञ्यां भद्तं चुधे-स्तस्यैपा कृतिरानोतु कृतिनामानन्दयग्नं मनः ॥ '

ં આ પ્રમાણે સ્વરચિત ન્યાયખંડખાધની પ્રશસ્તિમાં ઉલ્લેખ કરે છે. આ બન્ને ભાઈ એાની વડી દીક્ષા પણુ તે જ સાલમાં શ્રીવિજયદેવસૂરિના હાથે થાય છે. (પદ્મવિજય સહાદર હાવાના બીજો ઉલ્લેખ શ્રીહરિસદ્રસૂરિની 'વિ'શિકા 'એા ઉપરની ઠીકા ઉપાધ્યાયજીએ કરી છે તેમાં કર્યો છે. (જીએાઃ સ્કુટનાટ પાન–૧૭૫)

પિતા નારણ(નારાયણ) વ્યવહારિયા; એટલે તેઓની વિશકનાતિ સિદ્ધ છે. પણ તેઓ ધર્મે જૈન હશે કે કેમ એ વિશે શંકા રહે છે. કેમકે તેઓ કાઈ ધાર્મિક પ્રસંગે દેખા દેતા નથી? આપણે ધારી શકીએ કે તેઓ આ ખન્ને ખાળકાની ખાલ્યાવસ્થા કાળે જ સ્વર્ગસ્થ થયા હશે. અને સિદ્ધ કરતું પ્રમાણ એ છે કે પદ્દમસિંહ જે પ્રસંગથી પ્રેરાઈ ફીક્ષિત થયા છે તે એમ સમજીને કે મા અને લાઈ દીક્ષા લે ત્યારે તેને એકલા રહેવાથી શું? અથવા તેને આધાર કાના ?

સં. ૧ ૬૯૯માં તેએ અમદાવાદ આવે છે. આ અગિયાર વર્ષના ગાળામાં જશવિજયના

મંજુન-પ્રાષ્ટ્રન સાઉન્ય સાથે જેનછુત્તના આગમગ્રદ્યા સાથે અનેક વિવિધવિષયી પ્રકરાષ્ટ્ર બંધાના પણુ અલ્યાસ થઈ ગયેલા લાગે છે. તે કાશીમાં જેટલા સમયમાં જે જે વિષયના અલ્યાસ કર્યા તથા આગ્રામાં તકેશાસ્ત્રની પરિષૃષ્ટિતા પ્રાપ્ત કરી તે ઉપરથી અને તે પછી તરત રૂગાયલા જેન શુતપ્રધાન સંસ્કૃત તથા શુજરાતી બંધામાં જે જે જેન શુતના પરિચય યાય છે તે ઉપરથી નિશ્ચિત છે. 'સસ્મિતિલકે, નત્ત્વાયંસ્ત્ર—આશ્યા અને તકપ્રધાન પ્રધાતું વિશ્વ રાત કાશીમાંથી તકેલાન મળત્યાના પરિષાકરૂપે છે, જે વાત એમણે દ્રાપ્યાગ્રુપયાંય રાસ્ન-સ્ત્રપાલ આલાવેલા પ્ર

અમદાવાદના આ પ્રથમ આગમન વખતે તેઓ સંઘ સમક્ષ અશર અવધાન કરે છે. આ વખતે તેઓ ગર્લ્યુ–પંડિતપદ પામ્યા હશે. આવે મેધાવી શિષ્ય તે કાશી લહ્યું આવે તે ખ્રીત્ર દેમમંદ્ર શાય. શાસનને ખપ પડે કામમાં આવે. આવી વાલ મહત્ત્વાકાંલી શેડે ધનજી સ્ટ્રાને સ્ટ્રુરી.

ગ્રેક ધનછ વિશે જણાય છે દે, અમદાવાદના એ! સવાદ સંઘર્યી સ્ટ્રા અને રતન એ બે બાઈએ! ત્રં. ૧૬૭૪ પહેલાં વિદ્યમાન હતા. તેમણે ત્રતાસિયા (સં. ૧૬૮૭) એ નામથી અત્યાર પણ જાણીતા છે, તે દુકાળમાં દાનશાળા ખાલી હતી અને રાત્રું જયના અઢાર સંઘ કાદમા હતા. એ સ્ટ્રાના પુત્રનું નામ ધનછ અને રતનના પુત્રનું નામ પનછ. આ અનેયે સમેતશિખરના સંઘ કાઢી એક લાખ એંસી હતાર ખર્ચ્યા અને સંઘવીપદવી પ્રાપ્ત કરી. વિજયપ્રભસ્તિના પશ્ચિય પાર્ફનાંધમાં આગળ આપ્યા છે તેમાં ગણાનુત્રાના મહાત્રન, એ એમણે કર્યો તેની સવિસ્તર હંદીકત આપી છે. આ શાસનપ્રભાવક લક્ષ્મીનંદને પાતાને આવેલા વિચાર શીનયવિજય આગળ રજૂ કર્યો. નયવિજયણએ કહ્યું: 'બ્રાહ્મણ પંદિતાને દ્રશ્ય આપ્યા સ્વિયાય તેમની પાસંઘી વિદ્યા મેળવવાના ખાંએ સ્ત્તા એના માટે નથી.' ધનછ સરાએ કહ્યું: 'એ જ તે કારણ હાય તા તેની એગવાઈ મારા તરફથી ઘઈ રહેશે.' એમ કહી એમણે તરત જે એ હજાર રૂપિયાની હૃદી લખી. આ રત્નપરીક્ષક, રતને પારખી, તેને એપ આપી, અનેક ઘર્યું તેનું મૂળ તેજ પ્રજાટ કરનાર કસ્મળીને હાથે સોંપવા હ્થમી ન થયા હાત તા?

કાર્ગીપ્રયાજ :

ધનછ સરા તરફથી ચહાય અને પ્રાત્યાહન મલતાં શુરુ નયવિજયે, શિષ્ય જગાવિજયને લઈ કાશી તરફ પ્રયાષ્ટ્ર આરંબ્યું, જે મં. ૧ ફ્રેન્ડ્યાં થયું હશે. આ વખને ગચ્છા-ધિકાર શીવિજયસિંહ્સ્ટ્રિં મંભાળતા હતા. તેમના આર્શીવાદ સાથે અનુમાદનાપૃષંકની અનુમતિ મળેલી અને હિતશિક્ષા પણ આપેલી. વહીલ કાકાશુરુ જિતવિજય તા જગાવિજયને શિષ્યવત્ ગણાતા. એટલે એમના વત્યક્ષ્ટ્રદ્રયમાં આ વત્ય માટે શું શું અનુગ્રહ થયા ન હાય! પાતાના ગુરુ સાથે આ બધાનું-પાતાના વિદ્યાપ્રાપ્તિના નિમિત્ત કારણરૂપ હપકાર-ઋખુના, આ કાર્ય પતાત્યા પછી રચેલા ગુજરાતી શ્રીમાં-સર્માવ અને આદર સાથે હલ્લેખ કર્યા છે. તે ઉલ્લેખ સહિત અમે અમારા <u>જ</u>ુદા લેખમાં નાંધ્યા છે.^૧:

આ વિહારમાં સાથે કે ાળુ કે ાળુ હશે, તેની કાઈ સૂચક હકીકત નોંધાયેલી મળતી નથી. પણ પદ્મવિજયને સાથે લીધા હશે, તે એમ સમજી ને કે નવા નવા દેશોના તેને અનુસવ થશે, વિદ્યાપીઠ જોશે, આથી મન થતાં તેમાંથી કાઇ વિદ્યા શીખશે. અને અન્ય કાઈ કામ પ્રસંગે પણ કામ લાગશે. 'વિનયવિજય અને જશવિજય છે જ કાશી સાણવા માટે જાય છે, અને વિનયલાલ તથા જશલાલ નામથી પાતાને બ્રાહ્મણ જાતિના ગણાવી, વિદ્યાર્થી પ્રણમાં પ્રવેશ મેળવે છે!' આવી દઢમૂળ થયેલી માન્યતા ખાટી છે; તેનું નિરસન અમે અમારા ખીજ લેખમાં અને આ લેખમાં—પણ પહેલાં કર્યું છે. આગળ પણ આ બ્રાંતિનું નિવારણ થશે.

જે કાળે દેશ, અનેક રાજકીય સત્તામાં વિભક્ત હતો, રાજએ દેશ પચાવવા, સત્તા જગાવવા, ધન લેશું કરવા, અંદર અંદર ઝઘડી રહ્યા હતા; ચાર, લૂંટારુ અને ઠેગાના ત્રાસના પાર નહાતા. આવી અંધાધુંધી વચ્ચે જૈન સાધુના તીવ આચારાતું પાલન કરતા, ઉપસગે અને પરીષહાને સહન કરતા, પાદ-પગે ચાલી, ઘણા લાંબા પંથ વટાવી સં. ૧૬૯૯ના વર્ષા—ચામાસાના અષાઢ માસ પહેલાં કાશીમાં શુરુ અને શિષ્ય આવી જવા નેઈએ.

જૈન સુનિઓના અન્યત્ર જઈ વિદ્યાધ્યયન કર્યાંના દાખલા ઇતિહાસમાં શાધીએ તો પ્રથમ આપણને (શ્રતકેવળી) ચૌદપૂર્વધર શ્રીભદ્રભાદુ પાસે નેપાળમાં પાંચસા જિજ્ઞાસુ સાધુ સાથે સ્થ્રુલિલદ્ર સુનિ ગયાના મળે છે. તેમાં માત્ર રથ્લિલદ્ર જ ધૈર્યપૂર્વક ટકી, શુરૂએ આપી તેટલી વિદ્યા લે છે. બાકીનાનું અધ્યયનમાં પ્રેપ્ટું મન ન લાગતાં કંટાળી પાછા કરે છે. તે પછી આર્ય રક્ષિત આર્ય વજ પાસેથી તેમના દશ પૂર્વજ્ઞાનને મેળવવા લય છે પણ તે ગ્રાનગિરિના ઉત્તુંગ શિખરે લગલગ પહોંચતાં જ મનની અબ્યવસ્થિત—બ્યાકુળવૃત્તિથી ઉત્સાહ એમસરી જતાં અટકી લય છે. તે પછી યાકિનીસ્તુ—શ્રીહરિલદ્રસૂરિના એ લાધ્યુંજ શિષ્યો શુરુની ના છતાં પણ બૌદ્ધ સાધુઓના વિદ્યામકમાં પાતાના જૈનત્વને ગાપવી દાર્શનિક અભ્યાસ માટે પ્રવેશી લય છે. પણ આ વાતની ગંધ આવતાં તેની ચાકસાઇના પ્રયોગા થતાં આ મુનિએડી ચેતી લય છે અને લાગવા માંડે છે; છતાં પણ તેઓ તેમના કાપાગ્નિથી ખરી શકતા નથી.

૧. આ ઉશ્લેખ ' દ્રવ્યગ્રહ્યુપર્યાય રાસ–ત્યાલવબાધ–સહિત'માંના છે. અને કેટલીક હકીકત એમના કાગળમાંથી લીધી છે. 'સાડી ત્રહ્યુસા ગાયાના સ્તવન 'ની છેલ્લી ગુરૂપર પરાવાળી ઢાળઃ ૧૭માં–

[&]quot; સીસ તસ જિતવિજયા જયા વિશુધવર, નયવિજય વિશુધ તસ ગુરુભાયા; રહિય કાશીમદે જેહથી મેં ભલે, ન્યાયદર્શન વિપુલ ભાવ પાયા. (૧૨)

[.] જેહથી શુદ્ધ લહિએ સકલ નય નિપુષ્ણ, સિદ્ધસેનાદિ કૃત શાસ્ત્રભાવા; તેઠ એ સુગુરૂ કરૂણાપ્રભાે હજ સુગુષ્યુ...

અપાયુતે અહીં આગળ એક પ્રશ્ન થાય છે કે, ધનજી સુરાતે ક્રેમ સંભાળવામાં આવ્યા નથી ! જ્યારે એમની ખીજી ગુજરાતી પદ્મ-ગદ્ય કૃતિઓમાં-એકમાં ક્રાના માટે-રચી તથા એના વિષય ક્રાના ક્રાના આગળ સંભળાઓ વગેરે લખે છે. (જીઓ-૧૫૦ ગાયાનું હુંડી સ્તવન તથા ૧૧ અંગની સજ્ઝાય વગેરે.)

સિહિપતું બીધ વિદાપીદમાંતું આવાગમન સ્ચિત અર્થતું છે!

પ્રદાણો અને નામ્ય પંડિતાની ખાસ કરી જેના તરફ એટા કરિ છે અને સ્તાકાળમાં ને કેટલી બાદનમ હતી, ને સો કાઇને વિસ્તિ છે. પહેલવહેલા સંસ્કૃતના અલ્યાસ એક સુરાપિયન વિકાને કરકતામાં કેટી રીતે કર્યો એ ક્યા જેટલી રામાંચક છે, તેટલી જ પ્રાપ્તણોના ધર્મા અને લ્યુક્તીપણાની પ્રવીક પણ છે. અરે! આપણી ચાય વખત ઉપરની જ આપણા પ્રાંતની જ વાત કરીએ: વજલાલ શાસ્ત્રી વેતન લઈ જેન સુનિએને 'સિલ્ડેમ' લણવતા, તે માટે પ્રદાશે! તેમને શું કહેતા એ તેમના શારીમાંથી જ બાણવા મળે છે. કાશીમાં અભ્યાસ અને સિલ્ડે:

એપણે ગાદનમ નામેલા લાકાળ વાતાવરનું વચ્ચે જૈન સુનિવેષ અને આચાર કાયમ કાળી અત્યામ શરૂ કર્યો. નેઓના અધ્યાપકા કાળ કાળ હતા, તેનાં નામો કે નામ કાઈ કર્યો મોંકાયેલાં જણાયાં નથી પળ 'સુજાવેલી બોય'માં-'લકાચાર્ય પારે ૭૦૦ શિપ્યા મીમાંસાદિ અત્યામ વિદ્યારને કરી કર્યા હતા' એમ જણાવેલું છે. તે પંડિત પારે જશવિજય વર્ષા પ્રકરેલું, ત્યાય, મીમાંસા (ઉત્તર), સુગન (બોહ દર્શન), જેમિનિ (પ્રૃ'મીમાંસા), વેશેષિક સિહાંત અને 'ચિંતામિલું' લખ્યા તથા માંખ્ય, પ્રસાકર લફના અને બીલ મર્તાતરા મહાદ્વર્ષ્ટ શાસોને ધારીને જિનાગમ સિહાંત સાથે મમત્રય કર્યો છે. આ પ્રમાણે અવ્યાસના મહારસ સાથે 'ભામતી' ને પણ લબી લીધી. કાશીમાં જેટલી વિદ્યા મળી શકે એટલી તેમણે ત્રણ વર્ષમાં પ્રાપ્ત કરી. આ વિદ્યા અર્પનાર-પ્રફાઈન્ડેના, તાર્કિક્ક્સમાર્તા લકાસાયો' જે સમય સુધી કર્યું તે લદલ તેમને રાજના રૃપિયો આપવામાં આવતા. આ પ્રમાણતું વર્ષન તેના કર્તાએ કર્યું છે.

બકારાયે એક મદાશંય શુમ રાખેલા, જે એમને જેવા કે લાલુવા મળે એવા તહેતી. તે શુકૃતા બદાર ગયાના લાબ લે છે. શુકૃપત્તી પાસેથી માગી લઈ સતારાત વિતયવિજયે અને જગવિજયે અંધો લાગ વહેંચી કંક્સ કરી લીધા! એ વાતના આમાં કંઈ પણ ઇશારાયે તથી. વિતયવિજય ઉપાધ્યાય સદાધ્યાથી હાય તા શુકૃતાઈ કાંતિવિજય એમનું તામ આપ્યા મિવાય રહે? આ વાત ખાંદી દેવાનું અમે અમારા પ્રયમના લેખમાં તથા આ લેખમાં મિલ કર્યું છે. આ એક બ્રાંતિ છે. તે વિતયવિજયની વિકૃતા, લાકસાવ સાદિયતા સર્જનથી શ્રંથી પ્રસિદ્ધ, 'શ્રીપાલરાસ'ના અધૃત્ર લાળને જશવિજયનું પૃણે કર્યો—એવી બાવતામાંથી જન્મી છે. વસ્તુરા તયવિજયના સ્થાને વિતયવિજયનું પ્રસિદ્ધ તામ પ્રયક્તિ થઈ ગયું લાગે છે. સં. ૧૬૯૪માં વિજયાણંદસ્તિ ઉપર વિત્રમિ પર્યો લખનાર, સં. ૧૬૯૧ જેઇ સુદ ૨ શરૂવાર દિને 'કકપસ્ત્ર' ઉપર સંસ્કૃતમાં 'સુખણાધિકા દીકા'

ધ ગુજરાતી ભાગતા ઇતિહાસ લખતાર (ગૃ. વ. સાંસાથકા તરફક્ષી) આ શાસ્ત્રી પેટલાટ તાલુકાના મલાનજ શાલના વતા. એમએ પેટાના સિંગ કેટકોક વકાકન એમાં લખ્યા છે.

ર, અતે: દેશીય અને અપણ જોલ હેમણું—વિવેષન સાથે કર્યો છે.

ર. બીઇ જિટિંગ : 'દદુદન' નામ કાચ્યકૃષે એકપુરથી સાન વિખ્યત્રમાર્ય ઉપર માક્ક્ષી **લ**ી. ં

કરનાર, 'લાકપ્રકાશ ' આંગમદાર્હનરૂપ મહાશ્રંથ સં. ૧૭૦૮ છેઠે સુદુ પે ના બુનાગઢમાં પૂર્ણ કરનાર, રાધનપુરમાં સં. ૧૭૧૦માં 'હૈમલઘુપ્રક્રિયા ' નામે વ્યાકરહાશ્રંથ સ્વાપત્ત ટીકા સહિત અનાવનાર, ' નચકહિ કા ' દીવમાં, 'શાંતસુધારસભાવના ' વગેરે સંસ્કૃત ' શ્રંથા અને શુજરાતી રચનાએ પૈકી ' નેમિનાથ ભ્રમરગીતા સ્તવન ' સં. ૧૭૦૬ તથા ' પદાવલી સંજ્ઞાય' સં. ૧૭૧૦ માં રચનાર વિનયવિજયાપાધ્યાય જશ્વિજય સાથે કાશીમાં અલ્યાસ કરવા સામેલ કચાંથી હોય ' એક જ્યારે પૂર્વમાં અલ્યાસમાં મશગૂલ છે ત્યારે બીજા તે કાળે ઉપાધ્યાય અની પશ્ચિમમાં શુજરાત, સૌરાષ્ટ્રનાં ગામામાં વિહાર કરતા કરતા શ્રંથા રચવાના કારોમાં લાગી ગયા છે.

કાશીમાં રહી યશાવિજયે જે અધ્યયન કર્યું, પદવીઓ મેળવી, વાદ કર્યાં તથા બચા લખ્યા તે હકીકત પાતાના રચિત—લેખામાં નાંધી છે. ગુજરાતી બચામાંના આ ઉદ્લેખા વિશે અમે અમારા ખીજા લેખમાં કહી ગયા છીએ અને આ લેખમાં પણ પ્રસંગાપાત્ત જરૂર જેટલું આગળ લખી ચૂક્યા છીએ. સંસ્કૃત બચામાંથી 'જેન તક' ભાષા'ના એક શ્લાક અમારા ખીજા લેખમાં ટાંકયો છે અને આ લેખમાં આગળ 'ન્યાયખંડખાદ્ય'માંથી એક શ્લાક ઉતારી છે. સિવાય જે મળે છે તેમાંથી આ ઉદ્લેખા પાત થાય છે.

भिष्मानात्मवद्याश्चिरं परिचितां काशीं च वाळानिव, हमापाळानपि विद्धिपो गतनयान् मित्राणि चाजीगणद् । मन्न्यायाध्ययनार्थमात्रफळकं वात्सल्यग्रुळास्य ये, सेन्यन्ते हि मया नयादिविजयप्राज्ञाः प्रमोदेन ते ॥ "

—(ંસામાચારીપ્રકરશું-પ્રશસ્તિ)

" माषध्यापिवतुं सदाऽऽसनसमध्यासीनकाशीमहा— सन्नाशीरितयोगदुर्नयपरत्रासो यदीयश्रमः । आसीचित्रकृदिनदुशुश्रयशसो दासीकृतक्ष्माश्रुजो, नोह्यासी श्रुवि तान् नयादिविजयप्राज्ञानुपासीन्न कः ?॥११॥ '' —(अंद्रस्तुति यतुर्विश्वतिश्च-विश्वस्थ-प्रशस्ति)

' सत्तर्ककक्ष्मियाऽखिलदर्शनेषु, मूर्घन्यतामधिगतास्तप्गच्छधुर्याः । काश्यां विजित्य परयूथिकपर्पदोऽप्र्यां, विस्तारितम्बरजैनमतम्भावाः ॥ "

—(શીમાનવિજયાપાધ્યાયકૃત—' ધર્મ સંત્રહ ')

^{ે.} ર. આ સાલમાં પાલીતાણા ઉપર કરેલી પ્રતિષ્ઠાના લેખ મળા આવેલા છે, જે વિશેના ઉલ્લેખ આગળ આ લેખમાં કર્યો છે.

ર. આ કૃતિ જીનામાં ભાદવા સુદિ ૧૧ ના દિવસે ળનાવી છે. • · · ·

ા શ્રીમાનવિજય કર્યાધ્યાપે કરેશાં મંજૂત કાંચ ધર્માં હોય તું પીરીક્ષિત પેણ ,યદોક વિજયભ પાસે કરાવ્યું એવા ક્લ્લેખ કરે છે, જે આ લેખમાં તેના અવૃત્ર ભૂપૂર્વક આંગણ જણાવી દીધું છે.

'અન્યારેલી લાસ'માં શક કરી આવેલા સંત્યાઓને વાદમાં હરાવ્યાનું 'અને તેના' કંરણે પંચાયત નિશાનપૂર્વક મહિયા વધારવા સૌથે નિજ આવાસે પહોંચાડવાનું અને ' ત્યાંચ વિશાસ ' એવી મહાપત્રી આપવાનું અને એ રીતે મહાયશસ્ત્રી થવાનું 'નત્યવિજય લખે છે. તેને કપશુંદ્રત 'ચોકાથી ટેકા મળે છે.

ું 'ભારું ઉપાય કરીને કારાચિ સ્વશિયને જણ્યાને કાળે મૂક્યાં હિલાં—ત્યાયવિશાસ એક્કુ વિકેત પાસ્થા ' ' દ્રવ્યાયુપયોય રામ ની હાળ ગાયા ૨૮૧ ના બાળાવસાય દલતો આ પ્રમાણે કવિ જગવિજયે કહ્યું છે.

આ પછી ત્યાયાગાંગી પહેલી છે હાજ વેશકપ્રમાણના સા (૧૦૦) ત્યાયગ્રેશ કરી, તે સ્થતા 'લક્ષ્યાર્થક' તેકે આપી આ પ્રમાણેના ખુલાસા, એક પીલ કાળવમાં છે 'જેનવક'— પરિસાયા 'માંના ઉવારા આપી કર્યો છે; જે અમે અમારા ઇટલ ક્ષેત્રમાં ઇવાર્થ સુકવા ઇચ્ચે પહેલીએ માટે લોકોને સંશય ઉત્પન્ન શ્રેયા હોય એમ શ્રાંજ્ઞાન વિમક્ષ્યુરિના નાંચેના ખુશસાથી જણય છે.

"શીનયવિજય પંડિતના વાચકાયાંથાય શીયગ્રેઃવિજય ન કાશીને' ન્યાયવિશાસ્ટ એક લું બિજ પાત્ર્યા નેહના વચનથી ઇમ લાલુવું." આ લું ગ્રાન્ટિપદસ્ટિએ ' આ ક ક્ષિની સન્દ્રાય' છપર દેશા દાવતાં દાખી તાવ્યું છે. તે વખતે એમની વકતી પ્રતિષ્ઠાની એમને અદેખાઈ આવતી તેઓએ શાકને બ્રમમાં નાખવા પ્રયત્ન કરેદા—આએ એ કે એન સુનિઓએ એવું વાતાવરણ સાઈ મૂક્યું છે, તો પણ પશ્ચાવિજયાલના કાઈ પણ પદ માટે—અને તેની યાંચ્યતા માટે કાઈને કાઈ લતના સંગય નથી. વિદ્યાવાસિય મહાતત્ત્વર્વિતક શીઆનંદમાંકર ક્રુવે—શ્રીજી રાજવાની સાહિત્ર પણિકમાં—' રાજાતાના માંચ્યુત સાહિત્યનું દિલ્છાન ' કાવતો નિવૃષ્ય વાંચેશા. તેમાં પ્રદેશવિજય માટે તેઓ નોધે - છે કે—' એમના કચ્ચામાં પ્રદેશ શાસાણ શાસાણ શાસામાં પ્રકાર પ્રતિ થાય છે. એમની વિદ્યાયી અદિત ધઈ કચ્ચીના પંડિતોએ એમને 'ત્યાયવિશાસ્ત્રની '' પદ્યાં આપેલી. "

એમણે ગંગાકાંદે શાસાના ભાષ કર્યા. આથી ભગવતાં શાસાએ પ્રસન્ન થઈ, તકે અને કાઅના વર આપ્યા અને ભાષા પણ કદયવટુ સમાન કરી. તે ત્રણ વર્ષ કાશીમાં સ્ટી, ચાર વર્ષ આગ્રામાં સ્થિત્તા કરી. અહીં પણ એમણે કકેશ એવા તકોનેહોત-પ્રમાણના અન્યાસ

૧ ત્યુપાયાઓના કહેલમ છે કે કેમ જે પુસ્તકમાં જેલા સિરાય કરી શક્ય નહિ મા પાડે રોઝ મહિલ પરિસ્તા સ્ટિપ્ટ હથા તિમેક્સક્રેક્ટર્નુ યુસ્તક સેટ્રેડ કર્યા કરે કરાય કરે જ સ્ટાયન

२. 'शंक्तानी सम्योगारी मार्ग्या मार्ग्या है । जन्म होते । जन्म सम्योगार कार्या है है ।

મ્યાયાત્રાર્થ પાસે કરી. આંગાના સાથે સાતસા રૂપિયા જશર્વિજય આંગળ સૂક્યા, તેના પાર્કાપુસ્તક કરાવી અંત્રાને વહેં ચી આપ્યાં મેં આ વાત શ્રીકાંતિવિજય ' સુજશવેલી ક્ષાસ 'માં
નોંધે એ તેથી જાણવા મળે છે. ચશાવિજયના પાતાના હાથના કે અન્યે નોંધેલા આવા કાંખલા એવા મળતા નથી કે એવી કાઈ લાકશ્રુતિ પણ સંભળાતી નથી. આગા અથેલા પ્રસિદ્ધ દિગંભર પંહિત ભનારસીદાસ સાથે સંખુધમાં તેઓ આવેલા હશે. કદાંચ તેઓ વચ્ચે શ્વેતાંભર—દિગંભર 'સિદ્ધાંતા અંગે તીવ ચર્ચા પણ થઈ હશે! છતાં એમના આંગા જવાના સ્થેયજનમાં ત્યાંના ન્યાયાં પાસેથી વિશેષ જ્ઞાન મેળવવાનું કારણ સુખ્ય ગણ્યું છે, એ એક વિશારણીય વિશેષદર્શી ઘટના છે જે નવી છતાં નિઃશંક સત્ય હોવાનું શ્રી. મા. દ. દેસાઇએ કબૂદયું છે. એ સાથે જણાવ્યું છે કે, ભનારસીદાસના શિષ્યા કુંવરપાલ વગેરેના

જો છોડી અમદાવાદ આવતાં વચ્ચે વચ્ચે 'દુદ'મવાદીઓ સામાં થયા હશે. તેને 'પેર''પેરે પછાડેલા, એટલે વિદ્યાદીસિથી તેપી 'ઊઠેલા. એક રીતે' આને લેખેકાની લેખનશૈલી ગંહીએ તાં 'પેલું માનવાને કારણે છે કે એમણે જે યશસ્વિતાપૂર્વક વિદ્યાની મહાન પદેવી 'મેળવી તેથી અદેખાઓ માત્સવ'થી તેમની સાથે વાદ કરવા ગયા હશે. 'આપણામાંના પહું 'એદંપેસા' શાને સંજમતું માડું દંમેં ડ રાખી જે મૂખ'પ્રલાપ કરતા હશે તેમને શાન્ત્રોના 'આપણામાં અતાવી' લોઠા 'પાંડેલા, જેના આપણામે 'સાહી ત્રણસો ગાયાના સ્તવન ' ઉપરથી પૂર્વે પૂર્વે ખ્યાર્થ 'આવી છે. એમની ઊંચી વધતી જતી 'તેને મય દીપશિખાને નાની અને 'નિસ્તેજ કરવા જલી રહેલા લાકા તરફથી જેમ જેમ પ્રયત્ના થતા રહ્યા તેમ તેમ એ 'શિખા તેજ સાથે વધતી રહી અને એથી ઉજ્જવળ ચશાપ્રભા આઠ દિશામાં વ્યાપ્ત થઈ રહી:

દિગંતમાં જેના વિજયદાષ પહેંચી ગયા છે, તેના નહે પડદા સંભળાતા હાય એમ યશાવિજયને નેવા અને સત્કારવા નાતનાના અને ભાતભાતના લોકા ઉત્સુક હાય તેમાં કાંઈ નવાઈ નથી. એ રીતે ઊમટેલી માનવમેદની વચ્ચે વિછુધાથી વીંટાયેલા તારામાં ચંદ્ર એવા તેઓ અમદાવાદ—નાગપુરીય—નાગારીસરાયમાં પધારે છે. સં. ૧૭૦૬–૧૬૦૭ વખતે વયમાં તેઓ અહુ તો ૩૦ વર્ષની આસપાસ હશે.

્રુજરાતના સુખા**તુ**ં આમ'ત્રણ—

ગુજરાતના સૂળા મહાળતખાનને આ પંડિતની સાંભળેલી અસાધારેણ કીર્તિથી જેવાની

[્]રાં ૧. વ્યનારસીને લઇ તેમના મિતા સં. ૧૬૪૩માં વનારસી પાર્શ્વનાથની જત્રાએ ગયેલા ત્યારે તે છ વર્ષના બાળક હતા. પ્રથમ તે શ્વેતાંત્રર હતા, પાછળથી દિગંબર થયેલા જાઓઃ "જૈનયુગ"માં આવેલું એમનું ચરિત્ર

[ા]ય ંત્ર. 4 સું જાઈ ગિઝેટીએર ' વેંા. તા, ભાગ ૧માં ગૂજરાતના આપેલા ઇતિહાસ પ્રમાણે ઔરંગજેએ સંને ૧૬૫૮ (સં. ૧૭૧૪)માં દિલ્હીની ગાદી લઇ ગુજરાતના સ્થા તરીકે જરાવ તસિંહની (સને. ૧૬૫૯ ચી ૧૬

હોંગ થઈ જેથી તેલું શીયગાવિજવલને રાજ્યબામાં તેલવ્યા. તેમણે સ્માના કહેવાથી ૧૮ ઋષ-ષાન કર્યો. આથી ખુગ થયેલા ખાને આડં બરથી એમના સ્થાનક તેમને પહેંચતા કર્યો હતા. આ રીતે ચેરાયીએ ગચ્છમાં એમની અકેલબતા પુરવાર થઈ ચૂકી. તરુણવય અને રાજ્યભાના નવામના પરિચય છતાં તેમને જરાયરખા ક્રોલ થયેલ નહીં. આથી આશ્રેયમાં સકળ સંધે તસ્ત જ શીવિજયદેવસૂરિ પાસે વાત મૂકી કે, 'આમની કાઈ હોડ કરી શકે એમ નથી! એ બડ્યુત ચાલા ઉપાધ્યાય પદને લાયક છે તો તે એમને આપનું ઘટે છે.'

ખાન આત્રળ અવધાન કર્યા પછી આ પ્રમાણેની વિદ્વિષ્ઠિ વિજયદેવસ્વિને જ કરી દોય તે તે માલ માં. ૧૭૦૯ થી માં. ૧૭૧૧ ની અવધ મુધીની ગણાય. શિવિજયદેવ- સ્ચિએ આ તે વર્ષ કરી ગચ્છાધિકાર મંસાન્યો હતા. તે પછી શીવિજયમલસ્વિને સોંપ્યો હતા. વિજયદેવસ્ટિ માં. ૧૬૬૧ થા ૭૧ થી માં. ૧૬૮૪ મુધી ગચ્છાધિકાર પર હતા પળ તે પછી વિજયમિંદસ્ટિને મોંપેશા. આ મમય દરમિયાન જગ્રવિજય અમદાવાદ આવ્યા પળ હતા નિંદ, એટલે આ વિનંતિના તે વખતે મંભવ નથી. આ મુંચવણસરેલા પ્રમતા કરેલ શી. મા. દ. દેસાઈ ઇતિહાસસાને માથે નાખે છે. એમણે એક વિકલ્ય— વિજયમભસ્ટિ હાતાના સ્થય્યો છે પળ કોતિવિજય કહે છે કે કાશી તરફતું કામ પતાવી તરત થશે વિજય અમદાવાદ આવે છે. (જેની સાલ આગળ જણાવી છે). વીશ સ્થાનક એાળી તપતું આગલન પહુ કરે છે, તે ખાન પાંચે અવધાન કર્યો, તેથી એમની વિકતા અને અફેશલનાને લક્ષ્માં લઈ અમદાવાદના માથે તેમને ઉપાધ્યાયપદ આપવાની શરૂ કરેલી પ્રવૃત્તિ તે આ કોન્તિવિજયની નજર આગળની વાત છે. વિકત્તાની લામ અને અફેશલન્ કર્યો પ્રાંતિવજયની નજર આગળની વાત છે. વિકત્તાની લામ અને અફેશલન્ કર્યો પ્રાંતિ તેમ અમાર કરિક કરી હતા છે કરી હતા છે. વિકત્તાની કર્યો હતા મામ કર્યો તેમ સામા કર્યો તેમ સામા કર્યો હતા સામા કર્યો હતા મામ કર્યો હતા કરિત તે આ કોન્તિવજયની નજર આગળની વાત છે. વિકત્તાની કર્યા અને અફેશલન કર્યો હતા કર્યો હતા કર્યો હતા કર્યો હતા કર્યો હતા કર્યો હતાની કર્યો અમાર કર્યો હતા કર્યો હતા કર્યો હતા કર્યો હતા કર્યો હતાના કર્યો હતા કર્યો હતાની કર્યો હતા કરિત સામ કર્યો હતા કર્યો હતા કર્યો હતા કર્યો હતાના કર્યો હતાની કર્યો હતા કરતા કર્યો હતા કર્યા હતા કર્યા હતા કર્યો હતા કર્યા હતા કર્યા હતા કર્યા હતા કર્યો હત

ર્સ. ૧૭૦૧થી ૧૮) નિયછુંક કરી કરી જો સુંધા બારાજના કરો, તે પછા ત્રેવીજમા સુષા, તરીક મહાેશ્વયમાત (સત ૧૬૬૨ સં. ૧૭૬૮ શ્રી સત ૧૬૬૮ થી સં. ૧૭૨૪) કરો.

૧. તેમજચ્બી ૧. ચી પાટે વરેલા વિલ્લાફ્રેલ્સિની લન્મ ઇડ્યાં થયા દ્રેના તેમના પિના એક્સવાલ ચિરા અને માના ક્યાઇ નારે દર્યા. સં. ૧૧૪ કામા, સં. ૧૧૪૦ અમદારાદમાં વિલ્લામાં આવ્યું, પાંચે પંત્યાલપદ, સં. ૧૧૫૧ દેશા માર્ગાદ માર્ગી આચાર્યપદ, સં. ૧૧૫૧ દેશા માર્ગી આચાર્યપદનો કિલ્લા કર્યો. શં. ૧૧૧૧ પેલા વૃદ્ધિ ૨ ક્વિયારે પાંચ્યુના પાર્ગિય સદસ્ત્રીરે પાંચ દનદ પાર્ચી—પ્રભાનાંતા નદિષ્ટેલ્લાય કર્યો. શં. ૧૧૦૧માં માર્ગ્યન પાર્ચિય સદસ્ત્રીરે પાંચ દનદ પાર્ચી—પ્રભાનાંતા નદિષ્ટેલ્લાય કર્યો. શં. ૧૧૦૧માં માર્ગ્યન પાર્ચિય સદસ્ત્રીરે પાંચ દનદ પાર્ચી—પ્રભાનાંતા નદિષ્ટેલ્લાય કર્યો. શં. ૧૧૦૧માં માર્ગ્યન પાર્ચિય સદસ્ત્રીરે પાંચ દનદ પાર્ચી—પ્રભાનો ભિન્ન આપ્યું. તેમના કર્યદ્ધામાં કર્યુદ્ધના રાજ્ય વર્ષિય સ્ત્રી પાંચ્યા માર્ચિય સ્ત્રી સાંગ્યા માર્ચિય સ્ત્રી પાર્ચિય સ્ત્રી સાંગ્યા સાંગ્યા માર્ચિય સ્ત્રી પાર્ચિય સ્ત્રી સાંગ્યા સાંગ્યા સાંગ્યા માર્ચિય સ્ત્રી માર્ચિય સ્ત્રી સાંગ્યા સ

ર શિવિગયસિલ્સેનિ અન્ય મે. ૧૬૪૮, દોક્ષા મે. ૧૬૪૮, વાયકપદ મે. ૧૬૭૩, મરિપદ મે. ૧૬૮૨, રેવાનુદાને નિક્સેન્ડિયાર નહેલામાં મેત્રી અવચલે મે. ૧૬૮૪ પેલ સુદિ ક સુધનારે કર્યો અને સ્તર્યવસ મે. ૧૭૦૯ અમદારાકના નથન્નિવાયુદાંકુશમાં થશે.

તાની પ્રતીતિ એ ગુજરાત માટે શરૂઆતની ખ્યાતિના સમય લાગે છે, પણ ખાન આગળ ૧૮ અવધાન અને ઉપાધ્યાયપદ આપવા શ્રીવિજયદેવસૃરિને કહેતું, એ આ કાળ સાથે અસંગત થાય છે, જે આગળ પુરવાર કર્યું છે. એટલે એમ માનવા હરકત નથી કે કાન્તિ-વિજયના આમાં સ્મરણદોપ થયા લાગે છે અને શ્રી. દેસાઇએ સ્વ્યવેલું 'વિજયપ્રસસ્રિનું નામ ખરું લાગે છે, જે મહાબતખાનની અમદાવાદની સ્ખાગીરી સાથેના સમયને સંગત થાય છે. કારણકે તેઓ પાતે જ કહે છે કે, 'ઉપાધ્યાયપદ' તા સં. ૧૭૧૮ માં વિજયપ્રસસ્રિએ આપ્યું હતું.

ગુરુભાઇ એા—

પદ્મવિજય માટે આગળ કહી ગયા. ખીજ વિદ્યાવિજય 'ઇસ્થિવહીની સજ્ઝાય'ના કર્તા તરીકે ' સિખ્ય શ્રીનયવિજય વાચકેના કહે, વિદ્યા અસ્થ વિચાર, (૧૫). 'એ રીતે પાતાની એાળખાણુ આપવાથી જાણી શકીએ છીએ. ખીજ હશે પણ તે જાણવાનું સાધન હાથ લાગ્યું નથી.

શિશ્ચા—

હેમવિજય-વિજયસિ હસૂરિના સમયમાં શ્રીયશોવિજય છ 'સામ્યશતક'ના ઉદ્ધાર કરી 'સમતાશતક ' હેમવિજય માટે બનાવ્યું. એટલે તે શિષ્ય તરીકે સંખ્યાકમે પહેલા' લાગે છે. આ હેમવિજયશિષ્ય શુરુ માટે અસંત ધ્યાન કઈ પથ્યોગયરી વહારી લાવતા અને તેના ઉપયોગ કરવા શુરુ સામે આજવાલે વિનવણી કરતાં હાય નેડી ઊભા રહેતા ત્યારે જવાબ મળતા કે, 'જરા થાલ, આટલી પંક્તિ સુધારી લઉં, આ જરા પૂરું કરી લઉં.' આમ ને આમ ઘણા સમય જતાં હેમવિજય શ્રુતસમાધિસ્થના હાથમાંનાં પાનાં ખેંચી લઈ, હાથ અલી ઉઠાડી, આહાર પાણી પાસે લઈ જઈ, ત્યાં બેસાડી, પાતે સામે બેસી શુક્તિ-પ્રયુક્તિથી આહાર કરાવતા. ર

તત્ત્વવિજય—જેમણે 'અમરદત્ત-મિત્રાનંદ રાસ ' સં. ૧૭૨૪ વસંતપંચમી, ગુરૂ, શ્યાણી શહેરમાં, 'ચાવીસી ' (ચતુર્વિંશતિ જિનભાસ), તથા 'ગ્રાનપંચમી સ્તુતિ ' રચ્યાં , છે, જેમના ભ્રાતા સકલગણિગણુમુખ્ય લક્ષ્મીવિજય ગણિ હતા. ^ર

[.] ૧. ખહુત ચંચ નય દેખિકે, મણ પુરુષ કૃતસાર; વિજયસિંહસૂરિ ક્રીએા સમતા શતકાહાર. (૧૦૧) ભાવત જાદૂ તત્ત્વમન, હાે સમતા રસલીન; જયું પ્રગદે તુઝ સહજ સુખ, અનુભવ ગમ્ય અહીન (૧૦૪) કવિ યશવિજય શું રીીખ એ, આપ આપદું દેત, સામ્યશતક ઉદ્ધાર કરી હેમવિજય સુનિહેત (૧૦૫)

ર, હેમવિજયે ' ઉપશમ અને શ્રમણત્વ ' એ શીર્ષ ક પાતાના પદમાં આ પ્રકારે દર્શાવી તેઓ ફ્રાના શ્રિષ્ય છે તે વ્યતાવ્યું છે—

[&]quot; શ્રીત્યવિજય વિશુધ વરસંજે, ગાજે જગ કીરતી; શ્રીજરાવિજય ઉવજ્ઞય પસાએ, દેખપ્રભુ સુખ સંતતિ."

^{3.} કાશીવાળા શ્રીવિજયધર્મ મૂરિના-સ્થાનકવાસી મુનિમાંથી આવેલા (સ્વ.) મુનિ શાઃત્નવિજયછ નામે શિષ્ણે વાચક યજ્ઞાવિજય માટે ષ્યીછ ધણી વાત મને કહેલી એમાં તથ્યાંત્ર જેવું તેા છે. પણ તેને અત્રે તેાધવા આવસ્યકતા જોઈ નથી.

गुण्विल्य केमनी शिष्यपर परानी ज्यास नीय आपेसा उताराकी थी शिवी शहे छैः
"(अ) इति श्रीसङ्ख्याचक शिगमणियहोषाच्याय श्री १०५ श्रीयशोविजयगणिविर वित्यां
श्रीसीमंगरम्यामी विज्ञानः संपूर्णा जिल्लिता च महोषाच्यश्रीयशोविजयगणिज्ञिष्यपं जिल्ला पंडित
श्री १९ श्रीणुणविजयनच्छिष्यपं जिल्ला सेस्पं हित १७ उपाच्यायशीस मिति विज्ञय गणि तच्चगणपद्धिरहेषुं भृगायमान पं मतापविज्ञयेन श्रीनीयानगरं शा. हरसचंद पठनार्थे श्री।

(आ) सं. १७९७ वर्षे अपाद विदे ३० दिने रात्री प्रथमपहरे छिखितं सक्छतार्क्षिकेच्क चूडामाणमहोपाच्यायश्री १९ यशोविजयगणि—सन्शिष्य पं. श्रीपू०केसरिवजयगणि तत्शिष्यश्री ५ चिनीतिविजयगणिशिष्यदेविजयांख्पीकृतं श्रीवोषा विदिरे श्रीनवसंद्यापार्थनाथ प्रसादाते ।

આ મળી આવતાં નામા સિવાય ખીએ એમના પરિવાર ઘણા હશે, પછુ એક કરે તેતાં દાઈએ પાતાના તરફનું ધ્યાન કાઈનું ટકાવી રાખ્યું નથી. એટલે એમનામાં વિશેષતા સંભવતી નથી. એ હાત તા પાતાને ગૌરવ લેવા યાગ્ય સકલતાર્કિક સફ્યુડામણિના અનેકાનેક થશા મળતા નથી તે ન અનત. નહિ નહિ તા આ અસામાન્ય મહાગુરુના ચરિત્રની તા આશા રાખી શકત! ખીન ઓના હાથે એ કાંઈ થાડું ઘયું છે તે આપણે આગળ જણાવી ગયા છીએ. સિવાય પુનમિયાગચ્છના ભાવરતનસૃરિના ભાવમભસૂરિએ મે. ૧૭૮૩ માથ શુકલ અપ્રમી શુરુવારે 'પ્રતિમાશતક" ઉપર ઢીકા લખી પૃષ્ટું કરી છે અને એક ગ્રાનાર્થીએ અસ્પષ્ટ રીતે જણાવ્યું છે: હિસ્તિતં દ્રશ્યજી પ્રયોય રામની પ્રતિ-

'उपाच्यायत्रीयशोविजयगणिकृतः स्वोपज्ञटवार्थ रासः संर्णेष् [:] लिखित (१) मारंमछ सं० १८०९ वर्षे मार्सवेत विद् ३ गुरुवासेर् अवरंगाबादमच्ये विषकृतोऽस्ति । '

આવા જુજ દાખલા આપજુને પ્રાપ્ત શાય છે. કાળાંતર એમની ગુજરાતી દૃતિઓ ઉપર ખાલાવગાય અને શ્રીશુલ–વીરવિજયે પાતાની શક્તિઅનુસાર તેમના 'અધ્યાત્મસાર' શ્રુંસ્કૃત શ્રુંથ ઉપર ટેગા લખ્યા છે. પણ એમના પ્રોઢ વિદ્વત્તાલયાં શ્રેગ્રાને તેમના પછી લખુવા જેટલી ખુઢિ કાઇનામાં રહી નહિ એટલે તેના તરફતું લગ્ન એાસરવા લાગ્યું.

૧. ' વેદ રક નવળુ રક સધિ ૧૦ વિધુ સંખ્યાર્ક, એ સંવત્સર સારછ,

માસ વસંત પૂર્ણ તિથિ પંચમા, ઉત્તમ મુર શુર્વારાશે— —(અપરદર્ત-પિત્રાનંદ રાસ) વેશમાસુ રહી સીંચાળી સઈરઇ...આનવિજય વિશ્વધવર રાજે...જમવિજય ઉવઝાય શિરામાજી... (તમ પદયલ પહુરર સરિખો સેવઠમાં શિરતાજછ...અમરદત્ત મિત્રાનંદ સસ તત્ત્વવિજય કવિરાજછ. 'સકક્ષપાંદિત સભાભામિનાભાકસ્થકતિક્ષકાયમાન પંદિત શ્રી ૧૬ શ્રી તત્ત્વવિજય ગણિ તત્ત્રાત્ર સકક્ષમાં જોનુ શ્રી શ્રી ક્ષક્ષમાં તે કર્યો તત્ત્વવિજય ગણિ તત્ત્રાત્ર સક્ષાત્ર ક્ષાત્ર માત્ર સ્થાત્ર ક્ષાત્ર કામાત્ર ક્ષાત્ર ક્ષાત્ર ક્ષાત્ર ક્ષાત્ર ક્ષાત્ર કામાત્ર ક્ષાત્ર ક્ષાત્ર ક્ષાત્ર ક્ષાત્ર કામાત્ર કામાત્ર ક્ષાત્ર કામાત્ર કામાત્

ર. 'જૈન ગુજૈર કવિએો લા.' ર પૃષ્ટ ટક (આ મીયાનગર એ મીયાગામ, વડેદરા જિલ્લાનું વિસ્કર્ન (પંદેરાં ખી. ખી. સી. આઇ) રેક્વેતું વડેદરા અને ભરૂચ વચ્ચેતું-જંકરાન ગ્રેશન છે. આ જ્રેશનવાર્શ મામ-કરજપ્ર ત્યંથી મીયાગામ ર–૩ માર્કલ દૂર છે.

a. જેન ગૂર્જર કવિએા ભા. ૨. પૃષ્ટ ૩૩૭.

દોશ મિક વિષયોની અતિસ્ફર્સ તક ગામિની ચર્ચાઓથી ભરેલા તથા શબ્દ, છંદ, કાન્ય સંક્રિક ગાસોના મહાદુર્ણ કાંઈ ન શક્યું. પરિણામ એના પ્રગ્રાર થયો કિલ્યાસોના મહાદુર્ણ કાંઈ હતું તે બધું સચવાઈ રહેવાને બદલે તેમાંના માટે ભાગ કચરા તરીકે ઘરમાં કે ઉપાંપ્રયમાંથી સુદ્ર ઉપયોગ કે દ્રવ્યપ્રાપ્તિ માટે વિનાશના મુખમાં પડ્યો, અને બાર્કીના કાંઈ કાંઈ સ્થળે અસ્તવ્યસ્ત થઈ ગયો! આ એક ખેદના વિષય છે પણ રાષના વર્ષય તેમાં કાંઈ કાંઈ સ્થળે અસ્તવ્યસ્ત થઈ ગયો! આ એક ખેદના વિષય છે પણ રાષના વર્ષય તેમાં સાં કાંઈ કાંઈ કાંઈ સ્થળે અસ્તવ્યસ્ત થઈ ગયો! માટે વર્ષય તેમાં ગયા કે તેને લેહારામાં આ મહાન પુરુષના અદિતીય શ્રાથની લહિયાએ પાસે નકલા કરાવવાની કે તેને લેહારામાં આવ્યં તાકાળજથી સાચવી રાખવાની વાત તા બાજી ઉપર રહી, પણ યશાવિજયે સાધુઓના દુઃશાસન સામે પાણીદાર છાતીવાળા ઘા કર્યા તે બદલ તેમની પાસે માફીપત્ર પણ લખાવ્યું!

ં કાર્યા હોયા ચરાવિજયજી ગંધેલનાયક ન હાવા છતાં પશુ–શાસનપત્રો–આજ્ઞા–મર્યાદાઓ બાંધતાં–કાઢતા. અનતા સુધી એમના હાથનું લખેલું એક શાસનપત્ર સં. ૧૭૩૮ ના વૈશાખ સુંદું હું ગુરુવારનું -પુરાતત્ત્વવેત્તા શ્રીજિનવિજયજીને મળેલું તે તેમણે ' આત્માનંદ પ્રકાશ '! માસિકનાં પુ. ૧૩, અં. ૬માં પ્રસિદ્ધ કરેલું છે:

ઉપાધ્યાયભના ઇવન અંગની દેર દેર વેરાયલી વિગતોને જ્યાં જ્યાંથી હાથ લાગી ત્યાં ત્યાંથી એકઠી કરીને ગવેલલાપૂર્વક અત્રે રજૂ કરવાના પ્રયત્ન કર્યો છે. આશા છે કે, એ એમના સમ્યગ્ભવનના બાધ કરવામાં ઉપયોગી નિવહશે.

ગૂજર શ્રીની સાલવારી જે આ લેખના મુખ્ય વિષય છે, તેની ટીપ આગળ આપી છે. સિવાય ઘણા પૂલ-ગલ શ્રેશ-લેખા રહી જવા પામ્યા હશે. સિહપુરમાં દિવાળીના દિવસે સંસ્કૃત 'જ્ઞાનસાર અષ્ટક ' પૂરું કર્યું', તેના ઉપર-'ભાળાવબાધ ' લખ્યા છે. તે પ્રસિદ્ધા થયા છે. જ્યાં પામતપરીક્ષા માલવબાધ ' તથા 'જેનતક લાધા'ના પ્રાકૃત સિખ-અડા લેખા લિખાવી માક લ્યો છઇ. તિલ્માં નયનિક્ષય પ્રમાણરી મણા ન રહી છઇ. તે તથા બીજ પૂછાયલા પ્રશ્નો ઉત્તરરૂપ કાગળા, પરચુરણ લખાણા એ બધું હજા અપ્રસિદ્ધ સ્થિતિમાં છે. હાલ તા આપણે ટીપ પ્રતો જ વિચાર કરીએ.

[्]र चोगिष्विभिक्षां सम्बंधमें भी, वहीं वात है क्योंकि उसकी टीकाको भी एक ही नकल मिल सकी। उस् एक नकलकी खोज निकालनेका श्रेय, प्रश्तेकजीके ही स्वर्गवासी दिएय युनि श्रीभक्तिवयजीको ही है। वह नकल कालके गालमें जा ही रही थी कि श्रीभाग्यवश उक्त मुनिश्रीको मिल गई। प्रसंग एसा हुआ कि अमदावादमें किसी श्रावकके वहाँ कवरेके रूपमें पुराने पन्ने पडे थे, जिनको उक्त मुनिजीने ऐसा और उनमेंसे उनको उपाध्यायजीकृत 'योगिविधिका-टीका की एक अखंड नकल मिली जो उनके स्वहस्त लिखित ही है। यदापि उपाध्यायजीने श्रीहरिभदकृत वीसों विधिकाओंक अपर टीका लिखी है जैसा कि 'योगिविधिका-टीका' के उस अन्तिम उल्लबसे साथ है—इति महोपाध्याय-श्री कल्याणिवमलगणिशिष्यमुख्यपंडितश्रीनयविजयगणिचरणकमलजबरीकि पण्डितश्रीपद्मित्वजयगणिसहोदरोपाध्यायशीजस्तिवज्ञयगणिसमधितायां विधिकाशकरणव्याख्यायां योगिविधिकाविवरण संपूर्णम् । तथापि अस्तुत एक विधिकाको टीकाके सिवाय श्रेय- उन्नीश विधिकाओंको टीकाए आज अनुपलच्या है। अस्तुत एक विधिकाको टीकाके सिवाय श्रेय- उन्नीश विधिकाओंको टीकाए आज अनुपलच्या है।

કરેલાં, ત્યાં કાળ કેવી રીતે નિર્ગંમન કરેલાં, તેના પત્તો મળે છે. કાશીના અભ્યાસ પછીની ચાર કૃતિઓ સં. ૧૭૦૯ની કાળ મર્યાંદામાં આવી શકે. તેમાં 'દ્રવ્યગુણું પર્યાયસ—સ્વાપત્ત સસ્તાબક' ગુણું કેમે પ્રથમ છે જ પણ રચનાનું સ્થાન અન્ય લાગતું નથી. એમાં કાશીના અભ્યાસના પરિપાકરૂપે મળેલી સફળતાને જણાવી છે. રચનામાં પણ બહું શુતતા, પ્રેગુર પાંહિત્ય, તત્ત્વચિતન અને તેના સ્વાનુભવનું તાજગીભર્યું સ્કુરણ દેખાય છે. એમાં એમના નવા ઉત્સાહ તરી આવે છે. પહા તા ઠીક છે પણ ગદ્ય—જે અત્યારના કાળ જેટલું ખેડાયેલું નહાતું એવા વખતે—એમણે ગૂજર ગિરાને પસંદ કરી દર્શનિક પરિભાષાને તેમાં ઉતારવાના સફળ મનારથ સિદ્ધ કરીં, એ આપણા અનુમાનને પુષ્ટ કરે છે.

'એકસા પચીસ ગાયાના સ્તવન 'ને અમે છેલ્લું યા સં. ૧૭૧૮ પહેલાંનું માનેલું પણ વિચાર કરતાં તેને બીજું માનવાનાં કારણા પણ છે. સાધુઃ માના આચારા અને વિચારા વિકૃતપણાને પામેલા અને તેનાથી જે જે સ્થિતિ ઉપસ્થિત થઈ અને દુઃખમાં પરિશ્વમી—એ દુઃખ-પરિણામને લાેકાની નજર સમક્ષ લાવવાના—અને તેના નિવારણના—અને એ રીતે સ્વચ્છ કરેલા વાતાવરણમાં પવિત્રતા વસાવવાના એ સ્તવનમાં પ્રયત્ન છે. આ એડીની અસરથી પાતાનાં દુપણાને ઢાંકવાના જે દાંભિક ખંચાવા કર્યાં તેના શ્રીયશાવિજયએ ૩૫૦ ગાયામાં સંબળ અને સવિસ્તર ઉત્તર આપી નિરશ્ક કરાવ્યા છે.

" નવિ નિંદામારગ કહેતાં, સમ પરિણામે ઘટ ઘટના ! િ કોઈ કહે નવી શી જોડી, શ્રુતમાં નહીં કોઈ માડી.

" જન મેસનની નહીં ઇહાં, ઇહાં દૂપણ એક કહાય, જે મલન પીડા થાય… છે. " ખસવયણ ગણે કુણ સુરા, જે કાઢે પૈયમાંથી પુરા^{, જ}

આવાં પાતાના ઉદ્ગારા-ઢાળમાંથી રમતાં કાઢ્યાં છે એ એમની રચનાઓ માટે-જે કાંઈ બાલાતું તેની અસરમાંથી ઉદ્દર્ભવેલા છે. એટલે આ સ્તવન પહેલાં કેટલીક એડી એડાઈ હશે. ૩૫૦ ગાંથાના સ્તવન પછી 'સમતા શતક' અને 'સમાધિ શતક 'ને મૂકી શકાય. '

આ પછી આપણને સં. ૧૭૨૧ સુધીમાં એક-સં. ૧૭૧૮ માં વિજયપ્રભસ્રિએ વાચકપદ આપવા સિવાયના-બીજા અનાવા તથા સં. ૧૭૩૯ થી સં. ૧૭૪૩ કે જે વર્ષમાં તેમનું રહ્યોઈમાં અવસાન થયું એ આર વર્ષના ગાળા કેવી રીતે નિર્ગમન કર્યો, એ નહી કરવા માટેનું સાધન બહાર આવે ત્યારે ખરૂં.

એમના આંતર જીવનનું ઊંડાલુ અમે ખીલા લેખમાં જલાવ્યું છે. એની પૃતિમાં કહેવા જેવું એ છે કે, આ લેખમાં એમની કૃતિઓને કાલક્રમમાં ગાંઠવી છે. તેના એક હેતુ એ છે કે, એમના આંતર રકસ્યના પ્રકારને જેવા લાલુવાનું આશી બની શકે. પાંડિત્ય બતાવવા તેઓ સંસ્કૃતમાં રેચના કરતા હાય એવું નથી. તેમણે લાકભાષા પ્રાકૃત, ગુજરાતીમાં લખવાની અગત્ય કેટલી છે, તે પણ એમણે પ્રમાણસર—' દ્રવ્યાં ભુપર્યાય રાસ ના ટાંગમાં સમલવ્યું છે તેમ દ્રવ્યાનું યોગ વિષય એ શું છે? એના અનુસેવનથી ફળપ્રાંતિ કઈ કંઈ શાર્ય એ વિષે તેઓ હલ્લેખે છે.

'' કવ્યાદિક ચિંતાઇ સાર, શુક્લ ધ્યાન પણિ લહિઇ પાર: તે માટે એહિ જ આ ધરા, સદ્દગુરુ વિણ મત_ભૂલા કરા. "

— દ્રવ્યાદિકની ચિંતાઈ શુકલધ્યાનના પાલુ પાર પામિઈ, જે માહિ—આત્મદ્રવ્ય-શુદ્ધ-પર્યાય લેદ ચિંતાઈ શુકલધ્યાનના પ્રથમ લેદ હાઈ, અનઇ-તેહની અલેદ ચિંતાઇ દ્રિતીય પાદ હાઈ તથા શુદ્ધ દ્રવ્ય-ગુજુપર્યાયની ભાવનાઇ 'સિદ્ધ સમાપત્તિ ' હાઈ તે તો શુકલધ્યાનનું' ફળ છઈ.

વળી, ગ્રાનહીન કિયા અને કિયાહીન ગ્રાનવાન વચ્ચે કેટલું અસમાન અંતર છે, તે 'ચાગદિષ્ટ સમુચ્યય'માંથી આ જ ગ્રંથમાં અતાવ્યું છે. એ જોયા પછી—" તેઓ શરૂમાં— આદ્યમુખ હોઈ, સમ પરિલામ રહિત, ખંડન—મંડનમાં પડી ગયા હતા." એવા ઉલ્લેખના નિર્ણય કરવા જોઈ એ. માનમદ માટે 'વહાલુ સમુદ્ર સંવાદ 'થી 'ચઢતી પડતીની સજ્ઝાય' સુધી શું શું કહી ગયા છે તે ધ્યાનમાં લેલું જોઈ એ. અને લાકાને છક કરી નાખવા માટે, એક કરીક ઉપર છ છ મહિના સુધી વ્યાખ્યાન ચલાવતા, આ જ્ઠાલા માટે 'અગિયાર અંગની સજ્ઝાય' વિષે ખાલતાં, કહી દીધું છે. એમની શૈલી સ્વાત્મક—અતિસંક્ષેપમાં છે; જે ઘલા અર્થના સમાવેશ કરે છે.

સમ્યકત્વ આશ્રયી શુલુાનુરાગિતા, એ તો એમનામાં માટામાં માટા શુલુ હતો. 'ચાંગદર્શ'ન 'ના એના દાખસા તાજે જ છે. 'ગીતા 'ના, 'ચાંગવાશિષ્ઠ 'ના શ્લોકોને પાતાના બ્રાંથમાં સમન્વયાથે' ઉતાર્યો છે. દિગંબર બ્રંથોના અનુવાદ તથા તે ઉપર દીકાઓ લખી છે. આનંદવન જેવા મહાયાગીને મળવાની એમને ઘણી તાલાવેલી છે અને મળે છે ત્યારે—

" આન'દ કે સ'ગ સુજસ હિ મિલે જળ, તળ આનંદ સમ ભધા સુજરા; પારસ સ'ગ લેહા જો ક્રસ્સત, ક'ચન હોત હી તાકે કસ. " ઃઃ આં ઉજ્તિમાં તેમની કેટલી બધી વિનમ્રતાં જેવાય છે!^ર

એ જ નમ્રતાથી ઉપા૦ વિનયવિજયના અધ્રા રહેલા રાસ પૂરા કર્યો તે સાથે એમના ગીતાથ પણાના તથા અન્ય શહ્યોના મહિમા ગાયા છે!

હા, એમણે કટુ વચના ઉચ્ચાર્યા છે, તે પરિસ્થિતિએ સર્જેલી કુટિલતા સામે. એમણે કાઇની વ્યક્તિગત નિંદા કરી નથી. એટલી સામાન્યતા એમનામાં હતી નહિ. એમની શાસ્ત્ર-સિંહ પ્રત્રાએ તેયું કે, સર્વ વર્ગના લોકોના સાચા માર્ગ શે છે તે તે અતાવવામાં નહિ આવે તેા લોકો દિગ્મૂહ ખની ગમ તે વિમાર્ગ ચઢી જશે! કેમકે એ સમયમાં જેએ! સિંહાંત શારી કરી, અર્થની દેશના દઈ, ધામધૂમની ધમાધમ ચઢાવતા હતા! અને એ રીતે

^{1.} સમાપત્તિ ધ્યાન ' પાતંજલયામ દર્શન 'માં વર્જુ વ્યું છે, જે અમે અમારા બીજ લેખમાં તેમાંનાં મૂત્રા આપી દર્શાંત્ર્યું છે. ચિતનું ધ્યેય વિષયમાં સમાનાકાર બની જાય એ સમાપત્તિ છે. એના ચાર એદ છે. જે. બધા સબીજ હાઈ સંપ્રતાત (યાય) કહેવાય છે. જેન શાસ્ત્રમાં સમાપત્તિની મતલબ એ ભાવનાઓથી છે કે જે ભાવનાઓ ચિત્તમાં એકાયતા ઉત્પન્ન કરે—જેના અનુભવ શુક્લધ્યાનવાળા આત્માએ કરે છે. માહની ઉપશમ–દશા અર્થાત્ ઉપશમશ્રીખુમાં સંપ્રતાત સમાધિની તરહ સબીજ અને માહની સીખ્ય અવસ્થામાં અર્થાત્ ક્ષપક્રીખુમાં અપ્રતાત સમાધિની તરહ નિર્બીજ ઘટાવી લેવી.

વિષય રહ્યો રાચી માહેના મદમાં મસ્ત થયા હતા, તેમતું તે કાર્ય ખુલ્લું કરવા અને તેમાં ક્ષાક કુચાય નહિ એવી કરુણાથી પ્રેસઈને લબ્યું છે.

" કુગુરુતા વાંસના પાસમી, હૃષ્ટિષ્ઠ સમ લાક સપગઇ. ^છ

અંત્રારુપણ કેમવળનારના લઢાર અર્થે અકાર્યું કાર્ય કરતું પડ્યું છે. એ એમના અનાગર શારી પ્રજાવિત મુખ્યપ્રકાપ હતા.

" ક્લલ્ફારી ક્લપ્રલ્ ભરેલા પાતાના ખાલને ચાપવા જિનવચનને ભાજને ઢાલે અન્યધા દાખવે; અને વળી કાઇ નિજ રાયને હાંકવા-કાઇ મતને~કદને રાપવા ધર્મની દેશના પાલેટે− મહ્યુદ્ધિ સત્ય ભાખઃત્રદ્ધિ∵"

આવી દિવસ સિતિ જોઈ, કરોા ત્રાનયોગી અને કમચાળી શાંત એસી શકે ?

ખગેરેલા સંતાવરલને સુધારતા—એ ગગારા કરતારા માજુસાની જચ્ચે જ એમાં નિરુપણ કામ કર્યું છે. તેઓમાં પાછી સમજ હતી કે, આવા લાકોને લક્કો મારી કાઢવામાં કે તરહારવામાં કે લુણા લાવી ફૂર ખૂર્યા જવામાં કર્યું સાર્થક નથી. બર્ફ કાર્ય ત્યારે જ શકે કે દ્વું કાઢોની વચ્ચે સ્ટીને જ તેમની દ્વુંટતાને ફૂર કરતી. તેથી જ તેઓ શ્રીસત્ય-વિજય પશ્ચામના પીત્વઋંધારી—સંવેશ—પશ્દળમાં લખ્યા નથી. પર્જ્ય

" अन्य ने स्नितिवंश है के वाल अप्रणावे,

🚟 🛴 બવસાયર લીલાએ ઉત્તર સુવખકિસ્થિ નાવે. જ

ં ા કિંગાનું પ્રતિ તાલુંતા તિન વ્યાગમ ભણના સદગુદ પાસે, દૂષખ કાળે પણ ગુણવૃત્તા વસ્તે શુભ અબ્યાસ, "તેસ સાભાગ સુક્લ મુખ એક દેમ કરિ જોય કહિયું,! "

આ હળજાઢ રીતે સુનિજનાના રાષ્ટ્રા એમના રાષ્ટ્રાનુરાળી આત્માએ ગાયા છે અને એ રીને એમના કુટ્ડપે ઇચ્છતા-એમની સાથાયાય સાલ્યા છે. અને—

" તહેવા ગુજુ કરવા વ્યજાધીરા જો પણ સુધુ ભાષી; જિન્ધાસન સોભાવે તે પણ સુધા સર્વેગ પાર્ધી છ

ર. આ વખતે તેઓ વૃદ્ધ થશા આવેલા એટલે પરસ્પર ત્યારિવિત્રણ થયા છે. સન્યવિત્રભ પંત્યાસનું અનુસન સં. ૧૭૫૬ પ્રદા શૃદ ૧૦ પાઠભૂમાં થયું. 'લીક્સંશવળાં માં નવા લખ્યું છે કે સં. ૧૭૮૬ માં પં. નવિત્રપ્રથી સવિત્ર મંત્ર પંચા. (તપરસ્થ પદ્ધવર્શ-વિમળ શાખા)-'હેન રાત્ર' કરિલ્ટો ' બામ ' ર. પ્રકા છે કર્યા કર્યા છે છે. તે માન કર્યા કર્યા કરિલ્ટો કર્યા કર્યા કરિલ્ટો કર્યા કર્યા કરિલ્ટો કરિ

^{.....} નિધિ-યુત્ર-સૃષ્તિ-સર્શિત્સવન મોને, (૧૭૯ ફારણ મુદિ પંચમી દિવસછો; પત્તનનથરનંહું તમ પામે પ્રક્ર પામ્યા સુધ દેશે છે. - શ્રીક્રિક્ષ્યપ્રસારિતે પાર્ટ પણ સંવગ સુરાયાછ, ભ્રાનિવિષ્ણતિ સંપ્રતિ દિવે. " (- દર : માં પાર્ટ શ્રીદિત્રયુર્ગનમુરિ સ્ટ્રેંટ . ખેતી પણ દરમાં પાર્ટ, એમ ક્ષ્યત્ર્યાખ્યાનની પહુનદીમાં દ્રાપ્યું છે.

તેમના તરફ પણ પાતાના પ્રમાદભાવ વ્યક્ત કરી, ઉદાર દેષ્ટિ રાખી, તેમને દુધ્કર-કાર થકી પણ અધિકા કહી સન્માનિત કર્યા છે.

યસંગાયાત્ત છે વાત મેં મારા તરફથી કરી, હવે એક વાત તમા કહા-આ કવિ तार्डिकशिरामि प्रभर विद्वान अने धुरंधर प्रभावक हिमयंद्रायार्थ पछी सव शास्त्र-पारंगत सुस्मदश अने थुद्धिनिधान ज्ञानपुर अतापी मुढापुरुष थ्या से निःशंड वात છે. શ્રીમદ્ હરિસદસૂરિ જેવા વિદ્વાન જૈનશાસનમાં એક જ છે. એમની પછી એક હેજાર वर पछी आ यशाविकय कीनशासनना सहसां हैये अया, र कार्मने तपगर्यनों आयारीकी-આચા<mark>ય પદ્</mark>વી કેમ ના આપી ?

રતનને રતનપરીક્ષક જુએ તાે÷તેની મજરમાં તેનું મૂલ્ય કેરયા સિવાય વહેતું નથી; અંતે ુએ-ુરીતે, એમતું ,મૂક્ય_ા ' ત્યાયાચાય' ' તરીકે. થયું, છે. ,આથી અન-યસ્ટ્રાક એવું તેમતું શીષ'ક .એમના નાસ સાથે જેડ્યું છે 24524 2 236

> ं विपमधीत्य पदानि शनैः शनै-देशत मन्त्रपदावधि मान्त्रिकः। भवति देशनिवृत्तिरिप स्फुटा, गुणकरी प्रथम मनसंस्तर्था ॥१११॥ . માંત્રિક મંત્રપદા સુત્રી જ મંત્રપદાને ઓલતા ધીમે -ુ ધીમે- એરને દૂર કરે છે, તેમ ખતતે સર્વ પ્રથમ ચુચુકારી

हेशविरति प्रभू धीमे धीमे विशेष स्कृट थती ज्या छ.

ang panggan 🦠 ang panggan

ં અધ્યાત્મસાર સડીક]ઃ [શ્રીમદ્ યશાવિજયછ

[ં] ૧. ગરણકરણુ ગુણહીણુડાં જ્ઞાનપ્રધાન આદરિઇ રે, ઇમ કિરિયા ગુણ અભ્યાસી ઇચ્છાયાગથી તરિઇ રે. ઃઃઃઃ ઃ ે ં(૨૬૩) દ્ર. ગુ. પી. રા. ખાલાદિક અતુકુલ ક્રિયાથી ત્યાપે ઇચ્છાયાગી; માર્ક કાર્યા છે. કર્યા છે. કર્યા છે. કર્યા છે. કર્યા છે. કર્યા છે. ક અધ્યાત્મ મુખ યાત્ર અભ્યાસે, ક્રેમ નહિ કહીએ યાગી. (૩૫૦ ગામ્યતં.) આ બધું એમણે પૂર્વસરિઓના આધારે કહ્યું છે. (લુએ યોગ દૂ.સ.) શુદ્ધ સ વેગ્રી કિરિયા ધારી પણ કુટિલાઈ ન મુંકે. (કુ. ગુ. સ.) શુદ્ધપ્રરૂપક સાધુ નમીજે (સુ. ગુ.નસ.) ં ૨, રવ, મા. દાદેસાઈ (જે. ગુ. કે. ભા. ર, રહજ યશાવિજય) ...

અડારમી સદીના મહાન જ્યાતિર્ધર મહાપાધ્યાય શ્રીયશાવિજયજ

[ટુંક પરિચય]

[સેખક : પરમપૂત્ર્ય આચાર્ય શ્રી વિજયપદ્મસસ્ટિઝ મહારાજ]

શ્રી. યશાવિજયછ મહારાજના છવનચરિત્ર અંગેની આધારમૂત માહિતી બહુ એક્કા પ્રમાણમાં મળે છે. તે મે 'શ્રી. યશાહાત્રિશિકા ' શીષ'ક પ્રાકૃત સાષામાં સ્પેલા કાલ્યના પ્રાકૃત સાષાને નહિ લાલુનાર એવા સામાન્ય વાચકવર્ગને તેમ જ બીજા વિદ્વાનોને પણ જિપયાગી ઘઈ પડે એ હેતુથી મૂળ એ અત્રીશીને લક્ષમાં રાખી બીજા ચંચાના હપયોગ કરીને અહીં એ દરેક શ્લાકનું વિશદ વિવેચન આપવામાં આવ્યું છે. વિવેચનમાં મૂળ અત્રીશીના તે તે વિલેક દર્શાવવા માટે દરેક સ્થળે શરૂઆતમાં કો સમાં તે તે અંક આપ્યા છે.

- (૧) ગુજરાત દેશમાં આવેલા ખંભાત અંદર નામના પ્રસિદ્ધ નગરમાં રહેલા શ્રી. સ્તાંભનપાર્શનાય પ્રસુને પ્રસુમ કરીને તેમ જ જેઓ મારા આત્માના પરમ ઉદ્ધારક છે તે મારા પરમપ્ત્રય પંરમાપકારી શુરુવર્ષ આચાર્ય મહારાજ શ્રીમદ્ વિજયનેમિસ્રિસ્ટલ્ડ મહારાજના પરમ પંત્રિત્ર ચરસુકમળને નમસ્કાર કરીને ત્યાયવિશારદ ત્યાયાચાર્ય શ્રીમદ્ યશાવિજયલ્ટ ઉપાધ્યાયલ્ટ મહારાજ—જેઓ લગલગ ત્રણે વર્ષ ઉપર આ પૃથ્વીતલને પાવન કરતા વિચરતા હતા, જેઓ સ્વસિદ્ધાંત પરસિદ્ધાંતના જ્ઞાતા હતા, જેઓ ત્યાયકાસ્ત્રના જ્ઞાનમાં જગતના પ્રખર પહિતાને પણ આશ્રયં પમાઢે એવા જ્ઞાનવાળા હતા, જેઓ ચારિત્રની આરાધનામાં અલંત કુશળ હતા, જેઓ પ્રાચીન અને નબ્ય ત્યાયના તેમ જ ધર્મસિદ્ધાંતના શ્રી અનાવવામાં અતિતિક્ષ્યુ મુદ્ધિવાળા હતા—તેમતું, તેમની શિષ્યપરંપરામાં થયેલા શ્રી. કોતિવિજય મહારાજકૃત ' મુજસવેલી લાસ ' વગેરે ઘરીના આધારે હું ચરિત્ર રહ્યું હું.
- (२-३) પરમપૂત્ય શ્રીહસ્તિક્સ્ટ્રિરેઝ અને કલિકાલસર્વન હેમચંદ્રસ્ટ્રીશ્વરઝ વગેરે શ્રીજૈનશાસનના સ્ત્રંભ સરખા અને નાનવાળા અનેક પૂર્વાચાર્યો થયા તે પછી ત્યાયશાસ્ત્ર વગેરમાં નિયુન્ન અને પ્રતિસાશાળી શ્રીમદ્ યશાવિજયજી વાચક થયા, તેમને હું મન, વચન, કાયા વડે નમસ્કાર કર્યું હું.
- (ડ) ઉપાધ્યાય મહારાજે સંસ્કૃત સાષામાં 'ત્યાયખંડભાદ, જ્ઞાનભિંદુ, અધ્યાત્મસાર ' વગેરે અનેક લંશે બનાત્ર્યા, પ્રાકૃત શાળામાં 'શ્રીગુરુતત્ત્વવિનિશ્ચય, ઉપદેશરહસ્ય ' વગેરે અનેક લંશે બનાત્ર્યા, સુજરાતી સાળામાં 'સાહીત્રણસ્ત્રે, સવાસા, દેહસ્ત્રે ગાંધાનાં સ્તવના '

ને 'દ્રવ્યગુણુપર્યાંથના રાસ ' તથા શ્રીજિનસ્તવનની અનેક 'ચાવીસી ' વગેરે ઘણા શ્રંથા ખનાવ્યા તથા હિંદી ભાષામાં પણ પ્રભુભક્તિનાં 'પદા ' વગેરે રૂપ અનેક ગ્રંથા ખનાવ્યા છે. એ ગ્રંથા ઉત્તમ ભાવાર્થવાળા અને ગંભીર અર્થવાળા છે. એવા મહાન શ્રંથાના સ્થનાર શ્રીયશાવિજયજી વાચકને હું વંદના કરું છું.

- (૫) શ્રુતજ્ઞાનને ધારછ કરનાર એવા, ઉપાધ્યાય-વાચકર્યી ગગનમંડલને દિપાવવામાં સર્થ સરખા, અને જગતમાં વર્તતા કુમતાના ધર્મને માનનારા અને રાગી દેષી એવા દેવ- ગુંડુને માનનારાના દુર્મતના સ્યાદાદ શૈલીથી નાશ કરનારા, ધૈયંગુળવાળા અને ' આચારાંગ ' વંગેરે સ્વદર્શનના (જૈન દર્શનના) સિદ્ધાંતાને તેમજ શ્રુતિએ આદિ પરદર્શનના સિદ્ધાંતાને નાણનારા એવા શ્રીયશાવિજયજી વાચકવરને હું સર્વદા વંદના કરું છું.
- (૧) ધર્મી જનાના સમુદાયથી પ્રશંસાપાત્ર થયેલા ગુજરાત દેશમાંના વહાદરા પ્રાંતમાં કેલાલ ગામ અને પાટેલુની વચમાં આવેલા કનાડા નામના ગામમાં જેમના જન્મ થયા હતા તે શ્રીયશાવિજય ઉપાધ્યાયને વંદના કરું છું. (અહીં શ્રીઉપાધ્યાયછ મહારાજની જન્મભૂમિ તરીકે–કેનાડા ગામ જણાવ્યું તે 'સુજસવેલી ભાસ ' વગેરે શ્રંથના આધારે કહ્યું છે.)
- (હ) તેમના પિતાનું નામ નારાયછુદાસ અને માતાનું નામ સાભાગ્યદેવી હતું. આ માતાપિતાના એ માટા પુત્ર હતા. તેમના નાના ભાઇનું નામ પદ્મસિંહ અને તેમનું પાતાનું નામ જશ્વનંત હતું.
- (૮) તે સમયમાં પવિત્ર ચારિત્રવાળાં પરમપૂજ્ય પંડિત શ્રીનયવિજયજી મહારાજ એ જિલ્લામાં વિહરતા હતા. તેઓ વિ. સં. ૧૬૮૭માં પાટણની નજીકમાં આવેલા કુણઘર નામના ગામમાં ચામાસુ રહ્યા હતા. ત્યાં ચામાસુ પૂર્ણ કરીને ગામગામ વિહાર કરતા અને લગ્ય જીવાને ધર્મ દેશના દેવામાં નિરંતર ઉદ્યમવાળા તે શ્રીનયવિજયજી મહારાજ વિ. સં. ૧૬૮૮માં કનાહા ગામ પધાર્યાં.
- (૯) પાતાના ગામમાં ગુરુમહારાજ પધારેલા જાણી સાભાગ્યદેવી નિત્ય પાતાના જશવંત ને પદમસી નામના અન્ને પુત્રા સહિત વ્યાખ્યાન સાંભળવા જતી હતી. ત્યાં શ્રીનયવિજયજી ગુરુમહારાજની સંસારની અસારતા દર્શાવનારી વાણી સાંભળીને ત્રણેને વેરાગ્યભાવના જાગવાથી માતા અને અન્ને પુત્રા—એમ ત્રણે જણાએ નયવિજયજી મહારાજના વરદ હસ્તે અણુહિલપુર—પાટણમાં વિ. સં. ૧૬૮૮માં દીક્ષા અંગીકાર કરી. ર

[.]૧. કન્દ્રેાકુ, કન્દ્રાકુ-આવી નામ પણ અન્યત્ર જ્યાવ્ય છે.

ર. પદ્મસિંહ શ્રીયશાવિજયજી મહારાજના સહાદર ભાઈ હતા. તાના ભાઈ ઉપર માટાભાઈ પૂશ્ લામણી ધરાવતા હતા. એમ 'શ્રીગુરુતત્ત્વિતિશ્રય' આદિના અંતિમ ભાગ વગેરે જોતાં નિર્ણય થાય છે— 'લુઓ—प्रेम्णां यस्य च सद्य पद्मित्रयो जातः सुधीः सोदरः ॥ तथा—पंडितपद्मित्रयणिसहोदरेण पंडित-यशोविजयेन આ દાસા સમયે ખંતેની દ્સ કે ખાર વર્ષથી માડી ઉમર નહિ હોય, એમ ઐતિદાસિક શ્રંથાના અવલાકનથી જણાય છે.

- દ (૧૦) ગુરુમહારાજે માતુષ્રી માલાગાદેવીના જરાવ ત નામે માટા મુત્રતું મુનિ જશ-વિજય નામ સ્થાપ્યું, અને નાના પુત્ર પદમસીનું મુનિ પદ્મવિજય નામ સ્થાપ્યું. એમાં મુનિ જશ્વિજયજી એ જ ભલ્લા કે જેમનું આ સ્તાત્રરૂપે છવનચરિત્ર દર્શાવાય છે. (કીક્ષા આપ્યા પછી માતાનું શું નામ સ્થાપ્યું તે સંખંધી હકીકત જ્લાવી નથી.) તે જ સાલમાં (૧૧૮૮ માં) આચાર્ય શ્રીવિજયદેવસ્રિશ્ઇ મહારાજે અનેને વહી દીક્ષા આપી.
- ્રિક્ષે શ્રીગુરૂમહારાજની કૃપાથી મુનિ શ્રીજગ્રવિજયજીએ (એટલે શ્રીયશોવિજયજી કૃપાદ્યાય મહારાજે) પોતાની અગાધ ખુહિના અગધી સ્વ અને પર એમ બન્ને સિદ્ધાન્તોના એટલે કે આચારાંગ આદિ સ્વસિદ્ધાન્તના અને શ્રુતિએ આદિ પરદર્શનાના સિદ્ધાંતના પણ અમુક અંગે વિશાળ ગ્રાનવાળા થયા. આ રીતે દીશા લીધા બાદ અલ્પ સમયમાં અનેક શાસ્ત્રોના કમસર અલ્યાસદ્વારા તત્ત્વપરિચય મેળવવા સતત પ્રયત્નશીલ બન્યા હતા.
- (૧૨) અનુકને વિ. સં. ૧૬૯૯માં શ્રીજશવિજયછ આદિ શિષ્ય સહિત શુરુ મહારાજ શ્રીનયવિજયછ ગ્રામાનુગ્રામ વિહાર કરતા અને માર્ગમાં અનેક છવાને પ્રતિષ્ટાધ પંમારતા રાજનગરમાં એટલે જૈનપુરી અમદાવાદ નગરીમાં પધાર્યો.
- (૧૩) અહીં (અમદાવાદ)માં વિ. સં. ૧૬૯૯માં અનેક સભાજનાની સમક્ષ શ્રીજશ-વિજયજી સુનિધર આઠ અવધાન કર્યાં, કે જેમાં તેમણે આદ સભાજનામાંના દરેકની આદ આઠ વસ્તુઓ—કાઇનું પ્રભિત, કાઇનું કાવ્ય, એમ ૬૪ વસ્તુઓને ભરાભર યાદ રાષ્ટ્રીને અનુકૃષે તે વસ્તુઓના જવાબ કહી દેખાઠયા. આ રીતે પાતાની સ્મરભુશક્તિના પસ્થિય કરાવ્યા. શ્રીજશવિજયજીનું ખુદ્દિભળ તેઈને અમદાવાદનિવાસી શ્રાવક શનજ સરા "બહુ જ રાજી થયા."
- (૧૪) આ પરથી શ્રીધનજ શેંકે શ્રીનયવિજયજી મહારાજને વિન્નિસ કરી કે, 'હે ગુરૂવય'! આપશ્રીના શિષ્ય શ્રીજશવિજયજી મહારાજ ઘણા સુલશ્રુષ્ટ છે, ઘણા વેરાવ્યવાળા છે અને ઘણી ખુદ્ધિવાળા છે. માટે આવા ખુદ્ધિમાન શિષ્યને છયે દર્શનના સાટા સાટા ધન્યો ભણાવવા યાંચ્ય છે. કારણ કે આપના આ શિષ્ય છયે દર્શનનાં શાસ્ત્રોમાં નિપુણ શર્ફીને શ્રીજૈનશાસનની પ્રભાવના કરી શકે એવા છે.'
- ાં (૧૫) ધનજી શેઠ ત્યારે શ્રીયશાવિજયજીને લાદ્યાવવા માટે નયવિજયજીને આચલું ભરી વિનંતિ હતી ત્યારે શુકુમહારાજે પોતાના અભિપ્રાય દર્શાવ્યા કે, 'હે ધનજ શેઠ! શ્રીજયવિજયજી ખરેખર સુલશ્રુણ અને વણા જ જુિલ્શાળી શિષ્ય છે. જે છયે દર્શનના શાસ્ત્રોમાં નિપૃષ્ણ ઘાય તા અવશ્ય એ શાસનાયલાવા કરી જેનશાસનને દિપાયે તેવા છે. મારા શિષ્યની બુલિની પરીશા તમાએ કરી તે યચાર્થ કરી છે. પરન્તુ શિષ્યને લાદ્યાવવાની બાબતમાં મારી સુલ્કેલી એ છે કે છયે દર્શનના શાસ્ત્રોનું અતિવિશાળ ગ્રાન પાપ્ત કરવાનું સુખ્ય સ્થાન તા કાશી—વાણસ્ત્રી નગરી છે, કારણ કે ત્યાં જ સુરૂમ બુલિવાળા મહાન ત્યાય- શાસ્ત્રીએ, સાહિત્યલાસ્ત્રીએ, વેદા-તશાર્સાઓ ને દર્શનશાસ્ત્રીએ, વસે છે અને શુજરાત

વગેરે દેશામાં વિશાળ ત્રાંન પ્રાપ્ત કરવાનું કાઈ એવું પ્રસિદ્ધ સ્થાન નથી. વળી, તે કાશીના શાસ્ત્રીએ ત્યાં શિષ્યાદિકને હવે દર્શનના જે મહાન્ શસ્થા ભણાવે છે તે ધન વિના ભણાવી શકાય નહીં. તેમજ અહીંથી કાશી સુધી જવું તે પણ માટી સુસીબત છે. મ ટે એ બાબત બહું વિગ્રાસ્થ્રીય છે.'

- (૧૬) આ પ્રમાણે શિષ્યને કાશી લઈ જઈને લાલાવવા સંખંધમાં ગુરૂમહારાજે અધ્યાયકના પગારની મુસીબત બતાવી ત્યારે તે સાંલાળીને ધાનજી શેઠે કહ્યું કે, 'કે ગુરૂરાજ! આપે જે પગારની મુસીબત કહી તે સાચી છે પરંતુ આવા મહાન છુહિશાળી અને શાસનપ્રભાવી શિષ્યને માટે અભ્યાસની સગવડ કરાવી દ્વી એ અમારું કર્તાવ્ય છે. માટે આ આખતમાં હું રૂપાનાણાના ૨૦૦૦ (બે હજાર) દીનાર (મહાર) ખર્ચ કરવા તૈયાર છું માટે આપ કાંઈ પણ સંકાચ રાખ્યા વગર શિષ્યને લઈ કાશી પધારા મેં આ પ્રમાણે ધનજી શેઠનાં વચન સાંભળી પાતાના શિષ્યને ભણાવવા માટે સારા મુહૂતે કાશી તરફ વિહાર કરી, અનુક્રમે આવતાં અનેક ગામામાં લવ્ય જવાને પ્રતિષ્ઠા કરતા કરતા અને શિષ્યને ભણાવવાની ઉત્તમ સગવડથી સંતાષ પામતા શ્રીયશાવિજયજી વગેરે શિષ્ય સહિત શ્રીનયવિજયજી શુરૂમહારાજ કાશીનગરમાં પધારાં.
- (૧૭) કાશીનગરમાં આવીને ભણાવનાર ઉપાધ્ધાયની સગવડ યથાવસ્થિત કરીને ઉત્તર્મ પુશ્ચિવાળા શ્રીયશાવિજયજી મહારાજે પ્રાહ્મણ વિદ્યાશરૂઓની પાસે છયે દશ્ધના તાતપર્યં-વાળા–સ્ક્રસ્થવાળા બન્થાનું અધ્યયન શરૂ કર્યું.
- (૧૯) તે હયે દર્શનના અન્થામાં ન્યાયશાસ્ત્રોમાં પ્રાચીન અને નવીન ન્યાય એમ છે પ્રકારનાં ન્યાયશાસ્ત્રો છે તે બન્નેના અન્યા ત્રહ્યુ વર્ષમાં યથાય નહી લીધા. અને એમાં નવીન ન્યાયના 'તત્ત્વચિતામણિ' નામના અન્ય જે બહુ કહિન છે તે પછુ અલ્પ કાળમાં અન્દિના પ્રભાવથી લહ્યા લીધા.
- (૧૯) એ પ્રમાણે છયે દર્શનાનાં શાસ્ત્રોમાં નિપુષ્ટુ થઇને અને તેમાં પણુ ન્યાય-શાસ્ત્રમાં વિશેષ નિપુષ્ટુ થઇને શ્રીયશાવિજયજી મહારાજ—કાશીનગરમાં કાઇક વાર ચર્ચા માટે મળતી વિદ્વાનાની સભામાં જઈને ચર્ચાવાદ સાંભળતા હતા. એક વાર તે વિદ્વાનાની સભામાં એક મહાન તાર્કિક—નૈયાયિક સંન્યાસી આવ્યા. તેણે પોતાના ચર્ચાવાદમાં સવધ વિદ્વાનાને દિગ્મૂહ જેવા બનાવી દીધા. તે વખતે સભામાં તે સંન્યાસી સામેના ચર્ચાવાદમાં શ્રીયશાવિજયજી મહારાજ પાતે ઊભા રદ્યા અને તેની સાથે ઘણી વિલક્ષણ અને વિવિધ યુક્તિએશથી વાદવિવાદ કરી એ સંન્યાસીને શીધ્ર નિરુત્તર કરી હરાવ્યા. આ વખતે કાંશીની આવી મહાન પંઢિતાની સભામાં સંન્યાસી સામે જત મેળવવાથી શ્રીયશાવિજયજીએ ઘણી જ ચિરસ્થાયની પ્રતિવાદ મેળવી, અને તેઓશ્રી મહાન વિદ્વાન તરીકે પ્રસિદ્ધ થયાં.
- (૨૦) એ પ્રમાણ કાશીની સભામાં મહાન તક વાદી સંત્યાસીની સામે જત મેળવવાથી અને પાતાની સભાનું ગૌરવ સાચવવાથી ખદ્દ હવે પામેલા ત્યાંના વિદ્રાનાએ શ્રીયશા-વિજયજી મહારાજને 'ન્યાયવિશાસ્દ'ની પદવી આપી. ત્યાર ખાદ શુરૂમહારાજ શ્રીનય્રવિજયજી

મહારાજે વિગાર કર્યો કે ગ્રિપ્યને શાણાવવા સંબંધી જે કાર્ય માટે અહીં આવ્યા હતા તે કાર્ય હવે સમાપ્ત થયું છે, અને બ્રિપ્ય હવે પ્રખર વિદ્વાન થયેલ છે, માટે અહીંથી વિહાર કરવા આવલ્યક છે. કારણ કે મુનિના માર્ગ પ્રમાણે કાર્ય એક નગરમાં એક ચામાસાથી અધિક ચામાસું કરવું યુક્ત નથી પરન્તુ શિપ્યને બણાવવાના મુખ્ય લાબને વિગારી અહીં આડલી મુક્ત રહેવાની જરૂર હતી તે હવે પરિષ્ણું ધવાથી વિહાર કરવા ઉચિત છે. એમ વિચારી કાશીથી વિહાર કરાને તાર્કિકશેખર શ્રીયશાવિજયજી મહારાજ વગેરે શિપ્ય સહિત શ્રીનયવિજયજી મહારાજ પ્રયાણ કરતા આપ્રા નગરમાં આવ્યા.

(૨૧) વળુ વર્ષ કાશીમાં રહી ઘળા બંધાના અલ્યાસ કરીને જે બીજા કેટલાક ત્યાયબંધાના અલ્યાસ ભાદી હતા તે અહીં આબામાં આર વર્ષ સુધી રહીને નેયાયિક પંતિત પાસે પૃત્તા કર્યો.

(२२) ઓ વખતે આઆ વગેર તગરામાં ભનારસીદાસ નામના પંદિતના મત કે જે ઘણું લાગે દિશંભર મતને અનુસરતા હતા અને એકાંત નિશ્ચય માર્ગને પાપતા હતા તે ઘણા પ્રચલિત થયા હતા. અનુક્ષ્મે ભનારસીદાસના શિષ્ય કુંવરછ નામે થયા. તે પશુ પાતાના શુકુના મતના પ્રચાર કરતા હતા. આ વખતે શ્રીક્ષ્માધ્યાય મહારાજે આ મત જેનશ્રીલીને અનુસરતા નથી એમ શુક્તિપૂર્વક સમજાવીને તે મતના શ્રાવકા વગેરને જેનલમંમાં સ્થિર કર્યા હતા. આ રીતે ભનારસીદાસના દુર્મત દૂર કરીને શ્રીયશાવિજયછ

^{ા.} પાતાના ગુરૂમદાગાએ તકેવિવાના અનુભવ પ્રાપ્ય કરાવ્યા, પાતે કાશીમાં વિજય ત્રેળવ્યા, અને પંદિતાએ 'ન્યાયવિશાસ,' પરવી આપી એ બીના શીધશીવિજયજી મદાગાએ સ્વકૃત, 'ન્યાયખંડનખાદ ' (શ્રીમદાવીર સ્ત્વૃત)ના ૧૦૦ માં 'શ્રીક વગેરમાં જણાવી છે—તે આ પ્રમારે,–

[्]र "अपी जैनः कार्राविष्ठ्यत्रित्रप्राप्तिकिदो । सुदा यच्छ्यच्छः समयन्यमीमीकित्त्याम् ॥ यः श्रीमद्भारिमर्नशिदिविषयेगन्त्रीरिक्षी प्राहितः । प्रेम्मा यस्य च सम् प्रापित्रयो जातः सुधीः सीदरः ॥ यस्य स्मायिविधारदस्त्रविष्ठं कार्या प्रश्ति दुवैस्त्रहेया छतिरातनातु कृतिनामानन्दममं सनः ॥ "

ર. અદ્યો જળાવેલ ખનારસીદાસ સત્તરમી સફીમાં હવાન હતા. તે હિંદા ભાષાના જૈન કરિ તરિકે પ્રસિદ્ધ હતા. તેઓ સાધાના રહીશ શ્રીમાલ વેશન હતા. તેમના પિતાનું નામ 'પરસ્ત્રીન હતું અને વિ. સં. ૧૬૬૦ સુધી કાર્યાદિ શ્રીમાને અભ્યાસ કર્યો હતો. અને તે મૃતિના જ સમામમધી ૧૬૬૪ થી ધાર્મિક પ્રકૃતિ તરફ વિજેજ લક્ષ્ય રાખીને અચ્ફ વાસનાથી પાછા હત્યા. આધામાં તેમને અપંપ્રલજી નામના અધ્યાત્મરસિદનો સમામમ થયો તેમી અપં 'સમયસાદ'ના વાચનથી ને નિષ્ય માર્ગ તરફ દેશાયા. આ સ્થિતિમાં તેમણે 'માનપચીધી' વર્ષેટ પ્રયો ભનાવ્યા. વિ. સં. ૧૬૯૨માં પંત્રિત રૂપચંદના સમામમધી અને દિર્માં સંસ્થાના પશ્ચિથથી પૂર્વ કિપ્યતિ પલકાઈ ગઈ, એટલે તે દિર્માં અનાનુવાણી થયા. આ અનારસીદાસને કું વર્શ્ય (કૃષ્યારપાલ) અમરચંદ વર્ષેટ મહારપાર અનુવાયી શિપ્યા હતા. તેઓ આધ્યાત્મ ભાગસીદાસને કું વર્શ્ય (કૃષ્યારપાલ) અમરચંદ વર્ષેટ મહારપાર અનુવાયી શિપ્યા હતા. તેઓ આધ્યાત્મ સ્થિત સામંત્ર પાત્રી પાત્રા હતા અને આધ્યાત્મિક તરીક રળાતા હતા. આ અવસરે શ્રીમાન કૃષ્યાં વારખન પ્રમાન સ્થાપા હતા અને તેના મતનું ખંડન ' અધ્યાત્મમત્મપાલન-સરીક ' સ. ગા. ૧૮ અને ' અધ્યાત્મમત્મપારીકા! ' (સ. ગા. ૧૧૮) સરીકર્યા કર્યા છે. લેશેમ ખીના એન્દ્રિશિક પ્રચિતી કર્યા કર્યા

સહિત શ્રીનયવિજયજી મહારાજ આગાથી અનુક્રમે ગ્રામાનુગ્રાધ વિહાર કરતા કરતા તેમજ માર્ગમાં પણ (શ્રીયશાવિજયજી મહારાજ) અનેક પંડિતા સાથે ગ્રાસ્ત્રાર્થ કરતા કરતા જૈનપુરી સરખા રાજનગર (અમદાવાદ)માં પધાર્યા.

- . (२३) શ્રીનયવિજયછ મહારાજે અમદાવાદ આવી હર્પપૃવંક નાગારીશાળામાં એટલે નાગારી સરાઈ નામના લત્તો કે જે (અત્યારે પણ રતનપાળ) ઝવેરીવાડમાં મધ્યભાગે આવેલ છે ત્યાં ઉપાય્રયમાં સ્થિરતા કરી. તે વખતે શ્રીયશાવિજયછ મહારાજ અનેક શાસ્ત્રોના વાદવિવાદ કરનારા પંડિતાના સમુદાયમાં ઘણું આદરમાન પામ્યા, કારણુ કે કાઈ પણ દર્શનના વાદી જૈનદર્શન સંબંધી વાદ કરવા આવે તા તેઓ તેને શાસ્ત્રની યુક્તિ-પ્રયુક્તિઓથી તેમજ ન્યાયશાસ્ત્રોની પરિપાટી પ્રમાણે એનું સરસ સમજાવતા કે જેથી વાદી જૈનદર્શનની ખામી દર્શાવી શકતા નહિ, અને ઉપાધ્યાયજએ દર્શાવેલી યુક્તિઓનું રહસ્ય સમજીને અત્યંત સંતાષ પામતા.
- (૨૪) આ વખતે અમદાવાદમાં સંદ્રગુણી જનાના સદ્દગુણને સન્માન આપનાર હાવાથી ગુણરસિક અને પ્રજાજનાતું હિત કરવાની મતિવાળા એવા મહાળતખાન નામે વડા રાજ્યા- ધિકારી (સૃણા) રહેતા હતા. તેની નજર નીચે જ અમદાવાદ જિલ્લાનું સર્વ રાજતંત્ર ચાલતું હતું. તે મહાળતખાનની રાજસભામાં શ્રીયરાવિજયજીના ધર્મશાસ્ત્રોના અથાળ સાનની અને અત્યંત ખુહિવૈભવની પ્રશંસા થઈ. આ સાંભળીને મહાળતખાનને પધ્ય એવા ખુહિશાળી ધર્મસં-યાસીને મળવાનું અને તેમના ખુહિવૈભવ સાક્ષાત્ નજરે જેવાનું મન થયું. તેથી પાતાના અભિપ્રાય રાજસભામાં બેસનારા અગગણ્ય શ્રાવકા વગેરેને જણાવતાં તેઓએ સભામાં પધારવાની શ્રીયરાવિજયજી મહારાજને વિનંતિ કરી. આથી ગુરુમહારાજે પદ્યુ, સકારણ રાજસભામાં જવાથી શાસનની પ્રભાવના થશે એમ જાણી, રાજસભામાં જવાની આગ્રા આપી. રાજયભામાં જવાથી શાસનની પ્રભાવના થશે એમ જાણી, રાજસભામાં જવાની રાજ્ય થયા. રાજસભામાં મુનિમહારાજને વાગ્ય સ્થાને છેસવા વગેરેની સર્વ સગવડ કરી.
- (૨૫) શ્રીયશાવિજયછ મહારાજે અશ્રગષ્ય શ્રાવકના સમુદાય સહિત રાજસભામાં જંઈને રાજ્યાધિકારીની વિજ્ઞમિથી ત્યાં સભામાં સર્વ સલાજના સમક્ષ પાતાની ખુદ્ધિના ખળથી અઢાર અવધાન કરી ખતાવ્યાં, કે જેમાં ૧૮ સભાજનાની દરેકની જુદી જુદી વાત (એટલે એક જથ્યુની અનેક વાત તેવી ૧૮ જથ્યુની ઘણી વાત) યાદ રાખીને દરેકની વાત અનુક્રમે સંભળાવી દેવાની હાય છે એવા પ્રકારનાં ૧૮ અવધાના કરી ખતાવ્યાં. તેમનું આનું ખુદ્ધિખળ એઈને રાજ્યાધિકારી મહાખતખાન ખહુ જ રાજી થયા.
- (૨૬) ત્યાર ખાદ હવે પામેલ મહાખતખાન રાજ્યાધિકારીએ હવે વડે શ્રીયશાવિજયછ મહારાજનું ભન્ય ઉત્સવાદિકપૂર્વંક સન્માન પણ કર્યું. આ પ્રમાણે અમદાવાદમાં શ્રીયશા-વિજયછ મહારાજે શ્રીજૈનશાસનની ઘણી ઉત્તમ પ્રશાવના કરી અને જેઓ જૈનધમે શું ચીજ છે તે ખિલકુલ સમજતા નહાતા તેવાઓને પણ જૈનધમે પણ એક ઉત્તમ ધર્મ છે

એમ મુખજતા કર્યો. વળી, જૈનધર્મમાં કાઈ વિકાન નથી, એમ કંદેનાર કેટલાયે વિકાનો જૈનધર્મમાં પત્રુ ગુખર વિકાના કે એમ મુખજતા થયા.

- (૨૭) અમકાવાદના શ્રીસુધે વર્તમાન ગચ્છનાયક આચાર્ય અહારાજ શ્રીવિજયદેવ સુરિજીની આગળ એવી વિનંતિ કરી કે 'હે સુરિવર્ય'! સુનિ જગ્યવિજયજી મહારાજ વર્તમાન સમયમાં અદુશુન એડ્ડે ધર્મગાજના રાતા અનેક વાદિવિજેતા અને શ્રીજિન-શાસનના મહાપ્રસાવક કે માટે તેઓને કપાધ્યાય પદવી આપવી ચેલ્ય છે.
- (૨૮) એ પ્રમાણે વિતયપૂર્વક રાજનગર(અમદારાદ)ના શ્રીસ્થે વિનંતિ કરી ત્યારે કત્ત્વમ સુદ્દિરાળા શ્રીદેવસ્રિઝ મહારાજે સંઘની વિનંતિને પાતાના હૃદયમાં કતારી.

(રલ-३०) ત્યાર બાદ પ્રીયશોવિજવછ મહારાજે ઇક્કિયાનકના ઉત્તમ ત્ય આરંકયા અને તેવા ઉત્તમ તપની આસપ્રતાવાદા પ્રીયશોવિજયછ મહારાજને પાતાના શરૂ પ્રીવિજયદેવસૂરિની આસાયી આચાર્ય પ્રીવિજયપ્રસ્ત્ર્રિઇ મહારાજે પ્રીસંઘના અહુ ઉદ્યાસ્પૂર્વ અને અપ્રહિન્દા વગેરે માટા ઉત્સવ વગેરેના વિદ્યાનપૂર્વ તિ. સં. ૧૯૧૮ માં (ગહિના તથા તિથિ જણાવ્યાં નથી) ગુસવાર, ગુરુતિથા, ગુસનસ્ત્ર, ગુરુપાત્ર, શુસદસ્ત્ર સહિત ગુસસુરૂતામાં અસંત આતંદથી ઉપાધ્યાય પદવી આપી, નગાવી શ્રીયશાવિજયછ મહારાજ ઉપાધ્યાય શ્રીયશાવિજય કર્યા મહારા શ્રીયશાવિજય કર્યા અને પ્રથમ કાર્શનપ્રદાસ પદવી આપી હતી અને ત્યાયના ૧૦૦ કર્યા ખનાવવાથી 'ત્યાયાસાય' પદ પણ આપ્યું હતું તેથી શ્રીયશાવિજય પ્રદાસ પદ્ધા તે 'ત્યાપિક્રાય સ્થાપ્ત પ્રાપ્ત સ્થાપ્ત સ્થાપત સ્યાપત સ્થાપત સ્થાપત સ્થાપત સ્થાપત સ્થાપત સ્થાપત સ્થાપત સ્થાપત સ્થા

(૩૧) પાતાના અનાવેશા 'અધ્યાતમતાપરીક્ષા' વગેરે અહ્યાનાં અધ્યાત્મના વિષય, 'ન્યાયમંડખાય–વૃત્તિ' વગેરે અત્યામાં ત્યાયના વિષય અને 'શ્રેષ્ણવિક્ષિકા–વૃત્તિ' તથા

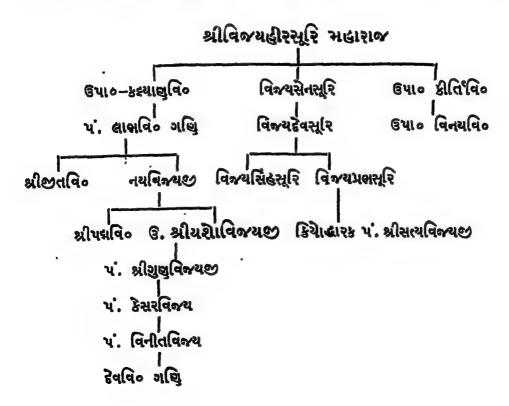
^{ા.} શ્રાંતિજારેનારિતી શ્રીના ડુંશ્યાં આ પ્રમાણે જાણાં—શ્રાંતિજારોનારિજીના તે પ્રદેશ હતા. શ્રાંતિશ્રા ક્ષમ પ્રમાણે તેઓ ૧૦ માં પ્રદેશ હતા. તેની જન્મ તિ માં. ૧૬૪૦ માં, મેરિય-૧૬૫૧ માં સર્વવાય-૧૭૧૨ માં ઉત્તામાં થયા હતા, એમના લગતનાં ૨૧ પ્રાક્ત અને ૩૦૫ પંગ્યાસ હતા. ઉપાંચાય શ્રાંત્રીય સ્થય વિ. માં. ૧૬૯૯, આના અનાવનાર શ્રાંત્રદ્રમ પ્રાક્ત છે.) (૩) શ્રી સુલ્લિજ્યાસ મદદાવી અનાવેશ-શ્રાંત્રભાવેલાનિ પ્રયોધ (૪) વિજયોલાનિથી સન્તરો (૧) તેમિયાર રાસ (૧) શ્રાંતિય નનાન્દ્રસ સાત્ય (માયમપ્રસાશિત તેના કર્યો શ્રી સ્વિત્રિય ઉપાયસ સ્થતા માં. ૧૫૧૫) (૭) શ્રાંત્રિતિજયાલાયાલય એટ સ્થિમાં શ્રાંત્રિજયોલારિક સદાયાનું છાનારિત નિનાર્શા વર્ષોન્યું છે.

ર થી વિજયસ્થિતિ પ્રદારખી સ્થાનિથી (કૃષ્ણ મહાર) શ્રીસ્મિનિક્ટિસ સહારખ વર્ષની ઉપર સાલવાર્ષ પ્રાપ્ય, દેશ કે ઉપયોગ્યનિક્ટિસ પ્રાપ્તિ પણ વિજયમાનિકિત સહાર્ય શ્રીકે પ્રાપ્ત્ય પ્રદારખ પણ કર્યા પાંચક લીક શ્રીનિજ્યમાનિક સ્તૃત પ્રથતી પ્રયુત્તિના જ્યાને છે. તેમની શ્રીના ટ્રેક્સી સ્થાપ્તાએ જાણી—તતના-ક્રમ્મમાં, દેશા-નિ. શ્રીના કર્યા પ્રયુત્તિના તમાની સંદેશ-પ્રયુત્તાનામાં કાર્યન મી. સ્થાનિક ક્રમાં શ્રી કર્યા

'માતંજલયાેગ શાસ્ત્રનીચતુર્થપાદની વૃત્તિ ' વગેરેમાં યાેગના વિષય–એ પ્રમાણે અધ્યાત્મ, ન્યાય અને યાેગના વિષયા જેમણે પાતાના અનાવેલા બ્રન્થામાં ચર્ચલા છે, અને તે ઉપરાન્ત કમ'પ્રકૃતિની વૃત્તિ આદિમાં કમ' વગેરેના વિષય અને બીજા પણ અનાવેલા અનેક બ્રંથામાં ધમ' વગેરે વિષયા ઘણા ચર્ચાં છે. તેવા ઉત્તમાત્તમ બ્રન્થાના રચનાર ઉપાધ્યાય બ્રીયશાવિજયજી મહારાજનું જે પુરુષા નિત્ય સ્મરણ કરે છે તેવા ભાગ્યશાળી પુરુષાને ધન્ય છે.

(32) ઉપાધ્યાય શ્રીયશાવિજયજી મહારાજ ગ્રામાનુગ્રામ વિચરતા અનુક્રમે ગુલ્ન-યુગ-હય-ઇન્દુ વર્ષે એટલે ૧૭૪૩ના વિક્રમ સંવત્સરમાં દર્ભાવતી નગરીમાં પધાર્યા. આ દર્ભા-લતી એટલે વહાદરા પ્રાન્તમાં આવેલ અત્યારનું હિલાઈ નામનું ગામ સમજનું કે જે વહાદરાથી લગભગ ખારેક ગાઉ દૂર છે, જ્યાંના મનાહર કારીગરીવાળા હીરા કહિયાના ચાયેલા કિલ્સા હજી પણ પ્રસિદ્ધ છે, અને જે પ્રથમ વીરધવલ રાજની રાજધાનીનું નગર હતું. આ હિલાઈમાં વિ. સ. ૧૭૪૩માં ઉપાષ્યાયજી મહારાજ અનશનવિધિ સહિત ઉત્તમ મરલ્યુસમાધિપૃવધ સ્વર્ગપદ પાત્ર્યા એટલે કાળધમે પાત્ર્યા. વર્ષમાન સમયે હિલાઈ નગરની અહાર તેમના સ્તૃપ (દેરી) વિદ્યમાન છે. અહીં વિ. સં. ૧૭૪૫ની મીન એકાદશીએ શ્રીન્યાયાચાર્યની પાદુકા પધરાવી છે.

સમાટ અકળરપ્રતિષાધક શ્રીહિરિવિજયજસ્ત્રીશ્વરજી મહારાજથી શ્રીયશાવિજયજી મહારાજની શિષ્યપરંપરાનું વંશવૃક્ષ આ પ્રમાણે સમજનું.



(33) એ પ્રમાણે તાકિ કેશિરામિલું ન્યાયાચાર્ય ન્યાયવિશારદ ઉપાધ્યાય શ્રીયશા-વિજયજ મહારાજનું આ જનનચરિત્ર-ઉપાધ્યાયજ મહારાજના સદૃશુણાના અનુરાગથી અને તેમના અપાર ગ્રાનાદિ શુણાનું અનુકરણ કરવાની ઈચ્છાથી અતિસંક્ષેપમાં કહ્યું છે. વર્તમાન સમયમાં ઉપાધ્યાયજનું અથથી ઇતિ સુધીનું સર્વિસ્તર યથાર્થ જવનચરિત્ર મળતું નથી, જેથી જેટલું મળી શકે છે તેટલામાંથી ઉદ્ધરીને સારભૂત આ જવનચરિત્ર ખહુ દ્રંકમાં કહ્યું છે. આ સંક્ષિપ્ત જવનચરિત્ર વાંચીને અથવા સાંભળીને અને તેવા શુણાની સેવના કરીને, હે ભવ્ય જવા! તમે પરમ ઉત્તિ એટલે પરમ કશ્યાલને પામા!

(૩૪–૩૫) વિ. સં. ૧૯૯૩માં જે દિવસે શ્રીગૌતમસ્વામીને કેવળજ્ઞાન પ્રગટ થયું તે પવિત્ર દિવસે અતિઉત્તમ શ્રીજૈનશાસનની આરાધના કરવામાં રસિક એવા ઘણા શ્રાવક સમુદાય જેમાં વસે છે તે જેનપુરી સરખા રાજનગર-અમદાવાદમાં પરમપૂત્ર્ય શુરુવર્ય આચાર્ય શ્રીવિજયનેમિસ્ટ્રીશ્વરના શિષ્ય આચાર્ય વિજયપદ્મસ્ટ્રિએ પ્રિયંકરવિજયજી નામના સાધુને ભણવા માટે આ ઉપાધ્યાયજી શ્રીયશાવિજયજી મહારાજના જીવનચરિત્રની રચના કરી.

મહાપાધ્યાય શ્રીયશાવિજયછ મહારાજે અનાવેલા શ્રંથાની હંકીકત એક સ્વતંત્ર નિર્ભંધમાં જ આવી શકે એમ હાવાથી અહીં ન આપતાં તેમની સાહિત્ય રચનાએ સંબંધી હંકીકત આ શ્રંથમાં જ મારા ખીજા હેખ (પૃષ્ક, ૧૮૯)માં આપવામાં આવી છે.



आत्मायमहैतो ध्यानात्, परमात्मत्वमण्युते । रसविदं यथा ताम्रं, स्वर्णत्वमधिगच्छति ॥३०॥

જેમ રસથી વેધાયેલું તાંજી સુવર્ધા જાને છે તેમ અરિદાંતના ધ્યાનથી આ અહમા પરમાત્મપણાને પામે છે.

દાત્રિશિકા]

[श्रीभद् यशाविकय्छ



અઢારમાં સદીના મહાન જ્યાતિર્ધર મહાપાધ્યાય શ્રીયશાવિજયજીકૃત ગ્રંથા

[संक्षिप्त अंथपरिवय]

[લેખક : પરમપૂન્ય આચાર્ય શ્રીવિજયપદ્મસરિજ મહારાજ]

આગળના મારા લેખમાં આપણે ૧૮મી સહીના મહાન જૈન જ્યાતિધ'ર મહાપાધ્યાય શ્રીયશેષિવજયજી મહારાજતું જીવન સંક્ષેપમાં જોયું. હવે એ જીવનચરિત્રના અંતે ઉલ્લેખ કરાયા પ્રમાણે આ સ્થળે આપણે એમના કવન–સાહિત્યરચના સંબ'ધી વિચાર કરીશું કે જે સાહિત્યરચનાએ એ મહાપુરુષને અઢારમી સહીના મહાન જ્યાતિધ'ર અને પ્રખર વિદ્રાન તરીકે પ્રસિદ્ધ કરીને અમર બનાવ્યા છે.

આ વિષયમાં આપણે તેમની એક પછી એક કૃતિનું —એ કૃતિમાં આવતા વિષય-નિરૂપણનું —સંક્ષિપ્ત અવલાકન કરીશું.

ઉપાધ્યાયજકૃત માલિક શ્રાંથા

1. અધ્યાત્મમતાપરીક્ષા—આંતું ખીજું નામ 'અધ્યાત્મમતખંડને છે. મૂળ શ્રંથ પ્રાકૃત ભાષામાં ૧૮૪ ગાથાના છે. તેના ઉપર વાચકવર્યે સ્વાપત્ત ટીકા રચી છે. દિગંભરા એમ માને છે કે કેવલિભગવંતાને કવલાહાર હાય જ નહિ. આ બાબતમાં શ્રંથકાર મહિપ એ કેવળગ્રાન અને કવલાહાર એ અવિરાધી વસ્તુ છે એટલે જ્યાં કેવળગ્રાન હાય ત્યાં જેમ મહિનીય વગેરે ચારે ઘાતી કર્મો વિરાધી હાવાથી સંભવતાં નથી, તેવા વિરાધ કેવળગ્રાનની સાથે કવલાહારને હાવામાં નથી એ સિદ્ધ કર્યું છે. 'શ્રીસમવાયાંગ'માં ચાત્રીશ અતિશયોમાં જહ્યું છે કે 'પ્રભુના આહાર કે નિહાર ચર્મચક્ષુવાળા જીવા નેઈ શકે નહિ.' એ વગેરે વસ્તુ સચાટ દાખલા—દલીલા દઇને 'કેવલીને કવલાહાર હાઈ શકે 'એમ સાબિત કર્યું' છે. દિગંભરા માને છે કે, પ્રભુને ધાતુરહિત પરમૌદારિક શરીર હાય. આ બાબતનું, પ્રભુને જન્મથી જ એક શરીર હાય છે વગેરે જણાવીને, ખંડન કર્યું' છે. ને કેવલી પ્રભુને આહાર ન હાય તા 'તત્ત્વાર્ય'માં કેવલીને કહેલા અગિયાર પરીષહા (જેમાં ક્ષુધા પરીષહ ગણ્યો છે તે) કઈ રીતે ઘટશે ? આવા અનેક પ્રશ્નો પૂછીને આહારની બાબતમાં પર્યાપ્ત નામાદય પણ કારણ તરીકે જણાવીને દિગંભર મતની અનેક માન્યતાને અસત્ય ઠરાવી છે. છેવટે (૧) હિગંભર મત કચારે પ્રગટ થયો ? (૨) તેઓ ઉપકરણ નથી રાખતા, તેનું શું કારણ ? આ

પ્રશ્નોના ખુલાસા કરવાના પ્રશ્ને તેઓના આચાર વળેરે દર્શાવી છેવટે પ્રશસ્તિ જણાવી કર્તાએ બંધ પૃણું કર્યો છે. આ બંધ ઉપરની સ્વાપત્ર ટીકા નવીન ત્યાયની પ**હ**તિ પ્રમાણે બનાવી છે, તે વાંચવાથી કર્તાની અપૃષં વિદ્વત્તા જણાય છે.

મૂળ બંધની શરૂઆતમાં બંધકાર જણાવે છે કે:— હું શ્રીપાર્ધાનાઘ પ્રસુને અને ગસ્ક નાયક આચાર્ય મહારાજ શ્રીવિજયદેવસ્ર્રાશ્વરજી મહારાજને વંદન કરીને બાધને અનુસારે અધ્યાત્મમતની પરીક્ષા કરીશ. તેમ જ દીકાની શરૂઆતમાં પણ જણાવ્યું છે કે, જે વાસ્કેવતા (સરસ્વતી) પંડિતાને અથવા દેવાને વંદન કરવાલાયક છે, અને જેતું સ્વરૂપ કેંગ્કાર મંત્રાક્ષર ગિલિંત છે, તેને વાસ્કેવતાનું સ્મરણ કરીને હું સ્વાપાલ(સ્વકૃત) અધ્યાત્મમતપરીક્ષાનું વિવરણ કરું છું. દીકાના શ્રીકાનું પ્રમાણ ૪૦૦૦ શ્લાક છે. આ સદીક બંધ દે. લા. જેન પુરનાકાહાર કરે તરફથી છપાયા છે અને તેનું સાયાંતર શ્રીઆત્માન કરવા તરફથી પ્રસાદ થયું છે.

ર. અધ્યાત્મસાર—કર્મક્યા વાદળાંથી દંકાયેલા લગ્ય છતાં અધ્યાત્મ સેવાક્યી પવનથી તે વાદળને તુર કરી આસ્પિક તેજના અનુસવ કરી શકે છે. આ સુદ્દાથી બંધકારે આ બંધમાં સાત મુખ્ય વિભાગ (પ્રખંધ)ની અને દરેક વિભાગમાં એકાદિ અધિકારની સંકલના કરીને અધ્યાત્મનું સ્વરૂપ વભુંત્ર્યું છે. તેમાં પ્રથમ પ્રખંધમાં અધ્યાત્મની પ્રશંસા, અધ્યાત્મસ્વરૂપ, દંભત્યામ, લવસ્વરૂપ—આ ચાર બાળવાનું સવિસ્તર વર્ણન જણાવ્યું છે. બીલા પ્રજાંધમાં વૈશાચ્યસંભવ, વૈશાચના એદ અને રેશચ્ય સંબંધી જરૂરી બીના સ્પષ્ટ રીતે વર્ણથી છે. ત્રીલા પ્રભંધમાં મમતાના ત્યામ, સમતા, સદનુષ્ઠાન અને મનાકૃતિનું સ્વરૂપ જણાવ્યું છે. ચાઘા પ્રભંધમાં સમ્યકૃત્વ, મિચ્યાત્વત્યામ અને કદાબહત્યામની બીના જણાવી છે. પાંચમા પ્રખંધમાં ચેમમ, ધ્યાન અને ધ્યાનસ્તૃતિ વર્ણથી છે. છઠા પ્રખંધમાં આત્મનિશ્ચય વર્ણમો છે. સાતમા પ્રભંધમાં જેનમત્ર સ્તૃતિ, અનુસવી સજ્યનસ્તૃતિ જણાવી છે. જેન રેવે કેન્ફરન્સ પ્રકાશિત 'જેન પંચાવલી' વગેરેના આધારે આ મૃત્ય શંધનું પ્રમાણ ૧૨૦૦ રેલાક છે. આના યથાર્યલાવ જણાવવા માટે પંત્યાસ્ત્ર મહારાજ 'શ્રીમ'લારવિજયજ બલ્લિએ તેના ઉપર ટીકા પ્રનાવી છે, તે ટીજનામાં પ્રસારક સ્માએ છપાવી છે.

3. અધ્યાન્માપનિષદ્ર— મંસ્કૃત અનુષ્ડુપ છંદ્રમાં ૨૩૧ વિલક્ષ્મમાણના આ બંધ છે. પ્રકાશક શ્રીજનધમ પ્રસારક સભા, ભાવનગર. આ બંધમાં કર્તાએ-૧. શાસ્ત્રયાગશૃદ્ધિ અધિકાર, ૨. જ્ઞાનયાગાધિકાર, ૨. કિયાધિકાર અને ૪. સાત્ર્યાધિકાર-આ આર અધિકાર પૈકી પહેલા- શાસ્ત્રયાગશૃદ્ધિ નામના અધિકારમાં (૧) અધ્યાત્મનું ખર્ફ સ્વરૂપ શું સમસ્ત્રનું? (૨) તેને લાયક કયા જીવા દેવઈ શકે? (૩) દેવા પ્રકારના હ્દયમાં અધ્યાત્મના પ્રાદુસાવ ધાય? (૪) તુચ્છામહી જોવાની કેથી ખરાલ હાલત થાય છે? (૫) શાસ્ત્રનું સામધ્યે કેન્નું હેય છે? (૧) શાસ્ત્રની પરીક્ષા કઈ રીતે કરી શકાય? (૭) કપ, છેદ્દ, તાપતું સ્વિસ્તર સ્વરૂપ

ર. ઠીકાકારોના ટ્રંક પાંચ્યય—ગત્મ સં. ૧૯૦૦, ચેર શુદ ૩, આદિવર રાજ્યના સાનાગોર ત્રામમાં ' યનિષાણું સં. ૧૯૨૪, સંવધી દીક્ષા ૧૯૩૧, પંત્યાસપદ સં. ૧૯૮૮, અને સ્તર્યવાસ સં. ૧૯૬૯, પાષ - વદ ૮ શર્-પરમયુજ્ય શંત્રુદેશિકાયજ(શ્રુદિસંદ્રજ) મહારાજ.

શું ? (૮) અને કપશુદ્ધિ વગેરે ત્રિવિધ શુદ્ધિ કઈ રીતે શાસ્ત્રમાં ઘટાવી શકાય ? (૯) એકાંત-વાદીઓ પણ આડકતરી રીતે સ્યાદ્વાદ મતને કેવા રૂપે સ્વીકારે છે? (૧૦) નયશુદ્ધિ, શ્રુતજ્ઞાન, ચિંતાજ્ઞાન અને ભાવનાજ્ઞાનતું સ્વરૂપ શું? (૧૧) ધર્મવ દને લાયક કાણ હાઈ શકે? આ અગિયારે પ્રક્ષીના સ્પષ્ટ ખુલાસા કરવાપૃર્વંક વચમાં પ્રસંગે જરૂરી ખીના પણ સરસ રીતે વર્ષુ વી છે. ખીજા–જ્ઞાનચાર્ગ નામના અધિકારમાં (૧) પ્રાતિભજ્ઞાન કાને કહેવાય ? (૨) આત્મ-જ્ઞાની સુનિ કેવા હાય છે? (3) ખર્ વેદાપણું કાને કહેવાય? (૪) જ્ઞાની પુરુપા કઈ રીતે નિલે પ થઈ શકે છે? (પ) ચિત્તની શુદ્ધિ કરવા માટે કયાં કયાં સાધનાની સેવના કરવી નેઇએ ? (t) જ્ઞાનયાગ વ્યાવહારિક દિશ્યો અને નૈયાયિક દેશિએ કેવા સ્વરૂપવાળા હાય છે: આ છ પ્રશ્નોના સ્પષ્ટ ખુલાસા કરતી વખતે ખીજી પણ જરૂરી ખીના દુંકમાં જણાવી છે. ત્રીજ-ક્રિયાઅધિકારમાં-ક્રિયાની જરૂરિયાત જણાવવાના પ્રસંગે કઈ ક્રિયાથી નિર્મલ ભાવ-વૃદ્ધિ થઈ શકે ? આના ખુલાસાં જણાવીને ગ્રાની પુરુષા પણ કર્મના નાશ કરવા માટે ક્રિયાની સાધના જરૂર કરે છે, આ ખીના જણાવી છે. ચાથા-સામ્યાધિકારમાં (૧) સમતા ગ્રુજાવાળા જીવની કેવી સ્થિતિ હાય છે? (૨) સમતા વિનાનું ગ્રામાયિક પછુ કેન્નું હાય છે? (૩) પરમાત્મસ્ત્રરૂપને પમાહવામાં સમતા કઈ રીતે કેવા પ્રકારની મદદ કરે છે? (૪) સમ-તાથી કાને કાને કેવા કેવા પ્રકારના લાલ થાય? આ ચાર પ્રશ્નોના સ્પષ્ટ ખુલાસા કરતાં છેકલા પ્રાથમના સમાધાનમાં ભરત, દમદંત ઋષિ, નમિરાજપિ, સ્કંદસૂરિના શિષ્યા, મેતાય, ગજસુકુમાલ, અર્ણિકાપુત્ર, દઢપ્રહારી, શ્રીમરૂદેવા વગેરેના દાખલા આપ્યા છે. છેવટે પ્રશસ્તિ વગેરે જ્થાવીને પ્રથ પુરા કર્યો છે.

૪. અને કાંતવ્યવસ્થા-મૂળ શ્રંથ ૩૩૫૭ શ્લાકપ્રમાણના છે. આ શ્રંથ સુદ્રિત છે. તેમાં શરૂઆતમાં કર્તા આ મંગલશ્લાકની રચના કરે છે—

> " पेन्द्रस्तोमनतं नत्वा, वीतरांगं स्वयम्भुत्रम् । अनेकान्तन्यवस्थायां, श्रमः कश्चिद् वितन्यते ॥ "

પ. દેવધામ પરીક્ષા—દેવા સ્વર્ગમાં ત્રભુપ્રતિમાની પૂજ કરે છે. પ્રતિમા નહિ માનનારા સ્થાબકમાર્ગી લોકો તે દેવાને અધર્મી કહે છે, આ વાત ખાટી છે એમ સાબિત કરનારા આ શ્રંથ છે. એનું મૂળ શ્લાકપ્રમાણ ૪૨૫ છે. તેના ઉપર ટીકા નથી. પ્રકાશક શ્રી. જે. ધ. પ્ર. સભા, ભાવનગર જે ૨૭ મુદ્દાઓ લક્ષમાં રાખીને શ્રંથકાર મહિલ્એ આ શ્રંથની રચના કરી છે તે મુદ્દાઓ ટ્રંકમાં આ પ્રમાણે જાણવા—(૧) દેવા અસંયત છે એમ કહેવું એ નિષ્ફર વચન છે. (૨) દેવાને શ્રુત્તધર્મ હોય છે એ મુદ્દાથી પણ તેમને અધર્મી ન કહી શકાય. (૩) દરેક સમ્યક્ત્વધારી જીવને સ્ત્ર અને અથે હોવાથી શ્રુતધર્મ કહી શકાય જ. (૪) તેઓ સવલ્તિરાય સંયમને ધારા કરી શકતા નથી, આ અપેક્ષાએ અધર્મસ્થિત કહેવાય છે. (૧) તેઓ વિશિષ્ટ બાધરહિત છે, માટે ખાલ કહેવાય છે. (૧) સંયમ વિનાનું ક

^{*} ૪, ૧૦, ૧૧, ૧૨ ન ભરવાળા ગ્રંથા ઉપર યુજ્ય આચાર્ય શ્રી વજયલાવલ્યસરીયરજીએ સ્વતં મેં કોંગ્રેસ સ્થાપ માર્ચિક સ્થાપ કરાવ્યા છે. સં૦

સમ્પક્ત નિષ્ફળ છે આ વચન વિશિષ્ટ અપેક્ષાને બહેર કરે છે (છ) નારક જીવાને અને ટ્વેન વશ્યાએ નુરી નુરી દાય છે. તેમાં ટ્વેની લેશ્યા અપેકાએ પ્રશસ્ત અણાય છે. (૮) સુરુયકૃત્યી દેવાને સાધુ વગેરેના વિનય કરવારૂપ તપ દેાય છે. (૯) મુનિ વગેર મડા-પુરુષાતું વૈયાવચ્ચ કરીને પણ દેવા પાતાના દેવ ભવને સફળ કરે છે. (૧૦) ઇન્દ્રો સમ્ય-વ્યારી અને નિસ્ત્રઘ લાષાના બ્રોલનારા કહેત્રાય છે. (૧૧) ઇન્દ્રો સુનિરાજને અવધ્ર આપે છે. (૧૨) અમરે-દ્ર વગેરે ઇન્દ્રો તથા તેમના લાકપાળદેવા પ્રમુ–દેવના હાડકાની પછુ આશાનના કરતા નથી. (૧૩) હસ્ટિક્શીનું વૈયાવચ્ચ યક્ષાએ કર્યું છે. (૧૪) ફેવાને સભ્યક્ત્વરૂપ સંવર દાય છે. (૧૫) ધાર્મિક વ્યવસાય કરીને સૃર્યાસે પ્રભુપ્રતિમાની પૃત્ત કરી છે. (૧૬) વિજય-રેવે પછુ તે પ્રમાણે પૂજા કરી છે. (૧૭) જન્માસિપેકના પછુ નેવા જ ઋધિકાર છે. રેવા પ્રસુષ્ત કરે કે તે, આગળ અને પછી, કલ્યાદ્ય કરનારી બને છે. (૧૮) 'પછી' શહેના અધિકાર પ્રમાણે 'પરસવ' અર્ધ' લેવા ત્રેઈએ, કારણ તપશ્ચર્યાદિયી તેવું ફળ મળી શકે છે. (૧૬) સ્થિતિ પણ ધર્મ જ કહેવાય. (૨૦) જ્ઞાનવંત મહાપુરૃપાના લાકાપચાર પણ કર્મ ખપાવવા માટે જ દાય છે (૨૧) કેવાએ કરેલ વંદનાદિ પછુ પૂર્વ અને પછી હિતકારી છે. (૨૨) યૂમ્મધિકારના સમાવેશ વંદનાધિકારમાં થઈ શકે છે. (૨૩) પ્રસુદ્દેવે ઇદ્રાદિક કરેલ વંદનાની એનુમાદના કરી પ્રભુની આગળ કરાનું નાટક બીમાં અશુમ કાર્યાના એવું ન કહેવાય. (२४) व्याचा नारक्षेत्रे सिक्टाना व्यंत्र तहीहे श्रष्टाच्युं छे. आवी सिक्टाना प्रभावे हुर्शति न થાય, સદ્દુત્રતિના ખંધ થાય ને છેવડે માશ્ર પણ મળે. (૨૫) દાનના જ્ઞપદેશ કે નિપેધની પેઠે જિનપૂનના ઉપદેશ કે નિયેષ ન કરવા એમ નહિ, કારણ કે તે અનુબંધ હિંગ્રા છે જ નહિ. (૨૬) ચેત્ય કે પ્રતિમાને અંગે થતી ક્રચર્ડિયા અધર્ષ્કંડ પણ ન કહેવાય અને અનધર્ષ્કંડ પણ ન કહેવાય. (૨૭) પૃક્ષતું સ્વરૂપ જણાવતાં અને હિંસાતું સૂત્ર્ય સ્વરૂપ સૂત્રપાદ દઈને સમક્ષત્ર્યું છે.

જેનનરે પરિસાષા—સ્યાફાદદર્શનના પાયા જેવા (૧) પ્રમાણ, (૨) નય અને
 (૩) નિરાષ નામના ત્રસુ પરિચ્છેદવાળા આ લાંચ છે. તેમાં પ્રથમ પ્રમાણપરિચ્છેદમાં
 (૧) પ્રમાણ એટલે શું? (૨) પ્રમાણના તેના ફળની સાથે અદેદસાવ ટર્ક રીતે ઘટે? (૩)
 (૩) પ્રમાણના લેદા દેટલા? (૪) પ્રત્યક્ષ પ્રમાણ દેટલા પ્રકારનું છે? (૫) સાંવ્યાવહારિક પ્રત્યક્ષનું અને પારમાચિંક પ્રત્યક્ષનું તાત્વિક સ્તરૂપ શું? (૬) ચક્રુના અને મનના અર્જનાવલ્લ ન હોવાનું કારણ? (૭) અપલડાદિનું સ્વરૂપ શું? (૮) તે પ્રસૃત્રિ થતી શંકાઓના સમાધાન શું? (૯) મિતિગ્રાનના દરેક લેદમાં અટુ—સ્ટુરિય વગેરે ઘટેલ કઈ રીતે સ્મજવા? (૧૦) યુવાગાનનું યથાર્થ સ્વરૂપ શું? (૧૧) સંગાણરાદિ ત્રણ લેદા તથા યુવાગાનના ચીદ સેદા કયા કયા? (૧૨) પારમાચિંક પ્રત્યક્ષના અવધિગ્રાન વગેરેના લેદા દેટલા? (૧૩) યોજબ ધર્મજન્ય ગ્રાનમાં અને કેવલગ્રાનમાં વધાવ શેહ? (૧૪) પરાક્ષના સ્તરણ—પ્રત્યિત્રાન વર્શન્ય શું? (૧૫) તેના પાંચ લેદા કથા કથા? (૧૬) પરાક્ષના સ્તરણ—પ્રત્યિત્રા— વર્શ-સ્ત્રાનમાં—આગમ લેદાનું સ્વરૂપ શું? (૧૭) સ્તરણનું પ્રમાણપર્યું કઈ રીતે લડી શકે? (૧૮) તેને માનવાની જરૂસ્થિત શી? (૧૯) પ્રત્યસ્તિગ્રાનું લક્ષણ શું? (૨૦) તેને અલગ

માનવાતું કારણ શું? (૨૧) પ્રત્યક્ષિજ્ઞામાં અતુમાન વગેરેના સમાવેશ કઈ રીતે થઈ શકે? (૨૨) તર્કનું સ્ત્રરૂપ શું ? (૨૩) વ્યાપ્તિમહમાં તેની જરૂરિયાત કઈ રીતે અને કેટલે અંગ્રે છે ? (૨૪) સામાન્ય લક્ષભુના બાધ થવામાં અને શખ્દાર્થના વાવ્ય-વાચકભાવની સમજજ્ઞ પાડવામાં ફાની વિશેષ જરૂરિયાત પહે છે? (૨૫) તર્કનું સ્વતઃ પ્રમાણપણું કઈ રીતે સમજતું? (૨૬) અનુમાનના છે લેદા કયા? (૨૭) સાધ્ય-પક્ષસિદ્ધિનું સ્વરૂપ શું? (૨૮) દૃષ્ટાંતની જરૂરિયાત કઈ અપેક્ષાએ સમજવી ? (૨૯) હેતુનું અને તેના વિધિસાધક-પ્રતિષેધસાધક-ઉપલબ્ધિ અને અનુપલબ્ધિ નામના ભેદાનું સ્વરૂપ શું ? (૩૦) અસિંહ, વિરુદ્ધ અને અનૈકાંતિક હિત્વાભાસનું સ્વરૂપ શું ? (૩૧) આ ત્રણથી વધારે હત્વાભાસને નહિ માનવાનું શું કારણ ? (૩૨) આગમ પ્રમાણનું સ્વરૂપ શું ? (૩૩) અનુમાનથી આગમની જુદાઈ કેઈ રીતે સંભવે ? (૩૪) સમભંગીનું સ્વરૂપ શું ? (૩૫) તે પ્રસંગે સકલાદેશ, વિકલાદેશનું અને તેના કારણભૂત કાલ-આત્મસ્વરૂપ-અર્થ-સંબંધ-ઉપકાર-ગુણિદેશ-સંસગ્-શાહ્રસ્વરૂપતું સ્વરૂપ શું ? આ પાંત્રીશ પ્રશ્નોના ખુલાસા પ્રથમ પ્રમાણ-પરિચ્છેદમાં બ્રંથકારે જણાવ્યાં છે. ખીજા નય-પરિચ્છેદમાં નયતું લક્ષણ અને તેના લેદા ખતાવવાના પ્રસંગ શખ્દની પંચતથી પ્રવૃત્તિ કયા નયવાળા કઈ અપેક્ષાએ માનતા નથી તે વિસ્તારથી દર્શાવીને અપિ'ત, અનિપે'ત, વ્યવહાર, નિશ્ચય, ગ્રાનક્રિયા વગેરેનું ભેદપ્રદર્શનપૂર્લંક સ્વરૂપ જણાવીને છેવટે નયાભાસને દૂંકમાં સમજાવ્યા છે. ત્રીના નિક્ષેપ નામના પરિચ્છેદમાં નામાદિ નિક્ષેપનાં સ્વરૂપ, લોદ, પ્રયોજન દર્શાવીને દરેક નિશ્રેપ શું શું માને છે? તે જ્જ્ઞાવીને તેને નયમાં હતાર્યાં છે. નિશ્ચેપાની ઉત્પન્તિના પ્રકાર જણાવતાં જીવના પછુ નિશ્ચેપા જણાવ્યા છે. તક-શાજારપી મહેલમાં ગઢવા માટે આ શ્રંથ પગથિયા જેવા છે. મૂળ શ્રંથ ૮૦૦ શ્લાકપ્રમાણના છે. તે જે. ધ. પ્ર. સ. ભાવનગર તરફથી છપાયા છે. એમ સંભવી શકે છે કે જેમ ખીદ્ર પંહિત માલકારની 'તક આષા' જોઇને વૈદિક પંહિત દેશવમિશ્રે સ્વમતાનુસારી 'તક ભાષા' ખનાવી, તેમ તે ખેને તક ભાષાનું નિરીક્ષણ કરીને વાચકવયે આ મંથની સ્થના કરી દાય.

૭. ગુરુત્તત્ત્રનિશ્ચય—મૂળ પ્રાકૃતગાયા ૯૦૫ છે અને તેની ઉપર વાચક્રવયે પાતે જ સંસ્કૃત ગલમાં ૭૦૦૦ (સાત હેજાર) શ્લાકપ્રમાણ દીકા અનાવી છે. મૂળમાં પ્રસંગે 'બ્યવહાર-ભાષ્ય' વગેરે શ્રંથાની પણ ગાયાએ ગાઠની છે. એ પ્રમાણે દીકામાં પણ તે તે શ્રંથાના પ્રસંગને અનુસારે જરૂરી પાઠા આપ્યા છે, એટલું જ નહિ પણ જ્યાં પાતાને જરૂર જણાય ત્યાં સ્પષ્ટીકરણ પણ કર્યું છે. ગુરુત્તત્વનું યથાર્થ નિરૂપણ કરવા માટે અહીં વિશાળ અધિકારસ્વરૂપ ચાર ઉલ્લાસની સંકલના કરી છે. તેમાં પહેલા ઉલ્લાસમાં—(૧) શ્રીગુરૂમહારાજના પ્રભાવ કેવા હાય છે? (૨) ગુરુકુલ વાસના પ્રભાવ શા? (૩) ગુરુ કેવા હાય? (૪) ગુદ્ધા-શુદ્ધભાવનાં કારણા કયાં કયાં હાઈ શકે? (૫) ભાવવૃદ્ધિ શાથી થાય? (૬) કેતળ નિશ્ચયવાદી સ્વમતના પાવણુ માટે કઈ કઈ દલીલા રજૂ કરે છે? (૭) સિદ્ધાંતી તે (નિશ્ચય)વાદનું કઈ રીતે ખંડન કરે છે? આ સાતે પ્રશ્નોના સ્પષ્ટ ખુલાસા છે. બીજા ઉલ્લાસમાં – ગુરુનું લક્ષણુ જણાવતાં સદ્દગ્રુર, વ્યવહારી, વ્યવહત્ત ધ્ય, વ્યવહારના પાંચ ભેદ, પ્રાયક્ષિત્ત, તેને લેવાના

તથા દેવાના અધિકારી, જણાવીને કેવડે શુદ્ધ વ્યવદારને પાળનાર સુગુરૃતું માહાત્મ્ય દર્શા-વવાપૂર્વક વ્યવહાર ધર્મને આદરવા સ્થના કરી છે. ત્રીજા કરદાસમાં – ઉપસંપત્ની વિધિ, કુગુરૃતી પ્રરૂપણા, પાર્શ્વસ્થ વગેરેનું સ્વરૂપ જણાવીને કેવડે કુગુરૃતે તજવાતું અને સુગુરૃતી સેવતા કરવાતું જણાવ્યું છે. ચેથ્યા કરદાસમાં–પાંચ નિર્ભેશાતું સ્વરૂપ છત્રીસ કારને વડાવી જણાવ્યું છે. કેવડે શ્રેથકારે પ્રમક્તિ વગેરે શ્રીતા જણાવીને શ્રંથ પૂર્ણ કર્યો છે.

૮. ક્રાત્રિંસફ્ફ્રાત્રિં(શિકા—(બત્તીય વર્તાથી)—આ લેંચમાં બંચકાર દાત વગેરે ટર પદ્મશ્રેંતું ચચાર્ચ સ્વરૂપ જણાવવા રાષ્ટ્રે ટર વિસાળ પાઠવા છે અને હરેક વિસાગને અત્રીય અત્રીય વ્લાકમાં સંપૃષ્ઠું કરેલા દેવવાથી આતું ચચાર્ચ તામ ક્રાત્રિકાદ્રકાર્વિશિકા પાઠ્યું છે.

પદેલી દાન-કાત્રિબિકામાં-પ્રેથકારે દાનતું સ્વરૂપ જણાવવાં કયા દાનમાં એકાંવ નિર્જસ શાય? અને ક્યા દાનમાં અલ્પ નિર્જરા શાય? વગેરે શીનાતું રહસ્ય દર્શાવ્યું છે. અને કેવડે 'સ્વ્યુતાંત્ર સ્વ'માં આવતાં बાદાક્રમ્માદં વગેરે પહેાતું થયાર્થ સ્ડસ્ય પ્રક્રદ કર્તા આતુર હુષ્કક દર્શન પણ સ્પડ જણાવ્યું કે.

ગીછ દેશના–ફાત્રિણિકામાં—(૧) દેશનાને શયક ટેલ્લ્ શ્રેલાના લેક દેટલા શ્રિલ-દ્રાન, ચિલાદ્રાન, સાવનાદ્રાનનું સ્વરૂપ શું ? બાલ વગેરે જીવાને દેર્ફાને કેવા કેવી દેશના દેવી અને તેમાં કરા ક્રમ રાખવા ? વગેરે પ્રશોદું સ્ડસ્ય વ્યાવસું છે.

ત્રીજી માર્ગ-ફાવિંગિકામાં—માર્ગના લેકો, પ્રશાના-ચ્છારાના આવરણા, ધામિંકાશા-સની પ્રવૃત્તિ, સંવિત્ર, પાસિકતું સ્વરૂપ વગેરે ત્રીના જણાવી છે.

ચાથી જિનમતત્તર તામની કાર્વિકારમાં—ગયુ શીજિનેશ્વરદેવતું મહત્ત્વ શાધિક ફણેને જ્યનિ જ માનતું નેઈએ વખેર છીતા જણાવી છે.

પાંચગી લિકા નામની ફાર્સિકામાં—ક્રમસકિત સ્વરૂપ જણાવનાં પૃથ્વીકૃદિ, અમેનિના ત્યામ, મનાનની જરૂસિયાત સમેરે સીનાં જસાવી છે.

છકી માધુમાગમ્ય નામની કાર્ત્રિશકામાં—વદ્ દ્વાન, તેનાં ચિડ્ને, ત્રિવિધ વિશ્વા, પિક્રિકાર્કિ, વેવાચના વધુ સેંદ, લાવશુક્તિનું સ્વરૂપ જણાત્ર્યું કે.

સાવમી પ્રમંત્ર્યવસ્થા–ફાત્રિશિકામાં—જે સાધુ હોય તે મલમાંસ ખાય જ નહિ, મેથુનનું સહેલપાલું તપ, અનાયતની ત્યાય કરેલા વળેરે શીના વર્ષ્યો છે.

આદની શક્કાત્રિશિકામાં—ત્રવ્યુ પકારતા ગાદ વહેરે છીતા જણાવી છે.

નવમી સ્થા–હાત્રિ'શિકામાં–વ્યવાંતર દેરા જણાવવાપુર્વક ચાર પ્રકારની કથાનું સ્વરૂપ વર્ણસું છે.

દસમી યોગ-ફાત્રિશિકામાં અને અબિયાસમી પાતંબક્યોગ-ફાત્રિશિકામાં—નિષ્ધિ યાજનાં હથણ વગેરે બળાત્રાં છે.

ભારતી ચાલપ્રદિશ નામની કાત્રિ શિકામાં—સુરુપ્ત, કેવપુત્ર, કર્વેલું સ્વરૂપ જાણ**્યું** છે.

તેરમી સુકત્યદ્વેષપ્રાધાન્ય દ્વાત્રિ શિકામાં સુક્તિ, તેનાં સાધન અને મુક્તિનાં સાધનાને સેવનારા ભવ્ય જીવા આ ત્રણમાં દ્વેષ નહિ રાખનારા ભવ્ય જીવા જ યથાથ ગુરુમહારાજ વગેરેની ભક્તિ વગેરે કરી શકે છે. પાંચ પ્રકારના અનુષ્ઠાનમાં વિષાનુષ્ઠાન વગેરે પણ અનુષ્ઠાન નકામાં છે. અને છેલ્લા બે તહેતુ અને અમૃત અનુષ્ઠાન કરવાલાયક છે તે જણાવ્યું છે.

ચાદમી અપુનષ ધક–દ્વાત્રિ શિકામાં—અપુનર્ષ ધક છવતું સ્વરૂપ તથા શાંત ઉદાત્ત છવતું સ્વરૂપ વગેરે બીના જણાવી છે.

: ઃ પ'દરમી સમ્યગ્દ્ષ્ટિ–દ્રાર્ત્રિશિકામાં—શુશ્રુષા, ધર્મવાગ, ત્રણ કારણ વગેરે ખીના જણાવી છે.

સાળમાં મહેશાનુગઢ નામની દ્રાત્રિ શિકામાં—ખીજ મતવાળાને માન્ય મહેશનું લક્ષણ, જપનું ફળ વગેરે ખીના જણાવી છે.

સત્તરમી દેવપુરુષકાર દ્વાત્રિ શિકામાં—નિશ્ચય વ્યવહારનું સ્વરૂપ, સમ્યગૃદશંન પામ્યા ખાદ સંસારી જીવ દેશવિરતિ આદિ ગુણાને કચારે કઈ રીતે પામે ? અને માર્ગાનુસારિતા વગેરે ગુણાની ખીના દર્શાવી છે.

અહારમી યાગલેદ-દ્વાત્રિ શિકામાં—યાગના પાંચ લેદા, મૈત્રી આદિ ચાર ભાવના, ધ્યાન, સમતા વગેરેની ખીના જણાવી છે.

એાગણીસમી યાગવિવેક નામની દ્વાત્રિ'શિકામાં—ત્રણ પ્રકારના યાગ, યાગવ'ચક વગેરે ત્રણ અવ'ચકતું સ્વરૂપ વગેરે બીના જણાવી છે.

વીસમી યાગાવતાર–દ્રાત્રિ'શિકામાં—સમાધિ, આત્માના ત્રજ્ઞુ લેદ, જરૂરી દરિતું સ્વર્પ વગેર ખીના જજ્ઞાવી છે.

એકવીસમી મિત્રા-દ્રાત્રિંશિકામાં—દર્શના આઠ લેદ પૈકી પહેલી મિત્રાદર્શનું વિસ્તારથી સ્વરૂપ જણાવ્યું છે.

ભાવીસમી તારાદિ–દ્રાત્રિંશિકામાં—ત્રણ દર્શિતું એટલે બીજી તારાદેષ્ટિ, ત્રીજી ખલા અને ચાથી દીપ્રાતું સ્વરૂપ જણાવ્યું છે.

તેવીસમી કુતક મહિનવૃત્તિ નામની દાત્રિ શિકામાં—કુતક તું સ્વરૂપ, ત્રણ પ્રકારના બાધ, સદતુષ્ઠાનનું લક્ષણ, કાલ, નય વગેરેની અપેક્ષાએ થતા દેશનાના લેદ વગેરે બીના જણાવી છે.

ચાવીસમી સદ્દષ્ટિ-દ્રાત્રિ'શિકામાં—સદ્દષ્ટિ, કાંતા, ધારણાનું સ્વરૂપ, સ્થિરા દરિમાં થતી છવની સ્થિતિ, પ્રભાદપ્ટિમાં અસંગાનુષ્ઠાન, નિવૃત્તિલાભ વગેરે બીના વર્ણુવી છે.

પગ્રીસમી કલેશહાનાપાય નામની દ્રાત્રિંશિકામાં—નિર્દોષ જ્ઞાન–ક્રિયાની નિર્મલ સાધના કરવાથી કલેશના નાશ થાય છે, આ આખતમાં અન્ય દર્શનીના વિચારાતું યુક્તિથી ખંડન કર્યું છે.

છવીસમી યાગમાહાતમ્ય-દ્રાત્રિ'શિકામાં—ધારણાદિ સંયમનું વિસ્તારથી સ્વરંપ દર્શાવીને હેવડે શુદ્ધ સંયમનું સ્વરૂપ, સુક્તિપદ પ્રાપ્તિનું સ્વરૂપ વર્ણબ્યું છે.

સત્તાનીસમી બિક્ષુશાવ–ઠાત્રિંશિકામાં—દ્રવ્યભિક્ષુ, ભાવભિક્ષુ, પર્યાપવાચક રાખ્ટાનું વિવરણ વગેરે બીના જણાવી છે.

અકુાવીયમી દીશા-ફ્રાત્રિશિકામાં—દીશા શખ્દના નિરૃક્તાર્થ, વ્યુત્પત્તિથી અર્ધ, દીશા આપત્રાના વિધિ, સમાના બે સેદ તથા અકુશાદિની બીના જણાવી છે.

એાગલુત્રીસમી વિનય-ક્રાત્રિં શિકામાં—ગ્રાનાદિ પાંચ પ્રકારના કાચિક વિનયના ૮ લેદ, વાચિક વિનયના ૪, માનસિક વિનયના ૨ લેદ; એમ ૧૩ લેદના દરેકમાં લિક્ટા-અઠ્ઠુમાન -યળુંના-અગ્રાતનાર્પ ચાર ચાર લેદ ઘટાવીને વિસ્તારથી આવન લેદા દર્શાવી છેવટે દીક્ષાપથાંયે નાના એવા પણ પાદકને વંદન કરતું જેઈએ એ વાત જણાવી છે.

ત્રીસમી કેવલિશુક્તિવ્યવસ્થાપન નામની દ્રાત્રિંશિકામાં—દિશં થવા " કેવલીને કવલાહાર ન હાય" એમ જે કહે છે તેતું ખંડન કર્યું છે.

એક્ત્રીસમી મુક્તિ–ફાત્રિંશિકામાં—અત્ય મતે મુક્તિનું ક્વર્પ દર્શાવીને તેમાં અયેષ્ય-પહ્યું જણાવી જેન દર્શન પ્રમાણે યથાર્થ મુક્તિનું સ્વર્ષ જણાવ્યું છે.

ભત્રીસમી સત્તાનસ્તૃતિ–દાત્રિંગિકામાં—સત્તાન દુજનનું સ્વરૂપ, ખલવચનનું ખંડન આપી છેવડે પ્રશસ્તિ આપી છે. આ ભત્રીસ ભત્રીત્રી અને તેના ઉપર 'તત્ત્વાલંદીપિકા' નામક સ્વાપત્ર ડીકા એ ભેનેનું વ્યાદિપ્રમાણ પપ૦૦ વ્યાદ છે.

૯. યતિલક્ષ્ણુસ્યુચ્ચય—આ શ્રંથમાં વાચકવર્ષે પ્રાકૃતની ૨૬૩ ગાથામાં સાધુનાં સાત લક્ષણે વિસ્તારથી જણાવ્યાં છે, તેમાં (૧) માર્ગને અનુસરતી કિયા, આમાં માર્ગની આપ્યા, સિલાંતની રીતિ, આચરાગુનું સ્વરૂપ વગેરે ખીના જણાવી છે. (૨) શિક્ષાને લાયક પળ—આમાં વિધિસ્ત વગેરે સાત પ્રકારનાં સ્વેતનું અને દેશનાનું સ્વરૂપ જણાવ્યું છે. (૩) શ્રદ્ધાલક્ષણમાં વિધિનું ખડુમાન, વિધિત્તાન, પચ્ચકખાણ પાળવાની યાલ્યતા, વધ અને દયાની તરતમતા વગેરે જણાવ્યું છે. (૪) ક્રિયામાં અપ્રમાદ—આમાં સુક્તિદાયક સાધનાની સાધના કરવાની તીત્ર અભિલાયા, ઉપદેશ કરવાને લાયક શહ્યા, દાન, પાત્ર, વગેરેની ખીના જણાવી છે. (૫) શક્યકિયાઆદરલક્ષણમાં અનુષ્કાનવિધિ, નિમંળ ભાવરક્ષા વગેરે ખીના જણાવી છે. (૧) શણાનુરાગ લક્ષણમાં—રાણુવંત અડાયુરુપાની કઈ રીતે પ્રશંસા કરણી વગેરે ખીના જણાવી છે. (૭) શરૂઆના આરાધનમાં મસ્છવાસ, એકાઇ વિચારનારને લાગતાં રૂપણ, વિચારની રીતિ, શરૂશિપ્યના શુખ્યા, સત્યપ્રરૂપકની પ્રશંસા, દ્વમકાળમાં સાધુઓ વ્યાત છે તે વગેરે ખીના જણાવી છે, આ શ્રંથ દીકા વિનાના છે. મૂળ શ્રંથ જૈનષમ પ્રસાજ સભાએ અધ્યાનમારાદિ દરા શ્ર્રીયામાં છપાલ્યા છે.

२०. नथरहरूथ-आ अथभां विस्तार्थी नेशभाहि सात नथे। हुं स्टर्प क्ष्युत्युं छे. प्तथ श्रीहपाथायछ भटाराके के अधाना छेट 'रहस्य' शक्ष आपे खेवा २०८ अथि। स्थ्या प्रार्थ दता. केथ-'मापाविशुक्कवर्ष रहस्यपदाद्विततया चिकीर्षिताच्टोसरशत्यनयान्तः गत्यमारहस्यस्याहादरहस्यादि सत्तात्रीयं प्रकरणियदमारस्यते' खेवा 'शापारहस्य' अथिनी

શારૂ આતમાં જણાવેલ ખીના ઉપરથી નિર્ણય થઈ શકે છે. પણ દાલ તે બધા શ્રંથા લબ્ય નથી. કેમ્ઈ ફેપીએ તે ગ્રંથાના નારા કર્યો હાય એમ સંભવે છે. કૃષ્ત 'ભાષારહસ્ય, ઉપદેશરહસ્ય, નયરહસ્ય 'મળી શકે છે. પ્રસ્તુત નયરહસ્યમાં—નયનું લક્ષણ, તેના પર્યાયા, તેને માનવાની જરૂરિયાત, નયામાં માંહામાં આવેલા અવિરાધ વગેરે ખીના દાખલાદલીલ સાથે સમજાવી છે. નયના બે લેદ, દરેકનું લક્ષણ, પૃજ્ય શ્રીજિનમદ્રબાણું ક્ષમાશ્રમણ ઋન્તુસ્ત્રને દ્રત્યાર્થિકના લેદ માને છે—આ બંને વિચારનું સ્પર્થીકરણ, નયની બ્યાખ્યા જણાવતાં 'શ્રી. અનુયાગફાર' સ્ત્રામાં જણાવેલાં પ્રદેશ—પ્રસ્થક- વસ્તિનાં ઉદાહરણ દર્શાવ્યાં છે. 'તત્વાર્થ, વિશેષાવશ્યક' વગેરમાં જણાવેલ નયલઘણોની અવિરાધ ઘટના કર્યા નય કયા મુદ્દાથી કેટલા નિરૂપાને સ્ત્રીકારે છે, દરેક નયમાંથી કયા કયા હર્યનની ઉત્પત્તિ થઈ છે ! તેનું સ્વરૂપ શું! દરેક નયની પરસ્પર સાપેક્ષતા કઈ રીતે ઘટે! સમભાંગીનું સ્વરૂપ શું! વગેરે ખીના જણાવી છે.

૧૧. નયપ્રદીપ-સંસ્કૃત ગદ્યમય આ શ્રંથ લગભગ ૫૦૦ લિક્યમાછુના સંભવે છે. આની ડીકા નથી. એને બે સર્ગ છે, તેમાં પહેલા સમલંગી સમર્થન નામના સર્ગમાં— સાત લાંગા કર્ષ રીતે થાય ? સ્યાદાદતું સ્વરૂપ શું ? કોઈ ઠેકાછે સ્યાત્ શબ્દ ન હોય તો પણુ ત્યાં અધ્યાદાર કરવા નેઈ એ તેનું શું કારણુ ? લાંગા સાત જ કદ્યા તેનું શું કારણુ ? લંગેર ળીના બહુ જ સ્પષ્ટ જણાવી છે. ખીલા નયસમર્થન નામના સર્ગમાં—નયવિદ્યારની જરૂરિયાત, દરેક નયની મર્યાદા, દ્રત્યનું સ્વરૂપ, સ્વભાવપર્યાય, વિભાવપર્યાય, દ્રત્યધિકનયના દશ સુદ્દાઓ, તેનું સ્વરૂપ જણાવીને પર્યાયાર્ધિક નયનું સ્વરૂપ વર્ણુ છે. તેમાં પર્યાય અને ગુણુના લેદા, તેનું સ્વરૂપ, સામાન્ય-વિશેષના સમાવેશ કર્યા થઈ શકે ? આ ળીના સ્પષ્ટ જણાવીને (૧) નગમનયના સ્વરૂપમાં—ધર્મ, ધર્મી, ધર્મધર્મીની બાબતમાં નગમના અભિપ્રાય, તેમાં સત્યાસત્યતા, નગમનાસ વગેરે ખીના જણાવી છે. (૨) સંગ્રહનયમાં—લક્ષણ, સલક્ષણ-લેદ, સંગ્રહાલાસની ખીના જણાવી છે. (૩) વ્યવહારનયમાં—૧૪ પ્રકારના વ્યવહાર, નવ પ્રકારના ઉપથાર અને સંબંધ જણાવી છે. (૪–૭) જ્જુસ્ત્રાદિ ચાર નયા પર્યાયાર્થિકનય તરીકે ગણાય છે. તેમાં જ્જુસ્ત્રનયનું સ્વરૂપ જણાવતાં લક્ષણ અને લેદનું સ્પરીકરણ કર્યું. છે. શબ્દ નયમાં લક્ષણ જણાવીને કાલાદિની અપેક્ષાએ અર્થલેદ દર્શાવ્યો છે. એવંમતનયના પ્રમંગે લક્ષણ, સ્વરૂપ, શબ્દોનો ખરા અર્થ, નયના લેદ વગેરે ખીના જણાવી છે.

૧૨. નચાપદેશ-આ શ્રંથની ઉપર પાતે 'નયામૃત્તરંગિણી' નામની ટીકા બનાવી છે. તેમાં વિસ્તારથી અહુ જ સ્પષ્ટ રીતે પ્રસ્થકાદિ દશંતા દઈને સાતે નચાનું સ્વરૂપ, દરેક નયની કચારે અને કચાં ચાજના કરવી ? દરેક નય કયા કયા નિશ્નેપા માને છે ? તે તેમજ પ્રસંગે પ્રતિમા-પ્રતિષ્ઠાદિના વિચાર દર્શાવ્યા છે.

૧૩. જ્ઞાનિભિ'દુ-આ બ્રંથનું પ્રકરણ-૧૨૫૦ શ્લાકનું છે. તેના ઉપર ટીકા નથી. (૧) જ્ઞાન એટલે શું ? (૨) મતિજ્ઞાન વગેરે ચાર જ્ઞાન કર્ધ અપેક્ષાએ છાદ્રસ્થિક ગુણ

કહેવાય છે? (૩) ગ્રાનના લેક કેટલા ? (૪) મતિગ્રાનને લક્ષણ શું ? (૫) મતિગ્રાનને શ્રુત ગ્રાનથી અલગ કાંડવાનું શું કારણ ? (૬) યતિગ્રાનના શુત્રનિશ્ચિત—અ<u>શ્</u>રતનિશ્ચિત સેટાનું ક્વરૂપ શું ? (૭) પદાર્થ-વાકયાર્થ-મહાવાકયાર્ધ ગ્રાનને કર્યા ગ્રાનમાં ગણવું ? (૮) તે ચારે પ્રકારના બાધની વડના કઈ રીતે કરવી ? (૯) ચીદ પૃવેતના પટ્સ્થાનપતિત બાધને કયા ગ્રાનમાં ગળુવા ? આ પ્રશ્નોના ખુલાયા યવિસ્તર જણાવીને અવયહાદિકના ક્રમમાં પ્રયોજન, અવયહના લેદ, સ્વરૂપ, તેના પ્રામાણ્યાદિના નિર્જુય, સમ્યક્ત્વને લઈને જ ગ્રાનને પ્રમાણ તરીકે ગણી ગુકાય. સ્યાદ્રાદનું સ્વરૂપ, એક પદાર્થના ઝાનથી સર્વ પદાર્થીનું ઝાન, અવબહાદિ ભેદામાં ગ્રાન–દર્શનની ચાજના વગેરે ખીના મતિગ્રાનના પ્રયુગે સ્પષ્ટ જણાવી છે. શ્રુતગ્રાનના વર્ણનમાં-સ્વરૂપભેદ, મિતિશતમાં તફાવત વગેરે જહાવ્યું છે. અવધિગ્રાનના વર્જુનમાં-લક્ષણ, લેક, પરમાવધિ, મનઃપર્યવ ગ્રાનથી ભિન્નતા જણાવી છે. મનઃપર્યવ ગ્રાનના વર્ણનમાં-લસ્તુલ, ચિતિત પદ્માર્થને જાલુવાની રીત, મનઃપર્યવમાં અપેક્ષાએ દર્શનના સ્વીકાર-અસ્વી-કાર, મનઃપર્યવથી જે મન જણાયતેનું સ્વરૂપ વગેરે ખીના વર્ણવી છે. પાંચમા દેવલગ્રાનના વર્ણું નમાં – તેનું લક્ષણ, સર્વ ગતાની સિદિ, તેનું પ્રામાણિકપણું, કેવલગ્રાનાવરણના ક્ષયની આવશ્યકતા, કમેનું આવારકપાયું, કફ્શુદ્ધાદિથી ક્ષાભાદિની ઉત્પત્તિને સ્ત્રીકારનારના મતનું ખંડન, નૈરાત્મ્યભાવ માનનાર બોહમતે સર્વગ્રપણાનું અવ્યવસ્થિતપહું, એકરસ પ્રદાનાનને કેવલગ્રાન તરીકે માનનારના મતતું ખંડન, પારમાર્થાદિક ત્રચુ શક્તિ, દરિસ્ટિવાદનું ખંડન, પ્રદાવિષય અને પ્રદાકારકૃત્તિનું –અધ્યાસનું -અગ્રાનક્કપનાનું ખંડન, દ્રવ્યાર્થિક નયની અપેક્ષાએ સ્ક્ષ્મ વિચારશ્રેષ્ઠ્રિ જણાવી છે. છેવટે મલ્લવાદી, શ્રીસિન્દસેન દિવાકર તથા જિનભદ્રમણિના કેવલગ્રાન-દર્શન અને તેના ઉપયોગની આખતમાં વિચારા જણાવી 'સસ્મિતિ-તક 'ની તે વિષયની ગાથાએ તું સ્પષ્ટ વિવેચન દર્શાવી નયવાદની અપેક્ષાએ તેનું એકીકરજી ખતાવ્યું છે.

૧૪. જ્ઞાનસાર્-આ બંધમાં તુદા તુદા પૃર્ણતા વગેરે ટર પદાર્થોનું આક આક ^લાકમાં બદુ જ સરસ વર્ષન સંક્ષેપમાં કર્યું કે-આની ઉપર પાતે બાલાવબાધ (ટબા) પળુ કર્યો કે, એમ નીચેના ^લાકથી શ્રાબિત ઘાય છે:

> " ऐन्द्रबुन्द्नतं नत्या, वीरं तत्त्यायदेशिनम् । यथः श्रीहानसारस्य, छिल्यते छोकमापया ॥ "

આ ગાંધ ઉપર પારક ટ્રીદેવચંદ્રશ્વો અને પંત્યાત્ર શ્રીગ'બીરવિજયજીએ સંસ્કૃત ટીકા રચી છે.

૧૫. એન્દ્રસ્તુનિએ -આમાં શ્રીશાસનક્તુતિના એવી સ્તુતિએ અનાવી છે.

૧૧. ઉપદેશ રહસ્ય. ૧૭. આરાધકવિરાધક ચનુર્લેગી, ૧૮. આદિજિન-સ્તવન. ૧૯. તત્ત્વવિવેક, ૨૦. નિલ્ન્વચાેક્તિ, ૨૧. ધર્મ પરીક્ષા, ૨૨. ગ્રાનાણુંવ, ૨૩. નિશાસકાવિચાર. ર૪. ન્યાયખંડન ખંડે ખાદ્ય-(મહાવીરસ્તવ પ્રકરનુ) શ્રીઉપાધ્યાયછ મહારાજે રચેલ નવ્યન્યાયની વિશિષ્ટ કાેટિના આ શ્રંથ અત્યંત અર્થગંભીર અને જિટલ છે. આ એક જ શ્રંથ વાચકવર્યના પ્રખર પાંડિત્યની સાક્ષી પૃરે તેવા છે. આ શ્રંથ ઉપર અમારા પરમાપકારી પરમપૃજ્ય ગુરુમહારાજ શ્રીવિજયને મિસ્રીશ્વરન્છ મહારાજે માટી ટીકા રચી છે અને અમારા માટા ગુરુલાઈ પરમપૃજ્ય આચાર્ય મહારાજ શ્રીવિજયદર્શનસ્રીશ્વરન્છ મહારાજે 'કલ્પલિકા' નામની ટીકા ખનાવી છે. આ શ્રંથનું શ્રંથપ્રમાન પ્રાન્થ પ્રાન્થ છે.

રંપ. અસ્પૃશદ્ભગતિવાદ.

ર દ. ન્યાયાલાક—આમાં ત્યાય દરિષ્ટે સ્યાદાદાદનું નિરૂપણ કર્યું છે. આ બ્રંથની ઉપર અમારા પરમપ્ત્ય પરમાપકારી ગુરુવર્ય આગાર્ય મહારાજ શ્રીવિજયને મિસ્રીશ્વરજી મહારાજે સ્પષ્ટ તત્ત્વબાધદાયક વૃત્તિ ખનાવી છે, જે શ્રીજૈન બ્રંથપ્રકાશક સભા, અમદાવાદ તરફથી છુપાયેલ છે. આ બ્રંથનું બ્રંથમાન ૧૨૦૦ શ્લોકપ્રમાણ છે.

-યાયંખંડનખાદ્ય અને ન્યાયાક્ષાકની શ્રીઉપાધ્યાયજીએ પાતાના હાથે લખેલી પ્રતા પણ મળી શકે છે.

રંહ. પ'ચનિગ્ર'થી પ્રકરાશુ-મામાં પંચ નિમ્ર'થાની ખીના જણાવી છે.

ર૮. પરમ_જયાતિ: પ ચવિ શિકા.

્ર ૬૯. પરમાત્મપ ચવિ શિકા.

30. પ્રતિમાશતક-મૂળ શ્લાક ૧૦૦-આના ઉપર વાચકવર્યે માટી ટીકા રચી છે. અને તે ટીકાને અનુસરીને વિ. સં. ૧૭૯૩ માં પોલિ મીય ગચ્છાધીશ શ્રીભાવપ્રભસ્રિજીએ નાની ટીકા બનાવી છે. શ્રંથકારે આ શ્રંથમાં શરૂઆતમાં ૧૯ શ્લાકમાં શ્રી. જિનપ્રતિમાને અને જિનપ્રતિમાની પૂજને જલાવનારા આગમાદિને નહિ માનનારા લુંપકમતનું ખંડન કર્યું છે. પછી ૯ શ્લાકમાં ધમ સાગરીય મતનું ખંડન કર્યું છે. તે પછી બે શ્લાકમાં જિનપ્રતિમાની સ્તુતિ કરી છે. ત્યાર બાદ ૧૨ શ્લાકમાં પાયચંદ મતનું અને ત્રજી શ્લાકમાં પુરુષકમં વાદીના મતનું ખંડન કરીને બે શ્લાકમાં જિનભક્તિ કરવાના ઉપદેશ આપ્યા છે. તે ઉપરાંત જિનસ્તુતિંગભિત નયલેદા પછું દર્શાવ્યા છે. પછીના ૬ શ્લાકમાં સર્વંત્ર પ્રભુની અને તેમની પ્રતિમાની સ્તુતિ જણાવીને છેવંટે પ્રશસ્તિ કહીને શ્રંથ પૃણ કર્યા છે.

39. પ્રતિમારથાપનન્યાય-આ બંથ અપૂર્ણ મળ્યા છે.

32. ફ્લાફ્લવિપયક પ્રશ્નોત્તર, (?) 33. ભાષારહસ્ય, 3૪. માર્ગ પરિશુદ્ધિ, 3૫. મુક્તાશુક્તિ, ૩૧. યતિદિનચર્યા પ્રકરણું, ૩૭. વૈરાગ્યકલ્પલતા, (મંધમાન- ૧૦૫૦), ૩૮. શ્રી. ગાડીપાર્ધાસ્તાત્ર-(૧૦૮ પદ્ય), ૩૯. વિજયપ્રભસૂરિસ્વાધ્યાય- (સંસ્કૃતમાં), ૪૦. શં ખેશ્વરપાર્શ્વસ્તાત્ર-(ગંધમાન ૧૨૨), ૪૧. સમીકાપાર્શ્વસ્તાત્ર, ૪૨. સામાચારી પ્રકરણું, સ્વાપન્નદીકા સહિત, ૪૩. સ્તાવાલી.

ત્યાયાચાર્ય શ્રીયશાવિજયજીકૃત ટીકાર્યથા

૪૪. અપ્ટસહસીવિવર્ણુ-ત્યાયત્રાસ્ત્રના આ અંધ દિશંબરીય છે. મૂક કારિકાના રચનાર-શ્રીસમંતભદ્ર છે. ભાષ્યકર્તા-શ્રીઅક્ષક દેવ છે, અને તેને અતુસરીને વ્યાખ્યાકાર-વિદ્યાનંદ છે. શ્રીક્રપાધ્યાયળ મહારાજે આના હપર વિવરાષ્ઠ્ર સ્ત્યું છે.

૪૫. કર્મ પ્રકૃતિ-માટી ટીકા-ક્રાંથમાન ૧૩૦૦૦ ⁹સાક. આની રવહસ્ત્રિસિંગ પ્રત પણ મળી શકે છે. શ્રીમલયગિરિ મહારાજે કરેલી નાની ટીકાના આધારે આ માટી ડીકા બતાવી છે.

૪૧. કર્મ પ્રકૃતિ-ક્ષલુ ટીકા-આ લંચની સાત ગાયા સટીક મળી શકે છે, એ આત્માનંદ સલાએ કપાવી છે.

૪૭. તત્ત્વાર્થ વૃત્તિ-પૃત્ય શિફમસ્વાતિ વાચક મહારાજે 'તત્ત્વાશોષિગમ સૂત્ર' નામક મંચની રચના કરી છે. તેની જ્ઞયર જેમ શ્રીહિરિસક્સ્યૃરિ અને શ્રીભ્રિક્સેન ગણિ વગેરે મહાત્માઓએ દીકા બનાવી છે, તેમ શ્રીકપાંચાયછએ પણ દીકા બનાવી છે. પણ દીકા આખી મળતી નથી. ફક્ત પ્રથમ અધ્યાયની દીકા મળી છે. તેમાં પણ કારિકાની દીકા અપૃતું મળી છે, તેને મારા પરમાપકારી વિદ્યાસુર આચાર્યમહારાજ શ્રીવિજયક દયસ્ર સ્ટિંગ્ઝ મહારાજે પૃતું કરી છે. તે અમદાવાદના સંવત્રી દેક માલેક્સાલ મનસુખમાઇએ છપાવી છે.

૪૮. કાદરાારચક્રાંવ્હાર વિવરણ-આ ગ્રંથતું ગ્રંથમાન ૧૮૦૦૦ વ્સાકપ્રમાષ્ટ્ર છે.

૪૬. ધર્માસ શ્રહ ડિપ્પણ-પૃક્ષકાર કપાધ્યાય શ્રીમાનવિજયજીના ગંધ કપરતું ડિપ્પલ, સાવનગરથી જેન આત્માનંદ સલા તરફથી પ્રગટ થયું છે.

યઃ. પાતંજક્ષ યાેગસ્ત્રસૃત્તિ-આ શ્રંથ શીજેત આત્માતંદ સભા, ભાવનગર તરફથી ગુગર થયાે છે.

૫૧. ચાગવિશિકા વિવરણુ-પ્રકાશક-અત્માનંદ સલા, લાવતગર.

પર. શાસ્ત્રવાત્તાં સમુચ્ચયવૃત્તિ—∗આ દીકાનું નામ 'સ્પાદાદકલ્પલતા ' છે અને એનું લંધમાન ૧૩૦૦૦ લ્લાકપ્રમાણ છે. આ લંધ ભાવનગરની શ્રીયશ્રાવિજયદ જૈન લંધમાલાએ પ્રક્રા કર્યો છે.

ેપક. પાહેશાક્ષ્યુત્તિ-મૂલકાર શ્રીહસ્તિદસ્તિ, ગ્રંથમાન ૧૨૦૦ શ્લાક છે. પ્રકાશક શ્રેક દેવચંદ લાલલાઈ જેન યુસ્તકાહાર ક્રંડ, સુરત, ડીકાનું નામ ' ધાગફીપિકા ' છે.

૫૪. સ્તવપરિદ્રા પદ્ધતિ-ગાસવાનાં મુસ્ય શકામાં આ મંથની સાધી આપી છે.

માં મંત્ર કપર પૂ. ચા. શ્રીकिश्वझाव्हण्यीखाळके વ્યવંત્ર કીમ સ્વીતે પ્રસિદ કરાચો છે. સં.

ઉપાધ્યાયજકૃત અનુપલબ્ધ ગ્રંથા અને ટીકાએ 🛷

૫૫. અધ્યાત્મબિંદુ, ૫૬. અધ્યાત્માપદેશ, ૫૭. અલંકારચૂડામણિટીકા—આના ઉલ્લેખ 'પ્રતિમાશતક'ના ૯૯મા ^{શ્}લાકની સ્વાપગ્રટીકામાં આ પ્રમાણે છે—' प्रपञ्चितं चैतद्रहत्तर-चूडामणिवृत्तावस्माभिः।'

પ૮. આકર, ૫૯. આત્મખ્યાતિ (જ્યાતિ: १), ६०. #કાવ્યપ્રકાશદીકા, ६૧. છંદ-શ્રૂહામણિદીકા, ६૨. જ્ઞાનસારચૂર્ણિ, ६૩. તત્ત્વાલાકવિવરણ, ६૪. ત્રિસ્ત્ર્યાલાકવિધિ, ६૫. દ્રવ્યાલાક, ६६. પ્રમારહસ્ય, ६७. મંગલવાદ, ६૮. લતાદ્રય, ६૯. વાદમાલા, ७०. વાદ-રહસ્ય, ૭૧. વિચારખિંદુ, ૭૨. વિધિવાદ, ૭૩. વીરસ્તવદીકા, ૭૪. વેદાંતનિર્ણય, ૭૫. વેદાંતવિવેક—સવ'સ્વ, ૭६. વેરાગ્યરતિ, ૭૭. શાઠપ્રકરણ, ૭૮. સિદ્ધાંતતક'પરિબ્કાર, ૭૯. સિદ્ધાંત—મંજરી—દીકા, ૮૦. સ્યાહાદમંજૂષા (સ્યાદ્રાદમંજરીદીકા), ૮૧. સ્યાદ્રાદરહસ્ય— આ શ્રંથના ઉલ્લેખ 'ન્યાયાલાક'ના ત્રીજ પ્રકાશની છેવટે આ પ્રમાણે આવે છે.—'પર્યાયાદ્યાનત્તા દતિ न तेपां विविच्यविभाग इत्यधिकमत्रत्यं तत्त्वं स्याद्वादरहस्यादावनुसंघेयम्'।

આપણું ઉપર નેયું તે પ્રમાણું ઉપાધ્યાયજીકૃત મંથાના ત્રદ્યું વિભાગ પાડી શકાય— (૧) મૂલમંથા, (૨) ટીકામંથા, (૩) અનુપલબ્ધ મંથ—ટીકાદિ. તેમાં મૂલમંથા લગભગ ૪૩, ટીકામંથા, ૧૧, અને અનુપલબ્ધ મંથ—ટીકાદિની સંખ્યા ૨૭ છે. ગુરુતત્ત્વિનિશ્વાદિ મંથા ઉપરથી એ પણું નિર્ણય જરૂર થઈ શકે છે કે વાચકવર્ષે પ્રાકૃત મૂલમંથા પણ રચેલા છે. અત્યાર સુધીમાં જણાવેલી ખીના ઉપરથી વાચકા નણી શકશે કે ન્યાયાચાર્યજી મહારાજ પ્રાકૃત અને સંસ્કૃતભાષાના અને ખંને ભાષામાં રચાયેલા પ્રાચીન મંથાના ઉચ્ચકાટિના નાણકાર હતા.

ઉપાધ્યાયજકૃત લાકભાષાખદ્ધ કૃતિએા

પરાપકારરસિક વાચકવરે કેવળ વિદ્ધદ્ભોગ્ય સાહિત્ય રચીને જ સંતાષ નથી માન્યા. તેમને બાલજવાને પણ લાલ આપવાની તીવ ઉતકંઠા હતી. અને તેથી તેમણે લાકભાષાબદ્ધ અનેક નાની-માટી, ગદ્ય-પદ્ય કૃતિઓની રચના કરી છે. આ સંબંધમાં એમ કહેવાય છે કે -ગુરુમહારાજની સાથે ઉપાધ્યાયજી કાશીમાં અભ્યાસ પૂર્ણ કરીને આગ્રા વગેરે બીજા બીજા સ્થળે વિદ્ધાર કરતા કરતા અનુક્રમે એક ગામમાં પધાર્યા. સાંજે પ્રતિક્રમણમાં એક શ્રાવકે શ્રીનયવિજયજીની આગળ વિનંતિ કરી કે, 'આપની આગ્રાથી આજે આપના વિદ્ધાન શિષ્ય શ્રીયશાવિજયજી મહારાજ સજઝાય બાલે, તે સાંલળવાની ઇચ્છા છે, કૃપા કરીને તેમને આગ્રા દેશાજી.' આ ઉપરથી ગુરુમહારાજે યશાવિજયજીને પૃષ્ઠયું કે, 'કેમ, લાઈ! બાલશા?' આના જવાળમાં વાચકવર્ષે જણાવ્યું-'મને સજઝાય કંકસ્થ નથી (આવડતી નથી.)' શ્રીયશાવિજયજીનાં આ વેલુ સાંલળીને શાવકે કહ્યું કે, 'ત્યારે શું બાર વરસ કાશીમાં રહીને ધાસ કાપ્યું?' આ સાંલળીને શ્રીયશાવિજયજી મહારાજ સમયસ્ત્રયકતા વાપરીને મીન રદ્યા.

^{*} ઉપરતી યાદી ચાલુ પરંપરા સુજયની છે તેથી ભરાયર નથી. વધુ ચાકસાઇવાળી યાદી ૨૦૧૧ માં અમે અલગ પ્રગટ કરી છે તે જોવી. –સે પા.

પ્રતિક્રમણ પૃરું થયા બાદ વિચાર કરતાં સ્પષ્ટ જણાયું કે, 'શ્રાવકનું કહેવું અક્ષરે અક્ષર વ્યાજળી છે. કારણ કે પ્રાકૃત—સંસ્કૃતના બાલુકારની સંખ્યા બહુ એક્કિ છે તે નહીં બાલુનારને તા પ્રચલિત ભાષામાં જ બાધ થઈ શકે. આ ઇરાદાથી બહુ જ વૈરાગ્યમય સજગ્રય બનાવીને, માઢે કર્યાં બાદ બીજે દિવસે પ્રતિક્રમણમાં શ્રીયશાવિજયજી મહારાજ સજ્ગ્રયના આદેશ માગી તે બાલવા લાગ્યા. સાંભળનારા શ્રાવકા સાંભળતાં વૈરાગ્યરસમાં ઝીલવા માંડ્યા. સજગ્રય લાંબી હતી, તેથી વાર બહુ લાગી. શ્રાવકા પૂછવા લાગ્યા કે, 'હવે બાકી કેટલી રહી ?'

ઉપાધ્યાય મહારાજના વિચાર એ હતા કે જ્યાં સુધી ઘાસ કાપવાનું કહેનાર શ્રાવક ન ખેલે ત્યાં સુધી સજકાય ચાલુ રાખવી. કેટલાક સમય વીત્યા બાદ એ જ શ્રાવકે પૂછ્યું કે, 'હેં મહારાજ! હવે સજકાય કેટલી બાકી રહી?' જવાબમાં શીઉપાધ્યાય છએ જણાવ્યું કે, 'મહાતુલાવ! બાર વરસમાં પેદા થયેલા ઘાસના આજે પૂળા બંધાય છે. એક વરસના ઘાસના પૂળા બાંધવામાં ઘણા સમય ભય તા આમાં વધારે સમય લાગે એમાં નવાઈ શી?' શ્રાવક મુદ્દે સમજી ગયા અને માફી માગવા લાગ્યા. શીઉપાધ્યાય છએ સજકાયની હાળ પૃરી કરી. આ રીતે ઉપાધ્યાય છ મહારાજે લાકભાષાબહ કૃતિએ રચવાની શરૂઆત કરી એમ કહેવાય છે. ઉપર જણાવેલી ઘટના અમદાવાદમાં અગર સુરતમાં ખની, એમ પત્ર કહેવાય છે. વાચકવયે ગુજરાતી ને હિંદી વગેરે ભાષામાં જે તત્ત્વએ ધદાયક શ્રેથા બનાત્યા છે તેમાંના કેટલાકની નામાવલી આ પ્રમાણે છે:—

૧. અધ્યાતમત પરીક્ષાના ટળા (મુદ્રિત), ૨. આનંદઘન—અપ્પદ્દી, મેડતામાં આનંદધ્વન્છ મહારાજને ઉપાધ્યાયછ મળ્યા હતા. તેમના વિશાલ અનુભવ, નિઃસ્પૃહતા વગેરે અપૂર્વ શુણાંથી આકર્યાં ને વાંચકવર્ય તેમની સ્તુતિ અનાવી હતી. તે આઠ શ્લાક પ્રમાણ હાવાથી 'અપ્પદ્દી' કહેવાય છે. ૩. ઉપદેશમાલા, ૪. જ' ખૂરવામીરાસ, ૫. જસવિલ સ—આમાં અધ્યાતમાદિ આત્મદપ્ટિને પાપનાર તત્ત્વાને લક્ષ્યમાં રાખીને પદ વગેરે સ્વરૂપે રચના કરી છે. દ. જે સલમેર પત્ર, ૭. જ્ઞાનસારના ટળા, ૮. તત્ત્વાર્થસ્વના ટળા, ૯. દ્રવ્યગ્રુણુપર્યાવરાસ (મૃદ્રિત), ૧૦. દિક્પા ચારાશી બાલ-આની રચના કાશીથી આવતાં કરી હતી, ૧૧. પંચપત્મેરિતી, ૧૦. દિક્પા ચારાશી બાલ-આની રચના કાશીથી આવતાં કરી હતી, ૧૧. પંચપત્મેરિતીતા (મુદ્રિત), ૧૨. છાદ્યગીતા (મુદ્રિત), ૧૩. લાકનાલ (મત્રીશી)—ખાલાવળાધ (રચના સં. ૧૬૬૫), ૧૪. વિચારબિંદુ, ૧૫. વિચાર્નિદ્દના ટળા, ૧૬. શકપ્રકરણના ખાલાવળાધ, ૧૭. શ્રીપાલરાસના ઉત્તર ભાગ—(પૂર્ણ કરવાના સમય વિ. સં. ૧૭૩૮. ઉપાધ્યાય શ્રી.વેનયવિજયછ મહારાજે આ રાસની શરૂઆત કરી હતી. રાંદેરમાં અંતિમ સમય બાળીને તેઓએ પરમ વિચાસભાજન શ્રીયશાવિજયછ મહારાજને તે પૃરા કરવાની ભલામળ કરી હતી. તે પ્રમાણ વાચકવર્ય આ રાસ પૃરા કર્યા.), ૧૮. સમાધિશતક, ૧૯. સમતાશક, ૨૦. સમ્યક્શાસ્ત્ર સારપત્ર, ૨૧. સમુદ્રવહાલું સંવાદ, ૨૨. સમ્યક્ત ચાપાઈ.

ઉપાધ્યાયજકૃત⁻ સ્તવના

ર૩. આવશ્યકસ્તવન-આમાં છ આવશ્યકનું સ્વરૂપ, કૂળ વગેરે ખીના જણાવી છે. ૨૪. કુમતિખાંડન સ્તવન. ૨૫–૨૬–૨૭–વર્તમાન ચાવીશીના ચાવીશ તીથ કર પ્રભુ દેવનાં સ્તવના-આ ત્રણ ચાવીશીમાં પ્રભુમક્તિ વગેરે ખીના બહુ જ સુંદર રીતે સરલ ભાષામાં જણાવી છે. તેમાંની એક ચાવીશી શ્રી જૈનશ્રેયસ્કર મંડણે અર્થસહિત છપાવી છે. ૨૮. દશમતસ્તવન. ર.૯. નવપદપૂન-આમાં શ્રીપાક્ષરાસમાં નવપદનું સ્વરૂપ જણાવતી વેળાએ જે નવ ઢાળા આવે છે તે જ ઢાળા આપી છે. કેટલાક ભાગ વિમલગચ્છના શ્રીજ્ઞાનવિમલ-સૂરિએ અને કેટલાંક પદ્યો શ્રીદેવચંદ્રજીએ અનાવ્યાં છે. ૩૦. નયગર્ભિત શ્રીશાંતિજિન સ્તવન, ૩૧. નિશ્ચય–વ્યવહારગર્ભિત શ્રીસીમંધર પ્ર<u>ભુનું</u> સ્તવન, ગાથા–૪૨, ૩૨. પાર્શ્વનાથ સ્તવન (ધમાલ), ૩૩. પાર્શ્વનાય (દાતશુ) સ્તવન, ૩૪. મહાવીર સ્તવન, ૩૫. માન એકાદશી ૧૫૦ કેલ્યાણુકનું સ્તવન, ૩૬. વિહરમાન જિનવીશી, ૩૭. શ્રીવીર સ્તુતિ હુંડીરૂપ સ્તવન, ગાથા-૧૫૦; આમાં ઢૂંઢકમતનું ખંડન કરીને પ્રતિમાપૂજા કાેેે કાેેે કરી ? તે ખીના ફૂંઢકને માન્ય એવાં ૩૨ સૂત્રામાંના પાઠા જણાવીને પ્રતિમાની જરૂરિયાત વગેરેનું વર્ષન કર્યું છે, ૩૮. શ્રીસીમંધર ચૈત્યવંદન, ૩૯. શ્રીસીમંધરસ્વામીને વિનંતિ ગર્ભિત સ્તવન, ગાથા–૧૨૬; આમાં સાચા ગુરુતું સ્વરૂપ વગેરે ખીના જણાવી છે, ૪૦. શ્રીસીમ ધર-સ્વામી સ્તુતિરૂપ સ્તવન, ગાથા ૩૫૦-આમાં સાધુજીવન અને શ્રાવક્છવનને અંગે અફ જ જરૂરી ખીના સ્પષ્ટલાવે જણાવી છે.

ઉપાધ્યાયજકૃત સજ્ઝાયા

૪૧. અહાર પાપસ્થાનકની સજ્ઝાય, ૪૨. અમૃતવેલી સંજ્ઞાય, ૪૩. અગિયાર અંગની સજ્ઝાય—હાલ ૧૧, ૪૪. અગિયાર અંગલપાંગની સજ્ઝાય, ૪૫. આત્મપ્રણાધ સજ્ઝાય, ૪૬. આઢ દેષ્ટિની સજ્ઝાય, ૪૭. ઉપશમશ્રેષ્ટ્રિની સજ્ઝાય, ૪૮. ચડતા પડતાની સજ્ઝાય, ૪૯. ચાર આહારની સજ્ઝાય, ૫૦. જ્ઞાન ક્રિયાની સજ્ઝાય, ૫૧. પાંચ મહાવતોની ભાવનાની સજ્ઝાય, ૫૨. પાંચ કુગુરુની સજ્ઝાય, ૫૩. પ્રતિક્રમણ ગલઉંતુની સજ્ઝાય, ૫૪. પ્રતિમાસ્થાપનની સજઝાય, પપ. યતિધર્મ અત્રીશીની સજ્ઝાય, ૫૬. સ્થાપનાકલ્પની સજ્ઝાય, ૫૭. સુગુરુની સજ્ઝાય, ૫૮. સંયમશ્રેષ્ટ્રિની સજ્ઝાય, ૫૯. સમકિતના ૬૭ બાલની સજ્ઝાય, ૬૦. હરિયાલીની સજ્ઝાય, ૬૧. હિતશિશ્યાની સજ્ઝાય—અ અધી સજ્ઝાયો સુદ્રિત થઈ ગઈ છે.

આ પ્રમાણે—(૧) પ્રાકૃત, સંસ્કૃત, હિંદી, ગુજરાતી ભાષાના જે જે શ્રંથા પ્રાચીન દીપ, (૨) જ્ઞાનભંડારાના અવલાકન, (૩) જુદા જુદા વિદ્વાનાએ વાચકવર્યના શ્રંથાની કરેલી યાદી, (૪) મુદ્રિત શ્રંથા અને (૫) જે શ્રંય હાલ મળી શકતા નથી, પણ છપાયેલા કે લખાયેલા પ્રાચીન શ્રંથામાં તે અલભ્ય શ્રંથાના લીધેલા પાઠ અથવા કરેલા નામનિદેશ—આ વગેરે ઉપરથી પરિશ્રમપૂર્ણ વાચનના પરિશામે તૈયાર કરેલી વાચકવર્યની શ્રંથાવલી જણાવી છે. સંભવ છે કે, આથી પણ વધુ શ્રંથા જરૂર હાવા નેઈએ, છતાં એાછા શ્રંથા કેખાય છે, તેનું કારણ શું શ આના જવાખમાં કેટલાએક એમ માને છે કે ઉપાધ્યાયજના સમયમાં યતિઓનું ખદુ જ નેર હતું. આ વખતે પંત્યાસળ મહારાજ સલ્યવિજયળ ગણિ વગેરેની સાથે સામેલ થઈ ઉપાધ્યાયળ મહારાજે કિયા–ઉદ્ધાર કર્યો, સાચા શુરુ કેવા શુજુવંત હાય વગેરે ખીના નિડરપણે ઉપદેશદ્વારા અને શ્રંથાદ્વારા જણાવવા લાગ્યા. આથી યતિઓએ દેપ ધારણ કરીને શ્રીઉપાધ્યાયળ મહારાજ ઉપર ખદુ જ ભયંકર નુલમા શુજાર્યા, છતાં તેએ ડગ્યા નહીં, અને તેમના ઘણા શ્રંથાને અગ્નિશરણ કર્યા. આથી તે શ્રંથા અલ્પ પ્રમાણમાં હયાતી ધરાવે છે.

દીકાકાર મહાપુરુષોમાં પૃત્ય શ્રીમલયગિરિજી મહારાજ વધારે વખણાય છે, કારણ કે તેઓએ બનાવેલા બેંચામાં શબ્દોની અને પદાર્થની સરલતા અદુ દેખાય છે. આથી તે બંધોના અલ્પેબોધતાળા જીવા પણ હોંશથી લાભ લઈ શકે છે. આવી સરલતા શ્રીવાચક-વર્યના પ્રાકૃતાદિ ભાષાના બંધોમાં જણાતી નથી, એમ બંધકાર પાતે પણ છેવટે સમજી શક્યા છે. માટે જ શુજરાતી, હિંદી ભાષામાં પણ પૃત્યશ્રીએ વિશાલ પ્રમાણમાં બંધરચના કરી છે. એક જ બંધકાર જુદી લંદી ભાષામાં વિવિધ પ્રયત્ના કરે, એવાં દરાંતા વાચકવર્યની પહેલાના સમયનાં મળતાં મુશ્કેલ છે. પ્રશસ્ય સરલ દીકાકાર શ્રીમલયગિરિજી મહારાજ અને સંબહકાર શ્રીઉમાસ્ત્રાતિ વાચકવર્યની માક્ક પૃત્ય શ્રીઉપાધ્યાયજી મહારાજ દરેક પદાર્થના ખરા સ્વરૂપને નિડરતા અને મધ્યસ્થતા જાળવીને કહેવામાં સંપૂર્ણ પ્રશંસા પામેલા છે, માટે જ જયાં તેમના બંધોની સાક્ષી આપવામાં આવે, ત્યાં સર્વ કાઈ કખૂલ જ કરે છે.

ગારમી સફીના મહાન જ્યાંતિષ્દ'ર કલિકાલસર્યં શ્રીહિમચંદ્રાચાર્યની જેમ મહાપાધ્યાય શ્રીયશ્રાવિજયછ મહારાજ પાતાના પ્રખર પાંડિય અને ઉદાત્ત ચાસ્ત્રિના ભળે અઢારમી સફીના મહાન જ્યાંતિષ્દ'ર હતા. તેમણે ગ્રાન અને ચાસ્ત્રિના સુમેળ સાધીને પાતાનું કલ્યાછુ સાધવા સાથે સમસ્ત સંઘને કલ્યાણના માર્ગ દર્શાવ્યા હતા. શ્રીઉપાધ્યાયછ મહારાજની એ અમર કૃતિએ આપણને એ જ પરમ કલ્યાણના માર્ગ દર્શાવે એ સાવનાપૃવંક આ લેખ અહીં સમાપ્ત કરે છે.

જૈનદર્શનનું ચિંતનકાવ્ય **ગ્રાનસા**ર

લેખક : શ્રીયુત પી. કે. શાહ (અમદાવાદ.)

શ્રીમદ્ યશોવિજયછના અનેક શ્રેશ, અનેક કૃતિએ આપણને એમની વિરલ પ્રતિભાના પરિચય આપી જાય છે. એમની સાહિજક પ્રતિભા, તત્ત્વગ્રાહી દેષ્ટિ અને છવનને ઉચ્ચ કરનારી ભાવના, સંસ્કૃતિ સાથેના અને તર્ક પહિત સાથેના એમના ગાઢ સંપર્ક—આ અધાં શ્રીમદ્ યશોવિજયછના છવનના ને કવનના અનેકવિધ પાસાંએ છે. શ્રીમદ્ યશોવિજયછ તર્કના પ્રેપ્ર જ્ઞાતા હતા અને એ રીતે દર્શનના વિવેચક હતા અને એ પણ માત્ર શુષ્ક પાંડિસપૂર્ણ વિવેચક નહિ પણ છવનનું યથેચ્છ અને શાસ્ત્રીય દર્શન કરાવનાર વિવેચક—કવિ. શ્રીમદ્ યશોવિજયછના સાહિત્યની અનેક કૃતિએા ઉપલબ્ધ છે.

આ કૃતિઓમાં ઠેરઠેર ચિંતનની સાથે કવિહ્દયના ચમકારા જેવા મળે છે. માત્ર શુષ્ક પંડિત હોત તો શ્રીમદ્ યશોવિજયજીની અનેક કૃતિઓમાંથી આપણને માત્ર પંડિતાઈ મળત, પણ આપણને મળે છે શાસ્ત્રને કવિતામય રીતે જેવાની દેષ્ટિ. શ્રીમદ્ યશોવિજયજીની અનેક કૃતિઓ માત્ર કવિતાની રીતે મૂલવવા જેવી છે. જૂની શુજરાતી કવિતામાં એ રીતે એમનું અનન્ય સ્થાન છે. એમની અનેક કૃતિઓમાં ભાષાના વિકાસના અને સમાજજીવનના દર્શનના ખ્યાલ આવે છે. એ સમાજજીવનની રૃહિઓ, ઇચ્છાઓ, આરોહા—અવરાહા એ સમયના જિવાતા જીવનની સમીક્ષા એમની કૃતિઓ કરે છે. કયારેક એમની કૃતિઓ સમાજની આરસી બનીને આવે છે, કયારેક એમની કૃતિઓ કવિત્વ ને ચિંતનની વિરલ કેડીને સિદ્ધ કરે છે. શ્રીમદ્ યશોવિજયજી કવિ છે, જૈન દર્શનના ગ્રાતા કવિ Poet hidden in the light of Jain Darshan (Philosophy) છે અને કવિતાની સાથાસાથ ચિંતન ને દર્શન એમની અનેક કૃતિઓમાંથી જોવા મળે છે.

કિવતા ને ચિંતન આ ખંનેના સુમેળ વિરલ કવિ જ સાધી શકે છે. સાહિત્યના ઇતિહાસ અને વિવેચન ખતાવે છે કે આવા સુમેળ અપવાદના સંનોગામાં હાય છે. અંગ્રેજી વિવેચક ખ્રેડલી કવિતાની બ્યાખ્યા કરતાં કહે છે કે, " પ્રેમ સંગીતમાં વાત કરે છે ત્યારે કવિતા અને છે." કવિતા કેમ જન્મે છે યા સાહિત્યકૃતિનું ઉદ્દુભવ સ્થાન શું હાય છે એ વિવેચનાના સવાલ હજી અપૂર્ણ છે. ઓગણીસમી સદીના વિવેચકાથી માંડીને અઘતન અસ્તિત્વવાદના વિવેચકા સાહિત્યના ઉદ્દુભવ અંગે પૃરેપૂરા જવાળ આપી શકયા નથી. જેને માનસશાસ્ત્રીય વિવેચન કહેવાય છે અને જે માનસપૃથક્ષરસ પર માટા આધાર રાખે છે તે વિવેચન

કૃતિના ઉદ્દેશન સ્થાનના પૃરેપ્રા જવાબ આપી શકતું નથી. આ વિવેચન કવિના જીવનના કેટલાક પ્રસ્ત્રી, કેટલાક જ્યાલા અને કવિમાનસમાં જન્યેલા સંવેદનના પડ્યા પાટે છે, અને એટલું જ કહે છે કે સાહિત્યકૃતિના જન્મ આવા સંત્રેગામાં થયા હશે અને એથી એના અર્ઘ આવા લડાવી શકાય. આ રીતે તેતાં, કાઈ સર્જકની કૃતિમાં ચિંતન અને કવિત્વના સુલળ સંત્રેળ યાય. જ્યારે એની વિવેચના એના જીવનની આસપાયના વાતાવરેલું અને જીવનમાંથી ઉદ્ભવેલા પ્રસ્ત્રીમાંથી ઘટાવી શકાય.

શીમક્ યગાવિજયછના છવનના આદર્શ આપણું સો ઢાઈ નાણુંએ છીએ. આ આદર્શને કવિ અનેક સ્વરૂપ હારા આપણી સમક્ષ રજૂ કરે છે. ' જ્ઞાનસાર'માં કવિના આદર્શ મળે છે. કવિના શબ્દોમાં કહીએ તો " સ્ટ્રજના પુત્ર શાંતિદાસના દૃદયને આનંદ આપવાના હેતુથી આ બાહાવબાલ કર્યો છે. આ 'જ્ઞાનસાર' એ એમની શોઢ કૃતિ, અને એની સ્થના થઈ સિહ્યુરમાં; અને જ્ઞાનસાર પૃષ્ટું થયું દિરાળીના દિવસે. એમના જ શબ્દોમાં કહીએ તો જ્ઞાનસાર એ પૃષ્ટુાન કંચન આત્માના આસ્ત્રિરૂપી હફમીની સાથે પાબ્રિયુવના મહાત્યવરૂપ છે. "એમાં લાવનારૂપી પવિત્ર ગામથથી નૃષ્ય હીં પાયેલી છે. આરે નરક સમનારૂપ પાણીના છંટકાવ છે, સ્ત્તામાં જગાએ જગાએ વિરેકરૂપી પુષ્પની માલાએ લટકાવી છે અને આગળ અધ્યાત્મરૂપ અમૃતથી લર્ક્યા કામકુંન મૃક્યો છે. અપ્રમાદ નગરમાં પ્રત્રેશ કરવાના મંગલ સંધા આ શ્રંથ પૃષ્ટુાન દેવન—આત્મા મળે છે. "

' દ્વાનસાર ના અર્થ સ્પષ્ટ છે. અંગ્રેજમાં એને 'essence of knowledge' કહીએ તે એનક્શનનું અધુ જ તત્ત્વ આ કવિતામાં કવિ શ્રીયશાવિજયજીએ પાતાની ફોર્ન આપ્યું છે. સગમ જીવનના અને એનામમાંએ પ્રરૂપેશા બિશનના પરિપાક આ કવિતામાં છે અને એથી એમાંથી અધુ નવનીત સ્વરૂપે આપજને મળે છે. કવિએ આપ્યા કાર્ય્યું આપેલ્યન એથી રીતે કર્યું' છે કે એમાંથી એન દર્શનના અને એની વિશિયતાના પ્યાદ સહેશાઇથી આવી શકે. દાનના સાર કવિએ આ કૃતિમાં આપ્યા છે પણ સાંચાસાય એ સાર એક્ક્ષા જ નથી અપ્યો પણ કવિસુલલ કલ્પનાએા, વિચારા, ઉત્પ્રેક્ષાઓ, ઉપમાઓ અને કાર્યાલંકારો યેજને દાનસારને એકિક સંગીતમય અનાઓ છે. ચિંતનનું શુક સ્વરૂપ આપણને એ ફીતે દાનસારમાંથી નથી મળતું પણ ચિંતનની સાંચાસાય કવિત્રના ચમકારા મળે છે. દાનસારના સર્જક લાકમાન્યને રમાદી લણે છે, એના માનસ્ત્રઆપારના પરિચિત છે અને એશી જ એ ચિંતનની સાંચાસાય કવિત્રની સાંચાસાય કતિત્રો, પ્રાર્થનાએા, સ્વર્શની સાંચાસાય કવિતા રજૂ કરે છે. આપણે ત્યાં અલંકારમય સ્તુતિઓ, પ્રાર્થનાએા, સ્વર્શનો, સ્વર્જયો ઓફિ લહેં છે. જ્યાઓ છે, ધાર્મિક કથાઓ છે પણ સ્વર્ય દર્શનનો સાર અર્થી રીતે તેવા નથી મળતા અને એથી જ સાહિત્યની ફીતે શીમક યગ્રોવિજયજીના દ્યાનસારનું મહત્વ છે.

અરીયો વર્ષના ગાંગા વીતી ત્રથા છે. અને એ રીતે સમયના પ્રવાહ દાનસારની કવિતા પા ચિંતનને સ્પર્શ કરી શકશો નથી. ગ્રાનસારનું સંસ્કૃત અથકું નથી, કવિત્રમય કે, એતું આપ્યું આયાગન સ્પષ્ટ અને સુરેખ છે, અને એની કવિતા ને ચિંતન આપણને સ્પર્શ લાય છે. સ્ત્ર૦ પંડિત લગવાનદાયે ગ્રાનસારના અનુવાદ કર્યો છે અને એપનું આ

પ્રકાશન આપણા આજના જૈન અહિત્યની વિશિષ્ટ કૃતિ છે. સ્વ૦ પંડિત લગવાનદાસે સામાન્ય માનવીને સુલભ જ્ઞાનસાર ખનાવ્યા છે. એમના 'જ્ઞાનસાર' જીવનનું દર્શન કરાવી જાય છે અને એ શ્રીમદ્ર યશાવિજયજીની મૂળ કૃતિને ન્યાય આપે છે, અને એથી એ કૃતિની ભલામણુ થતાં સ્વભાવિક આનંદ થાય છે.

' જ્ઞાનસાર' એ ચિતનાત્મક કૃતિ છે અને આ ચિતન સામાન્ય માનવીને સુલભ ખને એ રીતે જ શ્રીમદ્ યશાવિજયજીએ યોજ્યું છે. જૈનદર્શનના ચિતનના પરિષાક આ કાવ્યમાં જોવા મળે છે, અને એ ચાડાક શખ્દામાં ઘણું કહી જાય છે.

શ્રીમદ્ યશાવિજયજી જયારે સમગ જ્ઞાનને સંક્ષિપ્ત અને પદ્યસ્તરૂપમાં આપવા મંથતા હશે ત્યારે પસંદગીના પ્રશ્ન એમની સમક્ષ આવ્યા હશે જ. જૈન દર્શન પરનું પ્રભુત્વ એમની મહાકાવ્ય રચવાની શક્તિના ખ્યાલ આપે છે, પણુ એક લઘુકાવ્યમાં જયારે એ શ્રીમદ્ યશાવિજયજીએ જીવનના સાર આપી દીધા ત્યારે એ વાણી કેટલી અર્થધન ગંભીર હશે? કવિતા વિચારનું—ચિતનનું વાદન અની શકે છે અને એ જીવનને ઊંડાણુથી સ્પશી' શકે છે એના સાચા પુરાવા ' જ્ઞાનસાર' આપે છે. સાગરના નીરની ગંભીરતા એ રીતે જ્ઞાનસારમાં છે અને સાથાસાથ શિશુની કામળતા, નિર્મળતા પણ છે. અને એ રીતે જ્ઞાનસારમાં—સ્વાદભરી મીઠી વાણી અને એમાંથી નીકળતા ગંભીર અર્થ—અન્તેનું સુભગ મિલન છે. કવિતા ને ચિંતનના આવા સુમેળ વિશ્વસાહિત્યમાં કરચિત્ કૃતિઓમાં નજરે પડે છે, અને એ છે શ્રીમદ્ યશાવિજયજીની કવિ તરીકેની સિહિ.

ગ્રાનસારતું વિસ્તૃત અવલાકન કરતાં માલૂમ પડશે કે કવિ યશાવિજયછ સમક્ષ સ્પષ્ટ 'ખ્યાલ હતા અને એ ખ્યાલથી પ્રત્યેક અંગતું ઘડતર તેઓએ કરેલું. ગ્રાન–અતુલવના સાર વહું વતા ગ્રાનસારમાં ખત્રીશ અષ્ટકા છે. આ અષ્ટક દરેક રીતે જેતાં સંપૃણ છે અને એ આખી કૃતિના એક લાગ તરીકે સંપૃષ્ઠ રીતે રજૂ થાય છે. ખત્રીસ સાપાનની આ કૃતિ છે એમ કહેતું ખાતું નથી.

જ્ઞાનસારનું પ્રથમ પૂર્ણાષ્ટક. એમાં જૈનસ્વરૂપના સાધ્ય તરીકે પૃષ્દું અવસ્થાનું સ્વરૂપ રજૂ કરાયું છે. પૃર્ણુનું સ્વરૂપ રજૂ કરતાં તેઓશ્રી જણાવે છે કે પૃર્ણુનંદ પુરુષની જ્ઞાનદિષ્ટ ભગૃત હાય છે, તે તૃષ્ણાથી દીન હાતા નથી, એમાં પુદ્દગલાની અપૃષ્દું તા હાતી નથી. આત્મદ્રવ્યમાં આત્મપણાના સુખયી પૃષ્દું થયેલા જ્ઞાનીને ઇન્દ્ર કરતાં કાઈ જાતની ન્યૂનતા નથી અને ભાવાની પૃષ્દું તા શુકલપશ્ચના ચંદ્રની માક્ક શાલે છે.

પ્રથમ અષ્ટકમાં રજૂ થયા છે આદર્શ પૂર્જુત્વના. આ પૂર્જુત્વની પ્રાપ્તિ માટેના પ્રયાસા અને એ પ્રયાસાને કવિદ્દય ખીજ અનેક અપ્ટેકામાં વર્જુવે છે. સંસારમાંથી નિવૃત્ત થનારા માનવી પૃશુત્વમાં મગ્ન થાય છે. એથી આવી વ્યક્તિને ધન માટે ઉત્માદ નથી હાતા, સ્ત્રી પ્રતિ રાગ નથી હાતા, એ જ્ઞાનમાં મગ્ન થયેલા છે, એથી સુખી છે, અને આ સુખથી કરુષ્ટ્રાની વૃષ્ટિ જેવી દ્રષ્ટિ પ્રાપ્ત થાય છે અને વાણીમાં પણ શાંતિરૂપી અમૃત વહે છે.

માનવીનું મન માળવે (માળવા દેશમાં) ભયનું હાય તા એના ચિત્તની સ્થિરતા ન હાય, એથી મનના ઘાડા પર કાળ્ મેળવવા એ મુરકેલ વસ્તુ છે. ત્રીક્ષ અન્ડકમાં કવિશ્રી મનના નિબહ માટે સ્થિરતા માટેના આદર્શ રહ્યુ કરે છે. માનવી જવ મુખની પ્રાપ્તિ માટે ચંચલ ચિત્ત રાખી અમે ત્યાં ભટેક છે. માનવીના મનને ભટકવાની આદે કાઈ મીમા નથી અને એનું માનસ ઘણી વાર અસ્થિર ગ્રેલાં ખાનું થઈ જાય છે. માનવી જવનના મુખ માટે તલસે છે, બમે છે અને જ્યારે સ્થિરતા આવે છે ત્યારે એને ખ્યાલ આવે છે કે એનું સાગું મુખ એની પાસે છે. કવિ સસ્ય ઉપમા દ્વારા કહે છે: "મંકદપ રૂપ દ્વારા ક્ષણવાર પ્રકાશ કરી વિકલ્પારૂપી ધુમાયએ જમાવી આત્માને મલિન કરે છે." અસ્થિરતા, ચંચળ મન મુખના સાધનાની તૃષ્ણ જાગૃત કરે છે અનેક મંકલ્પ-વિકલ્પાની વિચારણ જન્માવે છે, એના પરિણામે માનવીની તૃષ્ણ ક્ષ્મગૃત થાય છે.

માનવીનું મન અસ્થિર થઈ આમતેમ લાટંક છે એનું કારણ છે માહ અને માહન્યાગ. એ જ જીવનની સ્થિરતા માટે જરૂરી છે. 'અહ" અને 'મમ' 'હું' અને 'મારૂ" જીવનમાં અનેક અનિષ્ટા જન્માવનાર આ જ તત્ત્વા છે. જેને અહંકાર થયા એ અયા, અને જગતમાં સ્વાર્થ વધારનાર આ જ તત્ત્વા છે. કવિની ભાષામાં કહીએ તા જેમ આકાશ કાદવધી લેપાનું નથી તેમ તેમ માહત્યાગવાળા માનવી પાપથી લેપાતા નથી. તેના આત્મા શરીરના જન્મ, જરા ને મૃત્યુના નાટકથી એદ પામતા નથી. માહત્યાગીનું આત્મસ્વરૂપ નિર્મલ હાય છે અને પરદ્રવ્યની મૃંહવળ થતી નથી અને એની ખુદ્ધિ વિકરોદ્રી હાય છે.

આતમાના અતિષ્ટાના ખ્યાલ જ્ઞાનથી આવે છે અને માદના ત્યાગ જ્ઞાન જ જત્માવી શકે છે, અને એથી કવિછી કહે છે: "જેમ ડુક્કર વિષ્ટામાં મગન થાય છે, તેમ અજ્ઞાની અજ્ઞાનમાં, અને જેમ ડુંચ માન ત્રરાવરમાં મગન થાય છે તેમ જ્ઞાની જ્ઞાનમાં." આ જ્ઞાન એટલે પાપિટિશું જ્ઞાન નહિ પણ આતમાને આત્મરૂપ ખનાવનું જ્ઞાન. આ જ્ઞાન એટલે જ્ઞાનનું અજીરણ નહિ પણ તત્ત્વર્સવેદનરૂપ જ્ઞાન. આહું જ જ્ઞાન પ્રવૃત્તિ—નિવૃત્તિના ખ્યાલ આપે. હૈય અને ઉપારેયના વિવેક તત્ણનાં શિષ્યવે અને એથી આસ્ત્રિ વિશુદ્ધ થાય. જે જ્ઞાન અહેત્વ જગવે, મમના વધારે અને જેથી માનવીની સ્વાપરિતાની ભાવના જન્મે તે જ્ઞાન એટલે અધકચરું જ્ઞાન. અગ્રેજ કવિએ સાચે જ એક જગાએ કહ્યું છે: " A Little learning is a dangerous thing, Drink deep or taste not Pierien spring!" આજે અધ્ર ર જ્ઞાનની એકાલ છે અને જ્ઞાનના આટલો અંધા વિકાસ છતાં વિજ્ઞાનના મદમાં દેશો ખનેલો માનવી 'Eyeless in raza' છે, સાચું જ્ઞાન મિચ્ચાત્વરૂપ પર્વતની પાંપને છેટે છે.

સાર્યું ગ્રાન એટલે જગતને માન્ય પ્રવૃત્તિ નહિ પણ આત્માની સાચી પ્રવૃત્તિ. ગ્રાની ધીરમં બીર હેલ્ય, ગ્રાનીને મનના તરંગા ન થાય, એની આત્માની અવસ્થા ઉત્નત દાય અને જીવનમાં એણું સમબાવ કેળવેલા હાય. આવા ગ્રાનીની દળા 'શમ ' હાય છે, એનામાં અપૂર્વ શાંતિ હાય છે અને એવા ગ્રાની 'રાગરૂપ સૂર્યના વિષના તરંગા વદે ભળતા નથી અને એમની અસર વિશ્વમાં ગ્રાંતિ જન્માવાની થાય છે અને એ ગ્રાપ્તર શ્રાંતિ ફેલાવે છે. સાચું જ્ઞાન માનવીને સાચી શાંતિ આપી જીવનને ધન્ય બનાવે છે. જ્ઞાની સમ-તાના ભાસ્કર સમાન છે અને આ સમતા ઇન્દ્રિયા પર જય મેળવવાથી આવે છે.

સાનીને તૃષ્ણા હાતી નથી. ગ્રાની ઇંદ્રિયછત હાય છે. ગ્રાનીઓને લાલસા—ખાંદી ઇચ્છા જન્મતી નથી, કારણ કે લાલસા માનવીના છવનને નીગું પાઠે છે. ઇન્દ્રિયા કચારેય સંપૂર્ણ સંતાય પામતી નથી. કવિના શખ્દામાં કહીએ તા હંજારા નદીએ વઠે ન પૂરી શકાય ખેતું સમુદ્રસમું માનવીનું પેટ છે; અને ઇન્દ્રિયામાં મૂઢ થયેલા છવ સારાસાર જેતા નથી, એ ગ્રાનરૂપી ઘનના ઉપયાગ અયાગ્યરીતે કરી વિષયા વધારે છે, ગ્રાનરૂપી અમૃતને છાહી રૂપ-રસ-ગંધ-સ્પર્શ-શખ્દાદિ ઝાંઝવાનાં નીર તરફ માનવીને દાહાવે છે, અને એની ખરાખ દશા કરે છે.

સાચા ગ્રાની ઇન્દ્રિયજીત અને ત્યાગી હાય છે. ત્યાગની ભાવના જગૃત કરવી એ માટી વસ્તુ છે. ગ્રાન જ્યારે સ્વાર્થ જન્માવે ત્યારે એ વિસંવાદ પેદા કરે છે. ગ્રાન ત્યાગ કરીને ભાગવવાની વસ્તુ છે. એથી આધુનિક યુગમાં વિગ્રાનના સ્વાર્થી ઉપયોગે જીવનને વિષમ ખનાવ્યું છે, યુદ્ધને અનિવાર્ય ખનાવ્યું છે. વિગ્રાને વિકાસ કર્યો પણ એની સાથે માનવીના સાચા ગ્રાનના એની ત્યાગભાવનાના વિકાસ ન થયા અને પરિછામે જગતમાં ગ્રાન–વિગ્રાને ખાટા લેદા, કલહા, યુદ્ધો જન્માવ્યાં. જે ગ્રાન સર્જન માટે હતું એ ગ્રાનના સંહાર માટે ઉપયોગ થયા, કારણ કે તેમાં ત્યાગની ભાવના જ નથી.

સાચા ગ્રાનીને સમતા વહાલી રહી છે, સમાન ક્રિયાવાળાઓ સગાઓ છે અને એનું આત્માનું તત્ત્વ પ્રકાશે છે અને એ સાધુત્વમાં રાચે છે. આવા ગ્રાની એ રીતે શાંતિને જન્માવે છે. એકલું ગ્રાન જ નહિ પછુ ત્યાગની ભાવના જન્માવતું ગ્રાન કલ્યાછુદાયી છે, અને એની સાથે ક્રિયાના મેળ હાવા તોઇએ, એથી કવિ ક્રિયા પર ભાર મૂકે છે. કવિ ક્રિહે છે: " કીવા માટે તેલની જરૂર છે તેમ પૂર્ણ ગ્રાની પણુ અનુકૂળ ક્રિયાની અપેક્ષા રાખે છે." કવિને એકલું ગ્રાન માન્ય નથી અને એથી સ્પષ્ટ કહે છે: " બાહ્યક્રિયાના ભાવને આગળ લાવીને જેઓ વ્યવહારમાં ક્રિયાના નિપેધ કરે છે તેઓ મુખમાં કાળિયા નાખ્યા સિવાય તૃપ્તિને ઇચ્છે છે." ' પહેલાં ગ્રાન ને પછી ક્રિયા ' એ સાચી વસ્તુ છે. ક્ષાયાપશ્ચિક ભાવા કેળવવા માટે એક સમયના પ્રમાદ વિના પ્રયત્ન કરવા તેઈએ, અને એ માટે ક્રિયા જરૂરી છે.

સાચા ગ્રાનને ક્રિયાના મેળ થતાં માનવી અનાખી તૃપ્તિ અનુભવે છે. સાચું ગ્રાન અભિમાન નથી જન્માવતું, પછુ એ સંસારના સ્વપ્નને ખુલ્લું પાડી સમ્યગ્દિષ્ટ પેદા કરે છે અને આ દિષ્ટિથી માનવી જીવનને વિકસાવે છે. જે ગ્રાન સંતાપ ન જન્માવે એ ગ્રાનના કશા અર્થ નથી. ગ્રાન–ક્રિયાના સુમેળ કર્મોના મેલ કાઢી નાખે છે, અને એ સંતાપરૂપી અમૃતનું ભાજન કરાવે છે.

સાચું ત્રાન આત્મસંતાષ પેદા કરે છે અને એ કર્માથી લેપાતા નથી. એ સંસાર પ્રત્યે અનુરાગ ધરાવતા નથી પછુ એનાથી નિલેપ રહે છે. સંસારીએા સ્વાર્થી હાય છે. રહ સાચા ગાની સંસારીને સમજી એનાથી કુર ભાગે છે અને એ નિજાનંદમાં મસ્ત હાય છે. માનવી નિર્ણય અને એટલે શુદ્ધ ધ્યાનની બૂમિકા પર નાય અને એની ત્રાગી દપ્ટિના વિકાસ થાય.

માનવીના આવા વિકાસ થતાં એ નિઃસ્પૃહી અને, એનામાં દાઈ બતાની ખાત્રી ઝંખના ન રહે. સ્પૃહાએ – ઝંખનાએ – કંચ્છાએ માનવીને વામણા અનાવે છે. અતિપંદિત વ્યવહારની દુનિયામાં શક્મીનં દેનાની ખુશામત કરે તો એમાંથી અત્રંતોષ જન્મે નહિ તો શું શાય ? સાચું ગ્રાન માનવીની ઝંખનાને મર્યાદિત કરે છે, ત્રાચા ગ્રાની એવા નિઃસ્પૃહી હાય છે દે પૃથ્વી એની પધારી અને છે, બિક્ષા એના આહાર અને વન એનું ઘર અને છે. 'પારદી આશ સદા નિરાશ' એ આવાનું સ્ત્ર છે અને પારદી આશા અનેક દુઃખા જન્માવનારી છે અને એશી નિઃસ્પૃહી માનવી જ સાચા મુખી હાય છે.

જગતમાં નિઃસ્પૃદી માનવી મુનિઓ જ દાય છે. મુનિપાતું જગતના તત્ત્વને સમ્પ્રક-સ્વરૂપે ભાળુવામાં છે. રાગ, દેષ અને માહરૂપ દોષનિવૃત્તિ એટલે પુદ્દગલામાં યાગાની અત્યાપાર પ્રવૃત્તિ અને એતું ખીતું નામ મીન. આ કક્ષાએ પહેાંચેલ માનવી ધીરુગંબીર દેશય છે અને એની ક્રિયા ગ્રાનમય દેશય છે.

સાર્યું મોનત જન્મે છે ત્રાચી વિદ્યામાંથી. અનિત્ય છુઢિ નહિ પણ વત્ત્વછુઢિ. આ છુઢિમાં રાચવા માનવી માટે વાક્ષ્પટુતા નથી, ખાલી છુઢિના પમરાટ કે ચનચનાટી નથી, આ છુઢિ 'ત્રમુદ્રના કહીલ જેવી શક્મીની, વાચુ જેવા આસુચ્ય અને વાદળ જેવા શર્રારની' અનિત્યતા ચિંતવે છે. એના જીવનનાં મૃદ્યા બદલાય અને દેવનાં આકર્ષણામાંથી ખસી આત્માના આકર્ષણામાં રાચે. એથી અજ્ઞાનરૂપી અધકારના નાશ થાય અને વિવેકછુઢિ જન્મે.

વિવેક એટલે છવ ને અછવનું સેદગ્રાન. સાચું ગ્રાન માનવીને સારાસાર સમનવે. વિવેક આવે એટલે કંચ્છા, શ્રસ્ત્રો આદિ વિકારા લાગે અને આત્માના શુદ્ધસ્વરૂપને એ એાળએ. સાચી વિદ્યા વિવેક જન્માવે, ખાેટી વિદ્યા ગવે પેદા કરે અને એમાંથી આત્માના અન્વેષ્ણના પ્રયાસા ધાય. સાચી વિદ્યા રાગ ને દ્રેષ ન કેળવે પણ માધ્યસ્થ્યભાવ કેળવે. રાગ અને દ્રેષથી કર્મો જન્મે પણ માધ્યસ્થ્ય ભાવ સમાનતા જન્માવે. ગ્રાની પાતાના ગ્રાનની પ્રશંસાની આશા રાખે એ જ એની નિર્જાળતા. સાચા ગ્રાની કર્મની હીલા બાણે અને એનાથી તેમજ એમાંથી જન્મતા રાગદ્રેષથી અલગ રહે. રાગ અને દ્રેષ સંગ્રારના બે છેટાએા, અને એ અનેક બતાની લીલા જન્માવે. ગીતમસ્વામીના મહાવીસ્સ્વામી પ્રત્યેના અતુરાગ એમના કેત્રળગ્રાનની આઠે આવ્યો એ આપણા માધ્યસ્થ્ય વૃત્તિ માટેના સાચા દાખલા. મધ્યસ્ય પુરુષને કેઇ પણ પુરૂગલની આસ્ટિન ન હાય, પણ આત્માની સમાધિ હાય.

એમાંથી જન્મે નિર્ભયતા, આધુનિક માનગ્રશાસ્ત્ર ગર્વ દેણા–ખૃષ્ઠીએાનું મૂળ ષ્રીજ બંધીને લેખે છે. પછી ગ્રાચા માનવીને 'જાલ્લા ચાલ્ય વસ્તુને ગ્રાન વઢ જાલ્લા માનવીને કશું હયાવવાનું હોતું નથી. આત્મગ્રાનમાં મસ્ત માનવીને ભષરૂપ ગ્રેપી બિવડાવી શકતા નથી. મૂઢ પુરુષા ભયરૂપ વાયુ વડે આકડાના રૂની માક્ક આકાશમાં ભર્મ છે, અને સાર્ચા ત્રાની નિર્ભય રીતે જીવે છે.

અમવા સાચા ગ્રાનીને પ્રશંસા સ્પર્શી શકતી નથી. સામાન્ય કથન છે કે માનવી ખધી વસ્તુ જરવી શકે છે પણુ પ્રશંસા—પાતાની સ્તુતિને જરવી શકતા નથી. જે માનવીને પ્રશંસાને પ્રસિદ્ધિના માહ જન્મે છે તે પડે છે, અને એથી જ કવિશ્રી કહે છે: "પાતાની પ્રશંસામાં રાચતા માનવી માહમાં ડૂખી જય છે." ગ્રાનનું અભિમાન જરવનું મુશ્કેલ છે અને એ ગ્રાનીને પછાડે છે. ગ્રાન જન્માવે છે નમ્રતા પણુ અધ્કેડતા નહિ. આવા માનવીની તત્ત્વ-દિષ્ટ વિકસેલી હાય છે. કવિશ્રી આ સ્થાને આદ્યદિષ્ટેને તત્ત્વદેષ્ટિના ભેદ પાડે છે. સાત્ત્વિક દેષ્ટ જ માનવીના જવનને વિકસાવે છે. આદ્યદિષ્ટેને સ્ત્રી યુંદર લાગે અને તાત્ત્વિકને તે સ્ત્રી વિષ્ટા અને મૂત્રની હાંડલી જેવા પેટવાળી લાગે છે. તાત્ત્વિક માનવી અહારના દેખાવા પર ભાર મૂકતા નથી પણ ગ્રાનમાં જ રાચે છે.

આવા જ ગ્રાની સાચી રીતે સમૃદ્ધ છે. સાચા ગ્રાની ભાગ-વિલાસમાં રાચતા નથી પણ વ્રદ્દાચય'માં રાચે છે, સદ્-અસદ્દના એ નિર્ણય કરે છે અને એની આ સમૃદ્ધિ આગળ દુન્યવી સંપત્તિના હિસાબ નથી. એના અંતરંગ ગ્રુણની સૃષ્ટિ પ્રદ્ધાની સૃષ્ટિથી અધિક છે. ગ્રાન દર્શન અને ચારિત્ર એમ ત્રણુ રતના પામેલા માનવી સિદ્ધયાગ મેળવે છે. આ દૃષ્ટિ માનવીને કર્મના પરિણામના વિચાર કરાવે છે. એથી જગતની લીલા, શાકાશાક, સુખદુઃખ, કર્મ, વિષમ ગતિ એને સ્પર્શી શકતી નથી. ઊંટની પીઠ જેવી કર્મની રચના છે. અને એ કર્મની રચનામાં માનવી આસદિત કેળવે તા એ પડે. કવિશ્રી કહે છે: "જે માનવી પરિણામને વિચારતા હૃદયમાં સમભાવ કેળવે છે તે ગ્રાનાન દર્ગ મકરન્દના લાગી અને છે."

આવા માનવીને જીવાના ઉદ્દેગ સ્પરી શકતા નથી. સંસારના વિષમ માર્ગો, તૃષ્ણા વિષયાભિલાયા, સ્નેહ—રાગ—લાભ—રાગ—શાક—મત્સર વગેરે સ્પરી શકતા નથી. અપ્રમત્ત દશાને પામીને આવા જ્ઞાની સંસાર નાટકમાં રાચતા નથી સંસારના અનિત્ય ભાવે માનવી જ્ઞાનના પ્રયાસ કરે, આ રીતે પ્રયાસ કર્યા ખાદ એનામાં સાચી દિ આવે અને એના પરિભામ એને સંસારના સાચા ખ્યાલ આવે અને એ નિસ્પૃદ્ધી અને.

આવા નિઃસ્પૃહીને લાકાદરની પરવા હાતી નથી. બાહ્યચરિત પર ભાર નહિ પણ આંતરગુદ્ધા પર ભાર મુકાય તા જ છવન ધન્ય બને, અને એ આત્માની સાક્ષીમાં રાચે. આત્માના અવાજમાં એ મગ્ન રહે અને એથી આંતરિક મુખ એ મેળવે.

... આવા ગ્રાનીઓની દેષ્ટિ શાસ્ત્રાલ્યાસથી વિકસેલી હાય છે. ખધા પ્રાણીઓને ચર્મચક્ષ છે, દેવાને અવધિગ્રાનરૂપ ચક્ષ છે, સિહીને કેવળ ઉપયાગ ચક્ષરૂપ છે, અને સાધુઓને શાસ્ત્રરૂપ ચક્ષુએ છે. કેવલી ભગવાનની શિક્ષા એ જ આપણું સાધન. શાસ્ત્રો રૂપી દીવા આપણા અધ્કારદેશ માર્ગ પર પ્રકાશ નાખે અને આપણા જીવનને અજવાળે. શાસ્ત્રો

ઋાષણી દૃષ્ટિ વિકસાવે અને એઘી સ્વેચ્છાચાર જાય, અને એમાંથી લાંભવૃત્તિ ન વધે પણ સાચી દૃષ્ટિ શાય અને એ અપસ્થિદ કરતાં સાનવીને શિખવે.

સારું ગાન સંપત્તિ માટેની છંખના નહિ પણ ત્યાગરૃત્તિ જન્માવે. કાંઈ પણ વસ્તુ માટેના માહ કુર કરવા જેવી વસ્તુ છે-ગાનમાત્રમાં આસદિત અને નહિ કે ગાનનાં સાધના. ઉપકરણા પરના માહ અનિષ્ટા જન્માવે છે. પશ્ચિહા જ્યા એટલે માહરૃત્તિ ઘટે અને એથી સંયમની વૃદ્ધિ થાય. શાસ્ત્રોનું પદન એ લુકી વસ્તુ છે અને અનુભવ એ લુકી વસ્તુ છે. અનુ લવ વિનાની વાણી એ માત્ર પાપટિયા ગાન અસઅર છે. એથી કવિશી કહે છે: "સર્વાની કદ્યના શાસ્ત્રમાં પ્રવેશ કરે છે, પરંતુ અનુસવર્ષ છતા વટે શાસ્ત્રક્ષીરના આસ્વાદ કરનારા થાટા."

આ અતુલવની પ્રાપ્તિ ચાંગ વિના થવી નથી. ચાંગની વ્યાખ્યા એટલે 'મોંક્રેળ યોડાનાર્ યોતા: 1' પાંચ ચાંગા, એ કમંચાંગ અને ત્રલુ ગ્રાનચાંગ. ચાંગ અનુષ્ટાના જન્માવે અને એતું અંતિમ રૂપ માશ્ર. ચાંગ એટલે શાસ્ત્રોક્ત ક્રિયા અને શાસ્ત્રવિદ્વીન ક્રિયા ઉત્માર્ગ પર્ણાવે અને એથી અનેક અનિયો જન્મે. [ચાંગ પરનું શ્રીમર્ ચ્યારિજ્યજીનું સાદિત્ય અતિવિધુલ છે અને એ સ્વતંત્ર લેખ માગી લે છે.]

ચાંગદશા માટે લાવપૂન જરૂરી છે. ઝહંકારના નાશ એ મુખ્ય વસ્તુ અને લાવનાથી અજ્ઞાન ટંગ અને મિચ્યાતની રામના લાય. એના માટે પૂન જરૂરી છે અને કવિશ્રી કંદ છે કે, "ક્ષમાર્પ ફ્રંશની માળા, અવદાર અને નિક્ષ્ય એ વસ્ત્રો, ધ્યાનર્પ ઉત્તમ આલરણ, ગાનર્પ અગ્નિમાં શુલ મંક્રપાર્પી ધૃપ, મત્યર્પ લંટ વળેરથી શુક્રા માનરીના દાયમાં ખાક્ષ છે." ગૃદ્ધો માટે ક્રયપૂન અને માધુ માટે લાવપૂત જરૂરી છે.

પૃત્ત ધ્યાનને જન્માવે છે અને ધ્યાન માડના નાગ કરે છે, આત્માને ઓળણાવે છે. અસ્થિર મનને સ્થિર કરનાર ધ્યાન આંદ્રા ઇન્દ્રિયને અનુમરનારી વૃત્તિને અવરાધે છે અને તાનાનંદરપી અમૃતમાં આત્માને લીન કરે છે. જેલે ઇન્દ્રિયોને છત્તી છે જેના આત્મા સ્થિર છે તે પ્રવૃત્ત અક્ષ્યોગી છે. ધ્યાનની સાથે તપ જર્ફા છે અને તપ કર્મોને તપાવે છે. ધનેના અર્થી ડાક-તાપ સડન કરે એમ લત્વનાનના અર્થી તપ કરે. એના માટે તપ સરકેલ નથી. "જે તપમાં વ્યક્ષઅર્થ વધે, હ્યાં લગવંતની પૃત્ત શાય, કૃષ્ણયના નાગ શાય અને વીતરાગની આદ્યા પ્રવૃત્તે તે કૃષ્ણ કૃષ્ણયા."

તપસ્ત્રીમાં આ મધ્યસ્થવૃત્તિ કેળવનાર ગાની સર્વ તપાને વ્યાક્રિત દેાય છે. ધર્મવાદથી સર્વ તપા બાળી ગ્રક્ષય અને એથી માનવી પરમાનંદ પામે અને એના બધી રીતે ઉદ્ધાં શાય.

ભત્રીસ અપ્રેકામાં આત્માના વિકાસક્રમ ભવાવ્યા ખાદ કવિશ્રી યશાવિજયણ ઉપ સંદારમાં જણાવે છે કે—'આ રીતે દત્ત્વને પ્રાપ્ત થયેલ સુનિ શુદ્ધ આરિત તથા સુક્તિરૂપ ગાનસારને પામે છે.' એવા માનવીના વિકારી લાવો લવ છે, ગાનસાર જે કરેશમીના લય કરે તે કર્મો પુના ઉત્પત્ન ન થાય. એપી શાસ્ત્રનો ક્રિયારહિત ગ્રાન અને ગ્રાનરહિત કિયા પર ભાર મૂકથી નથી પણ ગ્રાન-ક્રિયાના યાગ પર ભાર મૂકથી છે. ગ્રાનશ્ન્ય કિયા અલ્પ પ્રકાશવાળી છે અને પૂર્ણુ વિરતિરૂપ ચારિત્ર એજ ગ્રાનના ઉત્કર્ય છે.

મત્યેક વસ્તુને રજૂ કરવા માટે શ્રીમદ્ યશાવિજયા એ સરળ અને કવિત્વમય શક્તિના ઉપયોગ કર્યો છે. આ બધાં અષ્ટકામાં ઉપમાઓ દ્વારા વસ્તુને તેઓ રજૂ કરે છે અને પ્રાચીન સાહિત્ય પરનું એમનું પ્રભુત્વ અને વસ્તુને નવી રીતે રજૂ કરવાની એમની દરિની પ્રતીતિ એમાંથી આપણુને થાય છે. તત્ત્વચિંતનને અને એના ગાઢ વિષયને આઠ શ્લાકના ગુચ્છામાં રજૂ કરવા એ સહેલી વસ્તુ નથી. ગ્રાનને કવિત્વના ચમકારા સાથે, શાસ્ત્રીય દરિથી રજૂ કરી સમસ્ત જીવનના ગ્રાનના સાર કવિશ્રી યશાવિજયા એ આપી દીધા છે, અને એ રીતે ગ્રાનસાર આપણી આધ્યાત્મિક કૃતિઓમાં અનન્ય સ્થાન પામે છે.

જીવન જ્યારે ઝડપી ખત્યું છે, જ્યારે જીવનને અવલાકવાની દેષ્ટિમાં નવા ગ્રાન-વિજ્ઞાનના ઉપયાગ થઈ રહ્યો છે ત્યારે ચિતનના એક સત્ય તરીકેની આ કૃતિ આપણા જીવનને ધત્ય ખનાવે છે. સવ વસ્તુઓના સાર સમી આ સાહિત્યકૃતિ કવિશ્રીની અનેક પ્રસાદીમાંની એક પ્રસાદી છે. આ પ્રસાદી માટે અતિજ્ઞાનની જરૂર નથી. ઉપાધ્યાય શ્રીયશાવિજયજીએ માત્ર પંહિતા માટે આ કૃતિ નથી રચી પણ સામાન્ય જેના માટે રચી છે અને ઉપમાચ્યા–ઉત્પ્રેક્ષાચ્યા અને કાબ્યાલંકારા દ્વારા આપણી સમગ્ર કલ્પનાનાં ચિત્રા રજૂ કર્યાં છે. જ્ઞાનસારનું ચિંતન એથી ઝાંખું બન્યું નથી પણુ કવિત્વથી ચમકતું બન્યું છે. અને એ આપણી સૌંદર્ય દષ્ટિ આંતર દષ્ટિની સાથાસાથ ખીલવે છે. 'જ્ઞાનસાર' આપણા જૈનચિંતનના વારસાના ખજાના છે. એમાં સર્વધાહી અવલાકન અને જીવન પ્રત્યેની આર્ષ દર્ષિ છે. માક્ષના માર્ગના આદર્શ આપણી સમક્ષ રજૂ કરતાં આ દૃતિ એના વિકાસ માર્ગ ખતાવે છે અને એ જ માર્ગ આપજા કલ્યાજીના માર્ગ છે. આ માર્ગ ખતાવનાર ં કવિ શ્રીયશાવિજયજીના આપણે ઋણી છીએ. 'શિવમસ્તુ સવ' જગતઃ ' એ ભાવનામાંથી જન્મેલું સાહિત્ય માનવજીવનને ઉન્નત અને સંસ્કારી અનાવે છે. એ હકીકતને કવિશ્રીની કૃતિઓ વાજળી ઠેરવે છે. અને કવિશ્રીના આ વારસાને જીરવવાની તાકાત આપછે કેળવવાની છે, સાહિત્યનાં સ્ત્રરૂપાે બદલાય, કથનપદ્ધતિ બદલાય, પણ કવિની પ્રસાદી તાે નદીનાં નિમળ નીર સમાન છે અને એનાથી આપણાં પાપા ધાવાઈ નથ છે.

 \star

જૈનસિદ્ધાંત અને સંસ્કૃતિના

સાચા પ્રચાર

ક્ષેખક : પુત્ર્ય કૃતિરાજ શ્રીમાન્ મલયવિજયજી

પાચીન જગતમાં કાઈ પછુ સિદ્ધાંત કે સંસ્કૃતિના પ્રચાર ઉપદેશકાના ઉપદેશ અને આચાર-વિચાર કારા થતા પણ અર્વાચીન જગતમાં યંત્રવાદના મુગ આવતાં છાપાં, સિનેમા, રેશિયા વગેરે કારા પછુ થાય છે.

વીષ્ટ્રાના ત્રણે તારમાં એક કીક્ષા, એક કરક, એક મધ્યમ એમ હાય તો તે એસ્ફી વાગે અને સાંલળનારને કંડાળા આપે. પષ્ટુ તેના બપ્યુકાર-ઉસ્તાદ તે ત્રણે તારને સમકરે કે ત્યારે તે સુંદર સરાદા દઃપત્ન કરે છે. ને તેના રસિકાને ટાલાવે કે. તેમ હપદેશકનાં વિચાર, વાણી અને વર્તાનરૂપ ત્રણે તારમાં તે કાઈ કીક્ષા-પાંચા હાય, કાઈ કડક હાય તા તેની અસર આમજનતા પર નહીવન્ થાય કે પણ ચિસ્સ્થાથી થતી નથી.

ના પછી ઉપરના શુણ રહિત વ્યવાચીન જગતનાં યાંત્રિક સાધના દ્વારા યતા પ્રચારમાં કદાચ વાત્કારિક વ્યતિત્રાય દેખાતા હાય છતાં તેનાં પરિણામા વ્યને સ્થિરતા તે લાવિ ઇતિહાસ જ શાહશે.

" જ્ઞાનિજયામ્યાં મોક્ષા" એ મહાન સમ વિચાર, વાણી અને વર્લનરૂપ ત્રણે તાર મમ રાખીને જેન પ્રાંચાયોએ આમજનતાના દૃશ્યમાં સંસ્કારા રેડવાના પ્રયત્ન કર્યો છે. તેની કામ " પડી પડાળે ભાવ, ફાદે પણ ફીદે નહિ." છાકું શીદું શકે જવા કર્તા લાઇ જ ભાવ ન હાય તેમ આજે નોતિક વિદ્યાનથી પાંગરેશા ચંત્રવાદના શુળ આવવા કર્તા (ભાવિમાં ગમે તે આએ!) હતુ પણ મનુભવાય છે. જેના મામાન્ય આદર્શ આ સિઝનાયક મહાપાંથાય શીયશોવિજયછાં પણ દેખાય છે.

એડલે કે દ્રાન અને કિયા એ અરેને સખતુલાએ રાખીને કામ લેવામાં આવે તો " વિચાર, વાણી અને વર્લન" એ ત્રણે તાર સરખા રહે ને મુંદર મંગીત (સંસ્કાર) મળે. પણ આજે તો કેટલાએક જ્ઞાનને મુખ્ય કરીને કિયા હીલી હોય તો આદે એમ કહે છે. ત્યારે કેટલાએક કિયાને મુખ્ય કરીને જ્ઞાન એક્ક્રિવતું હોય તો નસે એમ માને છે ને કે મનાવવા પ્રયત્ન પણ કરે છે. ને તેમ કરતાં વાદમાં જેમ શબ્દોની સાકમારીમાં ઉતરી એક બ બીજને હલકા પાડવાના પ્રયત્ન કરતાં "માટે પાડા લેટ અને વચ્ચે ઝાડના ખા" એ કહેવતું મુજબ આમ જનવાના દ્રશ્યમાં રહેલ મિક્રાન્ત અને સંસ્કાન્યી છાપ સૂંત્રી રહ્યા છે. તેઓ જોઈ શકતા નથી કે માત્ર ज्ञानने માનનાર શ્રુતકેવલી—ચોદપૂર્વી પણ ક્રિયાહીન થતાં નિગાદમાં ચાલ્યા ગયા. સાડા નવપૂર્વી પણ અज्ञानी કહેવાયા. વસ્તુતः " द्वानस्य फलं विरितः '' वगेरे ચિરંતનાઓર્યોનાં વાકચો તથા—

" भारुरक्षर्मुनियोंगं, श्रयेद वाह्यक्रियामपि । योगारूदः शमादेव, शुध्यत्यन्तर्गतिकयः ॥ "

એ મહામહાપાધ્યાય શ્રીયશોવિજયજીના વાકયને ભૂલી જાય છે. અને ક્રિયાવાદી:— " દેશ આરાધક ક્રિયા કહી, સર્વ આરાધક જ્ઞાન; જ્ઞાન વિના સર્વ ક્રિયા કહી, કાશકુસુમ ઉપમાન."

એ વાકયને સૂલી જઈ સ્ત્ર અને પર એમ ઉશયનું હિત બગાડે છે.

" દેવ, ગુરુ અને ધર્મ " એ ત્રદ્ધેનું સુંદર આરાધન તા સુસંસ્કાર હાય તાજ થઈ શકે. અને સંસ્કાર તા દેવ, ગુરુ અને ધર્મની આરાધનાવિધિને જણાવનાર જ્ઞાનથી થાય. તે જ્ઞાન દેવ, ગુરુ, ધર્મની આરાધના વિષયને જણાવનાર શ્રંથના અભ્યાસથી થાય.

જેન મતમાં તો તેને માટે 'દેવવંદન-ભાષ્ય, ગુરુવંદન-ભાષ્ય તથા પચ્ચક્ ખાલુ-ભાષ્ય ' છે, તેના અભ્યાસથી અનુક્રમે દેવમંદિરમાં કેવી રીતે જન્નું તથા વર્ત નું નેઈ એ, કેટલી વસ્તુ નિવારવી નેઈ એ વગેરે વર્લ્યુંન છે. 'ગુરુવંદન ભાષ્ય'માં ગુરુ પાસે કેવી રીતે જન્નું, તેમના કયા પ્રકારે વિનય સાચવવા, વિનય કરવાથી કે ન કરવાથી શું લાભ કે નુકસાન થાય તે વગેરે વિષયોનું વર્લ્યુંન છે.

દાન, શિયળ, તપ અને ભાવરૂપ ધર્મનું આરાધન કેવી પ્રતિજ્ઞાઓ કરવાથી થઈ શકે ? શા માટે પ્રતિજ્ઞાઓ કરવી જોઈએ ? વગેરે વર્ણુન 'પશ્ચકખાણુ ભાષ્ય'માં છે. આ શ્રંથોના વિષય પ્રતિભાસ જ્ઞાન તરીકે અભ્યાસ કરવાથી અક્ષર જ્ઞાન સિવાય કંઈ ખાસ લાભ ઘતા નથી. પણુ એ જ્ઞાન આત્મપરિભુત થતાં તત્ત્વસંવેદન તરફ ઊધ્વ'ગમન કરાવે ત્યારે જ તેના સાચા લાભ ઉઠાવી શકાય છે.

જો કે વિધિમાર્ગના અન્ન હાઈ જૈન સમાજમાં અરે, દરેક સમાજમાં આજના કિયાવાદી વર્ગ આડંબરી કિયામાં જ રકત છે. જ્યારે ન્નાનવાદી વર્ગ વિધિ આમ થવા લેઈએ અને તેમ થવા લેઈએ તેમ કહે છે. પણ પાતે (ભારો કે શ્રદ્ધાહીન હાય તેમ) તદ્દન કિયાશન્ય જણાય છે. માટે ન્નાનવાદી વર્ગ નાન હાવાથી સ્વાનુભવપૂર્વ સુવિહત વિધિમાર્ગને આદરે અને તે વર્તનમાં મૂકવા પૃવંક પાતાની પાછળ મેંઢા જેવી કિયાવાદી આમજનતાને દારે તા સુંદર ફળ મળે. ગાહરિયા પ્રવાહના જેવી સહજ સ્વભાવવાળી આમજનતા તા " દુનિયા ઝુકતી હૈ ઝુકાનેવાલા ચાહિયે" મુજબ જ્યાં દારે ત્યાં ભય તેવી જ હાય છે. તા તેને શુભ દિશાએ વાળવાના વિવેકપૂર્વક અને વિરાધ રહિત પ્રયત્ન નાનવાદીઓએ જ કરવા રહ્યો.

*

: Show

પ્. ન્યાયવિશારદ ન્યાયાચાર્ય મહાપાધ્યાય શ્રીમદ ચશાવિજયજ મહારાજ

ક્ષેષ્પક : પરમપૂજ્ય મુનિરાજ શ્રીમાન્સક કરવિજયશ્છ [લેખ ન. ર]

સુવત ૧૬૮૮માં દીક્ષા ૧૭૧૮માં વાચકપદવી અને ૧૭૪૭માં સ્વર્ગગમન હોવાથી, આ મહાયુરુષના સત્તાસમય લગલગ સંવત ૧૬૮૦ થી ૧૭૪૭ સુધીના નક્કી યાય છે.

શ્રીમદ્રાવીરપ્રભુની પકૃષરંપરાએ ચાલતા આવેલા તપાગચ્છમાં લારતવર્ષના પ્રખ્યાત આદ્યાદ અકળરને પ્રતિબાધ કરનાર સુવિખ્યાત જગફરારુ આસાર્ય લગવાન્ શ્રીમદ્ વિજય-દ્રીરસ્વિર થયા. તેમના શિષ્ય ઉપાધ્યાય શ્રીકલ્યાળુવિજયજી ગણિ, તેમના સુખ્ય શિષ્ય શ્રીલાલવિજયજી ગણિ, તેમના સુખ્ય શિષ્ય શ્રીજિત્તવિજયજી ગણિ, તેમના શુજ્યાતા શ્રીનયવિજયજી ગણિ, અને તેમના શિષ્ય શ્રીયગ્રોવિજયજી ગણિ થયા. આ વાત એમના જ શાહેરામાં 'એન્દ્રસ્તુતિ—સ્વાપગ્રવિવરળ,' તથા '૨૫૦ ગાયાના સ્ત્રવન'ના પ્રાન્ત લાગાદિ સ્થળાએ ઉપલબ્ધ થાય છે.

ઉપાધ્યાય શ્રીમદ્ ચંગ્રેષિજયજીની સંસ્કૃત-કાંધરત્રનાએની આદિમાં જે પદ મૂકવામાં આવે છે. 'હેં' એ સરસ્વાનિ મંત્ર છે. હેં પદના વ્યપ્પૃતંક તે મહાપુરું કાશીમાં રહી ગંગા નહીના તટે શ્રીસરસ્વાની દેવીનું આરાધન કર્યું હતું. તે વખતે તેએ શ્રીતિ સરસ્વાદિવી પાસેથી તકે શાસ્ત્ર તથા કાવ્યશાસના પ્રસાદ પ્રાપ્ત થયા હતા. એ વાત સ્વરચિત 'શ્રીજ' જ્સ્વામીના રાત્ર' અને 'શ્રીમહાવીસ્ત્નૃતિ' આદિનાં પાતે કરેલાં મંગલાચરણા ઉપરથી વિદ્ધ થાય છે.

અત મહાયુરુષના સમકાલીન ધુરંધર વિદ્રાન, અનેક લંધરતોના પ્રણેવા મહાપાધ્યાય શ્રીમાનવિજયળ ગણિવર સ્વરચિત સ્વાપત્રવૃત્તિસમેત 'શ્રીધ્રમંત્ર'ઘડ નામના અતિ વિશદ લંધરતની પ્રશસ્તિમાં 'શ્રીક્ષ્યાધ્યાયળ'ના શુણાતુવાદ કરતાં લખે છે કે— રાજે મહાયુરુષ

 [&]quot; ऐंड्रारजापन्तमाप्य कृतित्विक्त्वनाष्ठापुर्द्रमुपर्गगमसंगरंगम् । सुकानिकापिष्टपूर्यम्तव बीर ! शम्मीरम्मोज्योखरणयीनिक्तीयि पूजाप ॥५॥ "

[[] न्यायसम्बद्धाः]
२. यत्तर्थकंश्वियान्त्रियर्शनेषु, यूर्द्वयत्तामधिगतम्तरगत्त्रसुर्याः ।
कर्या दिक्तिय पग्यूयिकर्षदे। प्रमानित्रम् केत्रमण्यामातः ॥१॥
तर्क्यमणनयपुर्वविक्तेनेन प्रोद्देशियतिहम्मुनिकृत्केश्विक्ताः ।
प्रमुर्वशीदिनसम्बद्धाः प्रम्याय मध्युपद्वाः वर्ग्यादिनस्त्राः ॥१॥

સત્ય તકેથી ઉત્પન્ન થયેલી તીક્ષ્ણુ ખુન્દિ વહે સમગ્ર દર્શનામાં અગ્રેસરપણું પાસ્યા છે, તપા-ગચ્છમાં મુખ્ય છે, કાશીમાં અન્ય દર્શનીઓની સભાઓને જતીને શ્રેષ્ઠ જૈનમતના પ્રભાવને જેમણે વિસ્તાર્યો છે અને જેઓએ તકે, પ્રમાણુ અને નયાદિકના વિવેચન વહે પ્રાચીન મુનિઓનું શ્રતકેવલિપણું આ કાળમાં પ્રગટ ખતાવી આપ્યું છે, તે શ્રીયશાવિજયાપાધ્યાય વાચકસમૂહમાં મુખ્ય છે. ' આ 'ધર્મસંગ્રહ' શ્રંય તૈયાર થયા પછી શ્રીમાનવિજયજી મહા-રાભએ 'શ્રીઉપાધ્યાયજી' મહારાજની પાસે તેને શાધાવેલ છે.

ઉપાધ્યાયજીએ રચેલા શ્રંથા પૈકી હાલ થાડા જ ઉપલબ્ધ થાય છે. પાતે રચેલા 'જેન તક પરિભાષા '' શ્રંથની પ્રશસ્તિમાં તથા 'પ્રતિમાશતક 'ની પ્રસ્તાવનામાં (૧૦૦) એકસા ન્યાયના શ્રંથ રચ્યાનું સ્પષ્ટ પ્રતિપાદન છે. એ ઉપરાંત 'રહસ્ય' શબ્દાંકિત ૧૦૮ ગ્રંથા રચવાની હકીકત પાતે 'ભાષારહસ્ય'' શ્રંથના પ્રારંભમાં જણાવી છે.

ખીજા પણુ અનેક સંસ્કૃત–પ્રાકૃત ગેંચા તેઓશ્રીએ રચેલા છે. એ વાત અત્યારે ઉપલબ્ધ થતા 'રહેસ્ય' શબ્દ અને ન્યાય સિવાયના વિષયના અન્ય બ્ર'થાથી તથા તેમણે સાક્ષી તરીકે ભલામણુ કરેલા ગંથાથી પુરવાર થાય છે. આ રીતિએ અદિતીય ગંથાની રચનાઓ કરી આ મહાપુરુષે શ્રીજૈનશાસનની ભારે પ્રભાવના કરી છે. ઉપાધ્યાયજી વ્યાકરનું, કાવ્ય, કાય, અલંકાર, છંદ, તક, સિદ્ધાંત, આગમ, નય, નિશ્લેપ, પ્રમાણ, સપ્તભંગી આદિ સવ વિષય સંબંધી ઊંચા પ્રકારતું અતિશય સૃક્ષ્મ જ્ઞાન ધરાવતા હતા. એમના પ્રત્યેક થાં થામાં અપૂર્વ કવિત્વશક્તિ, વચન-ચાતુરી, પદ-લાલિત્ય, અર્થ-ગૌરવ, રસ-પાષણ, અલ કાર-નિર્પાલ, પર-પક્ષખાંડન, સ્વ-પક્ષમાંડન સ્થળે સ્થળે દરિગાચર થાય છે. એમની તક્શસ્તિ તથા સમાધાન કરવાની શક્તિ અપૂર્વ છે. પૂર્વાચાર્ય પ્રણીત અનેક ગ્રંથામાં સૂત્ર-ટીકા વગેરમાં જારી પડતી અનેક બાબતાનાં સમાધાન તેઓશ્રીએ બહુ યુક્તિપુરઃસર કર્યાં છે. પાતાના મંચામાં તેઓશ્રીએ વ્યવહાર અને નિશ્ચયનું સ્વરૂપ તથા શ્રીજિનેશ્વર દેવની પ્રતિમા તથા પૂનનું મંડન એવી ઉત્તમ રીતિએ કર્યું છે કે તેને મધ્યસ્થ અને જિજ્ઞાસુવૃત્તિએ વાંચનાર ને સમજનાર આત્મા તરત જ સન્માર્ગમાં સુસ્થિર ખની જાય છે. સૂત્ર, નિર્યુક્તિ, ચૃર્લિ, ભાષ્ય, અને ટીકા સ્વરૂપ પંચાંગીયુક્ત શ્રીજિનવચનના એક પણ અક્ષરને ઉત્ઘાપનાર પ્રત્યેક કુમતવાદીની તેએાએ સખત રીતે ખબર લીધી છે. દુંઢકાના ખંડન માટે તથા યતિએામાં મવેશેલી શિથિલતા દૂર કરવા માટે તેએાએ પાતાના ગ્રંથામાં ભારે પ્રયત્ન સેવ્યા છે. કુમતાનું સખત શબ્દામાં ખંદન કરવાથી તેમના અનેક દુરમના પણ ઊભા થયા હતા, પણ તેની લેશમાત્ર પરવા તેઓશ્રીએ કરી નથી. દરેક સ્થળેથી માનપાન મેળવવામાં જ પાતાની

१. " पूर्व न्यायिद्यारदलियदं कार्या प्रदत्तं युर्थः, न्यायाचार्यपदं ततः कृतकतप्रन्यस्य बस्मापितम् ।
 क्षिष्यप्रार्थनया नयादिविजयप्राक्षोत्तमानां शिद्यः, तत्त्वं विधिदिदं यशोविजय इम्याव्याभृदाक्यात्यान् ॥१॥ "
 —इति कृतत्र्यम्यायाम् ।

२. "तती मापाविद्युद्धपर्य रहस्यपदाद्वितनया निक्षीर्पिताष्टीत्तरशतप्रन्यान्तर्गनप्रमाग्रहस्य-स्याद्वारगहस्यादि सञ्जातीयं प्रकरणमिद्मगुरुवते ॥ " —द्ति स्वोतराभाषागृहस्यनीषःव्यक्ति

વિદ્વાના ઉપયોગ નહિ કરતાં, શિચિલાચારી યતિત્રમુદાય અને ફૂંદકા સામે નિઠરપણ લિલા રહી, તેઓશ્રીએ શ્રી જેનશાસનની ભારમાં ભારે સેત્રા અન્તવી છે. અદિતીય શાસનસેવા અને અતુપમ વિદ્વતાના પ્રતાપે–લઘુ હસ્ભિદ્ર, ખીન્ત હેમચંદ્ર તથા કલિકાલમાં શ્રુતકેવલીઓાર્નુ સ્મરુષ્ઠ કરાવનાર તરીકેની અનેકવિધ ઉત્તમ ઉપમાઓ તે પુરુષપુરુષ પામી ગયા છે.

માત્ર ૨૫૦ વર્ષ પૃર્વે થયેલા આ મહાપુરુષનું પણ પૃરંપુ રું સાહિત્ય આજે ઉપલબ્ધ થતું નથી, એ ખરેખર આપણી ભયંકર કમનત્રીખી છે. છતાં વર્તમાનમાં જે સાહિત્ય મળે છે તે પણ આપણા ઉપકાર માટે એહ્યું નથી. આવું પરમ ઉપકારક સાહિત્ય જગતમાં દ્વીષંકાળ પર્યત્ત ચિરસ્થાયી અની રહે, એ માટે સઘળા પ્રયત્ના ચાજવા, એ સમ્યગ્દૃષ્ટિ આત્માઓનું પરમ કર્તાવ્ય છે.

શ્રીક્રિપાધ્યાયછ મહારાનએ, 'ન્યાયખંડ—ખાલ' જેવા સંસ્કૃત બાપામાં દુર્ઘંટ શ્રંથા અનાવવા ત્રાયે, પ્રાકૃત જેનાના ઉપકારાયેં શુજરાતી બાપામાં પણ ઘણી સરસ પઘરચનાએ કરી છે. અસાધારણ ત્યાય અને પ્રમાણ વિષયક શ્રંથા દ્વારા પંડિતિશરામિણુએાનાં શિરાને પણ ઇપત્ કંપાવનાર આ મહાન્ પુરુષ 'જગજીવન જળ વા'લહા ' અને 'પુખ્ખલવઈ વિજયે જેવા ' જેવા સરળ પણ ગંભીર આશ્યવાળાં સ્તવનાદિકની રચનાએ કરે છે, એ તેઓની પરાપકારશીલતાની પરાકાશ છે. ગુજર ભાષામાં પણ તેઓશ્રીએ જેમ સરલ ચાવીશીએા, વીત્રી અને પદ્યોની રચના કરી છે, તેમ ૧૨૫–૧૫૦–૨૫૦ ગાથા જેવાં માડાં ગંભીર સ્તવના અને 'દ્રબ્ય–શુણ–પર્યાયના રાસ' જેવી દુર્ઘંદ રચનાએા કરી છે. એમની ચિત્ર–વિચિત્ર કૃતિઓના અનુભવ કરનાશ વિદ્વાના એમની અસાધારણ ણહિમત્તા અને અખંડ શાસ્ત્રાનુસારિતા બેઈને ચિત્તમાં અમદાર પાસ્યા સિવાય રહી શકતા નથી.

શીઉપાધ્યાયજની કૃતિઓએ તે સમયના વિદ્વાનાને આકર્ષ્યાં હતા, એટલું જ નહિ પણ આજ સુધી વિદ્વાનાનું તે તરફ એકસરખું આકર્ષણ કર્યું છે. તેઓ શ્રીનાં વચના આજે પણ પ્રમાણ તરીકે વિદ્વાના તરફથી અંગીકાર કરવામાં આવે છે. વધારે આશ્રધં ઉપભવનારી ખીના તા એ છે કે—સંસ્કૃત બંધાના ભાષાનુવાદા તા ઘણા થયા છે, પરંતુ શીઉપાધ્યાયજ મહારાજના ગુર્જર બંધ ' દ્રેત્ય–શુણુ–પર્યાય રાસ'ના અનુવાદ સંસ્કૃત ભાષામાં થયા છે એ પણ શીઉપાધ્યાયજની અદૃશૃતતાને સ્ચવા સાથે, તે મહાપુરુષના વચનાની આદેયતા પુરવાર કરે છે.

ઉપાધ્યાયજની ભાષાષ્ટ્રતિઓએ અનેક આત્માઓને એકિબીજની પ્રાપ્તિ કરાવી છે, સંખ્યાળંધ આત્માઓના સમ્યગૃદર્શન નિમંળ કરાવ્યાં છે તથા અનેકાનેક અંતઃકરદ્યાને શ્રીજિનશાસનના અવિડ્ડ રંગથી રંગી કીધાં છે. વર્તામાન સફીના પરમ—પ્રભાવક પાંચાલ—દેગાહારક શ્રીમદ્ વિજયાનંદસ્રિ મહારાનએ કુમતના ત્યાગ કરી, જે મહાયુરુપનું શરદ્ય સ્ત્રીકાર કર્યું હતું તે, શ્રીમદ્ આત્મારામજી મહારાના શુરુદેવ, શ્રીમદ્ ખુટેરાયજી મહારાના વગેરે અનેક મહાતમાઓના આ મહાયુરુપની ભાષાકૃતિઓએ મિશ્યામાર્ગમાંથી ખસેડીને સમ્યગ્નાર્ગની શ્રહા અને અનુસરળ કરાવ્યું છે, એ વાત પરિચિત આત્માઓને સુવિદિત છે.

શ્રીઉપાધ્યાયછની ગૂર્જરૃતિઓ સંસ્કૃત—પ્રાકૃત ભાષાના અભ્યાસી એવા મનુષ્યાને પણ જૈનશાસનના તલસ્પર્શી બાધ કરાવે છે. સમુદ્ર જેવા ગંભીર આગમગ્રંથાનું સારભૂત તત્વ પાતાની ગૂર્જર કૃતિઓમાં ગૂંથી તેઓશ્રીએ પ્રાકૃત જનતા ઉપર અનુપમ ઉપકાર કર્યો છે. કઠિનમાં કઠિન વિષયવાળા સંસ્કૃત પ્રાકૃત ભાષાના પૂર્વ મહર્ષિઓ વિરચિત શ્રંથાના સરળમાં સરળ ગૂર્જર પદ્યમય અકૃત્રિમ અનુવાદ કરવાની તેઓશ્રી અપૂર્વ શક્તિ અને કૃશળતા ધરાવતા હતા. તેઓશ્રીની પ્રત્યેક કૃતિ સપ્રમાણ છે. શાસ્ત્રાધાર સિવાયના એક અક્ષર પણ નહિ ઉચ્ચારીને તેઓશ્રીએ પાતાનું ભવભીરુપણું સાબિત કરી આપ્યું છે. તેમનાં રચેલાં સ્તવના આદિ એટલાં સરલ રસિક અને બાધપ્રદ છે કે, આજે પણ આવશ્યક —ચૈત્યવંદનાદિમાં તે હાંશપૂર્વક ગવાય છે.

તેમની નાનામાં નાની કૃતિમાં પણ તક અને કાલ્યના પ્રસાદ તરી આવે છે. આવા એક પ્રાસાદિક કવિ, સુક્તિમાર્ગના અનન્ય ઉપાસક, અખંડ સંવેગી, શુલુરત્નરત્નાકર, નિબિડ-મિચ્યાત્વ-ધ્વાંત-દિનમલિ, પ્રખર જિનાગ્રાપ્રતિપાલક અને પ્રચારક મહાપુરુપનું સ્મરલુ જૈનામાં કાયમ રહે એ માટે જેટલા પ્રયત્ના થાય તેટલા કરવા આવક્યક છે. આ મહાપુરુપની સાચી લક્તિ તેમની કૃતિઓના પ્રચાર કરવામાં રહેલી છે. આ સ્થળે એક વાત યાદ રાખવા જેવી છે કે, આ મહાપુરુપની કૃતિઓ ગંભીર શ્રીજિનાગમરૂપી સસુદ્રમાંથી ઉદ્ધરિત થયેલી છે, તેથી તેના રહસ્યના પૃરેપૃરા પાર પામવા માટે આગમશાસ્ત્રોના પારગામી ગીતાર્થ શુરુઓના ચરલેુાની સેવાના આશ્રય એ જ એક પરમ ઉપાય છે. આ મહાપુરુપની કૃતિઓના શુરુઓમાં ચરલેુાની સેવાના આશ્રય એ જ એક પરમ ઉપાય છે. આ મહાપુરુપની કૃતિઓના શુરુગમપૂર્વ અલ્યાસ, અર્થી આત્માઓને જૈનશાસનના તલસ્પર્શી ગાધ કરાવે છે, તથા સમ્યગૃદર્શન, સમ્યગ્રાન અને સમ્યક્ચારિત્રરૂપી માસમાર્ગની અત્રા-ધનામાં ઉત્તરાઉત્તર પ્રગતિ કરાવી આત્મિક અનંત સુખસાગરમાં નિશ્ચિતપણે ઝિલાવે છે.

[વિ. સં. ૧૯૯૨માં પ્રકાશિત થયેલ ' ગૂર્જર સાહિત્ય સંગ્રહ ' ભાગ ૧ લામાં આપેલી પ્રસ્તાવનામાંથી ઉપયોગી ભાગ.]



^{ं 🖈 &#}x27; यत्सर्वेषिषयद्याण्भोद्धवं सुगं प्राप्तते सरानेग । तदनन्तद्योटिसुणितं सुधेव समते बीतरानः ॥ ' ——इति श्रीप्रसमस्ती

[&]quot; સર્વ વિષય ક્લાયજનિત, જે સુખ શરે સરાગ; તેવથી ક્રાંટિ અનંત રુખુ મુધા હવે ગતરામ " —--પેલ્લ બરાસ

શ્રીમદ્ યશાવિજયજી

[જેન સાહિત્યના સંક્ષિપ્ત ઇતિદાસમાંથી]

લેખક : સ્વ. શીયુત માહનલાલ દલીચંદ દેસાઇ

૯૨૭. આ (સુજસવેલીના) જીવનવૃત્ત પરથી જણાય છે કે નાની વયે દીક્ષા લીધી હતી તેથી જન્મ સં. ૧૬૮૦ મૂકી શકાય. પર વર્ષનું આયુષ્ય એ ગણનાએ થશું. તે દરમ્યાન ૮ વર્ષની શિશુઋવસ્થા પછી નયવિજય શુરુ પાસે ૧૧ વર્ષ અલ્યાસ કરી શુરુ સાથે કાશી જઈ ત્રણુ વર્ષ ત્યાં ને પછી આગામાં ૪ વર્ષ અખંડ ઊંચા અલ્યાસ કરી-એમ ૧૭૦૬–૭ સુધી ૧૮ વર્ષ વિદ્યા–ત્ર્યાયામમાં ગાળી જીવન પર્યે ત અંધા સ્ત્રવાતું ચાલુ રાખ્યું. ભાષાદરિએ પ્રાકૃત, સંસ્કૃત અને રાજરાતીમાં પુષ્કળ કૃતિએ રચી. વિષયા પરત્વે ત્યાય, યાગ, અધ્યાતમ, દર્શન, ધમ નીતિ; ખંડનાત્મક ધર્મ સિદ્ધાંત, કઘાચરિત, મૃદ્ધ તેમજ ટીકારૂપે રચનાએ કરી. ' તેમના જેવી સમત્વયશક્તિ રાખનાર, જેન જેનેત્તર મોલિક શ્રંથાનું ઊંડું દેહિન કરનાર, પ્રત્યેક વિષયના અંત સુધી પહોંચી તેના પર સમભાવપૂર્વક પાતાનાં સ્પષ્ટ મંતવ્ય પ્રકાશનાર, શાસ્ત્રીય અને હોકિક ભાષામાં વિવિધ માહિત્ય રચી પાતાના મરળ અને કદિન વિચારાને સર્વ જિન્નામુ પાસે પહેાંચાટવાની ચેછા કરનાર અને મંત્રદાયમાં રહીને પણ સંપ્રદાયના **અંધનની પરવા નહિ કરીને જે કાંઈ ઉચિત જણાયું તેના પર નિર્ભયતાપૂર્વંક લખનાર,** કેવલ ^{શ્}વેતાંખર-દિગંખર ગ્રમાજમાં જ નહિ ખરકે જૈનેતર ગ્રમાજમાં પણ તેમના જેવા કાઈ વિશિષ્ટ વિદ્વાન અત્યાર સુધી અમારા ધ્યાનમાં આવેલ નથી. પાઠક સ્મરહમાં રાખે કે આ અસ્કૃદિત નથી. અમે ઉપાધ્યાયજના અને ખીજ વિદ્વાનાના ગંથાનું અત્યાર સુધી એ કે અલ્પમાત્ર અવલાકન કર્યું છે તેના આધારે તાળી-જાખીને ઉદ્ય લાક્ય લખ્યાં છે. નિ:સંદેહ શ્વેતાંખર અને દિગંબર સમાજમાં અનેક અદ્ભશ્રુત વિદ્વાન થઈ ગયા છે. વૈદિક તથા બીદ સંપ્રદાયમાં પણ પ્રચંટ વિદ્રાનાની કમી રહી નથી; ખાસ કરીને વૈદિક વિદ્રાન્ તેા હંમેશથી ઉચ્ચ સ્થાન લેતા આવ્યા છે, વિદ્યા તા માના કે તેમના આપની; પરંતુ એમાં શક નથી કે કાઈ બીહ યા કાઈ વૈદિક વિદ્રાન્ આજ સુધી એવા થયા નથી કે જેના બંધના અવ-લાકનથી એવું બાળુવામાં આવે કે તે વૈદિક યા બીન્દ્ર શાસ્ત્ર ઉપરાંત જેન ગ્રાસ્ત્રનું પણ વાસ્તવિક ઊંદું અને સર્વવ્યાપી અલુપાયું રાખતા હાય. આથી ઊલદું ઉપાધ્યાયજના શ્રેયાને ધ્યાનપૂર્વં ક તેનાર કાઈ પણ અદુ ઝવ દાર્શનિક વિદ્વાન એવું કદ્યા વગર નહિ રહેશે કે ઉપાધ્યાયજી જૈન હતા તેથી જૈનશાસ્ત્રનું ઊંદું ગ્રાન તેા તેમને માટે સહજ હતું પરંતુ ઉપનિષદ્, દર્શન આદિ વૈદિક શ્રંથાનું તથા બીંદ્ર શ્ર્થાનું આડકું વાસ્તવિક પરિપૃર્ણ અને સ્પષ્ટ જ્ઞાન તેમની અપૃવ પ્રતિયા અને કાશીસેવનનું જ પરિણામ છે. '¹

૧. ગુત્રાચક્ષુ પંડિત શ્રીસુખલાલના ધાયદર્શન તથા યાગિવિશિકા'માં હિંદીમાં આપેલ 'પરિચય'માંથી અનુવાદ.

હ્રેટ. 'તેઓ જન્મસંસ્કારસંપન્ન શ્રુતયાગસંપન્ન અને આજન્મ પ્રદ્રાચારી ધુરંધર આચાર્ય હતા. સામાન્ય રીતે પાતાના બધા ટીકાર્યથામાં તેમણે જે જે કહ્યું છે તે બધાનું ઉપપાદન પ્રાચીન અને પ્રામાણિક શ્રંથાની સમ્મતિદ્વારા કર્યું છે, ક્યાંયે કાઈ શ્રંથના અર્થ કાઢવામાં ખેંચતાણ નથી કરી. તર્ક અને સિદ્ધાન્ત બંનેનું સમતાલપણું સાચવી પાતાના વક્તવ્યની પુષ્ટિ કરી છે, × × માત્ર અમારી દૃષ્ટિએ નહિ પણ હરકાઈ તટસ્થ વિદ્વાનની દૃષ્ટિએ જૈન સંપ્રદાયમાં ઉપાધ્યાયજનું સ્થાન, વૈદિક સંપ્રદાયના શાંકરાચાર્ય જેનું છે.'?

૯૨૯. પાતે શ્વેતામ્ખર તપાગચ્છમાં હતા અને શ્રીઅકખરપ્રતિએાધક હીરવિજય-સૂરિના શિષ્ય ષટતર્કી વિદ્યાવિશારદ પ્રસિદ્ધ ઉપાધ્યાય કેલ્યાણવિજય, તેમના શિષ્ય સકલ શખ્દાતશાસનનિષ્ણાત લાભવિજય, તેમના શિષ્ય પંડિત છતવિજય, અને તેમના ગુરૂલાઈ નયવિજયના શિષ્ય હતા. તેમનું ન્યાય-તકનું જ્ઞાન અદુલુત હતું ને પાતે જબરા વાદી હતા. પાતાના સમયમાં ગાલતા અન્ય સંપ્રદાયા નામે દિગંખરમત, અને સ્વ-^{શ્}વેતાંખરમાંથી નીકળેલ મૃતિ પૂજાનિષેધક લાંકાસંપ્રદાય તથા ખીજી જૂદી જૂદી વિધિ અને માન્યતામાં જુદા પડતા એવા નાની શાખાએ રૂપી ગચ્છા નામ પાશ્વચંદ્ર ગચ્છ, કડવાના મત અને વીજાના મત હતા. તદુપરાંત ધર્મસાગરે અનેક પ્રરૂપણાઓ કરી આખા શ્વેતાંબર ગચ્છના તંત્રને હલાવી મુક્યું હતું. અને પછી તેમના શિષ્યવગે તે પ્રરૂપણા ચાલુ રાખી હતી. આ સર્વના મતાના નિરાસ કરવા માટે પ્રમાણા આપવા ઉપરાંત તેમની કઠાર શબ્દામાં ઝાટકણી કરી છે. દિગંખરા સામે ખાસ બંથા 'અધ્યાત્મમત પરીક્ષા, જ્ઞાનાલુંવ' (અનુપલખ્ધ) એ સંસ્કૃતમાં, અને હિંદીમાં 'દિક્પટ ચારાસી બાલ,' લાંકા-ઢુંઢીઆ સામે સંસ્કૃત-ગલ થંથ નામે 'દેવધમ'-પરીક્ષા ' સંસ્કૃત કાવ્યમાં ' અતિમાશતક 'ના ૬૯ શ્લાકા અને તે પછી રચેલી તે પર સ્વાપન્ન ટીકા, ગુજરાતીમાં 'મહાવીર સ્તવન' અને 'સીમ'ધર સ્તવન' આદિ, ધમ'સાગર સામે ઉક્ત 'પ્રતિમા-શતક'માંના ૯ શ્લાક, પ્રા. 'ધમ'પરીક્ષા' અને તે પર સંસ્કૃત ટીકા રચેલ છે. આ ખંડનાત્મક ગ્રાંશા રચવામાં 'પ્રેરણાત્મક વસ્તુ પાતાના દઢ—'દર્શન પ્રશ્ન' છે અને વળી કહે છે કે, ' વિધિનું કહેલું, વિધિ પરંની પ્રીતિ, વિધિની ઇચ્છા રાખનાર પુરુષાને વિધિમાગમાં પ્રવત્તાંવવા તથા અવિધિના નિષેધ કરવા એ સવે અમારી જિનપ્રવચન પરની લક્તિ પ્રસિદ્ધ છે. ('અધ્યાત્મસાર'ના અનુભવાધિકાર શ્લા. ૩૧, ૩૨). આ દર્શનપક્ષ અને પ્રવચનભક્તિને પરિજ્ઞામ આ ગાંચા રચ્યા અને તેમાં પાતાની તક શક્તિના ઉપયાગ કર્યાં. તે જ તક શક્તિને પાતંજક, સાંખ્યાદિ સવ[°] દશ⁶નાના સ્વદર્શન સાથે યુક્તિયુક્ત સમન્વય કરવામાં પછ કામે લગાડી. એ રીતે ચાગ અને અધ્યાત્મમાં ઊતરી આત્માનુલવ પછુ પાતે પ્રાપ્ત કરી શક્યા.

૯૩૦. ન્યાયના ચાથા નામે ફેલ-કાળ-આ યુગમાં જે સાહિત્ય રચાયું તે ફળરૂપ છે. ફળમાં બીજથી ફેલ સુધીના ઉત્તરાત્તર પરિપાકના સાર આવી જાય છે, તેવી રીતે આ યુગના સાહિત્યમાં પહેલા ત્રણે યુગના સાહિત્યમાં થયેલા પરિપાક એકસાથે આવી જાય છે. આ યુગમાં જે જૈન ન્યાય સાહિત્ય રચાયું છે તે જ જૈન ન્યાયના વિકાસનું છેલ્લું પગથિયું

૧. ઉક્ત સુખલાલ પંડિતજીના 'ગુરૃતત્ત્વવિંનશ્વ' એ નામના યરો વિજયજી કૃત પ્રધમાં 'પ્રંથ અને કર્તાના પરિચય '.

છે, કારણ કે ત્યારખાદ તેમાં કાઈએ જરાય ઉમેરા કર્યો નથી. મિલ્લિપેણની 'સ્યાદ્રવાદમ' જરી'ને ખાદ કરીને આ યુગના કલાયમાન ન્યાયવિષયક ઉચ્ચ સાહિત્ય તરફ નજર કરીએ તો જલાગે કે તે અનેક વ્યક્તિએના હાથે લખાયું નથી, તેના લેખક કૃષ્ટત એક જ છે અને તે સત્તરમા—અઢારમા સૈકામાં થયેલા, લગભગ સા (? સાઠ) શરદા સુધી મુખ્યપણે શાસ્ત્રયાંગ સિલ્લ કરનાર, સંસ્કૃત, પાકૃત, ગૃજરાતી અને મારવાઢીએ ચારે લાપાઓમાં વિવિધ વિપયાની ચર્ચો કરનાર ઉપાધ્યાય યશાવિજયજી છે. ઉપાધ્યાયજીના જૈન તત્ત્વનાન, આચાર, અલંકાર, છંદ વગેરે અત્ય વિષયાના બ્રંથાને ખાદ કરી માત્ર જૈન ન્યાયવિષયક બ્રંથા ઉપર નજર નાખીએ તો એમ કહેલું પઢ છે કે, સિલ્લસેન ને સમંતલક્ષ્યી વાદી દેવસ્તિ અને હેમચંદ્ર સુધીમાં જૈન ત્યાયના આતમા જેટલા વિકસિત થયા હતો તે પૃરેપૃરા ઉપાધ્યાયજીના તર્ક- બ્રંથામાં મૃતિમાન થાય છે; અને વધારામાં તે ઉપર એક કૃષ્ણ ચિત્રકારની પેઠે તેઓએ એવા સ્કૃસતાના, સ્પષ્ટતાના અને સમન્વયના રંગા પૃર્યા છે કે, જેનાથી મુદિતમના થઈ આપાઓપ એમ કહેવાઈ જય છે કે, પહેલા ત્રણ યુગનું ખન્ને (દિગંબર અને શ્વેતાંબર) સંપ્રદાયનું જૈન ત્યાયવિષયક સાહિત્ય કહાચ ન હાય અને માત્ર ઉપાધ્યાયજીનું જૈન ત્યાયનિષયક સાહિત્ય કહાચ ન હાય અને માત્ર ઉપાધ્યાયજીનું જૈન ત્યાયનિષયક સાહિત્ય કહાચ ન હાય અને માત્ર ઉપાધ્યાયજીનું જૈન ત્યાયન્ય વિષયક સંપૂર્ણ સાહિત્ય ઉપલબ્ધ હાય તાેયે જૈન વાલ્મય કૃતકૃત્ય છે.

૯૩૧. 'ઉપાધ્યાયછએ અધિકારીલેકને ધ્યાનમાં રાખી, વિષયોની વહેં ગણી કરી તે ઉપર નાના—માટા અનેક જેન ન્યાયના બ્રેશા લખ્યા. તેઓએ 'જૈનતક પરિભાષા' જેને જેન ન્યાયપ્રનેશ માટે લઘુ અંથ રચી, જૈન ત્રાહિત્યમાં 'તર્ક મંબ્રહ' અને 'તર્ક ભાષા'ની ખાટ પૂરી પાઠી. 'સ્કેસ્ય' પદાંકિત એક સા અઠ બંચા કે તેમાંના કેટલાક રચી જેન ન્યાયવાહ્મયમાં નૈયાયિક પ્રવર ગદાધર લક્ષ્યાયાયના બ્રેચાની ગરજ સારી, 'નયપ્રદીપ, નયરહસ્ય, નયામૃતતરં ગિણી સહિત નયાપદેશ, સ્યાદ્વાદક સ્પલતા, ન્યાયાલાક, ખંડનખંડખાદ્ય, અષ્ટસહસી ટીકા' આદિ બંચા સ્થી જેન ન્યાયવાહ્મયને ઉદયનાચાર્ય, ગંગેશ ઉપાધ્યાય, રઘુનાય શિરામણિ અને જગદીશની પ્રતિભાતું નેવેદ્ય ધર્યું. 'અધ્યાત્મસાર, અધ્યાત્મિપનિષદ' જેવા બ્રેચાયી જેન ન્યાય વાહ્મયના 'ગીતા, યાગવાસિષ્ઠ' આદિ વૈદિક બ્રેચા સાથે સંબંધ તેહયો. શાહામાં એટલું જ કહેલું ખસ છે કે, વૈદિક અને બીન્દ્ર સાહિત્યે દાર્શનિક પ્રદેશમાં સત્તરમા સેકા સુધીમાં જે ઉદ્યું સાધ્યો હતો, લગભગ તે બધા ઉદ્યું નો આસ્વાદ જૈન વાહ્મયને આપવા ઉપાધ્યાયજએ પ્રમાણિકપણે આપાં છવન વ્યતિત કર્યું અને તેઘી તેઓના એક તેજમાં જૈન ન્યાયનાં બીર્લા બધાં તેએ લગભગ સમાઈ લય છે, એમ કહેલું પડે છે.''

લ્ટર. 'રહેસ્ય'થી અંકિત 'પ્રમારહેસ્ય, સ્યાદ્વાદરહેસ્ય, (કે વા અને) વાદરહેસ્ય, ભાષારહેસ્ય, નયરહેસ્ય અને ઉપદેશરહેસ્ય' તેમણે રચ્યા છે તે નિવિધાદ છે. પ્રથમના ત્રણ અનુપલબ્ધ છે પણ તેમના ઉદ્યેખ-નિદેશ અન્ય ગ્રેશામાં સ્પષ્ટ છે. એવા 'રહેસ્ય' અંકિત સા ગ્રંથ કરવાની પાતાની ઇચ્છા 'ભાષારહેસ્ય'માં બ્યક્ત કરી છે.' આ 'રહેસ્ય' શબ્દથી અંકિત કરવાની સ્કુરણા, પ્રસિદ્ધ નેયાયિક મશુરાનાથના 'તત્ત્વરહેસ્ય' અને 'તત્ત્વાલાકરહેસ્ય'

૧. પંદિત સુખલાલના ભાવનગરના સાતમા ગુરત્યાતા સાહિત્ય પણિક માટેના નિવ્યંધ નામે ' જેન ન્યાયના ક્રમિક વિકાસ.'

નામના ટીકામ થા પરથી થઈ લાગે છે. તેમના 'મંગલવાદ' અને 'વિધિવાદ' નામના હાલ અનુપલબ્ધ શ્રંથાના નામમાં 'વાદ' શબ્દ વાપરવાની સ્કુરણા તેમના સમકાલીન નન્યન્યાયના વિદ્વાન ગદાધરે રચેલ 'ન્યુત્પત્તિવાદ', 'શક્તિવાદ' આદિ ન્યાયમંથ પરથી થઈ લાગે છે. યશાવિજયછ નન્યન્યાય પીને પચાવી ગયા હતા અને તેથી જ નવીન તત્ત્વા તેમણે જૈન દર્શનમાં આણ્યાં, તેમ જ નન્યન્યાયનાં તત્ત્વાનું પણ જૈન દર્શનમાં આણ્યાં, તેમ જ નન્યન્યાયનાં તત્ત્વાનું પણ જૈન દર્શનાં આણ્યાં, તેમ જ નન્યન્યાયનાં તત્ત્વાનું પણ જૈન દર્શનાં અપદા કર્યું. આ જ યશાવિજયછની વિશિષ્ટતા છે કે સં. ૧૨૫૦થી માંડી તેમના સમય સુધી જે અન્ય જૈનાચાર્યા ન કરી શક્યા તે તેમણે કર્યું. તેમની શૈલી જગદીશ ભદાચાર્યના જેવી શબ્દ-બાહુલ્ય વગરની ગંભીર ચર્યા કરનારી છે. મશુરાનાયના એમણે ઘણે સ્થળે ઉપયાગ અને નામાલ્લેખ પણ કર્યો છે. હેમચંદ્રાચાર્ય જેમ પાતાના સમકાલીન મલયગિરિ અને વાદી-દેવસ્રિના ઉલ્લેખ નથી કર્યાં, તેમ યશાવિજયછએ પાતાના સમકાલીન જગદીશના નથી કર્યાં પરંતુ જગદીશના શ્રંથથી તેઓ જાણીતા હતા એમ અનુમાન થાય છે.'

ં ૯૩૩. જૈનાના 'યાગ સાહિત્ય સંબંધમાં હરિભદ્રસૂરિના યાગવિષયક ગ્રંથ અને ત્યાર બાદ હૈમચંદ્રાચાર્યનું 'ચાગશાસ્ત્ર' આપણે જોઈ ગયા. પછી આ ઉપાધ્યાય યશા-વિજયકૃત ચાેગગ્રે થા પર નજર ઠરે છે. તે ઉપાધ્યાયના શાસ્ત્રજ્ઞાન, તર્કકોશલ અને ચાેગા-નુભવ ઘણાં ગંભીર હતાં. તેથી તેમણે 'અધ્યાત્મસાર, અધ્યાત્માપનિષદ' તથા 'સટીક ખત્રીશીઓ ' યાગ સંખંધી વિષયા પર લખેલ છે. તેમાં જૈન મંતબ્યાની સૂક્ષ્મ અને રાચક મીમાંસા કરવા ઉપરાંત અન્ય દર્શન અને જૈનદર્શનની સરખામણી પણ કરી છે. દાં તં 'અધ્યાત્મસાર 'ના ચાગાધિકાર અને ધ્યાનાધિકારમાં પ્રધાનપણ 'ભગવદુગીતા ' તથા ' પાતંજલ સૂત્ર 'ના ઉપયાગ કરી અને જૈનપ્રક્રિયાપ્રસિદ્ધ ધ્યાનવિષ્યાના ઉક્ત ખંને શ્રંથાની સાથે સમન્વય કર્યો છે. 'અધ્યાત્માપનિષદ્ 'ના શાસ્ત્ર, જ્ઞાન, ક્રિયા અને સામ્ય એ ચાર ચાગામાં પ્રધાનપણ 'ચાગવાસિક' તથા 'તૈત્તિરીયાપનિષદ્ 'નાં વાકચોનાં અવતરજુ આપી તાત્વિક ઐકચ અતાર્ગ્યું છે. 'ચાગાવતાર' દ્વાત્રિંશિકામાં ખાસ કરી 'પાતંજલ–ચાગ'ના પદાર્થીનું જૈનપ્રક્રિયા અનુસાર સ્પષ્ટીકરણ કર્યું છે. આ ઉપરાંત તેમણે હરિબદસૂરિકૃત 'ચાગ-વિશિકા' તથા 'ષાહશક' પર ટીકાએ લખી પ્રાચીન ગૃઢ તત્ત્વાનું સ્પષ્ટ ઉદ્ઘાટન પણ કર્યું છે. આટલું જ કરીને સંતુષ્ટ ન રહેતાં તેમણે મહિષે પતંજલિકૃત 'ચાગસૂત્રા ના ઉપર એક નાનીશી વૃત્તિ: પણ લખી છે. આ વૃત્તિ જૈનપ્રક્રિયાનુસાર લખાયેલી હાવાથી તેમાં યથા-સંભવ ચાગદશ નની ભીંતરૂપ સાંખ્ય પ્રક્રિયાની જૈન પ્રક્રિયા સાથે સરખામણી પણ કરી છે. ઉપાધ્યાયજની પાતાની વિવેચનામાં જેવી મધ્યસ્થતા, ગુણ્યાહકતા, સૂક્ષ્મ સમન્વયશક્તિ અને સ્પષ્ટભાષિતા દેખાઈ છે તેવી બીજા આચાર્યોમાં ઘણી એાછી નજરે પડે છે.'?

૯૩૪. મહિષ પતંજલિએ પાતાનું 'ચાગદર્શન' સાંખ્ય સિદ્ધાંત અને પ્રક્રિયા પર રચ્યું છે તાે પાલુ તેમની દૃષ્ટિવિશાલતાથી તે સર્વ દર્શનાના સમન્વય રૂપ બન્યું છે, દા. ત. સાંખ્યના નિરીધરવાદ વૈશેષિક આદિ દર્શના દ્વારા ઠીક નિરસ્ત થયા અને સાધારણ લાક-

[.] ૧. રા. માહનલાલ ઝવેરીના અભિપ્રાય.

ર. જુઓ તેમની 'શાસ્ત્રવાર્તાસમુચ્ચય–વૃત્તિ ' અને 'પાતંજલસ્ત્રવૃત્તિ '

સ્વભાવના ક્રુકાવ ઈશ્વરાપાસના પર વિશેષ જણાયા ત્યારે અધિકારીભેક તથા ટુચિવિચિત્રતાના વિચાર કરી તેમણે કથિરાપાસનાને પણ સ્થાન આપ્યું (સૂત્ર ૧–૩૩) અને કથિરના સ્વરૂપનું નિષ્પક્ષભાવથી એવું નિરૂપણ કર્યું કે જે સર્વને માન્ય થઈ શકે (સૂત્ર ૧–૨૪, ૨૫, ૨૬) પસંદ આવે તે પ્રતીકની ઉપાસના કરા પણ કાઈ પણ રીતે મન એકાબ-સ્થિર કરા અને તે દ્વારા પરમાત્મચિતનના સાચા પાત્ર અના. આથી ધર્મને નામે કલક ટાળવાના સાચા માર્ગ ખતાવ્યા. આ દૃષ્ટિવિશાલતાની અસર અન્ય શુલુબાદ્દી આચાર્યો પર પણુ પડી. તેવા આગાયોમાં હરિભદ્રસ્રિ અને યશાવિજયનું ખાસ સ્થાન છે. (દા. ત. હરિસદ્રે 'ચાગબિંદુ ' શ્ર્રા. ૧૧–૨૦ માં સર્વ દેવાની ઉપાસના લાલદાયક અતાવી તે પર 'ચારિ સંજીવની ચાર' એ ત્યાયના ઉપયાગ કર્યો છે અને એ જ રીતે પ્રશાવિજયે પાતાની 'પૂર્વ-સેવા દ્રાત્રિશિકા, ' ' આઠ દૃષ્ટિએાની સજઝાય ' આદિ શ્રીયામાં અનુકરણ કરેલ છે.) જેન દર્શન સાથે 'પાત'જલ યાગદર્શન'નું સાદસ્ય અન્ય સવ' દર્શ'નાની અપેક્ષાએ અધિક છે. તે સાદશ્ય (૧) શખ્દતું (૨) વિષયતું અને (૩) પ્રક્રિયાતું-એમ સુખ્યતથા ત્રણ પ્રકારતું છે. (૧) મૃલ યેાગસ્ત્રમાં જ નહિ પરંતુ તેના ભાષ્ય મુદ્રામાં એવા અનેક શાષ્ટ્રી છે કે જે જેનેતર દર્શનામાં પ્રસિદ્ધ નથી યા તા એાછા પ્રસિદ્ધ છે, જ્યારે જેનગ્રાસમાં ખાસ પ્રસિદ્ધ છે. જેવા કે ભવપ્રત્યય, સવિતક'–સવિચાર–નિવિ'ચાર, મહાવત, કૃત–કારિત–અતુમાહિત, પ્રકાશાવરણ, સાપક્રમ, નિરુપક્રમ, વજાય હનન, કેવલી, કુશલ, ગ્રાનાવરણીય કર્મ, સ્રમ્યગ્રાન, સ્રમ્યન્દ્રશન, ત્રવંત્ર, ક્ષીણુકક્ષેશ, ચરમદેહ આદિ (સરખાવા–ચાેગસૂત્ર અને તત્ત્વાર્થ), (૨) વિષયામાં પ્રસુપ્ત તતુ આદિ કલેશાવસ્થાએા, પાંચ ચમ, ચાગજન્મ વિભૂતિ, સાપક્રમ નિરુપક્રમ કર્માનું સ્ત્રરૂપ તથા તેનાં દુષ્ટાંત, અનેક કાર્યોનું નિર્માણ આદિ. (૩) પ્રક્રિયામાં પરિણામી, નિત્યતા અર્થાત્ હત્યાદ, વ્યય, શ્રીવ્ય રૂપે ત્રિર્પ વસ્તુ માની તદતુસાર ધર્મ-ધર્મીતું વિવેશન. આ રીતે જણાવી વિચારસમતાના કારહ્યું હરિસદ્ર જેવા જેનાચાર્યે મહિષ પત જિલ પ્રતિ હાર્દિ'ક આદર પ્રગટ કરી પાતાના ચામાં શુણુબાહકતાના નિભીંક પસ્થિય આપ્યા છે. (ન્તુઓ 'ચાેગબિંદુ' ?લાેંગ ૬૬ ઉપર અને 'ચાેગદૃષ્ટિસસુચ્ચય' ?લાેંગ ૬૦ ઉપર ડીકા) અને સ્થળે સ્થળે પતંજલિના ચાેગગાસ્ત્રગત ખાસ સાંકેતિક ગ્રાન્ટોને જૈન સંકેતાે સાથે ત્રરખાવી સંદીષ્દું દબ્ટિવાળાને માટે એક્તાના માર્ગ ખાદયા છે. (લુએા: 'ચાર્ગાબદું' શ્લાિ ૪૧૮, ૪૨૦) યગ્રાવિજયે પતંજલિ પ્રત્યે આદર અતાવી (જુએા: 'ચાગાવતાર દ્રાત્રિશિકા' હસ્ભિદ્રસૃશ્નિા સ્ચિત એકતાના માર્ગને વિશેષ વિશાલ અનાવી પતંજિલના ' ચાગસૂત્ર'ને જેન પ્રક્રિયા અનુસાર ગ્રમજાવવાને ચાઉા પણ મામિક પ્રયાગ્ર કર્યો છે (હ્યુંએા: 'પાતંજલ સુત્રવૃત્તિ') આટલું જ નહિ અલ્દે પાતાની દ્વાત્રિશિકાએા (અત્તીસીએા)માં તેમણે યતંજિલના ચારાસ્ત્રગત કેટલાક વિષયા પર ખાસ અત્રીશીઓ—નામ યાતંજલ ચારાલકાણવિચાર, ઈંગાનુગ્રહવિચાર, યાેઆવતાર, કલેશહાનાેપાય અને યાેેેેેમમાહાત્મ્ય (ઢાર્ત્રિશિકાએા) સ્ચી છે.'^૧

^{[&#}x27;જૈનસાદિત્યના સંક્ષિપ્ત ઇતિદાસ' (સં. ૧૯૮૯)યાંથી 'શ્રીયગાવિજય યુમ' વિભાગના પૃષ્ટ : ૬૩૧ થી ૬૩૯.]

૧. પાંડતવર્ષ શ્રીસુખવાલજીની 'ચાગદર્જાન તથા ચાગિવિશિકા 'ની હિંદી પ્રસ્તાવના પરેચી.

શ્રીમદ્ યશાવિજયજી

લેખક : શ્રીયુત નાગકુમાર મકાતી. [વડાદરા]

ભારતવર્ષ એ સતો અને મહાત્માઓની બૂમિ છે એમ કહીએ તો તેમાં જરા પશુ અતિશયોહિત નથી. રામ, કૃષ્ણ, મહાવીર અને છુદ્ધ જેવા પયગમ્બરાથી માંડીને દરેકની પરંપરાને જાળવી રાખનારી મહાન્ વિબૂતિએ સમયે સમયે અને યુગે યુગે આ દેશમાં મગડી છે. ભારતવર્ષનું એ સોભાગ્ય છે કે તેના અનેક માંઘા સપૂતાએ પાતાનાં ત્યાગ, તપ, વૈરાગ્ય, વિદ્વત્તા, ગ્રાન, ધ્યાન, યાગ, અધ્યાત્મ, એાજસ અને સ્વાપેલુથી જનની જન્મબૂમિની કૃખ દીપાવી છે.

આર્ય ધર્મની ત્રથુ મહાન્ શાખાઓ-જેન, વૈદિક અને બોહ. તે પૈકી બોહધર્મ ભારતમાંથી દેશવટા લીધા પછી પથુ વૈદિક અને જૈનધર્માએ દેશના સંસ્કારઘડતરમાં પાતાના યશસ્વી ફાળા સતત આપ્યા કર્યો છે અને હજ પથુ આપ્યે જય છે.

જૈનધમે જે સંસ્કારસ્વામીઓ અને ધમંધુરંધરાની લેટ ભારતવર્ષને ચરણે ધરી છે તેમાં ૧૪૪૪ શ્રંથાના રચયિતા શ્રીહરિલદ્રસૂરિ અને ગ્રાન-વિગ્રાનનાં તમામ ક્ષેત્રાને ખૂંદી વળનાર કલિકાલસર્વં શ્રીહેમચંદ્રાચાર્યનાં નામા જેન અને જૈનેતર જનતામાં સારી રીતે જાણીતાં છે. તેમના જ જેવી એક મહાન્ વિબૂતિએ આજથી અહીસા વર્ષ ઉપર પાતાની ગ્રાન-સૌરલથી ભારતને અને ખાસ કરીને ગુજરાતને અડધી સહી સુધી સુવાસિંત કર્યું હતું. પાતાના ઉચ્ચ ચારિત્ર્યથી, દિવ્ય સાધુતાથી, પ્રખર પાંડિત્યથી, અદ્ભિતીય ખુદ્ધિ-પ્રતિભાશી, અભિનવ કાવ્યશક્તિથી, ષડ્દર્યનના તલસ્પર્શી ગ્રાનથી, નવ્ય-ન્યાયની પ્રખર મીમાંસાથી અને ધર્મ-ઉત્થાનના ભગીરથ પ્રયત્નાથી વિશદ યશ પ્રાપ્ત કરનાર એ યુગ-પુરત્નું શુલ નામ હતું ઉપાધ્યાય શ્રીયશાવિજય.

આ મહાપુરુષની જન્મસાલ ચાઇકસ પ્રાપ્ત થતી નથી પરંતુ વિ. સં. ૧૬૮૦ માં અગર તેની લગભગમાં તેમના જન્મ ઉત્તર ગુજરાતમાં રૂપેલુ નદીના કિનારા ઉપર આવેલા કનાડા ગામમાં થયા હતા. આ ગામ દશમા—અગિયારમા સૈકાથી પછુ પ્રાચીન હાવાના પુરાવા મળી આવે છે. તેમની માતાનું શુભ નામ 'સાભાગદે' અને પિતાનું શુભ નામ 'નારાયલુ' હતું. શ્રીયશાવિજયજનું બાલ્યકાળનું નામ 'જશવંત' હતું અને તેમને 'પદ્મસિંહ નામે ભાઈ હતા. આ બન્ન ભાઈ એગ્ગે વિ. સં. ૧૬૮૮ માં પંડિત શ્રીનય-વિજયજના શુભ હસ્તે દીક્ષા અંગીકાર કરી હતી અને તેમનાં નામ અનુકમે 'શ્રીયશા-વિજય' અને 'શ્રીપદ્મવિજય' રાખવામાં આવ્યાં હતાં.

શ્રીયશોવિજયછની ખુહિપ્રતિભાના ચમકારા શરૂઆતથી જ જદ્યાવા લાગ્યા હતા. વિ. સં. ૧૬૯૯ માં તેમણે અમદાવાદના 'સંઘ' સમક્ષ આઠ અવધાન કર્યાં. આધી પ્રભાવિત થઈ ત્યાંના એક શ્રેષ્ઠીએ તેમના ગુરૂને વિનંતિ કરી કે, શ્રીયશોવિજયછ જેવા હાશિયાર યુવાન સાધુને કાશી જેવા સ્થાનમાં અભ્યાસ કરાવી ખીજા હેમચંદ્ર જેવા ખનાવા. કાશીના અભ્યાસના બધા ખરચ પાતે ઉપાડી લેવા તૈયારી ખતાવી અને છે હજાર દીનારની હુંહી લખી પણ દાંધી. ગુરૂ નયવિજય શિષ્યો સહિત કાશી આવ્યા અને ત્યાંના પ્રસિદ્ધ ભદાચાર્ય પાસે ત્રણ વર્ષ મુધી વિદ્યાભ્યાસ કરાવ્યા. તીક્ષ્ણ મેધા અને સ્ક્રમ શ્રહણા કાશી તેમણે ત્રણ જ વર્ષના ગાળામાં અદ્ભુત વિદ્વત્તા પ્રાપ્ત કરી અને અનનુકરણીય વાદ અને વક્તૃત્વ- શિક્તથી કંઈ વિદ્વાના ઉપર વિજય મેળવ્યો. આથી કાશીમાં જ પંડિતાની સભાએ તેમને 'ન્યાયવિશારક' અને 'ન્યાયાચાર્ય' જેવી પદવીઓ આપી.

કાશી છેાડવા પછી તેઓ ચાર વર્ષ આબામાં રહ્યા અને ન્યાયશાસના અને ખાસ કરીને નવ્ય-ન્યાયના ગહન વિષયના સક્સ અભ્યાસ કર્યો.

ત્યારબાદ તેઓ અમદાવાદ આત્યા. તેઓ ગુજરાત તરફ આવવા નીકન્યા તે પહેલાંથી જ તેમની ઉજ્જવલ કીર્તિ ચારે દિશામાં ફેલાઈ ગઈ હતી. ગુજરાતના તે વખતના સુષા મહાબતખાનની રાજસભામાં તેમની પ્રશંસા થતાં મહાબતખાને તેમને ખાસ આમંત્રણ આપી રાજસભામાં તેડી મંગાત્યા; જ્યાં સુષાખાનની વિનંતિથી તેમણે અહાર અવધાન કરી બતાત્યાં.

અનાવ પછી તેમની કીર્તિના સૂર્ય મધ્યાહ્ને તપવા લાગ્યા. તેમની વિદ્વતાની સુવાસ સારાયે ગુજરાતમાં ફેલાઈ ગઈ. તેમના ભાષાપ્રભુત્વે, તેમના ચલણી સિક્કા જેવા દે કાર્ડીર્ણ પ્રમાણભૂત વચનામૃતાએ, તેમના ઉરકેટ સંચમ અને ચારિત્ર્યે, દંભીઓ–વેપ-વિદેળકાને ખુદ્ધા પાઠવાની તેમની નિકરતાએ, તેમ જ તેમના તેનેમય અધ્યાત્મ છવને તેમને તે વખતના સમગ્ર વિદાનવર્ગ અને શ્રમણ્યાં થમાં અનાખું સ્થાન પ્રાપ્ત કર્યું.

તેમણે લગલગ ૩૦૦ ઉપરાંત શ્રેશા લખ્યા છે. ન્યાય, અધ્યાત્મ અને યાગના મહત્ત વિષયા ઉપર તેમણે સ્વાતુલવપ્વંક પાતાની તેશીલી કલમ ચલાવી છે. પડ્દર્શનના સર્વ સિદ્ધાન્તો તેઓ ઘાળીને પી ગયા હાય તેમ લાગે છે. તેમના વિષે એક લેખકે ખરૃં જ લખ્યું છે કે, "શ્રી યશાવિજયછની નય-નિગમઘી અગમ્ય અને ગંભીર સ્યાદાદ-વચન-સિદ્ધાન્તોની રચના એ આગમના જ એક વિભાગરૂપ છે. તેમની શાસ્ત્ર-રચનારૂપી ચંદ્રિકા શીતલ, પરમ આનંદને આપનારી, પિતૃત્ર, વિમળ-સ્વરૂપ અને સાચી છે અને તેથી રસિકજના તેનું હોંશે હોંશે સેવન કરે છે."

ન્યાય અને તર્કની એક મહાન્ પ્રછાલી ભારતવર્ષમાં પ્રાચીનકાળથી વિદ્યમાન હતી. મહર્ષિ ગાતમ પ્રાચીન ન્યાયશાસના પુરસ્કર્તા ગણાય છે. જ્યાં પ્રમાણુને આધારે ન્યાય-શાસ્ત્રે સ્વીકારેલા પ્રમેયાની પછુ ચર્ચા કરવામાં આવી દ્વાય એવી પરંપરા પ્રાચીન—ત્યાય તરીકે એાળખાય છે. પરંતુ દશમી—અગિયારમી સદી પછી એક નવ્યન્યાયની પરંપરા શરૂ થઈ છતાં નવ્ય—ન્યાયની શાસ્ત્રીય અને સચાટ રજીઆત તો મૈથિલી ગ'ગેશ ઉપાધ્યત્યે લગભગ તેરમી સદીમાં કરી. આ પહિતમાં પ્રમેયાની ચર્ચા પહેતી મૂકવામાં આવી અને કેવળ પ્રમાણાના આધારે વસ્તુ સિદ્ધ થવી બેઈ એ એવી સ્ફસ્તતમ વિચારશ્રેણીને અવલં ળી ન્યાયશાસને શુદ્ધ અને વૈજ્ઞાનિક તર્કશાસનું સ્વરૂપ આપવામાં આવ્યું. નવ્ય—ન્યાયમાં છુદ્ધિની સ્ફસ્તતા, વિચારાની સ્પષ્ટતા અને દલીક્ષાની ઝીણવટ પ્રાધાન્ય લાગવે છે અને તેથી આ ન્યાયને પચાવનારમાં અદિતીય મેધાની અને અપ્રતિમ પ્રતિભાની જરૂર રહે છે. શ્રીયશાવિજયજ નવ્ય—ન્યાયના એક્કા અને તાર્કિકશિરામણિ ગણાયા છે. તેમના પ્રનશા વાંચનારને તેમની સૂક્ષ્મ વિચારણા અને અકાટય દલીક્ષાથી તેમની છુદ્ધિ—પ્રભાના ચમકારા માન ઉપજાવ્યા સિવાય રહેતા નથી.

શ્રીયશાવિજયછની કૃતિઓ સંસ્કૃત, પ્રાકૃત, ગુજરાતી અને હિંદી—મારવાડી એમ ચારે ભાષામાં ગદ્યબદ્ધ, પદ્યબદ્ધ તેમજ ગદ્ય—પદ્યબદ્ધ છે. તેમના લેખનના મુખ્ય વિષયે આગમિક, તાર્કિક હોવા છતાં તેમણે પ્રમાણ, પ્રમેય, નય, મંગલ, મુક્તિ, આત્મા, યાગ આદિ તાર્કિક વિષયા ઉપર નવ્ય તાર્કિકશૈલીથી લખ્યું છે; એટલું જ નહિ પણ વ્યાકરણ, કાવ્ય, છન્દ, અલંકાર, દશેન આદિ તે વખતના સર્વપ્રસિદ્ધ વિષયા ઉપર તેમણે પાતાની વિદ્વત્તાલરી કલમ ચલાવી છે.

'સુજસવેલી 'ના કર્તા તેમને માટે લખે છે કે, "નિશ્ચ આપનું દેવમણિ–ચિતામણે જેવું (નિર્મળ) શ્રુત–શાસ્ત્ર છે, વાદીઓનાં વચનરૂપી કસાેટીએ ચઢેલું છે, તેના અભ્યાસ પંડિતજના બાધે એટલે સમ્યક્તવની વૃદ્ધિ માટે કરે છે. તેમની વિદ્વત્તાથી તેમને "કુચાંલી શારદ " અર્થાત સરસ્વતીના મૂછાળા અવતારનું બિર્દ મળ્યું હતું. તેમની રચના અને લાયા માટે 'સુજસવેલી 'ના કર્તાએ લખ્યું છે કે:—

" વચન–સ્થન સ્યાહ્નાદનાં, નય–નિગમ–અગમ ગ'લીરા રે; ઉપનિષદા જિમ વેદની, જસ કઠિન લહે' કાઇ ધીરા રે, શીતલ પરમાન'દિની, શુચિ વિમલ–સ્વરૂપા સાચી રે; જેહની રચના–ચ'દિકા, રસિયાજન સેવે રાચી રે."

શ્રીયશાવિજયજ એક સક્લ ગુજેર ભાષાના કવિ પછુ હતા. તેમનાં કાવ્યા નરસિંહ અને મીરાંની પેઠે લક્તિપ્રચુર અને પ્રાસાદિક છતાં ઉત્તમ કાવ્યતત્ત્વથી ભરપૂર છે. તેમના પદ્યસાહિત્યમાં સ્તવના, સજ્ઝાયા, ભજના અને પદા મુખ્ય છે.

' આશ્રમભજનાવલિ 'માં સંગ્રહાયેલાં અને મહાત્મા ગાંધીજીના પ્રિય ભજન—

" ચેતન અબ માહિ દર્શન દીજે, તુમ દર્શન શિવસુખ પામીજે; તુમ દર્શન ભવ છીજે, ચેતન અબ માહિ દર્શન દીજે." આ ભજન શ્રીયશાવિજયતું જ છે. ં પ્રેલુના મુખના દર્શન થતાં તેમના લક્ત હૃદયમાંથી કેટલી મુંદર અને લહે કદપનાઓ સરી પેડે છે!

" આંખડી અંખુજ પાંખડી, અષ્ટમી શશી સમ ભાલ લાલ રે; વદન તે શારદ ચંદલા, વાણી અતિહિ રસાળ લાલ રે." અને પ્રલુલક્તિના રસના જેણે સ્વાદ ચાખ્યા તેને પછી ખીતે રસ કચાંથી ગમે ?—

" અજિત જિલ્લું કર્યું પ્રીતદી, મુજ ન ગમે હાં બીજાના સંગ કે; પાલતી કૃષે માહિયા, કિમ બેસે હાં બાવળતરુ ભૂંગ કે. અ૦ ગંગાજળમાં જે રમ્યા, કિમ છિલ્લર હા રતિ પામે મરાલ કે; સેરાવર જળ જલધર વિના, નવિ ચાહે હા જગ ચાતક બાલ કે. અ૦ કેન્ડિલ કલ ક્જિત કરે, પામી મંજરી હા પંજરી સહકાર કે; આહાં તર્વર નવિ ગમે, ગિરૂઆશું હા હાયે શુભુના પ્યાર કે. અ૦ "

અતે

" હું આ હીંપે નહિ અધર અરૂલ જિમ, ખાર્તા પાન સુરંગ; પીયત ભરભર પ્રશુ ગુલું પ્યાલા, તિમ સુજ પ્રેમ અભ'ગ. "

ઉપાધ્યાયજની કેટલીક કૃતિએ ગૂર્જર સાહિત્યમાં અમર થઇ નાય તેવી છે.

ચ્યા મહાપુરુષનું અવસાન વિ. સં. ૧૭૪૩માં એતિહાસિક ડિમાઇ નગરમાં થયું હતું, ત્યાં તેમની પાદુકા વિ. સં. ૧૭૪૫માં પ્રતિષ્ટિત થયેલી હાલ પણ વિદ્યમાન છે. તેમના સમાધિસ્તૃપની પુના પ્રતિષ્ઠાના ગુલ અવસરે આ મહાન તાર્કિક, મહાન નૈયાયિક, મહાન ગુરુરી પુત્ર અને મહાન લારતીય સંસ્કારસ્ત્રામીને અર્ધ્ય અર્પવા તા. ૭–૮ માર્ચના રાજ આ સારસ્ત્રત સત્ર યોજવામાં આવ્યું છે. હું પણ તેમને મારી શ્રદ્ધા–માનાં લિ. અર્પી કૃતાર્થ શાઉ છું.

श्रीयशोविजयजीकी जीवन-कार्य रूपरेखा

डेबर्कः पं० श्रीमान् सुखलालजी संघवी

"प्रस्तुत प्रन्थ जैनतर्कभाषाके प्रणेता उपाध्याय श्रीमान् यशोविजय है। उनके जीवनके बारेमें सत्य, अर्घसत्य अनेक बार्ते प्रचित्र थीं पर जबसे उन्होंके समकाछीन गणी कान्तिविजयजीका बनाया 'सुजशबेछी भास ' प्रा प्राप्त हुआ, जो विछक्कछ विश्वसनीय है, तबसे उनके जीवनकी खरी-खरी बातें विछक्कछ रपष्ट हो गई। वह 'भास ' तत्काछीन गुजराती भाषामें पद्यबद्ध है जिसका आधु-निक गुजरातीमें सिटप्पण सार-विवेचन प्रसिद्ध छेखक श्रीयुत मोहनछाछ द. देसाई B. A. LL. B. ने छिला है। उसके आधारसे यहाँ उपाध्याजीका जीवन संक्षेपमें दिया जाता है।

" उपाध्यायजीका जन्मस्थान गुजातमें बलोल (बी. बी. एन्ड सी. आई. रेल्वे) के पास किनोड़ 'नामक गाँव है, जो अभी भी मौजूद है। उस गाँवमें 'नारायण' नामका ज्यापारी था जिसकी धर्मपत्नी 'सोभागदे' थी। उस दम्पतिके 'जसवंत' और 'पद्मसिंह' दो कुमार थे। कभी अकवरप्रतिवोधक प्रसिद्ध जैनाचार्थ हीरविजयस्रिकी शिष्यपरंपरामें होनेवाले पण्डितवर्थ थी. 'नयविजय' पाटणके सभीपवर्ती 'कुणगेर' नामक गाँवसे विहार करते हुए उस 'कनोड़ 'गाँवमें पद्मारे। उनके प्रतिवोधसे उक्त दोनों कुमार अपने माता-पिताकी सम्मतिसे उनके साथ हो लिए-और होनेने पाटणमें पं नयविजयजीके पास ही वि. सं. १६८८ में दीक्षा ली और उसी साल श्रीविजयदेवस्रिके हाथसे उनकी वही दीक्षा भी हुई। ठीक ज्ञात नहीं कि दीक्षाके समय दोनोंकी उम्र क्या होगी, पर संभवतः वे दस—वारह वर्षसे कम उनके न रहे होगे। दीक्षाके समय प्रतिवेच का 'यशोविजय' और 'पद्मसिंह 'का 'पद्मविजय' नाम रखा गया। उसी पद्मविजयको उपाध्यायजी अपनी कृतिके अंतमें सहोदररूपसे स्मरण करते ई।

सं. १६९९ में 'अहमदावाद' शहरमें संघ समक्ष यशोविजयजीने आठ अवधान किये । इससे प्रमावित होकर वहाँ के एक धनजी सूरा नामक प्रसिद्ध व्यापारीने गुरु श्रीनयविजयजीको विनित्त की कि पण्डित यशोविजयजीको काशी जैसे स्थानमें पड़ाकर दूसरा हैमचन्द्र तैयार कीजिए। उक्त सेठने इसके वास्ते दो हजार चाँदोके दीनार खर्च करना मंजूर किया और हुंडी छिख दी। गुरु नयविजयजी शिष्य यशोविजय आदि सहित काशीमें आए और उन्हें वहाँके प्रसिद्ध किसी भट्टाचायके पास न्याय आदि दर्शनोका तीन वर्षतक दक्षिणा-दान-पूर्वक अम्यास कराया। काशीमें ही कभी

वाद्में किसी विद्वान् पर विजय पानेके बाद पं. यशोविजयजीको 'न्यायविशारद की पदवी मिछी। उन्हें 'न्यायाचार्य' पद भी मिछा था ऐसी प्रसिद्धि रही। पर इसका निर्देश 'मुजशवेछीभास' में नहीं है।

काशींके बाद उन्होंने आगरामें रहकर चार वर्ष तक न्यायशास्त्रका विशेष अम्यास व चिन्तन किया । इसके बाद वे अमदाबाद पहुँचे जहाँ उन्होंन औरंगजेबके महोबतलाँ नामक गुजरातके स्वेके समक्ष अठारह अवधान किये । इस विद्वता और कुशल्तासे आरूष्ट हो कर समीने पं. यशो-विजयजीको 'उपाच्याय' पदके योग्य समझा । श्रीविजयदेवस्रिके शिष्य श्रीविजयप्रमस्रिने उन्हें सं. ' १७१८ में बाचक 'उपाच्याय' पद समर्पण किया ।

वि. सं. १७४३ में हमोई गाँव, जो बडीदा स्टेटमें अभी मीजूद है उसमें उपाध्यायनीका स्वर्गवास हुआ, जहाँ उनकी पादुका वि. सं. १७४५ में प्रतिष्टित की हुई अभी विद्यमान है।

उपाच्यायजीके शिष्यपरिवारका निर्देश 'मुजसवेछी' में तो नहीं है पर उनके तत्विवजय, धादि शिष्य-प्रशिष्योका पता अन्य साधनेषि चलता है जिसके वास्ते 'जन गूर्जर कविओ' मा. २ पृ. २७ देखिए ।

खपाष्यायजीके बाह्य जीवनकी स्थूल घटनाओंका जो संक्षित वर्णन ऊपर किया है, उसमें दो घटनाएँ लास मार्केकी है जिनके कारण उपाध्यायजीके आन्तरिक जीवनका स्रोत यहाँतक अन्तर्मुल होकर विकसित हुआ कि जिसके वर्ल पर व मारतीय साहित्यमें और खासकर जैन परम्परामें अमर हो गए। उनमेंसे पहिली घटना अम्यासके वास्ते काशी जानेकी और दूसरी न्याय आदि दर्शनोंका मौलिक अम्यास करनेकी है। उपाध्यायजी कितने ही बुद्धि वः प्रतिमासम्पन्न क्यों न होते उनके वास्ते गुजरात आदिमें अध्ययनकी सामग्री कितनी ही क्यों न जुटाई जाती, पर इसमें कोई संदेह ही नहीं कि वे अगर काशीमें न जाते तो उनका शास्त्रीय व दार्शनिक ज्ञान, जैसा उनके प्रन्थोंमें पाया जाता है, संगव न होता। कार्शामें आकर भी वे उस समय तक विकसित न्यायशास्त्र खास करके नवीन न्याय-शासका पूरे बल्से अध्ययन न करते तो उन्होंने जैन परम्पराको और तदहारा मारतीय साहित्यको जैन विद्यानकी हैसियतसे जो अपूर्व मेंट दी है वह कमी संगव न होती।

द्सवीं शताब्दींसे नवीन न्यायके विकासके साथ ही समप्र वैदिक दर्शनोंमें ही नहीं विका समप्र वैदिक साहित्यमें स्ट्म विश्लेषण और तर्ककी एक नई दिशा प्रारम्म हुई और उत्तरीत्तर अधिकसे अधिक विचारविकास होता चला जो अभी तक हो ही रहा है। इस नवीनन्यायकृत नव्य युगेमें ल्पाच्यायजीके पहेले भी अनेक स्वेताम्बर दिगम्बर विद्वान् हुए जो बुद्धि-प्रतिभासम्पन्न होनेके अलावा जीवनमर शास्त्रयोगी भी रहे फिर भी हम देखते हैं कि ल्पाच्यायजीके पूर्ववर्ती किसी जैन विद्वान्ने जैन मन्तव्योंका लतना सतर्क दार्शनिक विश्लेषण व प्रतिपादन नहीं किया जितना ल्पाच्या-यजीके काशीगमनमें और नव्यन्यायशास्त्रके गम्भीर अध्ययनमें ही है। नवीन न्यायशास्त्रके अम्यासंसे और तन्मूलक सभी तत्कालीन वैदिक दर्शनोंके अम्याससे उपाध्यायजीका सहज बुद्धि-प्रतिमासंस्कार इतना विकसित और समृद्ध हुआ कि फिर उसमेंसे अनेक शालोंका निर्माण होने लगा। उपाध्यायजीके प्रन्थोंके निर्माणका निश्चित स्थान व समय देना अभी संमव नहीं। फिर भी इतना तो अवस्य ही कहा जा सकता है कि उन्होंने अन्य जैन साधुओंकी तरह मन्दिरनिर्माण, मृर्तिप्रतिष्टा, संघ निकालना आदि बहिर्मुख धर्मकायोंमें अपना मनोयोग न लगा कर अपना सारा जीवन जहाँ वे गये और जहां वे रहे वहीं एकमात्र शालोंके चिन्तन तथा नन्य शालोंके निर्माणमें लगा दिया।

उपाध्यायजीकी सब कृतिया उपलब्ध नहीं हैं। कुछ तो उपलब्ध हैं 'फिर भी जो पूर्ण उपलब्ध हैं वे ही किसी प्रखर बुद्धिशाली और प्रवल पुरुषार्थिक आजीवन अभ्यासके वास्ते पर्याप्त हैं। उनकी लभ्य, अलभ्य और अपूर्ण लभ्य कृतियोंकी अभी तककी यादी अलग दी जाती है जिसके देखने से ही यहाँ संक्षेपमें किया जानेवाला उन कृतियोंका सामान्य वर्गीकरण व मूल्याङ्कन पाठकोंके ध्यानमें आ सकेगा।

सपाध्यायजोकी कृतियाँ संस्कृत, प्राकृत, गुजराती और हिंदी-मारवाड़ी इन चार भाषाओं गधबद्ध, पद्मवद्ध और गध—पद्मवद्ध हैं। दार्शनिक ज्ञानका असली व व्यापक खजाना संस्कृत भाषामें होनेसे तथा उसके द्वारा ही सकल देशके सभी विद्वानोंके निकट अपने विचार उपस्थित करनेका संभव होनेसे उपाध्यायजीने संस्कृतमें तो लिखा ही, पर उन्होंने अपनी जैनपरम्पराकी मूलभूत प्राकृत भाषाको गौण न समझा। इसीसे उन्होंने प्राकृतमें भी रचनाएँ कां। संस्कृतप्राकृत नहीं जाननेवाले और कम जाननेवालों तक अपने विचार पहुँचानेके लिए उन्होंने तत्कालीन गुजराती भाषामें भी विविध रचनाएँ की। मौका पाकर कभी उन्होंने हिंदी मारवाढीका भी आश्रय लिया।

विपयद्दिसे उपाध्यायजीका साहित्य सामान्यरूपसे आगिमक, तार्किक दो प्रकारका होने पर भी विशेष रूपसे अनेक विषयावरूम्बी है। उन्होंने कर्मतत्त्व, आचार, चित्र आदि अनेक आगिमक विषयों पर आगिमक शैलीसे भी लिखा है; और प्रमाण, प्रमेय, नय, मंगल, मुक्ति आत्मा, योग आदि अनेक तार्किक विषयों पर भी तार्किक शैलीसे खासकर नन्य तार्किक शैलीसे लिखा है। न्याकरण, कान्य. छन्द, अलंकार, दर्शन आदि सभी तत्कालप्रसिद्ध शास्त्रीय विषयों पर उन्होंने कुछ न कुछ अतिमहत्त्वपूर्ण लिखा ही है।

श्री हिंसे उनकी कृतियाँ खण्डनात्मक भी हैं, प्रतिपादनात्मक भी हैं; और समन्वयात्मक भी । जब ने खण्डन करते हैं तब प्री गहराई तक पहुँचते हैं। प्रतिपादन उनका सूदम और विशद है। ने जब योगशास्त्र या गीता आदिके तत्त्वोंका जैन मन्तव्यके साथ समन्वय करते हैं तब उनके गम्भीर चिन्तनका और आध्यात्मिक भावका पता चलता है। उनकी अनेक कृतियाँ किसी अन्यके प्रश्वकी व्याख्या न होकर मूल, टीका या दोनों रूपसे स्वतन्त्र ही हैं, जब कि अनेक कृतियाँ

प्रसिद्ध पूर्वाचार्योके प्रत्थोकी व्याख्यारूप हैं। उपाव्यायकी थे पक्षे कैन और श्वेतास्वर । फिर मी विद्याविषयक उनकी दृष्टि इननी विशाख थी कि वह अपने सम्प्रदाय मात्रमें समा न सकी अत्रप्त उन्होंने 'पान्वज्ञख योगस्व,' ऊपर भी छिन्ता और अपनी नीव समाखोचना की। छत्य-दिगम्बर-यरम्पर्गक स्त्मप्रज्ञ तार्किकप्रवर विद्यानन्दंक क्रिजनतर 'अष्टमहक्षी ' नामक प्रत्थंक ऊपर क्रिजनत व्याख्या भी छिन्ती।

गुजानी और दिनी मारवाहीमें लिखी हुई उनकी छितियोंका थोड़ा बहुत वाचन पटन व प्रचार पहिंछ ही से रहा है; परन्तु उनकी संख्यन-प्राह्म छितयोंक अध्ययन-अध्यापनका नामोनिशान भी कनके लीवन काछमें छेकर ३० वर्ष पहंछ तक देखनेमें नहीं आता। यहां सबव है कि दाई सी वर्ष तिनने कम और साम उपहरंशि मुक्त इस सुरक्षित समयमें भी उनकी सब छितयाँ मुरक्षित न रहीं। पटन-पाटन न होनेमें उनकी छितयोंके क्यर टीका टिप्पणी छिले लानेका तो सम्मव रहा ही नहीं पर उनकी नकछें भी टीक-टीक प्रमाणमें होने न पहें। कुछ छितयाँ तो ऐसी भी मिछ रही है कि जिनकी सिक्ष एक एक प्रति रही। सम्भव है ऐसी ही एक एक नकछवां अनेक छितयाँ या तो छुत्र हो गई हो, या किन्हों अज्ञात स्थानेमें जितर-चितर हो गई हो। जो छुछ हो पर अब भी उपाच्यायनीका जिनना माहित्य छम्य है उनने मात्रका टीक-टीक पूरी तैयारीके साथ अध्ययन दिया जाय तो लेन परम्पगंक चार्र अनुयोग नथा आगामक तार्किक कोई विषय अज्ञात न रहीं।

चर्यन और गङ्गेश तिम मिथिल नाकिकपुह्नवंकि हाग तो नव्य तकेशासका बातारापण व विकास प्रास्म हुआ और जिमका व्यापक-प्रभाय व्याकरण, साहित्य, छन्द, विविच-दर्शन और प्रमेशास पर पडा और खूब फैला उस विकास में बिचन सिफी हो सम्प्रदायका साहित्य ग्री। तिनमें बीद साहित्यको उस बुटिकी पूर्निका नो सम्प्रव ही न ग्रहा था क्योंकि बाग्रह्वी देग्ह्बी शनान्दिक बाद साम्ववंपी बोद विद्वानीको परम्परा नाममाप्रको यो न ग्री इसल्लिए वह पुटि उन्ती नहीं अख़र्ती जितनो तिन माहित्यको वह पुटि। क्योंकि जैन-सम्प्रदायक सकड़ी ही नहीं पिक इजारी साधनसम्पन्न व्यामी व कुछ गृहस्य यार्ग्वपिक प्रायः समी मागोम मीजृद रहे, जिनका मुख्य व जीवनव्यापी खेय शास्त्रिक्त सिवाय और कुछ कहा ही नहीं वा सकता। इस जैन माहित्यको क्रभोको हर करने और अकेले हाथम पूर्श तरह दूर क्रनेका उज्जवन व स्थायी यश आर किसी तैन विद्वानको है तो इह उपाच्याय यशोविजयजीको ही है।".......

[विषी देनप्रव्यवाना प्रत्योच ८, वि. वं. १९९४ में प्रदाशित च्या. थींग्गोविजयनीयन 'देन तर्थमाया'की प्रस्तावनावेंग्र]

श्रीमद्यशोविजयवाचकानां वैदुष्यमाध्यात्मिकत्वं च।

: बेषकः व्याप् साहित्याचार्यश्रीनारायणाचार्यजी

जैनश्रमणपरम्परायां वृहत्तपागच्छे युगप्रधानानां विश्ववन्यचारित्राणां अकव्यरसम्राट्पतिबोधकानां तपस्विचूडामणीनां तत्रमवतां जगदगुरुश्रीविजयहीरस्रीश्वराणामःवये वहूनि मुनिरत्नानि
प्रादुर्भूतानि । अवत्वेऽपि च योऽतिविशालो जैनमुनिसह्यो विद्यते तरय महत्तमोऽशस्तेपामेव महान्मनां
शिष्यपरिवारम्तः । सर्वेर्त्वकप्रलेखङ्कृतः कल्पतरुरिव तेषां परिवारः निक्लिगुणकलितमुनिवृन्देन
विराजितोऽमृत् । तेषां परिवारे बहवो नानाशाखपारदश्यानो विद्यासः, बहवः कवीन्द्राः, अनेका वादीन्द्राः,
बहवो हि स्वान्तप्राहिन्याल्यानशैल्या राजप्रतिवोधकाः, बहवोऽतिद्यितपरिवनः, एवंधर्मेण जगनीतलमुद्धोतयन्तो नैके महात्मान आसन् । पण्डितप्रवरश्रीलाभनिजयगणिन उपाच्याय-श्रीविनयविज्ञयादयश्व
वैयाकरणशिरोमणयः, 'हीरसौभाग्य ' आदिकाव्यरनिर्मातारः कविश्वरोमणयः, विजयसेनस्रि-देवसूरि-शान्तिचन्द्रोपाच्याय—भानुचन्द्रगण्यादयो यवनवृपाणामपि हृदये धर्मसन्नारका उपदेशकाः,
प्रम्थित्रिश्रतीनिर्मातारः 'कूर्वालीशारदा ' इस्पप्रतिमिवहृद्धारिणो न्यायविशारदा न्यायाचार्याः पीतवाङ्मया
योगिश्वरीणा वाचकपुक्तवाः श्रीयशोविजयवाचकाथ एतेषां हीरस्रिमहात्मनामेव साक्षात् परम्परया
वा शिष्याः।

प्तेषु सर्वेष्विप श्रीमतां यशोविजयवाचकानां बैदुप्यं विशिष्टमुद्धेख्यम्हित् । समासादिनप्तर्भारतीप्रसादा इमे महानुभावाः सर्वमिप वाङ्मयं पपुरिति वचने नाःयुक्तिलेशः । १६८८ तमे विक्रमे संवरसरेऽभिनव एव सुकुमारे वयसि गृहीतदीक्षाका सिवत्वद्वस्य विशेषाण्ये एरमपवित्रां चाराणसी जग्मः । सा च वाराणसी कीदशी ! सुरभारत्या सुरसरितश्च परं घाम, यत्र निखिलेप्विप विषयेषु ल्प्प्पारा दिगन्त-व्यासकितियो विद्वद्याः परिवसन्ति । ये सल्ल अन्यस्थानादागतं विद्वन्मिणमिप तृणाय मन्यन्ते स्म । तत्र गत्वा इमे यशोविजयवाचका कस्यिवदेकस्य न्यायाचार्यस्य सिवधे तर्कशाखाव्ययनं प्रारिभिरे । तत्र चिद्वारपदोपलक्षितेन सरस्वतीमनुना तत्र भवती शारदां प्रसाय ल्प्यवार्यक्षेत्र व्यवत्रकरो व्यव्यविक्रसे व्यव्यविक्षये विद्वर्याः परिवर्षे च विशारदा वम्युः । नन्वयमाश्चर्यापादको व्यत्विकरो यत् स्वन्पीयां-समिप कालं यावद्धीत्य एते वाराणसेया वादिपर्यते विजिग्यः साम्प्रदायिकमेदं च मनसि नाण्विप निधाय यशोविजयप्रतिभयाऽतितरां चमत्कृता वाराणसेया विद्वासस्तान् 'न्यायित्रशास्द'विरुदेन नितरामल्खकुः । पश्चाद् गूर्करमूमिमागत्य नन्यन्यायप्रणाली यथायथं वैनन्यायेऽत्वत्ययं विर्वितपरः-

शतन्यायप्रयेम्य एम्यः सानन्दं विद्वांसो 'न्यायाचायं 'पद्मपुषदीचहुः । एमी रविता न्यायप्रस्याः सुनरां गर्यार्ण वैद्युत्येण परिपूर्णां दस्यन्ते । प्रकाण्डनैयायिका अपि तेषां चेत्रश्रमःकृतिवनकं पाण्डिःयं इष्ट्रा सामिनानं क्रम्पयन्ति शिरः ।

न च केवर्ष द्रशनशास एवं नैपुण्ये देशं, किन्तु काव्य-व्याकरण-पिदान्तादिवर्येश्विष पाण्डियं द्रीद्रस्येत । एनः एवं तत्यानिक्रयानां विद्वावको इनेनैय सुन्तुटं हायत एवं । सर्वेश्वयुपयोगिविष्येषु नैकासु यापासु चावः स्वयायसानव्युपकारिणं सिद्यान्तं सद्दर्शं साहित्यगिकिनिक्रेश्त्वन् । सर्वश्रायेशं सिद्यप्रतिहन्त्रानिश्यमंन् । अत एवं च तद्विन्तना विश्वक्षणाग्तान् 'कृषिशिश्रादा ' इत्यमियुक्त-प्रशन्त्रया दील्या दर्णयानासुः ।

यवन्ति नाम बहवः पिष्टनाः कर्ष्णे शब्दृश्यायेव निःगाताः, परंतु न हमे नाह्याः, परत्रो-पासनायामहिन्शिमेने लीनमनस असन् । तिर्विचत्रश्या एवंमे विषये मुख्यक्रीकृषित । एतेषां मान-सिक्षमीदाये नायदस्त्रनतरमेव । आध्यात्मिकदशायनक्षाण्णं गता अप एते महानुमावाः 'पात्रअख्योग-दश्चेन' अभिषे वैद्द्रसाण्यदायवहुमतेऽपि ग्रन्येऽपि व्यात्यां विरचय्य स्थायनीदःय निष्णातरं व्यक्षी-चक्कः । एतादशानां पुण्यचरितानां यावती स्तृनिर्धिययेत तावती तत्रवार्गरेव एतेषां च सुनगं शोमत एव । चैनदर्शनमेव तादशस्त्रात्य् । यतो भिनयन्त्रः कान्तिप्रयानः सत्याविष्ठतोऽहिमातत्व-मृष्टको मोक्ष्याननप्रयेवसानस्यः वर्दार्भनःश्चेवसादिखापी चैनवसैः । अने चैनपर्प्ययां प्राहुर्भूना इसे महामत्रयो न केवछं चैनशासनस्यैवस्त्रक्षारम्ताः, कि बहुना समप्रत्यायांवर्तस्य मारत्वर्षस्यार्थान्यत्र न सन्देहवेशः ।

नैकान वर्णाण यावळगरीटळमुपकुर्वाणा एते महामानः पाविषावेमं भारतक्षेत्रं वैकाने १७४३ ठमे वत्सरे ग्लंग्डनिंदमीवर्णापुर्यो न्दर्ग वत्सुः। तेपासुपकारस्थनये दर्गावत्यामक्रसंग्कारम्मी सन्मृतिं-श्रीकापनानहोग्सव विश्वयेते श्रीयश्रोतिजयसारस्वतस्त्रस्र योजितः, एनःसर्वथा प्रमोदावदं निजान्त-प्रशंसनीयमनुसंदर्गयं च । अहमाप प्रावःत्मर्शीयानामेषां महाद्वरूपाणां चरणक्रमळ्योः स्तुति-इसुमाक्षिष्ठं समर्पयापि इति शन् ॥

સુજસવેલી ભાસ

કર્તા : પૂજ્ય મુનિવર શ્રીકાંતિવિજયછ [હાળ : ૧]

[ઝાંઝરીયા મુનિવર ! ધન ધન તુમ અવતાર–એ દેશી.] પ્રથમી સરસતિ સામિણી છ, સુગુરુના લહી સુપસાય; શ્રીયશાવિજય વાચક તથા છ, ગાઈસું ગુજુ-સમુદ્રાય.

. ગુણવતા રે મુનિવર! ધન તુમ જ્ઞાન–પ્રકાસ. ૧ વાદિ–વચન–કસિંહ્યુ ચઢચો છ, તુજ શ્રુત સુરમિંહ્યુ ખાસ, . એ ધિ–વૃદ્ધિ–હેતિ કરિ છ, **બુધજન તસ અભ્યાસ.** ગુ૦ ર સકલ સુનીસર સેહરા છ, અનુપમ આગમના જાણ; કુમત-ઉત્થાપક એ જયા છ, વાચક-કુલમાં રે લાણુ. ગુ૦ ૩ **આગઈ હુંઆ વ**ટ જેમ; પ્રભવાષ્ટ્રિક શ્રુતકેવલી છે, કલિમાંહી નેતાં થકાં છ, એ પણ શ્રુતધર તેમ. ગુ૦ ૪ શાસને છ, સ્વસમય – પરમત – દક્ષ; જસ∸વહીંપક ં પાહચ નહિ કાઈ એકને છ, સુગુણ અનેરા શત લક્ષ, ગુ૦ પ ' કુર્ચાલીશારદ ' તહ્યુા છ, બિરુદ ધરે સુવિદિત; 'આંલપણું અલવિં જિણેં છ, લીધા ત્રિદશ ગુરુ જિત. ગુ૦ ૬ ગુજજરધર-મંડણ અછિ છ, નામે કનાડું વર ગામ; ાતકાં હું એ વ્યવકારિયા છ, નારાયણ એકવે' નામ. શું હ તસ ઘરણી સાભાગદે છ, તસ નંદન ગુણવંત; લઘુતા પણ ખુદ્ધે આગલા છ, નામે કુમર જસવ'ત. ગુ૦ ૮ સંવત સાલઅઠયાસિયે છ, રહી કુણગિરિર ચામાસિ; શ્રીનયવિજય પંડિતવરુ છ, આવ્યા ³કન્હાેડે ઉલ્લાસિ. ગુ૦ ૯ માત પુત્રસ્યું સાધુનાં છ, વાંદિ ચરઘુ સવિલાસ; સુગુરુ ધર્મ' ઉપદેશથી છ, પામી વયરાગ પ્રકાસ. ગુ**૦** ૧૦ અાલુ હિલપુર પાટિ જઈ છ, લ્યાં ગુરુ પાસે ચારિત્ર; યશાવિજય એહવી કરી છ, ઘાપના નામની તત્ર. ગુ૦ ૧૧

પંદમસિંહ ખોતે વક્ષી છ, તમ બાંધવ ગુણવંત; તેલુ પ્રમું ગે પ્રેરિયા છ, તે પછિ થયા વ્રતવંત. શું ૧૨ વિજયકેવગુરુ–હાથની છ, વઠ દીક્ષા દુર્ગ ખાય; બિટુને સાલઅઠયાસિયે છ, કરતાં^પ યેાળ-અભ્યાસ. શું ૧૩ સામાર્કક ચાહિ લણ્યા છ, શીજત્ર શુરુસુખિ અપિ; સાકર-દક્ષમાં મિષ્ટતા છ, તિમ રહી મૃતિ શુત્ર વ્યાપિ. શુ૦ ૧૪ સંવન સાલનવાળુએ છે, રાજનગરમાં સુગ્યાન; સાધિ સાખિ સંઘની છે, અષ્ટ મહાઅવધાન શું ૧૫ 'સા' ધનજ સૂગ તિચે છ, ધીનવિ ગુરુ એમ; 'ચારુપ પાત્ર વિદ્યાત છું છ, યાર્સ એ બીએ હિમ '. ગુરુ ૧૬ જો કાર્સી જઈ અભ્યસે છે, પટ દર્શનના શ્રંથ; કરિ દેખાઈ કાજક્ષું છ, કામ પડચે^જ ' જિન–પંધ '. શુ૦ ૧૭ વચન મુળી મહેશુરુ કહ્યું છ, 'કાર્ય એહ ધનને' અધીન; મિચ્યામતિ વિલ્ સ્ત્રાસ્થે છે, નાપે નિજ શાસ નવીન ' શું ૧૮ નાણીના શુજું એાલતાં છ, દૂર્ધ રચનાની ચાય(ખ); મુજયવેલિ મુખુતાં અધે છે, કાંતિ સકલ શુખૂપેતા શું ૧૯

[dion : 2]

૪ પદ્માસિલ ૫ કરમાં ક સરવઈ, હ પછી ૮ ઝરુંમાં

તે પાસિ જસ આપ, લણું પ્રકરણ ઘણાં હા લાલ, લણું ૦ ન્યાય સીમાંસાલાપ, સુગત જૈમિનિતણાં હા લાલ, સુગત જ વૈશેષિક સિદ્ધાંત, ભરુયાં ચિ'તામૃજ્ઞિ હા લાલ, ભરુયાં૦ ુ વાદિ–ઘટા દુરદાંત, વિભુધ–ચૂડામણી હ્રાં લાલ, વિભુધ૦ સાંખ્ય પ્રભાકર લદુ, મતાંતર સૂત્રણા હા લાલ, મતાંતર૦ ું ધારે મહા દરઘદ, જિનાગમ–મંત્રણા ું હા લાલ, જિનાગમ૦ પ ્રપંડિતને દો આપ, રૂપૈયા દિન પ્રતિ હા લાલ, રૂપૈયા ૦ ું પઠન મહારસ ખ્યાપ, લાશું જસં શુભમતિ હા લાલ, લાશું ૦ તીન વરસ લિંગ પાઠ, કરેં અતિ અભ્યસી હા લાલ, કરેં ૦ . સં-યાસી કરિ ઠાઠ, આયા એહવે ધસી હા લાલ, આયા૦ ૬ ંતોહર્સું માંડા વાદ, સકલ જન પેખતાં હાે લાલ, સકલેંં ં નાઠા તજિ ઉન્માદ, સંન્યાસી દેખતાં હા લાલ, સંન્યાસી૦ .પંચશખદ-નીશાણ, ધુરંતિ ઇજતિ હા લાલ, ધુરંતિ૦ . આવ્યા જસ **મુધ—રા**ણું, નિજાવાસિં તિતિ હા લાલ, નિજા૦ ૭ વારાથુસી શ્રીપાસ, તથી કીધી શુર્ક હા લાલ, તથી ાન્યાયવિશારદ તાસ, મહાકીરતિ થઈ હા લાલ, મહા૦ કાશીથી ભુધરાય, ત્રિહુ વર્યાંતરે હા લાલ, ત્રિહ્ ુ તાર્કિક નામ ધરાય, આવ્યા પુર આગરે હા લાલ, આવ્યા ૮ : -યાંયાચાર્યનિ પાસિ, છુધ વલિ આગરે હા લાલ, છુધ ંકીયાં શાસ-અભ્યાસ, વિશેષથી આંદરે હા લાલ, વિશેષથી ્રથાર વરસ પર્ય'ત, રહી અવગાહિયાં હા લાલ, રહી૦ કાર્ક્ષ્ટશ તાર્ક્ક સિન્હાંત, પ્રમાણ પ્રવાહિયો હા લાલ, પ્રમાણ ૯ આંગરાઈ સંઘ સાર, રૂપૈયા સાંતસે હા લાલ, રૂપૈયાં મૂં કે કરિ મનુદ્વાર, આગે જસને રસે હા લાલ, આંગે ૦ ્યાઠાં પુસ્તક તાસ, કરાય ઉમંગસ્યું હાે લાલ, કરાયે૦ છાત્રોને સવિલાસ, સમાપ્યાં રંગસ્યું હા લાલ, સમાપ્યાં૦ ૧૦ દુઈમ વાદી-વાદ, પરિ પરિ છપતા હા લાલ, પરિં आव्या अक्षमहावाह, विद्यार्ध ही पता है। बाब, विद्यार्थ ઇં પરિ સુજસની વેલિ, સદા ભાષુસ્યેં જિકે હા લાલ, સદા૦ ફાંતિ મહારંગ રેલિ, સહી લહિસ્યેં તિકે હા લાલ, સહી ૧૧

[दाव : 3]

[ખંભાઇતી–ચાલાે સાદેલી વાંદ વિલાકવા છ—એ દેશી.] સાશીથી પાઉ ધારે શ્રીયુરુછ ઈદ્યાં છ, જિતી દિશિ દિશિ વાદ; ન્યાયવિશારદ બિરુદ ધરે વટા છ, આગે ત્ર-નિનાદ ૧ ચાલા મહેલી હે! મુગુરુને વાંદવા છ, ઇમ કહેં ગોરા વેંછુ; શાંચનદીપક શ્રીપંડિતવરુ છ, જોવા તરસે ને છુ. ચહેા ર - લાટ-ચાર-વારી વિભુષે વીટિઓ છે, તારાઈ જિમ ચંદ; સચિક ચટેાર ઉલ્ટાસન દીપતા છ, વાદિ-ગરુડ ગાર્વિદ. ચાલા ટ ં યાચક–ચારષ્–ગિલું · સક્ષદીજતા છ, વીંડ્યા સંઘ સમધ્યુ નાગપુરીય-સરાહે પધાનિયા છ, લેતા અરઘ ઉદઘ ચાલા૦ ૪ द्वीरति पश्चरी दिथि दिथि **अ**लबी छ, विशुधनाषी असमान; રાજકભામાં કરતાં વર્ણના છ, નિયુંલું મહત્રતખાન. ચાલા પ ગુજરપતિને દુંત્ર દુઈ ખરી છ, જેવા વિદ્યાવાન; તામ કંધનથી જમ સાથે વલીજી, અપ્રાદશ અવધાન. ચાલાં૦ દ પેખી વ્યાની ખાન ખુત્રી થયા છ, ખુઢિ વખાણે નિગાપ; આદં બરસ્યું વાજિત્ર વાજતે છે, આવે યાનિક આપ. ચાલાં છ શીજિનગાસન કત્રતિ તાં ચર્ક છ, વાધી તપ-ગચ્છ-ગ્રાસ બચ્છ ચારાસીમાં સુદુ ઇમ કર્ડ છે, એ પરિત અહ્યામ ચાલે. ૯ संब सहब भिवि शीविजयहेवने छ, सरल हरे, हर लेश, . 'બહુગૂત' એ લાયક ચઉચે પદિ છે, કુલ કરે એડની દાહિ? ચાલાં હ · ગચ્છપતિ લાચક એડ્વું જાહિને છ, ધારે મનમાં આપ_દ ્રપંદિતજી ચાનક-તપ વિધિર્યું આદરે છે, ક્રેદ્ધ લવ-મંતાપ, ચાલા ૧૦ . ભીના* મારબ શુદ્ધ સ્વિત્રને છ, ચાંદે સંયમ ચાપ (ખ); . જયસામાદિક પંડિત-મંડલી છે, સેવે ગરણ અદાય ગાલાં ૧૧ चोशी तम व्यासम्बं निषिधंशी छ, तस इस अर-ति शिधः · વાચક-પદવી સત્તર્અદારમાં છ, શ્રીવિજયમ્સ દ્વાય. ત્રાક્ષા ૧૨ વાચક જસ-નામી જગમાં એ જયે! છ, સુરાકના અવતાર; 'સુજયવેલિ' ઇમ સુણતાં સંપર્જ છ, કાંતિ યકા જયકાર ચાલા ૧૩

[હાલ : ૪]

[આજ અમારે આંગિ હ્યુપે -એ દેશી.]

'શ્રીયશાવિજય' વાચક તણા, હું તા ન લહું ગુણ-વિસ્તારા રે; ગંગાજલ-કિશકાયકી, એહના અધિક અછે ઉપગારા રે. શ્રી૦ ૧ વચન–રચન સ્યાદુવાદનાં, નય–નિગમ ગંભીરા રે: ઉપનિષદા જિમ વેદની, જસ કઠિન લહેં કાઈ ધીરા રે. શ્રી૦ ર શીતલ પરમાન દિની, શુચિ વિમલ-સ્વરૂપા સાચી રે: જેહની રચના-ચંદ્રિકા, રસિયા જણ સેવે રાચી રે. શ્રી૦ ૩ . લઘુગાંધવ હરિભદ્રના, કલિયુગમાં એ થયા બીજો રે; . છતા યથાન્ય ગુણુ સુણી, કવિયણ ભુધ કાે મત ખીજો રે. શ્રી૦ ૪ સતરત્રયાલિ ગામાસું રહ્યા, પાઠક નગર હલાહિ ર; તિહાં સુર્પદવી અહસરી, અહસિલ કરિ પાતક ધાઇ રે. શ્રી૦ પ સીત-તલાઈ પાખતી, તિહી થુલ અછે સસનૂરા રે; તેમાહિ'થી ધ્વનિ ન્યાયની, પ્રગરે નિજ દિવસિં પડ્રા રે. શ્રી૦ ૬ સ વેગી શિર-સેહરા, ગુરુ ગ્યાન-રયષ્ટ્રના દન્યાિ રે: પરમત તિમિર ઉદેદિવા, એ તા ખાલારુણ દિનકરિયા રે. શ્રી૦ હ શ્રીપાટણના સંઘના લહી, અતિ આગ્રહ સુવિશેષિં રે; સાલાવી ગુલુ–કુલડિં, ઇમ 'સુજસવેલિ' મહે લેષિ (ખિ) રે. શ્રી૦ ૮ ઉત્તમ-ગુણ ઉદ્દમાવતાં, મહે યાવન ક્રીધી છહા રે; 'કાંતિ' કહે જસ–વેલડી, સુણતાં હુઈ ધન ધન કીઢા રે. શ્રી૰ ૯

इति श्रीमन्महोपाध्यायश्रीयशोविजयगणिपरिचये 'स्रुजसवेळि' नामा भासः संपूर्णः ॥ [३-१४ श्रीशांतिसागर्थः *श्र'ः।रनी अति]



^{*} આ પ્રતિ અમદાવાદના શ્રીશાન્તિસાગરજીના ભંડારમાં તથા શ્રીવીરવિજયજીના ભંડારમાં હતી. હાલમાં [વિ. સં. ૨૦૧૨માં] વીરવિજયજીના ભંડારમાં ન હોવાનું જાણવા મળ્યું છે. ્સં.

સુજસવેલીના સાર

[હાળ : પહેલી]

[સ્થના– નીચેના અનુવાદની મહત્ત્વની ભાષ્યતાનાં રપષ્ટીકરણ માટે યથાચિત ડિપ્પણા આપ્યાં છતે જોવાં.]

સરસ્વતી રેવીને પ્રણામ કરી, સદ્દગુરૃની સન્કૃષા પામી રેશ્રીયરોાવિજય વાચકના ગુણુસમુદાયનું ગાન કરીશું. હે ગુલુવંતા મુનિવર શીયરોાવિજયછ ! તમારા ગ્રાનપ્રકાશને ધન્ય છે. (૧)

નિધ્ધર્ય આપનું દેવમિલુ–ચિંતામિલુ જેવું (નિર્મળ) શુત–શાસ્ત્ર છે, વાદીઓનાં વચનરૂપી કસાડીઓ ચઢેલું છે, તેના અભ્યાસ પરિતજના ^રબાધિ એટલે સમ્યક્ત્વ (સાચી શ્રદ્ધા)ની વૃદ્ધિ કરવા માટે કરે છે. (૨)

સુકલ સુની વરામાં શિરામણિ, ^પઆગમ–સ્દ્રિલાન્તાના અનુપમ ઝાતા, ^{પ્}ટુમતાના ઉત્થાપક, અને વાચકા (ઉપાધ્યાયા)ના ટુલમાં સૂર્ય જેવા આપ જયવંતા વર્તા છે. (3)

પૂર્વે પ્રસવસ્વામી આદિ છ^{ે ક}્યુત કેવળી' થયા, તેવી રાતે કલિકાળમાં જોઇએ તા આ શ્રીયગ્રાવિજય પણ તેવી રાતે (વિશિષ્ટ) શ્રુતધર વતે છે. (૪)

- ૧. ક્ષેત્ર યસવાળા યશોવિઃત્યજીના ગ્રુષ્ટ્રથી લતાનાં વર્જુન કરનારી દેવાથી આ કૃતિનું નામ કર્તાએ ' સુર્જસવેલી ^ક રાખ્યું છે.
- ર. શ્રીયગ્રારિંગ્યછ, તે ગળદ્રગુરુ શ્રીહીરમુરિજીના જિત્ર ઉપાધ્યાય શ્રીક્રયાસુરિંગ્યછ, તેમના શિત્ર ઃશ્રીસામ્પરિંગ્યછ રાભ્ર હતા, અને તેમના જિત્ર શીનષરિંગ્યજના શિષ્ય તરીકે હતા.
- ઢ. એમની સંવધન પ્રાધન ગૃહભાવી અને મિશ્ર ભાષાઓની કૃતિઓ એવી છે કે નાસ્તિકોને આસ્તિક ભનાવે, અધર્મીત ધર્મી બનાવે, અશ્રદ્ધાળુને શ્રદ્ધાળુ બનાવે ને શ્રદ્ધા દેવ્ય તે શ્રદ્ધાનાં મૂળ મળભાવ કરે; અર્યાત્ સરસત્ માર્ગના સ્પષ્ટ વિવેક કરાવી આપે છે.
- ૪. તેઓથી ૪૫, આત્રમાનું પાન કરી જયા હતા. જેનધર્મના સિક્રોતાને 'આત્રમ' શબ્દર્ધા ઓળખાન્ વવામાં આવે છે.
- પ. સુર્તિ અતે મૂર્તિપૂર્વ વિદાધા મતા, ક્યાંકાપક ભનાસ્તાદાસ પ્રમુખ શુષ્ક વિદાનાના તેમજ અન્ય અતેક જચ્છા કુમતાને શાસ્ત્ર અને તક'ળળદાગ કખેડી નાખનાગ હતા.
- ें!. 'स्त्राप्यंत्र प्रमनः प्रमुः । श्राप्यमंत्री यशोमनः सम्मृतिविजयसातः ॥ सहमातुः स्यूस्पनः श्रीतस्वितिनो वि पट् । व्याक्ष्यी में देन्तरं वर्षे पूर्वे प्रसन्दन्ती क्यांटि छ 'श्रुतक्ष्यंत्री' स्था. बीह 'पूर्वेना ज्ञानवःगी

વળી, તેઓશ્રી જૈનશાસનના યશની વૃદ્ધિ કરનાર, સ્વસમય એટલે પાતાના સિદ્ધાંતાના અને દ્રમન્ય મતા ને શાસ્ત્રોના દક્ષ–ગાતા હતા. તે ઉપરાંત તેમનામાં બીજા સેંકડા–લાખા અનાખા સદ્યુણા હતા કે એથી તેમને કાઇ જ પહોંચી શકે તેમ ન હતું. (પ)

તે એ ^૯ફુ ચોલી શારદા (મૂળળી-સરસ્ત્રતી)ના બિરુદથી સારી રીતે જાણીતા થયા હતા અને જેલું ખાલપલુમાં લીલામાત્રથી (અલ્પ પ્રયત્સથી) દેવતાના ગુરુ ળૃકસ્પતિ જેવાને પણ જીતી લીધેલા હતા. (૬)

ગૂજેર-બૂનિના શાલુગાર રૂપ ^{૧૦} કનાહું' નામ ગામ છે, ત્યાં 'નારાયણું' એવા નામવાળા વ્યવહારિયા (વિશ્વક) વસતા હતા. (૭),

તેને ^{૧૧} 'સાભાગદે' નામની ગૃહિણી હતી, અને તેઓને ગુણવંત પુત્ર નામે 'જસવ'ત' કુમાર હતો, જે પુત્ર ઉમ્મરમાં લઘુ હોવા છતાં છુ હિમાં અત્રણી–મહાન હતો. (૮)

વ્યક્તિઓને 'શ્રુનકેવળી'ની ઉપમા આપવામાં આવતી હતી. કારખ્યું કે તેઓ સંપૂર્ણ શાસ્ત્ર-નિદ્યાઓને જાણવાવાળા હાય છે. સર્વંત્ર ન હોવા છતાં સર્વંત્રના જેવી જ પદાર્થીની વ્યાપ્યાને કહેનારા હોય છે. આવા શ્રુનકેવલીની યાદ શ્રીયશાતિજયજીએ પાતાના ત્રાનદારા કરાવી. એટલે કવિના કહેવાના આશય એવા છે કે સેંકડા વર્ષામાં (અથવા છ શ્રુનકેવલીઓ પછી) આવા મહાત્રાની પુરૃષ થયા નથી આ શ્રુનકેવલીનું આરાપણ એકલા કવિએ જ કર્યું' છે એમ નહીં, પરંતુ એમના જ સમકાલિક અને પરિચિત થયેલા શ્રીમાનવિજયજી ગણ્યુએ પાતાના સં. ૧૭૩૮માં રચી પૂર્ણ કરેલા 'ધર્મસંશ્રહ' નામના શ્રન્થ કે જે ખુદ શ્રીયશાવિજયજીએ સંશાપ્યા હતા, તેની પ્રશસ્તિમાં જણાવે છે કે:—

तर्क-प्रताण-नयमुख्यविवेचनेन, प्रोद्वाधितादिममुनिश्रुतदेवसिताः । चकुर्यद्योचिकयवाचकराजिमुख्याः, प्रन्थेऽत्र मय्युपकृति परिशोधन धैः ।

—તર્ક, પ્રમાણ અને નયની પ્રધાનતાવાળા નિવેચન વડે પ્રાચીન સુનિઓનું શ્રુનકેવલીપણું પ્રગઢ કરી ખતાવ્યું છે (એટલે કે પેતાની જ્ઞાનપ્રતિભાષી ખતાવી આપ્યું છે કે અગાઉના શ્રુનકેવલીઓ આવા અગાધ જ્ઞાની હતા) એવા, અને વાચકસમૃદ્ધાં સુખ્ય શ્રીયશાનિજયજીએ આ પ્રયંથાં પરિશોધનાદિ કરવા વડે મારા પર ઉપકાર કરેલા છે. બીજી રીતે ઘટાવીએ તાે અન્તિમ શ્રુનકેવળીની માફક આ 'અન્તિમ શ્રુનપારગામી' હતા, ત્યાર પછી આવાે પુરુષ પઃકચો નથી.

- ૭. 'સમય' એ સંસ્કૃત શબ્દ છે તેના ગુજરાની અર્થ સિદ્ધાન્ત-શાસ્ત્ર થાય છે.
- ८. सांभ्य, थाग, वेशिषिक, न्याय, वेहान्त, भौद वर्गरे.
- ૯. બણે સાક્ષાત્ સરસ્વતી જ મુખ્ધારી શ્રીયરો વિજયરૂપે રહી છે કે શું?
- ૧૦. ક-હોકુ–એ ક્લાલ પાસે નિર્દે પણ કુચુગેરથી ૧૨ ગાઉ અને ધીફાજયી ત્રગ્રેક ગાઉ ઉપર છે. શ્રીયુત મા. દેસાઈએ ક્લાલ પાસે લખેલું છે તે બરાત્રર નથી.
- ૧૧ સૌભાગ'દે'–દેવીના અર્થમાં 'દે' વપરાયા છે.

^{૧૨}(કુણુગેર' માં ચામાસું (આષાદથી કર્તિક સુધીના ચાર માસ) કરીને સવત ૧૬૮૮માં પંડિતવર્થ ^{૧૨}શ્રીનયવિજયછ અનંદપૂર્વક 'કન્સેહુ' ગામમાં પધાર્યા. (૯)

માતા સાભાગદેએ પુત્ર સાથે ઉલ્લાસથી તે સધુ પુરુષનાં ચરણામાં વંદન કર્યું અને સ્દ્રગુરુના ધર્માષદેશથી જ 4વંતકુમારને વૈરાસ્થના પ્રકાશ થયા. (૧૦)

^{૧૪} અન્ િલપુર-પાટણ (ગુજરાત-પાટણ)માં જઇ તે જ ગુરુ પાસે જસવંતકુમારે ચાન્ત્રિ (ક્ષક્ષ,) લધું અને તે વખતે ^{૧૫} હશે...વજઘ' એવું નામ સ્થાપન કરવામાં આવ્યું. એટલે હવે તે નામથી આળખાવા લાગ્યા. (૧૧)

વળી, બીજા 'પદ્મસિંહ' જેઓ જુત્રવંતકુમારના લાઈ હતા અને ગુણવંત હતા, તેમને પ્રેન્ણા કરનાં તે પણ વનવંત થયા એટલે મહાવતા લેવા દ્વારા ચારિત્ર અગીકાર કર્યું. (તે તું નામ ^{૧૬}પદ્મવિજય રાખ્યું.) (૧૨)

^{૧૯}વડીદીક્ષા માટેના ^{૧૦}યામ-તપ અને ^{૧૯} શ્રીદશ-વૈકાલિકારિક સ્ત્રના અભ્યાસ કરત (યાગ્યતા પ્રાપ્ત થતાં), આ ળ'ને સુનિ-બ્રક્ષુઆને ^{૨૦}સ. ૧૬૮૮ ની સાલમાં ^{૨૧}તપામચ્છના આચાર્ય ^{૨૨}શ્રીવિજયદેવસૃશ્નિા હસ્તે વડીદીક્ષા આપવામાં આવી. (૧૩)

૧૨. આ પાટળની (ક્લેલ અલ્વાના માર્ગ) નજીકનાં જ આવેલું છે. ઐતિદ્રાસિક 'નિજયપ્રહૃતિ' આદિ સંસ્કૃત પ્રથમામાં કુમાર્રાગરિ તરીકે તેના ઉલ્લેખ મળે છે.

૧૩, જસર્રતકુમારના ભાવિ શરૂ થનાર આ મદાપ્રદૂધ ક્રાના હિપ્ય હતા તે માટે ટિપ્પણી નં. ૨ જીએ.

૧૪–૧૫. 'અભ્વૃદિલ' નામના ભરવાદના નામચી ઐાળખઃનું. વર્તંત્રાનમાં મૃતિપુત્રક સંપ્રદાયમાં જૈન-ધર્યની દીક્ષામાં ગુદસ્થાયમનું નામ વ્યદ્ધી, તેની જન્માકિક રાશ્ચિને મળતું કાઈ પછુ માંબલિક નામ રાખવાની પ્રથા છે. એથી ગુદસ્યાયમના નામને મળતું જ નામ પાદવામાં આવ્યું.

^{15.} श्रीपद्यिक अध्ने। हृश्सेभा 'न्यायभां ३भाव 'नी प्रश्वतिमां-'प्रेम्मां सद्य च बस्य 'पद्मधिलयों ' बातः सुवीः सोदरः '-क्रे पंक्तियी ध्यां छे.

૧૭. જૈંતધર્મમાં પ્રથમ લધુદાસા આપવાના અને અમુક યાગ્યતા આવ્યા બાદ પુનઃ વડીદાસા આપવાના વિધિ છે.

૧૮. યાત્ર–તપ એટલે વધુદાસા ખાદ મુત્રનાન **વરવુ**વા અંગે યાત્રના એક પ્રકારફપ તપ અને વિધિ પતાવવામાં આવ્યા છે.

૧૯. એ નાયના સત્રપ્રંથ જે દીક્ષા ખાદ પ્રારંભમાં જ ભણાવતામાં આવે છે.

ર. મં• ૧૧૮માં વડીદાસા આપવામાં આવી છે એ દિસાળે તેમણે ૮–૧. વરસની ઉમ્મરમાં દીસા શીધી દાવી જોઈએ. એથી એમની જન્મસાલના સમય મં• ૧૧૮૦ની આસપાસના સંભવે છે.

ર૧. જેન સાધુઓમાં એ નામથી ઓળખાતી-અન્દર સાખા.

ર.ર. આ આગાર્ય, તપામચ્છના આચાર્ય શ્રીવિજયાદીસ્ત્રિરિષ્ટના પદ્ધર પ્રચ્છનાયક શ્રીવિજયસેનમ્રિરિષ્ટના પદ્ધર હતા, અને તેમને વિ. સં • ૧૬૭૧માં મચ્છાયાર્ય તું પદ મળ્યું હતું.

વડીદીસા બાદ શ્રીજશવિજયજીએ ગુરુંમુખદ્વારા ^{દર ક}સામાયિક આદિ (લડાવશ્યક સૂત્રાદિ) સૂત્ર–ગ્રાનના અલ્યાસ કર્યો, જેના પરિવામ જેમ સાકરના દલમાં મીઠાશ વ્યાપીને (અશુએ અશુએ) રહે છે, તેવી રીતે તેમની મતિ ^{ર૪}શ્રુત–શાસ ગ્રાનમાં વ્યાપી ગઈ. (૧૪)

સ. ૧૬૯૯માં ^{૨૫}રાજનગર—અમદાવાદમાં સંઘ સમક્ષ મુજ્ઞાની શ્રીયશોવિજયે આઠ ^{૨૬૮} મહા અવધાન ' કર્યાં. (૧૫)

તે વખતે શ્રીંસંઘના એક અગ્રણી શાહ ^{રૂડ} ધનજ સૂરા ' હતા તેમણે ગુરુ શ્રીનયવિજયજીને આ પ્રમાણે વિનંતિ કરી કે-" આ [શ્રીયશાવિજયજી મહારાજ] ^{રૂડ}વિદ્યા–જ્ઞાન મેળવવાનું યાત્રય પાત્ર છે. એમને (ભણાવવામાં આવે તા) આ ^{રંદ}ળીજા હૈંમાચાર્ય થાય તેંમ છે. (૧૬)

રહ, આ ધનજી સુરા તે અમદાવાદના એાશવાળવંશના સંધવી સુરા અને રતન એ નામના છે ''' બાઈઓ સં. ૧૬૭૪ પહેલાં વિશ્વમાન હતા, તેમણે સં. ૧૬૮૭ ના દુકાળમાં દાનશાળા ખાલી હતી '''' અંતે શ્રીશર્સ જંપનીથેના અહાર તા સધે કે હવા હતા.''

આ પૈકી સંર ના પુત્રનું નામ ધનજી અને સ્તનના પુત્રનું નામ પનજી હતું, તે ખન્તેએ સમેનેશિખરના પગપાળાં યાત્રાત્રાંધ કાઢી, તેમાં એક લાખ ને એસી હ નગ્નુ ખગ્ય કરી સંધરી પદ્ધાં મેળવા હતી વળી આ ધનજી સ્નાંએ શ્રીવિજયદ્વસ્ત્રિસ્ત્રની સાથે વિજયપ્રભસરિજી સં ૧૭૧૧માં અમેમદાવાદમાં આવ્યા ત્યારે, તિજયપ્રભનિસ્ત્રિનો 'મણાનુદ્ધા'નો નંદિમહેત્યવ આઠ હત્વર મદાયુદા ખરચાતે કર્યા હતો. [જે માટે 'જૈન એક રાસમાળા 'અને 'પ્રાચીન લીપ'માળા સંગ્રહ ' જીઓ.]

- .૨૮. ધનજી શ હની દીર્ધ દષ્ટિ ને સાણુક્રચણસ્ત્રિએ શ્રીયગાવિજયજીને વિદ્યાના ચાગ્ય ૫ત્ર અને બીજા હિંમાચાર્ય તરીકેની જે ક્રિનિયવાણી ઉચ્ચારી તે કેવી સફળ નીવડી તે આપણે આ 'ક્ષ.સ'યી ભોઇ શક્યશું.
- રહ. કલિકાલસર્વંત્ર શ્રીહિમચંદ્રાચાર્ય મહારાજ સાથે શ્રીઉપાધ્યાયજી મહારાજનું અનેક ક્ષેત્રામાં સામ્ય જોવા મળે છે. જેમ કે-

બ'ને બાળ દક્ષિતો હતા, બ'નેની માતાઓએ પાતાના પુત્રોતે રાછખુશીથી ધર્મ—શાસનના ્ ચરણે સોંપી દીધા હતા. બંને સરસ્વતીના કૃપાપાત્રો હતા. બંને જૈન–જૈનેતર શાસ્ત્ર–સિહાન્તાના

૨૩. સામાયિક આદિ આવશ્યક સુત્રાના અભ્યાસ શ્રીયુરુમુખદારા ત્રદ્દેશું કર્યો, તે જ્ઞાન ત્રદ્દેશુના 'વિનયાચાર' ધર્મ સચિત કરે છે.

૨૪. જૈન તત્ત્વનાનની પરિભાષામાં ' શુત ' શબ્દ દાદશાંગી વગેરે શાસ્ત્રોના અર્થમાં બદુધા વપરાય છે.

૨૫. 'રાજનગર 'એ અમદાવાદનું અપરનામ છે.

રેક. મહા અવધાન—એટલે ધારણાં શક્તિના વિશિષ્ટ પ્રકારના પ્રયોગો. અત્યારે જે પ્રકારનાં અવધાના થાય છે તેથી આ કાઈ વિશિષ્ટ પ્રકારનાં હોવાં જોઈએ, તે ક્રાંતા ક્રમશઃ આઠ અવધાન કર્યા એમ નહિ કિ-તું એક સાથે જ અઠ જણાએ જુદાં જુદાં આઠ કાર્યો એક સાથે જ કરી રહ્ય હોય તે બધ યતે એકી સાથે જ ધારી લઈને પછી તે કર્યા કર્યા થયાં કે તે જનતા સમક્ષ કહી બનાવવાં તે. આ તીવા ધારણાશક્તિ વિના કદી અની શકતું નથી.

ર•જેતે ફાર્શી જઈ -^{ફા}ઇએ દર્શનના પ્રશ્ચિતા અભ્યાય કરે તેં કામ પરંથે ^{ફર્}શીજિતમાર્ગન ઉત્સવક કરી રેખાઇ તેવા છે. (૧૭)

સાહ ધનજીલ ઇતાં વચના સંલગીને સફગુરુરેવે જણાવ્યું કે, ' કાશી જઈ લણાવવાતું કામ ^{રુ}ધન-શક્ષીને આધીન છે, કારણ કે નિતા સ્ત્રાર્ધ અન્ય અતિઓ પાતાનાં શાઓનું ગ્રાન આપના નથી.' (૧૮)

ખાર રત હતા, ખતેએ સાંદિત્યના સહારાંષ અગાને વિક્રમાંથી હતાં. ખતે કેલ્કા કોઠિના વિદાન હતા. ખતિ તત્તન અંચના સમેકા હતા. ખતિ પ્રાપ્ત-સંગત પ્રત્યાના પરમ કળાસક હતાં. બતિ ફેન્સ્ટાસનના પૂર્ણ વકાશર સંવકા હતા. મનિનો ચિત્રના કોનેતર સચામના વિદાનોને સાનદ અને ક્ષયત્વે તેવા હતા અને આજેલ છે. આમ એચના જીવનેતા વ્યાપક પ્યાલ કરતારને ઘણી ઘણી સાસ્યનોએ! પળી આવશે

કુન એકના સાહિત્વસર્ગન પાછળ રાજધે જા પ્રયાન વર્વી નવારે ભાગની પાછળ વ્યતિષ્ટ પ્રેરણા સુખ્ય વર્તા, એક સાહિત્યમેન્ને વ્યક્તિયાની પ્રકૃતિએ વ્યવસાય રૂપી વ્યત્સ બન્યા તો બાળ 'નવ્ય-યાય' ને પાતાના વિચાગનું વાવન બતાવીને વ્યત્સ લ-યા વર્ષેરે અનેક ભાગતા વચ્ચેનું સામ્ય જોવા મળે છે.

20. કાશી એ ઉત્તર બાગ્યનો આવેલા એક દેશ જેની સુખ્ય નગરીનું સંસ્તૃત શબ્દ વારાવ્યી—તેનું સંક્રિક બળાનો એળાબાનું હવા નામ બનારસ છે. કાશ્મીર પહો કાશી સંક્રીય વર્ષોથી વિદાનું ધામ વધું છે. તો સહત્વનીએ નિરાય કર્યો હાત્રથી કેરના પ્રસ્તુ એકા પ્રતિ છે કે અન્ય સ્થળ કરતાં આ સ્થળાનો મોલ તે સુરસ્ત્ર થી ઉત્તર પ્રકારે વિદ્યા પ્રાપ્ત કરી શક્ય છે; એમ અતેકના સામાન્ય અનુક્ષ્ત્ર છે. આપ્રેય પૂર્વવત્ નહીં હતાં પણ એનું ત્રોરેલ દીક દીક સ્પર છે કહ્યું છે. તે વખાલે અનુક્ષ્ય છે. આપ્રેય પૂર્વવત્ સ્થાપ્ત પ્રાપ્ત પ્રાપ્ત પ્રાપ્ત સ્થાપ્ત સ્થાપ્ત સ્થાપ્ત કરી હતાં કાર્યા હતાં તેને સામ પ્રવાસની અનાય રાષ્ટ્ર કર્યા તેના કાર્ય શુપાલન તેલા કરે દેકને પણ એ અશક્યપ્ર હતું એ તા કાશી લવાય તો જ ફર્યાલ સ્થાપ્ત પ્રાપ્ત વેલા કરે નિર્દ્યા પ્રાપ્ત સામાં વેલા સામાના વર્ષો પ્રાપ્ત સામાના વર્ષો કરાય પ્રાપ્ત સામાના વર્ષો કરાય પ્રાપ્ત સામાના વર્ષો કરાય કરી કરાય પ્રાફર્યન સર તત્ય-નામના અત્યાસ્થી તેમણે કે! અપ્તરા સામાના વર્ષોની કરાયો કરી કરાય પ્રાફર્યન સર તત્ય-નામના અત્યાસ્થી તેમણે કે! અપ્તરા સામાના વર્ષો કરાયો કરાયો કરાયો પ્રાપ્ત કરી કરાય પ્રાફર્યન સર તત્ય-નામના અત્યાસથી તેમણે કે! અપ્તરાસ્થી કરાયો પ્રાપ્ત કરાયો પ્રાપ્ત સામાના સ્થાનો સામાના સા

અને ગળી, સર્ગનય સમ્મન જૈનદર્શનનું મહોપરિયાં મામિત કરી આપતું દેણ હેલું એકંગી ત્રીપી અનિકૃત તમામ દર્શનોની અમ્મામ કરેશ જ કેટર્ડ છે.

- કર ૧ જેન, ૨ સાંગળ, ક ધાય, ૪ વેશેર્યક, ૫ સીકાંકા, ૬ બોલ બાછ દારે—સાંગળ, ધાય, વેશેર્યક, ત્યાળ, વેશના—સા ૭ દર્શના ઝણાય છે; વર્ષ્ટ્રામાં જીકી જુકી પહીંત ને શાન્યનસ્તો પ્રશ્ને છે.
- કર. પર-પ્રદ્રીય સિલ્ડ-નોર્તા અધ્યાપ કર્યા કિરાય રહ-મરાધાયન કઠા ન થઈ શકે. વળ, તે વખતે દર્શનિક બિલ્ડેનું અલ્પ્ય પણ પ્યુમ જ અધિતું, આ બધી દોર્યદર્જિક લક્ષ્યમાં ગાંધીને કાશીની મદાના બન્ય પામી હતી.
- કર. વિશા વધ્યુ પ્રકૃત થયે છે. એ વેધ્વિગ્યનોના પહોલ જીતુરેશના વચનમાં મહિલો છે, આ કહ્યું તે ને નિગ્યના-"શુષ્ક્રપુષદા દિવા, પુષ્કાંકેન घનેન का । अवशा विदयः विद्या, बहुई शंतरहते(बहुई) तेन विद्यते ॥ "

આ 'સુજસવેલી ' કાવ્યના રચયિતા ^{૩૪} શ્રીકાન્તિવિજયછ કહે છે કે નાની-પુરુષાના ગુણાનું કથન કરતાં મારી જિહ્યા નિર્મલ થઈ અને આ સુજસવેલી કાવ્યને સાંભળતાં સઘળા ગુણાની પુષ્ટિ થાય છે. (૧૯)

[હાળ : ખીછ]

ગુરુજીનું વચન સાંભળીને ગુણી શ્રાવક શાહ ધનજી સ્પૃરાએ મનના ઉત્સાહપૂર્વક કહ્યું કે, 'રૂપા નાણાંની એ હજાર ^{ઢપ}દીનારના હું ખર્ચ આપીશ અને પંડિતના તથાવિધિ– ચથાયાેગ્ય રીતે વાર વાર સત્કાર પણ કરીશ. (૧)

' માટે મારી એવી ઇચ્છા છે કે તે તરફ જઇ ને તમે લાઘાવા.' આ સાંલળી સૂર્ય જેવા તેજરવી ગુરુએ કાશી તરફ વિઢાર કર્યો, અને તે શ્રાવકે હુંડી કરી (લખી). તેથી ગુરુરાજે તે શ્રાવકના લક્તિગુલ કળી લીધા, અને પાછળથી સઢાય અર્થે (નાઘાં મળી શકે માટે) તે ^{કદ્}હુંડીને કાશી માેકલી આપી. (ર)

કાશો દેશની ^{૩૫}વારાષ્ટ્રસી નગરી છે, જે ક્ષેત્રના ગુણ-મહિમાને લક્ષ્યમાં લઈ ને જ્યાં ^{૩૮}સરસ્વતીદેવીએ પાતાના વાસ કર્યો છે. ત્યાં તાર્કિક-કુલમાં સૂર્ય સરખા ષડ્દર્શનના અખે ડ રહસ્યને જાણુનાર એક **લદ્વાચાર્ય** હતા કે જેની પાસે સાતસા શિષ્યા સીમાંસા આદિ દર્શનાના અભ્યાસ વિદ્યાના રસપૂર્વક કરતા હતા. તેમની જ પાસે શ્રીયશાવિજયજી પાતે ઘણાં પ્રકરણા ભણવા લાગ્યા. ^{૩૯}ન્યાય, મીમાંસાવાદ, સુગત (બી.હ.), જેમિનિ,

રૂપ સુજસવેલીના કર્તા શ્રીકાંનિવિજયજી એ કયા છે? તે બાળતમાં તેા શ્રીમાહનલાલ દ. દેસાઈ તેમને શ્રીકીર્તિવિજયજી ઉપાધ્યાયના શિષ્ય તરીક ને ઉપાધ્યાય શ્રીવિનયવિજયજીના ગુરુબાતા તરીક ઢાવાની સંભવના કરે છે. પરંતુ એ સમયમાં એક ભીજા કાંતિવિજયજી પણ થયા છે. ખેમાંથી કયા લેવા? તેના ચાક્કસ નિર્ણય હેજી કરી શકાયા નથી.

ay. એક દીનારના અઢી રૂપિયા થતા હતા. આ નાણું પૂર્વ દેશનું હતું, એમ 'બૃદત્દ્રક્ષ્યસ્ત્ર'માં જણાવ્યું છે. 'દીનાર' સુવર્ણ અને રજત–એમ ખે પ્રકારના હતાં. સુવર્ણની કિંમત રજત કરતાં વધુ હતી.

૩૬. જૂના વખતમાં હુંડી લખવામાં આવતી, અત્યારે પણ હુંડીના રિવાજ છે. અત્યારના સુધરેલા યુગર્મા તેનું સ્થાન બેંકના 'ચેકા 'એ લીધું છે.

૩૭. વરણા (વારણા [?]) અને અસી એ ખન્ને નદીના સંગમ પર વસેલી નગરી હાેતાથી 'વારાષ્ટ્રસી ' (પ્રાકૃત નામ વાલારસી) છે ને તે ઉપરથી અત્યારે લાેકમાં 'બનારસ ' નામ પ્રચલિત થયું છે.

[ં] **ટ**૮. કહેવાય છે કે સરસ્વતીનું પ્રથમ નિવાસ રથાન 'કાશ્મીર' હતું ને ત્યાર પછી કાશી થયું ને તે અત્યારે પણ ચાલુ જ છે.

³૯. ન્યાયમાં પ્રથમ પ્રાચીન ન્યાયનું જ અસ્તિત્વ હતું, પગંતુ િક્રમની દરાયી સદી પછી ભારતમાં નવ્ય ન્યાયની નવ્ય દિશા ખૂલી, તેનું અધ્યયન અદ્યાપિ પર્ય તે ચાલુ રહ્યું છે. પ્રાચીન ન્યાય અને નવ્યન્યાય બન્ને વચ્ચેના બેદ–પહિત–શૈલી અને તેનું સ્વરૂપ સમજવા જેનું છે. છુહિમાનાએ 'ગાદરેજની ચાલી'[માસ્ટર કી] જેવા સર્વદર્શનાના આશ્યોને ખાલી આપનાર નવ્યન્યાયનું અધ્યયન અવશ્ય કરવું જોઇએ.

વેગ્રેપિક અહિના બ્રિદ્ધાન્તે અથે ^૪ ચિંતામણિ જેવા દરકર્ટ ન્યાય ઘન્યાના પણ અલ્યાસ કર્યો. જેશી વાકીઓના ગ્રમૂડ્યી ન જીતી શકાય તેવા અને પંતિતામાં શિરામણિ થયા. તેમણે સાંખ્ય અને ^{૪૧} પ્રલાકર લટ્ટ [પ્વૈશ્લીમાંગ્રા]નાં મહાદુર્ગમ (સ્વૃતના) મત-મતાંતરાની રચનાના અબ્યાગ્ર કરી જિનાગમ-સિદ્ધાંતા ગ્રાથેના ગ્રમન્વય પણ કરી લીધા. (૩-૪-૫)

- અધ્યાપક પંતિજીને ડુંગેશના રૂપયા અપાતા, શ્રેષ્ઠ છુઢિશાળી શ્રીયશે વિજયજને અધ્યયન કરવામાં મહારય લાગ્યા હતા, તેઓશીએ ^{૪૨}વણ વર્ષ સુધી સતત ને ખૂબ ^{૪૨}ષરિશ્નમપૂર્વક અવ્યાય કર્યો. એવામાં ત્યાં માટા કાદથી ધયી આવેલા એક સન્યાસી સાથે, સર્વજન-સમક્ષ શ્રીયશે વિજયજો વાદ (શાસાર્ધ) શરૂ કર્યો. તે સંન્યાસી શ્રીયશે વિજયજીને પ્રચંદ વાદ-શક્તિ દેખતાં ઉત્માદ (ગર્વ) તજી પલાયન થઈ ગયા. પછી જેમની આગળ ^{૪૪}જીત-તિશાન સ્ત્રયતાં પંચ શબ્દ-પાંચ પ્રકારનાં વાજિત્રો વાગી રહ્યાં છે એવા શ્રીયશે વિજયજી પોતાના નિવાસે પધાર્યો,—અર્થાત્ તેમને વાજતે-ગાજતે લારે સરકાર સાથે પાતાના સ્થાને લઈ જવામાં આવ્યા. (૧-૭)

ત્યાં આવીને ^{૪૫}વારાણુઓ-શ્રીપાર્જાનાથતી સ્તુતિ કરી અને તેઓની ^{૪૫}ન્યાય-

૪٠. તત્ત્વ-ચિ-નાર્માણું એ ન્યાયશાસ્ત્રના અત્વનદત્ત્વના પ્રાચાન સંઘ છે.

૪૧. સીમાંસામાં એ પ્રકાર છે. (૧) પૂર્વ મીમાંસા (૨) ઉત્તર મીમાંસા, પ્રભાકર લઇ એ પૂર્વ માંમાંસાના સમર્યક પ્રખર વિદાન હતા.

૪૨. દિવર-તોંગામાં ૧૦ કે ૧૨ વર્ષ સ્વાની વાતા જણાય છે પણ ⊜પરનું કથત એમ સચવે છે.કે ' તેઓ કાશીમાં વણ વસ્કાજ સ્વા હતા.

જરા. આ સમના જ પરિષ્ણામ થડાર્સનમાં નિષ્ણાન ધંધા. સમન્વવ શક્તિ મેણિ કળાએ ખાલા હઠી અને તૈયા દર્શનોની સંદર્ભ દરિકી વિશ્લેષણ કરવાના પ્રતિક્ષા 'પણ હત્યન થઈ અને નવ્યન્યાયના આપ્યત્ર્ગલ અધ્યાસના કળદ્ધ જૈન દાર્શનિક શ્રાદિત્વમાં નન્ય-પાયની શ્રેલ ને, તકે અને વિચરે તું યાધ્યમ—વાદન બનાવીને પદ ધનિર્ભય કરવાના અપ્યત્ર્ગ્ય અપ્યત્ર સ્થાન જમાન્યું.

જર. કાર્યા જેવા દુઃ દુરના પ્રધ્યમાં જઇને અગ્રાકારણ વિદ્વાન ત્રણાતા પંદિનના પડકારને ઝોલવા તે કુરલર વિદ્વાનાની સભા વન્ચે નિદરપણે વાદ કરી જયપનાકા એળવવી એ કંઇ નાનોસની લડના નધી. એક વૃજ્યાની કાશામાં ભણી અને વળા તે કાળના કાશીનાં જ વિજય મેળવે, એ પ્રયેક વૃજ્યાની માટે પ્યુપ જ ગીરવ લેવા જેવા ખનાવ છે. તે હજાન ઇતરલનો પાંડતા સમક્ષ ભણીને નાજો જ તૈયાર થયેલા એક જેન શ્રમણ, આવા મચ્ચ વિજયવાવેશ ક્રકાવે એ જેન સલ માટે ભારે મધરી લેવા જેવા તે સ્વબુક્ષિર તેલિ કરવાં મેં આ ઘટના છે.

જપ. શ્વકાળમાં 'વાર જ્યા પાર્ચ નાય ' એ એક તોર્ચ કૃષ રહ્ય ન હતું તે આજે પણ છે વારાણમાં(કાશી) તે રઢ મા તોર્ચ કર શ્રીપાર્ચન થતી જન્મ વગેરે કલ્યાબુકાવાળી સ્તૃષ દેવતથી તે જેતાનું તોર્ઘ કેંદ્ર મનાતુ. જપ. અહીં કવિએ 'ન્યાયવિશાસ્ત ' નિરૃદનો હક્ક્ષેખ કરેલ છે પરંતુ પંદિતવર્જ મેમા ઘઇ તે

વિશારદ' તરીકેની મહાકીર્તિ થઈ. આ પ્રમાણે ત્રણ વર્ષે સુધી કાશીમાં રહીને ^{૪૬} તાર્કિક' નામ ધારણ કરીને પંડિતરાજ શ્રીયશાવિજય કાશીથી આગા નગરે પધાર્યો. (૮)

ત્યાં ^{૪૭} આગા શહેરમાં પણ ^{૪૮} ચાર વર્ષ પર્યન્ત રહીને વિદ્વાન ન્યાયાચાર્ય પાસે આ પંડિત શ્રીયશાવિજયજીએ વિશેષ આદરપૂર્વંક એટલે અતિસૃક્ષ્મતા ને ઊંડાછુથી કઠિન-કકેશ અને પ્રમાણાથી અતિસરપૂર તર્કના સિદ્ધ ન્તે ને અવગાહી લીધા (૯)

શ્રીયગ્રાવિજયજીની વિદ્વત્તાથી આકર્ષાઇ આગાના સક્તિવંત શ્રીસ ઘે તેમની આગળ અગ્રક્ષ્વ ક ^{૪૮}નાતસા રૂપિયા લેટ ધર્યા, તેના ઉપયાગ ઉમંગથી પુસ્તકા લેવા-લખાવવામાં અને પઠાં (પાટલીઓ આદિ) બનાવવામાં કર્યા અને પછી તે વસ્તુઓ આનંદ ને ઉ-સાહથી વિદ્યાલ્યાસીઓને સમર્પણ કરવામાં આવી. (૧૦)

ત્યાંથી નિહાર કરીને સ્થળે સ્થળે ^{૪૯}દુર્દમ વાદીઓની સાથે જાતજાતના વાદા કરતા, તેમને પરાજિત કરતા, વિદ્યાઓથી દી પતા શ્રીયશાવિજયજી અમદાવાદ નગર(ગુજરાત)માં પધાર્યા.

અના પ્રમાણે આ સુયશની વેલીને જે સદા ભાષુશે, તે મહા આનંદના પૂરને પ્રાપ્ત કરશે—એન શ્રી કાંતિવિજયજી કહે છે. (૧૧)

૪૬. આજે પહા ઉપાધ્યાયજીને 'તારિક' તરીકે જે ઓળખાવવામાં આવે છે.

૪૭. આગા અને કાશીમાં કુલ [3 + ૪ =] ૭ વર્ષ પસાર કર્યા છે, એટલે લગભગ સં. ૧૭૦૭ સુધીના સમય કાશી-આગ્રામાં પસાર થયા અને ત્યાર પછી ગુજરાત તરફ પ્રયાણ કર્યાનું સંભવે છે.

૪૮. આ પ્રમાણે સતકાર કરીને આગ્રાના ભક્તિવંત શ્રીસંધે પાતાના વિનય, વિવેક અને જ્ઞાનભક્તિનું અન્ય સંધાને માટે અનુકરણીય દર્શાંત પૂર્ં પાડ્યું છે. અને તે રૂપિયાઓના ઉપયાગ વિદ્યાર્થીઓને જ્ઞાનાપકરણુ માટે દાન કરવામાં કરાવેલા એ ઉપાધ્યાયજીના–છાત્રપ્રેમ, જ્ઞાનાપ્તેજન, વિદ્યાળ હૃદ્ય અને નિઃસ્પૃહપણાનું જ્વલંત દર્શાંત પૂર્ં પાડે છે.

૪૯. એક વિજયી સેનાપતિ ઠેર ઠેર વિજય મેળવતા પાતાની રાજધાનીમાં પાછા ફરે અને રાજધાનીના સમસ્ત નાગિરફા તેનું શાનદાર સ્વાગત કરે એવું જ ચિત્ર ઉપરની પંક્તિએ આપણી સામે ખકું કરે છે. કવિ કહે છે કે દુર્દમ્ય એટલે મહાધુરંધર પંડિતા સાથે ઠેર ઠેર વાદા કરી, વિજયા મેળવી, પાતાની જન્મભામ તરફ પાછા ફર્યા અને રાજનગરની સમસ્ત પ્રજાએ તેઓશ્રીના જ્ઞાનદાર ને બાદશાહી સત્કાર કર્યો જે વર્ષુન કવિ થાડા શબ્દામાં પસ્તુ થયાર્થ રીતે હવે પછીની ત્રીજી ઢાળમાં કહી રેવા છે.

પદ્યા પ્રદ્યાન કરી હતા એમ રુષ્ય શબ્દોમાં જણાવ્યું નથી, પરંતુ ધ્વિન એજ વ્યક્ત થાય છે કે તેમને તે પદ અપં અ કરવામાં આવ્યું હતું. અને એ તો નિશ્ચિત વાત છે કે, સન્યાસી સાથેના વાદયી કાશીના વિદાના મંત્રમુગ્ધ બન્યા હતા અને તેમણે એકત્રિત થઈને પ્રસ્તુત બિરુદ્ધી નવાન્યા હતા. જે વાત તેઓશીએ જ સ્વકૃત 'જેન તક લાયા'ની 'પૂર્વે ન્યાયવિદ્યારે વ્યવિદ્યા કતાદ્યાં પ્રવૃત્તં લુધા: !' આ પ્રશસ્તિની પંક્તિથી સ્પષ્ટ જણાવી છે; તદુપરાંત દ્રવ્યગ્રખુપર્યાય રાસ, શ્રીસીમંધર સ્તવન, સામાચારી, એન્દ્રચતુર્વિ શતિકા, મહાવીર સ્તવન, ન્યાયખંડનખાદ્ય-ટીકા, વગેરેની પ્રશસ્તિઓમાં તેમ જ શ્રીજમ્બસ્ત્રામિ રાસ વગેરમાં પણ જણાવી છે. એટલું જ નહિ પણ તેમના શિષ્ય શ્રીતત્ત્વવિજયજીએ સ્વકૃત 'અમરદત્ત મિત્રાનંદ'ના રાસમાં પણ 'જગમાંદિ' જેબ્દી લક્ષું રે લાલ, 'ન્યાયેવિશાસ્દ' બિરુદ્દ રે, જેબ્રુઈ કીયા વાદી સમ રદ્દ રે 'વગેરે ઉશ્લેબા અને અનેક પ્રમાણેથી તે વાત સુનિશ્વત છે.

[ein: 419] ·

[નોર્સ :- વિદ્યાક્ષામ કાશી જેવા દુરના પ્રદેશમાંથી વિજયી ખની અમદાવાદ પધારનો અમદાવાદ વધારનો અમદાવાદ વધારનો ક્રમ

અમદાવાદની નારીઓ આ પ્રમાણે વચના હચ્ચારી રહી છે કે કાશીથી શરુદેવ મંગ્રાતિજયજી દરો દિશામાં વાદમાં વિજયા મેળવીને, 'ન્યાયવિશારદ ' જેવી માછી પદવીથી અલંકૃત થઈને, વળી જેમની આગળ વાજિંત્રો એરથી વાગી રહ્યાં છે તે અહીં (અર્યાત્ વાજતે-માજત ધામધૂમથી) પધાર્યા છે માટે હે સાહેલીઓ ! સદૃશુરુદેવને વાંદવા ચાલા.

અમ શાસનદીપક પંડિતવર્ય છે, એમને જોવાને માટે અમારાં નેવા તલસી રહ્યાં છે. (૧-૨)

તારાએ વદે જેમ ચંદ્ર વીંટાયેલા છે, તેવી રીતે લટા, છાત્રો, વાદીઓ અને પંડિતજના વદે તેઓશી પરિવર્યા હતા. અંધાત્ તેમના સ્વાગતમાં તેઓ સાથે હતા. શ્રીયગ્રાવિજયજી લબ્ય જીવારૂપી ચંકારાને આનંદ આપવામાં ચંદ્ર સરખા ને વાદીરૂપ અરુદાને વદ્ય કરવામાં વિષ્ણુ સરખા હતા. (૪)

ચાચકા ને ચારણેતા સમુદાયથી સ્તૃતિ–પ્રશંસા કરાતા, ઉત્તમ અર્થ (પ્જન)ને ઘડ્યુ કરતા સકળ સંઘ–સમુદાયથી વીંડાયેલા [અમદાવાદની રતનપાળના નાકે આવેલી] નાળપુરીય સરાદ (હાલમાં–નાગેલી સરાઇ છે) તેમાં પધાર્યા. (૪)

અાધી આ અને પંડિતની ઉજ્જવલ કીંતિ પ્રત્યેક દિશામાં ફેલાઇ ગઈ અને (અમકાવાદની) ^પ રાજસભામાં તેમની થતી પ્રશંસાને મહાબતખાને સાંબળી તેથી ગુર્જર-પતિ (સ્ણા) ^{પા} મહાબતખાનને પંડિતવર્થ શીયશાવિજયછને જોવાની તીલ દાંશ જગી અને સ્ળાખાનની વિનંતિથી (ખુક્રિની મહત્તાનાં સ્ચક) તેમણે ^{પર 6} અહાર અવધાન ' સાધી બતાવ્યાં. (પ-6) '

૫૦. 'વિદ્વાન વવસ વુલ્લે બી કહિત અહીં અસ્તિમાં થતી જોતામાં આવે છે.

પ૧. ઓરંગજેએ ગ્રુપ્ટાનના સમા તરીકે મહાયનખાનની મને ૧૬૬૨ માં એટલે વિ. મં. ૧૦૧૮ માં નિમ્બૂર કરી અને તેની સમાગીરી સને ૧૬૬૮ સુધી મે. ૧૦૨૭ સુધી કાષ્ય રહી. એવું મુંગઇ એકેટલર [વૉ. ૧, ભાગ ૧]માં ગૃષ્યાતના ઇનિદાસમાં જાણાવ્યું છે. એપ શ્રી મા. દ. દેસાઇનું કહેવું છે. જના આ યાયન વધુ સરાહન માંગે છે.

પર. પ્રથમ આક તે બીજીવાર અહાર અવધાન કર્યો છે. અવધાનકારક અ:દાનામ તરીકેના ઉલ્લેખ આપણે સ્લ્સાવધાની શ્રીધુનિસંદરમસ્છિના મળે છે, જે ૧૫ મી મરીમાં જન્મા હતા. તે પહેલાંના અવધાનકારાની નીત્રા ઉપલબ્ધ થઇ નથી. ત્યાર પછી જગ્રદ્ધારુ શ્રીહીન્સ્ટ્રીયરજની શિપ્યપરંપરામાં ૧૦૮ સુધીના અવધાનકાર યુનિઓની મારી મંખ્યા ઉપલબ્ધ થાય છે. એ મંબધાની તેલિ પ્રશસ્તિએ નથા શિલાલેખા વગેરમાં પણ મળે છે. ત્યાર પછી શ્રપ્રભુવર્તમાં ઉપાધ્યાયજી શ્રીપશ્ચિત્રવજીની તેલિ વાંચવા જેલે છે.

નવાળ-ખાન જ્ઞાની ગુરુની જ્ઞાન-શક્તિથી ખુશી થયા, તેઓશ્રીની ખુદ્ધિનાં વખાણ કર્યા, અને [ગુરૂશ્રી] મહા આડંબરથી વાજતે–ગાજતે સ્વસ્થાનકે પધાર્યા (હ)

આથી જૈનશાસનની ઉન્નતિ થઈ અને તપાગ²છની શાલા ખૂબ વધી. આ પંડિત ચારાશી ગ²છના સાધુઓમાં અક્ષાલ–કાઇથી ક્ષાલ ન પામે તેવા છે; એમ સવ' લોકા કહેવા લાગ્યા. (૮)

અમદાવાદના શ્રીસ ઘ ^{પાં}શ્રીવિજયદેવસૂરિ ગચ્છનાયકને હાથ જોડી અરજ કરી કે, ^{પાં} બહુશ્રુત' શ્રી યશાવિજયજી કે જેમની ^{પાં}હાડ કાેઈ કરી શકે તેવું નથી. તેથી તેઓ ^{પાં} (પાંચપરમેષ્ઠી) ના ચાથા ^{પાં} (ઉપાધ્યાય) પદે સ્થાપન કરવા ચાગ્ય છે. ' (૯)

તપગર્મા ધારત શ્રીવિજયદેવસૂરિજીએ પાતે, એ વાત જાણીને મનમાં ધારી લીધી. ત્યાર ખાદ પહિત શ્રીયરોાવિજયજીએ સંસારના સંતાપાતું ઉચ્છેદન કરવા માટે પડા સ્થાનક

આપણુને શંકા યાય છે કે, આવા સમર્થ પુરુષ શનાવધાની શું પણ દિ—િત્ર શતાવધાનીનું દર્શત પૂરું પાઢે તેવા હતા તા અઢાર કેમ! તે માટે ટિપ્પણ નં. ૨૬ જીઓ. વળી, ઉજય પક્ષને લિંગ સમય સુધી રાકવાનું અનુકૃલ ન હાય એવી અપેક્ષાથી મર્યાદેત કરી બતાવ્યાં હાય.

- પઢ. સમય ગગ્છના સાધુઓએ તેમને નિડર પુરુષ તરીકે વર્ણું લ્યા તે યથાર્થ છે. એની પ્રતીતિ અન્ય-ગગ્છીઓએ કરેલી પ્રશંસા વગેરેથી પણ જોવા મળે છે. કારણ કે તે રે!ઇથી ગાંજ્યા જીય તેવા ન હતા. અસફમાર્ગનું ઉન્મૂલન કરવામાં તેમણે કદી પીકેલ્ડ કરી નથો.
- પ૪. ઉપાધ્યાયજીને શ્રીસંધ 'અહુશ્રત ' તરીકે બિરદાવે એ વાત પણ ખૂખ સ્વક છે. અને તેમાં કશી જ નવાઇ નથી.
- પપ. ' ઉપાધ્યાયછ' પાતાના સમયના અજોડ દર્મયાગી શ્રમણ, સત્યમાર્ગના પરંત્ર પ્રકાશક, સદા દર્તાવ્ય-પરાયણ, શાસનના અવિદ્ધ રાગી, સુદિવાદના પુરસ્દર્તા, સદાન શાસનપ્રમાવદ, જેન સિદ્ધાન્તા, આચારા અને તેની પરંપરાના જગરુક ને સમર્થ ચાકિયાત હતા, એટલું જ નહિ પણ તેમણે જેનશાસનની સેવા–રક્ષા અન પ્રચારમાં પાતાના મન, વચન અને કાયાના ત્રિવિધ યાગાને સમર્પિન કરી દીધા હતા. આવા એક મહાન વિચારક, મદાન કાન્તિકાર, અને મદાન ફિલ્સફ શ્રમણ, ઇતિ-દાસની પાછલી કેડી ઉપર નજર નાખનાં છેલ્લા સેકાએ દરમિયાન આપણને જોવા નહીં મજા. તે ત્યાર પછીથી આજ સુધીમાં પણ આવા શ્રુનવેત્તા અને શાસ્ત્રપ્રશેતા જન્મ્યા નથી.

આવા મહાજ્ઞાની, પરમ અધ્યાત્મ-યાત્રી, આવેંદ્રષ્ટાને અનંત વંદન !

- ૫૬. શ્રીઅરિકાત, સિક, આચાર્ય, ઉપાધ્યાય અને સાધુ વિશ્વમાં આ પાંચ પરમેકી પુરુષા કહેવાય છે.
- પછ. અહીં સંઘે ઉપાધ્યાયજીને ગચ્છનાયકપદે સ્થાપવા અને આચાર્યપદ આપવા વિનંતિ કેમ ન કરી ? એ પ્રશ્ન વિચારશીય છે, જેથી વધુ ડિપ્પણ ન કરતાં અત્યારે તેા તે વાત સંશાધકા ઉપર હોડું છું.
- પ૮. સ્થાનકથી ' ભીશ સ્થાનક ' નામનું એક તપ લેવાનું છે. તે ઉપવાસ વગેરે તપથી વિધિપૂર્વક કરવાનું હોય છે. એમાં જીદાં જીદાં વીશ ઉત્તમપદા-સ્થાનાનું આરાધન હે.ય છે. એ તપ ભાવ ને વિધિની શુદ્ધિપૂર્વક કરવામાં આવે તો તેથી તીર્ધ કરપદ જેવી મહાન પદવી મેળવી શકાય છે એમ જેન- ધર્મમાં કહેલું છે. ખુદ તીર્ધ કરના આત્માઓ પાતાના ત્રીજ પૂર્વજન્મમાં આ તપની કે તેના કાઈ

(વીશ સ્થાનક નામનું) તપ વિધિ–પૂર્વક આદશું. માશની સાધનાના ધ્યેયથી શુદ્ધ માર્ગથી ^{પદ}ર્ભીલયેલા આ સુનિશ્રી સંચમની નિર્મળવામાં ચઢચા હતા. તે વખતે ^દેજપ સામ આદિ પંડિત–મંડલી તેમનાં નિર્મળ ચરણેની સેવા કરતી હતી. (૧૦–૧૧)

વિધિયુર્વ ક વીશ સ્થાનકનું તપ આગુષ્યા પછી તેના પ્રત્યક્ષ ક્લરૂપે તેમને ^{દા}વાચક—દમાધ્યાયની પદવી ^{દર}ગ્રંવત ૧૭૧૮, માં (ગચ્છપતિ) ^{દર}શ્રંવિજયપ્રસસ્રિશએ આપી. (૧૨)

અમ વાચક-કપાધ્યાય શ્રીયશોવિજય જગતમાં જયવંતા યશનામી થયા. તેએ ખરે-ખર ખૃદસ્પતિના અવતાર સમા હતા. શ્રીકોતિવિજયજી કહે છે કે આ સુજસવેલીને સાંબળતાં હંમેશાં જય જયકાર થાય છે. (૧૩)

[હાળ : ચોર્યા]

કતાં શ્રીકિતિવિજયજી કહે છે કે દું શ્રીયગ્રેષિજય વાચકના ગુલના વિસ્તારાને પામી ગુકું તેમ નર્યા. તેમના ઉપકારા ગંગા–જલનાં બિન્દુએા કરતાં પણ અધિક છે. જેમ ૧૧૨ ઉપનિષદા વેદના એક બાગરૂપ છે, તેમ શ્રીયગ્રેષ્વિજયજીતી નય–નિગમથી અગમ્ય

પ્રકારેની ઉત્દૃષ્ટ ક્રોડિએ આરાધના અવસ્થ કરે છે જ, તે ત્યારે જ તે પરંતે ધાવ્ય થાય છે. આજેય સેંક્ટો પુરુષાત્પાએ તે તપતું આરાધન કરી ત્રિલ તે ક્ષ્યોપોની વાસનાંતા ક્ષય કરી આત્યાને પક્તિ બનાવી રહા છે.

- પદ. દેપાંધ્યાયછની માેણસાધના અને જિતેધારેશકશિત શુદ્ધ માર્ગ હેપર વ્યાત્માના અપ્યુએ અપ્યુએ વ્યાપેલી રંગ તે શ્રદ્ધ કેવી દ્વી ! તે બાટે ઘણાં પાનાં દાકતાં પહે. જિત્રાસ વધુ નદી તો તેમની મુજંગ્યુનિઓ દેપરથી પણ તેનું માપ કાઢી શકે તેમ છે. અદી કોંગ્રેએ ટ્રેંકા શબ્દોમાં તેમના આંતર જીવનને પણ લખ્ય રીતે શકાશિત કર્યું છે.
- દેવ. જયસાય એ તપજચ્છની પદ,મી શાંઢ શપેલા શાંઆનંદવિષ્ણય્િક્ષ્મા શાંસોપ્રવિષ્ણ ઉપાધ્યાય તેમના પાંદક શીનુપંસાય તેમના શક્ત્રાય અને તેમના શિષ્ય જપસાય પંતિ દના તે તપજચ્છના દના તેમને શ્રે. ૧૯૦૭માં ભારપાયનાની સન્ત્રાય વર્ષેર કૃત્તિએ રૂચી છે. તે સિવાય અન્ય સાધુઓ વર્ષેર ઉપાધ્યાયજના સદ્યમાં દના. અને વિલ્ શ્રે. ૧૯૧૦માં ગૃજનાન પારજુમાં શાંનયચંક જેવા મદાન શ્રત્યને વ્યવસ્થિત કરી ઉપાધ્યાયજએ યુનર્સ ખન કરાવ્યું ત્યારે છ સદાપદા પૈકીના તે દના તે વાત તે શ્રત્યના અન્તર્મા તેઓશીએ ૧૦ જણાવી છે.
- કર, પંચપરમેપ્ટીના ત્રીજ પદે વર્તતા આચાર્ષશ્રીના જેઓ મંત્રી કે યુવરાજ તરીકે એાળખાવાય છે. લણ્કું તે લખાવકું એ જ જેતું કર્તવ્ય છે, જે અંગાપાંતરણ આવમાના નાતા દેશય છે, તેને ઉપા-ધ્યાય કરેવાય છે.
- કર. દીધા ક્ષેત્રા ખાદ ૨૯ વર્ષના દીધાપથીય થયા (વય શરમણ ૪૦ ની આમપાસ ૬૪) ત્યારે વેયને પણીપ્રદાન થયું.
- કર. શ્રીવેગવપ્રમત્રફેઝ દિપ્યુણી નં. ૨ પ્રમાસે શીવિગનદેવસરિઝના પ્રકૃષ્ય વ્યાચાર્યો. વ્યાચાર્યપદ સં. ૧૭૧૦ સંધારમાં અને વચ્છપનિષદ સં. ૧૭૧૧ અષ્ટદાવાદમાં ને સ્વર્મવાસ સં. ૧૭૪૯ ઉનામાં ને લેએનું જન્ય રુધાન કચ્છ પ્રતાહરપુર દુનું.

અને ગંભીર સ્યાદ્વાંદ-વચન-સિદ્ધાન્તાની રચના એ આગમ (૪૫)ના જે એક કે વિભાગ-રૂપે છે. અને તે અતિ કહિન છે. આના લાભ કાઈ ધીર પુરુષ જ ઉઠાવી શકે તેમ છે. (૧–૨)

જેમની ^{કપ}શાસ્ત્ર-રચનારૂપી ચંદ્રિકા શીતલ, ^{કંક}પરમ-આનં દને આપનારી, પવિત્ર, વિમળ-સ્વરૂપ અને સાચી છે, અને તેથી ^{કપ}રસિકજના તેનું હોંશે હોંશે સેવન-પાન કરે છે. (3)

વળી, કવિએ તેમની કૃતિઓને કહિન કહી છે તે ખાટું નથી. તેમની નય-ત્યાયને પ્રમાણાદિની શૈલીથી ભરપૂર સંરકૃત-પ્રાકૃત કૃતિઓ પ્રાદ્ય અને પ્રતિભાશાળી મિતમાન પુરુષોથી શ્રાદ્ય થાય તેવી ગહન અને તાત્ત્વિક વિચારાથી ભરપૂર છે. તેની કાહિત્યતાના અનુભવ આજના નિદ્દાનોને પણુ થાય જ છે. વળી, એમની વાધ્યું કાઈ નયથી અધૂરી નથી અર્થાત્ સમય નયા-દિષ્ટિમિન્દુઓથી વ્યાપક છે. એ વાત પાતે જ શ્રીવિનયવિજયજીએ અધૂરા પ્રકેશા શ્રીપાળરાસને પૂર્ણ કરતાં એક ઢાળને અન્તે લખે છે કે—' વાધ્યું વાચક જસતધ્યું, કાઈ નયે' ન અધૂરી રે.'

- ં ૬૫. તેમની શાસ્ત્રરચના અને અન્યં કૃતિઓતું શું મહત્ત્વ છે. એના પર તાે એક એક મહાનિર્ભંધ લખી શકાય તેમ છે. એક એક નિર્ભંધ પીએચ. ડી. ની ગરજ સારે તેવા બને. પણુ એમના કવન હપર સ્વતંત્ર જીવનચરિત્ર લખાય ત્યારે જ છૂટથી લખી શકાય.
 - કુક. તેમના સ્વર્ગગમન ભાદ ૨૫૦ વરસથી ભાલથી વૃદ્ધપર્ય તે, નિરક્ષરથી સાક્ષર પર્ય તે, આત્માથી ગૃહસ્ય અને સાધુ સહુના ઉપર તેમના અસાધારખું ઉપકાર છે. આત્માને પરમાનંદ આપનારી તેમની શીતલ કૃતિઓએ જ જેનસંધમાં ધર્મ શ્રદ્ધાનાં મૂળ ઊંડા નાખ્યાં છે. ને દૃકપણે ટકાવી રાખ્યાં છે. કૃતિઓમાં આધુનિક માનવીના અંતરમાંથી ઊઠતા સદિહાનું નિરાકરખું કરવાની સધળી સામપ્રીએ ગ્રાહ્વાયેલી છે. તેમની કૃતિઓના અભ્યાસ કરનારના અંતઃકરખુમાં શ્રીજિનશાસન અને તેની પવિત્રન્તમ સધળી મર્યાદાઓ પ્રત્યે અવિવ્યળ શ્રદ્ધા પેદા થાય છે. દરેકને પેતાના ક્ષ્યાપશમ પ્રમાણે તેમાંથી પૃતિત્રધર્મની પ્રેરખાઓ મળે છે, તેથી તેમની કૃતિઓના વધુ પ્રચાર—અધ્યયન-અધ્યાપન વધે એ માટે એક સંગીન અને સિક્ય પ્રયત્ન થાય એ ખુદિવાદના જમાનામાં અતિ ઉપયાગી છે. આપણી બાવિ પ્રજાને અધર્મના માર્ગ જતી બચાવી લેવા, અને ધર્મમાર્ગમાં રિયર કરવા માટેના અચૂક ઉપાય છે. જડવાદના ઝેરતા નાશ કરનારું રામભાભુ ઔષધ છે. આજે પણ તેમની 'ચરાવાણી' અમર છે. અને લવબીરુ આત્માઓ તેના આલંભનથી ભારે કૃદયાખુ સાધી રહ્યા છે. અન્ય ગચ્છ અને પક્ષવાળાઓ પણ તેમની વાણીનું વ્યાખ્યાના, પ્રવયના ને પુરતકા દારા ભારે સલકાર, સમ્માન તે પૂજન કરી રહ્યા છે. એ વાણી આજે પણ હોશે હોશે સર્વત્ર ત્રવાિ રહ્યા છે.

કેપ્ટ. ઉપાધ્યાયછ નય–પ્રમાણ, નિક્ષેપ–સપ્તલંગી આદિ સિદ્ધાન્તોની ગહનતા ને આમૂલચૂલ ખૂબીઓનું આંક'ઠ પાન કરી ગયા હતા એમ એમની કૃતિઓ જોનારને લાગે છે અને તેથી જ સહસા 'પ્રવચનના લધુ અવતાર' જેવા હાય તેવા ભાસ ખડા કરે છે. (માટે જ તેમને ઝૂતકવગી તરીકે બિરદાવ્યા છે તે બરાબર ઘટે છે) આજે પણ તેમનું વચન ટ'કશાલી ગણાય છે ને ' ઉપાધ્યાયછની સાખ એટલે આગમસાખ ' એવી પ્રસિદ્ધિ પણ વર્તે' છે.

૬૭. એમની કૃતિએ એવી રસપૂર્ણ છે.કે લાગુનારને ખૂત્ર જ રસાદ્લાદ ઉત્પન્ન કરે. ∙

*૯્ટ્રીલિરિસરસ્રિતાં આ લઘુ આંધવ એટલે કળિયુંગમાં ' બીજા હરિસદ્ર ' ઘચા આ પ્રમાણે મેં સ્તવેલા તેમના પ્રગટ અને ચયાર્થ શુદ્ધાને સાંલળીને કાઈ પછુ કવિએ! કે પડિતા રાષ કરશા નહિ. (૪)

^{દદ}્માવત ૧૭૪૩ માં આ પાંકક-ઉપાધ્યાય ^હેલાઇ નગરમાં ગામાસું રહ્યા હતા.

- કૃડ. શ્રીનુસ્કિટ્સફિક્ડ નામના આચાર્ય ભારતા (મર્તાતરે ચીક્સા) વર્ષ ઉપર થયા, જેમણે ૧૪૪૪ શ્રન્યા સ્વા હતા. તેઓ એક મહા કુર્લ્યર વિકાન હતા. તેમની કૃતિઓની રચના, શેલી, તે તહસ્ય પ્રતિપાદનશંકનથી આજેય જેતેતો પસુ તેમના પ્રત્યે પસુષાત ધરાવે છે. તેઓ પડ્રદર્શનના મહાન અમ્યાસી, અધ્યાસ અને જેન્યરેપતા આગ્ર પ્રત્રકનો, તે અસ્તિત દિષ્ટિએ તલસ્પશંતે બાખ્યાના હતા. તેઓથી વિરસ્તિ સાઅવાતાંસસુન્યય, પાત્રવિદિસ, પાડ્રક શ્રન્યો ઉપર ઉપાધ્વાયક્રએ પ્રવકારના આશ્રયને વિશા અને સ્પષ્ટ કરતી રંબીર પીમાંસા (ડીકા) કરી છે. અધ્યાસ અને યોત્રનાં પ્રાચીન ગૃર તત્ત્વોને પુકર્સા કરી દીધાં છે, આતો અર્થ એ કે ન્યાય, યેણ તે અધ્યાસ માર્ગ ઉપર એક દત્તર વર્ષ ઉપર એ ખેડાવુ થયું, તેના વધુ ખેડાવૃતા સાંક્રયી પ્રયત્ન કરવાનું સ્દરાત્ય ઉપાધ્યત્ર એ સાંપર્શ તેથી તેમને બીજ દરિષ્ઠ તરીક ઓળખાવ્યા છે.
- ્કલ્ વિ. શં. ૧૬૮૮ માં દેક્ષા અને ૧૭૪૩ માં સ્તર્યવાસ એટલે દેક્ષા-પર્યાલ પણ, વર્ષના થયો. દેક્ષા વખતી વલ તો આદ વર્ષની માન્ય રાખીએ તો તેમની વલ કાળલમં-સ્તર્યત્રમન વખતે કર, વર્ષની ઘવા આ તોનાં આ શ્કરેમના આધારે તેઓ લડુ શંધુ છતન છત્યા પાન્યા નઘી એમ કરી શક્ય. (અન્ય પુરાવાના આધારેથી તેઓ શીનું આકૃષ્ય ૯૦ વર્ષથી અધિક થયા તત્ર છે. એ અર્થ અન્ય પ્રસરે) તેઓ છીએ જે લગ્નીરય કાર્યો કર્યો ને આદૃષ્યની પ્રસેક પત્રને સફળ કરવા જે છતન સાલતાઓ કરી, એ અર્ધુન આશ્રલે ઉપલ્તને તેની છે. ત્રાન અને તપના પ્રંથા-જયના જેવા વિશ્વ સુપોલે વિશ્વને ઉગ્નદા સિદ્યન્તો અને ઉગ્નદ વિચારાની એ મદાન એટ આપી, તે માટે વિશ્વના દરકાઇ શુણા પાનરી તેમને નનમસ્તક વંદન કર્યા વિના નહીં રહે છવન અને સાહિત્યના નિર્મળ અને પુનિત એ વારસાને આપણા અપ્રદ્યાન હંસ છે!

બીઇ વાત એ કે નયારે 'મુજસરેલી' પ્રાપ્ત થઈ ન હતી ત્યારે તેમની પાદુકાના લેખ અને તેમની સુરતની એક સ્ટ્રાર્ટર કૃતિની પ્રશ્નિત ઉપત્યી તેમની કાળધર્મની સાલ ૧૦૪૫ (તિથે માનદર સ્ટિકિક) રણાતી હતી, પણ જો સુરતરેશીના ક્યનને માન્ય રાખીએ તે પ્રસ્તુત પ્રવાદ ખોટા કરે છે. તે ૧૦૪૩ ની સાથ એ શત્ય હતે છે. એ અપ્ર વિદેશ થયાં કરવાનું આ સ્થાન નથી.

દેશોશીની લન્મસાર અને નિધિ લન્ને માનાં નથી, ત્યાર લાદ દોદમા અને ઉપાધ્યાવપતની ફાત સાથ મારે છે પણ એક્સની નિધિ માની નથી, સ્તર્યારે હજુ ૧૦૪૩માં લ શર્યું કે ૧૭૪૪માં એ પણ ૧૪૮ થતું નથી, ચામાસામાં કાળધમં કર્યો હેલ તો ૧૦૪૩ ને ૧થાન અપાય. આ રીતે તેઓશીની એક્સ નિધિ માની નથી એ આપણું મહદ્દ દુર્માં એ અને એથી એમના 'ઝુણાત્રાદ નિન' કરેલ ફાલ્સ કરવેલ એ પ્રજ અલ્ફાલ શરાકતો રહ્યો છે. જીનસાથે કાઈ પણ એક લિસ નક્ષી કરવાની માસ લગ્ફ કે.

हेक्ष्यंक पंचाया करेत्मां इपान्यायक्षयी अन्यन्तिय हे अवस्थिती निधि तहीह मायसर सुदि ११ ६% सुदी वाने हे. ते न्ह्र बहेबी तह सुदारी देनों कोंग्रेके અને તે ગામમાં તેઓશ્રી ^{હર}અનશનતપ કરી, પાપાને ધાઈ, સુર-પદવીને અનુસર્યા— અર્થાત્ ^{હર}સ્વર્ગવાસી થયા. (પ)

૭. ડેમાઈ વડાદરા (ગૂજરાત)થી દક્ષિણ-પૂર્વના રેલ્વે રસ્તે ૧૯ માઇલ દૂર આવેલું શહેર છે. તેની વસ્તી અત્યારે ૩૦ હજારની છે. તેનું પ્રાચીન (સંરક્ત) નામ દર્ભાવતી છે. ભૂતકાળમાં લાટ ટ્રેશની આ નગરી ગણાતી હતી છે. ન્યાયનિષ્ણાત વાદી શ્રીદેવમુરિજીના ગુરુ શ્રીમુનિચંદ્રમરિજીના જન્મ આ નગરમાં થયેલા. ત્યાં મંત્રીશ્વર પેયાકશાહ અને તેજપાલે વિજ્ઞાળ જિનમ દિરા ખંધાવેલાં. મંત્રેશ્વર તેજપાલે આ મહાન નગરીને દક્ષિજી સરહદનું સંરક્ષક થાર્જી બનાવતાં આક્રમણકારે થી સરક્ષિત રાખવા ત્યાં મજંખત કિલ્લા બંધાવ્યા હતા અને એ કિલ્લાના દરવાજનું ભવ્ય ને ક્લાત્મક સ્થાપત્ય ગુજરાતના ઇતિહાસપ્રસિદ્ધ ગણાતા અગત્યના સ્થાપત્યામાંનું એક ગણાય છે. એને જોવા માટે દર વર્ષે સેંકડા પ્રવાસીઓ આવે છે. એમાં હીરા ભાગાળનું સ્થાપત્ય વધુ મહત્ત્વનું છે. આ કિલ્લા પાછળ ા ઇતિહાસપ્રસિદ્ધ હીરા કહિયાના રામાંયક ને રસિક ઇતિહાસ રહેલા છે. આ દિલો કારો ખધાવ્યા તે બાબતમાં એવા એક પ્રધાય ચાલે છે કે ગૂર્જરેશ્વર સિલ્ટાજ જયસિંહે વ્યંધાત્ર્યા પરંતુ તે ભાખતમાં કોઈ ઐતિહાસિક પુરાવા જેવા મળ્યા નથી. તેમ જ જાણવામાં પણ આવ્યા નથી. પસ મંત્રીશ્વર તેજપાલે આ કિલો ખંધાવ્યા એ વાત શીજિનદર્ષરચિત 'શીવસ્તપાલચરિત્ર 'માં અતિ રપષ્ટ રીતે કહી છે. અને ત્યાં પ્રસ્તુત હિંદી તદ્દન નવા જ ખનાવ્યાનું સ્થવ્યું છે. સં. ૧૨૮૮ના ગિરનાર પરના વસ્તપાલ–તેજપાલ મંત્રીના શિલાલેખના ઉઠ્ઠેખથી જણાય છે કે દર્ભાવતી તે વખતનું ગુજરાતના પ્રધાન શહેરામાંનું એક હતું. આજે તેા સાપ ગયા ને લીસાટા રહ્યા જેવું છે. ડબે.ઇમાં ૧૭૦ દેરીવાળું મૂલનાયક પાર્થ પ્રભુનું જિનમંદિર તેજપાલે વધારયું. તેજપાલનાં જ માતશીએ વૈદ્યનાથના મેં દિરની મરામત કરાવીને તેમણે પણ એક જૈનમેં દિર ળંધાવ્યું અને પૂર્વ તથા હત્તરના દરવાજે શિલાત્કીર્કા પ્રશસ્તિએ લખાવેલી: તેમ છતાં અર્ધ પદ્માસને ખિરાજમાન તીર્ધ સ્વરૂપ ભવ્ય શ્રીલાદાયાર્થનાથની મૂર્તિ અને તાર્કિકશિરામણિ મહાન ન્યોતિર્ધર ન્યાયાયાર્થ ન્યાયવિજ્ઞારદ ઉપાધ્યાય શ્રીયશાવિજયજી મહારાજની સ્વર્મવાસ બ્રમિથી ડેબે.ઇ ખડભાગી બન્યું છે.

. એમના સમાધિરથળે જ્લમંદિર પાત્રાપુરીનું નાજીક મંદિર તેમજ શાસનપ્રભાવક આચાર્ય શ્રીવિજયમાહનસ્ર્રીશ્વરજી મહારાજનું ભવ્ય ગુરુમંદિર રહેલું છે ને તેની પ્રતિક્ષ પરમપૂન્ય આચાર્ય શ્રીવિજયપ્રતાપસ્રિજી મ. ની અધ્યક્ષતામાં થયેલી છે. વળા, ત્યાં યુગાદિપાદુકાની ભવ્ય દેરી પછુ રહેલી છે. તપગ²જીધિપતિ શ્રીવિજયપ્રભસ્રિજી મ. ને તેમના જ શિષ્ય–પ્રશિષ્યાની તથા અન્ય પાદુકાઓ પણ ત્યાં રથાપિત થયેલી છે.

ડબાઇમાં જૈતાનાં ૩૦૦ ધરા, ક મંદિરા, ૪ ઉપાશ્રયા, ર લબ્ય ગ્રાનમંદિરા તે પાઠશાળા છે. આ સમય રથાના જૈન વસતિ વચ્ચે છે. જૈતાની તમામ વસતિ એક જ ભાગમાં વસેલી છે. આ નગરની પ્રથમથી જ આ એક વિશેષતા છે. અન્ય અતિએ પણ પાતે પાતાના નિશ્ચિત વિસ્તારામાં જ વસેલી છે. ડબાઇની એતિહાસિક ને પુષ્પશ્ચિમાંથી દીક્ષિત થયેલા અનેક આત્માએ આજે સાધુજીવન ગાળા રહ્યા છે. વળા, ગુજરાતના જાણીતા કવિ શ્રીદ્યારામ પણ આજ શહેરના હતા. આ છે માત્ર ડબાઇનું ઊડતું અવસાકન

૭૧. અનશન એટલે અન, જળના ત્યાંગરૂપ તપ.

હર. ૧૭૪૩ માં ઉપાધ્યાયછ ચામાસુ રહ્યા પશુ કાળધર્મ ચામાસામાં પામ્યા કે ચાતુર્માસ માદ તે માટે કર્તાએ મૌન સેલ્યું છે.

_____ (અગ્નિ-સંકકારના ક્થળે) તેમના તેએમય ^{હ3}સમાધિકતુપ વર્ત છે અને તેની પડેએ જ ^{હ8} શીત નામની તલાવડી છે. તે સ્તૂપમાંથી ^{હપ} ન્યાયની ધ્વનિ[?] નિજ– સ્વર્ગવાસના દિવસે પ્રગટ રીતે પ્રકેટે છે. (૬)

(કર્તા પાતાના લક્તિલાવ વ્યક્ત કરતાં છેવટે કહે છે કે-) આ શુરુદેવ સંવેગી— શ્રમણાના શિરામણિ, ગ્રાનરૂપી રતનના સાગર, અને અન્યમતરૂપી અધકારના નાશ કર-વામાં બાલ સૂર્ય જેવા છે. (૭)

શ્રીગુજરાત-પાટલુના શ્રીસ ઘના અતિ આશ્રહથી સુજસ (શ્રીયશાવિજયછ)ના સુવિશેષ ગુણા વઢ કરીને શામતી આ સુજસવેલી લખી–રચી છે. (૮)

. (કર્તા) શ્રીકાંતિવિજય કહે છે કે ઉત્તમ પુરુષાના ઉત્તમ શુશ્રોને પ્રગટ કરતાં મેં મારી છ્રમને પવિત્ર કરી છે, આ યશ-વેલડીને સાંભળતાં સાંભળનારના દિવસા ધન્ય થાય છે. (૯)

इति श्रीमन्महोपाच्यायश्रीयशोविजयगणि-परिचये द्यजसवेछि-

नामा *भासः संपूर्णः (३-४)
[श्री शांतिसांभश्छना कथारना भति]
अर्थिकार अने हिप्पणुक्तरः—
सुनि यशाविकय

७३, रत्प એट दे तेमना व्यक्तिहास स्थणे व्यथवा व्यासपासभी तेमनी याह तरी है इरवामी व्यावर्तुं स्मारह. दासमा पण अपाया व्यावर्तुं स्मारह. दासमा पण अपाया व्यावर्ति पाइडाने रत्प विद्यमान छ ने तेमां तेमाश्रीनी पवित्र पाइडा स्थापित हरवामां व्यावर्ति छे. तेना पर ओह दीप पण है।तरेशे छे.
' चंवत् १०४५ वर्षे ॥ या ॥ १६११, प्रवर्त्तमाने मार्गश्रीपमासे शुक्रपदे एदादशे तिथा ॥ छ ॥ श्रीश्रीहीरविजयसूरीश्वर ॥ यं ॥ श्रीकत्त्वाणविजय ग । श्रीवर्त्तावजय ग । श्रीवर्त्तावजय ग । श्रीवर्त्तावजय ग । श्रीवर्त्तावजय ग । स्वीर्य । पं ॥ श्रीजयविजय ग । स्वीर्य । पं ॥ श्रीवर्त्तावजय ग । स्वीर्य । पं ॥ श्रीवर्त्तावजय ग । स्वीर्य । तस्वर्णसेवक...विजयगणिना श्रीराजनगरे ॥ १

હું એ સ્તૂપથી ૨૦૦ ડગલાં દૂર આજ્ય 'શીતતલાઈ' નામનું તળાવ વિદ્યમાન છે ને ત્યાંના લોકા તેને 'શ્રીતલાઇ' કહે છે.

૭૫. 'ન્યાયના ધ્વનિ'ના ઉલ્લેખથી કર્તા એમ કહેવા માત્રે છે કે તેમના સ્વર્ગવાસના દિવસે સ્તૂપમાંથી કોઈ 'નાદ–ધ્વનિ ' પ્રગટ થાય છે. તે શું છે તે શાધવાનું–જાણવાનું રહે છે.

^{*} કર્તાએ પાતાના કાવ્યમાં સુજસવેલીના 'ભાસ' તરીકે કરાા જ ઉલ્લેખ નથી કર્યો.

.[નોંધ:-અહીં ઉપાધ્યાયજની મે અપ્રસિદ્ધ કૃતિમા હસ્તપ્રતિમાં જેમ હતી તેમ જ આપવામાં આવી છે.]

આધ્યાત્મિક પદ

[અંતરના અનુભવ ઉદ્ગાર]

(8)

હેમ બઈ ઠે અપને ગ્યાનમઈ; વાગવાદ કરત હઉ કાહે, બ્રહ્મ ન આવઈ વયાનમઈ. હેમ૦ ૧ શુદ્ધ દ્રવ શુન પર્યંથ ચીન્હેઈ; રહે તાહિકે ધ્યાનમઈ; રાચે માચે પ્રવચન રસમઈ, લીને અનુભવ પાનમઈ. હેમ૦ ૨ અગરત લરત બહુત નિજ મતમઈ, તે કેશ ન ધરઈ કાંનમઈ; આપહીમઈ અપની ઋદ્ધિ પ્રગદી, કહા એારકે તાનમઈ. હેમ૦ ૩ પઢ પઢકેઈ રિઝાવત પરકું, કેષ્ટ 'અષ્ટ અવધાનમઈ; આપકું આપ રિઝાવત નાહી, લેદ ન જાન અજાનમઈ. હેમ૦ ૪ ધારન ધ્યાન સમાધિ એકરસ, સંયમ ન રહેઈ ગ્યાનમઈ; વાચક જશ કહેઈ માહ મહાલટ, જીતિ લીએા મયદાનમઈ. હેમ૦ પ

ાા કૃતિ શ્રી ગીત' ાા

સંવત ૧૭૪૮ વર્ષે વ્યાશુ શુદ્ધિ ૧૩ દિને પ'. ધનછ લખીત' હવ્યદપુર મધ્યે લપીત' ॥ કલ્યાજુમસ્તુ ા શુભ' ભવતુ ા શ્રી ભગવ'તછ સત ॥

૧.- 'સુજસવેલીભાસ'માં આપેલી સાલાની પ્રામાણિકના માટે અન્ય ઉલ્લેખોએ ન્ફાેટા વિસંવાદ ઊંગા કર્યો છે, અને તેથી તે મહિની બીજી હકીકતા પ્રામાણિક દરો કે કેમ ! એવી શંકા સહેજે થઈ આવે છે. પરંતુ ઉપરના મહત્ત્વના ઉલ્લેખ ખૂબ જ માર્મિક છે અને સુજસવેલીમાં જણાવેલી અપ્રઅવધાનની વાનને મજબૂત ટેકા આપે છે. તા શું સુજસવેલીમાંની સાલા, સુજસવેલીની સમય દકીકતને અપ્રામાણિક દરાવવા કાઇએ ફેરવી હશે ખરી!

શ્રીગાેડીપાર્ધ્વનાથ સ્તવન

(٤)

હિતકારી તે હિતકારી, ગાેહીપાત્ર પરમ ઉપગારી રે, તાેરી મૃરતિ માહનગારી રે, તે તાે લાગઈ મુઝનઈ પ્યારી રે	ા ૧ ા
વાહેઇ છમ ચંદ ચકારા રે, ઇમ વંછઇ ધનનર્ધ મારા રે, ઇમ વાદહી ગજનર્ધ રેવા રે, તીમ વ્હાલ્હી મુત્ર તુત્ર સેવા રે	ા રા
એ સાહિષ્ય ચતુર સનેહી રે, તેહેસ્યૂં વાત અગાચર કૈહી રે, સગુણાસ્યૂં તિલ્લિ પરિ મિલિઈ રે, છમ સાકર કૂર્ષિ લલિઈ રે	lt s tt
એ તુત્ર ગુણ મઇ ચિતિ ધારિયા રે, તે તેા નઈ નિવ વીમારિયા રે, સ્ક્રેલ્ઇ પિલુ સાંભરિવાઈ રે, પરના ગુણ ચિતિ ન સુક્રાવઈ રે	แรแ
મક-માતૃ-મનાલવ દિલયા રે, પર ગ્રુર તાે ગ્રવલા ગલિયા રે, તેલના ગ્રુષ્ટુ જે મુખિ ભાખેઈ રે, તે તાે દિહરાગ નિજ દાખઈ રે	пчп
બિલું માંહિ ઇક અધિકાઈ રે, પરખ તાં સુત્ર મનિ લાઈ રે; તુત્ર વચનઈ સવલું સાસું રે, પર વચનઈ સવલું કાર્યું રે	u \$ u
લાણે તિમ જગત લાણે રે, મુઝ મનિ તો ત્ર મુહાણે રે, સરવંગી નયની વાણી રે, ત્રુઝ વિષ્ણુ અવસ્ક નિવ લાણી રે	11 9 11
આજ અમિય ઘનાઘન વૃકા રે, સમકિતદર્શ સુર તૃદા રે, નિજ કરિ ચિંતામિશ્રુ આયા રે, જે મઈ તુત્ર દરશન પાયા રે	u < 11
સાહિષ તુત્ર અરજ કરીજઈ રે, સેવક શપરિ હિત દીજઈ રે, વાચક જરા કહેઈ અવિધારા રે, ભવસાયર પાર શતારા ર	u

ા દિન શ્રીગાડીપાર્ચનાથ સ્તવન સંપૂર્ણ ા સમાસ ા શ્રી ા

શ્રીયશાવિજયાપાધ્યાય અને તેમણે લખેલી હાથપાથી *न य च क्र

[લે. પૂ. સુનિવર શ્રી પુણ્યવિજયજ મ.]

જૈન શ્રીસંધ પાસે આજે જે ગ્રાન સંપ્રદ્ધા અને તેમાં જે વિશાળ પ્રાંથરાશિ વિદ્યમાન છે તે આજે એના વિશિષ્ટ ગૌરવની વસ્તુ છે. અને બલબલાને પણ આશ્વર્ષ ઉત્પન્ન કરે તેવા અને તેટલા વિશાળ છે. હુળરાની સંખ્યામાં વિનાશના સુખમાં જવા છતાં ય આજે જૈન સુનિવરા અને જૈન ગૃહસ્થ શ્રીસંધાની નિશ્રામાં જે ગ્રંથ સંગ્રહા છે તેની ડરતાં ડરતાં પણ સંખ્યા કલ્પવામાં આવે તા તે પણ લગભગ પંદરથી વીસ લાખ જેટલી છે. આ બધા ત્રાન ભંડારામાં માત્ર જેન મંથા જ છે તેમ નથી પણ તેમાં ભારતીય જૈન–જૈનેતર વિધવિધ પ્રકારના સમય સાહિત્યના સંગ્રહ છે. ક્રાઈ એવી સાહિત્યની દિશા ભાગ્યે જ દરી જેને લગતા પ્રાંથા આ સંત્રહોમાં ન દ્વાય આ સંત્રહોની મહત્તા જ એ છે કે તે માત્ર સાંપ્રદાયિક પ્રાંથાની સીમામાં જ વિરમી જતી નથી. પણ તેમાં વૈવિધ્યપૂર્ણ ભારતીય વિશાળ સાહિત્ય રાશિ છે. જૈનેતર સંપ્રદાયના એવા સેંકડા ગ્રંથા આ સંગ્રહામાંથી મળી આવ્યા છે. જેની પ્રાપ્તિ તે તે સંપ્રદાયના સંગ્રહામાંથી પણ નથી થઈ. હજા તા ખધા જૈન ગ્રાનસંત્રહાનું સંપૂર્ણ પણે અવલાકન થયું જ નથી, તે છતાં તેની વિવિધતા અને વિશાળતા વિદ્વન્નગતને દંગ કરી દે તેવી પુરવાર થઈ છે, પરંતુ નયારે આ સમય ગ્રાનભંકારાનું અવસાકન વ્યવસ્થિત રીતે કરવામાં આવશે ત્યારે તેમાંથી એવા સાહિત્યરાશિ પ્રાપ્ત થશે કે જગત મુગ્ધ બની જશે, એવી આ નક્કર વાત છે. જૈન મુનિવરા અને જૈન શ્રીમંધાની આજે એ અનિવાર્ય કરજ છે કે પાત-પાતાના અધીનમાં રહેલા તાનભંડારાનું સમગ્રભાવે સક્ષ્મ અવલાકન કરે. આટલ પ્રાસંગિક જણાવ્યા પછી આજે પ્રસ્તુત રમારક પ્રથમાં नयचक પ્રથમા આદિ અંતના પાનાંએનું જે પ્રતિમિંમચિત્ર આપવામાં આવ્યું છે તેના પરિચય અહીં કરાવવામાં આવે છે.

त्तयचकप्रन्य જેને द्वादशांरनयचकनः નામથી પણ એાળખવામાં આવે છે. એ મ્ઇમ્રંથ આચાર્ય શ્રીમલ્લવાદિ વિરચિત છે. જેનદાર્શનિક આચાર્યો અને જેન પ્રભ આ આચાર્યને "વાદી" તરીકે એાળખે છે. આચાર્ય શ્રી હિમચંદ્રે સિલ્લેમ વ્યાકરણમાં उत्कृष्टोऽनूपेन સૂત્રમાં ભન્ન महनादिनं तार्किकाः, तस्मादन्ये होनाः એમ મલ્લવાદી આચાર્ય માટે જણાવ્યું છે.

જૈનદાર્શનિક ક્ષેત્રમાં સન્મતિનર્ક અને નયચક એ મે ગ્રંથનું સ્થાન લઇ ગૌરવવંતુ છે. આ બન્ને ય ગ્રંથાનું સંશાધન અને સંપાદન એ પં. શ્રીસુખલાલજીના જીવનનું મુખ્યપ્યેય હતું. પરંતુ સન્મનિતર્ક ગ્રંથનું સંશાધન અને સંપાદન પં. શ્રી ભેચરદાસ દાસીના સહકારથી કર્યા પછી નયચક્રેગ્રંથના સંશાધન અને સંપાદનની વાત કેટલાક સંયોગાને લીધે ત્યાં જ વિરયી ગર્ક ત્યાર પછી એ ગ્રંથનું સંશાધન અને પ્રકાશન ગાયક્વાડ ઓરિએન્ટલ સિરિઝ વતી પૂન્યપાદ શ્રીઅમરવિજયજી મહારાજના વિદ્યાનશ્ચિષ્ય કવિ શ્રાચતુરવિજ્જોએ હાથમાં લીધું. તેના પ્રથમ ભાગ બહાર પાડે તે પહેલાં આ આખા ગ્રંથનું સંશાધન અને સંપાદન સ્વકૃત અવચૃરિ સાથે પૂન્ય આચાર્ય મહારાજ શ્રી વિજય લિખ્ધસરિજીએ સ્વનંત્ર રીતે કરવા મહિયું. પરંતુ નયારથી

[•] શ્રીમહાવીર વિદ્યાલયના આ. શ્રી. વિજયવલ્લભસ્ટિ સ્મારકઅંકમાંથી ઉદ્ધૃત.

ત્યચર્શ્યા તેની જ હતી, પ્રત્યેત્રે પ્રત્યું હતું ત્યારથી એ શ્રંચતું રિસ્ટિટ નેશિલન અને દંપાલન થાય એ વાત માલ હદયમાં તેની જ હતી, પ્રત્યેત્રે પ્રત્યેત્રે એ સિંધ વિચાર પણ કરવામાં આવતા જ હતા, પરંતુ તેમાં મૂલી એ શ્રંચના નિસ્ટિટ નેશિલને લગતા લાગ સમગ્રવણે ઝીલનાર વિકાન કે વિકાનો ન મળવા ત્યાં મૂલી હું કશું કરી શક્યો નહિ. તેમ છતાં પં. શ્રી સુખલાલછના કહેવાથી મને મુનિવર શીજ ભૂચિત્રમછ અને તેમની વ્યમ્પકારિક નુશે!અનાનો પશ્ચિય મળી ગયા હતા એક તેમની હું શેલ કરતો જ હતા કે એ મહાતુમાવ કાળ છે. અને કાના પરિવારના છે કે ત્યાં જ અલ્લામાં એય વરસી પટે હતી જેમ અવ્યાનક મને પુદ જંબ્લિયલછના એક પત્ર આજે દું જે શહેરનાં અને જે સ્થાને રહું છું ત્યાં મલ્યા. મેં એ પર મેડી આવેલી નાનગંગાને વધાવી લોધી. અને નયચક મહારા અના સંશોધન અને દંપાદનના ભાર તેમના ઉપર નાખ્યા. અને તે સ્થાને તે સાથે તેને લગતા ફરેક બાલ સામગ્રી પૂર્વ પાલવાની જવાળદારી મારી અલ્લ-સ્ત્રલપ લીકા અનુસાર મેં પણ ક્લીકારી.

ગાયકના ઓસ્ટ્રિન્ટર સિઝિ અને પ્ત્યપાદ અલ્વાર્ષ મે શંકિઝયલિબ્લિસરિઝ મહારાજ તરફથી આ પ્રેમનું કાર્ય વાલું હોવા હતાં આ ત્રીજી પ્રતૃત્તિ આદવાના સ્વાર્યો આસ કારણ એ છે કે પ્રદૃત્ત મહિંદ પ્રેયના સ્વાર્ય હતાં છે સ્પાતૃલા જળવાં એઇએ તેમજ તે સાથે આજે ઉપલબ્ધમાન વ્યાપક સમગ્રીના જે રીતે ઉપયોગ થતાં એઇએ એ, બેમીથા એક પણ કરી શકે હેતાં શકપતા તેમાં ન હતાં એ જ કારણુકા આજે, મહાલ્ય અપ અને મહાલ્યમ સાથ્ય આ કાર્ય હતાં સરવામાં આવ્યું છે, આ પ્રયાના સ્પાયના સ્પાયના સાથે કેટલી અને કેટી નિમુલ અને મહાલ્યના અલબ્લ-દુર્શન્ય આપ્રધીના ઉપયોગ કરવામાં આવ્યાં છે તેની તેથ લેવાનું આ લ્યાન નથી; એટલે એ નાન્ડે અહીં જે કરીને નાત્ર એ બધા સામગ્રીના ઉપર કરાશ સાથે તેની તેથે લેવાનું એ અનિમ સામગ્રીના પ્રાય થઈ છે તેના આ સ્થારે ફાલેખ કરવામાં આવે છે.

પ્રસ્તુત નવચક શ્રંથ, કે-જે આવતપ્રસ્થી શી તૈન આત્માને સમા તરફથી પ્રકાશિત થશે, તેના સંશોધત પાટે અને જે અનેક પ્રાચાન પ્રતિઓ એકત્ર કરી હતી હેમાં બનાર્સના ખત્ત્વ્રભ્ઈસ પંદશાયાર્થ ધનિવર શ્રીહીશચંદ્રછ પદાદાવના સંપ્રદ્રની અને પૃત્તવયાદ આચાર્ય મદાદાવ શ્રીફંગરિયાછ પદાદાવના સંપ્રદ્રની પ્રતિએ પણ સામેલ છે. એ પ્રતિએના અંતમાં જે પુષ્પિકા છે તે હોતાં ખાનદી ઘઈ હતી કે કાસ્યાસ્ત્રચંધ શ્રેયની એક પ્રતિ પૃત્તવાદ ત્યાયારિસાદદ ત્યાયાચાર્ય કરેલાં ખાવેશ શ્રીયશે વિભવ્ય મદાદાવ અને હેમના સહકાર્ય કૃતિવરોએ માર્ગને લખી હતાં. આજે જાણવા — એવામાં આવેશી નવચક પ્રથની પ્રાચીન અવાંચીન દાર્યાયીએમારી માત્ર બાવનપર શ્રીયેલના ત્યાનસાંગરની પ્રતિને લ દ કરતાં બાકીની ખવી જ પ્રતિએન, એ ઉપાધ્યાયછએ લખેલી પ્રતિની જ નકશે છે. આ વધી નકશે લખોકના દેલવી એકથી બધી ફક અને વિકૃત શર્ય ગઈ છે કે જેઈ આ પ્રયોગા સ્ટિપ્યનમાં લાણે જ અવરેલ કરતાં થણ આ સ્થિતિની પ્રસ્તુન પ્રથના સ્ટિપ્યનમાં પ્રમાણકના હવે એ અલે ઉપાધ્યાં ન જ આવી.

પરંતુ જેન શ્રાદેશના કરેંદ, પ્રસ્તુત શ્રંથના રિક્રેક ચિડાંતાના કરેંદ કે પ્રસ્તુત શ્રંથના હોંદ્રાયન પાછળ રાતાંક્સ અથાય પહેરાય દેવનાર સુનિવર શ્રી જંબલિયલ્કના કરેંદ, પ્રદાસાઓદ્રયનું જતો ઉદ્દર્ફ કે જેથી પાય પ્રત્યે યુન્યસાવસાં પિત્રસાવધી વર્નતા અને હતા ર પત્ની હશે રહેતા — પૃત્યપાદ શ્રી ૧૦૦૮ શ્રી શ્રાંતર્નિ શ્રીદ્ર હોલ્યાં પિત્રસાવશો વર્નતા પ્રક્રિય પંત્યાસ યુનિવર શ્રીવર્મણ કેરિયલ્કને આ વર્ષે દેવશાના પાપના કપાલ્યમાંના પંત્યાસક પદ્યાય શ્રીપોર્ટન વિસ્તાલ મહારાયના દ્યાનમાં દર્શે જેતાના કપાલન શ્રીદ્ધિરાયકાનો કદાનાથી કર્યો આ કપાલ્યા એ નાતસાં શર્તા અત્રોક્ષિત્રમાં પંત્યાય સ્ત્રોક્ષન લગ્ન પ્રદાયના પ્રાપ્ત શ્રીપાર્થિક સ્ત્રોક્ષન સ્ત્રોક સ્ત્રોક્ષન સ્ત્રોક્યાન સ્ત્રોક્ષન સ્ત્રોક્યાન સ્ત્રોક્ષન સ્ત્

એમાં એક वादमाला નામના ગ્રંથ (છપાયેલ वादमालायी જુદા), બીજો वीतरागस्तोत्र अष्टमप्रकाशवृत्ति (स्याद्वादरहस्य?) અંનિમ શ્લાક બ્યાપ્યા અપૂર્ણ પર્યા અને ત્રીજો મલવાદી આવાર્યરિયત નયચક ગ્રંથની પ્રતિ એ રીતે ત્રણ અપૂર્વ પ્રાંથા મને આપ્યા. આ ત્રણેમાંની નयचक ગ્રંથની પાયી જોતાં મને હર્પરામાંચ પ્રકડી ગયા અને અપૂર્વ રવર્ગીય આનંદના પ્રત્યક્ષ અનુભવ થયા

અમ પ્રતિના અંતમાં ઉપાધ્યાયછ મહારાજે જે પુષ્પિકા આલેખી છે એ તા વર્ષો પહેલાં ભાવનગરથી પ્રસિદ્ધિ પામતા 'શ્રી આત્માનંદ પ્રકાશ માં મુનિ શ્રી જ'ખૂવિજયછએ પ્રસિદ્ધ કરી જ દોધી છે. તે છતાં પ્રસ્તુત સ્મારક શ્રંથમાં ઉપાધ્યાયછ મહારાજની એ પાથીના પ્રતિબિંખને સાક્ષાત્ જોનાંગ રસિક ભક્ત વાયકાને અતૃપ્તિ ન રહે તે માટે એ આખી પુષ્પિકા અહીં આપવામાં આવે છે:—

प्रतिष्ठितसिद्धविजयावहजगन्मूर्दस्यसिद्धवत्प्रतिष्ठितं यहास्करमिति ।।छः।। इति श्रीमहवादिक्षमाध्रमणपादकृत-नयचकस्यतुम्यं समाप्तम् ।छः।। प्रयाप्तं १८००० ।।

> यादशे पुस्तके इप्टं साइशे लिखितं मया । यदि ग्रद्धमञ्जदं वा मम दोपो न दीयते ॥१॥

संबत्' १०१० वर्षे पोसवदि १३ दिने श्रीपन्तन नगरे ॥ पं॰ श्रीयदाविजयेन पुस्तकं लिखितं । धुमं भवतु ॥

> उदकानलचीरेभ्यो । मूखकेभ्यो विशेषतः । कष्टेन लिखितं शास्त्रं यत्नेन प्रतिपालयेत् ॥१॥ भप्तपृष्टिकटिप्रीवा । दष्टिस्तत्र अधोमुखी । कष्टेन लिखितं शास्त्रं यत्नेन प्रतिपालयेत् ॥२॥

पूर्व पं॰ यदाविजय गणिना श्रीपत्तने वाचितं ।।।।।।

भादशों ऽयं रचितो । राज्ये श्रीविजयदेवस्रीणां ।
संभ्य यैरभीपा— । मिधानानि प्रकटयामि ।।१॥
विवुधाः श्रीनयविजया प्रानो जयसोम पंटिता गुणिनः ।
विवुधाय लाभविजया गणयोऽपि च कीर्त्तिरत्नाख्याः ॥१॥
तत्त्वविजयमुनयोऽपि प्रयासमत्र स्म कुनंते लिखने ।
सह रविविजयैविंगुपरिलख्य यद्द्योविजयविवुधः ॥३॥
प्रयप्रयासमेनं । दृष्ट्वा तुप्यंति सज्जना शृढं ।
गुणमत्सर्व्यवहिता । दुर्जनदक् बीहते नेनं ।।४॥
तेभ्यो नमस्तदीयान्तुने गुणांस्तेषु मे द्वा मिकः ।
भनवरतं चेश्ते जिनवचनोद्रासनार्ये ये ।.५॥ श्रयोस्तु ॥
समहानप्ययमुधैः । पर्श्विकेन पृरितो ग्रयः ।
हर्णास्तं पर्राधयां जयति चरित्रं पवित्रमिदं ॥६॥ श्रीः ॥

અત પુષ્પિકાર્યા એમ જણાવવામાં આવ્યું છે ? – " પ્રસ્તુત દાયપેથી પાટખુમાં વિ. સં. ૧૭૧૦માં લખી છે. એ લખવા પહેલાં ઉપાધ્યાય શ્રીયરોાવિજયજી મહારાજે આ આખા મ્રંય પાટખુમાં વાંચી લીધા હતો અને ત્યારપછી શ્રીનયવિજયછ મદારાજ, શ્રીજયસામપતિ, શ્રીકાણવિજયછ મહારાજ, શ્રી ક્રીતિતનપણી, શ્રીતત્ત્વવિજયછ, શ્રીરવિવિજય પતિ અને ખુદ શ્રીયશાવિજયછ મહારાજ, એમ સાત સુનિરરાએ મગાને ૧૮૦૦૦ ચ્લાક પ્રમાણ આ મહાકાય શાસની માત્ર એક પખવાડીઆમાં — પંદ સ્ત્રિસમાં જ પાયી લખી છે — નક્લ કરી છે."

અન પ્રથમી નક્લ કરવા માટે આટલી બધી ઉતાવળ કરવી પડી એ એક નવાઈ જેવી વાત છે. મું જેમની પાસે આ વિરક્ષ પ્રથમી પ્રતિ હશે તેમણે આવી કરજ પડી હશે કે શું ! – એ એક ટ્રાપડા જ છે: અરતું. આ પ્રથ કેટલા મહત્વના અને જેન દાર્શનિકવાદ્વવાના અને જેનશાસનના આધાર સ્વંભરૂપ છે ! એની પ્રમીતિ આપણને એટલાયો જ યાય છે કે શ્રીયદે વિજયજી જેવાએ આ પ્રથમી નક્શ કરવાનું કાર્ય હાય ધર્યું.

પ્રસ્તુત પ્રતિતે લખવામાં જે સાત મુનિવરોએ ભાગ લીધા છે તેમના અક્ષરા મ્લક્તિવાર પારખવાનું સક્ષ્ય નથી. આ લખાજુનાંથી આપણે માત્ર શ્રીયરોપિજલ્લ મહારાજ અને તેમના શુરુવર શ્રી નવ-વિજયજીના હસ્તાક્ષરોતે પારખી રજીએ તેમ છીએ. આ શ્રંથમાં પત્ર ૧ થી ૪૪, ૫૭ થી ૭૬, ૨૫૧ થી ૨૫૫ અને ૨૯૧ થી ૨૯૪ એમ કુલે ૭૭ પાનાં શ્રીયરોપિજયજીએ લખેલાં છે. જેનાં અક્ષરા શ્રીયું તેમ એકંસ ૪૫૦૦ થી ૪૮૦૦ જેટલી વ્યક્તિમાં થાય છે. શ્રીયરોપિજયજી મહારાજ પંસ દિવસમાં ચાલ્યાઇસર્યું આટલું બધું લખી કાદે, એ એમની લેખનકળા વિષ્યક સિક્દરસ્તાનો અપૂર્વ નમૃતા જ છે અને એ સો કાઈને આશ્રાંચિક્ત કરે તેવી હશીકત છે.

પ્રસ્તુત પ્રતિનાં કુસે ટ૦૯ પાનાં છે. તેમાં પંકિત્ર જ્યાનાં કર્ષાણના કાંઈ ખાસ મેગ નથી. સૌએ પોતાની હુંચેડી પ્રમાણે લીડીએ કર્ષ્યા છે છતાં માટે સાગે ૧૯થી જ્યાં નથી અને ૨૪થી વધારે નથી. પ્રતિની લેનાઇ-પહેલાઇ ૧૦×૪૧ ઇચની છે. ૨૦૯ મા પાતામાંના અંતિમ છ લ્લાક પ્રમાણ પુરિપકા શ્રીયુગ્રેલિલ્યા લ્લાકો સ્પેરી છે.

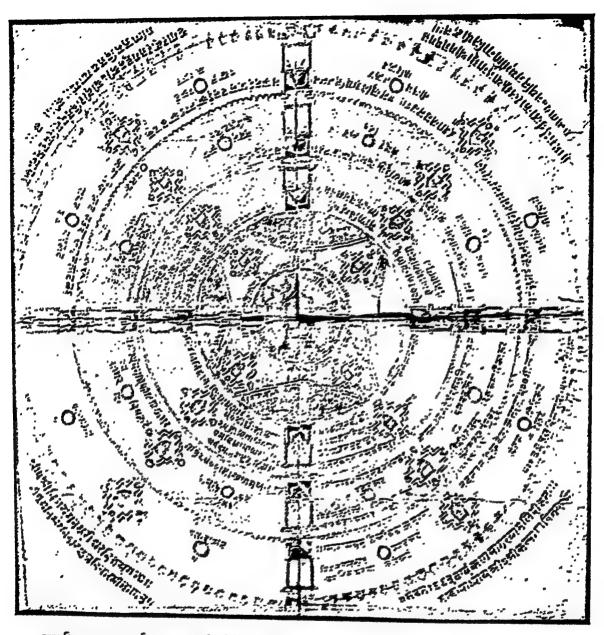
અંતરાં એક વાત બળાવોને આ વકતાબ પૂર્વું કરવામાં આવે છે. આજે આ તણને તથચક શ્રંથનો જે પ્રાચીત – અરાંથીન પોર્ધાઓ મળે છે અને શ્રીયક્ષાવિજયછ મહારાજના હાયની જે પાંધી મને આવી છે તે માત્ર નથચક શ્રંથ ઉપર આચાર્ય શ્રીસિંહવાદી – ત્રિલું – સુમાશ્રમણે રચેરી દીકા માત્ર જ છે. આજે જેન શ્રીરંધના ભાગસ્ત્રિનારાની નિસ્તેજના છે કે આચાર્ય શ્રી અહવાદિ પ્રદ્યીત એ મૃક્ષવાન લસ્ત્રક શ્રંથની નક્શ આજે કર્યાં જેવાનાં આવતી નથી. આ શ્રંથની હાલપોશીને શેલ્લી કાલનાર ખરેખર જેન જાતમાં જ નહિ પણ સમસ્ત વિક્તજરનમાં સુદ્યાં દેવીસાઅમાં સમક્તા રહ્યાં રહ્યાં સ્ત્રે પૂજરો.



क्षियातं अध्नव

જેએ પાત્ર કેાઉ શિર અધિ, પતિરન નહિ લગાઠી, સદ્દશરુ પાસ કિયા બિતુ માગે, આગમ બાવ ત્યું ખાેઠી.

—કૈષાઃ શ્રી યંગ્રેલિવયર



न्यायविद्यारह न्यायाचार्य उपाध्याय श्रीयद्योविजयदी सहागजना जीवनकाद्यनी विचारणामां अस्तप्रं प्रकाश पाटनी वि. सं. १६६३ मां चीनगरेको अनिहासिक वस्तरह

[सुनि क्षी यद्योदिजयरीना मंग्रहमांकी]

અન્ય વિષયક નિખં**ઘો** વિભાગ બીજો



નોંધ—અહીં પૂત્ર્ય કપાધ્યાયછ સચવાનના છવન-કવનને સ્પર્શતા હેંખા-નિલંધાના પ્રથમ વિલાગ પૂર્ણ યાય છે. શ્રીમદ્દનાં છવન-કવન ઉપર સુજસવેલી સિવાય કાઈ વિશિષ્ટ સાહિત્ય તૈયાર ન હેાવાના કારણે તેમ જ તે અંગેના નાણકારા પણ અલ્પ ઢાવાયી, સત્ર પ્રસંગે સમિતિએ હેંખા માટે જે વિનંતિ કરેલી તેમાં સમ- છને જ તેઓશ્રીના છવન સિવાયના અન્ય વિષયા કપર પણ લખી શકારો તેવું જણાવેલું. એ વિનંતિના સમાદર કરીને વિદ્વાન હેંખકાએ શેક્સાવેલા નિબંધાના બીએ વિભાગ અહીંથી શરૂ થાય છે.

-સ'પાદક

	•	-	

अरुणन्महेन्द्रो मथुराम्---

[लेखक— डॉ. वासुदेव शरण अप्रवाल, काशी विश्व-विद्यालय]

(Dr. Vasudeva Saran Agrawal)

जैनेन्द्रव्याकरणं सूत्र २।२।९२ (अनद्यतने छङ्) की अभयन्दि विरचित महावृत्ति में छिखा है—

परोक्षे लोक विज्ञाते प्रयोक्तुः शक्यदर्शनत्वेन-दर्शनविषये छङ् वक्तव्यः। अरुण-न्महेन्द्रो मथुराष् । अरुणद् यवनः साकेतम् ।

ं इस उल्लेख को पढ़ते ही पतञ्जलि के महाभाष्य के अन्तर्गत निम्नलिखित प्रकरण का ध्यान आता है—

(वार्तिक) परोक्षे च छोकविज्ञाते मयोक्तुर्दर्शनविषये:।

(भाष्य) परोक्षे च लोकविज्ञाते पयोक्तुर्दर्शनविषये लङ् वक्तन्यः। अरुणद्यवनः साकेतम्। अरुणद्यवनो मध्यिमकाम्। (महाभाष्य, सूत्र ३।२।१११ अनवतने लङ् ।

यह स्पष्ट है कि यहां जैनेन्द्रज्याकरण के रचयिता ने उसी विषय की चर्चा की है जिस पर कात्यायन का वार्तिक और पतछि का भाष्य है और यह भी सम्भव है कि महाचृत्ति के कर्चा अभयनिद के सामने उदाहरण दिखते हुये पतछि की सामग्री उपस्थित थी। 'अरुणद्यवनः साकेतम्' उदाहरण-दोनों में समान हैं। शेप दो उदाहरण भिन्न हैं। इस प्रकार यहां तीन ऐति-हासिक घटनाओं का उल्डेख है—

पतः हिं १-अरुणद् यवनः साकेतम् । २-अरुणद् यवनः मध्यमिकाम् । समयनन्द ६ ३-अरुणन्महेन्द्रो मधुराम् ।

'यवन ने साकेत और मध्यमिका पर भाकमण करके उन दो नगरों पर घेरा डाला । महेन्द्र ने मधुरा को छेडकर उसका घेरा डाला ।' ज्याकरण के नियम के अनुसार ये तीनों लोकों में प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटनाएँ (लोकविज्ञात) होनी चाहिये। दूसरी दार्त यह थी कि जो ज्यिक इस बाक्य का प्रयोग करे वह उस काल में जीवित हो, जब ये घटनाएँ घटी, अर्थात् घटनाएँ उसके समकालीन होनी चाहिये। पतछाल ने जब साकेत और मध्यमिका पर यवन-स्नाक्रमण का उल्लेख किया तब व इन छोकविज्ञात घटनाओं के समकाछीन थे। ऐतिहासिकी का मत है कि यवन राजा मीनंडर ने पंजाब या महदेश की राजधानी शाकल पर अधिकार करके पूर्वी मारत की ओर एक श्रभियान किया और वह बढ़ता हुआ साकेत और पाटिलपुत्र तक चला गया। पर वहां वह स्थिर न रह सका । किसी कारणवंश वह शीत्र ही पाटिलियुत्र से वापिस छीटा । इसका एक कारण यह कहा नाता है कि कर्डिगराज महामैघवाहन खारवेड ने मगघ पर नो श्रीमयान किया था उसके मय स यवनराज दिमित मथुग की और छैटि गया । यवनी का यह अमियान पुष्यमित्र शुंग के समय में हुआ था । उस समय पतस्रछि जीवित थे । अतएव सूत्र पर छिखते हुये उन्होंने अपने समय की 'आंख़ों देख़ी' (प्रयोक्तुर्दर्शनविषये) छोकप्रसिद्ध घटना का उल्छेख कर दिया । वस्तुतः पतछाछि नं यवनों के दा अभियानों का वर्णन किया है। एक पूर्वी जो साकेत की ओर हुआ था, और दुसरा दक्षिण पश्चिमी, जो मध्यमिका नगरी की ओर हुआ था। मध्यमिका चित्तीर के पास नगरी स्थान है जहांसे प्राप्त शिवि जनपद के पुराने सिक्की पर 'मझिमका' नाम पाया गया है । मध्यभिका और मझिमका एक ही ईं। इससे निश्चिन है कि यवनों का एक हमछा दक्षिण की ओर हुआ जिसमें यवन-मेना तीर की तरह देश के भीतर घुसती हुई चित्तींड तक पहुंच गई थी। दक्षिण-पश्चिम का अभियान अरखोसिआ (हरईसी) या अरगन्दाच प्रदेश की ओर से बदकर पाटळ (दक्षिणी सिन्ध), श्रीर सुराष्ट्र पर अधिकार करता हुआ सिगदिम् तक पहुँच गया था, निसकी पहचान श्वश्रमती या सायरमती के काँठ से की जा सकती है, जिसका प्राचीन नाम 'बहुगर्स' देश मी था (कैम्प्रिज हिस्दू) १।५९२) यूनानी इतिहास छेखक स्नावी ने छिखा है कि मीनंहर और दिमिट्यिस दोनी ने, यवनी के ये अभियान किये थे । ज्ञात होता है कि मीनेडर यवनराज था जिसकी अध्यक्षना में डिमिट्रियस ने सेना का संचाछन किया। छोक में ख्याति यही हुई कि मीनंडर न ही विजय की। इसी प्रसंग में डिभिट्यिस ने सिन्ध-सीवीर देश में दात्रामित्री नगरी की विजय की स्थापना की, जिसका उल्लंख काशिका (शरा७६) में आया है।

भारतीय साहित्यमें भी इस यवन अभियान की गूंच पाई जाती है। गार्गी संहिता के युग-

ततः सामेतमाक्षम्य पाञ्चाला [न्] माथुरांस्तथा। यचनाह्य सुविकान्ताः प्राप्स्यन्ति कुसुमध्वज्ञम्॥ ततः पुष्पपुरे प्राप्ते कर्नम् प्रथिते हिते। वाकुलाः विषयाः सर्वे मविध्यन्ति न संद्ययः॥ मध्यदेशे न स्थास्यन्ति यचना सुद्धदुर्मदाः। वेषामन्योन्यर्भमावाद् भिष्यपन्ति न संद्ययः॥ वास्यचक्रोत्थितं घोरं युद्धं परमदाहणम्। तन्ते। युगवकात्त्वपं यवनानां परिक्षये॥

इसमें स्पष्ट कहा है कि मुविकान्त यवन साकेत, पाछाछ और मथुरा को आक्षान्त करके उन्हें अपने अधिकार में छाकर, कुसुमध्वज पाटिएपुत्र तक पहुंच जायेंगे। वहां वड़ी मारामारी होगी और समस्त देश आकुछ हो उठेगा। किन्तु युद्धदुर्मद यवन मध्यदेश में टहर न पावेंगे, क्योंकि आपसी स्पर्ध से (अन्योन्य संभावाद) उनके अपने ही मंडल में घनघोर युद्ध छिड़ जायगा, जिसके कारण ने मध्यदेश से हटने पर वाध्य होंगे।

इस वर्णन में यवनों द्वारा साकेत और मधुरा पर आक्रमण करने का स्पष्ट उल्लेख है। वहीः छोकप्रसिद्ध घटना व्याकरण के निम्निछिखित दो उदाहरणों में कही गई है—

अरुणन्महेन्द्रो मथुराम् । अरुणद् यवनः साकेतम् ।

जैनेन्द्रमहावृत्ति के लेखक सभयनित् के सामने कोई अति प्राचीन अनुश्रुति विद्यमान थी, जहांसे श्रुंगकाल की ऐतिहासिक घटनाओं के ये उदाहरण उन्होंने लिये। व्याकरण के नियम के अनुसार तो लेखक को अपनी समकालीन घटना के उदाहरण देने चाहिये, जैसा—हेमचन्द्रने 'ख्याते हिश्ये' सूत्र (५१२१८) पर स्वोपज्ञ लघुवृत्ति में 'अरुणत् सिद्धराजोऽवन्त्ताम्' लिखकर किया है। किन्तु अभयनित्ते इसकी उपेक्षा करके दो टकसाली प्राचीन उदाहरण ही रख लिए। उनके सामने ये इस प्रकार के व्याकरण नियम के लिये मूर्धामिषिक उदाहरण की तरह विद्यमान थे। अभयनित्त ने कहां से ये उदाहरण लिये यह तो इस समय विदित्त नहीं, किन्तु इनमें 'अरुणन्महेन्द्रो मश्चराम्' उदाहरण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, जो किसी प्राचीन टीका में पढ़ा रह गया होगा। इस उदाहरण में ऐतिहासिक तथ्य यह है कि यहां यवनराज भीनंडर के पूर्वी अभियान के प्रसंग में मश्चरा पर अधिकार कर लेने का उल्लेख है। इसका मृत्याठ मेरी समक्षमें इस प्रकार था—

अरुणन्मेनन्द्रो मधुराम्।

अर्थात् मेनन्द्र ने मथुरा को आकान्त किया। मीनंडर के सिक्को पर उसके नाम का भारतीय रूप खरोप्टी लिपि में मेनन्द्र ही मिलता है। पीछे के किसी लेखक ने 'मेनन्द्र' नाम से परिचित न होने के कारण श्रम में पड़कर 'महेन्द्र' पाठ बना दिया। मेरी दृष्टि में मूलपाठ मेनन्द्र निधित ही है। साकेत का यवन आक्रमण और मेनन्द्र द्वारा मथुरा का आक्रमण—ये दोनें। उदाहरण एक ही कोटि के हैं और यूनानी राजा मीनंडर के पूर्वी भारत पर चढ़ाई के स्मारक हैं।

बहुत कुछ सम्भावना यही है कि अभयनन्दि ने उदाहरणों का जो क्रम रक्ता है वहीं क्रम उस मूलक्रम्थ में भी था, जहांसे उन्होंने अपनी सामग्री छी। उन्हें जैसा मिला, वैसा ही यथादत् रख छिया। यदि यह अनुमान सत्य हो तो इससे एक परिणाम और निकलता है। पूर्वी अभियान का नेतृत्व स्वयं यवनराज मेनन्द्र कर रहे थे और मधुरा नक को चढाई में स्वयं आए। मधुरा पर अधिकार कर छेने के बाद सम्भवतः वे स्वयं आगे नहीं बहै। आगे साकेत की चढ़ाई में छेनाका नेतृत्व उनके सेनानी हिमिट्रियस ने किया जाउ होता है और वही सेना पाटिल्युत्र सी पहुँची होगी। इसीलिए 'यवनराज दिगित' का नाम खारवेल के हाथीगुफा लेख में आया है, जैसा श्री जायसवालजी ने पढ़ा था।

इस अभियान के कुछ पुराज्ञात प्रमाण भी हाल में मिले हैं। मीनंडर के सिक्के तो मधुरा में पहले से ही मिलते थे। इसर १९४० की खुड़ाई में काशों के समीप गंगा तट पर स्थित राज्याट नामक पुराने अवशेषों में यूनानियों की बहुत सी मिही की सुहरें पाई गई हैं। उनपर देवी अथीना, देवता अपोलो, विजय की देवी माइकी और इरक्ष्मूलीज की मृर्तियां अंकित हैं। एवम् कुल सुटाओं पर किसी यूनानी राजा का मस्तक भी है, जो अभी तक ठीक नहीं पहचाना गया। इन सुहरों के राज्याट में मिलने की ज्याख्या इसी प्रकार हो सकती है कि जब यवनसेना साकेत-विजय के बाद पाटलिपुत्र की ओर बड़ी तो उनकी एक छावनी मार्ग में काशों के गंगातट पर बनाई गई। वहीं ये सुहरें मिली हैं। इसमें तो सन्देह नहीं कि यवन—सेना ने काशी-राज्याट में ठीक उसी स्थान पर गंगा पार की, जहां आज भी गजयाट के एल से रेल गंगा पार करती है। कुमुमज्ज पाटलिपुत्र के लिये यही आखिरी नाका था। प्राचीन काल से ही विन्विसार और अजात-हाजू वैसे मगयराज काशों के इस नाके को अपने अधिकार में रखने के लिये उत्सक रहते थे।



ધર્મમાંહી દ્યાધર્મ માટા શ્રદ્ધાવનમાંહિ વજ્જ-ક્ટાંટા દાનમાંહિ અભયદાન રહું, તપમાંહિ જે કહેવું ન કુડું × × × રતનનણી જિમ પેટી, ભાર અદપ બહુ મૂલ ચોદપૂરવતું સાર છે, મ'ત્ર એ તેહને તુલ્લ સકળ સમય અભ્યંતર, એ પદ પંચ પ્રમાણ મહસુઅ–ખ'ધ ને જાલે, ચૂલા સહિત સુજાય. [યદ્યાવિજય]

×

x

आध्यात्मतत्त्ववेत्ता श्रीमद् देवचंद्रजी-

[लेखक-श्रीयुत अगरचंदजी नाहटा]

जैन दर्शन के अनुसार विश्व ६ द्रव्योंका समृह है। इनमेंसे धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय व आकाशास्तिकाय ये अरूपी आगम एवम् अनुमान प्रतीतिरूप है। काल औपचास्कि द्रव्य माना गया है। शेप पुद्गलास्तिकाय व जीवास्तिकाय ये दो प्रतीतिस्रुलम है। इनमें से पुद्गलास्तिकाय ही रूपी द्रव्य है, वाकी के सभी अरूपी हैं। मूलत: जड़ और चेतन दो में ही इन छहों द्रव्यों का समावेश हो जाता है। जीव के अतिरिक्त पांचों द्रव्य जड़ के अंतर्मुक्त होते हैं। जीव भी अनादि काल से पुद्गलों के साथ रहा हुआ है इससे इसकी दो अवस्थाय मानी गई हैं। मूलत: जो उसका स्वरूपभी है उसे स्वभावदशा और पौद्गलिक संभोगों से प्राप्त दशा को विभावदशा कहा गई है। वस्तु स्वरूप का गहरा जिन्तन करने पर मनीपियों ने आत्मा के स्वरूप का अनुभव किया और उसकी वर्तमान विभावदशा के कारणों की शोध कर स्वभावदशा की प्राप्ति के साधन ढूँद निकाले। जहां तक हमारी द्वित बाधमुखी रहती है वहां तक आत्मअनुभव ठीक से नहीं हो सकता। अत: उन्होंने बाह्यदशा पौद्गलिक पदाओं व उनके संभोग से होने वाले जीव के रागद्वेपादि भावों से सम्बन्ध घटाते रह अंतर्मुखी होने पर जोर दिया है। उन्होंने अपने जीवन में जिस तस्वज्ञान की उपलब्धि चिरसाधना से की, जनता के हितार्थ प्रचारित किया। शरीर, इन्द्रिय व बाहरी पदार्थों से इति हटाकर आत्मा की शोध में लगना यही आध्यात्मिक मृनिका है।

आत्मा की शुद्ध अवस्था का नाम परमात्मा या सिद्धअवस्था है। साधारण जीव दिहरात्मा होते हैं उनका प्यान धन, देह, गेह, कुटुम्व परिवार आदि बाहरी पदार्थों में गुंधा रहता है। इसके पश्चात् जब आत्मा देहादि भिन आत्मा के स्वरूपप्राप्ति की और अप्रसर होता है तो उसे अन्तरात्मा कहा जाता है और साधना के द्वारा आत्मा की शुद्ध अवस्था प्राप्त कर हो जाती है तब परमात्मा कहा जाता है। जीवन के लिय परमात्मा स्वरूप ही लक्ष्य है। इस तत्वज्ञान का अनुमव व साक्षा-स्कार करने वाले अनेक आप्यात्मिक महापुरुप हो गये हैं। उन्होंने भिन्न भिन्न प्रकार व साधनों में से आत्मा की अनुमृति को और जीवों की रुचि व प्रकृतिभिन्नता को हदयंगम कर विविध गार्गी को प्रचारित किया। लक्ष्य आत्मा की शुद्धावस्था-परमात्मदशा की प्राप्ति एक ही होने पर भी किसी ने भिक्त को प्रधानता ही, किसी ने योग को, किसी ने ज्ञान को। योग में भी हरयोग, राजयोग,

कर्मयोग प्रधान हैं। जैन दर्शन में ज्ञान एवंस् किया दोनों के सम्मिछित को मोक्षमार्ग माना है। इस दर्शन के अनुसार प्रत्येक जीव स्वमावरूप से परमात्मा है। उस अवस्था का तिरोमाव कर्मवंघ के कारण हुआ है। कर्मवंघ मिय्यात्व अविर्ति कपाय और योग से होता है और संयम और तप द्वारा कर्मनाश होता है। कर्मनाश ही मुक्ति है-यहां जीव का चरम व परम छत्य है-साध्य है।

य० महावीर के पश्चात् कुन्दकुन्द, पृत्यपाद, योगीन्द्र शुमचन्द्रादि अनेक आचार्य आध्यात्म प्रत्य प्रणेता हो गये ई, जिनके प्रत्य सर्वत्र प्रसिद्ध ई। आचार्य सिद्ध पिने रूपक के बहाने आत्म-तत्त्व को जो विश्वाद स्वरूप चित्रित किया है वह अनुपम है। आ० उमास्वाति का प्रश्नमरित, हिस्मह्रपूरि के योगिवन्दु, योगदृष्टिसमुच्चय आदि प्रन्थ मीलिक से ई। आ० प्रुनिचन्द्रस्रि का शाध्यात्मकत्त्रद्भुम भी अच्छा प्रन्थ है। सतरहवीं शती के उत्तर्गर्द में कवित्रद चनारसीद्रासजी के समयसार प्रन्य का चारों ओर अच्छा प्रभाव विस्तार हुआ। १८वीं शती में मुख्ताण में कई श्रावक आध्यात्म रंग में रंगे हुए प्रतीत होते ई। उनकी चर्चा का यही एक विषय था। उनकी आध्यात्म-रिसकताको छाप मुख्ताण में चातुर्मस करने वाक यितयों पर पड़ती। मेरी धारणानुसार प्रस्तुत छेख में जिन आध्यात्मतत्ववेत्ता का परिचय करवाया जा रहा है। उन पर मी उस वातावरण के प्रमावने अच्छा काम किया। है।

१८ वी शती के प्रारम्भ में मरत योगीराज आनन्द्यनजी की साधना मेहता में होना सर्वविदित हैं। उनकी चोवीशी एवम् पहों से जैन समाज तो सुपरिचित हैं ही, जेनेतर विद्वान भी आपके प्रशंसक हैं। आनन्द्यनजी की चोवीसी के बाद आध्यात्मतस्व गर्मित चोवीशी श्रीमद् देवचन्द्रजी की मानी जाती है। आपके समग्त प्रन्थों की खोज कर आध्यात्म प्रन्य प्रणेता योगी श्रीमुद्धिसागरस्रिजी ने श्रीमद् देवचन्द्रजी को सामग्र हो वड़ी विद्वां में आध्यात्म ज्ञान प्रसारक मण्डल से प्रकाशित करने का निश्चय किया था। तदनुसारप्र थम माग में श्रीमद् देवचन्द्रजी के आगमसार, नयचकसार, कर्मप्रन्य व प्रशोचरादि प्रन्य प्रकाशित हुए हैं और दूसरे माग में व्यानचतुष्पदी, द्रव्यप्रकाश, चोवीसी, बीसी, सन्द्रायादि पय रचनाएँ प्रकाशित हैं। ज्ञानसार टीकादि का माग प्रकाशित नहीं हुआ, यद्यपि वे पहेले संकरण भी छप ही जुके हैं। मुझे आपकी अप्रकाशित कई रचनायें प्राप्त हुई थाँ जिन्हें अतीत चौवीसी स्तवनादि के परिशिष्ट में प्रकाशित कर दीया गया हैं। अप्रकाशित में दण्डक वालाववीध की नकल हमार संप्रह में है। सम्प्र-स्मरण की प्रति कई वर्ष पूर्व देखी थी, पर जिस संप्रह में देखी वह विकी हो इतरतदः हो गयी। शांतरस नामक एक गय मापाकृति के कर्ता एक प्रति के अनुसार श्रीमद् ही है, पर अन्य प्रतियों में इसका स्चन नहीं होने से संदेहास्पद है।

ं : श्रीमद् देवचन्द्रजी का जन्म वि० सम्बत् १७२६ में बीकानेर के निकटवर्ती किसी श्राम में हुआ था। रूणीया तुल्सीदासजी की पत्नी घनचाई की कुक्षि से आपका जन्म हुआ था। १० वर्ष की आयु में खरतरगच्छीय वाचक राजशागरजी में आपने दीशा प्रहण की। देवचन्द्र आपका जन्म नाम था । दीक्षित होने पर आपका नाम राजविमल रखा गया था, पर आपका वह नाम अधिक प्रसिद्ध नहीं हुआ। श्रीमद ने ध्यानचतुष्पदी आदि की प्रशस्ति में यह नाम भी प्रयुक्त किया है। विद्याध्ययन आपका बहुत अच्छी तरह हुआ। देवविलास के अनुसार वेनातट में दीक्षागुरु राजसागरजी के दिये सरस्वतीमन्त्र की आपने साधना कर सरस्वती की प्रसन्नता प्राप्त की। द्रव्यनुयोग में आपकी विशेष गति थी।

संयोगवश अपने गुरुश्री के साथ सिन्ध की ओर विहार किया। जैसा कि ऊपर लिखा गया है उस समय मुख्ताण में मिट्टमळ भणसाळी आदि आध्यात्मरिसक श्रावक रहते थे उनकी प्रेरणा से आपने आध्यात्मक प्रन्थो का अध्ययन—आध्यापन किया। आपकी सर्वप्रथम रचना ज्ञानार्णव का राजस्थानी पद्यानुवाद ध्यानदीपिकाचतुष्पदी के नाम से प्रकाशित है जिसकी प्रशस्ति में आपने छिखा है—

" आध्यातम श्रद्धानां घारी, जिद्दां वसे नरनारीजी, परिमध्यात्वना परिद्वारी, स्वपर विवेचन कारीनी ॥ निजगुण चरचा तिद्दांथी करता, मन अनुभव में यढताजी, स्याद्वाद निजगुण अनुसरतां नित अधिको सुख धरतांजी ॥ भणसाली मिद्दमल द्वाता, आतम-सूरज ध्याताजी, तसु आग्रद्द चडपार्द जोडी, सुणतां सुखनी कोडीजी ॥ "

इसकी परवर्ती रचना "द्रव्य-प्रकाश" है, को हिन्दी सवैया, दोहा आदि में पड् द्रव्य निरू-पणार्थ सं० १७६७ वीकानेरमें बनाया गया है। यह भी उपर्युक्त मिट्टमल आदि के लिये ही बनाया गया था—'आतम सभाव मिट्टमलका'।

द्रन्यानुयोग विषयक गव प्रन्थरत्न आगमसार की रचना मरोठ में विमलदासजी की पुत्री माइजी अमाईजी के लिये की गई थी।

सं० १७७७ में आपका विहार गुजरात की ओर समृदिशाली गुजरात की मृत-पूर्व राजधानी जैनधर्म के केन्द्र स्थान पाटण नगर में पधारे। नगरसेठ तेजसी दोसी सहस्रकृट जिनालय बना रहे ये। प्रसंगवश "सहस्रकृट" जिनके नामों के सम्बन्ध में श्रीमद देवचन्द्रजी के प्रतने पर सेठने ज्ञान-विमलस्रिजी से नाम प्रतने पर स्रिजी बता नहीं सके। अन्त में दोनों विद्वानों के जिनालय में 'सत्तर-मेदी' पूजा के समय उपस्थित होने पर, सुयोग देख, नगरसेठने फिर स्रिजी को प्रा। उनके अनुपल्च बतलाने पर श्रीमद देवचन्द्रजीने शिष्य की ओर संकेत कर सहस्रकृट जिन नामात्रिल का पत्र हाथ में धमा दिया। यह देख ज्ञानविमलस्र्रिजी अन्यन्त चमन्त्रत हुए ओर आपकी विद्वत् गुरु परम्परादि की प्रशंसा की। पाटण में आपके ताविक-ज्याल्यानों से जनता की असीम लाभ हुआ।

श्रीपद देवचन्द्रजी के समय साध्वाचार में कुछ शिथिछता आ गई थी। अन्तमं आपने क्रियोद्दार कर उसका परिहार किया। सै० १७७७ में ही अहमदाबाद पघार। "नागोरीसराय" (हाछ-'नागोरीशाळा') में आपका ठहरना हुआ। व्याख्यान में अव्यास्मज्ञान की अविग्छ घारा प्रवाहित होने छगी। श्रोतागणों में धार्मिक आह्छाद वहने छगा तथा मगवनी—जैसे मुशं का गंमीर रहस्योद्दारन होने छगा। सं० १५७२ का चातुमांस खंमात किया। आपश्री के उपदेश ने अर्हुजय तथि की व्यवस्था व जीणोंहार के निमित्त पेही की स्थापना हुई। सुरतादि में चीमासा समान करते हुए सै० १७८८ में "राजनगर" में चीमामा क्रिया। मिनी आपाह शुका २ की आपके गुरु दीपचन्द्रजीका स्थाना हो गया। तपागस्टीय विवेकविजयादि को आपने शायों का अध्ययन कगया।

श्रह्महाबाद का शायनमृत्र इस समय र्ननचन्द्र अग्रहान के हाथ में आ। 'आणंद्रामजी' इनके प्रधान कार्यकर्ता ये और वे भी श्रीमद के अनन्य सक थे। उनके आपको प्रशंसा सुनकर सण्डानिजी भी आपके उपदेशों के लास उठाने लगे। आपश्रीने मण्डानिजी के अनुरोध के महामारी का उपद्रय सन्त्रान्ताय में निवारण किया था। घोलका के श्रेष्टी जयचन्द्रने पुरुषोत्तम योगी को गुरुशी के पास लाक प्रतिवोधिन कराया। से० १७९५ में पालीनाना व सं० १७९६—९७ का नवानगर में चातुर्यास किया। प्रथम श्राणावाब का ठाष्ट्रर आपका सक्त हो गया। सं० १८०७ में यावनगर में चातुर्यास कर पालीनानाका मृति उपद्रय उपशान्त किया। सं० १८०५ में लीवडी के श्रावकी को धर्म-लाम दिया। राजनगर, पालीनाना, लीवडी, श्रीग्राम, नवानगर चृद्धा आदि में आपने जिनाल्यों व जिनिवार्यों की प्रतिष्ठा की। अनेक मृति-यूजा—विरोधी व्यक्तियों ने जिनभक्ति में मन लगाया। सं० १८०८—१० में शुकुंजय नीयेका संय निकला। उसमें आप भी सम्मिलन थे। क्रवना कोका संययाय प्रतिवह है। सं० १८१२ में आपका चानुर्यास राजनगर में हुआ और वहां आपका स्वयंवास हो। गया। आपके शिक्य पनक्पत्री, जिजनगर्दा व शिष्य वक्तुर्जा स्वयंवस्त्र, विशेकक्राह्मीद विनयवान एवं महर्गुणानुगर्या व कियापात्र थे। श्राम्य पर उत्तराव्ययन, दश्वेक्षालिकादि गुर्शोका अवण करते हुए से० १८१२ में साह चित्र १५ एक प्रहर गुर्श व्यतीत होने पर आपने व्यानिवहण किया।

श्रीमर यहाँ विजयना के "झानमार" प्रत्य पर संस्कृत में आपने मुन्दर टीका बनाई है। प्राष्टत में क्रमेष्ट्य सम्बन्धी ३-२ प्रत्यों का निर्माण किया है। इन्हों में 'इव्यप्रधादा' पूर्ववर्ती. रचनाएँ मानुमापा राजस्थानी की गधपध में व परवर्ती गुजरात में अधिक रहने के गुजराती भाषा में रचित्र है।

चीबीमी के आहि ग्नवनी में अपने तत्व ज्ञान के साथ साथ मांक का अखण्ड प्रवाह बहायां है। "अध्याःम-गीना" अध्याम ज्ञानको सुन्दर रचना है। "अष्ट प्रवचन" माता की सज्ज्ञाय में आपने मुनि के प्रायेक प्रवृत्ति का ग्हर्योहघाटन क्षिया है "पंच भावना में मत्व एवम् एक्टवें

भावना तो प्रमाद निद्रा से हटाने के छिये सुघोषघंटानाद सदप्य है। गुजसुकुमाछ, ढंढण एवम् प्रमंजना आदि सन्झायों में जो अध्यात्म-रस उडेछा गया है वैसे अन्यत्र मिछना दुर्छभ है। "स्नात्र-पूजा " तो आपकी मिक्तरस की श्रोतस्विनी ही है। स्तवन सङ्झाय आदि तो अनेक जैन कवियों की हजारों की संख्या में उपलब्ध हैं पर आपकी रचनाओं में अध्याग्म-रसधारा जिस रूप में छलक पडती है, वह अपनी अमिट छाप हृद्य पर सर्वदा के लिए अंकित कर जाती है। अध्यात्म-तत्व मानों आपके हृद्य में मृर्तिमान होकर विराजमान हो गया हो । स्तवनी एवम् स्नात्र पूजा आदि में भक्ति-रस की जो मन्दाकिनी प्रवाहित की है, उसकी रीडी अन्य कवियों से भिन्न है। आपके भक्ति पदों में भी अध्यात्म जैन तत्व-ज्ञान का गहरा प्रभाव नजर आता है । फ़लतः आपकी प्रमुभक्ति में, जैसे दूसरे जैन कवि भावावेश में जैनेत्व को मूल से गये हैं, वैसी वात आपकी रचनाओं में कहीं दृष्टि गोचर नहीं होती । जैनमान्यतानुसार प्रमु परमाःमा है सही पर एक व्यक्ति विशेष नहीं, अनेक हैं । हां ! गुणों की दृष्टि से उनमें एकता सहधार्मिकता अवश्य है । जैन व जैनेतर दृष्टिकोण में ईश्वर सम्बन्धी यह अन्तर है जैनेतर ईश्वरको "एक महान् शक्ति" सृष्टि कर्ता और कर्म-फछादिक दाता मानते हैं तब जैन कृतकृत्य वा सिद्ध शुद्ध मानते हैं । ईश्वरत्व प्राप्तकर छेने पर फिर कुछ भी करना उनके लिये अवशेष नहीं रह जाता अतः वे किसीको तारते हैं और न संसार में रुलाते हैं। जीव अपने भले के लिए सर्विथा स्वतंत्र है। वह अपने कार्यी द्वारा कर्म-वंघकर भवश्रमण करता, बाह्य सुखदुखका अनुभव करता है और अपने ही प्रयत्न द्वारा कर्मों से मूक्त हो. शुद्ध-स्वरूप परमात्मा पद प्राप्त कर छेता है । यहां प्रश्न हो सकता है कि तब भक्तिको स्थान कहां रहा । इसका उत्तर यह है कि कमें-निष्पत्ति के दो कारण हैं उपादान और निमित्त । मूछ कारण तो उपादान ही है पर बहुत हदतक निमित्त को भी महत्वपूर्ण स्थान है। जैन-दर्शन के अनुसार मुक्ति पाने में उपादान तो स्वयं अपनी आत्मा या उसका पुरुपार्थ-प्रयत्न ही है पर प्रभु मार्ग प्रदर्शक, प्रेरफ के ह्मपमं निमित्त कारण है। अतः उपादानको शुद्धता के लिये निमित्तका अवलम्बन भी आवश्यक माना गया है। और वहीं भक्ति को अवकाश मिलता है। हमें प्रभु से कुछ छेने व मांगने नहीं जाना है बल्कि उनको देखकर अपने शुद्ध व बास्तविक स्वरूप को स्मरण करना है और उनके जीवन बीर उपदेशों से निज स्वरूप प्राप्ति के मर्म को जानकर प्रवृत्त होने की प्रेरणा छेनी है। फर्ता-मोका हम स्वयं ही हैं । अरिहंत, जीवन-मुक्त, इसमें सहाय मार्गप्रदर्शन व वस्तुतत्वका वास्तविकरूप मौक्ष के उपाय वतलाने द्वारा करते हैं। और सिद तो कह भी नहीं सकते उनसे तो हमें केवल प्रेरणा हैनी है । उनके दर्शनद्वारा अपने शुद-स्वरूप का दर्शन करना है । उनके गुण-कार्तनद्वारा अपनी आत्माके स्वाभाविक व वास्तविक गुणों को ही संमालना है। उनकी पूजा व भक्तिहारा उनके गुणों का अनुसरण व आदर-बुदि उ:पन्न करना है। उनके चरित्र में साधन मार्ग, उसके द्विए आवःयक तियारी व अपने जीवन को तदनुरूप बनाने की प्रेरणा छेनी है। अपनी अञ्चदता व आन्निक दीर्दन्य हटाना है । और ददतर तितिक्षा, सहनशीलता सत्माय बीतरागता आदि बहाते जाना है ।

श्रीपद देवचन्द्रजी ने प्रमुक्तवनीको पुनः पुनः जिसं प्रकार स्पष्ट राज्द्रों में दुहराया है विसा अन्य द्विमीन क्रिया नहीं है। यहाँ उनकी महान विशेषता व मीक्षित्रता है। अब पाठकी को आपकी रचनाओं के कुछ जुने हुए पहींका रसास्त्राहन कर देना उचित समझना हूं जिससे उपरोक्त कथन का वे स्वयं अनुसब कर सकें।

प्रथम नोथेकर थी ऋष्यदेवक मनवन में प्रमु ने श्रीति करने का जो उपाय वनछाया गया है, वह अव्यन्त ही मार्थिक है—यथा सुनिये।

> " प्रीति अनेती पर थकी, जे तोड़े होते जोडे पद । परम पुरुषयी रागता, पकत्यता हो दाखी ग्रुणगेह ॥ "

श्चर्यत् प्रमु छ प्रांति तो पर यानी अन्य भीतिक, अगमेगुर पदार्थों छ मोह हटाने पर ही हो यक्ती है। प्रीति की डोर तो पर पदार्थों की ओर में इटाकर प्रमु के हायमें दी जा सकती है। प्रीति करना मनुष्य छा एक न्वनाव विदेश है। उसे विवर विस के माथ आप छगाना चोहें, छगा सकते हैं। केंकिन अन्य दूसरे पदार्थ और प्रमु अपने गुओं के अन्दर एक दूसरे से भिन्न गुग वाके तथा विगंधों हैं। इसिक्ये दोनों से ही एक संग प्रीति नहीं की जा सकती। इस पद के प्रथम चरणमें कहा गया है कि विदनों मालामें इमारी प्रीति पर पदार्थों व विषयादि में है, उसको तोहते हुए यदि इस प्रमुद प्रीति-उनके गुगम्यणा और दीर्तन करने जाने हैं तब एक तरफ तो उदासीनता और दूसरी और तन्छीनता अपने आन्म-गुणोंमें निमप्रता को प्रांत करते हैं।

दूमेंर पर्ने प्रमु को " आल्प्चनरूप" बताया है कि जिसके हारा अपनी बास्तविक प्रमुता प्रगट होती है । वह इस प्रकार है—

> " प्रमुक्तीने अवल्प्यतां, नित्त प्रमुता हो प्रगरे गुण राख । देवचन्द्रना सेवना, आपे मुझ हो अधिचल सुख वास ॥ "

अजिननाथ प्रभुक्ते स्तवन के प्रारंग में ही अजिनप्रमु के अनन्त गुणीकी सम्पदा की सुनकर गुणी के प्रगरीकाण होनेकी रुचि उत्तर होने का कहा गया है। दूसरे चरणों में कार्य सिद्धि तो कर्ता के हाथमें है पर निषित्त चप में अपने सहायक प्रमु मिन्ड हैं। कारण से ही कार्य की सिद्धि होती है। प्रमु के दर्शन में आप-स्वरूप व शक्ति का स्मर्ग हो जाता है—हम्ने किस सुन्दर हयान्त के साथ ऑगर, देवचन्द्र की कहते हैं।

" अज्ञ-कुल्यान केसरा खहेरे, निज्ञ-पद सिंहनिहाछ । निम प्रश्रु संके स्रीव खहेरे, आनम-शक्ति संसाछ ॥ "

अर्थान जिम प्रकार सिंध-ठावक वडांखों के हुँड में रहेने के फारण अपने की मुख्छे वैसा ही मानना है पर तक वह सिंह की देख बेता है, तब वह अपने वास्तांवक खक्य की समझ कर सिंहों के समृह में चछा जाना है। उसी प्रकार सांसारिक-उपमोगी में यूखे हुई हमारी आसा जब बीनराग-प्रसु के दर्शन करती है तब उसे अपनी बीतराग दशा व अनन्त ज्ञान-दर्शन-चरित्रादि गुणों का ज्ञान होता है और तदूप मक्त की आत्मा अपनी वास्तविक दशा को प्राप्त होती है।

कार्य-सिद्धि यदि अपने हाथ से ही हो तो फिर प्रमुक्तो तारने आदि के लिए क्यों कहा जाता है ! इसका रहस्य श्रीमद अगले चरणमें स्पष्ट करते हैं।

" कारण पद कर्ता पिणेरे, करी आरीप अमेद । निज-पद अर्थो प्रभु थकीरे, कर्ता अनेक उमेद ॥ "

अर्थात्—प्रमु कारण हैं। उनमें कर्तापने का आरोप कार्यसिद्धिमें सहायक मानकर किया गया है और उसी कर्तापने के आरोप के कारण प्रमुसे भक्त-याचक अनेक उम्मीदें व याचनाओं की मांग करता है।

प्रमु के दरीनसे क्या लाभ मिला इसका उल्लेख अगले पदों किया गया है। यादा पीद्-गलिक पदार्थीमें युख का जो अम था-वह टल गया और आत्मा के वास्तिवक मुख, आनन्द का बोध हो गया। इससे प्राहकता, स्वामित्वता, भोका-भाव रमणता दानपरिणामादि बाग्रगुण, अव अन्तर्मुखी हो गये। इसलिए प्रमु को निर्यामक (भव-समुद्र के तारक), माहण, वैध (भवरोग निवारक) गोप (पद्जीव रक्षक) और भाव धर्म दोता कहा जाता है।

तीसरे स्तवनमें प्रभु को अविसंवाद निमित्त होने से जगत जंतुओं के सुसकारक हैं। प्रभु मोक्ष-रूप कार्य के हेतु हैं। इस मावनासे बहुमान-पूर्वक सेवा करनेसे भव्य-जीवों को मोक्ष मिलता है। उपादान कारण आत्मा है और पुष्ट अवलम्बनरूप प्रभु हैं। उनकी सिहता हमारे लिये साधन रूप है अतःप्रभु-स्वरूप को जानकर उन्हें बंदन करने वाला उनकी शरणमें रहनेवाला धन्य है।

चीये अभिनन्दन-स्तवन में प्रभु से रसरीति कैसे और कब होगी इस जिज्ञासा के उठाते हुए उत्तर में कहा गया है कि पौदगलिक अनुभव के त्याग से ही प्रभुसे मिलने की प्रतीति होगी। प्रभुके गुणों की चर्चा आगे के पदों में की गई है।

पैचम सुमितनाथ के स्तवन में उनके धाध्यात्मिक गुणोका वर्णन है। अन्तमें कहा गया है "माहरी शुद्ध सत्तातणी पूर्णता तेहनों हेतु प्रभु तूँही साची " यानी हे प्रभु । मेरी शुद्धताकी पूर्णता के कारण आप ही हैं।

६वें श्री पर्म-प्रभप्तभु के स्तवन में प्रभु के संयोग से आत्मा की संपदा प्रकट होने का कहा गया है। "तिम मुझ आतम संपदार, प्रगटे प्रभु संयोग।" पारसपत्थर के संयोग के स्पर्श से लंग्हा स्वर्ण बन जाता है उसी प्रकार प्रभु के गुण व्यक्त हैं। उनके गुणों के संयोग से हमारी अप्यात्म-दशा प्रगट होती है। आत्मिसिंद में कारणमूत प्रभु का नाम निर्यामक सदश है।

चःद्र-प्रभप्रमु के स्तवन में वंदन, नमन, अर्चन, एवं गुगपान की द्रश्य सेवा चतन्त्राने हुए. भावसेवा से प्रभु-मय अभिन्न हो जाने की चतलाया है। आगे सेवा पर साननय घटाये गये हैं।

मुविधि-जिन रतरन में प्रमु दर्शनंस होनेशंड लामका बड़ा मार्मिक चित्रण किया गया है। यथाः—

" दींटा सुविधि जिणंद, समाधि रसे मर्यो हो छाछ। मास्यो आत्म-स्वन्त अनादिनो विखयों। सकल विभाव उपाधि शकी मन अवसर्यो 23 सत्ता सावन मार्ग मणी प भंचयों हो। 22 दानादिक निजमाच इता जे परवशा 53 ते नित्र सन्मुख गाव ग्रही खडी नुज द्छारे ! " मोहादिकनी घृछि अनादिनी 59 अमल अम्बण्ड अलित, स्वभाव के सांगरे रे । 22 तत्त्व-रमण शुचि व्यान भणी ते आहरे रे 22 ने समतारस धाम, स्त्रामि मुद्रा वर । 11 प्रमु मुद्राने योग प्रमु प्रमुता छन हो छाछ। 22 इण तणे साधम्य स्वसंपित ओळके हो। 33 बोलनतां बहुमान सहित रुचि पण बंध, रुचि अनुयायी बीर्य चरण घारा खंब हो ॥ ""

यह पूरा स्तवन ही कवि के इदय-म्लब्से निसृत अध्याल—प्रवाह है। निसं गाते ही इदय आनन्द विसोर हो उठता है। पाठक स्वयं इसका रखात्वादन कर देखें। निस्नविखित स्तवन में कवि कपनी अभिज्ञात्रा भी कैसे सुन्दर देंग में ब्यक्त करता है:—

> " प्रमु छो त्रिमुदन नाय, दास है ताहरो, करणानिषि यभिनाप, यह प मुद्र करो। यातम त्रस्तु स्वभाव सदा मुक्त संभरी, भासन-वासन पद्र चरण व्यक्ति सरी।"

आगे के रनवनों में श्रीनद दूसरे कवियों की मांति दीनता व्यक्त नहीं कर प्रसु के निमित्त से कपना जात्म—त्वरूप समझ कर उसकी प्राप्ति में प्रवृत्त होने की ही प्रेरणा करते हैं।

> " प्रमु-प्रमुता संभारता, जाता करता गुणप्राम । संबद्ध साधनता वर निज्ञ संबर परिणति धाम रे । प्रगट तत्त्वता भ्यावतां निज्ञतत्त्वना भ्याता थाय तत्त्व रमण प्रकाष्रता पूर्णतापे पह समाय प्रमु दींडे मुझ सांमरे परमातम पूर्णांनंद ॥ "

चारहें बायुप्त्य प्रमुकं न्तवन में उपयुक्त नत्त्व को बड़ी ही स्पृथ्ता से व्यक्त किया गया है:-

" आप अकत्तां सेवाधी हुने रे, सेवक प्रण-सिद्धि। निज्ञ घन न दिये पिण, आधित छहेरे, अक्षय अक्षरसिद्धि॥ जिनवर-पृजासे निज्ञ पृज्ञनारे, प्रगष्ट अन्वय शक्ति। परमानन्द्र विछासी अनुसर्वरे, "देवचन्द्र" पद् व्यक्ति॥ प्रमु अकर्ता हैं पर उनकी सेवा से सेवक पूर्ण-सिद्धि प्राप्त कर छेता है। प्रमु अपना धंन किसीको कुछ भी नहीं देने पर उनके आधित-सांघक उनके निमित्त कारण से अपनी अक्षय रिद्धिको प्राप्त कर छेता है। "प्रमुकी पूजा वास्तवमें अपनी ही पूजा करनी है " इस वाक्य में किवने "मानो उसके हृदय में उसका अध्यात्म-तत्त्व सजीव बोछ उठा है " व्यक्तकर कमाछ कर दिया है। इस स्तवन की प्रथम गाथामें कहा है कि प्रमु में पूज्य-भाव स्वयं प्रगट हुआ है। वे दूसरी द्वारा की गई पूजाकी कभी वांछा नहीं करते अपितु साधक अपनी कार्य-सिद्धि के छिए ही उनका पूजन करता है। प्रमु को इसकी तनिक भी इच्छा व प्रसन्नता नहीं।

ममु चिमलनाथके स्तवनमें भी प्रमुको सम्बोधित करते हुए श्रीमर् देवचन्द्रजी कहते हैं:---

" ताहरा शुद्ध-स्त्रमाव ने जो आदरे घरी घटुमान। तेहने तेहि जे नीपजे ए कोई अद्भुत तान

अनन्त-जिंन स्तवन में प्रमु-मृर्तिको अपूर्व समता से मन्य-जीवों पर होनेवाले प्रभावों को न्यक किया गया है। सर्वत्र एक ही तत्व भिन्न भिन्न शब्दोंमें परिस्फुट हुआ है।

धर्मनाथ-प्रमु के स्तवन में प्रमु के साथ अपनी जातीय एकता व्यक्त करते हुए श्रीमद्ने उनके समान ही अपने को समझने की अभिछापा प्रगट की है। स्वामी ने तो पर माव परिद्वार कर अपना आत्मिक आनन्द पा छिया और में पर-भावकी संगति व आसिक में फंसा हुआ पड़ा हूँ छेकिन फिर भी स्फटिक के समान एक ही सत्ता की दृष्टिसे-निर्मछ हूँ। परोपाधि मेरी नहीं है अतः परमान्माकी भिक्त के रंगमें अपने को रंगकर अपनी आत्माके शुद्ध-स्वस्त्य का प्राहक बन, परभाव का त्यांग करना ठीक है। मेरा आत्म-स्वस्त्य मेर द्वारा ही संपन्न होगा। मेरा सब आत्म-ऐधर्य, शौर्य, वीर्य, "प्रमु को ही मेरे मन-मन्दिर में ध्यान करते हुए "—मैं ही प्रगट कर सकूंगा।

शान्ति नाथ के स्तवन में देव-निर्मित सगवदारण में प्रभु देदाना देते हैं। उसका वर्णन है। सौर भगवान कुँथुनाथ के स्तवन में श्रीमद ने निम्नप्रकार अभिछापा न्यक्त की है। यथाः—

> " अदित स्वभाव जो आपणो रे, रुचि वैरांग्य समेत । प्रभु सम्मुख वंदन करी रे। मांगीश आत्म-देतोरे । "

अरनाथ-प्रभु के स्तवन में कार्य-सिदि के १ कारगोको आक्षा पर घटाते हुए उपादान कारण आत्मा और निमित्त कारण प्रभु को बतलाते हुए कवि के मन्त-हदय की डिमि दीन्त हो उठी है। आप कहते हैं:---

" मोटा ने उत्संग यैठा ने सी चिन्ता तिम प्रभु चरण प्रसाद, सेयक थया निजिन्ता ॥ "

मिलिनाभ-स्तवन में ६ कारकों को आसा पर हो घटाकर दनलाया है। प्रभु सेवाकी आवश्यकता

वनछाते हुए श्रीमर, फहने हैं:---

" साहर पूर्णानन्द प्रगट करया अर्णा दे। पुणावलंबनरप-खेच प्रसुत्ती तृणी दे।" पुनिमुत्रननाथ के ग्नवन में यही मात्र इन क्रव्हों में व्यक्त किया है।

" आतम आतम कर्ता, कार्य-सिक्षि नारे तसु साघन जिनराज । असु देखि प्रसु देखि कारल किंच ऊपने रे प्रगटे आत्म-समान ॥ "

२१ वें निमनाथ रनवन में कवि ने अध्यात्म-वर्ण का रूपक बहुन ही भाव-पूर्ण बांधा है।

२२ वें अरिष्ठ-नेपी-प्रसु के मनवन में आप फहने हैं कि गगी की संगतिये रागदशा बढनी है। प्रसु बीनरागी हैं इमिटिए उनमें प्रेम की जी इने में मब में पार हो जाना है।

२३ वें प्रशु पश्चिनाथ के स्नवन में प्रमु ने शुह्रता, एकता, नीहणतादि हाग मोह-रिपु पर कैसे विजय प्राप्त की-इसका सुन्दर विवेचन है । अन्त में प्रमु को बेदन कर गुणी की चित्त में रमाते हुए कवि अपने की धन्य क्रनपुण्य जन्म-सफल हुआ, ऐसा मानता है ।

श्रानिय बीर-प्रसु के ग्नयन में श्रपने श्रवगुणी पर खेद प्रकाध्य फर्ने हुए प्रसु हाग श्रपने की नारने के लिए, प्रसु में श्रनुरोध किया गया है। प्रसु का सबा मजन, प्रसु के गुणी की पहचानने में ही होता है। श्रपनी श्रामा के समक्ष दर्शन-ज्ञान-चारित्र, बीयांदि गुणों के द्रष्टांत से ही मञ्च जीव कमी को जीनकर मोल पा लेता है।

'वीक्षी' इत्यादि पदी में श्रीपद ने जैनाव आभानत्व को परिष्ठाविन कर दिया है। यहां सब उन गतवनी के पदी की उद्दृत कर देना संपव नहीं। अनः 2-५ उदाहरणी के हारा ही सहद्य पाठक सन्तोप करें।

प्रथम सीमन्यर-स्वामी के स्नवन में प्रमुप विननी बहुन सुन्दर हैंग से की गई है । सुनने ही हत्य नाच चेटगा । देखिए । शापकी श्रनोग्डी विननी । सुनिय:—

" था मीमन्यर जिनवर स्थामी धीनतही अवधारी, शुद्ध-घम प्रगटवी ते तुमची, प्रगट तेल अमारी रे। जे परिणामिक धमें तुम्हारी, ते हवी अमची धमें। श्रद्धा सामन क्यण चियोरी, यन्त्रयो विसाव अधमें। " निर्माक कड़ी के गाने हुये तो मानी अध्याप का साग कहम मिल जाना है:---

" अशुद्ध निवित्ते ए पंचरता, अत्ता करता पर नो । शुद्धनिवित्त क्षेत्रे कपचिद्धन, कर्ता थोका धरनो ॥ "

सीयन्यर-प्रमु की पैवा अवछन्त्रन व उपदेश प्रहण करने के योग्य है क्योंकि अच्छे निवित्ती को प्रहण कर संमार की कुटेबों को छोडना ही सायन मार्ग है। युगमंघर-स्त्रामी के स्तवन में पर-परिणती के रंग से बचाने की प्रार्थना की गई है। ऋष्मानन-स्तवन में "जब तक अपनी आत्म-संपदा न प्रगट हो जाय"—जगत गुरु-प्रभु की सेवा आवश्यक है। क्योंकि कार्य-पूर्ण जबतक न हो तबतक कारण को नहीं छोड़ा जाता। प्रभु मेरी सिदि के पुष्ट हेनु हैं। कारण के कार्य होता है अतः प्रभु तो स्वीकृत-कारण हैं। बज्रघर स्तवन में अपनी वर्तमान पतित दशा का चित्र प्रभु के सम्मुख बड़ी मार्मिक रीति से रखा गया है।

चन्द्रानन-स्तवन में वर्तमान काल को विषमता व जीवों की टीन सस्वता का चित्रण मुन्दर ढंगसे किया है। निमप्रमुके स्तवन में अपने अनादि भूल का घटस्कोट किया गया है कि में परभाव कर्ता, मोका तथा वंध, आश्रव का श्राहक हो गया हूँ। जड़ में रचा हुआ हूँ। आत्म-धर्म को भूल रखा है। वंध आश्रवको अपनाया व संवर निर्जिग का त्याग कर दिया है। जड़ चल कर्म और शरीरको आत्मा मान लिया अर्थात् पूर्ण रूप से विद्रात्म वन गया। पर अव सुयोग से परमात्मा को देखने से मेरा अनादि की आन्तियां मिट गईँ। प्रमु के समान ही अपनी सत्ता को जानकर उस स्वक्ष्य के प्रगटीकरण की इच्छा हुई, यह अंतरात्मा की अवन्था है। जहां पर परिणति के प्रति सर्वथा निर्राहणना हो जाता है।

. १४ वें देवदत्त-प्रभु के स्तवनमें भक्ति-भाव प्रगट करते हुए कवि-हदय बीच उटना है:---

" होवत जो तनु पांखडी व्यावत नाथ हजूर लाल रे। जो होती चित्त-आंखडी, देखत नित प्रभु-नूर लाल रे॥ "

अन्तिम अजित वीर्व्यस्तवन में प्रमु-भक्ति के गुफल की चर्चा करते हुए श्रीमद देवचः हजी कहते हैं कि: —

" जिन-गुण-राग परागथी, वासित मुझ परिणाम । तज्ञशे दुष्ट विभावतारे, सरतं आतम कामरे ॥ जिन-भक्ति रत चित्तनेरे, वेधक रस गुण प्रेम रे । सेवक निज पद पामशेरे, रसवेधित अय जेमरे ॥ "

अतीत चौबीसी के चतुर्थ स्तवन में आध्यानिक-होरी का कपक मुन्दर बना है। अवम स्तवन में वसंत ऋतु में काम खेलने का भिन्न क्ष्प से चित्रण है। १६ वें नवीचर स्नवन में प्रभु के मुख का दर्शन कर आव्या की अनादि मृख दूर हो यह इंग्डा प्रगट की गई है तथा निज्ञ स्वक्ष्य द्शा जागी-उसका वर्णन है। १९ वें अनील जिन स्नवन में "प्रभुत्ती कुल नहीं करने"। भना अपना आव्याको प्रभु के निमित्त से ही कैंना उठाता है नथा अपना कार्य सिङ कर देता है जैना कि:—

" पर फारज करता नहीं रे, सेयक पार न हेत । जे सेये तनमय धई रे, ते लहे सिय संकेत ॥ सेया-भक्ति भोगी नहीं रे, न करे परनी सहाय । तुज गुण रंगी-भक्तनों रे, सहजे कारज धाय ॥ "

कुनान्त-तिन रनदन में श्रीपद एउने हैं कि में मेबा का फल नहीं मांगना बल्कि सकी छेवा फल श्रवस्य पिछेगा। श्रतीन चीशेगी के १० रनवन प्राप्त नहीं हैं। श्रीनिम नीन नो श्रप्ताय हैं। चीबीगी एवं बाद जिन रनवन पर नो श्रीपदन रवयं विवेचन लिखा है। माबी को स्पष्ट कर दिया है। बीर निबंध रनवन दाल में मानि-रम की गंगा नोगंग बहाई है। गीतम स्वामी का "विरहका विद्याप" नो बड़ा ही फरणोत्पादक है।

सिद्धाचल-रनवन में वहां मुनियेनि श्चिम प्रकार मिद्धना प्राप्त की इसका नी निष्ठ मा अफित कर दिया है। श्रामाको उदबोधन करने दुए श्राप कहने ई श्चि:—

" आतम थाये गया हो चितन, आतम याय गया। एरपाये गयता है चितन, काल अनन्त गया। हो चितन ॥१॥ गार्गादिक सुमितने चेतन, पुद्गल-यंग यम्या। हो चेतन ॥१॥ घोगति माँह गमन करतां, निल आतमने दमा ॥ हो चेतन ॥२॥ झानादिक गुण रंग घरीने, कर्म को मंग रमा। हो चेतन ॥३॥ आतम अनुमय घ्यान घरीनं, शिव-ममणा सु रमा ॥ हो चेतन ॥३॥ परमातम सु घ्यान करतां, यस थिति में न ममा। हो चेतन ॥॥॥ "त्यानम्ह" परमातम साहिय, स्वामी करीने नमा ॥ हो चेतन ॥॥॥

माधु की पांच भावनाओं में आध्यात्म का कैमा आक्षेक पुट दिया गया है। वह देखने बीग्य है। इनमें प्रथम में "शुन "का, दूमरी में "नव" का महन्व वनलाका नीमरी और चीथी में गाव और एक्टव में आभा को बहुँ ही मार्थिक कान्द्रों में उदबोधिन किया गया है। मुनियों की भावनाओं में क्या प्राप्त होनी है। प्रारंभ में ही फहा है:—

> " शृत भाषना मन थिर करो, राख्ने मनने छेद्। त्रप भाषना काषा दम, वाम बेद उमेद्।। सन्ध भाष निर्मेट दशा, निज ट्युता रफ भाष। त्रप भाषना आत्मगुण, सिंह, साधना द्वाय॥ "

नप-माबना में नपस्त्री सुनि की भूरि यूरि प्रशेषा की गई है:---

भविषण तप गुण थाद्रो, तप नेजे रे छीजे सहुक्षे । विषय विकार सह रेख, यन गेजे हो भेजे अप-यमे ॥ जोरो तथे रन्द्रिय तप नदा, तपताणो हो कमें स्टणहार॥

जिण साधु तप तळवार थी, स्ट्यों छे हो श्रिर मोह गर्थद् । तिण साधुनों हुँ हास थूं, निन्य बेंद्र हो तस पद अर्रावद् ॥ घन्य नेह जे घन-गृह, तजी, तन स्नेहनों करी छेद् । निर्भग यनवासे घने, तपवारी हो तो अभिग्रह जेह ॥ तीसरी सन्त्र-भावना में चेतनको उद्बोधन करते हुए कहा है:--

"रे जीव साहस आदरो, मत थाओ दीन।
सुख दुःख संपद आपदा, पूरव कर्म आधीन॥
कोघादिक वसे रण समे, सहाा दुःख अनेक।
ते जो समता में सहे, तो तुझ खरो विवेक॥"

तेरे वैभव का मान कैसा !

" चक्री हरिबळं प्रतिहरी, तस विभव अमान । ते पिण काले संहर्या, तुझ घन स्यो मान ॥ हा हा हुं तो तूं फिरै, परियणनी चिंत । नरक पड्यां कहो तुझने, कोण करै निचित ॥ "

रोगादि में धैर्य-धारण करे !

" रोगादिक दुख उपने, मन अरतिम घरेय। पूरव निज कृत कर्मनो, प अनुमव देवरे॥" देह पर प्रीति कैसी!

" पह शरीर अशाश्वतो, खिण में सीझंत। प्रीति किसी ते उपरे, जे स्वारथवंत॥

" आगळ पाछळ चिंदु दिने, जे विणसी नाय !

रोग़ादिकथी निव रहे, क्रोधे काडि उपाय ॥

अन्ते पिण पहने तज्यां, थाये शिव सुख ।

तो जे छूटे आपथी, तुझने स्यो दुख ॥

प तन विणसे ताहरै, निव कोई हाण ।

जो ज्ञानादिक गुण तणी, तुझ सावै झाण ॥

अष्ट-प्रवचन-माताकी सज्झाय में मुनि-जीवन का रहस्य विशद ढंग से खोला गया है। प्रारंभ में कहा गया है कि अयोगी भाव के इञ्छुक रुचि वाले मुनि मन, वचन, काया, इन तीनोंकी गुप्ति रखते हैं। मन को तत्व चिन्तन, वचन से मौन और काया से स्थिर रखते हैं। साधना में तल्लीन रहने से योगों का उपयोग बाहर नहीं हो पाता बल्कि गुप्त रहता है। पर वह अवस्था विरला ही उच्च साधक को थोड़े समय तक ही प्राप्त होती है अतः साधारणतया इन ठीनों योगों की शुभ प्रवृत्ति में जोड़े जाते हैं। उनको प्रवृत्ति वर्तन में जो दोप उत्पन्न होता है उससे वे उपयोग विवेक पूर्वक बचे रहते हैं।

"भाव अयोगी करण रुचि, सुनिवर गुप्ति घरंत । जो गुप्तिना रहि सकै, तो सुमते विचरंत ॥ व्यवहार-क्रिया करते हुए मुनि की दृष्टि परमार्थिक हो । कहा है :— " साव दृष्टि दृज्यतः क्रिया, सेवी छहो शिवमित्त । "

अन्तर्रिपयोग ठीक रहने के कारण ही सम्यक् दृष्टि की किया व मोग को निर्जरा का कारण माना गया है। बाहर में आसक्ति नहीं होती। तत्वदृष्टि से किया करते हुए भी वैव से वह सुनि अछग रहता है।

प्रथम समिति का कार्य गुनि क्रम उत्सर्ग-मार्ग का अपवाद वतलाते हुए ज्ञानच्यान में रिथर सुनि उटने, विचरने की चपलना क्यों करते हैं। यह प्रश्न उटाकर उत्तर में श्रीमद् वतलाते हैं कि सुनि निम्नोक 2 कारणों में उटना है।

" मुनि उठे वसही बकी. जी, पामी कारण च्यार । जिन वंदन (१) प्रामांतरे जी (२) के आहार (३) निहार (४) ॥

जिनवंदन, प्रामानुप्राम विद्यार, आहार निहार, थी क्यों किया जाता है:---

" परम चरण संचर घनजी, सबे जाण निन दीट ।
श्रीच समता रिच उपजेंजी तिणे मुनिन प इंट ॥
राग बंधे स्थिर मावधी जी, ज्ञान विना परमाद ।
बीत्ररागता रहताजी, चिचरे मुनि साख्हाद ॥
प शरीर मवमूल है, तसु पोपक आहार ।
ज्ञाय अयोगी निच हुवंजी, त्यां अनादि आचार ॥
कवलाहारे निहार हेजी, पह अंग विवहार ।
घन्य अतनु, परमात्माजी, जिहां निद्यलता सार ॥
पर परिणति छत चपलताजी, केम मुकस्मे रेपह ।
थेम विचारी कारणेंजी, करे गांचरी तह ॥

अर्थान् महानचिर्त्र-संपन्न, संवर-धार्क, सर्वज्ञ जिनेकर या उनकी सृतिं को देख समता भाव की पित्र रुचि उत्पन्न होनी है इसिलिए मुनि जिनदर्शन, वंदन करें। एक स्थान में अधिक समय पर रहने में स्थान व व्यक्तियों के प्रति मोह हो जाना है। इससे ज्ञानच्यान में वाया पड़ती है। प्रमाद बहना है। अतः वातराग-भाव की पुष्टि के लिए मुनि विचरता रहे। एक ही स्थान पर हेग नहीं जनाने। जहां तक अर्थाणी भाव प्राप्त नहीं हो जाता। शरीर के लिए आहार की आव-स्यकता है और आहार करने पर निहार यानी मलम्बादि का परिहार स्वामाविक है जतः आहार और निहार के लिए मी सुनि को स्थानांतरिन होना पड़ता है। चलना होता है। पर चलते समय हिंद नीची रहे-नीवीं के रक्षण में साववान रहे।

द्सरी याषा-समिति कायिक प्रवृत्ति का कारण वतलाते हुए आपने कहा है-ववन-गुप्ति रूप टासरी मार्ग का अपनाद मापा-समिति है। सर्वथा मीन रहना संगव न हो तो हित-मित साथ, निर्दोष वचन बोछे । आश्रवरूप वचन न बोछे । मापा पर्याप्ति प्राप्त हुई है उसका उपयोग स्वाध्याय, स्वरूप-बोधक, परोपदेश के छिए करे । जो वाक्य-शक्ति आश्रव मार्ग है उसे मुनि निर्जरा में परिणित कर दें । प्रभु गुण की स्तवना अपने स्वरूप को संभाछने के छिये व अन्य-जीवों को प्रतिबोधित करने के छिए धर्मोपदेश करे । सूत्र बांचना वस्तु-स्वरूप इत्यादि अपने बोध के छिए करे । श्रीमद् कहेते हैं:

" योगजे आश्रव एद हतो, ते कयों निर्जरा रूप रे।
छोद्द थी कंचन मुनि करे, साध्यता साध्यचिद्रूपरे॥
अल्पहित परिहत कारणे, आदेश पांच सिज्झाय रे।
ते भणी अशन वसनादिका, आश्रय सर्व अववाय रे।
जिनगुण स्तवन निज तत्वने, जोयवा करे अविरोध रे॥
देशना भव्य प्रतिवोधवा, वायणकरण निज वोधरे॥ "

तीसरी समिति शुद्ध आहार प्रहणरूप-एपणा समिति है। मूलतः आत्मा अनाहारी है। अतः उत्सर्ग मार्ग वही है। उसका अपवाद निर्दोप आहार-भिक्षा वृत्ति से छेना है। काया पुद्गल निर्मित है और यह आहार-भोजन रूप पुद्गल प्रहण करती है अतः आहार देह घमें है। आत्मा घमें नहीं। तब आहार प्रहण क्यों किया जाता ! इस प्रश्न का उत्तर श्रीमद् इस प्रकार देते हैं:—

"इम पर त्यागी संवरी, न गहे पुद्गल खंध । साधक कारण राखवा, अश्नादिक संवंध ॥ आतम तत्त्व अनंतता जी, ज्ञान विना न जणाय । तेह प्रगट करवा मणी जी, श्वित स्वाध्याय उपाय ॥ तेह जेह थी देह रहेजी आहारे बलवान । साध्य अधूरे हेतुनेजी, केम तजे गुणवान ॥ ततु अनुयायी वीर्यनोजी, वर्तन अश्चन संजोग । वृद्धयप्टि सम जाणिनेजी, अश्चनादिक उपभोग ॥ जो साधकता निव अहेजी, तो न प्रहे आहार । याधक परिणती वारवाजी; अश्चनादिक उपचार ॥ "

अर्थात्—आत्म तत्त्वका बोध ज्ञान हारा होता है। उसके प्रगटीकरण के लिए श्रुत का स्वाध्याय कावश्यक होता है। श्रुत-स्वाध्याय देह से और देह के लिए आहार की आवश्यकता है अतः जहांतक साघक पूर्ण नहीं हो जाता साधन हेतु को गुणवान छोड नहीं सकता। मुनिगंण आहार देह को भाड़ा देने के लिए ही करते हैं। पुष्ट बनाने व स्वाद प्राप्ति के लिए नहीं। अतः जहां विना आहार लिए भी साधना में विष्ठ प्रतीत न हो तो मुनि आहार न करे। शारीरिक शिक्त की क्षीणता से साधनसिद्धि में बाधा पड़ती है इसके लिए ही आहार लिया जाता है।

भिक्षा के लिए जानेपर यदि संयोगवश निर्दोप भिक्षा न मिले तो मुनि को खेद नहीं करना

चाहिए। उमेनपबृद्धि निर्ज्ञग हुई, सपछकर ग्रान्त रहे । मैं छत्र अनाहारी पद पाऊँगा-यह भावना में रहे ।

चीयी समिति संयम सायक बाद्य बस्तुओं के प्रहण का-स्याग विवेद वा उपयोग प्रवेक करने की संदितक वेपना नामक हैं। सबे परिव्रह परियागक्ष का यह अपवाद मार्ग है कि संयम छे तप की बृद्धि के छिए आवस्यक बस्तुओं को कम से कम मात्रा में प्रहण करें और उनका विवेक्ष्य के उपयोग करें। इसमें ज्येष का कम-बंब नहीं होता है।

परिव्रह स्थागी परमात्र विरक्त मुनि साधवीचिन मयौदित उपकरणी को भी संव्रह क्यों केरे ! इसके उत्तर में, प्रश्चेक उपकरण रखने का कारण समझाने हुए श्रीमदने कहा है कि:—

> " याव अहिसकता कारण मणी, द्रव्य अहिसक साघि । रज़ोहरण मुख चित्रका घरे, चरवा योग समाधि ॥६॥ शिवसाधननो मृत्र ने झान है, नेहनो हेनु सन्हाय। ने आहारे ने चिंछ पात्र थीं, जयणाप ग्रह्याय ॥ ७:१ याला तरुण नरनारी जेतु ने, नम्न दुर्गछानी हेतु। तिणे चांखपट प्रदी सुनि उपदिशे, शुद्ध घरम संकेत ॥८॥ इंस मधक शानादि परिसद्दे, न रहे ध्यान समाधि। फल्पक आदिक निरमोधी पण, धारे मुनि निरयाधि ॥९॥ केप अरेप नदीना बानना, कारण दंह प्रदेत । द्र्यंकालिक मगबर सामग्री, तन थिएता ने तंत्र ॥१०॥ लघु सतीय मचिन ग्जादिनी बारण दुन्द संघट्ट। देखी पुँत रे मुनियर नेहथी, प प्रव मुनि यह 1991 पुर्वत्य क्षेत्र प्रहण निक्षेत्रता, द्रव्ये स्वणारे तास । मात्रे आतम परिणति नव नवी, गृहतां समिति प्रकाश ॥१२॥ बाघक आय अद्वेष पणे तजे, साचक जे गतराग । पूरव गुण रक्षक पोपक पण, नीपन तब छिव मारा ॥१३॥

शर्यानः — "माव शहिसा " — आत्म गुण रक्षण के छिए, "इत्य-श्रहिसा" प्राणि-मात्रको श्रावस्यक है। छोटे नीबोंकी ग्ला के छिए रनेहिग्ण, सुखनिक्रेज श्रावस्यक है। इसीप्रकार मोल साधन में ज्ञान श्रीर ज्ञान के छिए स्वाध्याय श्रीर स्वाध्याय के छिए श्राहार। श्रीर शहार छो जयगा पूर्वक प्रहण करे तथा इसके छिए पात्रों को श्रावस्थकता होती है।

वास्क व युवा नरनारी को मुनि के नम्न ग्हेनेसे दुगेन्छा (घुणा) हो सकती है अतः इसके निवारण के लिए, जनसम्पर्क में ग्हेने वासे मुनि के लिए चौछपहा महण करने का विधान किया गया है । मच्छरादि और शीनादिमें व्यान में विचलतानंचत्त विक्षेपना होती है अतः समाधि के छिए कछक-ओढने का कपडा रखे । नदी की गहराई के ज्ञान करने के छिए दंड रखे व छोटे जीव तथा घूछ इत्यादि को दूर करने के छिए रजोहरण रखे । मुनि जतना से पौद्गछिक वस्तुओं को उठावे व रक्खे । भाव से आत्म परिणितियों की सावधानी से गवेषणा करता रहे । वाधक भावों को हैंप-रहित हो, छोड़ें तथा साधक कारणों को रागरहित हो, प्रहण करें ।

पांचवीं समिति "परिष्ठापविका" है । यह मलमूत्र तथा अधिक व अमस्य आया हुआ आहार, टूटे फूटे संयम के उपकरण आदि को शुद्ध तथा एकान्त स्थानों में विसर्जन कर दिये जाने रूप है । श्रीमद् देवचन्द्रजी कहते हैं कि शरीर है । वहां मल मी उत्पन्न होता ही है । उससे किसी प्राणी का नुकसान न हो उस स्थान में विसर्जन कर देना चाहिए । संयम के वाधक, आत्म विराधक उपिष्ठ आहार व शिष्यादि को मुनि छोड़ दें । श्रीमद् कहते हैं:—

" संयम बाघक आत्मविराघनारे, आणाघातक जानि । उपि अशन शिष्यादि परदेव रे आयति लामपिछानि ॥ "

तीनों गुप्तियों में मन, वचन, काया की चपछता को छोड़ आत्मा में मन स्थिर करने का विधान है। मन से धर्म, ग्रुद्ध ध्यान ध्यावे। आर्त ओर रौद्र ध्यान छोड़ दे। वचन में मौन रहे तथा स्वाध्याय करे। काया से स्थिर नहीं यदि चपछता है तो वह बंधन है। चंचछ भाव आश्रव का मूछ है।

अन्त की कलशरूप ढालमें मुनियों के गुणों की स्तवना की गई है।

प्रमंजना-सती की सज्ज्ञायमें भी आध्यात्मक-तत्त्वका निरूपण वड़ा ही सुन्दर हुआ है। राज-कुमारी "प्रमंजना" हज़ार सिलयों के साथ स्वयंवर मंडप जा रही है। रास्ते में साध्वी मंडल मिलता है। वे राजकुमारी को संसारके स्वरूप का वर्णन कर उसे धमें में उद्यम करनेकी प्रेरणा देती हैं। प्रमंजना की उन साध्वियों के कथन की वास्तविकता प्रतीत हो जाती है, पर उसका सखी-समुदाय उसे स्वयंवर मंडप में जाकर पूर्व-निश्चित वरको वरने की इच्छा पूरी करने को कह कर फिर धर्म-साधना में लग जाने को कहता है तब प्रमंजना ने जो कहा उसे किव स्वयं कहता है कि "धर्म प्रथम करवी सदा, देवचन्द्रनी वाणी रे छो।" साध्वी-समुदाय भी उसके विचारों की पृष्टि करता हुआ राजकुमारीसे कहता है कि प्रथम मोगों में फंसकर फिर धर्म-आराधना करना यह उसी प्रकार है जैसा कि पहिले जानवृज्ञकर की वड़ में गन्दा होना और फिर स्नान करना। उत्तम पुरुषों का आचार यही है कि पहिले गन्दा ही नहीं होना—

" खरड़ीने विक घोयबुं रे कन्या, पह न शिष्टाचार । रत-त्रयी साघन करोरे कन्या, मोहाधीनता वाररें । सुग्यानी कन्या॥ " साध्ययां राजकुमारी को और उपदेश करती हैं कि माता-पितादि कुटुम्ब तथा सांसारिक वस्तुएँ सब क्षण-मंगुर हैं । शत्रु मित्र हो जाते हैं और भित्र शत्रु । यह मेरा व पराया इत्यादि सब आरोपित-कल्पित-मानी हुई बातें हैं । पोद्गिकिक पदार्थों की मोहकता में पड़ना-मूळ है । पुद्गळ- जड क्ष है और हमारी आध्या-चैतन्य-स्वयावी है। इस तरह के प्रमेद प्रगट होने पर आध्य-ज्ञान को कीन रोक सकता है:----

> " पुष्पाल ने पर जीव थीरे अल्पा, कानी अद विद्यान " द्याचकता दूरे दलों रे अल्पा, दिव कुण रोके झानरे । सुरवानी कन्या ॥

इन अस्न्य उपहेशी की मुनकर राजकुमारी प्रभेजना चमाइन हुई और आधा व संसार तथा उसकी तथा पीरमलिक बस्नुओं की अग-भेगुरता पर विचार करने छरी। विचार की तत्मयता में उसके कमीकी निजेग होने छरी। अपनी ध्यानावस्था में उसे अपना आध-बोध भान होने छगा और वह बोछ उठी। उसे कवि के शब्दों में सुनिये—

> " तय प्रयंत्रना चिन्तवे रे अप्या, तृष्टे अनादि अनन्त, कत्तां योका तत्त्वनोरे अप्या, सहन अछत महन्त रे॥ "

इस प्रकार उसे आध्यात्मिक ध्यान करने हुने उमे कैनस्य ज्ञान हो गया ।

गजसुकृषाल युनि के मध्याय में अध्यात्मक-मका प्रवाह अच्छे देगमे किया है। गजसुकुमाल पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण के महोद्दर लयु-धाना थे। माना का उन पर अगाय में है था। मगवान
नेमिनाथ के द्वारिका-धुने के उधान में पधारने पर श्रीकृष्ण के माथ कुमार भी प्रमुदर्शन फरने गये।
वहां प्रमु ने देशना में आध्यात्म-मध्यका निरूषण किया कि सम्यक् दर्शन, ज्ञान और चारित्र ही।
वाग्तिथिक सुन्त की खान है और शुद्ध-आध्यिक माव द्वारा ही ये त्रय कन आत्मा को अन्दर् देदिष्यमान हो उटने हैं। पर्गिक्णिन संयोगी भाव है। ये शुद्ध स्थमाव नहीं, विभाव अवस्था है। कर्गीदि
दर्शाय में आत्मा स्वमावतः निर्म है। एसी अहा पूर्वक आत्मा में स्थिर् रहने में शुद्ध स्वमाव प्रकट
होता है।

पशु के बचन सुनकर गजसुकुणाल मजग हो जाता है और विचारने छगता है। जिसे श्रीमद फहते हैं:—

> " रेटाविक प मुझ गुणमंहि, तो किम रहेचुं मुझ प माहि। जेहबी बंघाये निज तत्त्व, तेहनो संग कर कुण सत्त्व॥"

घर आकर कुमार अपनी माना औ देवकी से कहते हैं कि मां। प्रशु देखना बड़ा ही सुन्दर है। सुनकर माना प्रसन्न होती हैं। पर जब कुमार गनसुकुमान माना से भगवान के पास स्वयं दीशा हैने को कहते हैं तो माना का हदय हक-हक हो जाना है। वे कुमार को संयम की कटोरता, वेनना कर कुमार का मन संयम में विसुन्त करना चाहनी हैं नव कुमारक सुंह ने जो उद्गार निकलते हैं उसे श्रीमद के शब्दोमें पाठक। सुनिये। और देखिए इनकी मार्थिकता:—

" माताजी निज घर श्रांगण जी, यालक रमें निरमोह रे। ठेम मुझ श्रातमधर्म में, रमण करंता किसी बीहरे॥ " · और साथ ही साथ कुमार माता से ऐसे बचन कहते हैं कि जिन्हें धुनकर देवकी विवश हो चुप रह जाती हैं।

> " मात तुमे थाविका नेमिनी, तुमें पम न कहाय रे। मोक्ष-सुख हेतु संयम तणो, किम करो मात! अन्तरायरे॥

" नेमिथी कोई अधिको हुवै तो मानियै तास वचन्न रे। माताजी कई नहीं भाष्त्रिये, मोह रे संयम में मन्न रे॥"

दीक्षा छेते ही कुमार की मोक्ष—साघन की उत्सुकता देखते ही वढ़ती है। प्रभुसे सिद्धि पाने का शीघ्र मार्ग वतलाने का अनुरोध करते हैं। प्रभु ने कहा कि आत्म—तत्त्व में स्थिर हो जाओ, उदय—कर्म के भोगों को सममाव पूर्वक सहन करो। एक रात्रि को प्रतिमा धारण कर आत्मभावों में धीरज के साथ तल्लीन हो जाओ।

राजकुमार इमशान—भूमि में जाकर ध्यान में छीन हो जाते हैं। "सोमिछ ब्राह्मण" जो राजकुमारका खप्तर था—उधर से आ निकछा। अपनी पुत्री से कुमार विवाह न कर मुनि बन गये थे इससे वह—कुमार को मुनि—वेश में ध्यानास्थ देखकर—कोधसे जल उठा और मुनि के मस्तक पर मिट्टी का पाल बनाकर, उसके भीतर अपि प्रज्विलत कर दी। मस्तक जल रहा हे—उस समय मुनि चिन्तन करते हैं—वह अपूर्व है। पाठक उसे श्रीमद के इस पद हारा सुने:—

" व्हन-धर्म ते दाह जे अग्निश्री रे, हुं तो परम अदाह अगाह रे। जे दाहो ते तो माहरो धन नथी रे, अक्षयिनमय तत्व प्रवाह रे॥ "

इति

छेखकके उद्गार—

देवचन्द्रकी पद पुष्पाविल, जो पिंदरे भविजन "अगर"।
महकत आत्म-सुगन्घ, निरमल हो शिवपुर-डगर॥
भव्य "भ्रमर" अति लुष्य मये, चल रस अतिनीरो।
प्रीति-रीति अतिलाय छांडि पुद्गल-रस फीको॥
पान करत निंद जात उदि तन-मन सुधि विसराय।
मोद्दन प्रीति अनूप लस, निज-घर जात समाय॥

તરૂણી સુખી સ્ત્રી પરિવર્ધા રે, ચતુર સુણે સુરગીત; તેહથી રાગે અતિ વર્ણ રે, ધર્મ સુષ્ટયાની રીત રે. પ્રાણી. [સમક્તિના સકસક માલની સન્ઝાય] [શ્રીયરો[વિજયછ]

श्रीयद्योविजय उपाच्याय कुन नन्त्रार्थगीन के विवेचक श्रीमद् ज्ञानसारजी

[क्स्हः-श्रीयुन संबर्धा नाददा]

उपाध्याय यहाँ विजय है। सन्दर्श और अटारहरी दानी के जैन द्यासन के तेजस्वी नक्षत्र थे। उनके जैसी पाण्डाय प्रतिमा विग्छ हो दृष्टिगोचर होती है। आपने साहित्य निर्माण भी बहुत अधिक क्ष्म में क्रिया है। संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी और गुजराती, चारी सापाओं में आपकी केस्त्रनी चछी। न्याय और चैन नन्वज्ञान पर तो आपका केस्वन बहुत ही प्रदासन हुआ है ऐसे महाविद्यान का स्मृति—मेहिर बनवाया गया है, यह जैन समाज के लिए बहुत हो गौरव को बात है। महायुक्षों की कृतियाँ ही हमें पथ-प्रदर्शन करती है और उनके आदर्श चरित्र बेंड प्रेरणादायक होने हैं।

स्पाध्यायको के साहित्य पर रिष्टियान करने पर वे पिछले जीवन में आध्यात्मासिमुल विशेष हो गए प्रतीन होते हैं। संसव है श्रीपर आनंद्यनको के पिछन का प्रमाव मी इसमें बहुन कुछ प्रेरणाइएक हुआ हो। मेश्कर में जानसार, आध्यात्मसार आदि प्रेय तथा भाषामें समनाध्यक, सुमाविश्वनक पर शिवि उसके उक्तवक उठाइरण हैं। संद है कि ऐसे महारुव्य की अनेक रचनाएँ विगत २५० वर्ष जैसे थोड़े काछ में ही छूत हो गई। प्राप्त रचनाओं में सी छई प्रेयो की तो एक एक प्रति हो सिछी वे इससे उनहीं बहुन सी रचनाओं का प्रचार हुआ ही नहीं सिछ होता है। गजरबान के अनेक जान मण्डामें का इसने अवलेकन किया है, इससे यह बान और भी पृष्ठ होती है। यहाँ के ज्ञान-मण्डामें में उपाध्यायजी के कुछ प्रसिद प्रेयों की छोड़ कर अविकाश प्रेयों की प्रतियों हो प्रायः नहीं सिछनों। २८ वी हाताकी में जैन विहानों में जो प्रीड अनिया एहणे देखनेमें आती थी, उसमें कमशः हास होता गया प्रतीन होना है। उपाध्यायजी के बाद श्रीपद देखनेहाँ। में जैन नचकान और आध्यात्मिक केममें विश्वर अनुसब देखने को मिछना है। उनकी आध्यात्मिक प्रेयणा का योत संगट व सुखनान में विद्याप्ता हि। उपाध्यायजी के समझालीन विहानों में वित्यक्तियजी, मेवित्यक्ति, सेवित्यक्ति, अति विदेश कर्ण डेक्ट के सेव्य है।

द्वशीयको जनान्द्री में एक अध्यात्मिक महारुष्य का हम किर दर्शन पाते हैं । वे हैं खरतर-गच्छीय योगियन श्रीमद् ज्ञानमार्जी । आनेदबनजी की एचनाश्री में आपका अगाव प्रेम था । उस पर जैसा चिंतन-मनन आपने किया ऐसा संमवतः और किसीने नहीं किया। आपके आनंद्यन चौवीसी, वालावबोध और कुछ पदों पर प्राप्त विवेचन अत्यंत मार्मिक हैं। उपाध्याय यशोविजयजी के कुछ पद, पंक्तियाँ आपने इन विवेचनों में तथा अन्यत्र मी उद्भृत की हैं। अजितनाथ स्तवन के बालावबोध में उपाध्यायजीके "शुद्ध माविकनी विल्हारी" और कुन्थुनाथ स्तवन के विवेचनादि में 'जबलग आवें नह मन ठाम 'पद की पंक्तियाँ उद्धत की हीं पर वहाँ आपने इस पद को आनन्द-धनजी का माना है उपाध्यायजी के तस्वार्थ गीत पर तो आपने अच्छा विवेचन किया है, जिसे प्रकाशित किया जा रहा है। इससे पूर्व श्रीमद ज्ञानसारजी का संक्षित जीवन-परिचय दिया जा रहा है।

श्रीमद् ज्ञानसार्जी का संक्षिप्त जीवन-परिचय

उन्नीसवीं शताब्दीमें श्रीमद् ज्ञानसारजी के नामसे एक श्वेताम्वर जैन यति प्रतिमा-सम्पन्न किन सत्त योगी एवम् राजमान्य महापुरुप हो गये हैं। उनका जन्म सं. १८०१ में वीकानेर राज्यांतर्गत् जांगछ के समीपवर्ती जैणलैवास में हुआ था। उनके पिताका नाम उदयचंदजी सांह श्लीर माता का नाम जीवणदेवी था। उनका जन्म नाम 'नारायण' था। और इसी नाम से उनकी सर्वत्र प्रसिद्धी हुई।

सं० १८१२ में मारवाइ में मीवण दुक्ताल पड़ा था। कुस समय से यह खरतगच्छ के धाचार्य श्री जिनलामस्रि जी की सेवा में रहने लगे थे और उन्होंके तत्त्वावधान में उनका विद्याध्ययन हुआ। सं. १८२१ में उन्हें दीक्षा के योग्य जानकर पादक्राम में मिती माह शुक्ला ८ को उक्त श्री पूज्यजी ने यति-दीक्षा दी। दीक्षा के अनन्तर उनका नाम "ज्ञानसार" रक्ता और अपने शिष्य श्री रायचंद जो के शिष्य रूप से प्रसिद्ध किया। सं. १८३४ तक वे अपने गुरुजों के साथ श्री जिनलामस्रि जी की सेवा में ही रहे। इसी बीच में इनके गुरु श्री रायचंद जी का त्वर्गवास हो गया। सं. १८३४ के आश्रिन कृष्णा १० को गूड़ा में श्री पूज्यजी मी स्वर्ग सिधारे। इसके पश्चात् सं. १८३५ में स्त्रिजी के ७ शिष्य अलग अलग हो गए। तब से ज्ञानसारजी अपने गुरु के बड़े गुरुश्राता श्रीराजधर्मजी के साथ रहने लगे। प्रथम चातुर्मास उनके साथ ही पाली में किया। वहाँ से विहार कर राजधर्मजी नागौर आए और ज्ञानसारजी किशनगढ़ चले गए। किशनगढ़ जा कर राजधर्मजी के पास नागौर वापस चले आए। उसके बाद सं. १८४५ तक आप अधिकांश उन्हों के साथ रहे थे।सं. १८४५ —४७ के चातुर्मास जयपुर में किए।

सं० ९८४८में जब वे जयपुर में थे, तत्काळीन आचार्य श्री जिनचंदस्रिजी ने इन्हें वहाँ से विहार कर महाजन टोळी जानेका आदेश दिया । उनके आदेशानुसार इन्होंने पूर्व देश की और तिहार- कर सं. १८४९ का चातुर्मास महाजनटोळी में किया । वहाँ से संघ सिहत विहार कर श्री सम्मेत- शिखर तीर्थ की यात्रा की । सं. १८५०-५१ के चातुर्मास अजीमगंज आदि में करके सं. १८५१

माय ग्रुक्या ५ को दिनीय बार थी सम्मेन-शिखर की यात्रा की । वहीं मे वापस पश्चिम की ओर विहार करते हुए से. १८५२ का चानुमांस संगवतः दिन्छी में किया । वहीं से छीटने हुए से. १८५३ में जयपुर पर्यार । पूर्व देश के नाना अनुसर्वों का सजीव वर्णन आपने 'प्रव देश वर्णन"में किया है ।

कहा जाना है कि जिस समय आप जयुर पयोर ये इस समय के महाराजा का पट - हिस्न बीमारी के कारण दिनोदिन स्व रहा था । रोग—प्रतिकार के अनेक उपचार किए गए, किन्तु कोई फल न मिछा, नब किसी राज्याधिकारोन राज्यगुर खुरनर गच्छीय यति श्री की याद दिछाई और यह मी कहा गया कि वे राज्य के दिए हुए कई गाँबों की उपज छेते हैं। अनः उनमें हाथीं की चिकित्सा के छिए अवस्य कहना चाहिए। महाराजा ने इस मनको पसंद कर यिनिजी को हाथी स्वस्य करने को कहछाया। यति जी को पशुचिकित्सा का समुचित ज्ञान न होने से वे चितित हो ठेठ और इस कार्य के उपशुक्त किसी चतुर व्यक्ति की खोज में छंगे। उन्हें श्री ज्ञानसार जी का समरण हुआ और तुरन्त अपनी चिना का कारण बनाकर गजराज को चिकित्सा का मार उन पर सीया। श्री ज्ञानसार जी ने हाथी के रोग का निदान कर के अपने असाबारण बुदि—वैभवंग्र हाथी के पेटमें उनी हुई बेछिको निकाल कर उन्ने पूर्ण स्वस्थ कर दिया।

इस घटना से महाराजा प्रतापसिंह्जी चमछित है। इस श्रीमद् के सद्गुणों के प्रति श्रहा ग्लाने छा। गए। श्रीमद् सो प्रायः राजसमा में जाया करते थे। राज्यकीय विहाने जि विहर्-गाणी कर अपनी विहना ने महाराजाको प्रमावित कर दिया। खास खास प्रसंगों पर उनकी उपस्थित और आशीबांद परमावस्थक समझे जाते थे। इन आशीबांदा पर कांवनों में से से. १८५३ माय कृष्णा ८ को रचित 'सुमुद्रबद्ध प्रनापसिंह गुणदर्णन' पर स्वापज्ञ-वचनिका', एवस 'कामोदीपन' प्रथमें दी सवैधे उपस्थम हैं।

राजाग्रह आदि कारणंपि सं. १८५३ से १८६२ तक के १० चानुमांस जयपुर में किए। वहाँ पर 'संबोध—अप्टोजिंग शादि ९ इतियाँ रचाँ। उसके बाद कृष्णगढ़ गए। सं० १८६३ सं. १८६८ तक के ६ चानुमांस कृष्णगढ़में किए। कृष्णगढ़ के गजा भी इनका बहुत सम्मान करने ये। यहाँ श्रीमद प्रायः आध्यास-चिन्तन किया करते। इनका अध्यास अनुमव बहुत बढ़ा चढ़ा या। वहीँ श्रीमद ने आनंदवन ची के गृह रहम्यमय २२ तीर्थकों के म्लवनी पर विवाद आछोचनात्मक 'बाजाबबोव' बनाकर सं. १८६६ मात्र शुक्छा १२ को संर्ण किया। जिन स्तवनी पर वह सं. १८२९ में अवनक सन्त करने रहे ये। उन पर अपने परिपक्च अनुमव का उनयोग कर के उन्होंने सुसुश्च जनना का परम हित—सावन किया। अन्तुन 'बाजावबोव' में इनका आध्यास अनुमव पद-पद पर अवक्च है। साथा भीड़ और जैनशैकों को राजस्थानों है। कुष्णगढ़ में इनके उपदेश से चितामणि परिवनायजी के मेदिर का जीगोंद्वार और देड—श्वदारीपण सनार्शह से हुका।

सं० १८६९ में वहां से विहार कर अनुंत्रय तीयी पर्यार । फाल्गुन कृष्णा १४ की यात्रा कर

वापस बीकानेर आऐ वृद्धावस्था के कारण उन्होंने शेप जीवन वहीं विताया । वीकानेर में उनका प्रभाव वढ़ता गया । उनका जीवन भी परम सात्विक और आध्यात्मिक था । अनेक छोक-प्रपंचों में भाग छेते हुए भी वह उदासीन एवं निर्छेप रहते थे ।

इन दिनों का उन्होंने सर्वथा त्याग कर दिया था और एकांतवास उनको विशेष प्रिय था। वीकानेर के गोगा दरवाजे के वाहर वाला स्मशान (टटों की शाला) ही उनकी तपोमृमि थी। कहते हैं कि पार्श्व यक्ष (देवता) उनके प्रत्यक्ष थे। वे समय-समय पर रात्रि में प्रकट होकर नाना विध ज्ञानगोष्टी एवं मृत-भविष्य-संबंधी वार्ते किया करते थे।

महाराजा स्र्तिसंहजी की इन पर अत्यंत मिक थी। वे स्वयं इनके दुई।नार्थ अनेक वार पघारते और पत्र-व्यवहार वरावर होता ग्हता। महाराजा के छिऐ पच्चीस पत्र हमारे अन्वेषण में भाये हैं। उन खास रुक्कों को पढ़ने से श्रीमद् के प्रति महाराजा का विनय, पूज्यभाव, अटलश्रद्धा, अविरल भिक्त, तलस्पर्शों हार्दिकमाव और अनेक ऐतिहासिक रहस्यों की जानकारी होती है। वीकानेर में रहकर उन्होंने वहुत से प्रंथों की रचना की। यहां की प्रवृत्तियों के बहुत-से स्मारक अब भी विद्यमान हैं एवं आपसे संबंध रखनेवाले अनेक चमत्कारिक प्रसंग सुनने में आते हैं।

सं. १८८९ में आश्विन और मार्गशीर्ष के बीच ९८ वर्षकी दीर्घायु प्री कर श्रीमद् ज्ञान-सारजी स्वर्ग सिधाए । रवयं ही अपनी आयु के संबंध में 'पाइर्वनाथ-स्तवन ' में कहा हैं कि:—

> साठी बुंघ नाठी सब कहि है असियखिसी छोकोक्ति कही। मैं तो अठाणुं अपर झो ', मो में बुद्धि कही कहां ते .रही॥ गौड़ीराय कहो बड़ी बेर भई।

खनका अग्निसंस्कार वर्तमान शंखेश्वर पार्श्वनाथजी के मंदिर के पीछे हुआ था। उस स्थान पर आज भी एक समाधि-मंदिर विद्यमान है, उसमें प्रवेश करते ही सामने के एक आछे में उनकी चरणपादुकाऐं प्रतिष्ठित हैं, जिन पर निग्नोक्त छेख उस्कीर्ण है:—

सं. १९०२ वर्ष मार्ग झुदी ६ पं० प्र+ज्ञानसारजी पादु....

श्री ज्ञानसारजो के इरसुख (ईपेनंदन), खूबचंद (क्षमानंदन), सदाप्तुख (सुखसागर) नामक तीन शिष्यं थे, जिनमें-प्रथम दोनों की दीक्षा सं. १८५६ से पूर्व खीर तृतीय की सं. १८६७ से पूर्व हो चूकी थी। इनमें से क्षमानंदन और सदाप्तुख सं. १८९८ में तक विद्यमान थे। एकवार खूबचंदजी की मरणांत अवस्था में श्री गौड़ी पार्स्वप्रमु की कृपा से शांति हुई थी, जिसका उद्धेख श्रीमद् ने स्वयं अपने गौड़ी पार्स्वनाथ-स्तवन में किया है।

इन तीनों शिष्यों के अतिरिक्त इनके शिष्य-प्रशिष्यों में थे चतुर्भुज, मैरजी, कीरपाचंद, छज्ञमन आदि का भी उल्लेख पाया जाता है । इन में से चतुर्भुजजी के शिष्य जोरजी थे जिनका देहांत सं. १९५५ में हुआ था। बस यहीं से उनकी संतित विच्छित हुई। श्रीमर का एक चित्र इसार 'ऐतिहासिक जैनकाव्य संप्रह' में प्रकाशित है, और भी किनने ही चित्र उपछन्य हैं। श्रीमर के बाद्य वेष-सुद्धा के संबंध में एक नात्काछीन पत्र महत्वपूर्ण है अनुः उस पत्र का आवश्यक उदरण नीचे दिया जाना है:—

तुं नन्दा श्री बाबा जी साहिवां सी बन्दना १०८ बार रिम्बंडे की । आपके गुणप्राम याद करना हैं । किसी छाय(क) है नहीं कृतकृत्र क्योकर हैंगा । सरण नो आया, इहां कह्यु नहीं हुं कमाया, एक आपके दर्शन नो पाया बाकी जनन के गनाया ।

अब वह सुनिसुटा कान पर चरमा ओवा केंद्रे पर हस्त में तमानू हब्बी, दुमक दुमक चाछ, से बचनाएत झरनादिक अनेक आनन्दकारी मावमयी मावृरी म्र्न कब देखूँगा। धाया अब कहां दर्गन पाऊंगा, जो है पाया हम जन्म में और नो क्र्छु नहीं में क्रमाया एक यहीं दर्शन अपूरव पाया, इस ध्यान में जनम जनम का पाप गमाण, इनना तो खुब ही पुण्य क्रमाया आप ध्यान में सुख निर्देश को रखोगे तो में बन्य बन्य कहाया, पिवाय इसके और कुछ है नहीं।

पत्र बाबाजी थी १०८ ज्ञानसारकी महाराव के चरणी में ।

श्रीपर् ने अपना किंचिन् पश्चिय अपनी बहुचरी के प्रवें परमें दिया है:— साघा माई निइचे खेळ अखेळा । सोई निइचे खेळा। सा० ना इमरे कुछ जात न पांता एवं मेरा आचारा। मदिरा मांस विवर्तिन जो कुछ, उन धर में पैसारा । श सा० वर्तिन वस्तु विना जो देवे, मी सबही इस स्रावे । उन्हों वा फाम् अकरापिन, घोषण तर सब पीवे ।श सा० परिक्रमणा पांचू नहीं छारक, जामाथिक के धेसे। माधु नहीं जन के जिन्हें, जिन घर विन नहीं पैसे ।३। सा० आवक सायु नहीं को साधवी, नहीं हमरे आयकणी। मुर्था अदा जिन संबंधी, सो गुरु सोई गुरुणी ।॥ सा० नहीं हमरे कोई गच्छ विचारा, राच्छवासी नहीं निन्दे। गच्छवास रत्नागर सागर, इनक्वं अहनिश बन्दे । सा० थापक उत्थापक जिन घाटी, इनसे रीछ न भीजे । न मिछणो न निन्दन धंदन, न हित ब्रहिन धरी ते ।६। सा० न इमरे रन रो बाद स्थल, चरचा में नहीं खींजें। किया रुचि किया न रागी, इम किरिया न प्रनीत । जा॰ किरिया बढ़ के पान समाना स्वनारक जिन मासी। सोई अवंचक यंचक में। नो, चडगिन कारण दाली।८। सा॰ पैंकिरिया कारक कुँ देखें आतम अति ही ही है। पंचम काले तैन उहीपन, यह अंग श्री दीने १५ सा० स्वगच्छ नायक नायक मेरे, इस हैं सब के दासा। पै आखाप संखाप न किणायुं, नहीं कोई इरख उदासा ।१०। सा०

पड़कमणा पोसा न करावे, करता देख्या राजी ।
पचखाणे व्याख्यान न आग्रह, आग्रह थी न विराजी ।११। सा०
गो हमरी कोड करे निन्दा, किंचित अमरस आवे ।
फिर मनमें जग रीति विचारें अब अति ही पछतावे ।१३। सा०
कोघी मानी मायी छोमी, रागी हेषी यौद्धी ।
साधुपनानो छेश न देश, न अविवेकी अपवोधी ।१४। सा०
प हमरी हम चर्चा माखी, पे इनमें इक सारा ।
जो हम ज्ञानसार गुण चीन्हे, तो हुवे मवदिष पारा ।१५। सा०

उन्होंने वृद्धावस्था में गच्छ परंपगदि से अछग होकर एकाकी रहने और विहार करने का उल्लेख 'आनंदघन चौबीसी वाछावबोध' में इस प्रकार किया है — '

कि वै प० ज्ञानसार प्रथम महारक स्वरतरगच्छ संप्रदायी बृद्धवयोन्मु स्विगच्छ परंपरा संबंधी हठवाद स्वेच्छायें मूकी एकाकी विठारियें कृष्णगढ़े सं. १८६६ बावीसीनुं अर्थ छिल्छुं।

यद्यपि श्रोमद् का अनुभव एवं ज्ञान वहुत वढा—चढा था, फिर भी उन्होंने कई प्रंथों में मंद—बुद्धि आदि शब्दों हारा अपना परिचय देकर विनम्रता प्रदर्शित की है। देवचंद्रजी कृत 'साधुपद सज्झाय के बालाववोध' में लिखते हैं—

हुं महा निर्वृद्धि को वज्रठार छुं जैन ऐ जिन्दो छुं म्हारो माजणो अति अल्प छे । सञ्झाय कर्तानो माजणो मोटो छे ।

इसी प्रकार 'चौवीसी वालावबोध' आदि में भी अपनी लघुता व्यक्त की है। 'आत्मिनिदा' प्रथ तो उनकी विनम्रता का प्रतीक है।

बाध्यात्म-साधना और तत्त्वज्ञान के अतिरिक्त वैदक्त में भी श्रीमद् की अच्छी गित थी। केखन-कछा और तत्संबंधी सामग्री के निर्माण में वह अद्वितीय थे। उनके बनाए हुए पूठे, फाटिये, परड़ी आदि आज भी नामांकित वस्तुओं में हैं, ।जन की मजबूती ओर झुंदरता की बराबरी में दूसरे नहीं आ सकते। अब भी वे 'नारायण साही' नाम से सुप्रसिद्ध हैं। केखनदौछी प्रीद और छिप बड़ी मनोहर थी। उनकी हस्त-छिप हमारे संग्रह में पर्याप्त है, जिन में से एक पत्र का फोटो हमारे 'ऐतिहासिक जैन कान्यसंग्रह' में प्रकाशित है। वह अनेक हुनरों में निपुण थे, यह बात स्वयं 'बोसी' में छिखते हैं:—

हुनर केता द्दार्थ कीधा ते पण उदय उपाये सीघा।

जस उपजायो जस उदय थी, मंद छोम ते मंदोदय थी ॥२॥ (१२ वां स्तवन)

इसके संबंध में उनके गुण-वर्णनात्मक काव्यों में अन्य मक्तों ने भी कहा है कि: —
कर्मे विश्वकर्मा सी हुनर हंजार जाके वैधन में जान सब ज्योतिष मंत्र तंत्र की ॥

(नवछराय कृत गुणवर्णन)

नुन्होंने कह विख्यात विद्वानों और कवियों की कृतियों पर विदाद गय ववनिकाएँ छिखी हैं, जिनसे उनके स्पष्ट वकतृत्व और निडर समाछोचक होने का परिचय मिछता है। श्रीमद आनंद-धन जी की चीवीसी के वाछावबीय में श्री ज्ञानविमछत्रिजी को खूब आई हाथी छिया है, और कहें स्थानों में उनके वाछावबीय की कड़ी समाछोचना की है। अंत में उन्होंने छिखा है कि:—

" ज्ञानिवमल्यारि महापंडिन हुंना, तेर ए उपयोगी नीक्ष्ण प्रयुंत्यों हुंन तो तेर तो समर्थ अर्थ करी सकता पण तेर ए तो अर्थ करने विचारणा अत्यन्त न्यून ज करी ने में ज्ञानंसार मारी बुद्धि अनुसारें सं. १८२९ थी विचारतें सं १८६६ थी कृष्णगढ़ मध्ये द्यो ल्लियों पर में इत्तर बरसां विचार विचारतों ही सी सिढी थई तेइवी मोटी पंडित विचार विचार लिखितों तो संपूर्ण अर्थ थाती। पर क्षानिवमल्यार जी ये ती असमल ज्यायारी ज्युं सीदों वेच्यों करें नको तीरी न समझे तिमि ज्ञान-विमल्यारिजी ये पिण लिखतां लेखण न अरकावणी एजं पंडिताईनी लक्षण निद्धार कीनी अर्थ व्यर्थ अर्थ समर्थित नी गिणनां न गिणी।"

इसी प्रकार गण्ड वक्तृत्व के नाते आनंद्यनजी जिसे महापुरुषी पर भी एक जगह कुछ आछोचना की है। आध्यात्म-अनुभवी श्रीमर् हेन्चंद्रजी की हो कृतियों पर उन्हींने बाछावबीय रचा। उनमें भी कई स्थानों में उनकी विशद समाछोचना की है। 'साबु सज्झाय बाछावबीय' में तो कई बातें वड़ी ही मनारंजक और ग्हम्यमयी कह डाछी हैं। उपयोगी होने से उनके कुछ अवतग्ण यहां देते हैं:—

धुत छ ए ती कथन शायिक माने छ परंशायिक माने आतम वित्त ने मिद्र मां तो अयेदो-पचारी पर्श छ ए तिरोघामास छै....

पृह तुं जे क्यु ए क्षायिक मार्च कथन ते विशेष इति सटंक । हिंबे आगल सन्झाय नी गाथाओं मां स्यो वर्णन करस्यो । परं ए कविराज नी योजना नो एज सुन्झाय छै तेज बात ने गटर पटर आगे नी पाले नी आगे हांकर्ता चाल्यो जाय ते तमे पोते विचारी लेज्यो संबन्ध विरुद्ध अगोपांग मेरा कविता वार्रवांर एक पर गुंआणों ने पुनरिक्त दूपण किवना ते एही ज सन्झाय में तमे ही लोह लेज्यो एक निज पर रस जाग्या गुर्खों छै ते गिण लेज्यो एक हो मुझ ने दूपण मत देव्यी । बांजु एह नो छूटक लिखन समनयाथयी सतमंगाथयी जुन्त छै स्वरूप नी कथन नी योजना एमां तो गटर पटर छै ए बिना बीजी महित छूटक योजना सटंक है । योजना कर्बी ए पिण विद्या न्यारी है, कीसुरी कर्ताये शिष्य थी आद्य स्टांक करायो, आप थी न यथो । वर्छी ए बान खुळी न लिखे तो ए लिखन वांचण वाले मुर्खेशेखर जाणे ए कारण लिखें । गुजराज में ए कहिवत छै— "आनंद्यन टेकशाळी, जिनराजसूरि वावा अवव्य वचनी. उ० यशोविजय टानर टुनिया पोते थाप्यो तेज स्थाप्यो, उ०

^{*} આ કહેવન એમને કચાંચી મળી દરો ! આજે આ કહેવન ગુજરાતમાં તા વ્યણી નથી. વળી આ લખાળુમાં અનેતિહાસિક મળુાના અંશ વધુ છે. જેથી આતે સંપૂર્ણ પ્રામાણિક કહી ન શકાય. સંપા૦

दैवचंद्रजी ने एक् * पूर्व नुं ज्ञान हतुं तेथी गटर पटरिया, मोहनविजय पन्यास ते छटकाछा मुझ नै आगछ अर्थ छिख्वुं छे ते अक्षर प्रमाणे अर्थ छिखीश किंहां सरखो अर्थ दीसे ते माहरो दूषण न ़ काइस्यो अक्षर विरुद्ध अर्थ माहरो दूषण सही।

अठारहवीं शताब्दी में मोहन—विजय अति छोकप्रिय कवि हुए हैं उनके 'चंदरास'का प्रचार बहुत जोरों से था । उस पर दोहों में जो सुंदर और सजीव समाछोचना की है, वह समाछोचना— पद्मति का एक अच्छा उदाहरण है।

इस प्रंथ का विशेष परिचय आगे दिया जायगा। किववर वनारसीदासजी के 'समयसार' की भी कुछ आछोचना 'आत्मप्रबोध—छत्तीसी' में की है।

जयपुर कोर बीकानेर के नरेशों पर श्रीमद के असाधारण प्रभाव का उल्लेख आगे किया जा चूका है। इन के अतिरिक्त जैसल्लमेर—नरेश ग्रजसिंह भी इन्हें बड़ी श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे। जयपुर के महाराणा ज्ञानसिंहजी से भी उनका अच्छा संबंध विदित होता है। कहा जाता है कि राणा जी की दुहागिन (क्रपाहीन) राणी प्रतिदिन उनके पास आकर विनती किया करती थी की गुरुदेव! पसा कोई मंत्र दीजिए जिससे महाराणा मेरे वश में हो जाय। उन्होंने उसे बहुत समझाया पर राणी किसी तरह न मानकर यंत्र देने के लिए विशेष हठ करने लगी। नत्तव श्रीमद ने उसे एक कागज पर कुळ लिखकर दे दिया। राणीकी श्रद्धा ओर श्रीमद की वचनसिद्ध से महाराणा की राणी पर पूर्ववत् कृपा हो गई। लोगों के महकाने पर जब महाराणा ने यंत्र के संबंधमें उनसे पूलताल की तो उन्होंने कहा, 'राजन्! हमें इन सब कार्यों से क्या प्रयोजन! अंतमें यंत्र खोलकर पढ़ने पर ''राजा राणी छुं राजी, तो नारायण ने कंई, राजा राणी रुसे, तो नारायण ने कंई '' लिखा मिला। इसे देखकर महाराणा आपकी निस्पृहता से बड़े संतुष्ट हुए। महाराणा के आशीवाद में एक कविता भी उपलब्ध है।

श्रीमद ने सत्रहवीं शताब्दी के शेषाई के परम योगिराज आनंदघनजी की चौवीसी और बहुत्तरी पदों का चिंतन अपनी यौवनावस्था से प्रारंभ कर अंतिमावस्था पर्यंत किया था। अतः उनके जीवन पर आनंदघनजी के अनुमवों की गहरी छाप अंकित हो गई थी। आनंदघनजी के पद उन्हें अति प्रिय थे। उनके कई पदों के उद्धरण 'चौवीसी-बालावबोध,' 'आध्यात्मगीता वालावबोध' ओर 'साधु सज्झाय बालावबोध' आदि में दिए हैं। श्रीमद के बहुत्तरी [७२]आदि पदों पर योगिराज आनंदघनजी के पदों का प्रमाव बील्कुल स्पष्ट है। इसीलिए कई आचार्यों ने उन्हें 'लघु आनंदघन' विशेषण से संबोधित किया है।

श्रीमद् के जीवन-चरित्र की बहुत बड़ी सामग्री हमने संग्रह की है। परंतु विस्तार-मय से बहुत-ही संक्षेप रूप से यह निबंध छिखा गया है।

⁺ આવા પ્રસંગ અન્ય સ્થળે અધ્યાત્મયાગી આનંદધન સાંથે બન્યાના ઉલ્લેખ મળે છે. સંપા૦

उपाच्याय श्रीषद्यशोतिजय ग्रुंफिन श्रीयद् ज्ञानसारगणिकृत वाळाववोध ग्रुक्तम् श्री तत्त्वार्थे गीतम्

[राग-त्रयन्त गुन्दयन्हार, विधित]

त्रैन कही कर्युं होत्रे परप्रगुरु, जगनगुरु, त्रै० गुरु इपदेख विना जग मृहा, दरमण जैन विगोवे ॥ प० । त्रै० ॥१॥

इग नवन में दोष नी बनलावण छै । श्रद्धावान शुद्ध जैन दर्शन ने ओळखवांछते शिष्य नी प्रश्न छै । शो परमगुरु । सो जगनगुरु ! तिहां गुरु शब्द ने लक्ष्म-शुध्योपदेखांग गुरवः शुद्ध सिद्धा-न्नानु जाई जैन दर्शन ना उपदेखा—उपदेश दाना नेने गुरु छहींने । ने आचार्य । ने परमञ्चासी गुरुख परमगुरु । लक्ष्म गुरु परमेखर परमात्मा केवलज्ञान दरीनी थी पृष्ठ छे—छहीनी स्वामी जैन क्युं होवे । नाम जैन दरीन मण्शी सिद्ध क्युं छर हुवे हैं

गुरु उपदेश दिना नाम गुरना उपदेश नै अमधे जन मृहा मुगध मोळा प्राणी जैन दरीन ने दिगोहं ग्या छै, जैन दरीन ने निन्ता ऋग्धी ग्या छै। परं गुरु केह्या एक छै । निरमायी, निरमदी, निर्मन्ती निगेन हर्ण्यादी, निगेन हर्ण्य कियाद प्रवर्थी, शुद्ध तत्वीपदेशी, स्थानुगम्सर बचना, पह्या गुगेना उपदेश दिना गैमीगृहायी जै जैन दर्शन ने तुत्छ दृष्टि मृह कियादादी, जिनमेपवारी प्राणी। जैन दर्शन में उपमी अप(वा)दनथी नी ग्राय अणजागना विरुद्ध साध्य करता जैन ने दिगोई रहा छै।

कदित कुपानिधि स(म)नल झीले, कर्म मैल ने घोते। बहुर पाप मल अंग न घारे, शृद्धकृप निज्ञ जोवे॥ प०। जै०॥२॥

फहिन नाम एहचूं प्रश्न करने कर्ते क्यानिय क्याना निवान, एग्मेकर एहुचूं कहे-उपदेश है। अहां श्रा ट्यांनेन देशक्रिय सक्यों ! से जैन दर्शन ने खुद्र ओळजना बाँछे, ते प्रथम शाती सम राग हैं पे गहिन से सम परिणामी पणा नूं रमक्य तक तेमां और नाम गरक रहे। एनके अन्य मतवादियें दिननी कीविक्रवाद आवर्ष। कोई कथन संबंधी तेन निवी ती रिण पाने ती समता प्रवर्त । तेहबी प्राणी क्रमे-जानावरणीयादि महामेक ने बांबे नाम आजा ने कजळी करे एनके आवद्य था आव्यी क्रमेक्य तक ने सुक्षि संवर्श भी निर्वण में तिहबी यथी आजा बहुर नाम कर पाय-प्राणितपातादि सक मेक ने अहानिस अव्यक्ति में प्रवर्ति क्या में नाम आजा सक्य केंग में ते मेक्से न बारे नाम न लगावें एनके कज्यों गई। तेहवी थयी आजा सक्य ने साक्षाकार करवानी रवप करें

रवप करती छती शुद्ध निर्मेछ कर्म रज रहित निजरूप पोतानी अछेच, अमेच, अनंतज्ञान अनंत दर्शनमयी आत्म स्वरूप ने जोवे नाम स्वरूपे प्रत्यक्ष करे, नाम साक्षात्कार करे, एतछे स्वरूप प्रकट करे।

स्याद्वाद पूरण जो जाणे, नय गर्भित जस वाचा । गुण परजाय द्रव्य जो बूब्रं, सोई जैन है साचा ॥ प० । जै० ॥३॥

फिरी ते आत्मा केहनी थयों स्याद्वाद नाम स्यात् पुरस्सर नाम कथंनित् वाद कथने सिंहत जैन दर्शन ने जो जाणे जिकों ओळखे । एतछे स्यादित, स्याद्नास्ति स्यादित्वास्ति इत्यादि ना सर्व गर्मित रहस्य ने जाणे । विछ ते आत्मा केहनो एक थयो छे ! स्यादित्त प्रमुख सप्त मंगी ने जाणने करी ने जस वाचा जेहनी वाणी बोछनों एहनों थई गयों छे । एतछे कोई तेह थो एक सम्बन्धी बात करचां छतां तेह ने पाछों प्रत्योत्तर सप्त नये गर्मित सिंहत हीज दे वितण्डावादी न हुने । एहनों थयों छतों इञ्य शब्दे धर्मास्तिकायादि छए इञ्य ने भिन्न मिन्न छक्षणें करी बूझे समझे । तिम ज इञ्य इञ्य दीठ गुण रह्या छे, तिमज पर्याय रह्या छे ते सर्व ने जो बूझे, जो समझे । एने एतछा में समझी छेज्यो केतछो एक छिखूं पानों छोटों । सोई नाम तेहीज जैन नाम जैन दर्शन साचा नाम साचो सत्य छे । अनंत केत्रछज्ञान केवछ दर्शनिये माख्यों ते ए छे ने आगामी काछे पिण केवछी एक मान्ना हीनाधिक न उपदिससी । स्यात् कथने रिहत नेगम संग्रहादि सात नये रिहत, इञ्य गुण पर्याये रिहत अनंता तीर्थंकर केवछी न उपदिससी ।

किरिया मृदमती जे अज्ञानी, चालै चाल अपूरी। जैन दशा उन मांहें नांही, कहै सो सब ही झूठी॥ प०। जै०॥४॥

में के किरियानाम रुकंत किरियानादी, मृहमती मूरख बुद्धि, अतएव एथीक ते अज्ञानी किम जिन दर्शन नूं रहस्य अणजाणता वा मुग्ध छोकोने वंचवा कारणे वाह्य कर किया दिलावे । ते किया रूप जाछ में मोळा प्राणी रूप मृग आवी फंसे । पछी तेओना दृष्टिरागी थया छता । तेओ कहे ते साचूं जैन दर्शन संबंधित जाणी ने । तेओ कहे तिम धर्मरुची थका प्रवर्ते । तेओ देव ने अदेव कही बतावे । कुधमें जैन थी विरुद्ध ने जैन ग्रुद्ध कही बतावें । आप थी अन्य ने कुगुरु कुपात्र कही बतावें । आप थी अन्य ने दिखावान ने छिगिया कही बतावें । परं परमेश्वरो नो तो पारणा-मिक धर्म छे तेने—'विवहार नयच्छेए तित्यच्छेओ जओ मणिओ '—एहवों कहीने रुकंत कियाजाळ में फसावी दे । ने परनेश्वरे एहवूं कहूं—'एगंते होई मिच्छतं '। तेथी अप्ठी उछटी वाछ पोतें चाछे अन्य ने चछावे । जैन दशा नाम जैन दर्शनमां उक्त-कही साधु नी दशा-मुद्धा दीसती दोसे तो पिण उन मांहे नाम तेहवी मुद्धा धारियो में नाहीं-नहीं । एतछे ते वग पंखी नी वृत्ति मुद्धा देखी ने मरमस्यो नहीं । ते मुद्धा हारख्यंखी नी छकड़ी परें जाणज्यो । यथा जिम हारख्यंखी एक पगे वृक्षनी हाळी पकड़ बैसे । बीजो पग चूंचकाने राखे, चूंच में छकड़ी राखे तेथी तेने

सबं पंत्री महानपत्ती जाणे परं कंधारे ने पंत्री उहतां ने गळकंदळ चीड़ी हवे नेथी 'ची गल्यी पा थी सुन नी कहड़ी माही पाठा उठासे लेंचवायी एक पंत्री निगळी सुने कहड़ी केई ने निम नी निम निमी वैसी जाये। ए छठानें बंचक किया जामीन्यों। नेथी नेकाना कथन में न प्रवर्तन्यों। केहि आई हम कहित्ये तेको नी सिहान्त वाचे छै। नी नेकी नी छथन छां न मानवी ! निहीं छिन्-नेको पोताना मन संबंधी कथन मिहान्तोमां नार्वे तेट्छा नांह नी मिहान्तेक प्रमामें कथन एको जाय ने जिहां प्रजाननियों ने एका नी, हयामनियों ने दयानी, मनोनियों ने मननी, किया-मित्रेयों ने कियानी निश्वे वाहियों ने निश्वे नी पारणामिक वाहियों ने परणाम नी, काल वाहियों ने काल नी छथन स्थानी ने कथन स्थानी में अध्या छनों सन संगी मन नय नी छथन स्थानी ने पोताना कथननी छुछ्यना बनीने, अन्यनी न्यूनना। नेथी ने छहे ने सर्वे हर्ते।

पर परिणित अपणी कर माने, किरिया गरव गहेन्द्री । उनक्षं कहीं जैन क्यूं कहिये, सो मृग्ज़ में पहिन्द्री ॥ प० । जि० ॥५॥

परं इंन्क्टन को ते- -() वी इंन्डिं। परं ते पीने केहवी छै परपिनित नाम आसिष्ठ भ्यत्प थी निम्न नेशी पर दड़ नेशी मंबीदन कुमचादि पर्रागर्ड परगम्बी छनी दड़ छंबैवि बर्रार काम मांगादिक नै बरावची छठी उदम प्रबर्चनायै प्रवर्चनी, मन में पहली दिवारनी " वा तन ताना ती कंगाल ही गना " देवी ए रहस्य प्रक्रारी ए दार्गर कही गहिस्य की क्रिया वर्ग निनार्थे । परं णुद्दी नथी जागरी किया पह धर्मा छै आत्मा नी बर्म नथी। क्रिया नै आत्मवर्मी पर्गी मानरी दिन गर किया शुन्य व्यानै प्रदर्शती अन्य झानदान अध्यक्तिया को ती देखी नै पहर्त्तू ती न दिचारै परमेक्रे-क्रिक्सवहराव्यमा नाम किया न्दनाक छै । ने पिग देवक क्रियान छे नी ते क्रिमे न विचारें ? कियाना गर्वे अईकार में गहेली उन्मन शहूँ नकी है। उनकी नाम तेहवा किया हवी ने एउटे निकेश्व किया ने परमेकर आप ही सिंद सावन न क्सी, ने विना झन होटे परम नाविक षाग्यामिक परमेका नूं जैन दर्शन किम जायी बाय । देशी रुक्षेत किया रुक्षी में देन दर्शनी क्यूं ऋँहरी क्षुं कर क्रयों चाय नाम ने चैनो नहीं। क्रयं-"एगेने होड़ निच्छत्ते" इति जिन दचन प्रामात्रान । " एनचे देहवा ने जैन दर्शनों न ऋहाय किम निहां छित्नूं जैन दर्शनम्ं छहतुं महाप्राह असाई असम्बी, निर्गत हरवादी, आम गर्बणी, एत्सह भी संबद्दान, अदादान, तःवहची पहुंचामी चैन दर्शन छम्नाय ने जे अमिट्ड, मायावी, मराची, इट्यादी, खाल स्वरूप नी अज्ञाग मद सप थीं निहर, अग्रहीं, नाबाताब नी अगहेशी, जड़ नहीं कियाबादी छनी सब छे.क समसे एहवूं कहें देन संपूर्ण अस में छै ने मुखों में पहिला अप्रतासी।

> त्रेन यात्र सद द्वानी यांहें, श्चित्र साधन सरहित्यें येख देख संका नहिं कीत्रे, यात्र स्टासी रहित्ये ॥ ५० । जें० ॥६॥

प्हवूं जग गुरे उपिद्स्यां छतां तत्त्व गेविषए परमेश्वरथी फिरी प्रश्न पूछ्यो स्वामी महािक्रयावान् देखी धमे इम जाणूं ए कहें ते साचूं। ने तेन देख्यां अमे जाणूं ए साधु नथी, मूर्चवान् जैन दर्शन छे, ने आप फरमायो तेहवा तो कहयो न मानवो, तेहवा ने जैन दर्शनी न किहवाय। तो कुरमावो नी स्वामी जैनी केने किहये! एहवूं पूछ्या परमेश्वर नूं वचन। जैन नूं माव छतां पणूं सर्वनाम सरवे ग्यानि में छे कथं! जैन तो पारणामिक धर्म छे ने परणाम ने नाम शुद्ध परणाम ने हीज शिव साधन नाम मुक्ति नूं कारण सरदिहये सरदिहणाराखीजे। एतछ "शुद्ध माव एव मुक्ति कारणं स्थात्" यथा—

—ः दोहाः—

नमुक्कारसी व्रत नहीं, करती क्र्र आहार। भाव शुद्ध ते सिद्ध है, क्रूरगड्ड अणगार ॥१॥ भाव शुद्धता जो अहेतो कहा किया को चार द्रढ पहार मुगते गयो, हत्या कीनी च्यार॥२॥ [एक महक्तिः]

फिरी जगतगुरु प्रश्न पूछवा वाला आत्मार्थी में जैन दर्शन में अत्यंत परिपाक करवा कारणे कहैं तमे मारुं मेष ओद्यो मुंहपोती देखीनें शंका नाम मन संबंधी पहनी मरम न कीजें नाम न कीज्यो जे परमेश्वरनें ए मेष छे! फिरी परमेश्वरे माषो—पढमे पोरसिज्झायं बीप झाणं तीए गोयरिकालं चउत्थे पुणरिव सिज्झायं, रात्रे पढमे पोरसि सिज्जायं, बीप झाणं, तीप सयण कालं, चउत्थे पुणरिव सिज्झायं ए आचरणा जोह ने फिरी महात्तपस्वी, बाह्येन्द्रिय दमनी जोई ने तेनें विषे मुनिनी शंका न कीज्यो पत्रले तेजेने देखी मन में इम न जाणस्यों परमेश्वरे सिद्धान्तो में माख्या तेहवा मुनि ए छे तेथी तेहवाओ ने देखी ने तेओथी उदासी माबे रिहये। एतेले तेजो ने देखी ने सराग माबे न रिहये नाम न प्रवर्तीज। इम न जाणीजे। ग्रुद्ध आत्म स्वरूपानुजाई जैन दर्शन ने ए प्रवर्ते छे। एउनों आसेवना थी हूं ग्रुद्ध जैन दर्शन पामीस एहवूं न ते जाणवुं। किम ते महा मायावी छता मोळा छोक तेही ज थया मृगने तेउ ने पोताना मतरूप पासमां नांखवा कारणे वंचक किया प्रवर्ती रह्या छै। तेथी मूली ने तेहवाओ थी सरागी न रिहये। अकियावान थी कियावान महा मायावी है। तेथी तेओथी सरागी पणे प्रवस्थों कैत तकाल पेट में पहना फिल्या घाली दे तेथी जैन धर्म थी पृष्ठ थाय।

ज्ञान सकल नय साधन साध्यों, किरिया ज्ञान की दासी। किरिया करत घरत है ममता, एही गलै में फासी॥ ५०। जै०॥॥

फिरी कोई कहिस्ये अवंचक कियाकारी हुनै तो पिण नाणी सासोसास एक में जे कर्मनी निर्जरा करें तेतला कर्म दिल्या नरकनी तीन नेदना सिहतो नारकी एक कोड़ नरस में निर्जराये। तथी झान सकल नयझान ने समस्त नाम साते ही नयरूप साधने कारणे साध्यो एतले साध्य साधन भाने झान ने सर्व नये साधी ने जोयो नाम सात नय रूप साधन कारणे ज्ञानरूप कार्य सिद्ध कीजे तो ज्ञाननी केहबीक मुल्यना जणाय ते छिन्दू-ए सन नय सम्मत ज्ञान एक दिसा नै थापीजे नै एक दिशायें किया थापी जोहरी, नहुंगें ज्ञान आगळ किया किबीक जणाय । ज्ञान राजा प्रायः दीसे ने किया दानी बांदी प्राय निजर आने ।

यथा दंदा; मदोक्तः—

पूर्व कोड देयोनता, किया कठिन जिन कीन । कुमड़ बकुरडू नरकगित अशुद्ध मात्र तें छीन ॥१॥

ज्ञान सूर्य प्राय, किया सज्जुआ प्राय । इति सटेंक । एइवा । किया ने करत नाम करें आहरें परं स्थे कारणे किया ने आहरें ते छिहूं—करन है ममना नाम मता ने यारणां छतां ते ममना स्ता ! सुझ ने छोंक कियावान देखां ने एइवूं मन में जाणस्ये । जे छात्रोमां पिण एइवूं ज छिसें छे । यथा "यः कियावान सः पण्डिन" ए समना आस्या । वा ए मनमें महा कियावान एको छ । वा एया बणा प्राणी सुझ ने प्रजन्ये वा मारा मन ने घणा आहर्त्य ने आहार वा पाणी. चमाछ, पाछा, चाहर प्रमुख थी मनितान थान्ये । एइना एइबी किया नी प्रवर्तन तेने तत्त्ववृद्धिये विचारी ने जोहरें नी गर्छ में नाम अल्प स्तरप सूर्य पामवानो गर्छो ने छुद अहान ने गर्छा ने फांमी तृत्य छै । जिम कोई प्राणी रे गर्छ फांमी खागां काम रक्तने संग्य पामें तिम आह्मस्तर्य सूर्य पुरुष नी गर्छो छुद अहान तेनो बास छुदअहाननी प्रवर्तन तेने रुक्तने नाम वंच होते कृरी आहमस्तर्य सूर्य पुरुष नी गर्छो छुद अहान तेनो बास छुदअहाननी प्रवर्तन तेने रुक्तने नाम वंच होते कृरी आहमस्तर्य सूर्य पुरुष नी नाम अहं जाय । तिम च आनंद्रस्त सुनि कहें:—

" जब खग आवे नहीं मन डाम । तब खग ऋष्ट किया खब निष्कल, ज्यों गगने चित्राम ॥ "

पुनः पुत्रानी च उक्तिः—

"बास कष्ट थी कर्नू चढर्नू, ने ती बड़ नी मान" इति सटैक

क्रिया विना झान निहं कवहू, क्रिया झान विन नांदी।

क्रिया ज्ञान दोऊ पिछन रहिन हैं, ज्यूं तछ एस तछ मांही ॥ प० । जै० ॥८॥

प्ती किया नी क्थन क्यों ते सब बंचक किया नी क्थन क्यों। बीजूं परमेकर सायित आगतानुजाई नी बचन छै-"ज्ञान कियान्यां नोकः" ना इंक्छा ज्ञानथी, इंक्छी किया थी पिण मोज न क्युं। क्थे नाम किम निहां किन्तुं, पहुत्रं परमेका नूं क्युं बचन छै-"एगंते होई मिन्छत्ते" पुनः गाया;—

" नाणेण जाणए साबं, दंखणेण च सहह चारित्रेण मणुत्राहें, त्रवेण परिसिन्हाह "

पुनः गायाः---

ह्यं नाणं किया हीणं, ह्या अन्नाणिणां किया । पासंतो पंगुलो दह्दों, घावमाणीय अंबलो ॥१॥ संजोग सिद्धी अफलं वयंती, नहु पगचकेण रहों पयाई । अंघोय पंगूय वणे समेचा, तेनं पडत्ता नगरे पविद्वा ॥२॥ तेथी क्रिया दिना नाम क्रिया नैं अभावे ज्ञान नौ अभाव नै ज्ञान ने अभावें क्रिया नौ अभाव यथा— आनंद्यनमुन्युक्तिः—

> क्षान घरो करो संजम किरिया न फिरावो मन वाम। चिदानंद घन सुजस विछासी प्रगटै आतमराम॥१॥

तेथी ज्ञान किया नी जोड़ी छै। ते कारणे किया नै ज्ञान ए दोनूं नाम किया प्रवर्तनरूपा ज्ञान विशेष विचारणरूप यथा ज्ञान छक्षणं—"विशेषावदोधो ज्ञानं" तेथो ज सूत्रो मां एहवूं कथन छै—"पढमं नाणं तओ पवित्त "—ए कारण थी प्रथम जाणपण् पछै प्रवर्त्त नाम किया तेथी एउनी संजोग सिद्धता छै। एनुं छिखत घणुं छै पानो छोटी केतछो एक छिखूं। एतछा में सर्व समझ छेज्यो। कियाज्ञान केहवा एक मिछो रह्या छै। जिम जछ पाणी नी रस स्वाद पाणीमां रह्यों छै। तिम किया प्रवर्त्तनरूप ज्ञान जाणपणां में रह्यों छै। प्रथम जाणीजै पछी प्रवर्त्तन थाय ते विना न थाय। ज्ञान जाणवारूप। ते जाणता छतां प्रवर्तियै नहीं तह्यें जाणपणी निष्फछ थयो। कथं ! "फछ शून्यत्वात्" तेथी जछ दृष्टान्तें वेई मिल्या रहे छै परं आत्म तत्त्व गवेपी नै किसे सम्मिछत रहे छै।

क्रिया मगनता वाहिर दीसै, ज्ञान भगत जस भाजे । सदगुरु सीख सुनै नहिं कवह, सो जन जन सुं छाजे ॥ प० । जै० ॥९॥

ने के कात्मार्थी नथी कात्म स्वरूप ग्रहणार्थी नथी। ते नै तो क्रिया मगनता नाम किया प्रवर्तवानी मगनता। तदाकारी पण्नं नाम एकंत दिनरात्रे क्रिया प्रवर्तवानी वृद्धा छौकिक नै विसे आपरी उन्नता दिखाववाने कारणे दांसे नाम एतो प्रत्यक्ष दीसे छे किम क्रियानी मगनता विना ज्ञाननी मिक्त हुवे ने एकंत क्रिया वादी हुवे। जस नाम जेहने न हुवे एतछे ज्ञाननी मिक्त थी माजै नाम वेगछो रहे। वा ज्ञान के आत्मस्वरूप तेनो ज्ञानी हुवे तेनी मिक्त बहुमानता करवाथी जस केनो मत माजै नाम वेगछो रहे एतछे आप क्रियार्थि छै। तेथी क्रियावान थी तो पोतानो मन हीसे ने ज्ञानवाननी मिक्त कोई कर तेहने देखी तेनो मन माजै वेगछो रहे नाम तथी मत न मिछे। फिरी ज्ञानवान नो कोई जस गावे तेथी पिण तेहनो मन माजै वेगछो रहे नाम ज्ञानी नो जस नम्छं होवे। फिरी सदगुरु नाम छुद्धोपदेण्टा नाम छुद्धस्याद्दाद कथन थी उपदेण्टा—उपदेशना दाता एहवा गुरो ना उपदेश परम शिक्षारूप तिहां कोई किहिसी तें परम सीख रूप किम कह्यं। तिहां छिखं के छुद्धोपदेण्टा गुरु हुसी ते ज्ञानिक्रया वे थीज सिद्धनी सिद्धता कहिसी। किम परमेखरे एकंतवादी ने मिथ्यामती कह्यं ने तेहवा गुरु सिद्धान्तानुजाई ज उपदेश देखे। ने ते एकांत पक्षा तेथी तेथी नो उपदेशक वहु कहे न गुणे। तेथी नाम तेथोना उपदेश न गुणवाथी सो नाम एकांत पक्षी। जन जनम्रं नाम स्थादाद मतघारी मात्र पुरसाम्रं छाजै। नाम अनेकान्तवादी ने देख्यां छज्या पामे। किम जनम्रं नाम स्थादाद मतघारी मात्र पुरसाम्रं छाजै। नाम अनेकान्तवादी ने देख्यां छज्या पामे। किम

एक्रोधी बान इरखों मारी पस उद्यों जान्ये एक्रो है एक्रान्ती नेथी एक आगळ मारो पस न निमन्ये। नइयें छोड़ मुझने वित्तण्डाबादी इहिस्य ते झारणे तेखोने मारगनां सामा आवता जोड़ने ते मुझी ने छाजनी बीजे मार्ग जाय ते आगी मिटे ज नहीं।

> तन्त्रबुद्धि जिनकी परणिन है, नकछ सृत्र की कृंची । जग जस बाद बढ़े उनहीं की जैन दुमा 'जस' ऊँची ॥ प. । बैं० ॥?०॥

हिने शह प्रवर्तकनं कथन कहै-नजबहि तज्ब कार्ये आसन्तव पामवानी बृद्धि नाम मित है नाम बुद्धि नै विषे एज कुन्ती है नाम अब दृष्टि में मर्व दिन गमी रह्यों है नेशी निर्ग्यक बात केण इहा देनों हाकारों हां न दें क्रोईना किये नंबा करी निय सामी दृष्ट हो न दें । क्रिये अद्या नो बान उचेरी तो तेने ज्ञान हो न हैं। क्रिये सतमनवनी बात उर्दरी ती हा ना न करें। विकया मात्र पोर्ट न कर बांजे कर विक्रया ना उदीरी नी निहां थी ऊटी जाय । पोनानी नैया वा प्रशंसा करी तिहां हर्षः विषाद मन में हो न न्याते । एकंत आन्म नन्द गर्वरणानी वृद्धि परणमी नै रही है तेने विसे नक्षकार यह रखी है परं ने नत्वबुद्धि बेह्बीक है सक्क समस्त नाम परमेकर मापित मृत्र आगमकी नाम देखी मर्वेनी कूँची के । एनके सबै मृत्र कर नाका खेळवाने कूँची प्राय के नान सबै मुत्रों नी ए गहरूप है—दे प्राणी तत्त्वहृद्धि पर्लाची तिर्ण जिन भाषिन मुत्रों नी गहरूप पान्यो। एनचे जेननुं न्हन्य ए छे-आम हिन मर्ग प्रवर्ते नाम कृशय की निवर्ती पुरुष्त्रकी उपगरी हे ती आप तत्त्र गरेपमा इते उनही की नाम तेनी दम नाम न्वर्ग मृत्यू पानाछ कप दमन ने विधे जमकाद कथन वर्षे फेंटे। डोई एडे दगत ने विभे तेनी दसवाद क्युं कर वर्षे निहां छिख्ं-बैन दसा नाम बैन वर्षनी दसा प्रदर्शनों जम नाम ज्ञयविवय उपाय्याय हुई है नेटनै बैन दर्शननी रुण कंबी नाम सबींहरू है देशी दम जमबाद हुई । या जस देन दसा केबी जस नाम के मन्यप्राणी नै जैन दहीननी दृशा प्रदर्शना ऊंटी नाम सर्व थी दवटी है तेनी जगत ने दिये ससवाद वसनी क्रथन वर्ष नाम फेंके । इति ।

॥ इति वन्त्राचि गंतम् ॥

卐

સવલું પરવશ તે દુ:ખ લક્ષ્યું, નિજવશ ને ચુખ લહિએ; એ દર્પ આતમગુણ પ્રગદે, કરેત ચુખ તે કૃષ્ઠું કહિએ રે? ભાગ નાગર સુત્ર પામર નિવ જાણે, વલ્લભ સુખ ન કુમારી; અતૃભવ વિણ નિમ ધાનતાલું સુખ, કૃષ્ઠું જાણે નરનાર્રારે? ભાગ આ દર્શિ આલા

પૂ૦ ઉપાધ્યાય શ્રી મેઘવિજયજી ગુંફિતા

अहंदृगीता

[લેખક : પૂ. પંત્યાસ શ્રી રમણિકવિજયજ મહારાજ. અમદાવાદ]

વીતરાંગદેવ શ્રીમહાવીર-વધ માનસ્વામીના શાસનનાં પચીસા વર્ષ દરમિયાન દરેક શતાળ્દીમાં સંખ્યાળ ધ વિદ્વાન્ જૈનાચાર્યો અને મુનિપુંગવા થતા રહ્યા છે. તે પૈકી અહારમી સદીમાં જે અનેક જૈન વિદ્વાન્ મુનિપ્રવરા થયા છે તેમાં ઉચ્ચકારિના વિદ્વાન અને મહાકવિ તરીકે ઉપાધ્યાય શ્રીમેઘવિજયજી મહારાજનું વિશિષ્ટ સ્થાન છે.

ઉપાધ્યાય શ્રીમેવિજયજ જગપ્રસિદ્ધ માગલસમાટ અકખર પ્રતિબાધક જગદ્શરૂ શ્રીહીરિવજયસ્ત્રીશ્વરજની પરંપરામાં થયા છે. તેમના દીક્ષાગ્રરૂ પંડિત શ્રીકૃપાવિજયજ મહારાજ હતા. તપાગર્સીય આચાય પ્રવર વિજયદેવસ્ત્રિ પદ્ધર શ્રીવિજયપ્રભસ્ત્રિએ તેમણુ વાચક—ઉપાધ્યાય પદવીથી અલંકૃત કર્યાં હતા. આટલી ટૂંકી હકીકત શ્રીમેવવિજયો પાધ્યાય-જોએ પાતે રચેલા શ્રંથાની પ્રશસ્તિએમાં આવે છે તેથી એમ જાણાય છે કે તેઓ શ્રીવિજય-પ્રભસ્તિના ધમ સામ્રાજ્યમાં સખ્યત્વે વિદ્યમાન હતા.

ં આજે પ્રાપ્ત થતી તેમની કૃતિએ એતાં તેમનું પાંહિત્ય અસાધારણ અને સાહિત્યની વિવિધ દિશામાં વ્યાપીને રહેલું હતું. તેમએ વ્યાકરણ, કાવ્ય છંદ, ન્યાયદર્શન, કથાસાહિત્ય, ક્યોતિષ, સામુદ્રિક, મંત્ર, યંત્ર, અધ્યાત્મ આદિ અનેક વિષયના શંશાની રચના કરી છે.

અધ્યાતમવિષયક ત્રજુ ચેંથની રચના તેમણે કરી છે. (૧) માતૃકાપ્રસાદ, (૨) ધ્રદ્ધાળાધ અને (૩) અહ^રદ્વાતા. આ ત્રજુ ચંચા પૈકી અહ^રદ્વાતાના પરિચય અહીં આપીએ છીએ.

જૈનેતર પર'પરામાં જે જે સાહિત્ય વિશિષ્ટ સુપ્રસિદ્ધ અને આત્મશોધન આદિ માટે ઉપયાગી હાય તેના અનુકરાષુરૂપે તે તે સાહિત્યના ઊંડા અભ્યાસથી જૈનાચાર્યાએ પણ એલું અને એ જ નામનું સાહિત્ય રચવાના પ્રયત્ન કરેલ છે અને એવા પ્રયત્ના દ્વારા તેઓ સાક્ષર અને સામાન્ય જનતા સુધી પાતાના ધર્મસંદેશ પહેાંચાડી શક્યા છે. આ નાતના સ્પષ્ટ દાખલા એવા હાય તા 'વસુદેવ હિંડી' નામના <mark>થાંય ખ</mark>તાવી શકાય. આ શંયના ખીળ અથવા મધ્યમ ખંડમાં તેની સ્ચનાતું કારણ જણાવતાં શંયકારે આ જે હકીકત લખી છે.

આ ઉપરાંત એવાં અનુકરણુંને સમજાવવા સારૂ આગાર્ય શ્રીહિસ્લિદ્રસ્ટ્રિસ્ આદિએ સ્ચેલા ધર્માળંદ્ર, લિલતવિસ્તરા આદિ બેંચા, તથા ધેઘદ્દુતનાં અનુકરણા અને માઘકાવ્ય વળેરેની પાદપૃતિ જેવા બેંચા કે જે જૈન કવિએાએ સ્ચેલાં છે તે પણ ગણાવી શકાય.

ઉપાધ્યાય શ્રીમેઘવિન ત્યા છ પણ આ જાતની પાતાની પૃત્ર શુરૂપર પરાને અતુસરીને કેવળ આત્મણાષ્ટ્રન દર્શ્યિ આ અહેંદ્રગીતા સ્થવાને પ્રેરાય છે. તેમણે અહેંદ્રગીતા–તત્ત્વગીતા અથવા ભાગવદ્ગીતા એ ત્રણ નાંમા આ બંધનાં આપ્યાં છે. અડું દુગીતામાં છત્રીસ અધ્યાયા છે, 🕏 કૃષ્ણે કહેલી ગીતા કરવાં અમળું છે. જેમ શ્રીકૃષ્ણવાળી ગીતામાં શ્રીભગવાન ઉવાચ તથા શ્રીઅર્જન ઉત્રાચ એ વાક્યો આપેલાં છે તેમ આમાં શ્રીमगवान उवाच અને श्रायज्ञेनने णहंदे श्रागीतम रवाच को वाडको हरेड कथ्यायना प्रारंभमां भूडेक्षां छे. जीतामां જેમ શ્રીકૃષ્ણુ માટે લગવાન ગ્રષ્ટની ચાજના છે, તેમ અહંદુગીતામાં શ્રીમહાવીસ્ત્રામી માટે ભુતવાન શુષ્ટની ઘટના છે. શ્રીકૃષ્યુવાળી ગીતામાં જેમ પૃષ્ટનાર અર્શુન શ્રીકૃષ્યુના પરમમિત્ર છે તેમ પ્રસ્તુત ગીતામાં શ્રીઇન્ડિસ્તિકોતમ શ્રીમદાવીરનાં મુખ્ય અને પ્રિયગ્રિપ્ય છે. આ છત્રીસ અધ્યાયામાં ગ્રાનસાધન તથા કિયાસાધન એવા આધ્યાત્મિક વિષયાની ચર્ચા છે. એ ચર્ચા કરતાં પ્રસંગાપાત્ત ભિત્ન ભિત્ન દર્શનાના સમત્વય અને ખાસ કરીને વેદાંતના ત્રમત્વય તથા 🥴 नमः સ્ત્રિદ્ધં, એ વાકચની વિવિધ રીતે સમજૂતી આપેલી છે. તેમ જ ત્રંયાતિષ, ગ્રામુદ્રિક, તિથિવિચાર, ગ્યામુવે દેને લગતા વિચાર, નયાનું નિરૂપણ વગેરે વિવિધ વિષયાની ચર્ચા આ ઝીતામાં કરી છે. આ અધા વિષયાના વિસ્તૃત પસ્ચિય ન આપતાં માત્ર શું કૃષ્યું થું થવી ખાસ વિશેષતા અને એમાં નિરૂપેલી ખાસ ખાસ બામતા અહીં જણાવવાની ધારણા છે.

ઋડવંદના પ્રત્યેક મંત્રને મથાળે તે મંત્રના ઋષિ, છંદ વગેર જેમ અતાવેક્ષા છે. તેમ આ અડદ્રગીતાના પ્રારંભમાં જણાવેલું છે કે^ર અડદ્રગીતાના ઋષિ જોતમ છે, છંદ અતુષ્ડુપ્

૧. જાંઆ વસુંદેવીદાંડી મધ્યમ ખાંડ પાનું પહેલું.

તેમાં જે કર્લભ છે તેના સાર એ છે કે — નવરાજા, નડુવરાજા, રામ, રાવળુ, જનમેજમ, ફોરવ-પાંડેલા વર્તરની કામકથાએમાં લોકા પ્રીતિ રાખે છે, એટલે ધર્મકથાએને સાંકળાને પણ લોકા તેમાં રુચિ રાખના નથી. માટે કામકથાએમાં રસ ધરાવનાર લોકા માટે બુંધાર કથાને બહાને ધર્મતે સમજ્તવવાની સુદ્ધી આ બુંધાન્પ્રધાન કથાને લખવામાં આવે છે. કામકથામાં રસ ધરાવનાર લોકા પૂછે છે કે ઉત્તમ કામનાત્રને કેવી રીતે મેળવી શકાય! તેના ઉત્તર બુંધારપ્રધાન આ કથામાં આપવામાં આવે છે અને તે એ છે કે "જ્તમ અસ્ત્રિ આચરવાથી ઉત્તમ કામકાંગા મેળવી શકાય છે."

^{2. 3%} अन्य श्री अर्दश्रीनाष्ट्रपार्भागमधीजनेत्रकास्य सरुवशाक्षरहस्यपूनस्य श्रीगीतम ऋषिः, अनुद्रुप् छेदः, श्रीपर्वश्री जिनः परमान्या देवता, श्रांतऽपि तृभव सनः कार्यः प्रागमृता समा, होन धीजम्, येनास्माऽऽसन्ययस्थाता सद् वेराग्यं प्रशस्त्रते होन श्रीकाः, अमुकोऽपि क्रमान्मुकता निवयात् स्यादिगच्छ्या हति कीसकम् ॥ [अर्दस्रीता पत्र २]

छे, देवसव रा जिन पंरभात्मा छे "प्राप्ते प्रिम च्रमवे चत्नः कार्यः" ध्यादि, आ शिता हुं थिल छे "चेन आत्मा आत्मिन अवस्थाता" ध्यादि आ शिता छे. अने "अमुक्तो प्रिकमान्मुक्त" ध्यादि, आ शिताने। धीक्ष छे, आ अपरांत ठेडिडेडा वे वेदिड भंत्रनी पेठे वषद्, स्वधा, स्वाहा वगेरे भंत्राक्षराने। प्रयोग अपध्याय श्रीमेद्दविजयल छे डरेक्षा छे.

જો કે અહે દ્ગીતા શ્રીમેઘવિજયાપાધ્યાયે પાતે પાતાની કલ્પનાથી ઉપજાવેલી છે ને રચેલી છે. છતાં તેમણે નમ્રભાવે પાતાની આ સ્થનાને શ્રીગાતમસ્વામીના મુખમાં પ્રશ્નર્પે અને શ્રીમહાવીરસ્વામીના મુખમાં ઉત્તર રૂપે ગાઠવવાની યાજના કરી છે. જૈન પરંપરામાં ઘણા એવા પ્રાચીન—અર્વાચીન બ્રંથકારા થઈ ગયા છે જેમણે નમ્રભાવે પાતાની રચનાને શ્રીમહાવીર સ્વામીના મુખથી રજા કરાવી છે. પ્રસ્તુત ગીતા બ્રંથમાં શ્રીમેઘવિજયા એ પણ ઉપર્યુક્ત પૂર્વ ગુરૂપરંપરાની પદ્ધતિ સ્વીકારેલી છે.

ઉ. શ્રીમેઘવિજયજી પાતાની આ રચના વિષે કહે છે કે-

" श्रीवीरेण विबोधिता भगवता श्रीगौतमाय स्वयं, सूत्रेण प्रथितेन्द्रभूतिमुनिना सा द्वाद्शांग्यां पराम् । अद्वैतामृतवर्षिणीं भगवतीं पद्त्रिशद्भ्यायिनीं, मातस्त्वां मनसा द्षामि भगवद्गीते । भवद्वेषिणीम् ॥१॥ [अद्वैद्गीता पत्र ३]

અર્થાત્—ભગવાન્ શ્રીમહાવીરે પાતે ગાતમને છત્રીસ અધ્યાયવાળી અને અદૈતામૃત રસને વરસાવનારી અહે દ્વીતા અથવા ભગવદ્વીતા કહેલી છે અને શ્રીઇદ્રભૃતિમૃનિએ તેને દ્રાદર્શાગીમાં સ્ત્રરૂપે ગૂંચેલી છે. આટલું લખ્યા પછી ગીતાને માતા કહીને તેઓએ તેનું ધ્યાન ધરેલું છે. ઉપર જહ્યાવેલ શ્લાકને અંતે એમ જ્હ્યાવ્યું છે કે—

" इति परसमयमार्गपद्धत्या शास्त्रप्रश्नाश्चतदेवतावतारः। "

એ પ્રમાણ પરમતની પહિતિને અવલ બીને શાસ્ત્રપ્રજ્ઞાર્પ શ્રુતદેવતાના અવતાર થયા સમજવા.

આમાં કુલ છત્રીસ અધ્યાયા છે તેમાં ચૌદથી સાળ અધ્યાયાને ખ્રદ્ધાકાંડ નામ આપેલ છે અને સત્તરથી છત્રીસ અધ્યાયાને કમે કાંડ નામ આપેલ છે પહેલાના એકથી તેર અધ્યાયાને માત્ર સામાન્ય અધ્યાય નામ આપેલ છે.

આ ગીતામાં જે ખાસ બાબતા છે તે આ પ્રમાણે છે. ચાથા અધ્યાયના ૧૯મા શ્લાકમાં જેણાવેલું છે કે કાઈ અપેક્ષાએ આશ્રવ પણ સંવર થઈ જાય છે. અને કાઈ અપેક્ષાએ સંવર પણ આશ્રવ થઈ જાય છે.

> " संवरः स्यादाश्रवोऽपि संवरोऽप्याश्रवाय ते । श्रानाश्चानफळं चैतन्मिथ्या सम्यक्श्रुतादिवत् "॥१९॥

ગ્ર'શકારે આ વિવેચનમાં પ્રધાનપણે વિવેકને મુખ્ય સ્થાન આપેલું છે અર્થાત્ વિવેક વગરના સંવર તે આશ્રવ શાય છે અને વિવેક્યુક્ત આશ્રવ પણ સંવર થઈ જાય છે. એમ એમતું કહેવાતું છે. એમતું આ કઘન જેન સિદ્ધાંતથી સર્વધા અવિરૃદ્ધ છે એ પ્રત્યેક વિવેકીની સમજમાં આવે તેલું છે.

છઠ્ઠા અધ્યાયના પંદરમા શ્લાકમાં ધર્મને અમૃતરૂપ કહેલ છે.

" वार्त विजयते झानं दूर्धनं पित्तवारणम् । कप्तनाशाय चरणं घमस्तेनासृतायते " ॥१५॥

આ યુકીકતને સમજાવતા તેઓ કહે છે કે—ન્ફ્રાન વાત દેાય છતે છે, દર્શન પિત્ત-દ્વાપને નિવારે છે, ને આરિત્ર કફ દેાપના નાગ કરે છે. આમ છે માટે ધર્મ અમૃતરૂપ છે.

આ સ્થળે શ્રંથકારે ગ્રાન-દર્શન-ગ્રારિત્રને વાત-પિત્ત-કર્ફના નિવારક કહેલા છે. એ લ્ક્કીકત વધારે વિચારતાં ખરેખર સત્ય જણાય છે; કેમકે વાત પ્રકૃતિવાળા પ્રાણીમાં ગ્રાન એ છું હોય છે, જેમ જેમ બુહિશક્તિ વધતી લાય છે તેમ તેમ વાત પ્રકૃતિ મંદ પડતી લાય છે. એ જ રીતે દર્શનમાં હું પ્રાણીમાં હોય ત્યાં કાધાદિ કપાયા વધારે દેખાય છે. કપાય અને પિત્ત બન્નેની પ્રકૃતિ લગ્લગ સરખી છે. સમ્યગ્ દર્શનથી પિત્ત મંદ પડે છે એટલે કપાયાનું કેમે કેમે મંદપાયું અને અંતે અભાવ થાય છે. ગ્રારિત્રમાં ક્રિયાત્મક પ્રકૃતિ કે એટલે કપાયાનું કેમે કેમે મંદપાયું અને અંતે અભાવ થાય છે. ગ્રારિત્રમાં ક્રિયાત્મક પ્રકૃતિ કે એટલે ગ્રારિત્રવાળા પ્રાણી સદ્દ અનુષ્ઠાન તરફ નિરંતર સ્થ્યો પચ્ચા રહે છે. અને એમ થાય છે એથી તેવા પ્રાણીની જડતાવર્ધા કર્ફપ્રકૃતિ મંદ પડી લાય છે આ રીતે બંધકાર ગ્રાનાદિ ત્રણ શણુ અને વાતાદિ ત્રણ દેાપ તેના પશ્સ્પર જે સંબંધ બનાવે છે તે એમણે પાતાના અનુભવથી મેળવ્યો છે. લે કે આ વાત અમે બીલ્લ શ્રામાં વાંચી નથી તેમ સાંલળી નથી એટલે ઉપાધ્યાયજીની આ વાત તદ્દન નવીન ઢબ્રની લાગે છે છતાં એ પુરેપુરી સત્ય છે એમાં શંકા નથી.

અધ્યાય ૧૪ શ્લાક ૧ થી ૮માં ૯૫૨ કહેલી વાતનું ક્રાંથી નિર્મણ કરે છે ને તેઓ લખે છે કે—

" ज्ञानावरणसंद्रायो घातः सिद्धान्तवाविनाम् । पित्तमायुः स्थितवांच्यं नामकर्म कफात्मकम् ॥६॥ रकाधिक्येन पित्तेन मोहमकृतयोऽन्नित्याः । द्यंनावरणं रक्तकफ्खांक्यसम्बद्धः ॥॥ तत्तिकारजं वेदां गोत्रं पित्तकफात्मकम् । अन्तरायः सिन्नपातादेषां विकृतिकारणम् " ॥८॥

સહાંતિકાના મતે જ્ઞાનાવરણ એ વાત કાય છે, આયુષ્યસ્થિતિનું નામ પિત્તદાય છે, નામકમે કફર્ય છે. જેમાં લાહિનું અધિકપણું છે તેવી પિત્ત પ્રકૃતિથી અધીય માન્પ્રકૃતિઓ ઉદ્દેશવે છે. લાહી અને કફના મિશ્રણ રૂપ દર્શનાવરણ છે. અને તે તે વિકારાથી થનારું સુખદુ:ખતું વેદન વેદનીય છે. ગાતકમે પિત્ત-કફર્ય છે. વાત-પિત્ત-કફના સન્નિપાતર્પ

અંતરાયકમ આ ત્રણેની વિકૃતિનું કારણ ખને છે. તેથી મનના તમામ ભાવાને મેં ખરાખર સમજને ઉપર કહેલા છે. એ ખાદ્યા તેમ જ આંતર હેતુદ્વારા પ્રયત્ન પૂર્વક મન વશ કરવા આત્માથી પુરુષે પ્રયત્ન કરવા એઈએ.

ઉપરના કથનમાં ઉ. શ્રીમેઘવિજયાં સાનવરણીય આદિ કમે અને વાત-પિત્ત-કફ્ વગેરે દેવો એ છે વચ્ચે જે જાતના સંબંધ અતાવ્યા છે તે એક અશુતપૃવં છે છતાં ગંભીર રીતે વિચારતાં એમનું એ કથન કાઈ પણ અનુભવી જ્ઞાની, આત્માથી ને કસાટીમાંથી પાર થઈ શકે તેનું છે. તેમની લખેલી આ હકીકતથી સ્પષ્ટ જણાય છે કે આધ્યાત્મિક શુદ્ધિ પ્રાપ્ત કરનાર જિજ્ઞાસુએ દેહને શત્રુવત્ ન સમજતાં તેના આરાચની, સંયમની આરાધનામાં ઉપયોગિતા થાય તેની રીતે સાવધાની પૂર્વ કરકાર લેવી એઈ એ. વાત-પિત્ત-કફ્થી પરસ્પરની વિષમતા ટાળવી જરૂરી છે, અને એમ કરવા માટે આહારશુદ્ધિ પર વિશેષ ધ્યાન રાખવાની જરૂર છે. તેમના કહેવાનું તાત્પર્ય એમ લાગે છે કે આત્માની સ્વસ્થતા મનના આરાચ્ય પર રહેલી છે અને તે આરાચ્ય દેહના આરાચ્યને અવલંખીને રહેલું છે.

આહમા અધ્યાયના ઓગણીસમા ^{શ્}લાકમાં શૌચ વિશે જ્ઞાવતાં તેઓ કહે છે કે—

" ग्रीचं च द्रव्यसावाभ्यां यथाईता स्मृतम् । अस्वाष्यायं निगदता द्रश्योदारिकोद्भवम् " ॥१९॥

અહે-ત લગવાને દશ પ્રકારના અસ્વધ્યાયને ખતાવેલા છે એથી એ લગવાને દ્રવ્યશીય અને લાવશીય બન્નેને સ્વીકારેલા છે. એટલે દ્રવ્યશીય અને લાવશીય એ બન્નેનું સાપેક્ષ-પણ જૈન શાસનમાં જરાએ એાલું મૂલ્ય નથી. દ્રવ્યશીય એટલે પાણી, માટી આદિ દ્વારા બાદ્ય શુદ્ધિ અને લાવશીય એટલે ધ્યાન–વિચારજ્ય દ્વારા અંતરશુદ્ધિ.

છ્યદ્ધાકાંડના પંદરમા અધ્યાયના પંદરમા ⁹ક્ષાકમાં ઉપાધ્યાયછ કહે છે કે—

" नैना अपि द्रव्यमेकं प्रपन्ना जगती तले । धुर्मोऽधुर्मोऽस्तिकायो वा तथैक्यं ब्रह्मणे मतम् " ॥१५॥

સાપેક્ષપણ વિચારતાં જૈન સમ્મત દ્રવ્યવાદ અને વેદાન્ત સમ્મત પ્રદ્મવાદ અને એક સરખા છે. આમ કહીને તેઓ વેદાન્ત અને જૈન દર્શનના પરસ્પર સમન્વય કરે છે. તેઓ એકખીજાના ખંડનમંડન વિવાદમાં ન પડતાં તે છે વચ્ચેની સંગતિ બતાવે છે. એ સંગતિ દ્વારા તેમના પાતાના માનસિક ઉદાર આશયનું પ્રદર્શન આપાઆપ થઈ જ્ય છે.

કેમ કાંડના અઢારમા અધ્યાયના શ્લાક સાતમામાં તા સ્પષ્ટ કહે છે કે-

" द्रव्यक्षेत्रकालभावाऽपेक्ष्या यहुघा स्थितिः ॥ आचाराणां दृश्यतेऽसी न वादस्तत्र सादरः " ॥॥॥

આચારાની ભિન્નતાને, વિવિધ ક્રિયાએાની ભિન્નતાએાને, વિવિધ પ્રકારના અનુષ્ઠાન ભિન્નતાએાને વિશેષ સ્થાન આપવાનું નથી અને તે ખાખત વાદવિવાદ કરવા ઉચિત નથી. આચાર-કિયા અને અનુષ્ટાનની જે ભિન્નતા જણાય છે તે દ્રવ્ય-ક્ષેત્ર-કાલ-ભાવની અપેક્ષાએ દેખાય છે, એડ્રેલે કાંઈ પણ આત્માર્થી પાતાની આત્મશૃહિને છાંહીને તેના વાદવિવાદમાં તે इતરે આદર પાત્ર નથી. તેમના આ ઉદાર વિચાર તેમના પાતાના સમયમાં ઉપયોગી હતો એડ્લું જ નહિ પરંતુ અત્યારે પણ એ વિચાર આપણા સૌ માટે એડલા જ ઉપયોગી છે. એડલે એ બૂના થયેલા વિચારને અવલંબીને આપણે બધા બને એડલી સત્પ્રવૃત્તિ કરીએ તેા સર્વ દાઈતું ક્રેયસ છે.

ઉપાધ્યાયજીએ ૧૯ મા અધ્યાયના શ્ક્ષાક ૧૧–૧૨ માં ઉપનિષદ્ના એ સુંદર વાકપતું વિવેચન કરેલું છે. એ વાકય આ કે—

" आत्मा त्रा बहा श्रोतब्यः मन्तत्र्यो निद्ध्यासितब्यः "

એતું જૈન દરિએ વિવેચન કરતાં શ્રવછ કૈાને કહેતું, મનન કેાને કહેતું અને નિક્ષ્ટિ ધ્યાત્રન કાેને કહેતું એ સંગંધી એમણે ઘલું સુંદર વિવેચન કરેલું છે—

> " श्रोतन्यश्चापि मन्तन्यः साझात्कार्यश्च सावनैः । जीवो मापाविनिर्मुकः स पत्र परमेश्वरः ॥११॥ श्रोतन्योऽध्ययनैरेप मन्तन्यो सावनाहिना । निद्दिष्यासनमस्येव साझात्काराय जायते "॥१२॥

કર્મકાંડ રૂપ ૨૭ મા અધ્યાયના ૧૫ મા ⁹લાકમાં ઉપાધ્યાયછએ અઠુ ઉદારભાવથી 'જિન' અને 'શિવ'ની એકલાતું સમર્થન કર્યું છે આ સમર્થન કરવાની તેમણી શૈલી એકદમ અનાખી છે. તેઓ કહે છે કે—

> " पर्व जिनः शिवो नान्यो नाम्नि नुस्येऽत्र मात्रया । स्थानादियोगाञ्जश्योनेवयो श्चक्यमावन् " ॥१५॥

અર્ધાત્— જિનાના 'જ' અને 'ઇ' તથા શિવના 'શ' અને 'ઇ' બન્નેતું તાલુસ્થાન છે તથા જિનના 'ન' અને શિવના 'વ' બન્નેતું દન્તસ્થાન સરખું છે અથવા એમતું અનુનાસિકાનું સ્થાન પછુ સરખું છે. આ રીતે 'જિન' અને 'શિવ' બન્નેના અર્થ સરખો અને શબ્દદરિએ બન્ને સરખા છે માટે 'જિન' અને 'શિવ' વચ્ચે કાઈ જાતના લેદ સમજવાના નથી. તેમની સરખામણી તદ્દન નવી દબની છે અને કાઈ પણ વાંચનારને રમૂજ પેદા કરે તેવી છે.

આજ અધ્યાયના ૧૮ મા ⁷લાકમાં તેઓ શ્વેતામ્બરની પેઠે દિગમ્બર મુનિની પણ પવિત્રતાને માને છે અને માનવાની આપજૂને સ્વૃતા કરે છે. તેઓ કહે છે કે આહાર્દિંગ ગૌજુ છે. જ્યાં પવિત્રતા છે ત્યાં વાસ્ત્રવિક રીતે મુનિપણું છે ને તે વંદનીય પણ છે.

" श्वेताम्बरघरः सीम्पः गुद्धः कश्चिष्ठिरम्बरः । कारुण्यपुण्यः सम्बुद्धः शान्तः झान्तः शिवा मुनिः " ॥१८॥ નવમા અધ્યાયના શ્લાક ૧૩ ને ૧૪ માં તેઓ જ્યાવે છે કે — જેઓ એમ માને છે કે લક્ષ્મી અને સરસ્વતીને વૈર છે તે વાત તદ્દન ખાટી છે, કારણ કે ગ્રાનધર્મને ધારણ કરનાર પુરૂષને જ લક્ષ્મી વશ થાય છે, કેમકે ગ્રાની નિષ્પાપ હાય છે અને નિષ્પાપ હાવાથી ગ્રાની પુરુષાત્તમરૂપ થાય છે તેથી એવા પુરુષાત્તમસ્વરૂપ સરસ્વતી—સંપન્ન ગ્રાનીને લક્ષ્મી જરૂર વરે છે, એટલે કાઇ રીતે લક્ષ્મીને અને સરસ્વતીને વૈર છે તે માનલું બરાબર નથી.

" वैरं छक्ष्म्याः सरस्वत्या नैतत् प्रामाणिकं वचः । श्वानघर्मभृतो वक्ष्या छक्ष्मीने जडरागिणी ॥१३॥ श्वानी पापाद् विरतिमाग् यः स वै पुरुषोत्तमः । तस्यैव बक्कमा छक्ष्मीः सरस्वत्येव देहमाक् " ॥१४॥

આ રીતે પ્રસ્તુત અહ દ્ગીતામાં આપેલી હકીકતાનું સંક્ષિપ્ત દિગ્દર્શન વાંચનારને આકર્ષક થાય એવી રીતે અહીં જહ્યાવેલું છે.

છેલ્લા છત્રીસમા અધ્યાયના શ્લાક ૨૦ માં તેઓએ પાતાનું નામ સ્ચવેલ છે—

" छंदोविद्यारदेरेवंद्धि शिवशर्मण । धर्मस्तस्मानित्यसुखं श्रीमेघविजयोदयः " ॥२०॥

અા પુસ્તક મૂલરૂપે ધૂળીયા (પશ્ચિમ ખાનદેશ)થી પત્રાકારે છપાયેલ છે. જે કે છપાઇ સારી છતાં તેમાં અશુદ્ધિએા ઘણી રહી અયેલી છે. કાઈ વિવેકી વિદ્રાન આ ગ્રંથને સારી રીતે શુદ્ધ કરીને પુનઃ સંપાદિત કરે તથા તેનું ચાલુ ભાષામાં વિવેચન કરે તા આ પુસ્તક ઘણું જ ઉપયોગી થાય તેમ છે.

坼

क्षानदर्शनचारित्रैरात्मैक्यं लभते यदा । कर्माणि कुपितानीव भवन्त्याशु तदा पृथक् ॥१७९॥

અર્થા ન્ન્યારે આત્મા સમ્યગ્ર જ્ઞાન, દર્શન અને ચારિત્રની સાથે એકતાને પામે છે ત્યારે કર્મા જાણે ક્રાપાયમાન થયા હાય તેમ, તેનાથી શીધ્ર જુદાં પહે છે.

અધ્યાત્મસાર]

[ଞି. ଧ୍ୟାବିଦଧ୍ୟ



હીરકલશકૃત

'પંચાખ્યાન'–ગત ' ખક–નાક્ષિકેર કથા '

[સંપાદક : ઠૉંગ્ શ્રીયુન એાગીલાલ જ. સાંટેસરા]

અને ૧૯૪૭-૪૮ માં ગુજરાની સાહિત્ય પસ્પિદ માટે હું 'પંચતંત્ર'નું સંપાદન અને અનુવાદ કરતા હતા. (જે બ્રંથર્પ ૧૯૪૯ માં ખહાર પટેલ છે.) ત્યારે પાટણના શ્રી દેમ- અંદ્રાચાર્ય નાનમંદિરમાંથી (હસ્તપ્રત નં. ૧૮૭૦) પૃત્ સુનિ શ્રીપુત્ર્યવિજયછ મહારાજના સોજત્યથી આ નાનકડા કચાનકની એક પાનાની હસ્તપ્રત મળી હતી. 'પંચતંત્ર'ની તમામ પ્રાચીન પાક પરંપરા સાથેના તુલનાત્મક અલ્યાસ કરવાના આરા ઉદ્દેશ હાઈ તે સાથે સંખંધ ધરાવતા આ કચાનકની નકલ પળ તે સમયે મેં કરી હીધી હતી.

'આત્મવર્શના ત્યાબ કરીને પરવર્શમાં જેઓ પ્રીતિ રાખે છે તેઓ પાછળથી પસ્તાય છે'—એ સૃત્રનું પ્રતિપાદન કરવા માટે આ કચાનક રચાયું છે. એના કર્યા કવિ હીરકલશ સં. ૧૬૩૬ માં 'સિંદાચન મત્રીત્રી' રચનાર તરીકે પ્રસિદ્ધ છે. એટલ આ કચાનક પણ તે અરસામાં રચાયું હશે. એની પુષ્પિકામાં જળાવ્યું છે તે પ્રમાણે, હીરકલશશિષ્ય હેમાણંદ સુનિના શિષ્ય આણંદવિજયે સં. ૧૬૪૯ માં એની નકલ કરેલી છે એ નેંધપાત્ર છે.

કેવિ હીરકલેશે સમલ 'પંચાખ્યાન' (પંચતંત્ર)ના સારાહાર શુજરાતીમાં કરેલા ભાળવામાં નથી; આ એક જ કયાનક તેમણે પ્રસંગાપાત્ત પદ્યમાં હતાશું હાય એમ એની કઠીમાંના હલ્ક્ષેખ ઉપરથી જાણ્ય છે. પરંતુ એ તપારેલી 'પંચતંત્ર'ની અધી ઉપલબ્ધ વાચનાઓ પૈકી એક માત્ર 'ત' તાપાપ્યાન 'માં જ (ત્રિવેઝ્સ્ સંઝ્ત સિસ્લિ, નં. ૧૩૨) આ કથાનક મળે છે. મારા બેવામાં નહિ આવેલી કાઇ વાચનામાં તે કદાચ મળે. કવિના સમયમાં આ કથાનક લાકસુએ પ્રચલિત હાવાના પણ પૃરા સંભવ છે.

૩૩ કેડીમાં રચાયેલી આ કથાની શુજરાની લાળ ઉપર મારવાડીની ઝારી અગ્નર દેખાય છે. કથાગ્રાવિત્યના અને ખાગ્ન કરીને 'પ'ચતંત્ર'ના અલ્યાઝીએાને તે ઉપયોગી શ્રાય એ આગ્રયથી તેતું પ્રકાશન અહીં કર્યું છે.

સૂલકૃતિ

॥ ई० ॥ श्रीहर्पप्रसुगणिगुक्रस्यो नमः ॥

धृरि हुद्धा

ં સમરિય સરસતિ કવિ કહેઇ, સંપદ સારઇ દાંન; દઇતા કદહી તેહ ધના લહ્નુ ષુટઇ એ ગ્યાંન. ٩ થાહઇ ધન વિસ્તાર ખહુ જે મંહઇ નરનારિ; તે અગલહિ નાલેર જિઉં, પછિતાસી સંસારિ. ર જિમ કિછ્યુહી વનિ કિછ્યુ સરહિ અહુ તરવર તસુ પાસ; વાસ વસઇ તિહાં પંષીયા જલ જલધરની આસ. 3 કિશુહી અવસરિ તિર્ણિ વનહિ મેઘ પરાભવતીવ; થારઇ જિલ પંષી સહુ ઊડી ગયા પર દીવ. X ખગલઉ ઇંગ ખગલી સહિત વડપછ્યિ વ્યાપઇ રાગિ; કરિ સંતાષ રહિયઉ તક્ષ્ય સર્ધધા સરનઇ નેગિ. ય . ખોક દિવસિ એ કિલ્લિ સમઇ અઇઠઉ સરવર પાસ; દેષઇ જલ વિજ પંપીયા ઊડિયા નઇ અગાસિ. ŧ ં ઊમાહિલ મિલિવાં લાહી, ચીંતિલ સયછા કાજિ: 'તેડી સરવર આપજીઇ જલ લગતાવઉ આજ.' U દેષીય ધરહી પ્રિય ચવઇ, 'મ કરિસિ કડી માંમ: થાડઉ જલ આપણ સરઇ, સીઝઇ કાઇ ન કામ. કિસી ક્રિયા વસ્તે લણી, તઉં તુઝ પાલે પિંડ; એ પંષી શતના સહસ વહિ જસિ પરષંડિ. ંથારી ભગતિ ઇયાં તણી, ચીહાની હુયઇ ષાટ; . છલ અભુપુગઇ તાહરા સવિ શુભુ નસિ લાટ. આપંજ બિહુનઇ જલ વિના રહેલ નહી હ્યઇ એશિ; તિષ્યું કારણિ ખૂઢલ થઈ લાડી નાઇસિ કેચિ. 99 · ડાહા સીષ દીયઇ ઇસી; ભગતિ હવઇ ધરસારિ; ધરિની ત્રેવઢ અહિરી ન રહેઇ માંમ લિગાર. 12 93 ં સુષ્ટિ અગલઉ અગલી વયા જીતરે દિયઇ ઉચ્છાહિ; 'વર્લિ વલિ વ્યવસર દાહિલા, કુણું આવઇ કિયા માંહિં? વાઉ વલાવિષ્ઠ આવિયા આ લસીએ જિમ ગંગ. તિડીનઇ ભગતા વિસ્યાં, પછઇ દ્વસ્યાં ઇયાં સંગિ.' ૧૫

નારી શાલાં તક વપણ, 'એડ કવણે' કુણ સંગી એ તરુણ લાગી વરિયા, તકું તક યુપા અંબ ૧૬ ता नर्श बरिगी क्ष्यु विषध ? को वष्ट्र वष्ट्रा थयः; કલિકાલ માર્વિ શુપુ કાંચલ કાેક ન માનક અંસ; તિષ્ક્રિ કારચિ નું ગીનમા જઇ થઇને વન ગંમ बार देपित सुष्दंह सम्रह, तिम तह आग्रह राणिः આપાં ગામિયાં વન વિરાદ, અપાક માસ્ત્ર શાયાં र्शिष्ट्र रथिष्ट्र अर्शिष्ट्र अते श्री ४८% अमासिः 'આપ ઇવુક સરિ જર પીયક, પુરક મ્ડારી આસ.' પંગા વાંદિ સુવા કંશી શ્રેવસ્થિ સરવીર એકિલ્ એકિલ્ માંત્ર કરિ પીછા મિત્રદા નીર. 21 પંખી દિશ્યા નીર પી, ત્રાહી વળદી તાંમ: ' પ્રાત્રમ, જલ વિષ્ હિવ કંદાં કિષ્દુ પરિ કિ. રેસિ વિશ્રામ? રર वर्गान्ह न रिष्ड भांदरह, प्रस्थी अहनी आर्थिः બ હિવ ફિરિ પર્સિવટ પર પંપિયા ઝું સાધિ, ૨૩ દું તુર્ યુકિ ન કાંદિસિક, પાકસિ પ્રિયતક ધરમાં; બિઝક રહિ ઇસિ આપવુદ, હિળિયુદ હાજા કરમાં! ૨૯ नारि वयव वाज अरीयह तक्या हेरी हारिः યુક્ક કિમ નરુષે મિલાઈ વડપણ કેન્સ માહિ? ં પરષંધી પરષંડ વ્યા ચેત્રવ ફેટકું ગ્રેફિ. યુ......થ્યુ......થ્યુ. જાપાલ કિયા અધાર રક નીર વિબ્રેયાઇ નાર્દાથઈ દેવી ચંચ વેરાઇ; पिनाव्य वृष्ट्रि विशि देश्वय क्रमही तार्थ. 'आयर वरन दिश्व निहा ने परवरों श्रीतिः શ્વરતા તે પ્રીતા પરક પછિતાનિ વદુ ચાલિ. જ સંબદી ત્રત્ર વહેલાં વહેલાં કે કર્યું કારિક काह पूरि परस्ति मण्ड, तत्र अति अदिष्ठ निषेषः. व्यात्रम विता क्रअपूरा में नर धहु विन्तारः इन्द्रा, ते प्रक्रिया किया नाविष्टर अस वारि, हर

^{*} आ प्रिमार्थ प्राप्ता है। श्री कार्या कार्या कार्या न्या

अस्या प्रणी तथ अतना दक्षिणांचे पाळाटी शीन्त शहके नीचेता दश संस्तृत स्थाद बाचेता है। अस्पत्री पीन्त्रम पाठीपु दे तम । ते तम प्रको प्रकित राजित को यम ॥

यतः पंचाष्याने श्लोक जानामि करोति वहुविस्तरा। आत्मवित्तं न ते नरा निघनं यान्ति नालकेर वगो यथा ॥ 39 ન કીજઇ પારકી આપણ સગતિ યસાઇ: ધરમ કરીજઇ અહિનિસઇ દાન સીલ લાઇ. 32 ઇણ પરિ જાંથી સુગુણુ નર પ ચાષ્યાંની હીરકેલસ કહિ તિહ તણી આપદ દૂરિ યુલાઇ.

इति पंचाष्यान कथानकं ॥ संवत् १६४९ वर्षे माह वदि १३ दिने श्रोनागपुरे महाराजाधिराज श्रीराइसिंहजीविजयराज्ये श्रीवृहत्खरतरगगच्छे महारक श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री जिणचंद्रसूरिविजय-राज्ये ॥ पं. इर्षप्रसुगणिः तिच्छिष्य पं. इरिकलससुनि तिच्छिप्य पं. हेमाणंदसुनि तिच्छिष्य विनेय चेळा आणंदविजयिल्यतं ॥ श्रीरस्तु ॥



— : નિશ્ચય – બ્યવહાર : — વહ સુખ ખાણી તુજ વાણી પરિણમે રે, જેહ એક નય પક્ષ, ભૂલા રે ભૂલા રે, તે પ્રાણી રહવડે રે. ર મેં મતિ માહે એક જ નિશ્ચયનય આદર્યા રે, કે એક જ વ્યવહાર; લેલા રે લેલા રે, તુજ કરૂષાએ આળખ્યા રે. 3 शिणिका वाह्य पुरुष ता परे ते क्वा रे, निश्चयनय-व्यवहारः મિલિયા રે મિલિયા રે, ઉપગારી નવિ જાજા મા રે. ખહુલા પણ રતન કહ્યાં જે એકલાં રે, તે માલા ન કહાય; X માલા રે માલા રે, એક રાત્રે તે સાંકલ્યા રે. પ તિમ એકાકીનય સવલા મિધ્યામતિ રે મિલિયા તે સમક્તિરૂપ; કહીએ રે કહીએ રે લહીએ સમ્મતિ સમ્મતિ રે. ţ દ્રાય પ'ખ વિશુ પ'ખી જિમ નવિ ચલી સકે રે. िक्स २थ विष् दे।य यक्ष ન ચલે રે ન ચલે રે, તિમ શાસનનય ખિહું વિના રે. 9 શુદ્ધ અશુદ્ધપણ પણ સરખું છે બેઉને રે, નિજ નિજ વિષે શુદ્ધ; **જાણા રે જાણા રે, પર વિષે અવિશુદ્ધતા રે.** C निश्चयनय परिष्मांभपषाणे हे वडा रे, तेढवां नढी व्यवहार; ભાખે રે ભાખે રે, કાઈક ઈમ તે નવિ ઘઢ રે. શ્રી, યશાવિજયછ] [नि॰ ०४० अकिंत सीमंधर स्तवन

ť

શ્રીમદ્ હેમચત્રાચાર્યજીકૃત સંસ્કૃત ત્રિપષ્ટિશક્ષાંકા પુરુષચરિત મહાંકાન્યના પ્રથમપર્વના પ્રથમસર્ગનું

સમાજદર્શન

[લેખક—પ્રેા. શ્રીયુત જયન્ત પ્રે. ઠાકર એમ. એ ક્રોવિક ઋષ્વરહાક, મુદ્રિત વિસાગ, પ્રાપ્ય વિશામન્દિક, વડાકરા]

શ્રીયગ્રાવિજયછથી પાંચ શતક પ્વે' થયેલા શ્રીહેમચન્દ્રાચાર્ય પણ એક મહાશુજરાતી હતા. વ્યાકરણ, કાવ્ય, હત્દસ્, યોજ, ધર્મ તેમ જ કાશ જેવાં શાસ્ત્રોના અતિઆદરણીય શ્રત્યો રચનાર શ્રીહેમચન્દ્રાચાર્યે કલિકાલસર્ય નૃતું ભિરુદ સાર્થક કરી અતાવ્યું છે. 'દ્રયાશ્રયકાવ્ય'માં તા શાસ્ત્ર અને ઇતિહાસના સુન્દર સમન્વય કરી અપૂર્વતા ખિલવી છે. તેમની સરળ અને પ્રવાહી ગ્રેલીએ તેમની કૃતિઓને વિગ્રેષ લાકસોલ્ય બનાવી છે તેમાં યે ' त्रिपष्टिशस्त्राच्या प्रव्यक्तिमहाकाच्य' તા તેમની કત્તરાવસ્થામાં લખાયેલું હાઈ સવધ્યી અનેરી જ ભાત પાઢે છે. ટ્રેકમાં એ ધર્મ તેમ જ સાહિત્યના ક્ષેત્રના મહાન આચાર્યના પેંગઢામાં પત્ર મૂકવાતું હછ સુધી તા કાઈને માટે શક્ય બન્યું નથી એમ કહેવામાં અતિશ્યોદિત નહીં શય

અાથી આજના અવસરે શ્રીહેમચન્દ્રાચાર્યના મૃત્ય વિષે જે કાંઈ કહેવું તે અસ્થાને નહીં ગણાય.

तेभनं 'त्रिषष्टिग्रह्मात्रापुरुषचरित्तमहाकाध्य' तेना क्षांणा नाभने अनुरूप आशरे २ प००० श्वीकिना विस्तार धरावनं क्षिष्ठं ह्या पर्वभां वर्ष्णेश्वानि कार्चे 'सदाक्षारत'नी रूपक्षे करे छे. प०४६ श्वीकिना में अनेका तेना प्रथम पर्वभां प्रथम तीर्थों कर श्रीक्षणसदेव तथा तेमना क्षीकिक दृष्टिको पुत्र श्रीक्षरतचक्षवर्तीना क्रितो द्वांणा छे. तेना द्वत छ स्रोमांथी ६६६ श्वीक्षप्रभाष्ट्रना पहेंका स्थानां श्रीकादिक्षरना श्वना क्षत्र्य प्रभा पष्टीनां व्यक्तिमानं प्रथम स्थानां व्यक्ति स्थाननां द्वांन छे. तेनी विभवमां नहीं श्वत्रतां को प्रथम स्थानां स्थान स्थानमां द्वांन के तेनी विभवमां नहीं श्वत्रतां को प्रथम स्थानां स्थान के विनम्र प्रथम है.

^{*} આ લેખ માંટે પ્રમાવૃક્ત મન્ય તરીક થી જેન-આત્માનન્દ સલા, ભાવનંત્રર તરફથી ઇ. સ. ૧૯૩૬ માં પ્રક્રેટ થયેર અને મુનિથી ચરજુવિજયજીએ સંપાદિત કરેલ પ્રથમ પ્રવેતા સ્વીકાર કર્યો છે.

" ને કે સમકાલીન સમાજનું નિર્પણ કરવાના અન્યકારના હેતુ નથી જ. જે પુરાણા કાળની કથા કહે છે, તેનું હૂબહુ ચિત્ર દારવાનું આમાં અભિપ્રેત છે. કેમકે પરાપૂર્વથી ચાલી આવતી પ્રણાલિકાઓની પણ વિગતા આપતાં આ અન્યમાંથી સામાજિક સ્થિતિ વિષે જે કાંઇ લાણી શકાય તે બધું અન્યકારના સમયને જ લાશુ પહે છે, તેમ માનનું ઉચિત નથી. અલળત્ત જે વિગતા અધારે નાંધી છે, તે પરાપૂર્વથી ચાલી આવતી તેમના સમય સુધીમાં કેટલી વિકાસ પાસી ચૂકી હતી એના સ્પષ્ટ ખ્યાલ આવી શકશે ખરા.

છતાં પાતાના સમયથી તદ્દન જુદા સમયના સમાજનું ચિત્ર દારતાં દરેક, રચયિતા ઉપર કાલના પ્રવાહના પ્રાથભ્યના પ્રભાવ પડ્યા સિવાય રહેતા નથી; અને તેથી છિદ્રોવાળા ઘડામાં મૂકેલા દીપકના પ્રકાશનાં કિરણા જેમ છિદ્રોમાંથી ઢાકિયાં કરે, તેમ આ મહદ રચનામાંથી ઉપમાઓ, ઉત્પ્રેક્ષાઓ વગેરેના ચમત્કારને બેરે સમકાલીન સમાજના ચિત્રની જે રેખાઓ ઊપસી આવે છે તેનું નિરૂપણ કરવાનું આ એક દુઃસાહસ છે.

પરાપૂર્વથી ચાલી આવતી વર્જું વ્યવસ્થા તે સમયે પછુ હતી. ખ્રાહ્મછુ સહુથી ઊંચા મણાતા (૩૧૩) ક્ષત્રિય રક્ષક રાજા હતા. વૈશ્યા વાણ્રિજય દ્વારા મુખ્કળ ધન પ્રાપ્ત કરતા. (૩૬) અને શુદ્રી સેવક હતા. ધનસાર્થવાહનું ચરિત તત્કાલીન વાણ્રિજયરીતિના સુન્દર ખ્યાલ આપે છે.

વાહનવ્યવહારની આજના જેવી સરળતા તે જમાનામાં ન હોવાથી વસ્તુઓના ખરીદ –વેચાલુ અર્થે પગરસ્તે જ જહું પડતું. આ માટે જનાર શ્રેષ્ઠી દાંડી પિટાવી સાદ પઢાવતા કે જેને સાથે જહું હોય તે તૈયાર થઈ જય (૪૫–६). આમ એક વિશાળ સંઘ–સસુદાયમાં બધા નીકળતા, કુલસ્ત્રીઓ પ્રસ્થાનસમયે મ'ગલવિધિ કરતી (૪૯). ઘાડેસવાર આરક્ષકાના રક્ષણને લીધે ચાર–લૂંટારા તથા હિંસક પ્રાણીઓ આ જંગી સમૃદ્ધ કાક્ષ્લાથી દૂર જ રહેતાં. (૪૮,૬૫,૭૬). માટાં માટાં શક્ટા ઉપરાંત ઘાડા, ખચ્ચર, ઊંટ, માટા આખલા, મહિષા અને ગદંધા જેવા ભારવાઢક પ્રાણીઓના પંદ્યુ આવા પ્રસંગોએ છૂટથી ઉપયાગ થતા (૪૧, ૬૩, ૬૭) અળદને ગળે ઘંટડીઓ આંધવામાં આવતી (૭૩) અને કાઈક વખત તા વધારે પડતા ભારને લીધે અળદ જેવાં પ્રાણીઓ લથડી પદ્યુ પડતાં (૫૯૦) અન્ને પડખે લટકતી શૃહ્યોથી, દાડતા વેસર (એટલે ખચ્ચર) પાંખાવાળા લાગતા (૬૮).

આવી લાંળી સક્ર્રામાં પછુ સવ⁶ પ્રકારની આનન્દ—પ્રમાદની સામગ્રી સાથે જ રહેતી, અને પરિણામે ગાડાં તે જાણે ચાલતાં ઘર અની જતાં:—

" यूनामन्तर्निविष्टानां, तत्रकीडानिवन्घनम् । जङ्गमानीव वेदमानि, शकटानि चकासिरे " (६७)

. . .

ઘણી લાંગી મુસાફરી હાવાથી જુદી જુદી ઝતુંચાના સામના લાકાને કરવા પડતા. જ્યારે વરસાદ પૂળ પડવા લાગતા ત્યારે જંગલમાં જ પડાવ નાખવા પડતા (૧૦૦). આમ ઘણા દિવસા વીતી જતા અને તેથી એવા પણ પ્રચૂંગા આવતા કે પાતાની પાસેનું પાંચેય ખૂડી પડતાં લોકોને કુચેલ તાપસાની આફ્રક કન્દ્રમૂળ માટે લટકનું પડતું (૧૦૪).

રારદ ઋતુના પ્રારંબ ઘતાં ચાલ્ય સમયની ઘાષણા સંગલપાદક કરે એટલે ફરી સંઘ ગાલી નીકળતા (૨૦૫–૨૧૮).

લુક્ષ્ટિસ્થાને પહોંચી પાતાના માલ વેચી નવા માલ ખરીકી છે.દીના સંઘ પાછા કુરતા (૨૨૪)

ખેતી (૧૯૭, ૮૧૮) ઉપરાંત પશુપાલનના ધધા પણ તે ગ્રમયે ગાલતા હતા (૧૧૯). આપના ગૃતમાંથી બનાવેલ ગાગૃંગનામક વાદ્ય ગાવાળિયા વગાડતા એડલ ગાયાં ધણ દાડતું આવી લાગતું (૧૧૯). લાડબુંબના ધધાના ઉલ્લેખ પણ અહીં મળે છે (૫૭૨). વળી તલને પીત્રીને તેલ કાઢવાનાં ચંત્રા પણ તે ગ્રમય હતાં (૫૬૩). ધીવર (એડલે માછીમાર)ના ધધા પણ ચાલતાં (૫૭૧). ગરીએ પર્વત્રપ્રદેશમાંથી લાકડાના ભારા બાંધી લાવી વેંગતા (૫૪૭). ઘણ જેવાં માધનાંના નિર્દેશ પણ મળે છે (૫૬૫).

વબુંધ્યવસ્થાની આક્ષક આશ્રમવ્યવસ્થા પજુ હશે, જોકે તેનાં સ્પષ્ટ પ્રમાણ મળતાં નથી. રાજ્ય સ્વડસ્તે પુત્રના રાજ્યાબિષક કરી સંસારમાંથી નિવૃત્તિ લઈ પ્રવજ્યા સ્વીકારતા. (૨૬૮, ૨૭૪) એકું અજિ વર્ષોમાં પણ હાઈ શકે.

ધર્માં ચાર્યો શિષ્ય-મુનિએ થી પસ્તિત થઈ વિદાર કરતા. વેપાર અર્ધ જતા સંઘની સાથે ઘલીવાર તેઓ જેડાતા. (પરૂ), અને સાથેવાદ તેમ જ અન્ય જના તેમને સર્વ પ્રકારનું રક્ષણ તથા પાષણ આપીને કૃતકૃત્રતા અનુસવતા (૧૧–૨, ૧૩૧–૨) કાઈ પણ સંધાળામાં તેઓ પાતાનાં વતાનું પાલન અવશ્ય કરતા (૧૦). વર્ષો જેવી મુશ્કેલીઓને કારણે સ્ત્તામાં સંઘ સાથે પડાવ નાખવા પડતા લારે પણ તેઓ દ્રમેશ મુજબ ધ્યાન, મોન કારણે સ્ત્તામાં સંઘ સાથે પડાવ નાખવા પડતા લારે પણ તેઓ દ્રમેશ વગેર કાર્યક્રમમાં મન્ન સંદેતા (૧૨૨–૪). આવે વખતે તેઓ નિજન્તુ કર્યળ પલાશના અચ્છાદનવાળા અને અને ઘાસની છિંદ્રોવાળી બીતાવાળા ઉડ્ડ – ઉપાદ્યયામાં રહેતા (૧૦૨, ૧૧૮)

આ આગાયો પ્રયોગ પ્રયોગ, પાતાના ધર્મ સમજી; ધર્મદેશનાઓ આપતા, જેમાં ધર્મના સ્ક્રમ દ્વરૂપ વિષે, તેના પ્રકાર વિષે, અને તેના અનુસાન વિષે બાધ આપતા (૧૪૫–૨૦૧). પ્રયોગાપત્ત ઉદાદનણા આપી તેઓ ઉપદેશ આપતા અને બ્રાતાઓ ઉપર તેની લેડી અસર થતી. તેમને દ્વાખ સદન કરવાની પ્રેરણ અને પ્રક્રત્યા સ્વીકારવા ઉત્તાલના મળતી (પદ્૧–૫૯૩).

સંઘની સાથે જતા આચારોો વિકેટ સ્ત્તા વડાવી સંઘથી છ્ટા પડી વિદાર કરી જતા (૨૨૨)

· ગુજરાબામાં પણ ધર્મ અને વત્ત્વણન ઉપર વાદવિવાદ થતા. રાજને મત્રીઓ દુ²ગ્રાસ્ત્રિય સામે ચેતવતા પણ ખરા ((૨૮૫–ટ૨૯) ચાર્વાકમત, બોલ્સમત તથા માયાવાદનોં નિર્પણ અને નિરસન આ સગ માં આવે છે, આ વિષય એક સ્વતન્ત્ર લેખ માગી લેતા હોવાથી અહીં તેના વિચાર નહીં કરીએ.

સંગ્રુક્ત કુકુમ્ખમાં મુખ્ય પુરુષ કુટું ખના વડા હતા. લાજ કાઢવાના રિવાજ વિષે કાઈ સ્પષ્ટ પ્રમાણુ મળતું નથી, પરંતુ સ્ત્રીનું સ્થાન કાંઈક નીચું હતું (૭૯૬) લગ્નની પ્રથા વિષે ખાસ માહિતી મળતી નથી. આ પછીના સર્ગોમાં વિસ્તૃત લગ્નવર્ણન આવે છે, જે બહુ રસિક પણુ છે. પરંતુ તે આ નિબ-ધની મર્યાંદાની બહાર હાવાથી તેને સ્પર્શનું અહીં ઉચિત નથી.

છોકરાના પરાક્રમથી અગર ખીજી કાઈ રીતે છેકરીને તે ગમી જતા ત્યારે— " अस्वातन्त्र्यं कळळीणां. घमों नैसर्गिको यतः "

चे सूत्रने अनुसरी पातानी सणी द्वारा ते पिताने विनंति करती (१८४). अने पिता ये। व्याता हाय ते। विरोध करते। नहीं ने तेवां क्षत्र करी आपते। (१८५).

કન્યા પરભાને પતિને ઘેર જતી (६८८) નવસુગલ સિત ને ક્ષીમ વસ્ત્રો પહેરી ઘેર જતું (६८८).

ભાળલગ્નો તે કાળે નહીં થતાં હાય તેમ તા નહીં જ. ૨૪૪મા શ્લાકમાં પિતાના આદેશથી મહાબલ પરણે છે, અને ૨૪૫મા શ્લાકમાં કહ્યું છે કે:—

" रतिलीलावनं सोऽथ, यौवनं प्रत्यपद्यत "

જો કે આ પહેલાં તેણે બધી કળાએ હસ્તગત કરી લીધી હતી (૨૪૩), એટલે પરાલુવાને ચાગ્ય ઉમ્મર થઈ હશે. છતાં આ કથન અપક્વ વયનાં લગ્નો તરફ અંગૂલિનિદેશ કરે છે એમ કહી શકાય.

સ્ત્રીએ છૂટથી હરીક્રી શકતી હશે. કેમ કે વાર્ણિલ્યાથે વિચરતા સંઘમાં પાતાનાં સંબંધીએ સાથે ઘણી સ્ત્રીએ જતી (૮૭–૮): ગ્રોષ્મના તાપને લીધે માર્ગની સરિતા-એમાં પડતી અને નિલનીનાલ ગળા ઉપર ધારણ કરી ઠંડક કરવાના પ્રયત્ન કરતી.

યુત્રીતા જન્મ એ દુષ્કર્માનું ફલ લેખાતું (૫૩૪). એક સ્થળે તેને ખસના ફાેડલા સાથે સરખાવી છે (૫૧૩). તેના ઉછેરમાં પણ ગરીળ લેાકાે તા બેદરકારી જ રાખતા (૫૪૨).

' પહેરવેશમાં સામાન્ય વસ્ત્રો ઉપરાંત દિવ્ય વસ્ત્રોના નિદેશ મળે છે, જેના દેવાંગવા-સસ્ અથવા તા દેવદુષ્ય વસ્ત્ર તરીકે ઉલ્લેખ છે (૪૦). ધર્મિષ્ઠ શ્રીમંતાને ત્યાં તા એના હગલા હતા (૪૦). હીંચણુ સુધીના ખૂટ અગર માનાં(मोचक)ના પણ સ્પષ્ટ ઉલ્લેખ છે:

" अध्वन्यज्ञन आजानुसंलग्ननवर्तमः । आमुक्तमोचक इव, प्रचचाल शनैः शनैः " (८६)

સ્માથી સ્પષ્ટ થાય છે કે मોचकને લીધે ગતિ ધીમી પડી જતી હતી.

કર્ષેર, અત્રરૂ, કરન્દ્રી, અન્દન અને ઘનસાર અંબલેપ માટે વપરાતાં (૩૪૨, ૩૬૭). આબ્યુણામાં — પત્રમાં રતકટક, કેટ પર કિસ્ત્ર, દાશમાં કંકાન, આદું ઉપર અંબદ(કરાં), હાતી ઉપર દાસ્પર્ણિ, ગળામાં એવેયક અથવા "નેક્ક્ષેત્ર", કાને કુંડળ અને મસ્તક ઉપર ક્લદાર તેમ જ કિરીટ પહેરવામાં આવતાં (૪૬૫–૬).

ગૂતા માટે ત્લશ્યા અગર રનાં ગાદલાં વપરાતાં (૪૧૩). દેાલા અગર હીં ચંદા પણ એક મન બહલાવવાનું ગાધન હતું (૫૦૬) સુન્દર ક્રીડાપવિતા, સરિતાઓ, વાપીઓ, દ્રીપ્રિ'કાઓ અને ઉપવત્તા તેમ જ ઉદ્યાના જેવાં આનન્દપ્રમાદનાં સ્થાના પણ સુષ્ટળ હતાં (૧૧૩). મૃત્રાયા પણ પ્રવર્તા (૫૭૪).

વારાંગનાઓનું પ્રમાણ પણ કાંઈ નાનું ન ૮તું. ચામર, દર્પણ અને પંખા જેવાં માધના વર્ડ રાજા (અથવા બીજા એવા શીયન્ત મનુશ્રા)ની ચેવામાં વારાંગનાએ રહેલી(૪૮૮).

पोन अथवा दे। प्रे. १ तथा तरण्ड अथवा तरापा (३१८) पणु दता. दे। है। तेमां भेभी अदेशभाद पणु इरता देशे.

કાચા સ્તરનાળા ખાડલા ઉપર બેસાડી નીંચ પાડવાની મરકરી પછ થતી (પપદ).

કપિકચ્છ્ ક્લના સ્પર્શ થતાં ખૃષ્ય ખૂજલી આવ્યા કરે છે અને ક્યાંય ચેન પડતું નથી; એલું આજે પણ અતુમવાય છે. કેટલીક વાર સામાને " ઉંચા—નીંચા કરવા", સારા તેમજ નરમા મિપે; ખુરશી જેવાં સ્થળાએ આને વેરીને ફ્રુર મશ્કરી કરવામાં આવે છે. તે વખતે પણ તેવી મશ્કરી કરવામાં આવતી (૫૮૮).

અનાજના ઢળલા તથા શૃષ્ણિના દિલ્લેખ પણ મળી આવે છે (૪૦). અનાજ ફાંઠી-ઓમાં ભરતા (૮૬૪). પાંકી કેરી (૫૮) ઉપરાંત પક્ષ્વ શ્યામાક, નીવાર, વાહુંક(ચીંબડું), કુવલ(કાકડી, એાર) વગેરે પણ પુષ્કળ પ્રમાણમાં મળતાં (૨૧૧). ગ્રેસ્ટીનાં તા વન હતાં (૨૧૨). ઉત્સવ પ્રમંગે માદકાદિ મિટ્ટ પણ આરોગાતાં (૫૪૮). ગાળ, હ્યાટ અને પાણીના મિદ્રાણમાંથી મદ્યાદિત દત્પન્ન શાય છે એવું વિધાન છે (૩૩૨). કૂધ, મધ તથા ઘીના પણ હ્ટ્યી ઉપયોગ થતાં (૮૬૯–૭૦). થીજેલા ઘીના પણ દ્રશ્લેખ મળે છે (૧૩૮).

ખારાકના ગ્રાર પ્રકાર એક રચળે અણાવ્યા છે: અશન, પાન, ખાદા(ફળાદિ) અને ક્વાદા(સુખવાસાદિ) (૪૫૬). કડવી તુંબડીના હલ્લેખ પણ એક રચળે પ્રણે છે (૫૯૭).

તે સમયે માંસાદાર પણ થતા હતા (૫૭૧–૩, ૫૭૭). માંસ રાંધીને આતા, તેમ જ મસા ગાળીને લેતા. પણ તેવા લાકા હલકા મણાતા હશે.

ચારા પ્રમાણમાં રક્ષકાની વ્યવસ્થા રાખવી પડતી. ભરચક વસ્ત્રીવાળા શહેરમાં નાનાં ગામઠાં કરતાં ચારી-લૂંટના ભય એાકા રહેતા (૨૬૪).

પરસ્त्रीगमन के બીજો દોષ હતો (૫૮०). આ બન્ને શુના માટે શુનેગારાને પકડવામાં આવતા (૫૮०). કેદીઓને એડી પહેરાવવામાં આવતી (૫૧૩). લાંચ-રુશવત અને બીજા વિત્તમાંથી ઉત્પન્ન થતા દોષો તે સમયે પછુ પ્રચલિત હતા (७૧૨-૪). રાજપુત્ર રાજ્યના લાલમાં ક્સાઇને પ્રજામાં પૈસા વેરી તેને લેદે છે અને રાત્રે સ્તેલાં પાતાનાં મા—આપને વિષધ્ય આપી ગૂંગળાવી મારે છે (७૧૨-૪). રાજાઓ ઉપરાંત બીજા શ્રીમંતાના ઘરમાં પછુ આવા અનેક પ્રકારના સહા હશે ' द्वादशपञ्जरिकास्तोत्र 'માં સાચું જ કહ્યું છે કે:—

" पुत्राद्पि धनमाजां भीतिः, सवेत्रैपा विहिता रीतिः " ॥

घૂત વિષે કાઈ માહિતી અહીં મળતી નથી, પણ પછીના સર્ગોમાં આવે છે. વારાં-ગનાઓ વિષે તાે આગળ કહેવાઈ ગયું છે. તેમના ધંધા રીતસર ચાલતાે (૭૩૯).

આ અર્ધા કુપણા સર્વ'કાલસામાન્ય હાવાથી એમાં કાંઈ જ વિશિષ્ટતા નથી.

કેટલાક રાગા અને તેના ઉપચારા વિષે પણ કેટલીક માહિતી મળે છે. સામાન્ય જવર ઉપરાંત પામા—એટલે ખસ—ના ઉલ્લેખ મળે છે તે ખણવાથી વધ્યા કરે છે એતું એક વિધાન છે (૨૯૮) વળી ખીજા એક સ્થળે કહે છે કે, જેમ પામાના પિટક—એટલે કે ખંસંતા ફાડલા એક ખીજાની નીચે ઉત્પન્ન થયા જ કરે તેમ ઉપરાઉપરી પુત્રીએ જન્મી (પવં૩). આથી સ્પષ્ટ થાય છે કે આ રાગ ચેપી લેખાતા.

જન્મથી અન્ધ, બધિર, પંગુ અને કુર્પ્કીના સામાન્ય ઉલ્કેષ્મ છે (૫૭૯). કૃમિકુષ્ઠ એટલે જન્તુઓથી ફેલાતા કાઢ કુસમયે અપથ્ય ખારાક લેવાથી થતા (૭૩૪). કાઢના નિવારનુ માટે લક્ષપાક તૈલ, ગાશીપ ચન્દન અને રત્નકમ્ખલ-એ ત્રનુના પ્રયાગ સ્વગ્યા છે (૭૪૬). તે ઉપરાંત ૧૬ શ્લાકામાં આ ઉપચારના પ્રયાગ અતાગ્યા છે (૭૬૧–૭૬), જે સંક્ષપમાં નીચે પ્રમાને છે:—

લક્ષપાંક તેલથી શરીર ચાળતું. આ તેલ ખહું ઉપ્રવીર્ય હાવાથી રાગી મૂર્છિત થઈ જશે, પણુ શરીરની અન્દરથી કુલ્ઠના કૃમિએા, જેમ રાક્ષ્ડા ઉપર પાણી છાંટવાથી કીઠીએા બહાર ઉભરાઈ આવે તેમ, બ્યાકુલ થઈ ને ઉપર આવી જશે. પછી ચન્દ્ર જેમ જ્યાત્સનાથી આકાશને આચ્છાદિત કરે તેમ, રત્નકમ્બલથી શરીર બરાબર ઢાંકી દેતું. આથી ગ્રીલ્મના મધ્યાહ્નતાપથી પીડાયેલી માછલીએા જેમ શેવાળ ઉપર આશ્રય લે છે તેમ તેલની ઉચ્છુતાથી પીડિત થયેલા કીડાઓ શીતળ રત્નકમ્બલને ચાંટી જશે. સાચવીને કાંબળા ઉઠાવી લઈ પાસે રાખેલા ગાયના (કે બીજા કાઈ પ્રાણીના) શખ ઉપર ધીમે ધીમે ખંખેરવા, એટલે કૃમિએા બધા એ મૃતદેહ ઉપર પડશે. આ પછી ગારીર્યાંચન્દનના લેપથી રાગીને બહુ રાહત રહેશે. પહેલા પ્રયાગે ચામડીમાંના કીડાએ દૂર થશે. બીજી વાર આ જ પ્રમાણે કરવાથી માંસમાંના કીડાએને પણુ દૂર કરી શકાશે. અને ત્રીજા પ્રયોગે હાડકામાંના જન્તુએ નીકળી આવશે. આ ઉપાયથી રાગીનું શરીર ચકચકિત સાનાની મૂર્તિ જેતું કાન્તિમાન થઈ જશે.

આજે કાઢના રાળ વિશેષ ક્લાના માલ્મ પડ્યો છે, અને તેના સામના પણ આગળ વધેલા વિગ્રાનની મદદ વડે પાક્ષાન્ય પહિતાએ થઈ રહ્યો છે. આજે તા એવી કેટલીયે ઓપબ્રિએા, આપણે પિછાની શકના ન દાવાથી અધારામાં અટવાઈ ગઈ છે. તે એ અધી પ્રાપ્ત શાય તા આયુર્વેદ માનવ—સમાજની સ્તમ સેવા બજાવી શકે. તેથી યુત્ર વેચમદાશયાનું ધ્યાન આ તરફ કોરવાની ઇચ્છા થાય છે. સાહિત્યાદિ ક્ષેત્રામાં સંશાધન થાય એ લહું સાફું છે અને જૂના જમાનાઓ કપર તેથી અદુ પ્રકાશ પડી શકે છે; પણ માનવસ્યુદાયની સાચી ગ્રેવાની વ્યાવદારિક દરિથી આયુર્વેદના કેંત્રમાંના સંશાધનની આજે અત્યત્ત આવશ્યકતા છે, અને તેથી આયુર્વેદની કપયોલિવાનું મૂલ્ય એપછું આંકતું તે લયંકર બુલ બણારો.

સૃચ્છિની મૃચ્છી વાળવા માટે કપાળ તેમ જ છાવીમાં અન્દનના લેપ કરવામાં આવતા એવું પણ બાળવા મળે છે. (૧૩૧).

খাঠি એક হয়ণ ঋথাঁণ ঋয়ুব'ং ঋন औष्धिओनः হবাত (বন্ধ), গ্রচ্যি (র্ঘার্য) तेम ৵ ঋথ (বিধান্ধ)না সাননা খন্ত প্রশ্নেখ মণ্ড উ:—

> " विदाञ्चकारायुर्वेदं, जीवानन्द्रोऽपि पैत्रक्षम् । अग्राष्ट्रमीपचीञ्चापि, रम-बीय-विपाकतः " (७:७)

અને આજે વૈદ્ય-ટાક્ટરામાં જે ગ્રાચનીય સ્થિતિ પ્રચલિત છે તેવી આજથી ૮૦૦ વર્ષ પૂર્વે પણ હતી તેની પ્રતીતિ કરાવતાર એક સ્કૃટ કટાક તેમને માટે અતિ મનનીય છે :—

> " मदा संस्तृतमप्यार्नमपि प्रार्थकमप्यहा ? विस्मा इय विना दृष्यं, यूर्व नाःकृगपि पर्यय " (७३५)

ભૂતંત્રેત વિષેની માન્યતા આજના જેવી જ ત્યારે પણ હતી. મન્ત્રના પ્રભાવથી મૃત્-પ્રતિને ક્ષુર કરતા (પડ્ય). જ્યારે કોઈ રાળ ઔષષિઓને ન અલ્કારે ત્યારે આધિ દેવિક દેશની શંકાથી મન્ત્રતન્વાદિના ઉપચાર ચાજતો (૧૪૦).

દર્ડક નાયના રાજા પાતાના ખુબનામાં અજગર થઈ તેનું રહ્યુલ કરે છે (૪૩૫). પરાષ્**ર્વથી ચાલી આવતી " યતિ તેવી અતિ** " તથા સૂત્રર્ભયાંના ખુબનારકાક નાગાની આત્યતાના, એ પ્રસંગ દોતક છે.

है। टिवंश्वरूधी तांभुं सु-वर्ष भनतुं केवृं पण्ड स्पप्ट इथन के (८४४). को कोइ भननी पांकिश देशे ?

કાઈ પણ મામતની અહેરાત કરતી હાય તા રિખ્ટિમ એટલે હાંડી પિઠાવી સાદ પડાવવામાં વ્યાવતો (૪૫). આવા સાદ પાડનારને " આકારક નર " કહેતા (૫૦). વ્યાજે પણ આ પ્રથા પ્રચલિત છે.

મહિયા ક્રપર પાણીની પધાલા મૂકી ફેરવવાના નિવાજ, આજની માફક, ત્યારે પણ હતા (৩૦).

બાહ સ્ત્યા જેવા યાળ્યવસ્તલ્લામાં જૈન તાર્જ કરાનાં અસ્થિ રહ્યતાં (૪૯૭).

ગુલામીની પ્રથા તે સમયે પ્રચલિત હતી અને ગુલામાની દયાજનક સ્થિતિનું ખ્યાન એક જ શ્લાક સરસ રીતે કરે છે:—

> " मुल्यक्रीताश्च ताऽयन्ते, केचिदश्वतरा इव । अतिभारेण वाध्यन्तेऽतुमाव्यन्ते तृषादिकम् " (५८२)

સૂત્રાદિ ક્રિયાઓ પશ્ચર ઉપર કરવાની રીતિના ઉલ્લેખ પણ એક જગાએ મળે છે (૩૨૬). કપડાંને પશ્ચર ઉપર ઝીકીને ધાવાની પ્રથા તરફ પણ એક શ્લાક ધ્યાન દેારે છે (૫૬૪).

રાજસભાએ ભરાતી તેમાં મળેલા લાકાની નજર રાજ ઉપર જ કેન્દ્રિત થતી (૨૮૫–६). નાટયશાસ્ત્રમાંના વર્ણુંન સાથે આ કથન સુસંગત છે એમ એક વિદ્રાન મિત્રે જણાવ્યું છે. આ સર્ગમાં ઘણાં પશુ–પક્ષીઓનાં નામ આવે છે. તેમાંના કેટલાક નીચે પ્રમાણે છે:—

જળચરાને ખાઈ જનાર થક (૫७१); તિત્તિરિ, શુક, કપાત અને ચટકા (ચકલી)ને ખાઈ જનારા શ્યેન, શિંચાન અને ગૃષ્ઠ (૫७६); ઉપરાંત અલાકા (૨७૧), હંસ (૨૮૧) વગેરેના ઉલ્લેખ છે. ઉન્દર (૩૦૧), ખિલાડી (૩૧૩–૪), કૂતરા (૩૧૨), શિયાળ (૩૮૬), મીન (૩૮૬), તથા વ્યાલ–શાર્દુલ–શ્યેનાદિ યાનિએા વિષે પણ જાણવા મળે છે (૩૧૪). એક સ્થળે ઊપેઈ (उपदेहिका) વસ્તુને સાવ ફાલી ખાય છે તેવું કથન મળે છે (૫૩૫). લાવક અગર લાવરીની વિશિષ્ટતા આ પ્રમાણે રજૂ કરી છે:—

" यथा क्मापातशङ्कयेकाङ्धिणा चृत्यति छावकः " (३८६)

સામાન્ય હાથી ઉપરાંત ગન્ધગજ (૮૪૮)ના ઉલ્લેખ પછુ છે, જેની ગન્ધમાત્રથી સામાન્ય હાથીએ નાસી જાય છે. હાથીને "પાકલ" નામના તાવ આવે ત્યારે તેને ક્યાંય એન પહતું નથી (૧૧૩). જેની દિષ્ટ પહતાં જ વિષની કાતિલ અસર થાય તેવા દેગ્વિષ સપ⁴ (૧૯૧) દેવતાઓના ઉદ્દાંતથી નિવિષ અની જતા (૭૦૨). બીજાં કેટલાંક પ્રાણીએ વિષે આપણે આગળ જોઈ ગયા છીએ.

હવે શિક્ષ્પાદિ કળાઓના વિચાર કરીએ. ઠેર ઠેર ગામ બહાર ધમ શાળાએ હતી (૫૫૭). ગામની અંદર તેમ જ બહાર ઉદ્યાના હતાં (૩૪૩, ૭૬૧). ઉદ્યાનામાં પાણીની નીકા રાખવામાં આવતી (૭૬૧), જેથી સહેલાઇથી સવંત્ર પાણી પાઈ શકાય. વળી આજની નહેરયાજનાએ એ કાઈ નવી વાત નથી. માટા માટા સરાવરામાંથી નાની નહેરા મારકૃત આજી બાજીની જમીનને તે સમયે પણુ પાણી પાવામાં આવતું (૪૩, ૨૯૨). અાંધેલા રસ્તાએ પણુ ઘણુ હતા (૩૪૩). વાવ, કૂવા વગેરે ઉપરાંત પરે પણુ ઠેર ઠેર હતી ત્યાં થાકેલા ને તાપથી આતં થયેલા યાત્રિકા શાન્તિ મેળવી શકતા (૮૨). મન્દિરાની દીવાલા ઉપર ગાળ ક્રેરતી સરસ કાતરણી કરવામાં આવતી, જે શિલ્પના એક સુંદર નમૂના ગણાય (૩૪૩).

ભું ગીતકળા પણ સારા પ્રમાણમાં વિકસેલી હતી (૨૮૨). મૃદંગ (૩૪૪) ઉપરાંત हिण्डिम (૪૫) અને દુન્દુબિ (૨૭૧,૪૧૮)ના હૃદ્ધેખા વારંવાર આવે છે. મંગળ પ્રસંગ દુન્દુબિ વળાડવામાં આવતા (૨૭૨). પ્રસ્થાન–સમયે બેરી કૃંકવાના સ્વિજ હતા (૫૦,૨૧૮).

ગાંવાળિયા ગાેશું ગ વબારતા જેથી ગાંચાનાં વૃંદ સેળાં થતાં (૨૧૯). વેલુ-વીષ્ડ્રા જેવાં વાશો પણ ઢીક પ્રચારમાં હતાં (૩૪૮). ગીંત તેમ જ નૃત્ય એાહક સાધના લખાતાં (૩૦૫). ગ્રંગીતકાવિદાના એક આખા વર્ષ હતા, જે ચતુવિધિ આતાલમાં ચતુર ળણાતા (૪૮૯). પર્જ, પ્રધ્યમ અને આત્ધાર એ બ્રામત્રયથી ગીંત વધારે મધુર અનતું (૪૯૬).

ચિત્રકળાના શિક્ષણ અર્થે પણ દીત્રચર અિત્રશાકાઓ ચાલતી (૩૪૩). શ્રીમતીના અનેક બન્મોના વૃત્તાન્ત પહિરતાએ પટ ઉપર અહિંકનો હતા (૬૪૮). તે આખા પ્રસંગ ચિત્રકળાની ઉત્રતિ સ્થયે છે. કાળા, ધાળા, પીળા ક્યા, કાલ વગેર રંગા પૃદ્દા ચિત્રને તૃષ્ણું અનાવવામાં આવતું (૬૫૪). આવી કલાતું ક્લાતું કાહરમાં પ્રદર્શન પણ થતું (૬૫૦), અને નેની કદર કરનારા કુશળ કલાવિદા પણ હતા (૬૫૩).

. નેપધ્યકર્મ, નટ અને વિનટનના ઉલ્લેખા સ્પષ્ટ કરે છે કે તે જમાનામાં નાટ્યકળા પણ સુવ્યવસ્થિત રૂપે પ્રસરેલી હતી (૮૨૯).

પલાય, તાલ, હિન્તાલ, નિલની અને કદલીનાં દલમાંથી પંખા અનાવવામાં આવતા (૮૯); અને મારનાં પીંકાંની કર્તાઓ અનવી (૬૬).

આ માહિતી તો માત્ર પ્રથમ પર્યના પ્રથમ સર્ગમાંથી જ મેળવી છે, અને તે પણ અધ્રુરી. ત્યારે દશ પર્યના તે મહાલંથના સળંળ અબ્યાસ કરી પૃથક્ષરણ કરવામાં આવે તો તત્કાલીન સંસ્કૃતિ ઉપર કેટલા અધા પ્રકાશ પટે તેના ખ્યાલ એ આ અલ્પ પ્રયત્નથી આથી શકશે તો કુતાર્યતા સલાશે.

સમાજ-મંજૂનિ ઉપરાંત બીજી દિલ્લોએ પણ ગ્રમના લંઘના સમીશાયુર્વક અન્યાય ચંવા જર્લી છે અને તે કાર્ય કેટલાક ચમઘથી મેં સ્ત્રીકારેલું છે. આજે જે થાડી વાનગી મારા જેવા અલ્યજન આ વિદ્યાનાની મંગ્રદ ગ્રમણ પીરુપી ગ્રકથો છે, તેના સાચા થશ આત્રા મહદ વિષયમાં પ્રવેશ કરાવનાર મારા શરૂ શ્રી રચિકનાઈ પરીખને નવ છે. આ માટે તેમના જેટલા આભાર માતું તેટલા એકિંક છે. આ નિર્લયમાં જે સારાં તત્વા હાય તે તેમનાં છે અને જે શ્રુનિઓ જણાય તે મારા છે. તેઓશીની પ્રેરણ અને અન્ય શુધેચ્છકાની ગ્રહ્ય આ લગીરઘ કાર્યમાં મને સરા મળી રહે એવી નમ્ર પ્રાયના અને દઢ શ્રહા સાથે વિર્લ્યાકા.

અહિંસાધર્મ અને તેના સંસ્કૃતિના– વિકાસક્રમમાં ઉપયોગ

[લેખક : શ્રીશ્રુત પ્રહુલાદ ચન્દ્રરાખર દિવાનજી એમ. એ., એલ. એલ. એમ., મું ખઇ]

- ૧. અહિંસા ધર્મ એટલે શું ?
- ર. તે ધર્મની શાધ કાશે કોધી હતા ?
- 3. આય'સ સ્કૃતિમાં તેનું સ્થાન.
- ૪. હિન્દુ, જૈન અને બૌદ્ધ ધર્મોમાં તેનું સ્થાન.
 - ય. સમ્રાટ અશાક તેના કરાવેલા પ્રચાર
 - ૬. મહારાજા કુંમારપાળના રાજશાસનમાં તેના થયેલા અમલ.
- ્ર ૫રરાષ્ટ્રશાસનમાંથી સુક્તિ મેળવવામાં મહાત્મા ગાંધીએ તેના કરેલા ઉપયોગ અને તેની માનવસંસ્કૃતિ ઉપર થયેલી અસર.
 - ંદ. આધુનિક સંસ્કૃતિમાં તેનું સ્થાન.

૧. અહિંસા ધર્મ એટલે શું ?

' અહિંસા' શબ્દ અભાવવાયક છે. એવા શબ્દોના પ્રયાગ કરવાની કપારે જરૂર પડે છે કે જ્યારે તેથી જ્ઞલટા ભાવ સિદ્ધ અગર નિશ્ચયાત્મક હાય એ શબ્દ જ તેથી સ્વવે છે કે, જ્યારે પણ એના પ્રથમ પ્રયાગ થયા હશે ત્યારે પહેલાંના કાળમાં 'હિંસા' એટલે ઈજા કરવી અગર મારતું અગર મારી નાખલું એ પ્રસિદ્ધ અગર નિશ્ચિત અર્થવાળા શબ્દ સંસ્કૃત ભાષામાં પ્રચલિત હાવા જોઈ એ અને તેથી જ તે ભાષાથી પરિચિત સામાન્ય જનતા પણ તેના અર્થ વિના પ્રયત્ને સમજતી હાવી જોઈ એ. તેથી જ્ઞલટા ભાવ સાંભળનારના હૃદયમાં ઉત્પન્ન કરી શકાય તે માટે બીજો કાઈ સહેલાઇથી સમજ શકાય એવા ભાવાત્મક શબ્દ અનાવી શકાયો નહીં હાય તેથી 'હિંસા' શબ્દ ને જાણીતા અર્થવાળા હતા તેના કાઈ એ નય તત્પુરુષ સમાસ અનાવી તેના પ્રયોગ કરીને ધારેલા અભાવાત્મક અર્થ સમજાવવા માંઠયો હશે. તે સમજાવવાની શી જરૂર પઢી હશે તે વિચાર કરવા જેલું છે. વળી 'ધમ' શબ્દ અનેક અર્થમાં વપરાય છે, તેમાંના જે એક અહીં બધ બેસતો છે તે 'આચરણ માટેના એક અનુદલંઘનીય નિયમ' છે. તેથી " અહિંસાધમ'"એ સમાસના અર્થ એ શાય છે કે 'હિંસા કરવી નહીં એ આચરણ માટેના અનુદલંઘનીય નિયમ.'

ર. એ ધર્મની શાધ કાલુ કીધી હતા ?

આવા નિયમ ઘડીને મતુષ્યબતિના એક વિશિષ્ટ સમૃહના આચરળ માટેના નિયમામાં તેને ક્થાન આપનાર કાઈ મહાન વ્યક્તિ હાંયી એઈએ એ તો સહેજ સમજી શકાય એવી આગત છે કારણ કે આપણે એઈએ છીએ તે ઉપર વિચાર કરતાં લાગે છે કે વિશ્વમાં અનેક નાના માટા કદનાં, એાછી વન્તી શક્તિવાળાં પાણીએ છે, તે દરેકને પાતાના પાણ ટકાવી રાખવા માટે તેને પાપણ આપવાનું સાધન મેળવી લેવા માટે સ્વાસાવિક પેરણ શાય છે અને તે મેળવવા જતાં તેઓ એક ખીબ સાથે સંબંધમાં આવે છે એટલું જ નહીં પરંતુ તેમને પરસ્પર કલહ ચવાના પ્રસંગો બને છે અને આખરે જે વિશેષ ભળવાન દેશ છે તે અલ્પળળવાળાને દળાવીને અને જરૂર પડે તા માર—દાણ કરીને એટલે કે 'મહ્યન્યાય' પ્રમાણે વર્તીને પણ પાતાના સ્વાર્થ સાધી લે છે. વિશેષ, પશુઓમાં તે એ નેસિર્ધ ધર્મજ પ્રચલિત છે કે બિલાડી ઉદરને ખાય છે, વાઘ અને સિદ્ધ ઘટાં, બકરાં, બાય, બળદ કે બેંસ, પાડાને ખાય છે. માટી માછલી નાની માછલીનું બક્ષણ કરે છે. જ્યાં લગી મનુષ્યપ્રાણી ખેતી કરીને ધાન્ય ઉપવાં શીખ્યા નહાતો ત્યાં લગી તે કંદમૂળ અને શિકાર કરેલાં ગરીબ પ્રાણીએના માંસ ઉપર પાતાના નિર્વાદ કરતા હતા. તે શિષ્યાને ત્રન્તરા વર્ષો થઈ ગયાં છે તે છતાં ધાન્ય, ફળા અને વનસ્પતિ માંસ—મચ્છી ખાનારા મતુષ્યાની સંખ્યા તે ન ખાનારાઓની સંખ્યા કરતાં હિંદ સિવાય પૃથ્ઠી ઉપરના દરેક દેશમાં વધારે છે.

એવી વ્યક્તિ કાળુ હતો તે વિધે પુરાણા સાહિત્યમાંથી શાધતાં જણાય છે કે તે સાંખ્યશાજાનાં મુખ્ય તત્ત્વે શોધી કાઢનાર અને તત્ત્વગ્રાન પ્રાપ્ત કરીને જન્મમરણ અને આધિ, વ્યાધિ અને ઉપાધિથી જીવને માથ મેળવવાના માર્ગ શોધી આપનાર લગવાન કપિલસુનિ હતા. 'શીમદ્ર લગવદ્ગીતા 'માં એમને સિહોમાં મુખ્ય અને અથીત જે તે વર્ગના લાળુરામાં પરમાતમાની વિસ્તિ તરીકે અહેર કરેલા છે. ' શીમદ્રભાળવત્તપરાણ 'માં એને લગવાન અશ્વરભ્રદ્યાના અવતાર તરીકે ઓળખાવેલા છે. ' તિપછિશલાકાપરુપ ચરિત 'માં વાસુરેવ-ઝૃષ્ય શ્રસ્તિ છે, તેમાં ઘાતકીખંડના રાબ પદ્યનાલ અને તેના શરૂ કપિલ શાયના પ્રસંગતું વર્ણન છે તેમાં ' જંપાદ્યુપાં વિશ્ળોઃ कપિત્યાવ્યવ્ય સંચક્ષઃ ' તરીકે પદ્યનાલને એમળખાવેલો છે.'

'શ્રીમદ્ર ભાગવતપુરાળુ 'માં જોના માત્રાપનાં લગ્નથી માંડીને એ પાતાની માતા દેવડુતિને બાધ આપીને પ્રાયુદ્ધીથી દિશા (આપ્રદેશ્યુ)માં સિધાવ્યા ત્યાં સુધીનું વૃત્તાન્ત

૧. શ્વેનાશ્વનગાપનિયન પાર.

ર. લ. ગી. ૧૦.૨૧. શ્રીમદ્ ભાગવન ઢ ૨૪૧૯માં પણ એને વિદ્યાગાયીના તરીકે આળખાવેલ છે.

^{3. 41.} y, 32.42.

જ. ત્રિ. શ. મુ. ચ. ૮.૧ ..

છે. પ તે ઉપરથી જણાય છે કે એની માતા દેવહૂતિ સ્વયં ભૂમતુની પુત્રી અને ઉત્તાનપાદ તથા પ્રિયત્રતંની ખહેન થતી હતી. વળી, તેમાં જ એક ખીજા આગળના સ્કંધમાં પ્રિયત્રતના વંશતું વર્ણું વર્ણું ન છે, દેતમાં જણાવ્યું છે કે, પ્રિયત્રતના એક છાકરાતું નામ અસીધ્ર હતું, તેને નાસિ નામે પુત્ર થયા હતા, તેના મરૂદેવી નામની સ્ત્રીથી લગવાન ઋક પલ દેવ તરી કે જે પ્રખ્યાત છે તે પુત્રરૂપે અવતર્યા હતા, તેની સ્ત્રી જયન્તીથી તેને ભરત નામે પુત્ર થયા હતા. તે અધા પુત્રામાં સૌથી માટા હતા, મહાયાગી હતા, તેનામાં એટલા શ્રેષ્ઠ ગુણા હતા કે તે ઉપરથી આ વર્ષને 'ભારત' નામ આપવામાં આવ્યુ છે, તથા એ ભરત વિશ્વરૂપની કન્યા પંચજની સાથે પરવ્યો હતા તેથી તેને પાંચ પુત્રા થયા હતા તેમાં સૌથી માટાનું નામ સુમતિ હતું. આ ઉપરથી એમ જણાય છે ભગવાન કપિલ સુનિ ઋક પલ દેવના દાદા આગનીધ્રની ફાઇના છાકરા થતા હતા અને તેથી જ તે ઋષભદેવથી છે પેઢી આગળ જન્મ્યા હતા.

3. આર્થ સંસ્કૃતિમાં તેનું સ્થાન

અહીં કાઈને શંકા થશે કે સાંખ્યશાસ્ત્રમાં, અહિંસા જે યાંગશાસ્ત્રના થમા પૈકી એક અને તેમાં મુખ્ય છે તેને સ્થાન શી રીતે હાઈ શકે. તેણે એટલા વિચાર કરવા એઈએ કે એક સાંખ્યસ્ત્રમાં જ્ઞાનાન્યુક્તિઃ એમ કહ્યું છે તો પણ આગળ જતાં તેમાં જ ગ્રાનનાં સાધનાતું જે નિરુપણ કર્યું છે તેમાં ગ્રાનના પ્રતિબન્ધક વિષયાપરાળના નાશ થાય નહીં ત્યાં લગી ગ્રાનના ઉદ્દય શક્ય નથી. તેના નાશ કરવા માટેતું સાધન ધ્યાન છે, ધ્યાનસિહિ વૃત્તિનિરાધથી થઈ શકે છે, વૃત્તિના નિરાધ વળી ધારણા, આસન અને સ્વકમધી સિહ્ધ શકે છે, પ્રાણાયામની ક્રિયાથી ધારણાસિહિ થાય છે, ર્યા આસનથી રથયાં અને સુખ, જેની પ્રાણાયામની ક્રિયામાં આવશ્યકતા છે તે આવે છે, ર્ય સ્વાશ્રમવિહિત કમંતું અનુષ્ઠાન એ સ્વકમ' છે અને ઉપલા ઇલાજ સિવાય વૈરાવ્ય અને અભ્યાસથી પણ ચિત્તવૃત્તિના નિરાધ થઇ ધ્યાનસિહિ થાય છે, ર્યા એલા પ્રતિપાદન કીધેલું છે. આ પ્રમાણે 'પાતંજલ-યાગ 'માંના યાંગનાં આઢ અંગો પૈકી આસન, પ્રાણાયામ, ધારણા અને ધ્યાનના તો સ્પષ્ટ જ ઉપયોગ દેખાઢેલા છે, વૈરાગ્યમાં પ્રત્યાહાર(ઇન્દ્રિયોને વિષયમાંથી ખેંચી શેવી તે)ના સમાવેશ થાય છે અને ધ્યાન કરવાના હેતુ છેવટે સમાધિદશાની પ્રાપ્તિ એ જ હાઈ શકે. એટલે સાંખ્યસ્ત્ર પ્રમાણુ ગ્રાન એટલે માત્ર છુહિજન્ય ગ્રાન નહીં પરંતુ વિગ્રાન સહિત ગ્રાન એવે અર્થ ફિલિત થાય છે અને તે થવા માટે યમનિયમાનું પાલન આવશ્યક છે જ

પ. ભા. પુ 3.૨૧ થી ૩૩ સર્ગી દ. તેજ પ.૧–૧૫ સર્ગી છ. સાં. સૂ 3.૨૩.

१०. भारणासनस्वक्रमणाता सिद्धि ॥ तदेव ३.३२ ॥ ११. निरोधम्छर्दि विधारणाभ्याम् ॥ तदेव ३.३३ ॥

१२. स्थिरसुखमासनम् ॥ तदेन ३.३४ ॥ १३. स्वक्मं स्वाश्रमनिद्दितकर्मानुष्ठानम् ॥ तदेन ३.३५ ॥

१४. वैसम्या-दभ्यासाम ।। तदेव ३.३६ ॥

એડલે અહિંસા જે યમા પેદી એક છે તે સાંખ્યપ્રક્રિયા પ્રમાણે આવત્યક છે એમ કરે છે. માંખ્યકારિકા,–ર માં યુત્રયાગાદિ વૈદિક કર્મ કરતાં ગાનમાર્ગ કેટ છે તેના વિચાર કરેલા છે અને તે ઉપર ડીકા કરતાં ડીકાકારા વૈદિક કર્મમાં હિંસા કરવી પટે છે અને તે હિંસાં ન કરવી એ વિધિવાકચતું ઉલ્લંઘન થાય છે એ બાબતના વિચાર કરે છે. વળી કારિકા,-૪૪ માં કહ્યું છે કે ધર્મથી શ્રધ્વંત્રમત અને અધર્મથી અધાગમન, જ્ઞાનથી માણ અને અગ્રાનથી અન્ધ પ્રાપ્ત થાય છે અને કારિકા-૪૫ માં કહ્યું છે કે વેરાવ્યથી પ્રકૃતિહય, અને રત્નેશુલુજન્ય રાગથી સંસારની એટલે કે દુઃખની વૃદ્ધિ થાય છે. કારિકા–૪૮ માં અનાનના પાંચ પ્રકારા જે સમ્પવ્યાનમાં અન્તરાયરૂપ છે તેના વિગાર કર્યો છે. કારિકા–૫૭ માં કહ્યું છે કે જેમ વાછરહાની વિવૃદ્ધિ માટે અન્દુક્ષની પ્રવૃત્તિ થાય છે તેમ યુરુપના માર્ક્ષને માટે પ્રધાનની પ્રકૃત્તિ થાય છે, અને કારિકા-પેલ્માં કહ્યું છે કે જેમ કાઇ નૃત્ય કરનારી સ્ત્રી पाताना हेभाव प्रेथ्डवर्भ व्यागण डरीने नृत्य डर्बुं अंध डरे हे तेम प्रदृति पुरुषने पातानुं स्वरूप देणाधीने कास्य धाय है. वो इपरधी कहाय है है ते अंध प्रभाहे पह के ज्ञानधी पुरुषने माझ भणे छे ते विज्ञानशुक्रा क छ छने ते क्यारे पेहा धाय है है જ્યારે પ્રકૃતિના સત્ત્રગુણમાં રહેલા ધમના પુરુષાર્થથી ઉપયોગ ચાય ત્યારે. એટલું ખર્રુ દે चेमां स्पप्ति व्यक्तिसाहि यमातुं निवेशन हाई अव्याचे व्यवनुं नधी. पछ तेतुं शहरू के हे के अंथ सिद्धान्ततुं न्यायनी पद्धविधी शुष्टित्रपुरःसर अविभाइन हरवा भारेना है, निःश्रेयसना मार्गमां सुमुक्षके हेनी रीते प्रयाख् हर्न्ड ते मारेना नथी. ते मारे तेर हेर्छ સાંખ્યાચાર્યનાં ચરહુની સેવા જ કરવાની હતી. સાંખ્યાચાર્યોનાં શાં શાં લક્ષ્ણા હતાં તે મલ્વા માટે 'સાગવતપુરાહુ' વગેરે અચાના અલ્યાસ કરવેા પરતા.

તે ઉપરાંત એ પણ વિચાર કરવાના છે કે આ શંશ કાંઇ ઉપર કહેલા વિચ્છુના અવતાસ્ત્રપી કેપિયુનિના અગર તેના પાતાના શિષ્યના સ્ત્રેશા નથી. તે પેકી માંખ્યસ્ત્રના કર્તા કાંઇ કિષ્ય હોય તો પણ તે મજૂર મહાર્ય નહીં પરંતુ તે નામ શારણ કરનાર કાંઇ બીજી વ્યક્તિ હોત્રી એઇએ શ્રી શાંકરાઓર્ય આવા એ કપિયા વચ્ચેના હોદ 'શારીરક-ભાષ્ય માં જણાઓ છે. 'મ' 'ચાંગસ્ત્ર '-૧-૨૫ ઉપરના વ્યાસનાષ્યમાં તથા चોજ્ય એશું કિન્દીને એક આદિ વિશાન કપિયુનું વચન શંકશું છે, '' તે ઉપર શ્રીકા કરતાં વાચરપતિ મિશ્ર લખે છે કે, એ આદિવિશાન તે કપિયુ હતા કે જેની શુરૂપરંપરામાં પંચશિષ્યાઓર્ય આવતા હતા, નહિ કે અનાદિ શુદ્રા પરન્શર કપિયુની. તેના 'હિર્જ્યમાં સુક્તના'' ઇજા હોલાથી વણા પ્રાચીન કાળમાં થઈ ગયા હતા. વાચરપત્રિએ વ્યાયના 'ચાંગસ્ત્ર'ના ઉપાદ્રાત્ર ઉપરની શ્રીકમાં ચોળી ચાદ્રવહાયનું એકવચન શંકશું કે', તે પ્રમાણે 'ચાંજ-શાસ ના જ્યા પ્રોહીના તે હિરજ્યમાં કેપિયુ હતા. ''વેતાચતરાપત્રિય 'ન. ર,માં જે ત્રાધ કપિયુ વિપે શ્રિક લિપે શર્લો છે તે ઉપરના સાથ્યમાં શ્રી શાંકરાઓર તે જ દ્રપત્રિયુમાં આવળ

१५ है। स रे.१. हे इत्तुं को साथ है, आ से, अन्य ४७ पा है। १७, ऋ है १०,१२१ १८, हिस्स्यानों योगस बचा साम्य सामा । आ से, स ४७ पा, २,

આવતા 'यो ब्रह्माणं विद्धाति पूर्वे यो वे वेदांश्च प्रहिणोति तस्मा' એ મંત્ર ટાંકીને કહે है 'कपिलोऽग्रज्ञ' એ પુરાણ વચન ઉપરથી કપિલ હિર્ણ્યગર્ભના નિર્દેશ ત્યાં કરેલા છે. વળી તે પુરાણ વચન જેમાં કપિલ ભગવાનને વિષ્ણુના અંશ, સર્વભૂતાત્મા કપિલાદિ સ્વરૂપ ધારણ કરનાર અને સમસ્ત જગતના હિતને માટે પરમગ્રાન કૃત્યુગમાં પ્રવર્તાવનાર, વગેરે તરીકે વર્ણવ્યા છે તે ટાંકીને લખે છે:—

इति परमिंपः प्रसिद्धः × × × स पव वा किपछः प्रसिद्धोऽग्रे सृष्टिकाले यो ज्ञानै-र्धर्मज्ञानवैराग्यैश्वये विंमति वंसार जायमानं च पश्येदपश्यिदत्यर्थः । १०

આ પ્રમાણે તે મહિષિ સાંખ્યમાર્ગના જ નહીં પરંતુ યોગ માર્ગના પણ પ્રવર્તક હતા, મતલખ કે, 'સાંખ્યયેગ 'ના પ્રવર્તક હતા. તેમનું રચેલું 'સાંખ્યયેગશાસ્ત્ર ' અત્યારે મળી શકતું નથી પરંતુ 'પાતંજલયેગશાસ્ત્ર ' મુખ્યત્વે કરીને તેને જ આધારે રચાયેલું છે એમ વાચસ્પતિની ઢીકા ઉપરથી જણાય છે.

એ સુનિ સૃષ્ટિના આદિકાળમાં થઈ ગયેલા તેથી ઉપનિષદકાળમાં થઈ ગયલા ઋષિએ! તેણે પ્રવર્તાવેલા ચાગને 'સાંખ્યયોગ' 'અધ્યાત્મયાગ,' વગેર નામથી ચાળખતા. શ્વેતા-શ્વતરાયનિષત્ '૧.૩માં 'ધ્યાનયાેગ' ને દેવની આત્મશક્તિના સાક્ષાત્કાર કરવાના સાધન તરીકે દૃ. ૧૩માં તે ' સાંખ્યયાગ 'ને જગતની ઉત્પત્તિનું કારણ, નિત્યામાંનિત્ય, ચેતનામાં ચેતન, અનેક વ્યક્તિએાની ઇચ્છા પૂરી કરનાર દેવનું જ્ઞાન થવાના સાધન તરીકે એાળખા-વેક્ષા છે. અને ૧. ૧૦માં તેના અભિધ્યાન, યાજન અને તત્ત્વભાવને વિશ્વમાયાની નિવૃત્તિ કરવાનાં સાધન જણાવ્યાં છે. ' કંઠાપનિષત્' – ૧. ૩. ૧૨.માં તે જ દેવને ચ્લાળખવા માટેના ' અધ્યાત્મયારા ' નામના સાધન તરીકે આળખાવ્યા છે. 'સું હકાયનિષત્' 3. ૨. ૬. માં તેના સુખ્ય લક્ષણ 'સંન્યાસયાગ 'ના ઉલ્લેખ છે. 'સંન્યાસયાગ 'એ શબ્દ 'સંન્યાસ ' અને 'ચારા' એ શખ્દાના સમાસથી થયેલા છે અને તેમાં 'સંત્યાસ' એ શખ્દ 'સમન્તા-ન્યાસઃ ' (ખધી તરક્થી ત્યાગ) એટલે કે ખાદ્ય તેમજ આન્તરત્યાગ અને વિશેષે કરીને વર્જાશ્રમ ધર્મ પ્રમાણે કર્તાવ્ય શાસ્ત્રવિહિત કર્મના ત્યાગ એ અર્થમાં વપરાયલા જેવામાં આવે છે. આ ઉપરથી જણાય છે કે સાંખ્યયોગ યાને જ્ઞાનયાગ તેના અસલ સ્વરૂપમાં મજકર ઉપનિષદાની રચના થઈ તે પહેલાંથી વેદકાળના ઋષિમુનિએ!માં પ્રચલિત હતા અને તેના ઉપયોગ તત્ત્વનાનના સાધન તરીકે થતા હતા. તેને અંગે અહિસા, સત્યભાષણ, અસ્તેય, ખુદ્માચર્ય અને અપરિગ્રહ એ યમા પળાતા હાવા જોઈએ. કારણ કે હૃદયશુદ્ધિ સિવાય તત્ત્વજ્ઞાનના ઉદય થઈ શકે નહીં એ બાબતના નિશ્ચય થઈ ગયેલા હતા. એ યમા પૈકી અહિંસાના સંબન્ધ મન અને શરીર બન્ને સાથે હતા કારણકે મનથી, વાચાથી કે કમેથી કાઈ ઇતર પ્રાણીને હિંસા કરવાથી મનમાં રાગદ્રેષની વૃદ્ધિ થાય છે અને હિંસા કરીને પ્રાપ્ત થતા માંસાહારથી શરીરતું પાષણ કર્યાંથી મતુષ્ય હૃદયમાં પશુના ગુણાની વૃદ્ધિ થાય છે.

૧૯. આ. સં. ગ્ર. ૪૭ પા. ૬૨–૬૩.

એ ઉપનિષદા સ્થાયાં ત્યાં લગીમાં 'ચાેગ સ્ત્ર'માં ઉપલા પાંચ યમા પાળવાની આવ-શ્યષ્ટતાનું પ્રતિપાદન દીધેલું છે તેલું નિશ્ચિતપણે અને સર્વમાન્યપણે દરેલું નહીં હાય એમ જણાય છે. પરંતુ મત્રાયદ્યુપનિષદ.'ના ૩૧૧ પાદકમાં પ્રકૃતિના રહ્યેશુદ્ધ અને તમાશુણેના અભિભાવથી જે પરિદ્યામાં જીવને સહન કરવાં પડે છે તેનું વિવેચન છે; તેમાં રહ્યેશુદ્ધના અલિભાવથી થતાં પરિદ્યામાં 'હિંસા'ના ઉલ્લેખ છે.²

શ્રીમદ્ ભગવદુગીતા ' જે કાળે એ સ્થાઈ હતી તે કાળમાં, જાણીતા જ્ઞાન, ઉપાયના અને કર્મમાર્ગોના સમત્વય સાધવા માટે સ્થાયલી હત્રો એ સ્પષ્ટ છે. તેથી તેના ઉપાસના-પટ્ક પૈકી ૧૦મા અધ્યાયમાં વિસ્તિયાત્ર જે ઉપાસનાના એક માર્ગ હતા. તેનું પ્રતિપાદન છે. તેમાં વાસુરેવ કિવા આદિદેવથી પૃથક્ કેટલાક ઉપાસનામાં ઉપકારક લાવા જણવ્યા છે. તેમાં 'અહિંસા' અવી જય છે. રેક તેમાં જ ઝાનપટ્ક પેકી ૧૩મા અધ્યાયમાં "ઝાન"નાં લયુણા ગણાવ્યાં છે. તેમાં પણ અહિંયાના સમાવેદા કીધેલા છે.^{રેર} તેમાંથી વળી આગળ જવાં ૧૬મા અધ્યાયમાં "અમિજાત" એટલે કે ઉત્તમ કુળમાં જન્મેલા મહુત્રમાં જે દેવી સંપત્ના આવિસાવ થાય છે તેનાં લક્ષ્ણામાં સત્ય, અક્રોધ ઈત્યાદિ સાથે અહિંસાના ઉલ્લેખ છે.^{રેટ} છેવડે ૧૭મા વ્યધ્યાયમાં સાત્ત્વિક, રાજસિક વ્યને તામસિક તપ ઉપરાંત શારીરિક વાચિક અને માનસિક તપનાં દરસ્વાતું પ્રતિપાદન છે તે પૈકી શાર્રાસ્કિ તપનાં દરસ્દ્રામાં દેવાદિતું પૃજન, શોચ, આજેવ અને પ્રદ્રાચર્ય કપરાંત અર્ડિમાના ઉલ્લેખ છે. આ કપરઘી એમ લાળે છે કે અહિંસા ધર્મ તે કાળના ઉપાસના (જેમાં યાત્ર માર્ગના સમાવેશ થતા હતો) અને ગાન માર્ગોના અતુયાગીએએ સર્વધા સ્વીકાર કરી દીધેલા હતા. ગીતાના ક્રમે-ષટ્કમાં 'અહિંચા' શબ્દ જ કાઇ દેકાણે વપરાચ્છા દેખાતા નથી. તે ઉપરથી કર્મમાર્ગ અસ્થ તે આત્ય કીધેલા નડી એમ માની શકાય. વિશેષ, તેમાં એ કમેપીયનું પ્રતિપાદન કે અને આપી ગીતાના ઉપક્રમ અને કપસંદાર અર્જુનને કર્મમાં પ્રકૃત કરવા પ્રત્યે જ છે એ દેખીનું છે. તે इपर्यी अने चे दिंचा क्रेनी पठ ते। तं के वर्षाध्रम धर्मची सम्मत है।य ते।, अदं क्षरपुदिधी નહીં પરંતુ અનિવાર્ય કર્યાં અ વર્શકે, અને આત્મા અકર્તા છે, શુધેની પ્રવૃત્તિ સ્વાસાવિક રીતે જ શુષ્ટ્રા પત્યે થાય, એમાં કે કર્મ માત્ર પ્રકૃતિના ધર્મ તે, સ્વાત્માના સ્ત્રતર પુરૂષના નથી, એમ સમજીને કરવામાં આવે તે તેથી થવાં વિપરીવ પરિદ્યામ સામવવાં પડવાં નથી એ પ્રમાણે ઉપરેશ છે. તે ઉપરથી એમ ફિલ્ન સાય છે કે બ્યાન્સુનિના અસિપ્રાય એવા હતા કે હિંસામાં દાયતા છે જ પરંતુ જગતનું તન્ત્ર જ એવા પ્રકારતું છે કે જે સમાજમાં રહીને ગૃહસ્થી જીવન આળે છે તેને હાથે કાંઇને કાંઇ કારણે થાટે થણે અશ હिंसा थया वगर रहेती नथी. तथी क तेले डमंथे।अने। सिद्धान्त अतिपाहन डरीने केटबी મર્યોદા ભાંધી આપી કે વલું છાન ધર્મનું પાલન કરતાં એ તે થઈ જાય તા તે અનિવાર્ય છે. પરંતુ તે ચાય એવા કાર્યમાં પ્રવૃત્ત થતાં પહેલાં આત્માનું સ્વરૂપ એાળખીને નિસ્ડંકારપછે તે કાર્ય કરતું; વળી એને એમ પણ શાસ્યું દાવું લેઈએ કે બધા ગૃહસ્યીએ એવી ગાન

રુ. મેં કે દ્રષ્ટ રહ્યા સા ધાર્ય રહ્યા તેજ ૧૬ છે. ૧૬ છે.

ખુબ્રિ કેળવીને નિરહંકારપણ પ્રવૃત્તિમય છવન ગાળી શકે નહીં તેથી તેણે ખીએ એવા તેલ કાઢ્યો હતો કે તેવા મનુષ્યાએ પાતાનું છવન પરમાત્માને આધીન છે અને તે જ અન્તર્યાંની તરીકે હૃદયમાં પ્રેરણા કરે છે તેથી જે કાંઈ કરીએ તે તેની ઉપાસના જ છે એમ સમજીને અગર તે પણ જેનાથી ન અને તેણે કાેઈ પણ કાર્ય કરીને તેનું ફળ તેને અપ'ણ કરવું એટલે તેના ગુણુદાયથી મનુષ્ય અલિમ રહે છે.

મહાભારત અને રામાયણની સનાતન ધર્મના સાહિત્યમાં ઇતિહાસ બ્રન્થા તરીકે ગલુના થાય છે. તે પૈકી રામાયલુ દાશરથી રામચન્દ્રના કાળની સંસ્કૃતિનું અને મહાભારત પાંડવ-કૌરવાના તે પછીના કાળની સંસ્કૃતિનું ચિત્ર આલેખે છે એક લાષા અને શૈલીની દિષ્ટિએ મહાલારત વધારે પ્રાચીન છે. પાંડવ-કૌરવાના કાળની સંસ્કૃતિનું ઘડતર ચાજવામાં શ્રી કુષ્ણ અને શ્રી વેદવ્યાસ (અપાન્તરતમસ, તે વેદકાળના અન્તિમ ભાગમાં થઈ ગયેલા એક ઋષિ) એ બેએ સુખ્ય ભાગ ભજવી હતા. તે પૈકી શ્રી કૃષ્ણે પાતાના નિઃસ્વાથી, સનાતન વર્ણાથ્રમ ધર્મને અનુસરીને યાજેલા, જીવનથી કર્મયાળના વ્યાવહારિક સ્વરૂપનું દેષ્ટાન્ત યુરું યાડ્યું હતું. તેથી તે કાળના ધર્મિષ્ટ અને શિષ્ટ યુરૂષા અને સ્ત્રીઓ તેને પર વ્રદ્ધાના સાક્ષાત્ અવતાર તરીકે માનતા હતા અને પાતાની સમાજમાંની સ્થિતિને ખંધ-ખેસતી આવે તેવી રીતે તેની સલાહને માન આપીને તેઓ કમધ્યાગના સિદ્ધાન્તને પાતાના જીવનમાં ઉતારતા હતા. તેમના કોંદ્રસ્થિક અને સામાજક જીવનાના વૃત્તાન્તદ્વારા સામાન્ય જનતા, જેને વેદના ગૃહાર્થ સમભાય નહીં તેમના હિતાર્થ, શ્રી વેદન્યાસે તે ચાગનું શાસ્ત્રીય રીતે પ્રતિપાદન તે કાળના સ્ત્રીપુરુષા સમજ શકે તેવી સાદી અને સરળ ભાષામાં શ્રીમદુ-ભગવદ ગીતામાં કર્યું હતું અને તેના વ્યવહારમાં કેવી રીતે અમલ થઈ શકે તેના દ્રષ્ટાન્ત રૂપે 'ભારત ' જેમાં ગીતાના સમાવેશ કર્યો હતા તે રચીને તેના પ્રચાર પાતાના શિષ્ય પ્રશિષ્યા દ્વારા કરાવ્યા હતા. એ વ્યાસ એટલે અપાન્તરતમસ ઋડવ્વેદના મન્ત્રદર્શ પૈકી એક છે અને પાંડવાના પુરાહિત ધામ્યઋષિ, એકખીન મન્ત્રદેશ દેવલ, જેતું નામ શ્રી કુષ્ણના લક્તોમાં ગીતામાં આવે છે,^{ર૪} તેના લાઈ થતા હતા. આથી એ સિદ્ધ થાય છે કે વૈદિક કાળના અન્ત અને પૌરાશિકકાળના આરમ્સની સંધિના કાળ અથવા બીજા શખ્દામાં કહીએ તા દ્વાપર અને કલિયુગાની સંધિના કાળ તે જ પાંડવ-કારવાના યુદ્ધના અને કૃષ્ણ-અળદેવ અને વેદન્યાસ સુનિના જીવનના કાળ હતા ઉપર કહ્યું તે પ્રમાણે સાંખ્યયાન એ ઘુણા પ્રાચીન કાળથી પ્રચલિત હતા અને કર્મયાગના અનુયાયીએ તરીકે રાજ જનક વગેરેનાં દ્રષ્ટાન્ત^{રપ} અને તેના પૂર્વે તિહાસની રૂપરેખા ગીતામાં આપ્યાં હાવાથી રક તે પશુ વૈદિકકાળમાં પ્રચલિત હોવા બેઈએ એમ માનવાને કારણ છે. તે પૈકી સાંખ્યયાગ એ નૈષ્કર્મના એટલે નિવૃત્તિ માર્ગ હતા અને કર્મયાગ પ્રવૃત્તિમાર્ગ હતા. તેમાંથી પહેલા માર્ગુના અનુયાયિઓ એટલે કે જ્ઞાનીએ અને ઉપાસકા (જેમાં યાગીઓના સમાવેશ થતા

ર૪. લ. ગી. ૧૦.૧૩. ૨૫. તેજ. ૩.૨૦ ૨૬. તે જ. ૪.૧૩.

હતોં) એ અહિંસા ધર્મને પાતપાતાના સિક્રાન્તામાં સમાવી ફીધા હતા અને તેનું કટકપણું પાલન કરતા હતા અને નિર્ભળ કર્મમાળિએ, જેને ગીતામાં "અવિપશ્ચિતા", "વેલ્લારરતા", "કામાત્માએ ", "શેર્ના '", "કામાત્માએ ", "શેર્ના '", "કામાત્માએ ", "શેર્ના '", વગેરે વિગ્રેપણા લગાહીને હલકા દરમ્ભાના ગણેલા છે, રેખ તેઓએ તેને માન્ય ક્રીધલા ન્હાતા. એક શ્રીકૃષ્ણના કાળ વિપે આ હદીકત હતા તથાપિ કર્મચાંગના સિક્રાન્ત એમણે પાતે નંવા સ્થાપિત કીધા ત્કાતા પરંતુ જે ક્રાપ્ત થયા હતા તેના પુનરુકાર કીધા હતા એમ જે ગીતાના ચાયા અધ્યાયમાં લખેલું છે. તે ઉપરથી તથા શ્રી શંકરાચાર્ય પાતાના ગીતાભાષ્યના ઉપાદ્ધાનમાં લખ્યું છે કે નિવૃત્ત માર્ગ અને પ્રવૃત્તિમાર્ગ એ અને પ્રાથિત ત્યા તથા તે પૈકી પ્રવૃત્તિમાર્ગ, જે કાલકમ ક્રમ થયા હતા તે તેને, ભગવાન નારાયણે શ્રી કૃષ્ણરૂપે અવતરીને તેના પુનઃ પ્રચાર શરૂ કર્યો હતા તે ઉપરથી લાગે છે કે હપર કહ્યું છે તે પ્રમાણે પ્રવૃત્તિ માર્ગ જ્યાં લગી અવિચ્છિત્ન ચાલુ રહ્યો હતો તે હપરથી લાગે છે કે હપર કહ્યું છે તે પ્રમાણે પ્રવૃત્તિ માર્ગ જ્યાં લગી અવિચ્છિત્ન ચાલુ રહ્યો હતો તે હપરથી લગે તેના પાતાના કર્મને અંગે હિસા કરવાની જરૂર પટ નહીં તેઓ અહિંસા ધર્મ પાળના હત્રો. તેવી જ વ્યવસ્થા પાછળથી વ્યારે પાછી ચાલુ કરી હત્રે એમ આ હપરથી જણાય છે.

૪. હિન્દુ, જેન અને બાહ ધર્મીમાં તેનું સ્થાન

ત્યારે વ્યાસે મહાભારત શુદ્ધ પછી કેટલેક કાળે વર્ણાગ્રમ વ્યવસ્થા, જે છિન્નિભન થઈ બપેલી હતી, તેને પુનઃ સ્થાપિત કરીને યગ્રયાળાદિ ક્રિયા ક્રરીથી ચાલુ શાય તેવી યાજના કરી ત્યારે જેનાના ૨૨ મા લીર્થ કર અસ્ટિનેમિ જીવતા હતા. તે શીકૃષ્ણના કાકા સસુદ્ર વિજયના પુત્ર હતા અને ફારકામાં શ્રી કૃષ્ણની દેખરેખ નીચે જ રહીને તે વિદ્યાબ્યાસ

^{3.19,} Har, 2.762-476; 62.0-22.

રડ. આ ખનાવ વિર્ષ મહાસારનમાં શાન્તિપર્વના કાંક્ષધર્મમાં પાંચરામ ધર્મનું વિવેચન છે તેમાં પરિચર વસ્તી હશકન આવે છે. તેજ હશકન કેટલાક વિસ્તાર્શી જેન અધામાં નેવામાં આવે છે અને કિચિત વિકૃત સ્વરૂપમાં બીદ જાતક કપાઓમાં પણ જોવામાં આવે છે. તેના સાર એ છે કે એક વખતે નારદપુતિ અને પરવતના એક પ્લાકાણ વચ્ચે એક પ્રયામાં આવતા 'ક્રાજ્ર' શખ્દના અર્થ વિષે તક્કાર પડી લ્તો. નારદના કરેવા પ્રમાણે તેમના ચુર્એ તેમને એ શખ્દ ઓપ્લિવાચક છે એમ સમજવ્યું હતું અને પરવતના કરેવા પ્રમાણે તેમના ચુર્એ તેમને એ શખ્દ ઓપ્લિવાચક છે એમ સમજવ્યું હતું એ એના તથા પરિચર વસુ એ પરવતના કરેવા પ્રમાણે તેણે તે શખ્દ બકરાવાચક છે એમ સમજવ્યું હતું એ એના તથા પરિચર વસુ એ ગર્મના કરેવા ગ્રાપતો બીજે દિવસે આવવાનું કર્યું અને તે દિવસ શરૂ થતા પરેશી પરવતની માએ પરિચર વસુ પાસે જઇને પાતાના પ્રથતી આજવિકાનું સાધન જાતું ન રહે તે માટે તેના અર્થનું ખરાપાયું જાહેર કરવા માટે સમજવ્યા હતા. તેથી તેણે તેમ કર્યા કે કેમ્પરથા કર્યા તે કેપરથા કર્યા તે છે તે માટે તેના અર્થનું ખરાપાયું જાહેર કરવા માટે સમજવ્યા હતા. તેથી તેણે તેમ કર્યા હતા વર્ષ તે માટે તેના અર્થનું ખરાપાયું જાહેર કરવા માટે સમજવ્યા હતા. તેથી તેણે તેમ કર્યા હતા કર્યા કર્યા કર્યા હતા અને એ એ દીતે યત્રાયારિતે અંગે પરવતે આખા ભારતમાં કરીને પાતાના અભિપ્રાયતી પ્રચાર કર્યા હતા એને એ એ દીતે યત્રાયારિતે એ પરવતે આખા ભારતમાં કરીને પાતાના અભિપ્રાયતી પ્રચાર કર્યો હતા એન એ એ દીતે યત્રાયારિતે એમ પર્શિસા શર્તા હતા હિક્ક એને બીક પુરતકામાં નથી. પરંતુ લધામાંથી સાર ઉપર પ્રમાણે નીક્ષ્ય છે.

કરતા હતા. તેની ઉંમર થ્યાશરે ૧૬ વર્ષની થઈ ત્યારે તેના લગ્નની વ્યવસ્થા તેના કુટુમ્બી-જનાએ કરી હતી. પરંતુ તે પાતાના લગ્નને અંગે પશુ હિંસા થવાની છે તે જાણીને ધસુર-થેરથી પાછા ક્યાં હતા અને પછી એક વર્ષ વ્રતો પાળીને યાગ્યતા મેળવી તેણે યતિધર્મ સ્વીકાર્યો હતો. તે ધર્મમાં હિંસા સર્વથા વજ્ય હતી. તેવી જ દીક્ષા તેણે પાછળથી ઘણા ક્ષત્રીયા તથા વૈશ્યાને આપીને નિવૃત્તિ માર્ગની પ્રણાલિકાને આગળ ચલાવી હતી એમ ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર, હરિવંશ-ચરિત્ર, ત્રિષષ્ઠી શલાકા પુરુષચરિત્ર વગેરે જૈન થન્થા ઉપરથી જણાય છે.

એાન્દ્ર ધમે પણ **ખુદ્ધના નિર્વાણ પછી આશરે ૧૦૦ વર્ષ લગી આય**ધમ⁴માંના નિવૃત્તિ માર્ગ'ના એકપ'થ તરીકે રહ્યો હતા. તેમાં પણ અહિંસાધર્મ ઉપર ખાસ ભાર મકવામાં આવતા હતા એમ ત્રિપિટક જાતક કથાએ વગેરે ઉપરથી જણાય છે. પરંતુ તેમાં પ્રાણીમાત્ર ઉપર દયા રાખી તેનાં દુઃખતું નિવારજ કરવા માટે અનતા ઈલાજ કરવા ઉપર विशेष सार भुडेक्षा छे अने कैन धर्ममां डाई पछ छव, पछी सक्षे ते अभे तेटवा सूक्ष्म मने निरिन्द्रिय हाय, केवा है मांडर अथवा मच्छर, तेने पछु जनथी न भारवा उपर વિશેષ સાર મુકેલા છે. આથી બન્ને ધર્મના યતિઓના ધર્મો વચ્ચે નોંધવા લાયક અંતર અસલથી જ છે અને તે એક ઠેઠ ખુદ્ધ ભગવાનના જીવનકાળથી જ બાહ્ય યતિઓને અમુક મર્યાદા સહિત માંસાહાર કરવાની છુટ હતી અને તે મર્યાદા એવી હતી કે કાઈ બીહ યતિ કાઈ ગૃહસ્થીને ત્યાં લિક્ષા માટે જાય તા તેણે તેને આગળથી ખખર ન આપવી કે હું તે માટે તમારે ત્યાં આવવાના છું. તેનું કારજી એ કે ખુલભગવાને પાતાના કાળની સમાજક સ્થિતિના વિચાર કરીને એવા તાડ કાઢી આપ્યા હતા કે ને કાઈ યતિને માટે ભિક્ષા તૈયાર કરવા માટે જ કોઈ પ્રાણીની હિંસા થઈ ન હાય તા માંસમિશ્રિત અન્ન તેને ત્યાંથી લઇ ને ખાવામાં દેાષ નથી. એથી ઊલટું જૈન સાધુઓ માટે એટલા કડક નિયમ છે કે કાંદા, લસણ, ગાજર, ખટાટા વગેરેના જે રસાઇમાં વપરાશ થયા હાય તેવી રસાઇમાંથી આપેલી બિક્ષા લઈને તે આરાગવી નહીં. તેટલા જ કડક નિયમ પ્રાહ્મણ ક્ષત્રિયમાંથી યતિ થયેલા પણ પાળે છે. અને ગૃહસ્થીઓ પૈકી વૈષ્ણવા પાળે છે.

પ. સમ્રાડ્ર અશાકે તેના કરાવેલા પ્રચાર

એ ઐતિહાસિક ઘટના જાણીતી છે કે સમાટ અશોકના સૈન્યે કહિંગ દેશ જત્યા પછી ત્યાંની વસતી પ્રજાના લગભગ એક લાખ માણસાની કતલ કરી નાંખી હતી. એ વાત તેના જાણવામાં આવી ત્યારે તેને ઘણું દુ:ખ થયું હતું અને છેવટે તેણે નિશ્ચય કીધા હતો કે કાઈ પણ પ્રદેશ જતી લેવા માટે હવે પછી સૈન્ય માકલનું નહીં. તેમ જ તેણે ધર્માનુસાર રાજ્ય કરવાના પણ નિશ્ચય કીધા હતો અને પાતાના અમલદારાને તે માટે સખત તાકીદ આપી હતી એટલું જ નહીં પરંતુ બૌદ્ધધર્મના અતદયા વગેરેના સિદ્ધાન્તા સામાન્ય જનતાને જાણીતા થાય તે માટે પાતાના સામાજ્યની સીમાઓને દરેક છેડે સ્તમ્લા ઊભા કરાવી તે ઉપર અને ડેકાણે ડેકાણે ગિરિસ્કન્ધા ઉપર તે સિદ્ધાન્તા તે સમયમાં પ્રચલિત પાલીલાયામાં

ફાતરાવ્યા હતા. તેમ જ ભારતની અહારના જે જે દેશા સાથે એને રાજકીય સમ્પ્રત્ય હતા ને તે રેગ્રામાં ધર્માપ્રચારકા ધાકલીને તે ચિદ્ધાન્તાથી હિન્દની કન્ને, દક્ષિણ અને પશ્ચિમ આવેલા દેગોની પ્રકારને જાણીતા કર્યો હતા. તેમાંથી સિલાન જેવા દેટલાક દેશના રાજ-એ એ લાહધર્મને રાજ્યમે વરીકે સ્ત્રીકાર્યો હતા. આથી અહિયા ધર્મ તેના સમયથી ભારતમાં સર્વત્ર અને તેની આસપાસના કેટલાક દેશામાં પળાતા થયા હતા. આ સિવાય જ્યતના કતિદાસમાં પહેલી જ વાર તેંધ્યું મતુષ્યા તથા પશુચ્યાનાં શારીરિક વ્યાધિઓના હુપચાર કરવાની સબવડ કરી આપવા માટે કેકદેકાણે દવાખાનાંએ ખાલ્યાં હતાં અને તેમાં આયુર્વે દેશાજાથી નિષ્ણાત વૈદ્યોની નિમહંકા કરી હતી. આની અગર એટલી કાયમની અઈ રની કે એના ચરણ પછી એતું સામ્રાજ્ય હિન્દમાંના અને દિન્દ અદારના કેટલાક રાજ્યોએ દીવેલાં આક્રયણાથી નુરીને મગધનું નાનું રાજ્ય જ માયજે રીએ ને કળજે રહ્યું હતું તા પણ િત્દ ખડારના આક્રમણ કરનારાઓ પૈકી જે કેટલાક બૅર્સ્ટીઅન શ્રીક અને સાક રાજચોએ હિત્દમાંના કેટલાક પ્રાત્ના જીવી લઇ ને પાતાનાં સ્વતંત્ર રાત્ય સ્થાપ્યાં હતાં તે પૈકી કેટલાકે શ્રીહક્યોના સ્વીકાર કરી અને કેટલાકે બાળવવક્રમાં સ્વીકારીને તેને રાજ્યક્રમાં તરીકે માન્ય રાખ્યા હતા એટલું જ નહીં પરંતુ તેના ઉત્તર-પૃત્રના કેટલાક દેશામાં કેલાવા કરવામાં પણ ગુજ્ય તરફથી જોઈતી મદદ કરી હતી. આ અનાવા ઇસવીસનની પૃવેના અને પછીના એક એ અનેકામાં અનેલા હતા.

દ્, કુમાર્પાળના રાજ્ય શાસનમાં તેના થયેલા અમલ

જેન બ્રેયામાંથી એવી ડ્રિકન મળી આવે છે કે છે. સ. પ્ જ થા શ્રિકામાં થઈ પ્રયેશ માર્ય સ્થાપનાર, અગ્રોકના દાદા ચન્ડાં જેન ધર્મના સ્વીકાર કર્યો ડ્રેના અને તે પાનાની જાંદગીના પાછશા બાળમાં એક જેન સાધુની સાથે કેલ્રાંટકમાં જઈને રહ્યાં ડેના અને ત્યાં ધર્મ પ્રચાર કર્યો ડેના. તે બાળતના શ્રવણ એક એલા નામે મેડ્સ્ટ્રાં રતા અને ત્યાં ધર્મ પ્રચાર કર્યો ડેના. તે બાળતના શ્રવણ એક એક વર્ષો કેટલાક જેન સ્થાપત્રના નખૂના અને લેઓ પણ મળી આત્રા છે. પરંતુ તે ખરી ડરીકતને આધારે તથાર કર્યા ડના કે કેમ તે વિષે ઘણા વિકાનોએ ગંકા ઉઠાવી છે. તથાપિ એટલું તા ખરૂં જ છે કે છે. સ. ના પ્રયા સેકામાં કેલ્યાંટકમાં દિગમ્બર જેન ચન થકેલ પ્રચાર પામ્યા ડેના અને તે રેકાના અને તે પછીના કેટલાક જેન કચિનએએ રચેલા ઘણા ધામિક બ્રન્સા આજે પણ ઉપલબ્ધ છે. તે પેડી એક મહત્ત્વના બ્રન્સ દ્વિસ્ત્રા પુરાણ છે. તે ઉપરથી એ શક્ય શો છે કે ઇચ્લીસનના ૪-૫ સેકામાં ડ્રેલાના આક્રમણથી બ્રહ્મને ઉત્તર ડિન્દમાંથી નાસીને જેમ હિન્દઓ (ગ્રીના અને વેબ્લુવા) નાસીલ ઢેગમાં જઈને વસ્યા ડ્રના અને બ્રોફ્રયનિઓ પેડી કેટલાક ચીન અને નિએટ જઈને વસ્યા ડ્રના તેમ તે જ વખતે જેના નાસીને કેલ્યાંટકમાં જઈને વસ્યા ડ્રેય. ભાગવતપુરાલમાં તો એવી આબ્રાયિકા

^{* ,} વેર્ણ, કર્મ્યા આપના ગુલ્સ નૃદ્ધ, મેલે મોકા પ્લોપી માર્કણા મહમવા મૃત્રી દ

છે^{ર૯} કે જૈનાના આદિ તીર્થ કર ઋષકદેવ ભગવાન વાસદેવના અવતાર હતા. તેને ૧૦૦ છેાકરા હતા. તે પૈકી ભારત જે સૌથી સાટા હતા તેને ભારત અને ખીજા ૯૯ વચ્ચે કુશાવર્ત, ઇલાવર્ત, ષ્રદ્માવર્ત, મલય, કેતુ, ભદ્રસેન, ઇન્દ્રસ્પૃક્ષ, વિદર્ભ, અને કીટક એ પ્રદેશા વહેંચી આપી તેમને યથાયાગ્ય ઉપદેશ આપી પાતે પ્રદ્માવત માં પ્રયાણ કીધું હતું. ત્યાં રહેતા ખ્રદ્ધાવિ પ્રવરસભાના પ્રજાજનાને ભક્તિ જ્ઞાન અને વૈરાગ્યના બાધ આપીને ત્યાંથી અવધૃતના વેષમાં મીન ધારણ કરીને આગળ પ્રયાણ કર્યું હતું. જતાં જતાં તેણે અનેક શહેર, ગ્રામ, વન વગેરમાં વાસ કર્યો હતા અને નાના તરેહના યાગના આચરણથી તેણે કૈવલ્યપદ પ્રાપ્ત કર્યું હતું. તેથી તેને અનેક યાગસિહિઓ પ્રાપ્ત થઈ હતી પરંત તેની પ્રદ્માચર્યા કાઈ ગહેની અસરથી માણુસ દેહભાન બૂલીને ઉન્મત ખનીને ભટકતા કરે તેના જેવી હતી. આવી દશામાં તે દક્ષિણ કર્ણાટકના કાંક, વે'ક અને ક્રુટક તરીકે એાળખાતા ભાગામાં ગયા હતા. ત્યાં તે કુટકાચલના ઉપવનમાં મ્હાંમાં પચ્થરા રાખીને ભટકચા કરતા હતા. તેવામાં તે ઉપવનમાં એક વખતે વાંસના અહામાંથી અતિશય વેગવાળા પવનથી ઘર્ષણ થતાં દાવાનળ પ્રકટયા હતા અને તેમાં તેનું શરીર ભસ્મીભૂત થઈ ગયું હતું. આ પછી એવી ભવિષ્યવાણી છે કે તેના બાહ્યાચરણને ધર્મ સમજીને તે પ્રદેશના અહેત નામના રાજા તેના પ્રચાર કરશે તેથી કલિકાળમાં વેષ્ણુવધમ ના વાશ થઈ ને પાખ હ ધમ પ્રવર્તશે. ઋષભદેવના ત્યાં ગયાની હકીકતમાં તથ્ય હાય કે ન હાય તા પણ દક્ષિણ કર્ણાટકમાં જૈન ધર્મની શરૂઆત તાે કળિકાળમાં થવાની ભવિષ્યવાણી છે. તે ઉપરથી ૪–૫માં સૈકામાં તેની શરૂઆત ઉત્તરમાંથી નાસી આવેલા જૈનાના વસવાટથી થઈ હાય એ આ ઉપરથી શક્ય લાંગે છે. એ હંદીકતમાં જણાવેલ અહેત્ નામના રાજા વિધે ઐતિહાસિક પુરાવા મળે છે કે કેમ તે કહી શકાય એમ નથી.

જૈન ધર્મના પવિત્ર ધામા બિહાર સિવાય પાલીતાણા પાસે શતું જય, જૂનાગઢ પાસે ગિરનાર, અને આછુ પવેત ઉપર દેલવાડામાં છે. તેથી સારાષ્ટ્ર ગુજરાત અને રજપુતાનામાં જૈન ધર્મના પ્રચાર હમણાં નેવામાં આવે છે. તેની શરૂઆત કચારથી થઈ હશે તે ચાક્કસ કહેલું શકય નથી. અલખત્ત તે લાકાની માન્યતા પ્રમાણે અને ૭ થી ૧૦ મા સિકામાં રચાયલા બન્યા ઉપરથી તા જણાય છે કે શ્રીઋપભદેવ પણ સારાષ્ટ્રમાં આવ્યા હતા અને શ્રીઅરિષ્ટનેમિએ ગિરનાર ઉપર વાસ કર્યા અને તે દરેકને માટાં શિષ્યમંડળા હતાં પરંતુ એતિહાસિક દેષ્ટિએ નેતાં વલલીવંશની શરૂઆત પાંચમા સેકામાં થઈ હતી ત્યારથી તા સારાષ્ટ્ર અને ગુજરાતમાં જૈન ધર્મનાં ધામા અને જૈનાની કાયમની વસ્તી હાવી નેઈએ એ ચાક્કસ છે. વસ્તુપાળ અને તેજપાળના વખતથી તા તેને રાજયાશ્રય પણ સારા મળ્યા હતા. પરંતુ જૈન ધર્મના સિદ્ધાન્તની અસર ગુજરાત અને રજપુતાના તથા થાણાજલ્લાના પશ્ચિમ ભાગની સામાન્ય વસ્તીનાં જવન ઉપર જે પડી હતી તે મહારાન્ય કુમારપાળ સાલંકીના કાળમાં એટલે કે ૧૨–૧૩ મા સેકામાં બન્યું હતું. તેનું કારણ એ હતું કે તે રાન્યએ

ર<u>૯. લા. યુ. પ. ૪. ૮–૧૯; ૫. ૫.૨૮–૩૫,</u> કે. ૧–૧૫.

શ્રીહેમચંદ્રાચાર્યના ગાઢ સહવાસને લીધે જેન ધર્મ સ્વીકાર્યો હતો અને તેની જ સલાહને માન આપી પાતના રાજ્યમાં છવિહેસા થતી અટકાવવા માટે યાગ્ય ટુકમા કાઢ્યા હતા. તે અસર હજ ગુધી રહી છે તે એ ઉપરથી જણાય છે કે માત્ર લીલ, કાળી, માછી વગેરે હલકી વર્ષ સિવાય ગુજરાત અને સારાષ્ટ્રમાં સર્વત્ર માંસાહારી હિન્દુઓ જોવામાં આવતા નથી.

૭. પરરાષ્ટ્ર શાસનમાંથી સુક્તિ મેળવવામાં મહાત્મા ગાંધીએ તેના કરેલા **ઉપ**યાગ

એ હિન્દુઓમાં વિદ્યુકાની ઘણી ગ્રાતિઓ છે. તેમાં કેટલાક જેનધમં પાળ છે અને કેટલાક વૈષ્ણવધર્મ પાળે છે અને તેમની વચ્ચે કન્યા ત્ર્યવડાર પણ ચાલુ છે. આવાં બે વિધ્ધ કુટુમ્બ વચ્ચે ત્રીરાષ્ટ્રમાં લગ્ન સમ્બન્ધ બંધાયેલા. તેના પરિણામ તરીકે મહાત્મા ગાંધી તરીકે વિશ્વખ્યાતા પામેલા, માહનદાસ કરમગંદ ગાંધીના જન્મ થયા હતા. આથી ચ્યેના જન્મથી જ ચ્યેના મન ઉપર વૈષ્ણુવ તેમજ જેન ધર્મ પ્રમાણુના આચારની છાપ પટેલી. એમના વૈષ્ણવિષના ચોરાપ્ટ્રના એક દેશી રાજ્યના કારભારી દાવાથી પેચે ટકે મુખી હતા. તેથી માહનદાસ નાની દમરમાં જ વિદ્યાવયામ માટે ઇંગ્લાંડ જઈ શક્યા હતા. ત્યાં રદ્યાચી પાશ્ચાત્ય સંસ્કૃતિના પાત્ર એમને શરૂઆતમાં ચાટા ઘણા તા લાગ્યા જ હતા પરંતુ એટ તે સ્વતન્ત્ર દેશના વાતાવરણુમાં રહ્યાથી એમના દૃદયમાં સ્વમાન અને સ્વદેશાભિમાનની વૃત્તિએ। પણ જાગૃત થઈ હતી. તેથી જ્યારે એ ઇંગ્લાંટથી પાછા કર્યા ત્યારથી જ અની શકે તેટલી દેશની સેવા કરવાની એને ઉમેદ હતી. આથી બૅસ્સ્ટિંગ તરીકેને৷ ધંધા કરવા માટે દક્ષિણ આક્રિકા ગયા પછી ચાટા જ વખતમાં તે દેશમાં વસતા હિન્દ્રીઓને ચુરાપીઅના પાતાનાથી હલકી જાતિના ગણીને તેમનું સ્વમાન ઘવાય એવી તેમની પ્રત્યે વર્તાલુક ચલાવતા જાઈને એમણું તેમને કાઈ પણ મુધરેલા દેશના નાગરિકને દાવા જોઈએ તેવા ડાક્ક અપાવવા માટેની લડત ચલાવવાનું થીડું તેને ઝડપ્યું હતું અને તે ઉપાડી હતી. તે માટે જે રીત એમણે સ્વીકારી હતી તેનું મુખ્ય લક્ષણ અહિંમકવર્તન ડતું. એટલે કે એમણે ઉલા કરેલા સ્વયંચેવક દળના સક્યાને એમણે સમજાવી દીધું હતું કે આપણે યૂરાપીઅના સામે અળજઅરાંથી સવી ગદીએ તેટલું આપણી પાસે સાધન નથી તથાપિ તે કારણે લડત ન કમાડની એ પણ ઠીક નથી માટે આપણે સામા ઘા કર્યા सिवाय परंतु निश्चयपृत्र's तेमना अन्यायीपाया सामे णंट हिं।वतुं अने तेने बीधे शे દઃખ સુડન કરવાં પટે તે મૂંગે માઢે સુડન કરી લેવાં. પરંતુ કાયર **ઘઈને લડ**ત છાડી દેવી નર્ડી. તે પ્રમાણે ૫-૭ વર્ષ લડત ચલાવીને તેણે જનરલ સ્મર્યના સરકાર પાસેથી ત્યાંના નાગરિકાને કેટલાક માનવજાતિના હક્કા આપવાના કરાર કરાવ્યા હતા. અને તેને વ્યતુસરીને પછી ત્યાંની સરકારે કાયદામાં ચાેમ્ય સુધારા કર્યા હતા. તે સને ૧૯૧૪ માં કર્યા. પછી તે ઇગ્લાંડ ગયા હતા ને ત્યાં રહેના હતા, તેવામાં પ્રથમ વિશ્વ વિશ્વહ શરૂ થયા ડતો. તેમાં મદદ કરવા માટે હિન્દી સ્વય્મેવકાતું દળ ઉભું કરવાની તેણે તૈયારી કરવા માંદ્રી હતી. પરંતુ કેટલાક ચલાદકારાની ચલાહને માન્ય રાખી તે ચને ૧૯૧૫માં હિન્દમાં

આવીને વસ્યા હતા અને તે કાળની હિન્દની રાજકીય પરિસ્થિતિના બરાબર અભ્યાસ કરી અમદાવાદમાં સત્યાપ્રહાશ્રમ કાઢી સત્યાપ્રહીઓની એક ડુકઠી તૈયાર કીધી હતી. તેને પ્રસંગ આવતાં ભારડાલી, ચ'પારણ્ય વગેરે સ્થળે ઉપયોગમાં આણી તેણે ખાત્રી કરી લીધી હતી કે હિન્દની બ્રિટિશ સરકાર સામે માથું ઉચકવાના પ્રસંગ આવે તા તે ઉપયાગી થઈ પ**ઢે એમ છે. છેવ**ટે સને ૧૯૧૯ની સાલમાં વિધયુદ્ધના અંત આવ્યા પછી તેમાં લાગ લેનારા કેટલાક પંજાળી ચુવાના ઉપર જલીયાંવાળા બાગ અમૃતસરમાં, એક લશ્કરી ડુકડીએ દરવાજા અંધ કરી ગાળીબાર કરી અનેકના જાન લીધા હતા તે ઉપરથી એના બ્રિટિશ સરકારના ન્યાયીપણા વિષેના વિશ્વાસ ઉઠી ગયા હતા તેથી તેણે હિન્દ્રી મહાસભામાં ઠરાવ પસાર કરાવીને સત્યાગહની લડત ગેરકાયદે મીઠું પકવવા માટે અમદાવાદથી દાંડી સુધી પગપાળા પાતાની ડુકડી સાથે કૂચ શરૂ કરી હતી. ત્યારથી તે સને ૧૯૪૨ સુધી એવા અનેક પ્રસંગ અન્યા હતા. કે જે વખતે તેને અંગ્રેજ સરકાર સામે લડવું પડ્યું હતું અને તેમાં દેશમાંના અનેક સ્રીપુરૂષાએ તેને મદદ આપી હતી અને અનેક દુ:ખ સહન કર્યા હતાં. છેવટે સને ૧૯૪૨ થી ૧૯૪૪–૪૫ સુધી કારાવાસની યાતના સહન કરી હતી અને તેને અંતે હિન્દને સ્વાતન્ગ્ય આપવાનું વચન મેળવ્યું હતું અને એમણે ધાર્યાં પ્રમાણે સમસ્ત બ્રિટિશ હિન્દની રાજ્યસત્તા તા જો કે મહાસભાના કાર્યં કર્તાં ઓના હાથમાં સાંપાવી શકચા નહાતા તાપણ તેના ઘણા માટા ભાગ સાંપાવી શક્યા હતા. આ ઇષ્ટ પરિદ્યામ મેળવવામાં એમની અહિંસક લડત લડવાની નીતિ માટે ભાગે મદદરૂપ થઇ હતી. આ પ્રમાણે અહિંસાધર્મ જેના આરંભથી તે એમના કાળ સુધી આધ્યાત્મિક ઉન્નતિ મેળવવામાં માત્ર વ્યક્તિગત અને સામાજીક જીવનમાં સુધારા કરવામાં ઉપયોગ થતા હતા, જેના સામાન્ય સમૂહમાં પ્રચાર અશાક અને કુમારપાળ જેવા રાજ્યસત્તાના ઉપયોગ કરીને કરી શક્યા હતા તેના ઉપયાગ એમણે પાતાના આધ્યાત્મિક-ખળને આધારે જનસમૂદ ઉપર એક મહાન કાળુ મેળવી એક મહાન પરકીય રાષ્ટ્રના પ્રતિનિધિઓ સામ અંડ ઉઠાવવામાં કર્યો હતા. તેની આન્તરરાષ્ટ્રીય અસર એ થઈ છે કે તે ધારણ ઉપર રાજકીય લડત ઘણા દેશામાં થઈ ગઈ છે અને હજ પણ થાય છે. આ પ્રમાણે એમણે અહિંસા ધર્મના ઉપયોગ એક રાષ્ટ્રની પરકીયરાષ્ટ્ર સામેની રાજકીય લહતના ક્ષેત્રમાં કરીને તેનું ક્ષેત્ર વિશાળ બનાવ્યું હતું.

૮. આધુનિક સ'સ્કૃતિમાં તેનું સ્થાન

સને ૧૯૩૯ થી ૧૯૪૫ સુધી ળીજ વિશ્વયુદ્ધને લીધે યૂરાપ, એશિયા અને આફ્રિકામાંના કેટલાક દેશામાં એટલી માટી મનુષ્યની સંખ્યા અને એટલી વ્યવહારાપયાગી સામબીના નાશ થયા હતા અને વિશેષ કરીને જાપાનમાંના હિરાશિમા અને નાગાસીકી શહેરા ઉપર અમેરિકન લશ્કરે અણુષ્ઠામ્બ નાંખ્યા હતા તેને લીધે એટલું તાત્કાલિક નુકશાન તે શહેરાની નિર્દોષ વસ્તીને પણ થયું હતું અને તેનાં રેઠીએ!— એકટીવ કિરણાની અસર એટલી ચિરસ્થાયી નિવડી છે કે તેથી આખા જગતમાં

લોકમત અંધાઈ ગયો છે કે કાઈ પણ એ સખ્ટ્ર વચ્ચે કાઈ પણ કારણે ડેડા દેસા થાય તો તેના નિકાલ મુદ્ધ ક્યાંથી નહીં, પરંતુ અને ત્યાં સુધી પ્રતિનિધિઓ મારફતે વાડાઘાડ કરીને અને તેમાં સફળતા ન મળે તો કાઈ તડસ્થ અપ્ટ્રની મધ્યસ્થીથી કરી લેવા જોઈએ. એ મત એડલા વ્યાપક અને દઢ છે કે તેની અસર સુધરેલા વ્યવસ્થિત રાજ્યોના કારસાર કરનારા સત્તાયુક્ત મંડળા અને વ્યક્તિએ દેષર પણ થયા છે. તેને લીધે અમેરિકામાં તેવાં લગલગ ૫૫-૬૦ રાષ્ટ્રોની રાજ્યસત્તાએ તરફથી એક સંયુક્ત રાષ્ટ્રોની સંસ્થા (યુનાઇડેડ નેશન્સ ઓર્ગેનિડેશન) દેશી કરવામાં આવી છે. અને તેમાં જે જે રાષ્ટ્રની સરકાર સભ્ય તરીકે જેડાય છે તેને પાતાના નિયુક્તપ્રતિનિધિ મારફત એવા એક રસ્તાવેજ ઉપર સહી કરવી પડે છે કે જેમાં એક શરત એરી છે કે અમારૂ રાષ્ટ્ર પીતાને બીજા કાઈ રાષ્ટ્ર સાથે ડેડા દેશો થાય ત્યારે અનતાં સુધી વાડાઘાડથી અને સફળતા ન મળે તો કાઈ તડસ્થઅપ્ટ્રના પ્રતિનિધિને મધ્યસ્ય નિમી કર્યો અને તેમાં સફળતા ન મળે તો કાઈ તડસ્થઅપ્ટ્રના પ્રતિનિધિને મધ્યસ્ય નિમી કર્યો અને તેમાં સફળતા ન મળે તો કાઈ તડસ્થઅપ્ટ્રના પ્રતિનિધિને મધ્યસ્ય નિમી કર્યો અને તેમાં

આને હીયે જીનાં નાનાં ગાપ્ટ્રેા વચ્ચે સ્વતન્ત્રમણે યુદ્ધા ધતાં તા લગભગ વ્યટકી જ મયાં છે એમ કહીએ તેા કાંઈ ખાટું નથી. પરંતુ ૧૬માથી ૧૯મા સેકા લગીમાં જે જે ચુરાપીઅન ગુષ્ટ્રાએ એશિયા અને આફ્રિકાના કેટલાક દેશામાં ત્યાંના લોકોને દળાવીને અત્રર ફાેચલાવીને પાતાની રાજ્યસત્તા જમાવી હતી તેમની સાથે એવા ટાઇ દેશના રાષ્ટ્રીયપેક્ષને જ્યારે તકરાર પડે છે ત્યારે શુદ્ધ ધવાના પ્રસંબ કલા નથી થના એમ નથી. તેમ એવા કાઈ સ્થાનિક પશ્ને ગુઢ શરૂ કરવામાં વધા તે ચાલુ ગુખવામાં માટાં પાસ્થાત્ય રાપ્યું ગઝસરંજામ, નેતાબિરિ વગેરે પુરાં પાડવારૂપી મદદ નથી કરતા એમ પણ નથી. ત્રીજી, આજે જગતમાંના ત્રે મદાબળવાન રાષ્ટ્રેય, અમેરિકાના સંયુક્ત રાષ્ટ્રેય અને રૂમની નેવાગિરિ નીચેના રાષ્ટ્રસમૃદ, હજી એ માન્યવાને વળગી રહ્યાં છે કે વિલ્યુહ કાંઠી નીકળતું અટકાવવાના એજ રસ્તા છે કે તેવું સુદ્ધ સાગા પણ કરવા માટે કેટલી તેથારા કરે છે તે આભતમાં તકેકારી રાખ્યા કરવી અને તેને પ્રશંબ આવતાં દાષ્ટ્રી દઈ શકાય તેટલી eરકરી, નોકા અને દ્વાઈકળાની વૈચારી પાતે રાખવી. આચી તેમની વચ્ચે *eરકરા* વેચાર કરવાની અને ડંયને માટે શસુસામથી તૈયાર કરવાની દોસાતાંશી ચાલી રહી કે અને વખતાવખત લુરકાલુર્સ રચા કરે છે. વળી હાલ એકાદમાચર્ચા કારાવ્યનું મુદ્ધ અધ કશવવા માટે સંશુક્ત અમેરિકન સબ્સોના પ્રસુખે નવી નીનિ અખત્યાર કરા છે. તેથી એબિઆમાં વિધ્યુદ્ધ ફાડી નીકળવાના સંસત્ર વધ્યા છે.—ચેલ્યું, છેલ્લામાં છેલ્લું તા. ૨૨ ફેયું આવી ૧૯૫૩ ને દિવસે સર એલેક્ઝાન્ડર કલ્ટરબંકે નવી દિલ્હીમાં આવેલી ઈન્ટરનેશનલ દા એમોમીએશનના ગાર્ષિક મેળાવડામાં સાપણ કરવી વખતે કહ્યું હતું કે છે. આપણને દેાઈ મુછે કે તમે કેવી દુનિવ્યામાં વસવાનું પસંદ કરા તો આપણે સીથી પહેલું એમ જ हिंदी है क्षेत्रां लग अत्रव सत्ताने अहहै धर्मीनुं अक्ष्य याद्यनुं देव तेवी क हिन्या સ્થાયણને પર્યાંક પહે. એવાં ભાષણો તો સ્થારતગાર થયા જ કરે છે. પરંતુ વેસતસ્યતાં

કારણા, જેવાં કે દક્ષિણ આદિકાની સરકારની એપરપિડની નીતિ, હજ જેમના તેમ છે. તેમને નાણુદ કરવા માટે સમૂહરાષ્ટ્રા તરફથી સક્રિય પગલાં લેવાતાં નથી અને કાઈ પણ રાષ્ટ્રની સરકાર પાતાની સ્વતંત્રતાના કાંઈ પણ અંશ સંયુક્તરાષ્ટ્ર સંસ્થાને સોંપવા કાઈ તૈયાર નથી. આથી આન્તરરાષ્ટ્રીય જાહેર જીવનમાં અહિંસા ધર્મ ને કાયમનું સ્થાન મળ્યું છે એમ સંતાષ માની શકાય એમ નથી. તથાપિ એટલા સંતાષ માની શકાય એમ છે કે દરેક સત્તાધારીને એમ લાગે છે કે તે જીવનમાં તેને કાયમનું સ્થાન નહીં આપવામાં આવે તેા જરૂર માહું વહેલું પણ ત્રીનું વિશ્વયુદ્ધ ફાટી નીકળશે અને તે થશે તા અળ અને સત્તા ઉપર વિશ્વાસ રાખનારાં રાષ્ટ્રા છપન્નકાેટી ચાદવની માફક પરસ્પર કાપાકાપી કરીને પાતાના વય સ્વના અન્ત પાતે જ લાવશે. પ્રસિદ્ધ વિશ્વેતિહાસ લખનાર એચ. છ. વેલ્સે તા લવિષ્ય ભાખ્યું જ હતું કે આધ્યાત્મિક તત્ત્વા પર રચાયેલી સંસ્કૃતિની સ્થાપના કયારે થશે કે જ્યારે ત્રીજું વિશ્વયુદ્ધ થઈ માનવપ્રાણીની સંખ્યા હાલ છે તેના કરતાં ત્રીજા ભાગની જ અવશિષ્ટ રહેશે. હજ તા આગ પ્રજન્યા કરે છે, તેમાંથી કાંતા ભડકા ઉઠી નીકળે કે કાંતા કજળાઈ જાય. તેના આધાર વિશ્વ અળા ઉપર છે. તેની ગતિ કાઈ કળી શકતું નથી. શું થાય છે તે કાળે છવશે તે નેશે અને તે પછીના જમાનામાં માણસા तेना धतिहासथी जाधशे.



મમતા થિર-સુખ શાકિની, નિર્મમતા સુખ મૂળ; મમતા શિવ-પ્રતિકૂલ હૈ, નિમ મતા અનુકૂલ. મમતા-વિષ મૃષ્ઠિત ભયે, અ'તર'ગ ગુણ-વૃ'દ; ભાવ-નિરાગતાં. અમૃતકે હાંદ. લગત આગ્ર

ચાદે નિજ લાળા મિલિત, શુષ્ક હાડ જ્યું ધાન; તેસે' રાચે વિષયમે', જાં નિજ રૂચિ અનુમાન. શ્યા. શ્રીયશાવિજયછ

સમતાશતક 1

^{*} શ્રો૦ ગાંધીજીએ સ્વયં પાતાની અહિંસાને ધાર્મિક ક્રાેટિની નહીં પણ રાજકીય ક્રાેટિની કહી છે. એટલે ઉપરનો હકોકત એ જ સંદર્ભમાં ધટાવવી. અને તેમની રાજકીય અહિંસાની હવા દુનિયા પર ફેલાઈ ગઇ તેતું કારણ, હિન્દના છેરલા વાઇસરૉય લાૅડ માઉન્ટળેટનના શખ્દામાં ' પાંચમી સત્તાનું રઘાન ધરાવતા અખળારાને આલારી છે. ' સ'.

જ્ઞાનદર્ષ્ટિ અને માહદર્ષ્ટિ

ચતન ? ગ્રાનિકી દૃષ્ટિ નિલ્હાલા. ચતન !

આલ્કૃષ્ટિ કેખે સા બાઉરા, હોન મહામનવાલા. ચનન—૧

આલ્-કૃષ્ટિ અતિ ચપલ કરતહે, ભવ ભવ વાનર ચાલા,
ચાળ-વિયાબ દાવાનલ લાબત, પાવન નાલ્કિ વિચાલા. ચતન—૧

આલ્કૃષ્ટિ કાયરનર ડર્પ, કરે અકારન ડાળા,
રન મેદાન લરે નહીં અસ્મિ, શ્રુરલરે જિંહે પાલા. ચનન—૩

આલ્કૃષ્ટિ જન જનકે પરવશ, દીન અનાથ દુખાલા,
માગે ભીખ કૃરે ઘરિઘરિસું, કહે 'મુજકું' કાઉ પાલા. ચતન—૪

માલ્કૃષ્ટિ મદ-મિર્શ માતી, નાકા હોન હ્રાળો,
પર-વ્યવણન શ્રુચ સા અલ્નિશિ, કાળ અશુધિ જ્યાં કાલા. ચતન—૫

ગ્રાનકૃષ્ટિમાં દ્રાપ ન અને, કહ્યા ગ્રાન અજીઆલા,
વ્યદાન'દ્ર ઘન 'સુજરા' વચન રસ સજ્જન હ્રય પખાલા. ચતન—૬

પૂ. 8. શ્રીયશાવિજય ગુરુમંદિર પ્રતિષ્ઠા અન

'શ્રીમદ્ યશાવિજયસારસ્વતસત્ર'ના હેવાલ

હવે અહીં થી જે હેવાલ કે હકીકતા પ્રગઢ થાય છે, તે ઉભયકાય ને બીજ કયાં ક્યારે રાપાય, તે અંગ શું શું પ્રવૃત્તિઓ થએલી, અને બે વરસને અંગ તેનું કેવું કળ આવ્યું, તેના સળંગ હેવાલ પ્રગઢ કરવામાં આવે તાજ ખબર પડે. અને બીજી વખતે આવી કાઈ પણ ઉજવણી કરવી હાય ત્યારે, આવી નાંધા ને હકીકતાને બહુ જ સરળતાથી ઉપયાગમાં લઈ શકાય. વળી આવા ઇતિહાસ મન્થસ્થ થાય તા સદાને માઢે સચવાઈ રહે. જાણકાર અને નહીં જાણકાર બંનને એક જ સ્થળે સંપૂર્ણ સળંગ સામમી જાણવાની મલી જાય. આવી અનેક સજ્જનાની વિનંતિથી આખા હેવાલ અહીં રજૂ કરવામાં આવે છે. આ હેવાલની ઓછી વત્તી હકીકતા મુંબઈ, અમદાવાદ, પુના, ભાવનગર, વડાદરા વગેરે અનેક સ્થળના જીદી જીદી ભાષાઓના પત્રામાં પ્રગઢ થઈ હતી. એમાં ખાસ કરીને સહુથી વધુ માહિતી જાણીતા 'જેન' પત્રમાં પ્રગઢ થઈ હતી; તેથી તેના હેવાલને મુખ્ય રાખીને બધી હકીકતા પ્રગઢ કરી છે.

સંપાદકઃ—નાગકુમાર ના. મકાતી જસુભાઇ મ. જૈન મંત્રીઓ, બૂનપૂર્વ સત્રસમિતિ. વહાદરા નેધિઃ —પૂ. ઉપાધ્યાયછ મહારાજ શ્રીમદ્ર ૧૦૦૮ વરોાવિજયછ મહારાજના ગુરુમંદિરના છર્જીદ્રાર કરવાના પાંધા મુંબઇમાં રાપાયા, એકંદર કહીએ તા જે કંઇ બન્યું તેના ભૂમિકા મુંબઇ નગરમાંજ સ્થાઇ દ્રના. એ મૂમિકા કેવા રીતે તૈયાર થઇ હતા, તેના નજુ માટે તે વખતે બહાર પડેલ માહિત્યને અત્રે રજૂ કરીએ છીએ.

પરમયુબાવકથીંગાંગિયાર્થ નાયાય નમ : * નાય સ્વરૂપથી ગ્યાદીધરાય નમ : જૈન શાસનના મહાન જંયાતિર્ધર, સકલશાસ્ત્ર પારંગન મહાપાધ્યાય ૧૦૦૮

શ્રીમદ્ યશાવિજયજી મહારાજના

—ગુણાનુવાદ મહાત્સવ— [તિથિ–માગશર સુદિ ૧૦-૧૧, તાર્રીખ ૧૯-૧૦ રયળ–ભાયખલા]

વિતિ સાથે જબાવવાનું કે જેનસાસનના પરમપ્રસાવક, સેંકડા પ્રથાના રચિયતા, અસાધારણ દાર્સનિક વિદાન, પર્ફર્શનના સમન્વયસાધક, ન્યાય, સાહિત્ય, છંદ, અલંકાર, અધ્યાત્ય, મેાગ, આસાર, ત્યાગ, લક્તિપોગ, કમંચાંગ, ન્રાનંગ, શ્રદાયાંગ, સારિત્ય, ગાફત્યાંગ, દેવતત્વ, ગુફતત્ત્વ અને ધર્મતત્ત્વ, પ્રમાણ-નયવાદ ઇત્યાદિ અનેકવિધ વિપયા ઉપર સંસ્કૃત, પ્રાકૃત સાયામાં, વિપુલ સાહિત્ય સર્જનાર એ જ વિષયાને તત્કાલીન લાકસાયામાં છતારીને સુંદર કાલ્યાના દારમાળા ખડી કરી વિદાન-અવિદાન સમાજ ઉપર અંતે હ ઉપકાર કરનાર, જેનસાસન અને તેની દાર્માળા ખડી કરી વિદાન-અવિદાન સમાજ કપર સ્વાલ સર્વા ન્યાયાસાય સાહિત્ય પ્રભાવ કરી જનાર, પરમ કૃપાલ સ્વયંત્ર મહિપં ન્યાયવિશાસદ ન્યાયાસાય સાહ્યા પરમાદ પરમ ઉપકાર સંદાવિજયજી મહારાજ સાહ્યાં 'શુણાનુવાદ મહિત્સવ ' પૃત્યપાદ પરમ ઉપકારી આચાર્યદિવ ૧૦૦૮ શ્રી વિજય પ્રતાપસૂર્વિચરૂ મહારાજ નથા પરમપૃત્ય પ્રખર વકતા ઉપાધ્યાયજી ૧૦૮ શ્રીમાન ધર્મવિજયજી મહારાજ નથા પરમપૃત્ય સાહિત્યરસિક મૃતિરાજ શ્રી યહાવિજયજી મહારાજાદિતી જત્રજાબામાં લગ્યની છે.

— કાર્યક્રમ — માગશર સુદિ <u>ખીજી દરામ, મ'બળવાર તા. ૧૯-૧</u>૨-૫૦

સવારના ૯ થી ૧૦૧ા : સંગીતમાં મંત્રલાયરુષુ તથા તેઓશ્રીના જીવન લુપર જીરા જુદા વિદ્રાન વક્તાએનું ગુજુકીત ન.

* ખંપારના એ વાંગે શ્રીમદ્દ યશાવિજયજી મહારાજ કૃત નવપદ્દજીની પૃત્ત, (માતીશા જૈંત પાકે'વાલા) શેઠ જ્ઞાંતિદાસ દામછ ધારસી તથા માહનલાલ દરગાંતિંદદાસ તથા શ્રી ખાત્રા સાલંદી એન્ડ સન્સ તરક્યા લણા ઠાઠમાઠથી ભણાવવામાં આવશે.

રાતના હા વાર્ગ : હપાંખાયથી વિરચિત 'સારિત પ્રદર્શન' તથા તેઓથીની લગ્ય છળી તથા તેએહથીના વિવિધ જીવન પ્રસંગાના આકર્યક ચિત્રા આગળ તેઓથીનાં જ ખનાવેલાં સ્તવના પદાનું થી નાનુભાઇની અંડળી તથા શેઠ માહીશા જૈન પાઠશાળાના આળકા 'રાત્રિ જાગરૂજુ ' કરશે અને તેઓથીના નામની ધૂન જગાવશે. અને બ્લેનોનો આવાના કાર્યક્રમ.

માગસર શુદિ ૧૧, ને ભુધવાર તા. ૨૦–૧૨– ૫૦

સવારના ૯ થી ૧૧ : સંગીતમાં મંગલાચરણ પૂ • મહારાજશ્રીનું 'સુજસવેલી ભાસ 'નું વિવેચન સાથે વાચન તથા પૂ ન્ય ગુરૂદેવા તથા અન્ય વક્તાએ તેમના જીવન અને કવન ઉપર વિવેચન કરશે. અન્ય ગ્રણગીતા સાથે વિદાયગીત

રાતના છા વાગે : ધાટકાપરના આત્માનંદ જૈન મંડળનું 'રાત્રિ જાગરણ ' અને તેઓશ્રીના નામની ધૂન.

તા આપણા શાસનના એ મહાન ઉપકારી સદ્દગ્રસ્ટેવની કલ્યાણકારી ઉજવણીમાં દરેક જૈન ભાઈઓ અને બ્હેનોને અવશ્ય હાજરી આપવા આગ્રહભરી અમારી વિનંતિ છે.

> લિ. સેવકા: — કૃત્તેહ્ય ક અવેરભાઈ, વીરચ'દ નાગજી, દીપચ'દ મગનલાલ શાહ સેક્રેટરીઝ : ગુષ્યાનુવાદ સમિતિ

ચંદુલાલ વર્ષમાન શાહ મનુભાઈ ગુલાળચંદ કાપડીઆ ગાકળદાસ મગનલાલ

૧ મ'ત્રીએા, શ્રી યશાવિજયછ જૈન ગુરૂકુળ લાલચ'દ છે. દોશી, કાલીદાસ હરછવન

ર મ'ત્રીઓ, મહુવા યરાવૃદ્ધિ જૈન ભાલાશ્રમ ચીતુલાઈ લાલસાઈ શેઠ, ભાઇચંદ નગીનલાઈ ઝવેરી, ધીરજસાલ જીવણુલાલ ક્લચંદ માણેકચંદ શાહ

3 મ'ત્રીઓ, શ્રી સિદ્ધક્ષેત્ર જૈન ખાલાશ્રમ શાંતિલાલ એમ. શાદ, નટવરલાલ નેમચંદ શદ

૪ મ'ત્રીએા, શ્રી કેસરીયાછ જૈન ગુરકુળ સૌકામ્યરંદ ઉમેદયંદ દેશી

ભષ્યસર્ચંદ કેશવલાલ માદી પ મ'ત્રીઓ, જૈન શ્વે૦ એક્યુકેશન બાહે મણિલાલ માહનલાલ પાદરાકર મંગળદાસ લલ્લુભાર્ષ ચ'દ્લાલ નગીનદાસ ભાખરીઆ

'૬ મ'ત્રીએા, શ્રી અ^{ધ્}યાત્મ જ્ઞાનપ્રસારક મ**ં**ડળ શ્રાંતિક્ષલ મગનલાલ શાહ કપચંદ પત્રાલાલ ભણશાળી

હ મંત્રીએા, શ્રી વીરતત્વ પ્રકાશક હીરાલાલ મંછાચંદ શાહ

૮ મુખ્ય મ'ત્રી, શ્રી માહનલાલછ જૈન સે૦ લાયબ્રેરી

> માહનલાલ દીપચંદ ચાકસી માહનલાલ ગુલાબચંદ ઝવેરી

૯ મ'ત્રીએા, શ્રી ભારતીય જૈન સ્વય'સેવક પરિષદ

દીપયંદ મગનલાલ શાહ

૧૦ મુખ્ય મ'ત્રો, શ્રી મુ'બઇ જૈન સ્વય'સેવક મંડળ

> વીરચંદ નાગછસાઈ, મનસુખલાલ હેમચંદ, હીરાલાલ સામચંદ

૧૧ મ'ત્રીઓ, જૈન શિક્ષણ સ'ઘ માહનલાલ ડી. ચાકસી, વાડીલાલ ટાકરસી. કાન્તિલાલ ઉજમલાલ શાદ

૧૨ મ'ત્રીએા, આત્માન'દ જૈન સભા બીખાલાલ કપૂરચંદ સાલંકી

૧૩ મંત્રી, ભાયખલા રોઠ માતીશા જૈન પાઠશાળા

શાંતિલાલ મગનલાલ શાહ ૧૪ મ'ત્રો, અધાધ્યાતીથ° છર્જો દ્વાર કમીઠી અને માળવા મેવાડ છર્જો દ્વારકમીઠી ક્રાંતિલાલ ઉજમશી, દજારીમલ ગુલાળય દ્

૧૫ શ્રા ગાડીજી જૈન મિત્રમ'ડળ કાલીદાસ હરજીવન, મહ્યુલાલ દુર્લંભજી ૧૬ મ'ત્રીએા, શ્રી ધાઘારી વીશાશ્રીમાલી • ગ્રાતિ

પ્રતાણયંદ્ર માણેક્યંદ, રાયયંદ મગનલાલ ૧૭ મંત્રીઓ, શ્રી ધાઘારી જૈન મિત્રમંડળ મંગળદાસ લલ્લુલાઇ ઘડીઆળી

૧૮ મંત્રી, શ્રી ગાડીજી જ્ઞાનસમિતિ

નોંધ_'રેત ' પત્રમાં મુળાનુવાદ ઉત્સવ અન્યત્ર ઉજવાય, તે માટે કરેલી વિનંતિના ઉતારા

સ્વ∘ ઉપાધ્યાય શ્રીમદ્ યશાવિજય મહારાજના " ગુણાનુવાદ મહાત્સવ " ઉજવવા — જા હૈર વિનંતિ –

પરંખ સાસનપ્રભાવક, મહાન નાર્કિક, પરંખ અધ્યાત્મી-પાંગવેના, જૈન શાસન અને તેની દાર્શનિક વિચારપ્રણાસિકાઓનું પૃજ્વેષાન કરનાર, અસાધારબદાર્શનિક વિકાન, વ્યાકરબ, ન્યાય, સાહિત્ય તથા દર્શનશાસનું પ્રાકૃત તથા સંસ્કૃત ભાષામાં વિપ્રસ સાહિત્ય સર્જનાર, તેમ જ જૈન દરિએ, તત્ત્વ, આચાર, વિચાર, અધ્યાત્મ, પાંભ, ભિન, જ્ઞાન, ત્યાળ, વૈરાવ્ય, મેણ તથા ચર્ચાત્મક સાહિત્ય વગેરે વિપાણ ઉપર ગુજરાની હિન્દી અને મિશ્ર ભાષામાં સ્વકૃતિએના દારમાળા ખડી કરનાર, અને તેથી વિકાન અને અવિકાન ઉમય કસાની પ્રજા ઉપર મહાન ઉપકાર કરનાર, પ્રભાવશાળી, મોલિક સાહિત્યના દાર્જક, સ્વર્યસ્ય ન્યાયાવિશારદ, ન્યાયાચાર્ય ખડેાપાદવાય ૧૦૦૮ શ્રીપ્રદૂ ચર્શાવિજવજી પદારાજ જેઓથીના વિ સ. ૧૯૮૧માં, અનિપ્રાચીન અને એનિલાસિક દર્ભાવનાનગી એટલે હાલનામ ડેનાઈ (વડાદરાયી ૧૮ પાઇસ દૂર) શહેરમાં સ્વર્યવાસ થયા હતા, જેને આજ રાક વસ્સ થયા આવ્યા

એ મહાપુરુષના ' મુબાનુવાદ મહોત્સવ' ભવ્ય રીતે કાજવવાના યુંગઇના જૈનાએ નિર્ભુય કર્યાં છે શાસનના છેકલા આપળા આ સમર્થ વીર પુરુષ નસ્ક આપળા ચાડી કદાસીન વૃત્તિ થઈ છે. પરિભૂખ, સમાજ કલિકાલસવંત્ર ભગવંત થી તેમવંદાચાર્ય છ મહારાજ તથા જગદ્રપુર થી દીરસ્વી- ધરછ મહારાજને સમજતા થયા, પણ હજુ આ મહાપુરુષને સમજતા નથી થયા, માટે એ મહાપુરુષના પ્રેરક અને પવિત્ર છવનને જાળવા, સમજવા અને છવનમાં કતારવા માટે આપળ ઘર્લ ઘર્લ કરવાતું છે. પણ સમય થાડો દોવાથી હાલ તો તેઓલીને સમાજ વધુમાં વધુ જાળવા શાયા, એ માટે એ મહાપુરુષને અહાપુરુષને છાએ તે જ રીતે તેમના ' મુબાનુવાદ મહાત્યા ' હિંદના જેન સંધ કર્ય કર્યા કરત્યે.

અર્યાત્ તેઓશીના મુબાતુનાદ, ઉપરાંત તેમના સાહિત્યિક પ્રવૃત્તિ, અખેદ ત્રાનાપાસના ઉપર વિવેચના શાય, શાસનને અવિસ્જિત દકાવતા માટે છવતના પળપળના કેવા ઉપયાંત કર્યા તે, તથા ખાસ કરીને તા તેમના સાહિત્યના અભ્યાસ સપાળ કેમ કરતા શાય અને તેમના મહાત સાહિત્યના પ્રચાર વધુમાં વધુ કેમ થાય; તે માટે શું શું કરતું કોઈ એ, તે માટે નવા સિક્ય સ'કર્લ્યા કરવા. અને એ માટે અનતું બધું કરવા પરમપ્રથ આચાર્ય દેવા, સુનિવરા અને જેતનાં શને સાથદ વિન'તિ છે. જનનાને જાબ કરવામાં શાદું ધારું ધારું છે, કરતાં જેતસંધા તથા જેતાચાર્ય તથા શ્રાપ્યા, હયાં જ્યાં જિસ્યનાં દેશ ત્યાં ત્યાં પ્રમુશ્લ છતાં જેતા ઉત્સવ કરતાં.

ઉત્સવ ક્યારે ઉજવેલા ?

જૈન પર પશુયાં બનતું આવ્યું છે તેમ, આપણા સંદુબાર્ય આ મહાપુદ્ધના જન્મચી લઈ સ્વર્ગવામું સુધીની સાલવારી મળી આવી છે. પરંતુ દુબાંત્યે શક્ય પ્રવત્ના છતાં, એક પણ પ્રમુંબના ચાક્ષમ ત્રિધિ નથા મળી. ત્યારે શું કરતું? એટલે ડેબાઈમાં તેઓઝીના સમાધિક્ષળ કાલધમં પછા એ વધે (૧૯૮૫માં) તેઓઝીના સરભુપાદ્દકાની પ્રતિષ્ઠા પાત્રમુર શુદિ ૧૧ (અંત એકાદશી)ના દિવસે ઘવલ દેવાથી હાલ તુરત માટે તે જ દિવસ જીજવાં જિસ્તિ છે. અપાંચ પણ પૃત્રવવાદ આસાવે પહાસભ શ્રીમદ્ર વિજયતાપમુર્વિયા અલા પરાસભ લિયામાં પરમપ્ત્રમ ઉપાદ્માલછ શ્રીધમં-વિજય પરાસભ તથા પ્રત્ય મુનિવર્ય શ્રીયમારિજય અહારાજના પ્રાસ્ત્રમાં પ્રસ્મૃત્યો અને ૧૧, ૧૧, અન્તે દિવસે ભવ્ય ઉજવાની કરવાના નિર્ભય સ્થારો છે.

—શ્રીવર્શાવિજવછ યુબાનુવાદ મદોત્સવ મૃત્રિનિ નસ્ફર્યા

રે. ત્રાડોઝ ટેનફ્રણશ્ર્ષ પાયકૃતી ગુજાઈ ચાત્ર, સુદિ શીજ ૨૦૦૭ તા. ૧૧–૧૨–૫૦

રેકેટી ક્તેષ્યદ ઇવેરબાર્ક વીસ્થદ નાગછ દીપચંદ પ્રગનલાલ રાહ [**જૈનપત્ર**ના તા. ૩૦-૧૨–૧૯૫૦ના ઉતારા]

મું ખર્ધમાં ભારે ઠાઠથી ઉજવાએલા સ્વ. મહાપાધ્યાય

શ્રીમદ્ યશાવિજયજના ગુણાનુવાદ મહાત્સવ

સુંબર્મ ભાયખલા કે જ્યાં ૫૬ • યુર્યાત્માએ લગે મહિનાના કડીન ઉપધાનતપ વર્તની અત્યુત્સાહથી આગાધના કરી રજ્ઞા છે, ત્યાં આગળ વિશાળ મંડપમાં ન્યાયાયાય ન્યાયવિશારદ, દિસહસાબ્દના છેલા જ્યાતિર્ધર ને અજોડ શાસનપ્રભાવક મહાપાધ્યાય શ્રીમદ્ યશાવિજયછ મહારાજના ગુણાનુવાદ મહાત્સવ ભારે ઉત્સાહપૂર્વક ઉજવ ઇ ગયા.

એ નિમિત્તે પૂજ્ય મહારાજથીની પ્રેરણાયી જાણીતા ગૃહસ્થાની ગુણાનુવાદ સમિતિ નિમાણી. તે કમીટીના સેકેટરી શ્રી કૃતેહચંદલાઇ, શ્રી વીરચંદલાઇ તથા શ્રી દીપચંદ શાહની સહીયી શ્રીમદ્ની ઉજવણી માટે જાહેર વિનંતિ ખહાર પાડી. ખાદ મુંબઇની ઉજવણી માટેની આમંત્રણ પત્રિકા મુંબઇની જાણીતી અઢાર સંસ્થાઓ તરફથી ખહાર પાડવામાં આવી. તે મુજબ માગશર સુદિ ૧૦, ૧૧ એ દિવસની ઉજવણી ભવ્ય રીતે થઇ. તે પ્રસંગે સ્વર્ગસ્થની મહત્તા દર્શાવતાં સ્વાગત બાર્ડો, ધ્વજા-પતાકાથી ભાયખલાના મંડપ શાબા શક્યો હતા.

આ પ્રસંગે સ્વ. ઉપાધ્યાયછ મહારાજ વિરચિત લભ્ય પ્રંથાનું એક વિશાળ સ્વરૂપમાં સાહિત્ય પ્રદર્શન આકર્ષ કરીતે વ્યાખ્યાન મંડપમાં લવ્ય દેખાવા કરવા પૂર્વ કે ગાઠવવામાં આવ્યું હતું. વચગાળ ડેમાઇથી આવેલી સ્વર્ગ સ્થની સુંદર વિશાળ પ્રતિકૃતિ તેમ જ ચારે બાજી તેમના સંસ્કૃત, પ્રાકૃત ભાષા, પ્રંથા, તેમ જ સ્વર્ગ સ્થના હસ્તાક્ષરાની છખી ગાઠવવામાં આવી હતી તે ઉપરાંત સ્વર્ગ સ્થના ચારેય ભાષાના સાહિત્યમાંથી ખાસ બાધક પ્રંથામાંથી અર્થ સાથે લખેલા શ્લોકાના બાહીની હારમાળા ગે કવવામાં આવી હતી જે અનેકાને જ્વનદર્શન કરાવી રહી હતી. સુંદર બાહીમાં લભ્યાલભ્ય પ્રંથની યાદી ચીતરાવીને મૂળ હતી

દશ્યના દિવસે પૂર્ આત્માર્ય શ્રીવિજયપ્રનાપસરીશ્વરજી તથા પૂર્ હપાંધ્યાયજી શ્રીધર્મ વિજયજી મહારાજ તથા પૂર્ શ્રીયશાવિજયજી મહારાજ તથા શતાવધાની શ્રીજયાન દિવજયજી વ્યાસપીઠ પર પધારવા અગાઉ સાહિત્ય પ્રદર્શનની વયગાળ રાખેલી જમી તથા તેમની ત્રાનસાધનાની સદુએ સ્તુતિ કરી. ગુરદેવ પાટ પ્ર ખીરાજ્યા ખાદ, ૧૨૧ મણું 'ધી'થી કમળાળહેન, તે મફતલાલ ગગલદાસ મ્હેસાણાવાળાએ હપાંધ્યાયજીની જમણા ચરણે ગુરપૂજા તથા ખાદલાના હાર ચઢાવ્યા હતા તથા ખીજા એક બહેને સાઢેક મણુંથી સ્વર્ગ રયના ત્રાનરાશીની વાસકપ-પૂજા તથા હાર ચઢાવી, બહુમાન લક્તિ કરવામાં આવી હતી. ખાદ સ્વર્ગ સ્થની જય માલાવી અધ્યક્ષસ્થળેયી પૂજ્ય આચાર્ય દેવે મંગદાયરણ કર્યું. પછી માતીશા જેન પાઠશાળાની બાળકાઓએ ગુરુગુણુ મંળલાયરણ, સ્વાગત ગીત સંગીતના મધુર સુરા સાથે ગાયું હતું સમિતિના મંત્રી શ્રી વીરચંદ નાગજીલાઈએ પત્રિકાવાયન કર્યું.

ત્યારબાદ સભાના વક્તાઓમાં શ્રીયુત ક્તેહચંદભાઇએ શ્રી સ્વર્ગરયના જીવનને મહાન તરીકે જ્યાબ્યું હતું. શ્રીયુત પાદરાકરે સ્વર્ગસ્થને જૈન શાસનના એક મહાન પુર્ય ને સાહિત્યકાર તરીકે એ.ળખાવી તેમના વારસાને જાગવવા જોરદાર અપીલ કરી, ડબાઇમાંનું તેમનું સ્મારક સાર્યું થાય તે માટે પૃૃ મહારાજથીને તથા ખાસ કરી મહારાજ શ્રીયશાવિજયજીને વિનંતિ કરતાં સ્વર્ગસ્થના મુંબઇને આંગણે જે ભગ્યાત્સવનું આયોજન કરી લાભ આપ્યા છે તેવા લાભ દરેક વખતે મળે તે કહીને સ્વર્ગસ્થના સાહિત્યના ઉદ્દાર

કરવાતું જણાવ્યું હતું. શ્રીષૃત ચંદુલાલ વર્ષમાન શાંદે પણ ક્રમાધ્યાયછને ગુંદર ત્રખ્ટામાં અંજલિ આપી. આપણે શાસનના મહાન પુરૂષના શ્રીમની વાન્સાને જ્વાવવા જગાવ્યું તે આવા પ્રસંગાની ઉપયોગિતા જળાવી. શેક જીવતલાલ પ્રનાપસીએ એાલના તેઓશ્રીએ ગાલ્યાવસ્થામાં લોધેલી દાસાધી કેવા પ્રસાવિક મુસ નીવાગા તે જણાવી, તેમના જીવનમાંથી બાધ લેવાની કોનેરદાર મચના કરી. શ્રી મળનલાલ મળયંદ શ્રાફે સ્ત્ર ના જીવન પ્રસંગા કહા. પંદિન શ્રી પ્રભુરાસ ખેચરરાસે સ્ત્રમંત્ર્યને અને તેમની શાસનસેવાને અંજિલ આપી. જૈનસાધુઓને તેમના સાહિત્યના અભ્યાસી ળનવાની સ્ચના કરી. ળાદ શ્રી ધીરજલાલ ટાકરસી શાંધુ તેમનું છવનચરિત્ર તૈયાર કરવાની સૂચના કરી બાદ મહારાજ શ્રીપશાવિજયજીએ જળાવ્યું કે ધણા વર્સાથી ચારા અંતરમાં શાયતના એક અજોઃ પ્રભાવક મહર્ષિયા શ્રમાજના મેટા ભાગ અખુઃતના રહ્યા કરે તે પરિસ્થિતિ સાલની હની અને તે દૂર કરવાના મનારથ ચાહે ઘણે અર્ધ આજે સફળ થયા છે તેથી આતંદ થાય છે. રત્રમંસ્થ માટે ખેતે પ્રકારના સ્મારકની જરૂર છે. સ્થાવર અને જંગમ. કંમોઇમાં ધર્મ-શ્રદ્ધાળુ સુધ ૨૫ વર્સ પણેલાંની દુદેશાને નાખુક કરી આજે તે સ્થળને ભગ્ય ખનાવા, સ્વર્યસ્થની સુંદર ટ્રેન ખનાવી છે, પરંતુ મેં જ્યારે પ્રથમ જાઇ ત્યારે જૈનશાસનમાં તેનું અતિ ઉચ્ચરથાન જોના આટલું જ રમારક ઘણું જ અપૂર્ણ લાગેલું, હવે તે પુરુષને છાજે તે રીતે ત્યાં ભવ્ય સ્મારક ખાં કરતું તોઇએ. આવા સ્મારકા એ શ્રાધ્યાત્મિક પૈરણાનાં દમેશા પ્રતીક ખનતા આવ્યા છે. તે આવાલગાપાલ માટે તેા પ્રથમ તે ઘવું જ જોઈએ. ખીજું કાર્ય તેમનું જીવનચરિત્ર જે છુટું છવાયું પહેલું છે તેને પણ સાંકળવાનું છે. વળી, સત્ય વ્યર્ધ સત્ય દ્રદીકતાથી ઘળાં જાળાંજ ખરાં પણ ચડવાં છે તેની સાક્યુકો કરવાની છે. તથા અભ્યાસપૂર્ણ ઘણી ધણી બાળતા તાશ્વવાની અગત્યતા જણાવીને સ્વર્ગ સ્થાનિત સાધિતય સાધનાનાં પુસ્તકાનું અભ્યાસપૂર્વ ક એક જ સરંખી પહતિએ પ્રનમુંદ્રભ કરાવી, જૈન જૈનેતરામાં પહોંચાડવાની, ગુરુરાની સાદિત્યને જૈનાના ઘરે ઘરે કરતાં કરવાની ઉપયોગિતા દર્શાવી હતી છેવટે શેક ભાષચંદસાઇ ઝવેરીએ વક્તાએની અપીલને ખાનમાં લઇતે સ્યારક માટે એક સમિતિ નીમવાનું જબાવનાં એક સ્મારક સમિતિ નીમાણી, તે પ મહારાજ્યીના ઉપદેશથી રમારક કુંડમાં ઉદાર ગુડર્સાએ સારી રકમ લખાવી હતી. પૂ. આચાર્ય લોએ એ શબ્દા કડી સલાતે ઉત્તેશિત કરી, જાદ પૂજ્ય ઉપાધ્યાયજી મદારાજે જૈનશાસનમાં કપાધ્યાયપદનું રહ્યાન અને તેની વ્યારાધનાથી ધની બાધિળીજની પ્રાપ્તિ ઉપર સુંદર પ્રકાશ પાથયાં બાદ સંસાની પૃણાંદનિ થઇ

આગશર સિંદ ૧૧ ના દિવસે ખરાખર નવ વાગનાં કાર્યક્રમ શરૂ થયા. છબીનું ગુરૂ તથા ગ્રાનપૂરત થયું તથા સમય સધે પ્રાર્થના કર્યા બાદ પૂર્વ શરૂકેલોની અધ્યક્ષતામાં કાર્યક્રમ શરૂ થયો. સંગીન સાથે પ્રાર્થના થયા ખાદ વક્તાઓમાં પાલીતાણાકર શ્રી સામનલાલ તથા શ્રીયુન ઝવેરી ભાયચંદભાઈ, શેંહ લક્ષ્યુસાઈ કર્યર્વેદ કલાલ વગેરેએ સ્વર્યસ્થના ગુલાનુવાદ કરી પૂ ચડારાજ્યીની પ્રેસ્શુાથી મુંબઇની પ્રત્યતે એક મહાન પુરૂપની જીવનત્રીખી કરવાના ભવ્ય પ્રસંગ સંપડયો તે બદલ આનંદ વ્યક્ત કર્યો હતા.

ખાદ પૂ. મહારાજ થી ચર્યાવિજયછએ સમયોચિત પ્રસ્તાવ રજ્યું કરી 'સુજસવેલીસાસ'નું વાચન વિવેચન સાથે કરી સ્વર્યસ્થના મહાન જીવનની શ્રીખી કરાવ્યા બાદ, તેઓશ્રીના મહાન સાહિત્યની મહાનતાની શ્રીખી કરાવી, તેઓને આજન્મ ગ્રાંતાપાસક, મહાન્યસંથકાર, શાસનના સાચા લાવીર સુમાર, તેન શાસનમાં નવ્યન્યાયના અજ્તેક અને બીનદરીક વિદાન, ભગવાન ચહાવીરના એક સાચા, ઘરા અને મહાન પ્રતિનિધિ તરીક ખિરદાવી, ભાવબીની શ્રહ્યાંબિલ આપી હતી. તેમના જીવનની છુકીજવાઇ હકીકતો તે ઇતિહાસ કહ્યા બાદ દેશાઇનાં સ્પારક બાબનો ખ્યાલ આપી, પ્રતિવંધ આ લખતની જેમ સાહિત્ય પ્રદર્શન લકીને ઉજવણી યાય તે દેર દેર ઉજવાય, તે માટે પ્રતિબંધ કરવા તથા શ્રીમદ્ હેમચંદ્રાચાર્ય મહારાજ તથા ઉપાધ્યાયછ મહારાજ બન્નના મધાના પુનયુંદ્ર ભુતું કાર્ય મુંબઇ હપાડા કો, એક સરખી સાઇઝમી એક નિધિન પદનિએ પ્રકાશન થાય, વિદદ્દવર્યન તે સાહિત્ય પુર, પાડવામાં આવે, અને તે હવર્શી હપપીશી

ગ્રન્થાના ભિન્નભિન્ન ભાષામાં અનુવાદો કરાવી તેઓશ્રીના સાહિત્યના પ્રચાર કરે તા મુંખઇ એટલે કે મુંખઇની કોઇ પણ પ્રકાશક સંસ્થા ધન્ય ને અમર ખની જશે. મુંખઇ પહેલ કરે, નક્કી કરે, તા દસ વરસમાં ઘણું કરી ખતાવશે. તે સિવાય શ્રીમદ્ હિમચંદ્રાચાર્ય મહારાજ માટે ઘણું કરવાનું છે છતાં તે અંગે તો કંઇક થયું છે. પણ અગાઉ કહેલી શ્રીમદ્ હિરસરિજીના રથૂલ રમારકની ખાખત પુનઃ ભૂલાઈ ન જાય, માટે શ્રીયુત ભાઇચંદ- ભાઇ વગેરેને સ્થના કરે છું. તે ઉપાધ્યાયજી મહારાજ માટેના રમારકની જવાયદારી આપણી સહીયારી લઇએ છીએ તેના પ્યાલ આપું છું. અને શ્રી વિજયદેવસરિજી મહારાજના જીવનચરિત્રના ગૂર્જર અનુવાદ તૈયાર કરવાની સ્થના થતાં તેના પણ નિર્ણય લેવાયા.

વ્યાદ અધ્યક્ષપદેથી પૂ. આચાર્ય દેવે પોતાના જણપણાની કેટલીક હકીકત જણાવી તેઓશીની પાંદુકા પાસે બ્ર્તાકાળમાં ખતેલા અદ્ધુત અમત્કારાની ખાખતા જણાવી હતી. રવ. શ્રીમદ્ વિજયમાહનસ્રિજી મહારાજને તેમના પ્રત્યો પરત્વે કેવા પક્ષપાંત હતા તેની યાદ આપી ઉપાધ્યાયજીના વર્તમાનના પણ જગતા મહિમા કહ્યો હતા. પ્રતિમાશતક ન્યાયના પાર્ના કેવી રીતે મળ્યાં તેની રસિક હકીકત કહી, અન્ય-દર્શનના પ્રત્યો પર ટીકા કરી તેનું કારણ એ કે-ઇતરના ઘરમાં પ્રવેશી તેની જ અસત્ માન્યતાઓનું તેનાં જ વચના દારા નિરસન કરવાનું હતું ને તે કામ તેઓશીએ ખરાખર પાર પાડ્યું છે. કબોઇના સંધની તેમના પ્રત્યેની ભક્તિ અને તેમના જ નામધારી અહીં એઠેલા મુનિ યશાવિજયજીની તેમના પ્રત્યેની અપાર શ્રદ્ધાને કારણે આ ઉત્સવનું આયોજન, તે લાભ સહૃતે તેમણે અપાવ્યો છે. ખાદ ગ્રારેવની છબીને સહૃએ હાય જોડ્યા પૂ. મહારાજશ્રી તરફથી તેમના નામના જાય કરવાની સ્ચના થઇ. સભાની પૂર્ણદુતિમાં સમિતિના સે૦ શ્રીદીપચંદ શાહે સહૃતો આભાર માનતાં મહારાજ શ્રીયશાવિજયજીએ ઘણા જ પરિશ્રમ ઉઠાવીને આપણને અમૃતપૂર્વ જે લાભ આપી, મુંબઇ જે મહાયુર્યને એાલું જાણતું, સ્વ૦ ઉપાધ્યાયજી જેએ! એક મહાન જમાતિધ'ર થયા, તેના સચાટ પ્યાલ આજે સહૃતે આપ્યો છે. તે માટે પાટ પર ખિરાજતા પૂજ્ય ગુરૂદેવોના તથા વકતાએ!, સભાજના અને કમોઇ જૈન સંધ કે જેમણે ઉપાધ્યાયજીની છત્રી મોકલાવી તે બધાયના આભાર માન્યો હતા. વિદાયબીત ગાઈને જયનાદા વચ્ચે સક્ષા વિસર્જન થઇ.

ઉપાધ્યાયજીતું સાહિત્ય પ્રદર્શન રવિવાર સુધી દર્શનાર્થ રાખવામાં આવ્યું છે. દરામે ખપારે સ્વ. શ્રીમદ્ યશાવિજયજીકૃત નવપદ પૂજા જાણીતા ગવૈયા શ્રી. દેવેન્દ્રવિજયે ભણાવી ભારે રંગ જમાવ્યા હતા. રાતના ખંતે દિવસાએ રાત્રિજાગરણ, ભાવના તે ધૂન જમાવી હતી. સુજસવેલીના આધારે કહેવાએલું સ્વર્ગસ્થતું વિગતવાર જીવન આગામી એક.



पवित्र पुरूष है।ने हिंदेवाय ?

ग्रुचीन्यप्यश्रुचीकर्तुं, समर्थेऽग्रुचिसम्भवे ।
देहे जलादिना श्रीच - भ्रमो मृहस्य दारुणः ॥
यः स्नात्वा समताकुण्डे, हित्वा कदमलजं मलम् ।
पुनर्न याति मालिन्यं, सोऽन्तरात्मा परः ग्रुचि ॥
हपा. श्रीवरो।विलयण] [श्रानक्षार

મુંબઈમાં ન્યાયવિશાસદ, ન્યાયાયાયે મહાપાધ્યાય ૧૦૦૮ શ્રીમદ્ યશાવિજવછ ' ગુજાતુ-વાદ મહાત્સવ' સમારંભ વખતે સંગીતના કાર્યક્રમમાં શ્રી. મિલ્લિશ માહનલાલ પાદરાકરકૃત જે ગીતા ગવાયાં હતાં તે અત્ર મગઢ કર્યા છે. સં. [તા. ૧૯–૧૨–૧૧-]

(1)

—પ્રભુ સ્મર્ણુ મંગ**લ—** (રાષ-પંધા વાવરા)

ત્યોતિ જિનવરા!

ગ્રાનકો ત્યોત જગાઓ! કત્યવ સુપરા સુડાઓ! ત્યોતિ—
ગ્રાફ્રનદેવ દેવિઓ આએ, નવઝડ સ્વયં પધારા!

પાર્થપ્રસ ધરણેન્દ્ર પશાસહ! શાંતિ સુધારસ પાએ!—ગ્રાન.
પાત્ર અર અપ્યાત્મ ગ્રાનકો, ધનગ્રષ્ટિ બરસાઓ!

સરદા ધર્મ-પ્રતાપ નસા નસ-અમીદિષ્ટ દરશાઓ!—ગ્રાન.
ગુદ્ર હેદ્રયસે તાર લગાકે, લીતર હોય કજાશ!

ચેતન જગે સુર્યાત કે સંત્ર-ખેરે રાસ સ્યાલા!—ગ્રાન.
ચાંદ પ્રસ મણિ બાલ ચકારા, કીરપા સુધા પીલાદા!

ઉપાધ્યાય યરાધ્વર નસલદેરે! હત્યત્ર આજ મનાઓ!—ગ્રાન.

(२)

—५२भ ज्ञानभृति ॐ— (अराष्ट्र)

परम जानमृति छ जहम जातम्भीओ छ, निज्ञांट भाेओ छ अगरी अन्त न्योनि छ अन्यता छ। जोगी छ—पर्य पंच यदाद्व रहाण, रत-पर ह्या अनियाण ! जात्म न्योत रभवाण ! हिपाध्याय यहा : छ—पर्य न्यायनिशाहर सदानं, हार्षि तम ह्या अन्ति वालु !—पर्य शहर शुक्तान छ, पर पर हार्ष छ रहर हितान छ साधा-महि-सिह छ—पर्य (8)

---સ્વાગત---

(આશા-પીક્ષરાય)

સંત સુજન નરનાર,

પધારા કવિ પંડિત અમદાર ! રાજ્લહંસ સુમાનસસરના, ગ્રાન માતી ચરનાર ! પ્રેમમૂર્તિ ળધુ લગિની લ્યા, ધર્મ-સુયશ સત્કાર !--પધારા. રસરાજલ રસતરસ્યાં ઉતર્યો. ઉત્રત ગિરિ વસનાર! યશાવિજય જયવંત ગુણાત્સવ, રસ અધ્યાત્મ પીનાર !-- પધારા. ધમ સુયશ રસરાજે ખાલી, ગ્રાનપરંત્ર–પીનાર! કુંજ કુંજ રસતરસ્યાં. પીજો, છેડી હૃદય સિતાર! - પધારા. ત્રાન રસામૃતના પીનાર્રા, ભક્ત ભગ્ય નરનાર ! અબેદ થઈએ આવા લાંકુ, ફરી ફરી કર્યા મળનાર !--૫ધારા. મહાકવિ પંડિત વાદીવિજેતા, યાગી ન્યાય અવતાર! હપાધ્યાય યશવિજય ગુણાત્સવ, ભાયખલાને દ્વાર !--પધારા. ગિર્વાણીતા ગરવા ગાયક, ગૂજરીતા અવતાર! મહામ્રંથ આલેખક ભાસ્કર, શાસન નભ ઝળકાર !---૫ધારા. દશમ ઉજવળી મુગશિર સાેમે, ચઢતે પહાેર સ્હવાર! પ્રતાપ ધર્મ યશાખ્વજ લહેરે, જય આનંદ મલ્હાર !--પધારા. કવિ તત્ત્વત્રાની યાેગી કાે, હશા ભક્તિ આગાર! સ્વાગત મણિમય માહમયીનાં લ્યા શાસન શણગાર !-- પધારા.

(8)

શ્રી શારદા–શ્રુતદેવતા સ્તવનાષ્ટક

(अध्याध)

વંદન ! જય શારદ ! યુતદેવીસરસ્વતી ! અમિત આત્મરાક્તિ તું સદા વહાવતી !—વંદન. પરંમ પ્રેમ રેલતી, દિગ્ય સર છેડતી ! પુષ્યપૃમિ ભારત યશને સુદાવતી !—વંદન. ગૌતમ ગુંશું ગાવતી, વીણા બજાવતી ! પાણી સુંદરી સ્વરૂપને સમરાવતી !—વંદન. સુરિલ સુમન સુરસ ગ્રાનકંજ ખેલતી ! મૃતિંમંત સૃત્ર આગમે શી હાલતી !—વંદન સ્સવિલાસ રેલતી, રસિક રીઝાવતી ! ગૂઢ તત્ત્વગ્રાન ગીનડાં ગજાવતી !—વંદન. શાસન પ્રભુ વીર સદા તું ઉજાગતી ! ધમે યશ ધ્વરુ સદેવ દેવી જય વતી !—વંદન ઉપાધ્યાયજી જ્વલંત જ્યાત રેલતી ! યુગે યુગે રહ્યા સદેવ સુષશ પ્રસવતી !—વંદન. જૈન ધર્મ જ્યાત વિશ્વ ઝગઢળાવતી ! ઉત્સવે સુયશ મિણમચી પધારતી !—વંદન.

(4)

—સુયશ મેઘ—

(शत-इमां, वाद त्रिवाद)

સુષશ રસ ગેવન કે લગ ગાર—સુષજ્ઞ.

દગ દગ અંજન ત્રાનસવાદા, ખાલન સુરત કિશાર—સુયશ. ખાલન એાર ખૂલાવન અખિયાં, આનમણન રુચિ દેશ—સુયશ. દમલી સુયરા અમીદ્રા નીરખન, દાટન દર્મ દેશર—સુયશ. આનમ સન્ય પ્રસુ પથ કનશે, દેશે ચંદ ચંદાર—સુયશ. શ્રી જસ ત્રાન વિશ્વસ લુંટું મેં, અરજ માણુ દર જોર—સુયશ.

(%)

--- વિદ્યારાાળામાં લાગુેલી સાચી શ્રાવિકાની ભાવના---(મ્હારે માતના થા છે)

ખ્યારે શાલું છે ત્રાસુક્ષી શ્રાવિકાર લે!લ, જેના વિશ્વે ગતાય શુળુ ત્રાન જો; છતું સાસુ જીવન-પ્રસુત્રે કશું રે લે!લ, ધર્મ નીતે તે તત્ત્વત્રાન ભાન જો.—સ્યારે. કુળ ખેતે રત્વમાં નિષ્ઠ હું કરું રે લે!લ, કિયા અપ્યાર ત્રત ધર્મ પ્રાપ્તુ જો; ખાલ મુત્રા રહોમાં ધર્મને લદ્દે રે લે!લ, વિશ્વે પ્રકારાં જેન ધર્મ ભાળુ જો —સ્યારે. દર્ફ ના હશુ હું ધર્મ જતાં પ્રાપ્તુથી રે લે!લ, કર્ફ રસા હું શીલ સરાચાર જો; સ્યાર ચારિત્રે દેવો ઢે!લ્યા આવશે રે લે!લ, રેલું ધર્મ-પ્રેમમાવ-એક તાર જો.—સ્યારે. કર્ફ સાત્ર્યાર્થ તત્ત્વત્રાન એક્કાર રે લે!લ, ત્રાનમન્દિરાને ચારેયા ઉદ્યાર જો; રસું સાહિત્ય સંગીત ક્લાવને રે લે!લ, ગાનમન્દિરાને ચારેયા ઉદ્યાર જો; પિતા લેફ માતાઓ સહ સાંસ્થાર રે લે!લ, સ્યારે હૈકે છે ભર્ષો સમાં કેમ જો; પિતા લેફ માતાઓ સહ સાંસ્થાર રે લે!લ, સ્યારે હૈકે છે ભર્ષો સમાં કેમ જો;

> (७) —(वहाय—

(ने।४वछ सरेग्रा)

લાડીલા એ વીરતંદત સો આરતો, અમ માનમુમર રાજલદું મુરાયાઓ; પધારીઓ શ્રી પૈરાવિજય ગુણું કે. સુદાવશ પરા-લમ્તિએ દરમાર તો.—લાડીલા. આવ્યા આંત્રણ રમતદસ્યા રસરાયતી, નિયતપાતન્ત રસાયત કરશા પાત એ; પીધા પાયા સ્થિય રસાયભ શાધનાં, દેવ કડના નિયારો મદેમાન તો.—શાડીલા. સામદિલ વિદ્યાસરકારી આપ તા, ચાનક ગુરુર તયનામન અલિરામ તો; ધર્મ પિયાસ બંધ્યા રતેદ નિયાયો, શાક્યા રિલના-ત્દાર્શ એ વિશામ તો.—લાડીલા. ધર્મ પ્રતાપ સુપરા જય ધ્યમ લેરો, આવ્યા સ્પકારી ન શક્યા મદેમાન તો; સ્પાલયાં લ્લ્યાયન પાત કરાવો, અબ્રિય દ્વા રિલની આય વિદ્યાસ્તે.—લાડીલા.

નાધ-'જંન' પત્રમાં શુણાતુવાદ ઉત્સસ અંગે પ્રગઢ થએલી તંત્રી નાંધના ઉતારા.

ઉપાધ્યાયજનું સ્મારક

જૈન સંસ્કૃતિના હેલ્લા મહાન જ્યાતિર્ધ'ર ઉપાધ્યાયશ્રી યશાવિજયજી મહારાજના ગ્રુણાનુવાદ મહાત્સવ ગત મૌન એકાદશીના દિવસે મુંભઇખાતે સુંદર રીતે ઉજવવામાં આવ્યા.

સર્વ અંગાને સ્પર્શં તેઓશ્રીનું સાહિત્યસર્જન એ જૈનસંરકૃતિના મહામૂલા વારસાનું એક અપૂર્વ અંગ છે. બાળ જીવથી માંડીને વિદ્રદ્વર્ગને રૂચે તેવી તેઓશ્રીની અનેક કૃતિએ છે. અને સૌ કાઈ તેઓશ્રીની દ્યાનગંગાના લાલ લઇ શકે તે માટે તેએ.શીએ સંરકૃત, પ્રાકૃત, ગુજરાતી અને ક્વચિત મારવાડી ભાષામાં પણ સાહિત્ય લખ્યું છે. તેઓશ્રીની અપૂર્વ સાહિત્યસેવાના વાસ્તવિક ખ્યાલ આપણા વિદ્રદ્વર્ગમાં પણ જોઈએ તેટલા પ્રમાણમાં નથી, આમ જનતા તા તેઓશ્રીની સાહિત્ય-સેવાયી લાગ્યે જ પરિચિત હશે.

જૈન સંસ્કૃતિના એક મહાન જ્યોર્તિધરથી જૈન સમાજ પણ પૂર્ણ પરિચત ન હાય તે આપણા માટે અયોગ્ય ગણાય.

મું ખર્ઇ એ આવી ચમકતી વિબૃતિને ખદાર લાવવા માટે સુપ્રયાસ કર્યો છે તે ખરેખર અિલનંદનના વિષય છે. મુંખર્ઇના આ મહાત્સવ એ દિવસના માત્ર જલસા ખની ન રહે પરંદ્ર તેમાંથી કંઈક સિક્રય પરિણામ આવે તે માટે મહાત્સવ કમિટિએ એક સિમિતિ નિયુક્ત કરી જે રચનાત્મક કાર્યની શરૂઆત કરી છે તે ખરેખર અિલનંદનીય છે.

અમ કમિટિએ હમાધ્યાયજીને અંગે ત્રણ યોજના કરી છે અને શરૂઆતમાં ડબોઇ કે જ્યાં તેઓશ્રી સ્વર્ગવાસ પામ્યા હતા. ત્યાં સુયાગ્ય કળાયુક્ત સ્મારક ઊભું કરવાના તેમજ શ્રીમદ્ યશાવિજયજી મહારાજનું સર્વાંગ સુંદર એક જીવનચરિત્ર તૈયાર કરવાના નિર્ણય કર્યો છે અને વધુમાં ત્રીજી યોજનામાં હપાધ્યાયજીની સર્વં કૃતિઓ શુદ્ધ સ્વરૂપમાં પ્રગટ કરવાના પણ નિર્ણય કર્યો છે.

મું ખર્ઈના આ નિર્ણયને અમા આવકારીએ છીએ. અને ઈચ્છીએ છીએ કે ડમાેઇનું રસારક કે ઉપાધ્યાયજીનું જીવન—ચરિત્ર તૈયાર કરીને કમિટિ ખેસી ન રહે, ઉપાધ્યાયજીના વાસ્તવિક પરિચય તા તેઓ- શ્રીની અમૃક્ય સાહિત્યસેવામાં રહેલા છે. તેઓશ્રીનું તમામ સાહિત્ય તા આજે ઉપલબ્ધ નથી. પ્રાપ્ત યએલ સાહિત્યમાં પણ કેટલુંક સુટક છે અને સુટક ભાગને જૈન સાહિત્યસેવીઓએ પૂર્ણ કરવાના પ્રયાસ પણ કર્યો છે, પરંતુ આ કાર્ય એટલું લગીરય અને વિશાળ છે કે તે માટે છ્ટાજવાયા યએલ પ્રયાસ ખસ નથી. આ માટે તા સામુદાયિક પ્રયાસ, પૂર્ણ ઉત્સાહ અને ઊંડી યાજનાપૂર્વંક કરવા ઘટે. મુંબઈની કમિટિ આ વસ્તુના પુખ્ત વિચાર કરે અને પાતે શરૂ કરેલ મહત્વનું કાર્ય યશપૂર્વંક પાર પાડવામાં સફળતા પ્રાપ્ત કરે તેમ અમા ઇચ્છીએ છીએ.

મુંખઇખાતે ઉજવાએલ આ મહાત્સવના પ્રાણદાતા ઉષાધ્યાયછ ધર્મ વિજયછ મહારાજના વિદ્વાન શિષ્યસ્ત્ન મુનિ મહારાજથી યશાવિજયછ મહારાજને અમા આ તકે ભૂલી શકતા નથી. તેઓશ્રી હનાષ્ટ્રના જ છે અને ઉષાધ્યાયશ્રીનું સ્વર્ગમન પણ હત્માઇમાં જ થયું છે મહાત્સવ સમયના ભાષણમાં તેઓશ્રીએ કહ્યું છે તેમ ઉષાધ્યાયછને અંગે કંઇક કરી છૂટવાની તમન્ના તેઓશ્રીના દિલમાં ઘણા સમયથી જાગી હતી. અને એ ભાવનાને આજે મૂર્ન સ્વરૂપ મળતું જોઈ તેએ આનંદ પામે છે. અને સાથાસાય આપ્યો ઇચ્છીએ છીએ કે પાતાનું સિદ્ધ થતું સ્વધ્ન પાર પાડવામાં તેઓશ્રી પૂર્ણ સહકાર આપના રહે.

卐

નોંધ—હ્યાર્પમાં સુક્રમદિસ્તા ખાતમુકૂર્ન અચ નીક્ટેશી આમંત્રણ પવિસ

श अई प्र स्कल्लियलंपयाय आंगीतमस्त्रामिने नमः
 न्यायित्रशाद न्यायात्रार्थ महायाय्याय आंयकोदितयज्ञा सद्गुरम्यो नमः

મહાયાધ્યાય શ્રામદ્ યદાવિજયછ-પાદુસ ગુરુમહિતા ખાત ક્યિતા પ્રસંધ આમંત્રણ–પત્રિકા

अज्ञानतिनियन्थानां आनाइनग्रहाक्या । नेअपुनीनिष्ठेतं येन तस्नै श्रीगुरवे नमः [

સ્વતિથી પાર્ચ છેલે પ્રભુગ્ય થી ધર્મસંથત તિવૃત્તિ તત્ર શોધતિ — નગરે યુભપ્રધાનક ધર્માલક દેશિયાં — માહિ કેય સન્કત રેપ્ય લહેવની (હમે થી) થી દી. થી વિશ્વવૈસ્તદ હોય સંય સમત્તતા સંયદ્ધાય પ્રભૂગ વોર્ચો છે.

રિ ચરેતે જણાવાં તો ચાર છે કે દાર પુંત્રકોરો બંગાતા પુન્યવાર પરદેશકારી પ્રત્ય સ્થારફોર ૧૦૦૮ આચાર્ય મહારાજ સાહેલ શ્રો વિજયમાં મહારાજ ત્યા વિક્સ આખાત્યાસ્ત્રાતિ આચાર્ય મહારાજ શ્રી વિજયમાં મહીરાજી તથા પૃ શાહિતપ્રેમી મૃતિ મહારાજ શ્રી ચંદાવિજયજની પ્રેન્ફાર્ય મુંત્રકોર્યા પંદેશાં મહાર મોહિત્યજની સ્થારક શાચિતિને સ્થાપના થઈ છે. તેમની સ્થાદ—સહાય અને પ્રેન્ફાર્યા સ્તારને સ્ફોના મહાન નહેન્દિયા સ્થારતી (હેરોઇ)નો સ્વાર્યની થયેર ત્યા ત્યા. ઊપાંચાય શ્રીપણ ચંદાવિજયજન મહારાજનું સમસ્તિ જે અને રોજીક છે તેને જાણેક્ટર કરી, સન્દ-ક્શાયક આવાનું સુત્રમિક વનાસ્તાનું તકી કર્યું છે.

દેતું મારફાર્ટ માં. ૨૦૦૫ના શારણ શુ ૧૩ શકરારે મરસ્યા મુંત્રાં (લાકોરણ) તિવાની દાનગીર શુદ્ર શ્રી ગાંધીલાલ સત્રસૂત્ર ગાંધીના ગુમ બને દેળવામાં સામ્યું કે.

ચા પ્રેક્ષરે અને પ્લાનાથી શ્રી શામલા પાર્કીનાથ તે. થી શાકનું પાર્કીનાથ અદિ ક મિત કરિતા સ્ટ્રીન રૂપતો ત્યા અને નિર્દેષણા શ્રાહ્તિ કરિત પિલ્ફાર્યું આચારી મદ્દારાજ શ્રીવિજયમનુત્ત્વની વેજી તો યુ પં. શે રાષ્ટ્રિયજી મંખુર મહિલ્યું કરા સ્ટ્રીન-વેસ અને મિત શ્રાહ્તના ગંધલની સ્ટ્રાત કર્યું પ્રવાસ શ્રાપ્યાં શ્રાપ્યાં શ્રીભગવતીસને તેમ પ્રાપ્યાં ક્રિયાય સદાયાના સ્ટર્યું ત્યા પૂ. પ્રવર્તિની શ્રાધ્વીશ મદ્દારાજ શ્રીલ્યાયુકીશ અલ્લાયું કર્યા સ્ટ્રેન વેસ્તરે શ્રાપ્ય સ્ટર્યું

े जार महरोती केट कारण को कार्यन वसी श्री उपग्रवास जुनीबाब के ज्या

C'o हो: देनबंद इत्सवद ना हता दे शहरीकार, रहेक्ट

દી સંવહેતર, શ્રી વિજયોવસ્ટરોનસંઘ, દેવેઇ, દે શ્રી યદાવિજયણ સ્પાસ્ક સમિતિ, સુંવર્છ.

'મુ'બઇ સમાચાર' દૈનિક પત્રના તા. રહ–ડ–પર ના ઉતારા —તાર્કિક શિરામણુિ શ્રીમદ્દ યશાવિજયછ—

ડભાઇમાં તેમના સ્મારકના મ'ગળવિધિ

ડબાઈ, તા. ૨૦ મી ઑગસ્ટ

અમાજરી ત્રણુસો વરસ ઉપર જૈન ધર્મના છેલ્લા મહાન તાર્કિક શિરામણું સેંકહા પ્રત્યાના સ્થયિતા, છએ દર્શનના નિષ્ણાત, ન્યાયાચાર્ય, ન્યાયવિશારદ શ્રીમદ્ યશાવિજયછ જેઓ હસાઈ મુકામે સ્વર્ગવાસ થયેલા અને ત્યાં તેમના સમાધિ સ્થળે તેમની પાદુકા અને ગુરૂ મેંદિર બાંધવામાં આવેલું, પરંતુ તે તેઓશ્રીને છાજે તેવું ન હતું તેથી તેઓશ્રીને અનુરૂપ લબ્ય સ્મારક થાય તેવી પ્રભળ ઇચ્છા મુનિશ્રી યશાવિજયછ જેઓ હસોઇના વતની છે તેઓશ્રીને જન્મેશી અને તે પૂન્ય ગુરૂદેવા આગળ વ્યક્ત કરનાં તેઓશ્રીએ વધાવી લીધી હતો.

જૈન ધર્મના છેલ્લા મહાન સર્જકને જ્યાંતિધરની મહાનતાને જૈન સમાજ સારી રીતે જાણતા થાય તેવી, લાંજા વખતની ભાવનાને ચાલુ સાલમાં શ્રી મુંબઈ ભાયખલા મુકામે તેઓશ્રીના ખે દિવસના 'ગુણાતુવાદ મહોત્સવ' પરમ પૂજ્ય આચાર્ય શ્રી. વિજય પ્રતાપસ્રીશ્વરછ. પૂજ્યપાદ આચાર્ય શ્રી. વિજય ધર્મસ્રીશ્વરછ, પૂજ્ય મુનિશ્રી થશાવિજયછની હાજરીમાં ઉજવવામાં આવ્યા ત્યારે મૃત્ સ્વરૂપ મૃત્યું હતું.

તેનું ખાતમુદ્દત શ્રાવશુ સદ તેરસની સવારે શેઠ વાહીલાલ ચતુર્ભું જે ઘણી જ ધામધુમથી વિદ્વાન જૈનાચાર્ય શ્રીમાન્ અમૃતસ્રીશ્વરછ તથા મહારાજશી ધુરંધરવિજયછની હાજરીમાં હજરા માણસાની માનવ મેદની વચ્ચે વાજતે ગાજતે કર્યું હતું.

જાહેર થએલી સખાવતા

તે પ્રસંગે જહેર સભા યેજવામાં આવી હતી. શેઠ વાડીભાઈએ તે શુભ પ્રસંગે ગુરૂ મંદિરના ઠાર્યમાં રૂા. ૨૫૦૧ ની રકેમ તથા અન્ય મિત્રાની રક્ષ્મ તથા શ્રી ડબાઈ જૈન સંધ તરફથી સારી રક્ષ્મા બેટ કરવામાં આવી હતી. તથા અન્ય સખાવતા પણ થઈ હતી.



तपः श्रुतादिना मत्तः, कियावानिप लिप्यते । भावना ग्रानसम्पन्नो – निष्क्रियोऽपि न लिप्यते ॥ समलं निर्मलं चेद – मिति हैतं यदा गतम् । अहैतं निर्मलं बहा, तदैकमचिशप्यते ॥ ह. श्रीशोविल्यकः] [अध्यात्रीपिन्यत् પર્મપ્રસાવક શ્રીત્રાડીપાધ નાયાય નમઃ

જૈન શાસનના મહાન જ્યાતિધીર, સક્લશાસ્ત્ર પારંગત મહાપાધ્યાય ૧૦૦૮

શ્રીમદ્ યશાવિજયજી મહારાજના

-: શુણાતુવાદ ઉત્સવ :-

[તિથિ–માગરાર મુદ્દિ ૧૧ રવિવાર-ત્રાડીજી જૈન ઉપાશ્રય]

વિ. વિ. સાચે જણાવવાનું કે જેન શાસનના પરમપ્રસાવક, મેંકઠા બચાના રચયિતા, અસાધારણ કાર્શનિકવિદ્વાન, પડ્કર્શનના સમન્વયસાધક, ન્યાય, સાહિત્ય, છંક, અલંકાર, અધ્યાત્મ, યાંત્ર, આચાર, ત્યાત્ર, લિક્ષિ સાહિત્ય સર્જનાર, એ જ વિષયાને વિષ વિષયા ઉપર સંસ્કૃત, પાકૃત લાળામાં, વિમુલ સાહિત્ય સર્જનાર, એ જ વિષયાને વાકાલીન લેકિસાળામાં ઉતારીને સુંકર કાર્યોની હારમાળા ખબ્ર કરી વિદ્વાન—અવિદ્વાન સમાજ ઉપર અને દ ઉપકાર કરનાર, પરમ કૃપાલુ સ્વર્ગસ્ય મહિપે ન્યાયાચાર્ય, ન્યાય વિશાસ્ત્ર મહાપાંચ્યાય ૧૦૦૮ શ્રીમદ્ર યરોાવિજયજી મહારાજ સાહેબના 'શ્રુણાનુવાદ ઉત્સવ' બેલીજ જેન ઉપાશ્યમાં પ્રત્યપાદ પરમ ઉપકારા આચાર્ય દેવ શ્રીમદ્ વિજય પ્રતાપ સ્ટ્રિયરજી મહારાજના પ્રકૃષ્ણ પરમ પ્રત્ય સુનિરાજ શ્રીયરોાવિજયજી મહારાજના વિદ્વર્ય આચાર્ય શ્રીમાન ધર્મ સ્ટ્રીચરજી મહારાજના શ્રિષ્ય પરમ પ્રત્ય સુનિરાજ શ્રીયરોાવિજયજી મહારાજની અધ્યક્ષનામાં ઉજવવાનો નિર્ણય કર્યો છે. તેના કાર્યક્રમ નીચે સુજબ છે.

—કાર્યક્રમ**—**

માગકાર ચુદ્દિ અંગીયારસ રવિવાર ના. ૧૦–૧૨–૫૧

સવારે ૯ વાગા:-શીયદ યગાગિયવુઝ મહુદાયના નવા એાર્યક્ષેપેઈન્ટ કરાએલા અત્ય ફાટાના અનાવરૂપ હ્યા અર્ચન શિધ

ત્રાળાએાનું મંત્રલાચરણ. ત્યારત્યાદ જુદા ગૃદા વિદાન વક્ષ્તાએાનું ગુણુકોનેન રાતના ૮ વાગેઃ–ઉપાશ્યમાં જ સ્તર્જસ્થનાં બનાવેલાં સ્તર્ગનો–પદા દાસ ગતિ જ્યવરણ શ્રી નાનુકાઇની મંડગી, તથા સંત્રીનકાર શ્રી મણિલાલ સંગીતના સાજ સાથે શક્તિશાવ પૃત્રેક કરશે.

તો આપણ શાસનના મહાન જ્ઞપકારી ચદ્રગુરદેવની જ્ઞજવણીમાં દરેક જેન લાઈએ અને જ્ટેને:ને અવશ્ય હાજરી આપવા આયડ્લરી વિન'તિ છે.

> થી. મંધ મેનુકા શ્રી થકાવિજયજ સ્મવક સમિતિના મંત્રીએ.

મુલચંદ વાડીલાલ દાલનરામ કૃતેહચંદ ઝેવરભાઈ વીસ્ચંદ નાગજભાઇ

ગાંડીઝ જૈત કમાઝ્ય પાયકૃતી–સુંબર્ડ તા. છ–૧૨–૫૧ નોંધઃ—અહીં થી શ્રી યશાવિજય સારસ્વત સચના વિસ્તૃત હેવાલ; તે પ્રસંગ મુદ્રિત રૂપે બહાર પડેલા તે શરૂ થાય છે, આ હેવાલ આપવાનું કારણ, આ ઐક પ્રસંગ પ્રેરક હતા, અંતિહાસિક હતા. આવા ખનાવા ગ્રત્થસ્થ થાય તા બવિષ્યમાં અનેકને પ્રેરણાનું કારણ ખને. ક્રમશઃ જે જે સાહિત્ય બહાર પડેલું તે ક્રમશઃ જ અત્રે મુકવામાં આવ્યું છે. સંપા

जयन्तु चीतरागाः

પત્રિકા ન'. ૧

શ્રી. યશોવિજય સારસ્વત સત્ર સ્થળ; ડલાઈ-ગૂજરાત

-95G-

શ્રીમાન્/શ્રીમતી

સંતપ્રસૂ ગૂર્જર ભૂમિમાં જે અનેક સંતા, મહાત્માએ અને વિદ્વાના પ્રકટયા છે, તેમાં સત્તરમી સદીમાં જન્મેલા ષડ્દર્શનવેત્તા, ન્યાયાચાર્ય, ન્યાયવિશારદ, મહાપાધ્યાય પૂન્યપાદ શ્રીયશાવિજયછ મહારાજનું સ્થાન માખરે છે. તેઓશ્રી પાતાની અપ્રતિમ વિદ્વત્તા અને વિપુલ સાહિત્ય—સર્જન શક્તિથી લઘુ શ્રીહરિભદ્રાચાર્યછ તથા દિતીય શ્રીહેમ-ચંદ્રાચાર્યછ તરીકે પ્રશંસાને પાત્ર્યા છે. છેલ્લા ત્રણસા વર્ષમાં તેમના જેવી તાકિંક મહાન-વિભૂતિ જૈનસમાજમાં પ્રગટી દેખાતી નથી. તેઓશ્રીએ પ્રાકૃત—સંસ્કૃત—ગૂજરાતી અને મિશ્ર ભાષામાં ગદ્ય—પદ્ય ને ઉભય શૈલીમાં લગભગ ૩૦૦ જેટલા અન્શા સ્ત્રેલા છે. જેમાંના કેટલાક અપ્રસિદ્ધ છે ને માટા ભાગના અપ્રાપ્ય છે.

કેલિકાલ સર્વંત્ર શ્રોમદ્ હેમચંદ્રાચાર્ય મહારાજ પછી જૈન સમાજે વિપુલ સાહિત્યના સર્જનકાર અને નવ્ય ન્યાયના પ્રખર વિદ્વાન તરીકે, ખીજા જ્યાતિધરની શુજરાતને લેટ આપી છે.

તેઓશ્રીનું સ્વર્ગગમન વિ. સં. ૧૭૪૩ માં (દર્ભાવતી) હેલાઇ (જલ્લા વડાદરા) મુકામ થએલું, જ્યાં તેમની યુનિત પાદુકા સંવત ૧૭૪૫ થી વિઘમાન છે. તે પાદુકા–સ્થાને નૂતન શરુમંદિરની રચના કરવામાં આવી છે. તેની પ્રતિષ્ઠાના શુભ પ્રસંગે સં. ૨૦૦૯ ના ફાગણુ વિદ સાતમ—આઠમ તા. ૭–૮, ૩–૫૩ ના રાજ " શ્રીયરાવિજયજી સારસ્વત સત્ર" રૂપે એક મહાત્સવની યાજના કરવામાં આવી છે.

અન પ્રસંગ ભારતવર્ષના અને ખાસ કરીને ખૃહદૂ ગુજરાતના વિદ્વાના એકત્ર મળે અને પરસ્પર સમ્યગ્ ગાન ગાંધી કરે એવી સમિતિની હાર્દિ'ક ઇચ્છા છે.

આ સારસ્વત સત્રમાં હાજર રહેવા તેમ જ આ પ્રસંગને અનુરૂપ એક નિર્ભધ માકલવા આપશ્રીને નમ્ર વિનંતિ છે.

આ નિળંધા યાગ્ય સમયે પુસ્તકાકારે પ્રસિદ્ધ કરવામાં આવશે.

નિળધોના વિષય પસંદ કરવા માટે એક સ્ચી આ સાથે અમે માકલી છે. તેમાંથી આપની પસંદગીના અથવા તેને લગતા કે પ્રશ્નંગને અનુરૂપ બીજા કાઈ વિષય ઉપર આપ માડામાં માડા ફેપ્રુઆરીની આખર સુધીમાં આપનું લખાણુ અવશ્ય માકલી આભારી કરશે.

મહાપાધ્યાય શ્રીમદ્ યગ્રાવિજયજનાં છવન અને કાર્યની દૂંછી રૂપરેખા આપને અનતી તરાએ માકલવામાં આવશે.

મહાત્સવની આમંત્રજ પત્રિકા યદ્યાસમયે સાકલાવાશે.

નિવેદકા :--

લાલચંક્ર ભગવાન ગાંધી નાગકુમાર ના. મકાવી ભાગીલાલ જે. સાંડેસરા જશુભાઇ મ. જેન

માનદ મધાઓઃ—શ્રી યશાવિજય સારસ્વત સત્ર સમિતિ

સ્ચના:—સંખકાતે વિનંતિ હે કે લેખા બને ત્યાં સુધી ઉષાધ્યાયજીનાં જીવન અને ક્વન અગિ તથા ત્ર્યામાં આપેલી તેઓશ્રીની સાથે નિક્ટ સંબંધ ધરાવતી બાબતો ઉપર લખવા.

> તિલધા માકલવાતું કૈકાલું:—વકીલ નાળકુમાર નાચાલાલ મકાતી કે. લાલાછપરા, દાર્યાયાળ, મુ વટાદરા (વંદરાત)

શ્રી યંગ્રાવિજય સારસ્વત સત્ર સમિતિ

—સુવચા—

ખાસચંદ જેઠાસાસ શાલ કાઉન્સીલર, ડમોઇ મ્યુનિસિપાલીડી મંત્રી, રેદ દેતચંદ ધરમચંદ પેઠી, ડભાઇ મમનસાસ ગારુન્નશાસ શાસ્ત્રો સાહિત્યમ્પણ પ્રમુખ, દ્યારામ સાહિત્ય સભા, ડભાઇ ચંદ્રલાશ વિમતસાસ શાલ કાર્યાધિકારી, સ્મારક સમિતિ, ડભાઇ રાદ્યાભાઇ નાંધાસાસ શાલ કાર્યાધિકારી સ્મારક સમિતિ, ડભાઇ શાંતિસાસ માલિસાસ શાલ હિપયસુખ, શ્રી ય. જે. સેવાસદન, ડભાઇ સંસ્થાના વ્યવસાય શાસ્ત્રી. બા. એ. (આનર્સ) નિષ્ટત્ત સુખ્ય-અધ્યાપક, રાજકીય સંસ્ટ્રત મહાવિદ્યાલય, વડાદરા મેદાવિદ્યાલય, વડાદરા

અર્પજ્ઞાસ્ત્ર અને ઇતિદાસ, યુનીવરસિટિ.

ઉમાકાન્ત પ્રેમાન'દ શાહ એમ. એ. વડેાદરા પંદિત શાલચંદ્ર ભગવાનદાસ બાંધા *ધ્*રપૂર્વ *જૈન પંદિ*ત, પ્રાચ્ય વિદ્યાર્મીસ, વડેાદરા

ટા. ભાગાલાલ જે. સાંટેસરા જેમ. એ. પોએચ. ડા. અધ્યક્ષ, રાજનાતી વિભાગ, શ્રી મહારાજા સયાજીરાવ વિશ્વવિદ્યાલય, વેટાદરા

લાલચંદ નંદલાલ સાહ કાર્યાધિકારી, શ્રી મુક્તિકમલ જૈન મેાદન દ્યાનમંદિર, વડાદરા મંત્રી, શ્રી વડાદરા પાંજરાંપાળ સંસ્થા, વડાદરા નાલકુમાર નાધાલાલ મકાતી ળા એ; ચલએલ બા

જરાભાઈ મત્રનલાલ જેત કાઉન્સીલર, ક્લાઈ મ્યુનિસિપાલીટી

—નિબ'ધા લખવા અ'ગે વિષયસૂચિ—

		नारम्या दा ग्रमा का वा विषयसूर्य
٩	શ્રી યશાવિજયજી	મ. તું જીવન અને તેમની કૃતિએ।
ર	>>	ના સમકાલીક વિદ્રાના વ્યને તેમની કૃતિએ।
3	,,	ના સમયનું ગુજરાત
8.	,,	नी हार्शनिक विद्वत्ता
Y	»	નાં અધ્યાત્મ અને યાગ
ţ	,,	અવધાનુકાર ત્રીકે તથા અન્ય અવધાનકારા
u	"	નું ગૂર્જર સાહિત્ય
4	,,	મહારાજ અને તેમનાં ખિરફા (ન્યાય વિશારદ, ન્યાયાચાર્ય, વાચક્ર–ઉપાધ્યા
٤	"	ના ગુરૂખ'ધુએા [શ્રી પદ્મવિજયછઆદિ]
90	23	ના દીક્ષાગુર, વિદ્યાગુર, અને પૂન્યો [શ્રીનયવિજયછ, શ્રીવિજયદ્વસ્રિજી અને શ્રીવિજયપ્રસસરિજી વગેરે]
૧૧	2)	ના શિષ્યા અને ગુધ્યાનુરાગોએ। [श्री तत्त्वविજય, શ્રી માનવિજય, શ્રી કાન્તિ-।वજયજ વગેરે]
૧૨	>>	ના પ્રાંથા [મુદ્રિત, અમુદ્રિત, પ્રાપ્ય, અપ્રાપ્ય, સ્વતંત્ર રચનાએ અને ટીકાએા, સંસ્કૃત–પ્રાકૃત અને લાકભાષામાં]
દુક	> >	ની રચનાઓમાં મળતાં પ્રમાણ ત્રંથાનાં અને પ્રંથકારાનાં નામતા પરિચય
१४	33	ની જન્મભૂમિ અને દીક્ષાભૃમિ [કન્હેાકુ અને પાટણુ]
૧૫	,,	ની વિદ્યાભૂમિ [કાશી-માત્રા]
9 \$,,	ની વિહાર્શ્વમ [પાટ્યુથી કાશી વગેરે]
૧૭	**	ની સ્વર્ગવાસ બૂમિ [દર્ભાવતી–ડબાઇ]
94	**	ના સંપર્કમાં આવેલા તાર્કિંક વિદ્વાના ના કાશીના વિદ્યાભ્યાસમાં અર્થેસહાયક શેઠ ધનછ શરા ક્રાણ હતા !
૧૯	>>	અતે નવ્ય ન્યાય
२० २१	>>	અતે શ્રી આનંદધનછ
22	» ·	અતે શ્રી હેમચંદ્રાચાર્ય છ
23	,, ,,	अने श्री हरिलदसरिक
२४	"	અન શ્રી સિલ્સેન દિવાકરછ
રપ	22	મ્મતે શ્રી મહનાદિજી તથા મન્ય તાર્કિ'કા
२६	"	विषेनी हिंवहंतीओ।
२७	22	ના જૈન સંધ ઉપરના ઉપકાર અને તેમના કાર્યની યએલી અસર
२८	**	ની જન્મ સાલ તથા તિથિ, અને દીક્ષા, ન્યાય વિશારદ-ઉપાધ્યાય વગેરે પદ પ્રદાન અને સ્વર્ગગમનની તિથિ કર્ષ !
રહ	37	નાં રચેલાં સેંકડા પ્રાંથા અપ્રાપ્ય ક્રેમ ખન્યાં?
30	21	ની આચાર્ય પદની પરિપૂર્ણ યાગ્યતા છતાં તે ક્રેમ ન થઇ શકી તેનાં કારણા
88	2)	નાં પાતાના જ હસ્તાક્ષરથી લખેલી પ્રનિએ તેમજ અન્ય લેખકા દ્વારા લખાએલી કૃતિએ કર્યા કર્યા છે તે અને તેના પરિચય
३ २	"	' ઝુતકેવળી ' જેવી મહાઉપમા, તેમ જ 'લધુહરિલદ ' ખીજા હેમચંદ્ર, તરીકે પ્રશંસાયા તેનાં કારણા
55	1,	ના ડબાઇમાં વર્તતા સગાધિરતૂપના પ્રામીનઅર્ત્રાચીન રથળનાતથા શીત તલાઇના પસ્ચિય અને છર્સ્ટ્રોહારા

જુ	21	ની પાદુકારચાપન સૂર્ધ પ્રયમથી શું આજે હતી ?
ટપ	21	તે સૂર્તિ અને સૂર્તિ પૂજાના વિરોધીએ, ઇતર ગચ્છા–સંપ્રદાયાને પડકારનાં વિરોધીએ। તસ્થી સહન કરફું પહેલું ખરૂં !
a §	29	ની પાદુકા ઉપર ૧૭૪૫ની સાલમાં અમદાવાદમાં પ્રતિષ્ઠા કર્યોનું લખ્યું છે તેા તે પ્રતિષ્ઠા કાજે કરેલી ! કાજે કાજે લજર હતું ! પાદુકાને ડસાઇ ક્યારે ને ટેવી રીતે લાવવામાં આવી ! અને ડસાઇમાં કાણી હાજરીમાં પ્રતિષ્ઠાદિ કાર્યો યએલાં !
ยร	23	કાશીમાં કેટલાં વર્ષો રજ્ઞા ક તે અને ત્યાંના પ્રકૃત્તિએ।
25	27	ની સ્ત્રગાંરાયળુ તિથિએ સ્તૂષમાંથી 'ન્યાયધ્વનિ ' પ્રગટે છે. એટલે શું !
35	19	ની ગ્રંય–સાદિત્યકૃતિઓ અને તેએ!શ્રીના આદર્શોના પ્રચાર માટે શું કરવું જોઇએ ? તેની યાજના
٧°	"	ના નામ સાથે સંકળાએલી સંસ્થાઓના પરિચય, તથા તેમની મુબ્રિત કૃતિએ। ક્રાેબ્રે ક્રાેબ્રે છપાવી વગેરે
71	,,	ની સરસ્વની સાધના અને ' एँँ' પદના કરેલા જ્યયાત્ર
૪ર	. 2,	ના નય–નિશ્નેષ–નાર્ક-પ્રમાણને સપ્તબંગીવાદની વિશેવનાએ।
Sy	11	ની નવ્યત્યાયની વિદ્વત્તાયા જૈન સિદ્ધાન્તા તે માન્યતાએાર્મા શું નવીનના પ્રગટી
ΥY	27	નાં છવન અને સાહિત્યિક વિષયમાં આજ સુધીમાં ક્યા ક્યા વિઠાને કર્યા કર્યા વિવેચન કર્યું છે તે
४५	"	નાં કાર્યનો અવગ્રિપ્ટ ગ્ટ્રેની બાળતો (પેદા–સ્તવનો–સત્તઝાએા બનાસ્સીદાસ, ગ્રાનવાદ, કિયાવાદ, ભક્તિવાદ, ક્રાન્તિકારી અક્તિત્વ, ભાષાશ્વકી, પ્રન્થનામ કરણ રદસ્ય, પ્રન્થ રચના ક્રમ, અનુકરણ શું કર્યું કે તે, વગેરે)

अन्य विषय सूत्री

- ૧ આજના સંતપ્ત વિધમાં ગ્રાંતિ સ્થાપત્રામાં જૈની અહિંસા કેવી રીતે સફળ અને ઉપયોગી થાય !
- ર મહારાજ શ્રી કુમારપાળની અદ્વિસાના પ્રસાવ કેટલા દેશા પર પડેલા અને તેથી શું લાભા થયેલા
- ઢ સ્યાદ્વાદ્વી વ્યાખ્યા અને તેના જીવનના વ્યવદારામાં શા ઉપયોગ
- ૪ ભારતીય દર્શનામાં નવ્યન્યાયના પ્રારંભ ક્યાર્યી થયો ! અને પ્રાચીન ન્યાય અને નવ્યન્યાય વચ્ચેતું અંતર અને વિશેષનાઓ
- પ શ્રી સિદ્ધસેન દિવાકરછ, શ્રી દરિકાદમુરિછ. શ્રી હેમચંડાચાર્યંછ, શ્રી યસોવિજયછ વચ્ચેનું સામ્ય, પ્રત્યેકના પરિચય અને જૈનધર્મની તેમની સેવાઓ
- ક જૈનધર્મ તેની મહાનતા તેના સિદ્ધાન્તા અને તેની પ્રાચીનતા
- ૭ શ્રી દેમચંદ્રાચાર્ય છતું છવન અને ક્વન
- ૮ શ્રી સિંદહેમ વ્યાકરણ ને હેમકાયની વિશેયનાઓ
- ६ अन्यस्थर श्री दीरस्रीयर्थ ने सम्राट्ट व्यक्तर
- ૧૦ ષ્ટદર ગુજરાતમાં જૈનધર્મ અને તેનું શિલ્પ સ્થાપત્ય
- ૧૧ ઝુડેફ ગુજરાતના રાજ્યઓ, મંત્રીએા, આચાર્યો અને તેમનું કાર્ય
- ૧૨ ષ્યુદ્ધ ગૃજરાતમાં જેન ધર્મીઓની સંખ્યા અને તેમના અહિંમક જીવનની અન્ય ધર્મીઓ કપર અંગ્રર
- ૧ઢ ભારતવર્ષના ઉદર્શમાં જૈન મુનિએા અને ગૃદસ્યાના કાળા
- ૧૪ ગુજરાતીઓ પ્રાકૃત—સંરકૃત ભાષામાં ક્યા કયા ગ્રન્થા રચ્યા છે
- ૧૫ જૈન સિલન્તા તેના ઉપદેશા અને જૈન સંસ્કૃતિના પ્રચાર માટે શું કર્ન્ટું એઈએ.

*

શ્રી. ય. સાં. સત્ર, ડલાઇ

:.

નોંધ—સત્ર પ્રસ'ગે જેન સ'ધને માકલાવાયેલી ક'કે વીના નકલ

वाचकशिरोमणिश्रीमद्यशीय श्रीकोढणपार्थ्वाण्या नमः॥
वाचकशिरोमणिश्रीमद्यशोविजयनीगणिगुरुम्योनमः॥
महात्रमावक—पुरुषादानीय श्रीकोढणपार्थनाथाय नमोनमः॥

ન્યાયાચાર્ય ન્યાયવિશારદ મહાપાધ્યાય પૂજ્ય ૧૦૦૮ શ્રીમદ્ર યશાવિજયજીગણિવરની મૃતિ⁶ના મૃતિષ્ઠામહાત્સવ નિમિત્ત મુ. ડબાઈ } શ્રી**સંઘ—આમંત્રણ પત્રિકા** { ગૂજરાત ક્ક नमः परमानन्द-निधानाय महस्विने । दर्मावतीपुरोत्तंस-पार्थनाथाय तायिने ॥१॥ क्

श्रद्धक्त्रप्रसूतं गणधररचितं द्वादशांक्षविशालं, चित्रं बहुर्ययुक्तं, मुनिगणश्यभेषीरितं युद्धिमद्भिः। मोक्षाप्रद्वारभृतं व्रतचरणफलं श्रेयभावप्रदीपं, भच्या नित्यं प्रथये श्रुतमहमस्त्रिलं सर्वलोकेकसारम्॥१॥ न्याये गौतम एव कोऽपि कणभुग् वैशेपिके दर्शने, शाब्दे पाणिनिरेव यः समभवत् मीमांसके जैमिनिः ! स्याद्वादे च यदीयथुद्धिरमला नैसर्गिकी तं गुढ़ं, न्यायाचार्थ 'यशो' यति मुनिमहोपाष्याय पादं नुमः॥ १॥

સ્વસ્તિ શ્રી પાર્શ્વજિન પ્રહાયમ મહાશુક્ષસ્થાને જિનચેત્યાપાશ્રયાદિ ધર્મસ્થાન વિભૂષિતે શ્રી નગરે દેવગુરુઅક્તિકારક પુન્યમભાવક પંચપરમેષ્ઠિમહામંત્રસ્મારક શ્રદ્ધાસંપન સુશ્રાવક શ્રિષ્ઠિલ્ય શ્રીમાન વગેરે શ્રીસ સમસ્ત જોગ.

ડિલાઇથી લિ૦ શ્રી વિજયદેવસરિ જૈન સંઘ સમસ્તના સયદુમાન પ્રથામ સાથે જયજિનેન્દ્ર વાંચશાજી. અહિં દેવગુરૂકુપાયી આનંદ મંગલ વર્તાય છે, આપ શીસંધના કુશઘ સમાચાર ઇચ્છીએ છીએ.

વિ. વિ. સાથે સહર્ષ જ્યાવવાનું જે—મહાપ્રભાવક અર્ધ પદ્માસને ત્રિરાજનાન શ્રી લાઢ્યુ-પાર્શ્વનાથ, શ્રી સામલાપાર્થનાય, શ્રી પ્રગટપ્રભાવક પાર્ચ નાય શ્રી આદીસર પ્રસુ વગેરે અતિ પ્રાચીન—પરમાનંદદાયક દેવાધિદેવ-શ્રી જિનેશ્વર ભગવંતની પ્રતિમાઓથી અલંકૃત, ગગનસુંબી–શિખર- બંધી, શિલ્પ અને કળાના ભવ્ય નમૂના સમાન અનેક જિન મંદિરા અહિં હાવાથી અમારૂં હનોઇ શહેર (દર્ભાવતી નગરી) તીર્યંભૃમિ જેવું પવિત્ર રયાન ત્રણાય છે. વિ. સં. ૧૯૪૩માં અહિં હને ક્રિમીમાં સ્વર્ગરંચ થયેલા, જૈન સંધના પરમ ઉપકારી, મહાગુજરાતના મહાન ન્યાતિમંદ પૂન્ય મહાપાધ્યાયછ શ્રીમદ્ થશાવિજયછ મહારાજના પવિત્ર ચરણ પાદુકાવાળા રયુલ (સમાધિસ્થળ) તું વિ. સં. ૧૯૪૫ થા વિદ્યમાનપણું થતાં, ત રયળે કાર્ષ ક્રિકાર 'ન્યાયધ્રાન ' પ્રગટ થતા હાવાથી તેમ જ આધ્યાત્મિક વાત-વરણ માટે અતુષમ સ્થળ બનવાને અંગે આ તીર્યંભૃમિની મહત્તામાં ખૂબ વૃદ્ધિ થઇ છે. અને તેથી જ લગભગ ઘણાખરા આચાર્ય મહાજાદિ પૂન્ય સૃનિવરા આ પવિત્ર ભૃમિના દર્શન—સ્પર્શન માટે આજ સુધીમાં પધાર્યા છે. કાળકમે આ સમાધિસ્થળ (રયુલ) છણું થનાં–પૂન્યપાદ, શાસન પ્રભાવક, શૃદ્ધપ્રરૂપક, સ્થારાર્થ મહારાજ ૧૦૦૮ શ્રીમાન વિજય-પ્રતાપસરીર્ધારજ મહારાજ, તથા તેમના શિપ્યસ્ત વિદ્દર્ય તાત્વિક વ્યાપ્યતા, પરમપૂન્ય પ્રતાપસરીર્ધારજ મહારાજ, તથા તેમના શિપ્યસ્ત વિદ્દર્ય તાત્વિક વ્યાપ્યતા, પરમપૂન્ય

આગાર્ય શ્રી વિજયકર્મસૃષ્ટિંગ મહારાજ અને તેઓકાંના સિન્ય સાહિનગેમાં, સોન્યમૂર્ન પૂર્ મૃતિપ્રતર બ્લા સ્ટ્રેશ પાય શ્રી યેગ્રાવિજયાં અનુકારાજ વગેના સફપરેટ કારા મુંબઈ વગેરે સંધતા ઉદાર શાયક લોકુઓ તથા અહેતા ત્રફાંગ તેમજ સ્થાનિક કર્મા કંપ તક્યી મહેલી આર્થિક મદદ કો મુશ્યરણ પાકુક: કાવમ રૂખીતે એ સ્થૂમ—સ્યાધિસ્થાતો છર્જેકાર કરતામાં આગતાં અને તે સ્થળે પક્ષાણાના આરમાં જ અત્યંત સ્માર્ણય, ત્રણ શિષ્યરમાં કામમા, સંદર, શુરુપંદિ તૈયાર શરેલ છે. અને એ સુરુમિસમાં આપણા પરમ ઉપકારી શાયતના સ્થંમ સમાન સ્ત્ર પૂજ્ય ઉપાધ્યાય શરેલિજયક મહારાજની સૃતિને નિરાજમાન કરવાની છે. આ શુપ્ત પ્રસંત્ર પંચક્રમાણક મહાલ્ય, શ્રી સિક્ચક્સરાર્યનનું મહાયુરન, સ્ત્ય વર્ષોદે, તથા શ્રેષ્ય રીતે સાર્ચિક સ્ત્રિન કરવાની અમાર્શ શુપ્ત માત્રના છે.

વર્ગ આ મંત્રલ પ્રસંત્ર સાથે શ્રીકૃત પાતાર્ચંદ માધુવાલ વાળતાવાનો સુધુત્રો માલકુનારિકા આમુદ્દ અનુત પવિત્ર બાળવની દોક્ષા પણ અલ્લ્યુ કરવાના છે.

—ઃ જેનાં શુલ સુદૃનેાં આ યમાણે છે**ઃ**—

ફાગણ વિદિ ર સામવાર તા. ૧–૩–૫૩ પૂત્ર અથાર્ય શ્રી વિશ્વપ્રતારફીધરછ તથા પૂત્ર આવશે શ્રી આણેક્ટાશરફીધરછ અહિ ફૃતિવરાતા પ્રવેશ મેદેવતર અને પડના અધિયેક, દેશ જ પૂત્ર

- ,, , ૪ ભુકવાર તા. ૪-૪-૫૩ સ્વારે પૃત્ત ચાળાર્થ વડારાજાદે સુતિવરો પૃત્ત કર્માત્રાથ ચર્ટોલ્પ્રવેઝ મહારાજના સુવાત્રાદ કર્મો તથા બધોરે શો પંચક્કરાવક પૃત્ત કર્માત્રાદે
- " " ૫ ગુરુવાર તા. ૫–૩–૫૩ સ્ટારે વ્લ્યુરુન્દેતનો દેરપૂરોા વર્ધોયા તથા દેરપૂર્વી મેંગ્રલ ક્લિય અને ત્રોપોરે પુરત
- n n દ શુક્રેવાર તા. કન્-કે-પેટ સરારે ૮-૩૦ કરાકે રથવાતા તા પૂ. દેશાધા-થઇની સુર્તિય ભગ વચ્ચેડી, વર્તકેપામાં વહેદરાતું સુત્રસ્થિ મોશોડી એન્ડ સ્થાએક તેમ જ સ્પેરે ટેક જેડાલાલ સુશાસ્ત્રક તરફથી શ્રી મિક્સક-મત્રરતતું મદાપુરત
- n n ક શનિવાર તા. હ-હ-પટ સરારે ૮-ટર સહેર પૂ ફળાંધાયછતાં સૃતિ લ્લા ધ્વબદેર છાટ લહેરના અસ્તિક અતે રિબલ્સ્ટ્રિકી પ્રતિણા-તથા જોઇટ ૧-ટર સમેરે 'શ્રીયદ્યાવિજય સારસ્વતમુત્ર' (દાત થઇ)નું ફર્ફાસ્ત ફળાંક સમાધિ સ્કારે '૨૬૬' કોરોકોને ક્લ્યુ ક્રિયોન્ટર
- n n < રેવિવાર ના ૮-૧-૫૨ સત્રના ચીના હિન્સને લાઇનો કાર્યક્રમ—છેત —એમેટર વિકારોનો પ્રવચને અને નિર્વધ વચત એરે

તે ઉપરાંત હંમેશા લવ્ય અંગરચના, રાત્રે ભાવના તથા ખ્હેનાનાં ધર્મગીતા રાખવામાં આવશે. પૃજા–ભાવના માટે અહિંના જાણીતા સંગીતકાર શ્રીયુત મુલજસાઈ ચુનિલાલ તથા માસ્તર સુંદરલાલ મુલજસાઇ ઉપરાંત સુશ્રાવક પ્રભુભક્તિપરાયણ શ્રીયુત્ માહનલાલ પાનાચંદ સુરતવાલા તથા પાદરા જૈન સંગીત મંડળ પણ આવનાર છે.

વિધિ–વિધાન માટે ધર્મ શ્રહાળુ શ્રેષ્ઠિવર્ય ભાલુલાઇ ઉત્તમચંદ સુરતવાલા તથા હનાઇવાળા શાહ જવણલાલ શ્રુનિલાલ આવનાર છે. આ મહાત્સવ પ્રસંગે પૂન્ય ઉપાધ્યાયજી મહારાજનાં 'જીવન દરયાની રચના ' તેમ જ તેઓશ્રીની પ્રાચીન હસ્તલિખિત તથા મુદ્રિત કૃતિઓનું તથા પૂ. ઉપાધ્યાયજીની સ્વહસ્તાક્ષરી કૃતિઓનું તથા જેન સ્થાપત્ય અને શિલ્પકળાનું સુંદર ' સાહિત્ય પ્રદર્શન ' પણ ગાઠવવામાં આવનાર છે.

વળી આ શુલ પ્રસંગે અમારી આગ્રહલરી વિનંતિના સ્વીકાર કરી પૂ. આચાર્ય શ્રી વિજય પ્રતાપસ્રીશ્વરજી મહારાજ, પૂ. આચાર્ય શ્રી માણેકસાગરસ્રીશ્વરજી મહારાજ સપરિવાર, પૂ આચાર્ય શ્રી વિજય ધર્મસ્રરિજી મહારાજ, અવધાનકાર પૂ. મુનિપ્રવર શ્રીમાન યશાવિજયજી મહારાજ, પૂ. સતાવધાની મુનિશ્રી જયાનંદ વિજયજી મહારાજ, મુનિશ્રી કનકવિજયજી, મુનિશ્રી વાચરપતિવિજયજી, મુનિશ્રી મહાનંદવિજયજી, મુનિશ્રી સ્પોદય વિજયજી વગેરે શિષ્ય—પ્રશિષ્યાના મંડળ સાથે અહિં પધારવાના છે. આપને પણ અમારી આગ્રહલરી વિનંતિ છે કે—આ શુલ પ્રસંગે અત્ર પધારી શાસન શાલામાં વૃદ્ધિ કરશા. અહિં આવવાયી અહીંના લબ્ય જિનાલયો, શ્રીયુગાદિજિનપાદુકા મંદિર, પાવાપુરી—જલમંદર, શ્રી માહન ગુરુમંદિર વગેરનાં દર્શન સાથે પૂજ્ય આચાર્ય મહારાજદિ મુનિ મંડલનાં દર્શન વંદન, વ્યાપ્યાન શ્રવણના પણ લાલ પ્રાપ્ત થશે.

સુ. હ લા ઈ ઢે શ્રીમાલી વગા શેઢ દેવચ'દ ધરમચ'દની પેઢી સંવત ૨૦૦૯, ફાગણ શુ. ૧૩ ગુરુવાર

લિંગ્ શ્રી વિજય દેવસૃરિ જૈન સ'ઘનાં સબદુમાન પ્રજ્ઞામ વાંચશાછ. 言が重要が重要が重要が重要が高きが高さが重けが合けが合けがないがったがい。

તા. ક.: બહાર ગામથી આવનાર સાધર્મિક ભાઈએ બ્હેને માટે ફાઝણ વિદ ૧-૯-૮ (શુક્ર–શિન-રિવ) ભક્તિ કરવાની અમારી ભાવના છે. આવનાર ભાઈ આ-બ્હેનેાને બિસ્તરેર સાથે લાવવા વિન'તિ છે. વેડાદરા–વિધામિત્રી તથા પ્રતાપનગર સ્ટેરાનથી તેમજ માટી લાઈનના મીયાગામ સ્ટેરાનથી કેમાઈ જવા માટે રેલ્વેની સવારથી સાંજ સુધીમાં ચાર-પાંચ ગાકીઓ મલે છે.

— કોધ ન કરવા વિષે — જખ લગે સમતા ક્ષણું નહિ આવે, જખ લગે કોધ વ્યાપક હૈ અંતર; તબ લગે જેગ ન સાહાવે જખ૦ ૧ ખાદ્યક્રિયા કરે કપઢ કેળવે, ફિર વા મહત્ત કહાવે, પક્ષપાત કળહુ નહિ છાડે, ઉનક કગતિ બાલાવે. જખ૦ ર

श्रीकोडणपार्श्वनायाय नमः

ક્ષ ચલા હમાઈ ક્ષ

જૈન શાસન દીપક, ગૃર્જર દીરક, સત્ય ત્રવેષક, નિર્સંય અને સપર્ય સ્થાલાયક, જૈન જગનમાં નવ્ય ન્યાયના શ્રીત્રણેશ સાંત્રાર, સંસ્કૃત – પ્રાકૃત તેમ જ ગૃજે રાદિ લાકસાયામાં પણ સત્યક દાનના વિદ્યુલ સાહિત્ય લરણર અનુપમ રસ્યાળ ધરનાર, 'લઘુલ્કિલ્ડ,' અને 'દિનીય હેમચંદ્ર'નું ત્રોરવજ્ઞાલિ બિરુદ પ્રાપ્ત કરનાર, કાશી જેવા વિદ્યાના ધાયમાં ઇતર વિદ્વાના સ્પત્ર્ય જૈન ધર્મના વિજય ધ્વજ કરકાવનાર, કરોકદીના સબય શ્રીત્રીરશાસનની પેડીને સુરક્ષિત રાખતાર, નિર્મળ શ્રદ્ધા અને પ્રવિત્ર સંયમના ધૃતિમાન પ્રજસ્મા, સસ્યગ્રાનના આજ્યન દ્વાસક, આરાધ્યપાદ, મહાન વિધૃતિ, પ્રાત્રસ્મરણીય, ન્યાયાચાર્ય, ન્યાયવિશારદ મહાપાધ્યાય ૧૦૦૮ શ્રીમદ્ ચંદ્રાવિજયર મહારાજની નવા આરસના શરૂ મંદિરમાં ઘનારી મનાહર મૃતિની પ્રનિષ્ઠા તથા "શ્રીયશાવિજયર સારસ્થત સત્ર" – દ્વાનોત્સન પ્રસંત્રની વિદ્વત્ પરિષદમાં:—

અવસ્ય હેલાઈ પદ્યારા

સ્ત્રના પ્રમુખઃ તકે મીમાંસા ન્યાયરત્નાકર દારોનિક વિદ્વાન શ્રીમાન્ દર્ધરચંદ્રછ પંજાયો સાહિત પ્રદર્શનતું દેદ્ધાત ઃ શેઠ પરસાનમદાસ સુરચંદ ધોળધાવાળાના શુપ્ત દસ્તે થશે.

કાર્યક્રમ

કૃષ્મણુ વદિ ૭ શનિવાર, તા. ૭ માર્ચ.

૧. સવારે ૧૧—૪૫ કલાકે પ્રનિષ્ટા.

પ્રતિશાસમાં પ્તત્મપાદ આચાર્ય શોમદ વિજય પ્રતાપમ્ટીયરૂઝ મદારાજ તથા પ્ર આચાર્ય શીમદ માણેક્સારુર સ્ટીયરૂઝ મદારાજ, પ્ત્યપાદ આચાર્ય શોમદ વિજયમ્પ્રેયરિઝ મદારાજ તથા પ્રસ્ટાર્જી યેટીવિજય રોગિતી અધ્યસ્તામાં મળે

> ર. વ્યપારે ૧ વાંત્ર શ્રી યદ્યાવિજયછ સારસ્વન સત્રનું કિર્ઘાદન, અને સત્રના પ્રમુખશ્રી વર્ગરના બાળ્ણ.

ફાંગાણ વદ ૮ રવિવાર, તા. ૮ માર્ચ.

- ર. સવારે ૯ કલાકે સંસ્કૃત વિકાનાનાં જેન સંસ્કૃતિન લગનાં પ્રવચના.
- ર. ભધારે ર કલાકે નિખંધ વાચન વંગરેના બરચક કાર્યક્રમ.

च्या भित्राय च्यान्य किन्तृत डार्थक्ष्म तथा स्मिन्द्रम्ते। च्याध्यात्मिड डार्थक्ष्म वजेरे प्रस्ते ९५२ स्थानिह ब्रदेश डार्गे

શ્રીમાળી ગયા, દેવાઈ નિધિ કા. સુદિ ૧૨ સં. ૨૦૦૯ ના. ૧૬–૨–14૩

થી વિજય દેવસૃષ્ટિ જેન સંઘ તથા શ્રી 'યંગ્રોવિજયજ સાસ્ત્વત સત્ર' સમિતિ નેાંધ : વ્યક્તિગત માેકલવામાં આવેલી ગુજરાતી, ઇગ્લીશ પૈકી ગુજરાતી આમંત્રણ પત્રિકાના નમૂના.

जयन्त्र वीतरागाः । श्री यशोविजय सारस्त्रतसत्र महोत्सव निमंत्रण पत्रिका

स्थल : उमोर्ड. [बढोदरा जीहो, गूजरात]

डजवणी तिथि : फार्यण चिंद सातम, आडम. वार : शनि, रिव डजवणी तारीख : मार्च : सातमी, आडमी.

શ્રીમાન્,

સ'તપ્રસ્ ગૂર્જર ભૂમિમાં સત્તરની સદીના ઉત્તરાર્ધમાં અવતરેલા વડદરાં નવેતા, સેંકડા શ્રંથાના રચયિતા, ન્યાય, વ્યાકરણ, સાહિત્ય, અલંકાર, છંદ, કાવ્ય, તર્ક, સિદ્ધાન્ત, આગમ, નય, પ્રમાણ, અધ્યાત્મ, યાગ, સ્યાદ્વાદ, આચાર, તત્ત્વત્તાન, ઉપદેશ ઇત્યાદિ વિષયા ઉપર સંસ્કૃત, પ્રાકૃત અને સામાન્ય જનતા માટે ગૂજરાતી વગેરે લાક ભાષામાં પણ, વિપુલ સાહિત્યના રસથાળ ધરનાર, નવ્ય ન્યાયના આદ્ય જૈન વિદ્ધાન, પાંડત પ્રવર, કૂર્યાલી સારદ, ન્યાયાચાર્ય, ન્યાય-વિશારદાદિ, ભિરુદાને પ્રાપ્ત કરનાર, ત્રાનવારિધિ મહાપાધ્યાય શ્રી ૧૦૦૮ શ્રીયશાવિજયજી મહારાજના અંતિમ સમાધિસ્થાન, ઇતિહાસ પ્રસિદ્ધ દર્ભાવતી-ડભાઈ નગરીમાં શીત-સરાવરના રમણીય કિનારે તેઓશ્રીની ' ચરણ-પાલુકા ' વિ. સં. ૧૭૪૫થી રથાપિત થયેલી છે.

તે રથાતે હાલમાં આરસના નવીન ભવ્ય ' શૂમ '–ગુરુ મંદિરની રચના કરવામાં આવેલો છે. તેની પ્રતિષ્ઠાના શુભ અવસરે વિ. સં. ૨૦૦૯ના કાલ્યુન માસની કૃષ્ણપક્ષની તિથિ સપ્તમી–અપ્યી. તા. ૭–૩–'૫૩ અને તા. ૮–૩–'૫૩ને શનિ અને રવિવારના દિવસામાં 'શ્રી યરોાવિજયજી સારસ્વત સત્ર ' રૂપે એક મહાત્સવની યોજના કરવામાં આવી છે.

અના સત્રનું પ્રમુખપદ સ્વીકારવા પંજાય-લાદ્વારના દાર્શનિક વિદ્વાન પંડીતજી શ્રીમાન કૃજ્યિરચંદ્રજીએ અનુમનિ આપી છે.

અમ પ્રસંગે ભારતવર્ષના અને ખાસ કરીને ગુજરાતના વિદ્વાનો એક્ત્ર થાય અને ઉપાધ્યાય-જીના પ્રેરક અને આદર્શ જીવન ઉપર પ્રકાશ ફેંકે તેમ જ પરસ્પર સમ્યગ્ ગ્રાનગોષ્ટી કરે એવી સમિતિની હાર્દિક ઇચ્છા છે.

અનુપત આ મહાત્સવમાં ભાગ લેવા અમારૂં હદયપૂર્વં કતું નિમંત્રણ છે.

આશા છે કે આ **ગાનાત્સવ સત્રમાં ડાજરી આપી આપ અમાને આ**ભારી કર્**રો**ા

. મુ. ડભાઇ [સ્ટેશન ડમાર્ધ] જક્ષો વડાદરા (ગૂ.) શ્રી વિજય દેવમુર જૈન સંધ તરફથી બાલચંદ જેઠાલાલ પ્રમુખ, સ્વાગન સમિનિ

🛨 કાર્યક્રમ 🛨

સ્થળ : હભાઈ

સ્થાન : શ્રીમાણી વાગા

તિથિ: કાગણ વદિ ७]

તા. ૭-૩-૫૩ શનવાર

સમય થપારના : ૧–૩૦ શ્રી પ–૩૦

૧. મંગલાયરસ અને પ્રાર્થના

ર. શ્રી યોગાવિજયજી ગ્રાન–સાહિત્ય પ્રદર્શનનું ઉદ્ઘાટન.

ટ. સ્વાયત પ્રમુખતું ભાષણ, ગેર બાલગંદ એમલાલ

૪. સારસ્વત સત્રનું ઉદ્દેશાટન અને પ્રત્યન

પ સંદેશા વાચન

સત્રના પ્રમુખનું ભાષશ.

विदृद्धवर्थं हाशंनिक विद्वान श्रीभान धियर्थंद्रक (भंजनभी)

છ. નિર્ભંદ્ર વાચનાદિ

સમય રાતના : ૮-૩૦ થી ૧૦-૩૦

૧. જણીતા સંગીતકારા દ્વારા ક્રેપાધ્યાયજીનાં પ્રાસંગિક શુજુ ગીતા અને **ક્રયાધ્યાય** રચિત આધ્યાત્મિક મંદાની રસલ્હાણ વગેરે.

તિથિ : ફાગણ વદિ ૮]

િતા. ૮–૩–૫૩ રવિવાર

સમય સવારના : હ થી ૧૨

ે ૧. સંગલાચર્જા–પ્રાથ્યના

ર. સત્રના અધૃરા રહેલા કાર્યક્રમ

ઢ. સંસ્કૃત વિદ્વાનાની સમા

૪. ઉપા^{ધ્}યાયજીના જીવન ઉપર તથા અદિસા અને સ્યાદ્વાદ ધર્મ અંગે પ્રવચના ને સંસ્કૃત ભાષામાં સંવાદની ઝઘક

સમય બધારના : ૨ થી ૫-૩૦

1. નિબંધ વાચનાદિ

ર. ફિપાધ્યાયજીનાં સાહિત્યના પ્રકાશન અને પ્રચાર અગે વિચાર વિમર્શ

a. श्रांबी अने क्रहेशती।

L SARCIS

પ. આબાર પ્રદર્શન વડોક

* સત્રની કાર્યવારી સુમાપ્ત થયા બાદ પૂ**ં** જેનાચાર્ય વિજય ધર્મસરિજીના મંગલ આશીર્વાદ व्यते ५० मुनि श्री एग्ने।विक्त्यक्टतुं इह्त्रे।धन MANAGARIN MANAGARIAN MANAGARIAN MANAGARIAN MANAGARIAN MANAGARIAN MANAGARIAN MANAGARIAN MANAGARIAN MANAGARIAN M

श्री यशाविजय सारस्वत सत्र समिति

—: સભ્યા :—

ખાલચંદ જેઠાલાલ શાહ
કાઉન્સીલર, ડબાઈ મ્યુનિસિપાલીટી
મંત્રી, શેઠ દેવચંદ ધરમચંદ પેઢી, ડસાઈ
મગનલાલ ગારજાશંકર શાસ્ત્રી સાહિત્યસપણ
પ્રમુખ, દયારામ સાહિત્યસભા, ઠસાઈ
ચંદ્રલાલ હિંમતલાલ શાહ
કાર્યાધિકારી, રમારક સમિતિ, ડસાઇ
હાલાભાઈ નાથાલાલ શાહ
કાર્યાધિકારી, રમારક સમિતિ, ડસાઇ
લક્ષ્મીનાથ ખદરીનાથ શાસ્ત્રી (ખા. એ. એાનર્સ)
નિવૃત્ત મુખ્ય અધ્યાપક, રાજકીય સંસ્કૃત
મહાવિદ્યાલય, વંડાદરા
પ્રા. કેશવલાલ હિંમતશય કામદાર એમ. એ.
અર્યશાસ્ત્ર અને ઇતિહાસ,
મહાવિદ્યાલય. વદ્યભવિદ્યાનગર

ઉમાકાન્ત પ્રેમાન દ શાહ એમ. એ. વડાદરા પંહિત લાલચંદ્ર ભગવાનદાસ ગાંધી ભૂતપૂર્વ જૈન પંડિત, પ્રાચ્ય વિદ્યામંદિર, વડાદરા હૉ. ભાગાલાલ જે. સાંડેસરા એમ.એ. પી.એચ.ડી. અધ્યક્ષ, ગુજરાતી વિભાગ, શ્રી મહારાજા સયાછરાવ વિશ્વવિદ્યાલય, વડાદરા

સાલચંદ નંદલાલ શાહ કાર્યાધિકારી, શ્રો મુક્તિકમલ જૈન માહનત્તાન મંદિર, વડાદરા મંત્રી, શ્રો વડાદરા પાંજરાપાળ સંસ્થા, વડાદરા શાંતિલાલ માતિલાલ શાહ હપપ્રમુખ, શ્રો ય. જે. સેવાસદન, ડભાઈ નાળકુમાર નાથાલાલ મહાતા વછાલ બા. એ; એલએલ. બા. જશુભાઈ મગનલાલ જૈન કાઉન્સીલર, ડભાઈ મ્યુનિસિપાલીડી

અનિવાર્ય સંયોગોને કારણે આપ પ્રત્યક્ષ ભાગ લઇ શકા તેમ ન હો તા આપના સંદેશા પણ અમને પ્રેરણા રૂપ બનશે.

સુચનાએ : ૧. આપ કપારે પધારશા તેની નાધ અગાદયી કરવા ખાસ વિન'તિ છે. ૨. બને ત્યાં સુધી સુવાનું સાધન સાથે લાવવા વિન'તિ. ૩. સ્ટેશન ઉપર સ્વયંસેવકા હાજર રહેશે.

* ડભાઈ આવવા માટે વેસ્ટર્ન રેલ્વેના વહાદરા પાસેના વિજામિત્રી, પ્રતાપનગર સ્ટેરાનથી તથા માયાત્રામથી સવાસ્થી સાંજ સુધી ટ્રેના મલે છે.

ત્રોધ—રહ્યાઇમાં પ્રતિષ્ઠા અને સુત્રની સુક્ષળતા માટે નિમાએલી સમિતિએા અને સબ્યાનાં નામા

શ્રી યેશાવિજય સારસ્વત સત્ર તથા પ્રતિષ્ઠા નિ! તતે કામકાજ અંગે નિમાઐલી સમિતિનાં નાગા

૧–સ્વાગત સમિતિ

- (૧) શેઠ નગીનદાસ દાલતભાઈ
- (ર) રોઠ ક્કીરચંદ મળનલાલ
- (૩) વકીલ છગનલાલ છાઢાલાલ
- (૪) રાાલુ છાઢાલાલ દલસુખબાઈ
- (૫) શાહ દિમતલાલ ળાપુભાઇ
- (૬) શાહ જેઠાલાલ ખાપુભાઈ
- (૭) શાહ જીવબુલાલ ગુલાબચંદ
- (૮) શાહ જીવણલાલ કરતારચંદ

ર-ઉતારા સમિતિ

- (૧) શાહ સું દુરલાલ ત્રિકેમલાલ
- (૧) શાહ ચંપકલાલ ખુશાલચંદ
- (૩) સાહ નગીનદાસ કેરાવલાલ
- (૪) શાહ મળિલાલ ત્રિભાવનદાસ
- (૫) શાહ રમજલાલ ગ્રુનિલાલ

૩-રસાહા ત્રમિતિ

- (૧) શાન્તિલાલ હિંમતલાલ
- (ર) છગનલાલ દલસુખભાઈ
- (૩) જવણલાલ ગુલાગય'દ
- (૪) મુલછભાઇ ચુનિલાલ
- (૫) ચીમનલાલ માતિલાલ
- (૧) નગીનદાસ દાલતભાઈ
- (૭) ખુશાલચ'દ ભવાનીદાસ
- (૮) અંભાલાલ ત્રિભાવનદાસ

૪-મંહેપ સમિતિ

- (૧) સાત્યું કીકભાઈ પ્રગનલાલ
- (ર) સાદ્ધ ત્રિક્મલાલ સવાઇય'દ
- (૩) રાાદ ભાઈલાલ ચ'દલાલ
- (૪) શાહ જયન્તિલાલ ચુનિલાલ
- (૫) સાહ ચ'પકલાલ મુલછભાઈ
- (૬) સાહ મકતલાલ ત્રિકમલાલ

પ–ઉકાળેલા પાણીની સમિતિ શાહ હીરાલાલ નગીનદાસ

ક્-ન્હાવાના પાણીની સ્રમિતિ શાદુ ખાલુભાઇ ગીસ્ત્રરલાલ

૭-૫દરા ન સમિતિ

- (૧) મફતલાલ ક્કીર્ચંદ
- (૧) રમણલાલ નગીનદાસ
- (૩) રમળુલાલ ચ'દ્લાલ
- (૪) રમણલાલ પીતારુપરદાસ

<-પૂજા મતિષ્ઠા કાર્યવાદી સમિતિ

- (૧) સાહ બાલુભાઇ ગીસ્ક્રસાલ
- (ર) સાહુ અમૃતલાલ ઢાહ્યામાર્ષ
- (3) શાહ દીરાલાલ ત્રિભાવનદાસ

નાણાખાતું અને હિસાબખાતું રાહ દાજ્ઞાલાલ નાયાલાલ

शिर्द्रणसारद्रकारद्रकाराज्ञाविवनवर्ष्णा हे ह्री कुक्र विश्व विश्व द्रवानात्र के क्रमना ने देन द्रार्द्र क्षित्र क्षित

न्यायविद्यारद न्यायाचार्वं महोवाध्याय श्रीयशोविजयजी महाराजना हम्नाक्षर (जेम्बृम्यानीराय)

[सुनिधी पुण्यविजयजीना संप्रदर्माधी]



બીજ લાકતે: ક્રી. રમણલાલ પી. શાર્લ, શ્રી. સુંદરનાલ કી. રાહ્ત, શ્રી. શાન્તીલાલ ^{ત્ર}ી. શાહ્ત, શ્રી. ભાકલાત સા. વસોકર શ્રી. મણિતા, કી. પહેલી લાઈન : શ્રી. નિકમતાર એસ. ઘાર્લ, શ્રી. હીરાતાર છે. પારેખ, શ્રી. હેરછ્યા ેસી. પારેખ, શ્રી. હેરસાન એમ. માસ્તર શ્રી. હેન્ટમાર્ક સી. ઘાર્લ, શ્રી. નગીનદાસ કે. દરેગામવાળા, શ્રી. હગનથાન ડી. ઘાર્લ, શ્રી. રમશિકલાન દાહ, મેવકાર, . ક્રમાીકક્ષ્ય શી. ક્રીયતલાલ ખી. શાક્ષ, શ્રી. ગેટાલાલ ખી. હાક્ષ, શ્રી. હવણનાન છે. શાક્ષ. ક્રી. શ્રાપ્તિક ખેત્ર. લાક્ષ, ત્રી. ખાલ્યક જે. શાક્ષ હાર્લ, શ્રી. કીફમાર્ક એમ. હાર્લ, શ્રી. સાન્તિલાલ એમ. સાહ, શ્રી. મધુરકાસ એન. હાર્લ, શ્રી. મગનવાલ કી. રામપુરાવાના, (સ્વાગત પ્રકુષ્મ). શ્રી. ચંદુલાલ એમ. શાર્મ, શ્રી. અસુમાર્લ એમ. ગૈત. શ્રી. હાલામાં મેન. શાર્મ, શારામ, શારામ, શાર્મ, શાર્મ, શારામ, શ્રી. અંષ્યાસાસ ટી. શાર્જી, ત્રી. સાડીસાંદ સી. શાર્જી, શ્રી. મગતનાર સી. શાર્જી

યોજ લાદ્ય: શી. ભરતવાલ કી. દાક્ષ. શી. ભરતવાલ વેસ. દાક્ષ, શી. જોતિહાસ વેત. દાક્ષ, શી. ભાલચંદળ દાક્ષ. શી. બેલ્પ્યરાહ રી. રાક્ષ, શ્રી. લાઈ.ડાંડ ^કર્યો. સાઢે. શ્રી. સરવાડાંવ રી. સાઢે. શ્રી. એક્ઝિલાંલ સી શાઢે. શ્રી સંપક્રલાંલ કે. સાઢે.

કો. રમણતાલ સો. શાક

નોંધ-તા. ૧૧-૩-૫૩ના જૈન સા'તાહિક 'પત્રમાં પ્રતિષ્ઠા અને સત્રોત્સવ અંગે પ્રગઢ થઐલા વિગતવાર હેવાલાના ઉતારા અહીંથી શરૂ થાય છે. સંપા•

ડેમાઈના આંગણે, મહાન જયાતિર્ધર જૈન-શાસનના પરમુપ્રભાવક

પૂ. ઉપાધ્યાયજી મહારાજ શ્રીમદ્ યશાવિજયજી મહારાજની મૃતિ'ની ભવ્ય પ્રતિષ્ઠા તથા

શ્રીયશાવિજયસારસ્વતસત્ર મહાત્સવની દબદબાભરી અભૂતપૂર્વ ઉજવણી

દેશના જુદા જુદા સ્થળાએથી આવેલા વિદ્વાના અને અન્ય વક્તાઓએ આપેલી ભાવભરી શ્રદ્ધાંજલિએા

પૂ. ઉપાધ્યાયજના મહાન સાહિત્યના મુદ્રણ માટેની અપીલને સભામાંથી મળેલા આવકાર

પસાર થએલા મહત્વના દરાવા, દેશભરમાંથી આવેલા અભિન દનના સંખ્યાયન્ય સદ્દેશાએ

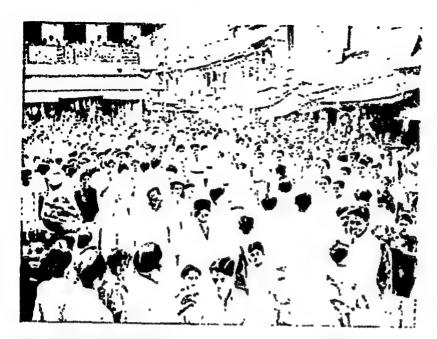
શ્રી યશાવિજય જેન સાહિત્ય પ્રદર્શનના હજારાે લોકોએ લીધેલા લાભ આ નિમિત્ત રહ્યાઈ સથના વશ્સા જ્ના ઝપરાના આવેલા સુખદ અંત

ઉપાધ્યાયજી મહારાજની ભવ્ય મૃતિપ્રિતિષ્ઠા તથા શ્રીયશાવિજય સારસ્વન સત્ર–પૃતિ

રાાયનપતિ અપણ અગવાન અદાવીરનું નિર્વાણ થયા લગ્નમગ આજે અહી હતાર વરસ થયા; એમ હતા એ અહાવીર પ્રસ્તુનું શાયન આજ સુધી અવિચ્છિતપણે જે ચાલ્યું છે અને હવે પછી લગ્નમ ચાલ અહાર હત્તર વરસ સુધી અવિચ્છિતપણે ચાલ્યો ને સાયનમાં થયેલા ને થનારા ત્યાંથી વેસવી ને ચીતાર્થ આયાર્થ-ક્રિયાધ્યાયદિ મહાયુર્ણોને આભારી છે.

કામણ સત્રવાન મદાવીજેવના શાયનમાં સિલ્મેન રિવાકરજ, શ્રા જિનસદરણીજી, શ્રી હરિસ્ટર્મારજી, શ્રી હેમચંદ્રમૃત્રિક શ્રી હેમચંદ્રમૃત્રિક શ્રી હેમચંદ્રમૃત્રિક શ્રી હેમચંદ્રમૃત્રિક શ્રી હોમચંદ્રમૃત્રિક શ્રી હોમચંદ્રમૃત્રિક શ્રી હોમચંદ્રમૃત્રિક શ્રી શ્રી શ્રી હોમચંદ્ર તાર્કિક શિરોમિયુ વાસકો મર સેરોપાયના શ્રીમદ્ર ચરેલિજન કે જેએનિ લધુ હરિલ્લ દિનાલ હેમચંદ્ર, અને કૃચોલી શાસના બિરૂરા પ્રાપ્ત થયાં હતાં, તે પુન્નશ્લીક યુરૂરના નામથી જેન સમાજ મૃત્ય જ અપિત્રિન છે તો જેનેનર સમાજ એ પ્રદર્શના કરતા કરતા કરતા કરતા શ્રી કરતા સમાજ સે પ્રદર્શના છે તે

વિ. સં. ૨૦૦૫ના સાપ્રસર સુદ્ર ૧૧ ના બંગળ દિવસે અબૃતપૂર્વ કપદ્માન તપની યાદયાર આરાધના પ્રયુપ્ત મું અર્જ ભાષખશા ધાનીકા શેરના ચંડપમાં દનદા માળમાની દાવદી વચ્ચે આયાવે શ્રી વિજયપ્રનાપમુશ્છિ, આ, શ્રી વિજયવધાં મુસ્છિતી અધ્યક્ષનામાં મૃતિપ્રિતર શ્રી યુક્કવિજયછતી પૈરવાંથી મુંબાર્ટની ૨૦ સંસ્થાસ્ત્રાના આપણ નીચે એ દિવસના એ પુત્રન કુપાધ્યાયજીના ગુણાનવાદ કુત્રન इन्त्रांथा न्याःथा के केन अवन्ता न्यानिर्दार सदायुर्गना नामधी, क्षांधी अने अवन्धी समान પરિચિત થરા આવ્યા. કપરાંત તેઓથીના સ્ટર્બાસ્ટ્રીય હેરાઈ પૃકાંય વિજ્ઞણન એ સદ્ધિના અરુણપાદુકાવાળા સ્પૂર્મના જર્જોદાર કરવા સંબધા, તે મહાયુક્ષનું જીવનયસ્ત્રિ તૈયાર કરવા સંબધા અને એ બદાબાનું સાહિત્ય પ્રકાશન કરવા સંબધી અનેક બંગલરય વિચારણાઓ શકે. યુન્ત મૃતિરાતોએ કુપટેશ દ્વારા ખૂબ પ્રાત્યાદન અપ્યું, શ્રીમ'ન અલેગાનાએ સામનના એ કુપકારી મહા<u>પુર</u>ાના સ્મારક કરવા માટેના કુપદેશ શ્રીસી અને તેમ અવસરે સત્રમાં સંક વન્યતું મુંદર મુંટ થતાં શેર જીવનલાલ પ્રતાપત્રી, શેર ભાઈએક નગીનબાઈ, એક મૂળચંદ વાડીશાલ, એક મત્રનશાલ મુણચંદ એક ફેડેલ્સંદ ઝવેરચંદ, શાદ ધીરુ/શાલ ટાકરમી, જા. દીપચંદ મગનલાલ વિની એક સ્પારક સ્મિનિ નિમવામાં આવી, સ્મારકર્યામનિ અને દંમાઈના સંધ અન્તેના સદકારથી છર્જુકાર ને જીવનચરિત્ર તૈયાર કરવાના નિર્ભય પૈછી સ્યૂસ-સ્તૃપના જર્મોદારતા નિર્ભુય અથલથી પ્રથમ મુકાયા. વિ. મે. ૨૦૦૭ શાનણ સુદિ ૧૩ના ગુસ દાન્સે ડેસાઇમાં આંગાય શો અમૃત્યુલિયા અના અના સ્તામાં કરા સ્થિત શેર વાડીશાલ અત્રસુપ જે. પી. (મુંબઇ) ચારકાપણ્યાળા મુકાળુ આત્માના શુમ લ્સ્તે પૂર્વ જ કૃત્યાદ વચ્ચે ક્રિયારાષ્ટ્રનું મંત્રલ વિદ્યાન થયું. શાશોએ કે ૧૫૦૦ ની સમાવન નહેર કરી અને દેખાઈના શોક્ય પણ તેમના સ્યારક અંદે લસ્સવ ર, ૨૦૦૦ ની કીય તે વખતે કરી. સ્થાપત્ય-કળાપ્રેમી ખુનિશ્રી ચર્જાવિકાયજીની સ્થના મુકાય મનાસ્ય પ્લાન ચીઓ નંદશાય ચુનીશાય માંબપુનાએ દેવાર કર્યો અને બચ્ચ મકરાણાના આર્લ્યનું જ ગુરમસિ મુંદ્ર રીતે તૈયાર થતાં, એ ગુરુપદિસ્થાં તૈઓશીની મીનીને ખિરાજભાન કરવાંના ગુલ નિર્ણય થંધા, હિ. સં. . ૨૦૦૯ કારણ રહિ ૭ તે ઋનિવાગ્તા શુધ દાગ્ય, એ મંત્રલકાર, પાંટ તમી કરવામાં આવ્યા.



શ્રીયરોાવિજય સારસ્વતસત્રાત્સર પ્રસંગે, પૃ. ઉપાધ્યાયછ શ્રીયરોાવિજયછ મહા-રાજની મૂર્તિની પ્રતિષ્ઠા નિમિત્તે એક ઉત્સવ પણ રાખવામાં આવેલા; તે પ્રસંગે નીકળેલા વરધાડાનું દરય.



ધાયરાયિજય સાસ્ત્વતસત્રનું વિ. સં. ૨૦૦૬ ના કામલુ વર્ડ છ-૮ તા. ૭-૮/૩/પટ. રાજ થયારના દેશ વાંધ વલ્લરા માયુંમાના વલ્લરામાં. ઉદ્દ્વાટન પ્રસુખ વરીકે પધારેલા મુંબદીરપાલાંજ કેટના જ જાંવન પ્રસુધમુખ સુરચંદ બદામીના હરતે ઉદ્ધાટન વધું તેનું દ્રસ્ત. આ છબામાં પ્રસુખમાં પાનાનું ઉદ્ધાટન ભાષણ કરી રહ્યા છે



સુત્રનું કુદ્ધારન થયા ભાદ શ્રીયકાહિત્રય સાસ્ત્રસ્થરતાગત સ્પ્રિપિક ક્લાઇના સ્ત્રાગત પ્રયુખ શા. ભાદચંદ જેકાબાઈ એ, સત્ર કેપર પ્લારેલાએકને આવ-કાર આપનું સ્ત્રાગત પ્રવચન કરી રહ્યા છે : ભાગુમાં સત્રસ્થિતિના મંત્રીઓ શ્રીનાગકુમાર મકાની તથા શ્રીજસુત્રાઇ જૈને બેકેલા છે.



શ્રાંગશાવિભાગ સારસ્વવસ્ત્રના પંત્રેલા દિવસના એક્શાં સ્ત્રના વસ્ત્રયના પ્રમુખ, વર્ક, સંશ્લાસ, ન્યાંગ્રનાકર, દાર્શનિક વિદ્વાન શ્રાંક્ષ્યાચંદ્રજી પંત્યથી દત્તતવેરા માળુંસાની વિશાળ દઃજરીમાં દાર્શનિક્ષ્કશામાં, જેતરકાર દેલીમાં વિદ્વનાબંધુ શાર્ણભુક પ્રવચન કરી રહ્યા છે.

મુનિવર શ્રી યશાવિજયજની મગલકામના, અને ' શ્રીયશાવિજય સારસ્વત સત્ર 'ની ઉજવણી કરવાના નિર્ણય

हेवम हिरा है अरुभ हिरामां, हेवाधिरेव है अरुहेवनी मूर्तिनी प्रतिशाना युएय प्रसंगे महोत्सव, पूल, માંગી, પ્રસાવનાદિ લક્તિપ્રધાન કાર્યો તા દરવખતે થાય છે, અને તે અવશ્ય કરવા યાગ્ય છે પરંતુ આવા શાસનના શચુગાર, ધુરધર દાર્શનિક વિદ્વાન અને તાર્કિકસિરામણિ મહાપુરયના લક્તિ પ્રસંગે તાન-यारित्रात्सवनी डिजवणी थाय, ते। कैन सभाज डिपरांत कैनेतर समाजमां के महात्माना छवनने। प्रधार વધુ વિસ્તરવા પામે; એવી શુભ કામના સાહિત્યપ્રેમી મુનિવર શ્રી યશાવિજયછ, જેઓ શ્રી જન્મે ક્લાઇના જ છે તેમના હૈયામાં જન્મી. વર્ષો થયાં પૂ. હપાધ્યાયજીને જગતના ચાકમાં રજૂ કરી, તેમની મહત્તા અને વિક્તાને જગત એાળખતું થાય અને તેમની અમર સાહિત્ય કનિઓના લાલ પ્રજા ઉઠાવતી રહે એ માટે કંઈક કરવાના સેવેલા ભૂતકાલીન સ્વપ્તાને મૂર્તરૂપ આપવાની તક ઉભી થઈ, તેઓશીના વડીલ ગુરુદેવા આ. શ્રીમદ્દ વિજયપ્રતાપસરિજી મ. તથા આ. શ્રીમદ્દ વિજયધર્મ સરિજીએ તે માટે શબ આશોર્વાદ પાદવ્યા અને અન્ય જૈન, જૈનેતર વિદ્વાન મહાશયા તથા ગૃહસ્થાએ પણ એ મુંદર ભાવનાને ખૂબ જ વધાવી લીધી. અન્ય જૈન શ્રમણાએ પણ દાર્દિક ટેકા આપ્યા. પરિણામે ' શ્રી યશાવિજય સારવવ સત્ર ' પ્રનિષ્ટા મહાત્સવ સાથે જ ઉજવવાના નિર્ણય લેવાયા. સાથે સાથે સમય થાડા અને અતુકૃળ સાધનાના અભાવે, એક ન'નકડા સંમેલન દ્વારા પૂ. ઉપાધ્યાયજીની મહાનના અને તેમના અક્ષરદેદના ગુજરામ કરવા અને તે દ્વારા જાહેર જનતામાં ઓટ્ટાલના ઉભા કરવા એટલી ટ્રંકી મર્યાદા સત્ર ઉત્સવની નક્કી કરી અને તરત જ અવિધિ-સરતી એક મીટીંગ વડાદરા શ્રી મુક્તિકમલ જૈન માહન ગ્રાનમંદિર ના પુસ્તકાલયના હાલમાં પૂ. મુનિશ્રી યશાવિજયજીની અધ્યક્ષતામાં ખાલવામાં આવી, જે પ્રસંગે જૈન જૈતેતર વિદ્વાતાએ દાજરી આપી અને ક્રેટલીક ચર્ચા વિચારભાને અંતે અગાઉ પાટણમાં શ્રી દેમસારસ્ત્રન સત્ર ઉજવાએલું ઉષાધ્યાયછ પણ શ્રી હેમચંદ્રાચાર્ય જી જેવા મહાન હતા એવા આ પણ હતા એવા સમાન ખ્યાલને ઉમેર કરવા પ્રસ્તુત ઉજવણીને ' શ્રીયરા વિજય સારસ્વત સત્ર ર એવું નામકરેશ કરવામાં આવ્યું. અને તે જ વખતે ચર્ચા-વિચારણા ખાદ હબાઈ, વડાદરાના જેન જેનેનર વિદ્વાના તથા કાર્યકરે.ની એક સમિતિ નીમાઈ.

સત્ર સમિતિના સભ્યાની નામાવલિ.

શાહ ભાલચંદ જેઠાલાલ (કાઉન્સોલર ડબે ઇ મ્યુનીસીપાલીડી મંત્રી, રોક દ્વેચંદ ધરમચંદની પેરી, ડબોઇ) મગનલાલ ગીરજાશંકર શાસ્ત્રી સાહિત્ય ભૂતણ (પ્રમુખ, દ્વારામ સાહિત્ય સમ:-ડબોઇ) શા. ચંદુલાલ હોંમનલાલ (કાર્યાધિકારી, રમારક સમિત ડબોઇ) શા. ડાલાભાઇ નાયાભાઇ (કાર્યાધિકારી, રમારક સમિત ડબોઇ) શા. ડાલાભાઇ નાયાભાઇ (કાર્યાધિકારી, રમારક સમિત-ડબોઇ) લક્ષ્મીનાય બદરીનાય શાસ્ત્રી (બી. એ. એનર્સ) નિરૃત્ત મુખ્ય અધ્યાપક, રાજકીવ સંશ્કૃત મહાવિદ્યાલય-વડાદરા) પ્રાે. કેશવલાલ લોંમનલાલ કામદાર એમ. એ. (અર્થશાસ્ત્ર અને અને ઇતિહાસ મહાવિદ્યાલય-વડાદરા) ઉમાક ન્ત પ્રેમાનંદ શાહ (એમ. એ. વડાદરા) (ર) પંડીન લાલચંદ્ર ભગવાનદાસ ગાંધી (ભૂતપૂર્વ જેન પાંડત પ્રાપ્ય વિદ્યામાંદર વડાદરા) (ર) ડો. ભાગીલાલ જે. સાંડેસરા એમ એ. પાં. એચ. ડી. (અધ્યક્ષ, ગુજરાતી વિભાગ, શ્રી મહારાજ સ્યાજીરાવ વિભવિદ્યાલય વડાદરા) લાલચંદ નંદલાલ શાહ (કાર્યાધિકારી, શ્રી મુક્તિકમલ જેન મેલન ગાનમંદર-વડાદરા નથા મંત્રી-શ્રી વડાદરા પાંજરાપાળ સંસ્થા) શાન્તિલાલ માનિલાલ શાહ (ઉપપ્રમુખ શ્રી ય. જે. સેતાસદન-ક્લોઇ) (૩) નાગકુમાર નાયાલાલ મકાનિ ખી. એ. એલ. એલ. બી. (૪) જરાભાઇ મગનલાલ જેન (કાઉન્સીલર, ડબોઇ મ્યુનિસીપાલીડી)

विन'तिरूपे अने स्थणे पाःवेंकां परिपत्रे।

અપને સમિતિના એક, જે, ત્રણ ચાર અંકવાળા મંત્રીઓની સતીધી એક પરિષત્ર તૈવાર કરવામાં ૧૪

अढारभी सहीना भणर ज्यातिर्धर

[લેખક:—શ્રીયુત માહનલાલ દીપચંદ ચાહસી]

૧. સંસારી જીવનની ઝાંખી :—

ગુજરાત પ્રાંતના કક્ષાલ તાલુકા નજીકના 'કનાડું' નામના ગામમાં આપણા આ મહાન જ્યાતિષ્ઠ જન્મ્યા ત્યારે કેવાં ગ્રહા હતા અને કયું ચાઘડિયું કે કયું નક્ષત્ર હતું એ ભાજુવાનું સાધન હજ ઉપલબ્ધ થયું નથી, છતાં ભાવિ કારકિર્દીના માપે માપતાં એટલું તે<u>ા</u> વિના શંકાએ કહી શકાય કે આ કુળદીપકના જન્મકાળે શુભ મુહૂત અને શુભ ચાેગ વર્તા હતા. પિતાશ્રી 'નારાયણ' અને માતુશ્રી 'સાલાગદે' એ પુત્રનું 'જસવંત 'નામ રાખી આનંદિત અન્યા હતા. શાડાં જ વર્ષોમાં અંધવળેલડીરૂપે જસવંતને 'પદ્મસિંહ ' મળ્યાે. વ્યવહારી જીવન જીવતાં આંનાનુકડા કુટુંળમાં ઉછરનાર ખાલુડાંએાને દેવદર્શન અને ્રગુરુવંદનના સંસ્કાર ગળથૂથીમાંથીં્મુજ્યાં હતા. એમાં પણ માતા–પિતાના સંસ્કાર ઉપરાંત પૂર્વ ભવના પુષ્યથી જસવ તેની સ્મરણુશક્તિ ખાલ્યકાળથી જ વધતી ચાલી હતી. 'સુજસવેલી ભાસ 'માં જેની નાંધ નથી છતાં જે લાકવાયકા પૃજ્યશ્રી ભુક્રિસાગરસૂરિજી અને સાક્ષરવર્ય શ્રીયુત માહનલાલ દલીચંદ દેસાઈ પાતાના નિખધામાં આલેખે છે- 'વરસાદના કારણે માતા ઉપાશ્રયે ન જઈ શક્યાં અને 'ભક્ષ્તામર સ્તાત્ર '્ન સાંભળી શક્યાં, પણ આળક એવા જસવંતે એ સંભળાવ્યું.' એમાં તથ્ય હા કિંવા ન પણ હા, છતાં વર્ષોના વહેવા સાથે યશાવિજય સુનિ ંખન્યાં પછી જે સાધના જસવંતના આત્માએ કરી છે પ્રજ્ઞાના જે ચમકારા દષ્ટિગાચર થાય છે, એ જોતાં કહેલું જ પર કે, 'પુત્રનાં લક્ષણ પારણા-માંથી જણાય ' એ ગુજરાતી કહેવત અક્ષર્શ: સત્ય લાગે છે. જસવંત જેવા સંસ્કારી ખાળક માટે ભક્તામરનું રટલુ અસંભવિત ને ગણાય. વિહાર કરતાં શ્રી નયવિજયજી મહારાજ કુજુગેર (પાટજુ સમીપના) ગામથી 'કનાહું' પધાર્યા. તેએાની વૈરાગ્યભીની વાણી શ્રવજી કરવાના ચાગ ઉપરાક્ત ખંધવજોડીને સાંપડ્યો. ઉભયના હૃદયમાં સંસાર છાડી દઈ સં<mark>યમન</mark>ા માર્ગે સંચરવાનાં ઝરણ ફૂટવા માંડ્યાં. એની જડ દઢપણે ઊંડી ઊતરવા માંડી. સંતાકુકડીના આશ્રય લીધા વિના ખુલ્લા અંતરે મનની વાત વડીલા સમક્ષ વડીલ ભ્રાતા જસવંતે મૂકી. પદ્મતિંહે એમાં સાથ પૂર્યા. ગુરુઉપદેશથી ધર્મારહસ્યની પ્રાપ્તિ જેમને થયેલી છે એવા માતપિતાએ કહ્યું કે, 'તમારું કલ્યાજુ થાએા, ગુરુ મહારાજ સાથે વિહારમાં થાડા સમય ક્રેરા, તલવારની ધાર સમા ચારિત્રપાલનના અભ્યાસ પાડાં અને અંતરના અવાજ પારખા. સાચા સાધુ ખના.

પૂજ્ય ઉપાધ્યાયજનાં જવન દૃશ્યા

પૂન્ય ઉપાધ્યાયજીનાં જીવન દરયો પણ આ પ્રમંગે ભર્ચના જાણીતા કલાકાર ગાવિદભાઈ પાસે તાતકાલિક ભવ્યરુપે તૈયાર કરવામં આવ્યા. એક દરયમાં પૂ ઉપાધ્યાયજી, તેમના ગુરુજી નયવિજયજી મહારાજ સાથે અમદાવાદના ઉપાશ્રયમાં એકા છે. રોક ધનજી સુરા, પૃ. યશાવિજયજીને ન્યાયશાસ્ત્રના અભ્યાસ માટે કાશી માકલવાની ગુરુદેવને વિનાંતિ કરે છે. અને તે કાર્યમાં ભણાવનાર ધ્યાકાણ પંડિતાને જે કોઈ આપવું પડે તેના કુલ ખર્યા કરવાની ઉદાર ભાવના વ્યક્ત કરે છે તે પ્રમંગ વનાવામાં આવ્યા હતે.

ખીજું દશ્ય

બીજા દશ્યમાં કાશી–ગંગા કિનારે પૂ. યશાવિજયજી, શુતદેવી સરસ્વતીનું ધ્યાન કરે છે. અને શુનદેવી–સરસ્વતી પ્રસન્ન થઈને વરદાન આપે છે. તે ભાવ રજૂ કરાયા હતા.

ત્રીજી' દશ્ય

ત્રીજ દશ્યમાં કાશીમાં, સેંકડા વિદાન-પંડિતાની સભામાં, વાદવિવાદ પ્રસંગે વિજય પ્રાપ્ત કરનાર શ્રીમદ્ યશાવિજયજીને સસાના મુખ્ય પંડિનરાજ "ન્યાયવિશાસ્દ"નું ગૌરવવંતુ ભિરુદ આપતાં નજરે દેખાય છે. અને તે દશ્ય ભેગું જ પૂ. ઉપાધ્યાયજીને 'ન્યાયાત્રાર્થપદ જે કારણુથી મદયું, તે બતાવનાં રા પ્રાંચાના જથ્થા બતાવી, પૂ. ઉપાધ્યાયજી ગ્રન્થરચના કરવામાં તહીન બન્યા છે તે બતાવ્યું હતું. આ દશ્યા વડાદરાથી લાવવામાં આવેલ કલાત્મક કમાના ને મંડપ વચ્ચે ગાઠવવામાં આવ્યા હતા.

મ'ગળઅભિષેક વિધિ

ફાંગણું વિદ ૨ ના રાજ શ્રી શામલા પાર્ધ નાયજના દેરાસરે શ્રીયુત વ્યાલચંદ જેઠાલાલ તરફથી શ્રી ગિરનારજી મહાતીર્ધ ના સુંદર ૫૮ આરસમાં તૈયાર થયેલા, તેના અજ્ઞિયેકની ક્રિયા શ્રીયુત છવણુંગાઈએ પૂજપ અત્યાર્ય શ્રી આદિ મુનિરાજોની હાજરીમાં કરાવી અને પૂજા આંગી વગેરે ધર્મ કાર્યો થયાં.

ગુરુમૂર્તિ વગેરેના પવિત્ર અભિષેક

ફાગણ વિદ ૪ ના રાજ સવારે ચતુર્વિંધ સંધ સાથે પાદુકાએ વાજતે ગાજતે જવાનું થતાં ત્યાં પૂત્ય ઉપાધ્યાય યશાવિજયછતા ગુણાતુવાદ આચાય' શ્રીપ્રતાપસરિછ તથા ધર્મસરિછ આદિએ કર્યા, ખેપોરે શ્રી શામલાછ દેરાસરે ધરણેન્દ્ર તથા પદાવતીદેવીની અભિષેક વગેરે ક્રિયાએ કરવામાં આવી. ફા. વ. ૫ ના રાજ સવારે સકલ સંધ સાથે પાદુકાએ જવાનું થતાં ત્યાં પૂ. શ્રી ઉપાધ્યાયછ મદારાજની નવી મૃતિં તથા ધ્વજદંડ—કળશ અને દરેક ચરણપાદ્દકાના અભિષેક કરાવવામાં આવ્યા. અભિષેકની વિધિમાં પૂ ઉપાધ્યાયછની મૃતિં ભરાવનાર કંસારા શ્રી જસભાઇ મગનલાલ ડમોક્વાલા, ઉપરાંત ડા. શ્રી લીલા-ભાઈ વગેરે ઉદાર આત્માઓએ સારા લાભ લીધા હતા. અભિષેકવિધિ પૂર્યું થયા બાદ શામલાછના દેરાસરે ધરણેન્દ્ર પદ્માવતીની પ્રતિશ કરવામાં આવી હતો. અને જપારે પાતાની સપુત્રી બાલકમારિકા જાસદબ્હેનની દીક્ષા નિમિત્તે પાનાચંદ બાપુસાઈ વડજવાલા તરફથી ઘણા કાકથી પૂજ—આંગી—પ્રભાવના—ભાવના વગેરે ધર્મ કાર્યો થયા હતા. દરેક પ્રમંગે ક્લોકિતી જેન જનતા કાશ્રા ભાગ લેતો હતી.

દમદબાભર્યો ભવ્ય વસ્ધાડા

કાંગણ વિદ ક સવારે રૂપ ઇન્દ્રધ્વજ ચોદ સ્વ\નની હણમારેલ સુંદર ગાડી, ટકારખાનું. પૂત્ય ઉપાધ્યાયજીની છત્રી પધરાવેલ વિક્ટોરીયા, વરસીદાન દેનાર દીસાર્યા ક્લસ્ક્લ્યેનની માડી, બીન્દ પણ અનેક સંખેલા, સાનાયાંદીના બવ્યર્ય અને વડાદરાનું સુપ્રસિદ્દ મીલીટરી ખેન્ડ વગેરે સામર્સાયી દજદબા-ભર્યો વર્ષોડા નવવાગે શીમાળાવાગામાંથી ચડીને ટાવર, વડાદરીમાગેળ યર્ધ ને ૧૨ વાગના ઉત્તરો હતે. શહેરતા દરેક રસ્તાઓ તેમજ આજીપાજીના મુકામાં હજારા પ્રેક્ષકાયી ઉત્તરાઇ ગયા હતા. વરધાડામાં પ્ આચાર્ય શ્રી પ્રતાપસાર મહારાજ, પૂ. આણેકસૃરિ મહારાજ, પૂ. શ્રીજ'શુસ્ર્રિજી, પ્. શ્રીધર્યસૃરિજી અને પૂ મુનિ શ્રી યશાવિજયજી વગેરે વિશાલ મુનિમંડલ શહેર તથા ખહારગામના આવેલા સાજનાના અત્રભાગમાં શાબી રહ્યું હતું. તે જ પ્રમાણે પ્રસુના રચના પાજળ વિશાલ સાધ્યો મંડલની આગેવાની નીચે ચાલતું નારીક'દ ધર્મ'ગીતાયા શહેરના રસ્તાઓને ગજાવી રહ્યું હતું.

થી સિદ્ધચક્યન્ત્રનું ભવ્ય **પૂજન**

ળપાર યુરોવારિકાના પાદુકારયાને શાં જેઠાલાલ ખુરાલ નરફ્યી સિદ્ધ લગવંતનું મરાપૂજન રાખવામાં આવ્યું હતું. તે અગે વિવિધ પ્રકારના અનાજ અને રંગળરંગા ગાખાયા સાના-ચંદીના વરખ છાપેલું નવપદછતું મુંદર મંદળ શ્રી હીરાલાલ છવાવાલ તથા શ્રી મુંદરલાલ વગેરે ભાઈ ઓએ ખનાવ્યું હતું. જપોરના સુરતવાળા શ્રી ભાલુભાઈ એ વિશિષ્ટ વિધિવિધાન સાથે પૂજન શરૂ કરાવેલું. જે અવસરે પૂજ્ય આચાર્યાદ મુનિવરા, સાધ્વીજી મરારાજો તેમજ વિશાલ શ્રેલસભુદાયની લાજરી ઉપરાંત સુરતના માલનાલ પાનાચંદ ખંજરીત્રાલા, રયાનિકના શ્રી મૂલજીમાઇ તથા શ્રી મુંદરબાઈ વગેરે સંગીન કારા પૂજા લખ્યાવતા હોવાયી ખૂબ જ આનંદ આવ્યો હતા. અને છેવે લાહુની પ્રભાવના ચઈ હતી. નાગહાલવાલા શા. છાટાલાલ તથા શા. માનિલાલ તરફ્યી તે દિવસે સ્વામિવલ્સલ કરવામાં આવ્યું હતું.

પ્રસુખાતું આગમન અને સત્કાર

જે મંગળ કાર્યા માટે મહિનાએ થયા તૈયારીએ ચાલનો હતો, અને જે મહાત્સવના ખૂબ જ ધામધુમ ને ઉત્સાહથી આરંભ થયા હતા તે મંગલ કાર્યાના સુવર્ણ દિવસ કા. વ. ૭ સનિવારના હતા. આજે જેન સંધમાં દરેકનાં દેયાં હર્ષથી હસરાતાં હતાં. જાણીતા શેઠ પુર્યાત્તમ સુરચંદ ધાંમધાવાલા, પં. શ્રીમાન ક્ષ્યરચંદ્રછ કા. વહિ છઠ શુક્રવારની સાંજે તથા સાતમના સવારે જણીતા જેન આગેવાન રોઠ જીવતલાલ પ્રતાપસી તથા શેઠ વાઠીલાલ ચત્રબ્રુજ તથા બદામી સાંહેબ પ્રસન્નમુખન્નાઇ આવી પહોંચના હંમાઈ રહેશને હારતારાથી સતકારવિધ થયા બાદ શ્રીમાળાવાગામાં આવતાં જેને એન્ડે સલામાં આપી હતી.

મ્મા પ્રસંગ મુંબઇથી ગ્રેંડ કેશવલાલ કોલાચંદ, પ્રાપ્યુજીવનદાસ ગાંધી, માદનલ:લ દાપચંદ ચાેક્સી, વલસાડવાલા અઢુસાઇ, ગ્રેંડ હીરાબાઇ નગીનદાસ સુરતવાલા, ગ્રેંડ સાંદળચંદ ઘડીઆળી સુરતવાલા, વિ. અગ્રગણ્ય મહાતુભાવા ને કાર્યંકરા સાતમની સ્વારે પધારતાં કાર્યંકરાએ તેમનું પણ સ્વાગન કર્યું હતું અને સંધના દર્ષમાં વૃદ્ધિ થર્ધ. વ્યાગે પૂ. હપાધ્યાયજી મહારાજની મૃનિને નવાન તૈયાર થયેલા શુર્માદિરમાં ખિરાજ્યાન કરવાના (પ્રતિષ્ઠાના) મંગલ દિવસ હતા, સમય થતાં પૃ. સ્થાયાર્થ શ્રી વિજયપ્રનાપસરિછ, પૂ. આ. માંગુકસાગરસૂરિછ, પૂ. આ. વિજયક્ષમંત્રુરિછ, પૂ. આ. વિજયજંશુયુરિછ, પૂ. સુનિશ્રી યશાવિજયંજી, શતાવધાની મુનિર્ધા જયાનંદવિજયજી સ્માદિ મુનિવરા સાથે વાજતેમાજતે જયનાદા ગળવતા સી ઢાઇએ સ્થળ પહેલિયા, આપ્યાય બર્ગાએ અને વિશાલ મંડપ હન્ળરા માબુસાયા ચોકાર **લ**રાઇ ગયા. પૂ. આચાર્ય'શ્રી તથા પૂ. મુનિર્શા ધરોાવિજયજીએ ઉપાધ્યાયજીનું જેન સાસનમાં શું સ્થાન હતું તે ઉપર સુંદર ઋખ્દામાં ખ્યાલ આપ્યા બાદ, મંગલ ગુરુમૃતિન બિરાજમાન કરવાની ઉજીરામણી શરૂ થઇ છેવટે ગતવર્ષમાં તતન ગુરુમંદિરતું શિલારાપણ કરનાર પુન્યવાન રોડ વાડીલાલ ચત્રભુજે રા. ૧૧૧૧ના ચઢાવામાં વ્યાદેશ લીધા, ખીજી પાદુકાઓ તથા ધ્વયદંદ, કળશ વગેરેના વ્યાદેશ પણ વ્યપાયા અને શુલલએ લંટાનાદા અને ઉપાધ્યાયજીના જયનાદાની પ્રચંદ દ્યાપણાએ વચ્ચે શ્રીમદ્ની ભગ્ય અને મંગળ મૃતિની ખ્ય જ ઉદ્યાસથી પ્રતિષ્ઠા કરવામાં આવી. પુ. આચાર્ય મહારાજ્યેએ તથા યુનિશ્રી યશાવિજયજી વિગેર धनिरालंको वासक्षेप धर्मा व्यते प्रशावना सर्ध चटु हार्ध वाशतिमालते श्रामसाङना देशसर सामे શ્રી યુકોાવિજયુછ જેન ત્રાનમંદિરમાં ગાહવાએલા સુંદર—સાહિત્ય–પ્રદર્શનના ઉદ્દ્વાટન સમારંભમાં આવી

પહેંચ્યા. આત્માનંદ ચાકના સભામંડપ મુંબઈવાલા શેઠ જીવતલાલ પ્રતાપસી, શેઠ વાડીલાલ ચત્રબુંજ, શેઠ પરસાતમદાસ સુરચંદ, પ્રસન્નમુખબાઇ બદામી, સુરતના શેઠ હીરાબાઇ નગીનદાસ, હા. સાંકળચંદ ધડીઆળી તથા માહનલાલ ચાકસી તથા અમદાવાદ, વડાદરા, ભર્ચ, શીનાર, પાદરા, આલુબાલુના ગામાથી આવેલા સેંકડા આમંત્રિતા તથા સ્થાનિક આગેવાનાથી ચીકાર બરાઈ ગયા હતા. ડબાઇની બાળાઓનું મંગલાચરણુ થયા બાદ શ્રી ઉમાર્કાત પ્રેમાનંદ શાહ કે જેઓ ગુજરાતના શિલ્પ-સ્થાપત્યના ઊંડા અબ્યાસી છે અને જેમના આ પ્રદર્શન ગાઠવવામાં સુખ્ય ફાળા હતા, તેઓએ શિલ્પ-સ્થાપત્યની પ્રાચીનતા અને જેન સમાજે સ્થાપત્ય પાછળ અઢળક ધન ખરચીને પ્રભુનકિત માટે ઊબાં કરેલાં ખેનમૂન કલાત્મક મંદિરાની પ્રશંસા કર્યા બાદ, ત્રાનમંદિરના કાર્યકર શા. મગનલાલ હાટાલાલે ધાંગધાનિવાસી શેઠ પુરષોત્તમદાસ સુરચંદબાઇને પ્રદર્શન ઉદ્દઘાટનની વિનંતિ કર્યા બાદ, શેઠશીએ પાતાનું સુંદર વક્તવ્ય રજૂ કર્યું અને પ્રદર્શનનું ઉદ્દઘાટન કરી પૂન્ય ઉપાધ્યાયછના સ્વલ્સ્તાક્ષરાની કૃતિઓનું સોનામહોરાથી પૂજન કર્યું. શેઠ વાડીલાલ ચત્રભુજે પણ સોનામહોરાથી પૂજન કર્યું. શેઠ જીવાબાઇ, મારખીવાલા, સંધવી માહનભાઈ વગેરેએ પણ પૂજન કરી ત્રાનભક્તિનો લાલ લીધા.

મ'ગલ દીક્ષાવિધિ

બીજી બાજી ૧૧ા વાગતાં કુ. જાસુદબ્હેનની દીક્ષાના વિધિ પૂ. આ. શ્રીમદ્ વિજયપ્રનાયસ્રિજી મહારાજે કરાવ્યા ને સાધ્વા યશાભદાશ્રીજી તરીકે જાહેર કરી, સાધ્વા પ્રિયદર્શનાશ્રીજીના હિપ્યા તરીકે જાહેર કર્યાં અને સે કહે માણસાએ વાસક્ષેપ વિધિ કર્યો.

અના પ્રમાણે પ્રતિષ્ટા અને દીક્ષાના મંગલ વિધિ એક વાગતાં સમાપ્ત થયા હતા.

જેની ધણા દિવસથી રાહ જેવાતી હતી, સત્ર એટલે શું ! એની ઉજવણી કેમ થતી હશે ! એનું . કોતુક જનતામાં કલ્પનાના અનેક તરંગા ઊભા કરતું હતું, તે ઉજવણી સાતમ શનિવારે ળપારના ૧ા વાગે રાખી હતી.

સવારના આઠ વાગતાં વડેાદરાની ગાડીમાં અનેક વિદ્વાના, પ્રાેક્સરાનું જૂય તથા સમિતિના મંત્રીઓ, સભ્યા, જેન-જેનેતરા, વડેાદરા યુનિવર્સિટીના સત્તાવાળાઓના હુકમંધી ખાસ સત્રની ઉજવણીમાં ભાગ લેવા આવેલા પ્રાેક્સરા થી દીનુભાઈ શાહ તથા શ્રી જયંત દેકર તથા વલભવિદ્યાનગરથી પ્રાે. શ્રી ફાયદાર તથા પ્રાે. શ્રી ભાગીલાલ સાંડેસરા વગેરે આવી પહેંચ્યા હતા. અને પૂ. ઉપાધ્યાયજની પાદુકા ને નતન ગુરુમે દિરતું નિરીક્ષણ ને પાદુકાવંદન કરી રથળાવલાકન પણ કર્યું.

સત્રતા ભવ્ય પ્રારંભ અને રાષ્ટ્રગાર

સત્રના પ્રારંભ દાંડ વાગે થનાર હતો. જૈન પાદશાળા સામેની રોરીના રસ્તા આ બંડપમાં જવાના હતા તેયા ખરાખર નાકે જ ભવ્ય કમાન નાંખવામાં અત્યા હતી. તેના ઉપર પૂજ્ય ઉપાધ્યાયજીના ઍાર્કલ પેઇન્ટ ફાટા મૂકવામાં આવ્યા હતા અને તેને સુંદર હારથી સુરોાલિત કરવામાં આવ્યા હતા. ત્યાર ભાદ પ્રમુખ, વિદ્વાના અને આમંત્રિતાને સતકારતા ખાડો, ધ્વન્નપતાકાઓની લાઈ ના, કમઃનાથી મંડપ સધીના માર્ગ સુંદર રીતે શણગારવામાં આવ્યા હતા. મંડપના નજીકના ભાષમાં સત્રના પ્રેરક ને ધાન્યક મુનિશી યરોાવિજયજીને અભિનંદન આપતું ખાડે તથા થી યરોાવિજયજી સારસ્ત્રન સત્રના વિશાળ ખાડો જનતાનું ધ્યાન ખેંચતા હતા. મંડપની નજીકમાં મેરાપાધ્યાય શીમદ્ યરોાવિજય નાનયાદિત્રાત્સવનું બાર્ડ રાં.

પાંચ હજારની જનતાની હાજરી

શ્રીમદ્ ચરાવિજયછના પુષ્ય પતાના માતાનું નામ 'સોભારદે' દે:વાયા દે નામતા દરગજો ઇ.તા કરવામાં આગ્યા હતા અને શ્રીમદ્દના પિતાના નામ ઉપરથી સવના મંડપતે 'નામ્યળ 'મંડપ એવું હપનામ આપવામાં આવ્યું હતું. સચની હજવણી માટે નમાફવાલના વિશાળ પરીચણમાં પાંચ લગરની માનવ મેરતી ખેતી શકે તેવા ભચ્ય બંદમ ખોત કરવામાં આવ્યો અને તેને, કેશના અને સુનરાકની પ્લળ-પાકાંઓ તથા પૂન્ય હપાંધ્યાયજીના અર્થ સાથે સંક્રૃત, પ્રાકૃત અને શુંતરાની બાળાના બાધક રેટાંકા, વાક્યો તથા સ્ત્રાગત બાંધો વર્ગેકના સ્રૃંગાંસનોથી શ્રખ્યારવામાં આવ્યો હતા. સંત્રાંકા માટે જુદા વિભાળા પાડવામાં આવ્યા હતા. સર્ત્રોચ્ચ સ્પાને પૃત્ય હપાંધ્યાયજીની લાઇક સાઇઝની બચ્ય આત્રફા તેવી પ્રાકૃતિ માદવામાં આવા હતા. સર્ત્રોચ્ચ સ્પાને પૃત્ય હપાંધ્યાયજીના લાઇક સાઇઝની બચ્ય આત્રફા તેવી પ્રાકૃતિ માદવામાં આવા હતી. સર્ત્રા કેશ કૃત્રફાનું એ ધ્યાન ખેંચની હતી. તેની આવળની કમાન હપર દ્વાધાયજીના નામનું બાંદ શેલ્સફાનું હતું. જે જમીની જીવળવામાં સ્ત્રની હજવણી નીલાળવા પ્રયુરણ સાધ મહારાજીનાની બેદક, બાજુનાં સ્ત્રના પ્રયુપની અને તેની બાજુમાં આયંત્રિત શુદ્ધસાં, વિદાના અને પરિતાનો બેદક રાખવામાં આવી હતી. માદ્યની વચ્ચ વક્તાઓને બાહુવા માટે 'માઇકરાળું સ્ટેન્ડ' ખુદ કરવામાં આવ્યું હતું. સમય થતાં જનતાનાં દેશો પંહ્યન દાર તરફ ધર્મા રહ્યાં હતાં. સ્ત્રનો હજવણીના પ્રારંભ થતાં વિશાળ મંદપ સંપૂર્વ બરાઇ ગયો. પ્રારંભ થતાં વિશાળ મંદપ સંપૂર્વ બરાઇ ગયો. પ્રારંભમાં કરળ સંપીત માન્યર સ્ત્રું કરવાય બાળાઓનું બંગલાચરણ પશું અને સંત્રીનાના બધુર સ્ત્રી રેસાયા. ત્યાર બાદ સ્ત્રાગત પ્રમુખ શ્રી ભાવચંદ જેઠાવાલ શાહ જેઓ અનિ પરિશ્નમથી જનવસ્ત્રન દોવા છતાં તેઓ સમારંભ સ્પર્ધ આવીને પાતાનું બાળબુ કર્યું હતું.

શ્રી બદાસીજના હાથે સત્રતું કૈદ્રઘારન અને પ્રેરક પ્રવચન

સ્વાયત પ્રયુખ પાતાનું ભાષણ પૂરું કરતાં મુંબઇની સ્પાહીકાત્ર કાર્ટનાં જજ શ્રા પ્રયુત્રમુખ સુરચંદ ખદામીને સ્વતું ઉદ્ધારન કરવાની વિનંતિ કરતાં શ્રા બદામીએ તેના સ્લાકાર કરીને, પ્રામ્ટ બિક પ્રવચન કરતાં મળશ્રી તક માટે સાનંદ સ્થાબાદ શાનો સંદર વકતામ રજૂ કરતાં, ઉદ્યાપ્યાય છતાં અર્કોકિક નાનાપાસનાથી તેમને, એક મહાન તપસ્ત્રી તરીક સંબોધીને જેન સમાજને કરળ બહા તપના ચીલે ન ચાલી, જવા સ્થાપળ વધી સ્વાપ્યાય રૂપ તપરવાની ખામીને ક્લાવી દેવાનું ઉદ્દેખાધન કર્યું હતું, શ્રાયદને એક મહાન તપસ્ત્રી તરીક તેમ જ એક સાચા કિયોહારક અને શુદાચાર પ્રત્યક તરીક એાળખાદી એમની વિક્ષાળ દરિતે તથા એક મહાન વિશ્વતિને કચિત માતાંજરિક સર્યો હતો. (શ્રા બદામીનું ભાષણ સ્થાપ્ય સ્ત્રાપ્ય છે.)

પ્યુષ્ધુપ્રુષ્ધુર્ધી અંગલા જેનાથાર્ધા, શ્રમણા, વડાવ્રધાન, રાજકમીચારીએા, અધિકારીએા, લાક્ષ્યુરા, વિકાના, શિક્ષિના અને ભાવિકાના સ*ક્ષ્યાએા

્યાર ખાદ ભારતના તામાંકિત રાજકર્મચારીએ, અધિકારીઓ, યૃતિવર્સિકીઓના પ્રિન્સિયારી, શ્રાક્ષ્મો, વાઇય-ચેન્સેલો, કોર્યજના લિંક્સો, જૈતાયાંમાં, જૈત મૃતિઓ, સાધ્કાછએા, શ્રીમત ફેલોજ-પતિએા, શાલ્સાલાયા, અખવારતા તેલીએા, જૈત પતિમા, જૈત સંસ્થાઓ, જૈતેતર દિશ્હોના વાંગે તરફથી સત્ર કપર સફળના ઇચ્છના આવેલા તાર્-ક્યાંસાતા સેકીન સંદેશાઓનું વાચન શ્રી સાન્તિલાલ સેકીનલાલ શ્રાદે કર્યું હતું.

જેમાં પંજાયતા વહાલાત ભીષ્યુત સાચર, દાદા મારેમ માવલંકર દિલ્હી, પં. સુખલાલછ, ગ્રેક કરતુરસાઈ લાલસાઈ, શ્રી હંમાળ્યુન મહેતા, તામમ તાલુંહલાત એમ. સી. સાહ. દિલ્હી, ગ્રેક અમૃતલાલ કાળીદામ દાંગી, ગાદ માલુંકલાલ વખાદીયા ધારામુમ્ય મુંગઈ, જેત વંતારખર કેલ્-ફરન્ય મુંબઇ, ન્યાયાધીય દી. સી. મહેતા, સાદ ચંદુલાલ વર્ષમાત મુંબઇ, શ્રેક બાગોલાલ મગતલાલ સાવતમર, શા માદનલાલ છોટાલાલ, શાદ ચીયતલાલ કરીઆ અમદાવાદ, પં. શ્રી મેમસ્તામ દાંગી, ભાંદારકર ઇન્સ્ટી- ક્યુટ મૃતા, ગુજરાત વિદ્યાસમા અમદાવાદ, ભારતીય વિદ્યાસમાન મુંબઇ, જેત આત્માંદર સમા ભાવતમર, જેતમન, શ્રા ગુલામચંદ લલ્લુસાઇ ભાવતમર, આત્યાંદર જેત કોલેક પંચાય, મહારાપ, સીસાયડી અતે

છાટાભાઈ સતરીઆ વહાદરા, સી. ટી. શાહ મુંખઇ, કૃતેહચંદ ઝવેરચંદ મુંખઇ, શાન્તિલાલ મગનલાલ શાહ મુંખઇ, રમણલાલ દલસુખભાઈ મુંખઇ, શ્રી મૂળચંદ વાડીલાલ દાલતામ મુંખઇ, શાહ રમણલાલ વસંતલાલ દેસાઇ મુંખઇ, શાહ પરમાનંદ કુંવરજી કાપડીઆ મુંખઇ, શાહ મિણલાલ માહતલાલ પાદરાકર, શાહ હરિચંદ માણેકચંદ, શાહ ભાઇચંદ નગીનભાઈ મુંખઇ, શાહ મેહનલાલ છોટાલાલ અમદાવાદ, રોક અપરતલાલ જેસંગભાઈ અમદાવાદ, પં. જટાશંકર ઝા તથા દીનાનાથ ઝા અમદાવાદ, શી યરોાવિજય જૈન ગ્રુકુળ પાલીતાણા, શાહ ધીરજલાલ તુરખીયા ખીયાવર, સંશ્કૃત મહાવિદાલય વહેદરા, મહાવીર જૈન વિદાલય મુંખઇ, ગ્રેહીજી જૈન સંધ મુંખઇ, શ્રી યરોાવિજય જૈન ગ્રંથમાળા ભાવનગર, પ્રેા. એન. એમ. ઉપાધ્યાય કાલ્હાપુર, રોક ભાગુભાઇ સુતરીઆ અમદાવાદ, શ્રી રતમાણાવ બીમરાવ અમદાવાદ, એસ. એમ. કત્રે હેક્ક્ત કોલેજ પુના, શ્રી ગ્રેવિદલાલ હ ભદ્ર ઓરીએન્ટલ ઇન્સ્ટીટપુટ પ્રિન્સિપાલ વહાદરા, શાહ રસિક્ટલાલ છાટાલાલ પરીખ અમદાવાદ, પં. દલસુખ માલવણીયા ખનારસ, પ્રેા. એન. એમ. બરાડા યુનિવર્સિટી, શ્રાફ દલીચંદ વીરચંદ સુરત શ્રી રાજપાલ વારા, શ્રી ધીરજલાલ ટાકરશી શાહ, ધીરજલાલ ધનજીમાઇ, લલ્લુભાઈ કરમચંદ દલાલ, પી. કે. શાહ અમદાવાદ, વિપ્લુપ્રસાદ ત્રિવેદી. માહનલાલ પાર્વતીશંકર દવે, પ્રા. માણેકરાવ, શા છખીલદાસ પાંડિત ખંભાત વગેરેના ખાસ હતા. તે ઉપરાંત જમનગર, માર્વતી, સુરત, પાલીતાણા, ભાવનગર, માલેગાંવ, ભરૂચ, આણુંદ, વાપી, ખંભાત, મદુવા વગેરે શહેરોના તથા અનેક વ્યક્તિઓના સંખ્યાળંધ સંદેશોઓ આવ્યા હતા.

જૈનાચાર્યામાં આ. શ્રી વિજયવાદલભસુરિછ, આ. શ્રી વિજયપ્રેમહરિછ; આ. શ્રી વિજયલિબ્ધિક્ષરિછ, આ. શ્રી હિમાચલસુરિછ, મુનિશ્રી પુણ્યવિજયછ, મુનિશ્રી ભદ્ર કરવિજયછ, મુનિશ્રી રમિષ્ટાક્ષેત્રપછ, મુનિશ્રી દર્શન વિજયછ, ત્રિપુટી, તથા સાધ્વીછએા વગેરેના ક્તા.

સત્રના જન્મદાતા મુનિવર શ્રીયશાવિજયછ મહારાજને અભિન'દન

ત્યારખાદ સત્ર—સમિતિના મંત્રી શી નાગકુમાર મકાલીએ સત્રની ઉત્પત્તિ કેમ થઈ તે, સત્રને મહેલા ચોતરફ્રથી આવકાર, સમય થોડા હતાં કૃષા કરીતે પૂ. શ્રમજી સંઘે અને જૈન—જૈનેતર વિદાનોએ નિબધા લખીને અમને આપેલા મમતાલયોં સદકાર એ બધું આભાર સાથે વ્યક્ત કરીતે જજાવ્યું હતું કે—મહાગુજરાતના એક મહાન જ્યાતિધારને પીછાજીવાની અયુમાલ તક ઊબી કરનાર વિદાન મુનિવર અવધાનકાર શ્રી યશાવિજયજી જેઓ મન્યસર્જંક પણ છે તેમને અભિનંદન આપી દું અભિવંદન કરે છું. આ ઉજવણીના ખરા યશ તેમને જ ફાળ જાય છે. અમારા સાયા સેનાપતિ એ જ દના. તેઓશીના ઉદાત્ત વિચારા, વિશાળ આદર્શો, વ્યવહારૂ મુદ્ધિ અને સદ્દને સમાવી લેવાની શક્તિ અનાખી છે.

તેમના હૈયામાં શાસન અને સમાજસેવાના એક લાવા ઉકળી રવો છે, જેનું પરિષ્ણામ આ સત્રની ઉજવણી છે. અથાગ પરિશ્વમે આ મદાકાર્ય પુરું પહેરાં છે. તેઓથીની કાર્યદ્રમના અને વ્યવહારફકાળનાએ મંગા જમનાના યાગની જેમ ગુજરાતી સાક્ષરા અને સંસ્કૃત વિદાનાને આ મંત્ર ઉપર એક્કા કરી શક્યા છે. આ એક શુખ ચિદ્ધ છે. પૂ. ઉપાધ્યાયજી સંસ્કૃત ભાષાના ઉપાસક હતા તેથી તેમણે સંસ્કૃત વિદાના એકત્રિત કર્યા. તેઓના આદર્શને ને ભાવનાએ વણી કોંગી છે. હું તેમને અને સમિતિના સ્રવ્યોને અને અન્ય શ્રમણોએ આપેલા સહકારને અભિવંદુ છું. વગેરે જણાવ્યા બાદ

સત્રના પ્રમુખલીની દરખાસ્ત

સમિતિના બીલ્ન મંત્રી પં. શ્રી લાલચંદ્ર ગાંધીએ સત્રના પ્રમુખરદ માટેની દરખારત મૂકનાં પ્રમુખશીને, ષડ્ દર્શનનાં ઊંડા અભ્યાસી, ને બદુલૂન વિદાન નરીકેના પરિચય આપ્યા ખાદ, પ્રમુખ સ્થાન સ્વીકારવાની વિનંતિ કરતાં પં. શ્રીશન ઈપરચંદ્રજ પંજાબીએ તેના સ્વીકાર કર્યો. સ્ટેજ પર લખર શઇ જબાર્ચું કે આપના શર્નો પ્રેમ અને મમનાના આદર કરવા જેતે છે, બાકી મારાથી વધુ સંયોગ્ય વ્યક્તિને આ સ્થાન આપ્યું દાત તો મને વધુ આનંદ ઘાત, મારા આવા મહત્વના જવાળ દારીયાળા સ્થાને આવવાનું થશે એની મને કલ્પના જ કર્યાથી દાવ કારણ કે હું મુંબઇના એક ખુલ્યુમાં અંતિથી મારું છવન વાતાવું હું, પણ વિદાન મહારાજ શ્રી થયે. વિજય છેએ કરના ખુલ્યુમાંથી પણ હારાતે મને તમારી સપ્ય-વિદાનો અને અધિદાતાની સથા સમય એક મહાયુગ્યની શેરવાથા શાયા અને તમની દાર્શિક વિદ્વાની શ્રીપી કરાવવા શ્રેમો કર્યો છે. જે અનની અહીં સમય છે એ સમાને હસ્વમાં રાખીને યારું પ્રવચન હું કરીય. ટ્રેકા પ્રસ્તાવ કરીને તેમણું દાહ કલાક સુધી એક્યારું રાખુબાવામાં સુધંદ નાદ પ્રવચન આપ્યું હતું એ પ્રવચન એડલું વિદ્વાભાવી, રસિક ને આકર્યક હતું કે સહુ કાઇ મુખ્ય અની, ડ્રીકળી પડે તે અવાજ થય તેવી તીરવ અંતિથી સાંસળી કહ્યું હતું, બિદાના લાળવું પર આકર્ષિત બન્યા હતા. (તેમનું વિસ્તુન સાળવું આગળ હાળવામાં આવ્યું છે.)

નિર્ભવાની જાહેરાન

ત્યાર ખાદ પં. શ્રી લાયરાંદ્ર ગીંધીએ જૈનાઓની, જૈન પૃતિઓ, જૈન આંબાબોની, જૈન જૈતિર પીતિ સાથરા, લોક્સરા અને વિદાના નરકથા આવેલા લેખા–નિબધાની, યેખદાના પણ્ચિત સાથે અત્રાત કરી દ્વી. અને લેખદાના આશાર માન્યો દ્વા.

ર્યા. થા દીનુબાઇ પરેલ

ત્યાર પછા બરાહા સમાછ યુનિવૃશ્ચિટિના પ્રતિનિધિ નદીક આવેલા પ્રાફેશર શ્રી દિનુસાઈ પડેલ અને શ્રી જયંત દક્ષિક પ્રવચત કર્યું હતું, જેમાં જૈત શખ્દની વિસ્તૃત વ્યાપના અને તેના ઘદાન સિદ્વિતિ અંજિલ આપી જૈત અને વેદાંત દર્શનના તન્ત્રા વચ્ચે જયાં સાધ્ય છે તે રસૂ કરી અનુસ્યું હતું અત ક્રાઇ પણ સુમુક્ષ સાચા યાર્ગે દાય તે જૈત છે પછા તે ગયે તે દર્શનને; અનુસારી ક્રેફ્યને; દે.સ.

યા. શ્રી જયંત દાંકાય

થી જયંત કાકારના ભાષ્યુંના ચાર એ હતા કે છત્ર જિયે તલ્માં વધુ સ્પષ્ટના અને સરમના ક્રાઈ પણ દર્શનમાં દાય તો તે જેન દર્શનમાં જ છે.

ર્યા થી હીયલાલ કાપડીઆ

થી ડોરાલાલ ૨. કાપડીઆએ જબાબ્યું હતું કેન્ય્રા ચર્જાવિજયજીના અલ્લન અન્ધાના ગ્રેહ્ય થવી ગેતકીએ. જે અન્ધા મળતા નથી તે કેરી સંપાદિત થવા કેતકીએ. સંદ્રળ સુરસ્તાંબાં પણ તેમના લખાં ભુ કેર્તિએ. ડેવે ખેતે થકા છે કે આ સત્રની ક્રુજાવર્ણા મારી આસા ક્રુજ્ય ક્યારે

મે. શ્રી હ સરાજ્ય માર્ચી

ખાસ પંગુખથી દારી આવેલા શાઓ લંગ્રહાયાઓ જૈતવમે વિશ્વવર્ધ ચવાની બધી ધાંત્રના ધરાવે છે. એ ધર્મને કેવળ સોપ્રદાવિક ન અનાવવા એઈએ. ને કેપર ગુદા ગુદા દાખરાઆ ટોકોને સ્વાદ્વાદની ચક્કાંડિ કેપાવવા આદેશ કરીને ધાનાની વાક્ષ્પદાર્થી સસામાં રસૂત્ર કૃષ્યત્ર કરી હતી.

ર્યોજના પાણા છ વાલનો સાસ્તરિત અને ક્રિયાધ્યાયજના જયનારા વચ્ચે પહેલા રિવસની એક વિચર્શન થઇ કર્યો. રાતના શ્રી યક્ષાવિજયજના પ્રાસ્ત્રિક સુજ્ગોતા અને તેયના આધ્યાત્મિક પદ્દાની સંગીતકાંગ્રેએ રમ લ્ડાળ કરી કર્યો.

બીજા દિવસની બેઠક

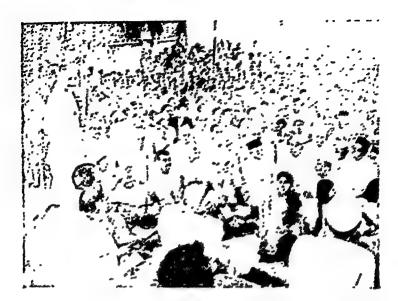
ખીન દિવસની એક નાગમણ મંદમમાં આવે કૃત્યુ હવે શરૂ થઇ દ્રની સવારના સાદાનવ વાજનો આળાઓના મંત્રળ ત્રીત્ધા બીન્ત દિવસની કાર્યવાર્દીના પ્રારંસ થયા દ્રના. વડાદરાયા આવેલી આળાએએ સંસ્કૃત સાલામાં સંદર સ્વાપ્ત ગીન વર્દેલું મુક્તી સસામાં સંસ્તાર ક્રાન્તિ પ્રથાઇ ગઇ દ્રના.



સત્રમંડપમાં ઉપસ્થિત ધએલી વિશાળ માનવમેદની



સત્રમંત્રેલનની કાર્યવાલી નિલાળવા સત્રસમિતિના ખાસ આમંત્રણથા પ્રેપ્તક તરીકે ઢાજરી આપવા પધારેલું પુત્રમ આચાર્યાદ કૃનિયરાનું મરળ ક કાળી બાજુએયી ઉપરના ભાગે ૧. પ. આચાર્યમાં માણેકસાગરસ્ટિક મહારાજ જમણી બાજી, પ. આચાર્યમાવિજયપ્રતાપસ્ટિક મહારાજ. રાખેલ જું-નીચેના ભાગમાં ૧. પ. આચાર્ય માજબુર્યારેક મહારાજ. જમ્બું ભાજ પ્. આચાર્ય ધીરિજય ધર્મસરિક મહારાજ.



સ્વતી ખેદક વખતે પ્રવચત કરી રહેશા એક વિદાન વકતા. આ દક્ષ્યમાં વિદાના, પ્રક્રિસરા ને શ્રીયત સદ્દશુદ્ધશ્રા નગરે પડે છે



યુ. આચાર્યદેર રહેરે મુનિયાળની અધ્યક્ષનામાં 'શ્રીયક્ષેત્રિયન જૈન સારિત્ય પ્રદેશના કદ્દશાસની સચ્ચ સમાદન

પં. શ્રી કાલિકાપ્રસાદ

ત્યારભાદ વ્યાકરણ સાહિત્યાચાર્ય શ્રી કાલિકાપ્રસાદ શુકલે ઉપક્રમ કરતાં જણાવ્યું હતું કે-આજે ડેમાર્કના આંગણે હેબાઇના જ નહીં કિન્દ્ર ભારતના ઇતિહાસમાં નોંધપાત્ર અને યાદમાર સમારંભ ઉજવાઇ રહ્યો છે. શ્રીમદ યશાવિજયજીના જીવન ઉપર જોઇએ તેઓ પ્રકાશ પડયો નથી એમની બહુમદય કૃતિઓ આજે ઉપલબ્ધ નથી એ ઘણા ખેદના વિષય છે. વિકટ કાળમાં તેઓશ્રી જન્મ્યા હતા. સાંપ્રદાયિક દેવના દાવાનેથા સળગતા હતા ત્યારે કાશી જેવા વિદ્યાધામમાં જઈ ને તલસ્પર્શી અભ્યાસ કરી પડદર્શનવેતા બન્યા. નવ્ય ન્યાયના પરેપરા અભ્યાસ કરીને તેમાં પારંગત થયા. નવ્યન્યાયની ભાષામાં જૈન સિહીતા રચીને જૈન સાહિત્યને માખરે લાવી મૂક્યું. અને અનેકાન્તવાદને સુદ્ધમ રીતે છણીને દરેક દર્શનકારા એક નહીં તા ખીજી રીતે પણ અનેકાન્તવાદના સ્વીકાર કરે જ પ્રતિપાદન કરી અનેકાન્તવાદની સર્વોષસ્તા રથાપિત કરીને જૈનધર્મના વિજય વાવટા કરકાવ્યા. તેઓથીના ચન્યાનું વિવેચન તુલનાત્મક છે. સેંકડા વિદ્વાનાના મતાનું તેમને પરિશીલન કર્યું **હ**તું, તેમ તેમના કેટલાક ગ્રન્થાના અવલાકનથી સાફ દેખાય છે. અડારમી સદીમાં એક જૈન વિદ્રાન ત્રણસા (૩૦૦) ચન્ચાનું સર્જન કરે એ જૈન ધર્મ માટે અપૂર્વ ઘટના છે, કિન્દ્ર ભારતની ભૂમિ માટે ગૌરવસર્યો બનાવ છે. જૈન સમાજ તેમના અપ્રાપ્ય ગ્રન્થા જે તાનભંડારમાં ખૂણેખાંચરે સડી રહ્યા છે તેને સાધી કાઢે, તેને ચ્યુષ્યયન કરાવે અને તેઓશ્રીના અગાધ દાર્શનિક જ્ઞાનના લામ ભારતના વિદ્વાનાને મળે તે માટે જૈન સમાજ સરસ્વતીને આગળ કરે અને લક્ષ્મીને તેની પાછળ ચલાવે શ્રીમકૃની વિદ્વત્તાથી હું ધણા સુગ્ધ છું. તેમના સાદિત્યના ઉદ્ધાર અને પ્રચાર માટેનું કાર્ય થાય તે ખૂબ જરૂરી છે.

પં. શ્રી મગનલાલ શાસ્ત્રી

અમાટલું કથા ખાદ સંસ્કૃત સભાની કાર્યવાહી ડેનાર્ક નિવાસી વેદાન્તશાસ્ત્રી સાહિત્યજાણ મગનલાલ ગિરિજાશંકરના અધ્યક્ષ પદે શરૂ થઇ હતી.

શ્રી શાસ્ત્રી છ તેના સ્વીકાર કરતાં જણાવ્યું હતું કે—આપની ભારતની ભૃષિ શપર કાર્ક પણ પ્રકારના વિનાશના પ્રસ'ગ આવે છે ત્યારે મહાન વિમૂનિએ અવનાર લે છે. તે પ્રમાણે સાહિત્ય અને સંસ્કૃતિના વિનાશ અટકાવવા આ મહાન વિમૂનિએ જન્મ લીધા હતા અને જગનના શપકાર માટે મહાન સાહિત્ય રચી પાતાનાં નામ અમર કરી ગયા.

ત્યારબાદ પંહિત લજકાન્ત ઝા, એ અનેકાન્તવાદ ઉપર સંસ્કૃતમાં પ્રવચન કર્યું હતું અને જયંતિ શ્રાવિકાના દાખલા આપ્યા હતા.

શ્રી સવાજી યૂનિવર્સિટિના પ્રતિનિધિ પ્રાે. ધ્રી હરિપ્રસાદ છમનલાલ મદેનાએ ધર્મમાં અહિંસાનું શું રયાન છે અને તેનું શું પ્રયોજન છે ! તે જણાવી 'અહિંસા પરમા ધર્મ 'ની સિહિ કરી હતી. યનમાં યતા પ્રાણી વધ માટે અરુચિ દર્શાવી હતી.

કું. ઈન્દુમતી અને કું, કાેપ્રોક્ષા વગેરે ખહેતાએ સંરકૃત ભાષા સરળ છે એ વિષય ઉપર બુંદર સંવાદ રજૂ કર્યો હતા.

પં. શ્રી જયનારાયણ પાઠક

વ્યાકરશુ કાવ્યતીર્ધ શ્રી જવનારાયણ પાદક શીમદ્ યરો વિજયજીતું જીવનચરિત્ર વર્ણવ્યું હતું. અને કાશીમાં શાસ્ત્રાર્ધ કરીને મેળવેલા વિજયના સુંદર ચાર રજૂ કરીને, એક યુજરાની વિદાને કાર્શમાં વિજય મેળવીને સાચવેલી શાન બદલ અંજિસ આપી તેમના જીવનપરથી બોધપાદ લેવાના આપ્રદ દર્ષો હતે.

પં. શ્રી અમીરચંદ્ર શાસ્ત્રી

શ્રી સાહિત્યાચાર્ય થ્રી અમીરચંદ્ર શાસ્ત્રીએ શ્રીમદ્ જ્ઞપાંધાયછએ સંસ્કૃત ભાષાના કરેશા આદરને જણાવીને સંસ્કૃત ભાષા શિખવાની આવશ્યક્તા જ્ઞેપર સંસ્કૃત ભાષામાં સુંદર પ્રકાશ પાડ્યો દ્રતેા.

પં. શ્રી લક્ષ્મીનાથ શાસ્ત્રી

રાજકીય સંસ્કૃત સહાવિદ્યાલય વંડાસાના નિષ્ટત મુખ્ય અધ્યાપક થી. એ. શ્રી લક્ષ્મીનાય મદીનાય શાસીએ જણાવ્યું હતું કે જે સમયમાં સહ્તાભુ યંદિતા ઇતિરફર્શનીયોને પૂર્યું રીતે અધ્યાસ કરાવતા ન હતા તે વખતે તેઓએ શ્રી યરોાવિજયજીની અપૂર્ય ત્રાનસક્તિ જોઈ અધ્યાસ કરાવ્યા. નવ્યન્યાય શ્રાસ્ત્રના અધ્યાસ કરી લાકાની શુહિને નિર્મળ કરવા ન્યાયના સા ઉપરાંત શ્રી રૂવ્યા જે વખતે સત્તમનંતરાના દુરાશ્રદ્ધા હતા તે વખતે પસ્ત્ર સમાધાન દૃષ્ટિએ ઉત્તમ શ્રન્યા લખી સત્ય વસ્તુને સમજાવનાર એ મહાન વિસ્તૃતિને જેટલી શ્રદ્ધાંજલિ આપીએ તેટલી એક્ષ્ટી છે અનિ અધ્ય સમય સ્ટુને બાલવાના દૃષ્ટાયી વિશેષ કહેવાના અવકારા નથી. હું એટલું કરીશ કે તેમના શ્રાયાના સંદ્રાધન — પ્રકાશન માટે ખાસ યોજના થવી જરૂરી છે.

૫. શ્રી વ્યાલકૃષ્ણુ શાસ્ત્રી

થી ભાલકૃત્યુ શાસ્ત્રીછએ સંસ્કૃત ભાષાને છવંત ભાષા જગાવી સંસ્કૃતિના અધ્યાસ માટે તે બાષાને રાષ્ટ્રભાષા અનાવવાની ઇચ્છા વ્યક્ત કરી દ્વી.

સત્રના પ્રમુખશ્રીનું પુન: ભાષણ

મું બર્ક નિવાસી શેઠ જીવતલાલ પ્રનાપશી, શેઠ વાડીલાલ ચંતુનું જ તથા મુંબર્ઠના શી પ્રયુત્રમુખ ખરાબી તથા શેઠ પરસાતમ સરચંદ ધાંબધાવાળા વગેરે આગેવાના પડેલા દિવસની બેઠકમાં ડેમાર્કનાં બલેના તાનું સમાધાન કરવાના કાર્યમાં શેકાનાં સત્રના પ્રમુખ શી કંપારચંડજીના ભાષભુંથી વચિત રહ્યા દેવાથી પ્રમુખશીને ચાડા સમય માટે ભાષભું કરવાના અનિ આગ્રદ કરતાં, પ્રમુખશીએ અડેલા કસાક સુધી છટાદાર અને વિદ્વાલમાં મધુર પ્રવચનના પ્રવાદ ચલાવ્યા હતા. જેમાં ઉપાધ્યાયજીના દાર્શનિક વિશેષનાઓને વિશદ ખ્યાલ આપી જવ્યુત્રમું હતું કે — ઉપાધ્યાયજીના સંઘામાં જે વિશેષનાઓ છે તે સંસ્કૃત ભાષા સિવાય આગ્રદ થતાં પાણીના રેલાની માફક પ્રતાદ્વયદ સંસ્કૃત માત્રામાં ઉપાધ્યાયજીના સિક્સો અને તેની ખુમીઓ સરસ શેત્ર સામ્યત્રો હતી.

ત્યાર પછી બાળાઓએ સંસ્કૃત લાગામાં વિદાયનું ગીન ગાયા વ્યાદ પ્રમુખ શ્રી મગનવારમાર્ધ સાઓએ ઉપસંદાર કરતાં એકમીજ ધર્મોત્રામા આ રીતે પરસ્તર સંત્રકૃત સાધે તે આપણી સંસ્કૃતિને મજબૂત બનાવવા નાટે માટું ત્રગ જેલું કરી જીલેએ. તે પૃછી અનેક્તિવાદની પ્રજ્ઞાંસા કરી સંસ્કૃત ક્ષાયાને રાષ્ટ્રકાષા બનાવવાના દુશ્લેખ કર્યા દ્વા

મ'ત્રી શ્રી કાલિકાપ્રસાદજનું શ્રી યગ્નાવિજયજને અભિન'દન

કાર્ય વાદીની સમાપિતે અને પં. શ્રી કાલિકાપ્રસાદે સમાતા આસાર માની આજની વિશાળ સમાર્યો બાલવાની સંસ્કૃત વિદ્વાનોને જે તક મળી છે તે અનૃત્યુર્ગ છે. આ માટે સત્રસમિતિ કરનાં અત્ર આપણી સામે બિરાજમાન મહારાજ શ્રીયગ્રાવિજયજને અસ્ત્રિનંદન સદ 'દું અસ્ત્રિગંદન કર્ફ છું કે, જેમણે આ સત્રના જન્મ આપીને, એક મહાન યુક્યની મહાનનાનો અમને અને જ્યત્રને પણ્યિય કરાવવાનો અપૂર્વ પ્રસંગ ઊભા કર્યા છે. અંતમાં જૈન સિર્દાત તેની માન્યતા વગેરેથી જે કંઇ અણુજાણમાં વિપરીત ખાલાયું હાય તા સહુ વતી ક્ષમા યાચી લઉં છું.

આ. શ્રી વિજયપ્રતાપસૂરિજી મહારાજ તથા આ. શ્રી ધર્મ સુરિજી મહારાજનું મહત્વનું પ્રવચન

ત્યાર ખાદ શ્રી મકાતીએ વિદાનોના આભાર માની પૂન્ય આચાર્યશ્રીને છે શખ્ટા સંભળાવવા વિનંતિ થતાં પ્રથમ આ. શ્રી વિજયપ્રતાપસરિલ્લએ વિદાનોને પ્રેરણાર્ય ઉત્તેજન કરે તેવું ટુંકુ પ્રવચન કર્યું હતું. ત્યાર ખાદ આ. શ્રી વિજયધર્મસરિલ્લએ ટુંકુ મનનીય પ્રવચન કર્યું હતું. (પ્રવચન આગળ છાપ્યું છે.)

તેઓશ્રીના પ્રવચનની સુંદર છાપ પડી હતી. સાડાળાર વાગતાં સવારના સમારંભ પૂરા થયા હતા. ખ્હારથી આવેલા વિદ્વાનોના ફૂલહારથી સત્કાર કરવામાં આવ્યા હતા.

બીજા દિવસની ખપારની ખેડક અને સક્રિય વિચારણા

સત્રની ખેઠક શરૂ થાય તે પહેલાં પૂ. મુનિશ્રી યશાવિજયજીની દાજરીમાં, આવેલા વિદાના, રથાનિક તથા ખ્હારના આગેવાના ને શ્રીમંતાની એક ખેઠક ખપારના દોઢ વાગે શરૂ થઈ હતી. ઉપાધ્યાયજીના સાહિત્ય અંગે શું કરવું જોઈએ તે તથા પ્રાસંપિક કેટલીક અન્ય વિચારણાએ પણ કરવામાં આવી હતી. ચર્ચાને અંતે કેટલાક ઠરાવા કરવાના નિર્ણય લેવાયા હતા.

બીજા દિવસની ખપારની ખેરક

ભપોરના અઢી વાગતાં સત્રના અધ્રા રહેલા કાર્ય કમ સંગીતમાસ્તર શ્રી સુંદરક્ષાલના મધુર સ્વરાયી શરૂ થયા હતા.

નિબંધ વાચન

પ'. શ્રી લાલચંદ્ર ગાંધીએ આવેલા નિળધામાંથી કેટલાક નિળધાના મદત્ત્વના ભાગાનું વાચન કર્યું હતું. કેટલ'ક નિળધા એટલા સુંદર હતા કે શ્રાતાઓનું એકધારું ધ્યાન ખેંચી રહ્યા હતા.

શ્રી માહનક્ષાલ દાપચંદ ચાક્સીએ મુનિશ્રી યશાવિજવછને શ્રહાંજલિ આપી જણાવ્યું હતું કે મુંબઇને .પહેલી જ વાર શ્રી હેમચંદ્રાચાર્યં છ, શ્રી હીરસરિષ્ટ મહારાજ તથા શ્રી યશાવિજયછ મહારાજ માટે કંઈ કરવાના સચાટ બાધ અત્ર બેઠેલા મહારાજ શ્રીયશાવિજયજીએ જ આપ્યા. તેમએ આ મહાપુર્યાના રમારદાના હૃદ્ધાર કરવાની પ્રેરણા કરી ત્યારે અમને ઘણું ઘણું નવું જ જણવા મધ્યું હતું.

ઉપાધ્યાયછ માટે બે વરસ ઉપર મુંબઇમાં ગુણાનુવાદના પાયા નંખાયા અને તેનું ફળ આજે જોવા મધ્યું છે. આપણે શ્રી હિરિસદ્રમૃરિછ અને શ્રી હીરસ્રરિજીની જેમ યશાવિજયછ ઉપાધ્યાયને ઓળખી સફયા નથી. ગુરુમંદિર રચીને આપણે તેમની ભક્તિનું પ્રદર્શન કર્યું. હવે તેમના સાહિત્યના અબુમાલ વારસાને માત્ર આપણે જ વખાણીએ તે બરાજર નથી, પણ બહારના વિદાના વખાણે તે માટે દાનના પ્રવાદ સાહિત્યની દિશા તરફ વાળા તેમની ખ્યાનિ અમર કરવાની જરૂર છે. અન્ય ખર્ચ કરવાં જૈનસમાજ તેમના સાહિત્યમાં નાબાં ખરચે એ ખૂબ જરૂરનું છે. જગ્રતને શાંનિના સંદેશા યુનામાંથી નહીં મંત્ર બદ્ધ ભારતમાંથી અહિંસાના ચાહકા તરફથા જ મળશે.

ડ્રાં. શ્રી સાંડેસરા

જાણીતા પ્રા. શી ભાગીલાલ સહિસરાગે પ્રયચન કરતાં જગ્નાત્ર્યું હતું કે ઉષાધ્યાય શ્રીમદ્ યદો-વિજયજી એકલા શાની જ ન હતા, પણ એક સાચા વ્યતુસરી સંત હતા. વ્યન્ય કરાય ઉપરાંત રાજરાતી ભાષાના વિકાસમાં તે વખતના સમયમાં તેમણે ધણે! જ કાળા આપ્યા છે. ગુજરાતના એક પ્રખર વિદાનના સ્વહસ્તાક્ષરે લખાએલ પ્રન્ય આજે આપણેને મળે તે એક મહ્ત્વના ખનાવ છે.

થી મક્તલાલ પંદિત

જેન પ્રાસાદના ચાર સ્પંબામાં શ્રા સિલ્સેન દિવાકર, શ્રા હેમચંદ્રસૃરિછ, શ્રા હિરિસ્ક્યારિછ અને ચાથા શ્રા યુગાવિજયછ. તેઓ માત્ર વિદાન ન હતા પણ મહાન તત્ત્વનાની હતા.

શ્રી યુગ્રાવિજયજીતું પ્રેરક પ્રવચન

ત્યાર ભાર સત્રના પ્રમુખ થી કંચરચંદ્રછ ટાસ્ત્રીએ મહારાજ થી થગ્રેલિંગવર્છને ચોર્કુ પ્રત્યન કરવાની આગ્રહસરી વિનંતિ કરનાં મહારાજ્યીએ ટ્રંકુ ને મનનીય પ્રત્યન કર્યું હતું. [પ્રત્યન અદેવાલ પૂર્વું થયા પછી છાપવામાં આવ્યું છે.] યુનિયીના પ્રત્યનમાં છેવટે જવાવ્યું હતું કે જુદાજુદા સ્ટ્રેટના જૈન સચા ધાર તો તેમના શ્રેચોનું પ્રકાશન બહુ સ્ટેટલાઈયી થઇ શ્રેક એમ છે. અહીંયાં એકલ જીદા જાદા શ્રેયના પ્રતિનિધિઓ 'પંચાળ શક્કી તે એકકા માજ' જેવી મારી આ સ્થના યોગ્ય લાવે તો જ્યા વધાવી લેશે.

એ જ વખતે ચમામાંથી નીચેના ગૃદરયાએ અને સંરથાએએ પાતાના નરક્યાં એકેક શ્રંથની અહિંક જવાબદારી લેવા સંમતિ દર્શાની, મહારાજશ્રીએ નાખેલી હહેલના સંદર જવાબ વાજ્યો હતો. (૧) ગૃહ છતનલાલ પ્રનાપસી મુંબઇ, (૨) ગૃંહ પરસાનમદાસ સુર્વંદ ધાંજગ્રાવાળા, (૩) ગૃંહ વાડીલાલ ચતુલુજ ધાહેકાપર, (૪) ગૃંહ દીરાલાલ નબીનદાસ સુરન, (૬) શ્રંહ મારબી સંત્ર મુધ્ય હો શ્રી માદનભાઇ સંધ્યો. (૭) શ્રી યશાંજિજય જૈન ગ્રાનમંદિર હેમાઇ.

મહારાજ્યોની અપીલના સુંદર જવાય મળતાં આતંદ વ્યક્ત કરીને જણાવ્યું હતું કે કેમાંખાયછ સત્રવાત અને તેમનું સાહિય અમર છે અને જેન સંધ જયવેતા છે.

જૈનાચાર્યા અને મુનિઓએ લીધેલી પ્રેસ્ક પ્રતિગ્રા

ત્યાર ત્યાર ત્યા શ્રી વિજયપ્રનાષય્તિએ, સા. શ્રી વિજયધમં મૃરિક, મૃનિશી યશેલિજયક, મૃનિશી જયાનંદિવજયક, મૃનિશી કનકવિજયક, મૃનિશી મહાનંદિવજયક, મૃનિશી સ્થોરવિજયક વર્ગરેએ એક વર્ષમાં શ્રીયદ્દ ઉપાધ્યાયકની કોઈ પણ એક કૃતિના સભ્યાસ કરવાના નિવૃત્યની જાહેરાતા કરવામાં સ્થારી સ્તી. સતે સ્થા. શ્રી વિજયમં સરિક્રસે, સ્થા. શ્રી માણેકસાગરપરિક્રિતે પોતાના સ્પુદ્દાયમાં તેઓશ્રીના શ્રીયોનું સ્થાયય કરાવવાનો સાફરોને સાફરોને સાફર કરવાની વિનિન કરી હતી. ઉપરાંત જાહેરાતેને ઉપાધ્યાયકના જાણનાશ્રી વધાવી કરીયાં સાથી હતી.

ત્યારખાદ શેક જીવનશાય પ્રનાપમી મુંખર્કવાળા, એક વાડીશાય ચારાકું જ તથા મેક પરસોનમ મુશ્લંદ ધોપ્રશાળાએ કારો દેપર કરોદ્રાર વ્યક્ત કરી કેપાંષાય છતે અંબલ આપો, રિકાનાના સંમેશનથી જૈન સંસ્કૃતિને કેવા કેપ્ર મળા શકે છે તે જ્યાવી, મુંબર્કને આંપણે પ્રકારમથી પ્રધારીને આવા સમારેના કેપ્લે તેવી સાવના વ્યક્ત કરી હતી.

भद्दना क्षति।

આ શેકમાં જુદા જુદા કરવો મળ પ્રમાર કરવામાં આવ્યા હતા. કે અન્યત આપ્યા છે.

પ્રમુખશ્રીના ઉપસંદ્વાર

છેવટે છત્રના પ્રમુખ શ્રી ઇશ્વરચંદ્રજીએ ઊપસંદાર કરતાં સારસ્વત સત્રને તથા ઉપાધ્યાયજીને બગ્ય સખ્દામાં અંજલિ આપી પાતાના આનંદ વ્યક્ત કરી પૂજ્ય મુનિરાજોના, સત્રસમિતિના, સ્વાગત પ્રમુખના, તથા જુદી જુદી વ્યક્તિઓના અભાર માન્યા હતા.

અંતિમ આભાર

ત્યારબાદ શ્રી જશુલાઇ જૈને સ્વાગત પ્રમુખ, સ્વાગત સમિતિ, વિદ્વાનો, પ્રાફેસરા, શેડ છવાલાઈ, શ્રી વાડીલાલ આદિના તથા અમંત્રિત ગૃહરથાના તથા પ્રદર્શનમાં પૂન્ય હપાધ્યાયછ લગવાનની સ્વહસ્તા- ક્ષરીય બહુમૃલ્ય કૃતિઓ વગેરે સાધના પૂર્વ પાડનાર પૂ મુનિવર શ્રી પુષ્યવિજયછ મહારાજના, તથા જીદા જીદા કાર્યં કરોના આલાર માનીને હેવટે સત્રના જન્મદાતા મહારાજ શ્રી યશાવિજયછ મહારાજને ગુજરાત ડેલાઇ તથા જૈનસમાજ કદી નહિ ભૂલે વગેરે જણાવી તેમના પણ આલાર માન્યા હતા. સભામાંથી જયનાદાની ધાષણાઓ થઇ. પૂન્ય મહારાજશીએ વિદાયગીરી લીધી.

પ્રમુખશ્રીના વિદાયસત્કાર

અંતે સત્રના પ્રમુખ શ્રી ઇશ્વરચંદ્રજીતા કુલહારથી સત્કાર કરવામાં આવ્યા હતા.

રેડીઓ પર બ્રાંડકાસ્ટ

તા. ૯–૩–૫૩ની રાત્રે આઠ વાગે ખરાડા 'રેડીઓ ' ઉપર જણીતા વિદાન ડૉ૦ ભાગીલાલ જે. સર્ડિસરાએ સત્રની ઉજવણી અને શ્રીમદ્ યશાવિજયજીના જીવન અંગેના સમાચાર રીલે દર્યા હતા.

ગુરુમ દિરતા દારાદ્ઘાટન સમાર ભ

તા. ૮–૩–૫૩ની સવારે શ્રી ચરાેવિજયછ ગુરુમંદિરના દાર–ઉદ્ધાટનના વિધિ રોઠ વાડીલાલ ચતુર્જીંજના શુલ હસ્તે થયા હતા. રોઠ છવાલાઇએ ગુરુમ્તિની તથા શ્રી પુરપાત્તમદાસે ગુરુમાં દુકાની પ્રયમ્ પૂજ કરી હતા. તે પ્રસંગે રોઠ પુરપાત્તમદાસ તરફથી એક હજાર રૂપિયાની તથા રોઠ છવાલાઇ તરફથી રા. ૫૦૧ની સખાવત ઉપાધ્યાયછના સ્મારક કાર્યમાં જાહેર થઈ હતી અને સત્રના બીજા દિવસે મુંબઇવાળા રાઠ છવાલાઇ પ્રતાપસી તથા રાઠ વાડીવાલ ચતુર્જીજ તથા રાઠ પરસાતમદાસ સુરચંદ તરફથી નવકારશી કરવામાં આવી હતી. ફાગણ વદ દ તથા હતા બન્ને દિવસે ડેબોઇવાળા ભાઈએ તરફથી સ્વામીવત્સલ કરવામાં આવ્યું હતું.

वादांक्ष प्रतिवादांक्ष घदन्ती निश्चितांस्तथा।
तत्त्वान्तं नव गच्छन्ति तिलपीलकथद्गती॥

*
सर्वे परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम्।
पतदुकं समासेन लक्षणं सुखदुःखयोः॥

हिपा. श्री वशाविकथङ] [१. नि. तथा सहह. द्वाविः

શ્રી યશાવિજયજી જ્ઞાન–સાહિત્યપ્રદર્શનનું શેઠ પરસાતમ સુરચંદના હસ્તે થએલું ઉદ્ઘાટન

ુપૂ. ઉપાધ્યાયછના સ્વહસ્તાક્ષરની બહુમૂલ્યકૃતિએાનું સુવર્ણ મ્હારાથી થએક્રું પૂજન

डलरे। भाषुसाओ नीढाणेड्ड प्रदर्शन

ઉષાધ્યાય શ્રી યરોાવિજય સારસ્વત સત્ર મહેતસર નિમિત્તે એક નાનું પછ્ વિશિષ્ટ પ્રકારનું સુંદર પ્રદર્શન યોજવામાં આવ્યું હતું. જેતું ઉદ્દ્રાપ્ટન સાતમ જ્ઞનિવારની સવારે ધર્મપ્રેમી શેંદ્ર પુરસાત્તમદાસ સુરચંદમાઈ ત્રાંત્રદ્રાવાળાના શુપ્ત દસ્તે કરવામાં આવ્યું હતું. શેક પુરસાતમ સુરચંદે જૈન સાહિત્ય અને તેના પ્રયાર કરવા ત્રાત્રતના ખાસ ઉલ્લેખ કરી જેન માંકાગમાં ભારતની ભત્ર્યસંસ્કૃતિ સંઘરવામાં જેન साध्याये मनवेशी शेंभती सेवाने व्यंकवि वाधी दती. ने व्यावां प्रस्थानी वारंवार थे। अपने व्यनेश પ્રકારનું ગ્રાન સ્થાપવાનું સ્થન કર્યું હતું. તે પ્રસંત્રે ગુજરાતના શિક્ષ સ્થાપત્યના ઉંડા અભ્યાસી ભાઇ ઉમાકાન્ત ત્રેમાનંદ શાહ એમ એ. એ., જૈન કલા ઉપર ટુંકું વિરેચન કરનાં જણાવ્યું હતું કે "કારનીય કલાના ઇતિહાસમાં જૈન સંસ્કૃતિના વણા જ મેટા કાળા છે. અને અતિહાસિક કાળમાં મળના સૃતિઓમાં સૌથી પ્રાચીન-મૌર્ય જમાનાનો એક જૈન યુર્તિ જ છે. જૈન સુધે ભારતના કાઈ પણ ધર્ય કરતાં વધારે સંભાળપૂર્યક પાતાના પ્રાચીન શ્રન્યા, દેવાલયા તથા સ્ટિપા વગેરેની સાચવણી તથા અંતિહાસિક નોંધા . રાખવા પ્રયાસ કર્યો છે. પ્રત્યીન જેન સ્થાયત અને કલાના ૬૨૪ ઘણા અવદેષા શોધી ૨૬ાય તેમ છે. આગળ ચાલનાં જણાવ્યું હતું કે ખાસ કરીને સારતની પ્રાચીન નગરી સાંચી (બ્રેલમા નછક)માં જેન धर्मनी दृष्टिके तेमक शास्त्रवर्मनी हवा, छितिदास दृत्रेरेनी दृष्टिके स्थाधन धवानी भास कहर है. द्या ખાદકામની આવમ્યકતા ઉપર ભાર સ્કૃતાં જણાવ્યું હતું કે આવી જ બીછ જરૂર મધ્યકાશીન ગુજરાતની સવ્ય નગરી ચંદ્રાવનીના અવશેયોને એક્ત્ર કરવાની, ગુજરાત પાડ**ણ, તે**થી ગુનું વશ્લનીપુર, તેથી વગી પણ જુનું ભિત્રમાલ, સારવેરનું શ્રીમાલપુર, ખાદકામની ખાસ જરૂરીઆત સાર્ગા લે છે. પ્રાચીન જેન ઇતિહાસની ખૂટતી કડીઓ મેળવવા માટે આ જંગાઓ તેમ જ લારતના પશ્ચિમસાત્ર સંદેશધન માત્રી લે છે. આ પ્રદર્શનમાં ગુજરાતની પ્રાચીન ભગ્ય રિકલ રોક્રીના, સમય એ!હેા સગવાથી બદુ ચેાટા જ નસ્તા રજ્ કરવામાં આવ્યા છે જેમાં ખાસકરીને અહિશ અને વસંતગઢની ધાતુ પ્રતિમાઓના સુખ્ય છે.

પ્રદર્શનમાં ત્યાયાચાર્ય કવાધ્યાય શ્રી યુગ્રેનિજગ્રજી મદારાજના પાતાના જ દાયે લખેલા પ્રત્યાની પ્રતો તેમજ તેમના ગ્રન્થાની બીજી હસ્તાલિખત તેમ જ તેમની પ્રસિદ્ધ અને અપ્રસિદ્ધ અન્ય કૃતિઓ પણ રજૂ કરવામાં આવેલી છે. એ સ્વલ્સ્ત લિખિત મહત્વની પ્રતિએ જ્લ્લીતા સ્રગ્રોલક સુનિવર શ્રી પુલ્યવિજગ્રજી મદારાજના સંગ્રદની છે. વળી સુનિશ્રી રંગવિજગ્રજી (શ્લાઇ), પ્રવર્તક શ્રી કોન્તિવિજગ્રજી, સુનિશ્રી હ સવિજયછ, તેમજ પ્રાપ્ય વિદ્યા મંદિર (વહાદરા)ના મ્રત્ય ભંડારામાંથી આ પ્રતા રજૂ કરવામાં આવી છે. પ્રતા રજૂ કરવામાં પંડિત લાલચંદ્ર ગાંધી, તથા મુનિશ્રી યશાવિજયછ મહારાજે ભારે જરેમત ઉઠાવી છે. તેમજ શેઠ વ્યાહ્યું છ કરયાબાછ અમદાવાદ, શ્રી મુક્તિ કમળ જેન માહન ત્રાન મંદિર વહાદરાના સંમ્રહના ફાટાઓ, તથા મુનિશ્રી પુષ્યવિજયછના સંમ્રડનાં ભવ્ય યન્ત્રપટા, વિનંતિપટા, સુવર્ણ—રોપ્ય—અક્ષરી સચિત્ર પ્રતિઓ વગેરે ઇતિર સાહિત્ય રજૂ કરવામાં આવ્યું હતું. જેન શિલ્ય અને કલાના ચાડા નમૃતા રજૂ કરીને તેની વિશિષ્ટ ખૂબીઓના ખ્યાલ આપવાના મુંદર પ્રયાસ કર્યો હતા. શ્રી ગાકુલદાસ કાપડી-આએ અનાવેલા અને જેન સાહિત્ય મંદિરની માલીકીના ભગવાન શ્રી મહાવીર સ્વામીના જીવન પ્રસંગાના આકર્ષ કર્યુદર ચિત્રા સહુ કાઈનું ખાસ ધ્યાન ખેંચે તેવા હતા.

કીંગતી પ્રતિએ ખાસ કાચના કેસીઝામાં મુકવામાં આવી હતી. પ્રદર્શનના લાભ જૈન-જૈનેતરવર્ગે માટી સંખ્યામાં લીધા હતા.

એક ખાજી પ્રદર્શનમાં ન્યાયાચાર્ય, ન્યાયવિશારદ પૂ. ઉપાધ્યાયજી શ્રીમદ્ યકાૈવિજયજી મદારાજની ઉપલબ્ધ સુદ્રિત પ્રતાકાર ને પુસ્તકારની તમામ કૃતિઓ ખુલ્લી કરીને મૂકવામાં આવી દ્વી. જેસલમેરમાં મળેલી પ્રાચીન કલાકૃતિઓના પણ નમૃના મૂકવામાં આવેલા દ્વા.

પ્રદર્શનમાં સારી એવી સામગ્રી પ્રખર સંશોધક મુનિવર શ્રી પુરુષવિજયજી મદારાજે આપવા ઉદારતા ખતાવી હતી. તે દરેક સંરથા અને માકલાવનારના પ્રવચનમાં આભાર માનવામાં આવ્યા હતા.

સન્ન પસાર કરેલા ઠરાવા

કરાવ ૧, આ સંગેલન માને છે કે ન્યાયવિશારદ ન્યાયાચાર્ય મહાપાય શ્રી ઘરોાવિજય મદારાજનું રમારક નીચેની રીતે થવું જોઈએ.

(૧) તેઓશીના ગ્રન્થાનું તુલનાત્મક અને શાસ્ત્રીય પદ્ધતિએ તે તે વિષયના યાગ્ય વિદાના દારા સંપાદન કરાવનું જોઇ એ (૨) તેમણે જે જે વિષયોના ગ્રન્થા રચ્યા હોય તે વિષયોના તથા જેન તત્ત્વ- ગ્રાનના અભ્યાસ માટે સમુચિત યાજના કરવી. (૩) શક્ય હોય તે રચળાએ તેઓશ્રીના ગ્રન્યોના અભ્યાસ માટે શ્રી યશાવિજય અભ્યાસ-વર્તું લા રથાપવાં. (૪) તેઓશ્રીની અત્યાર સુધી અપ્રાપ્ય ત્રણાતી કૃતિએ મેળવી આપનારને યાગ્ય પારિતાયિક આપનું. (૫) તેઓશ્રીનું જીવનચરિત્ર યાગ્ય સ્વરૂપમાં ખદાર પાડનું (૧) તેઓશ્રીની જન્મભૂમિ કૃત્તોકુમાં યાગ્ય રમારકની રથાપના કરવી. (૭) આ સારસ્વન સત્રના પ્રસંગે આવેલા નિષ્ધાનું પ્રકાશન કરતું. (૮) સમયના અભાવે જે વિદાનો પાતાના નિર્ણયા માકની શક્યા નથી તેમને પાતાના નિર્ણયા ત્રણ માસમાં માકના વિનંતિ કરવી. (૯) ઉપરના દેત્ઓ અમલમાં મુક્યા માટે વધુ સભ્યો ઉમેરવાની સત્તા સાથે તીચેના સભ્યોની સમિતિ નીમવામાં આવે છે.

(જેન મુનિઓ અને ગૃદરથ વિદાના તથા જેન આગેવાનાની એક સમિનિ નીમવામાં આવી છે જેની યાદી આગળ છાપી છે).

કરાવ : ર ભારતવર્ષના અને વિશેષના ગુજરાનના શાંસ્કૃતિક વિકાસમાં જેન સાહિત્યના વિજ્ઞાળ કાળા છે. તે દિ લક્ષમાં રાખી સર્વયન બલારાળ શ્રી સવાછરાવ માયકવાડે પ્રાપ્ય વિદ્યામાં જૈન પાંડતદારા જૈન સાહિત્યનાં સંપાદન માટે વર્ષોથી યેજના કરી હતા, જે લગ્નજા ભત્રોટ વર્ષ સુધી ચાલુ રહી. હાલમાં સદર જગ્યા કર્યા કરવામાં આવી છે. આ સંબેશન મહારાજ સપાછરાવ યુનિવર્સિટીને આગ્રહપૂર્વ ક લક્ષામણ કરે છે કે જૈન સાહિત્યના સંપાદનનું કામ થતું રહે તે માટે પૂર્વ વત્ યોજના ચાલુ રાખવા માટે ઘટતાં પગલાં તાતકાલિક ભરવાની વિનંતિ કરે છે.

દરાવ : 3 મુંત્રઈ રાજ્યમાં આવેલા તમામ વિદ્યાપીડામાં ખાર્ડ ઑફ સ્ટઠીઝ વગેરે અને તેની આતર્મતમાં યાગ્ય અર્ધમાગધી (પ્રાકૃત ભાષા)ને પદનપાદનનાં પ્રળેય માટે આ સંમેલન જે તે વિદ્યાપીડાને આત્રહપૂર્વક ભલામણ કરે છે.

ઠરાવ : ૪ અર્ધમાગધી ભાષાનું શિસ્છુ સ્કુલાદારા અપાવવા ભલામણ અગેતા.

કરાવ ; પ જૈન સમાજમાં અર્ધમાગધી ભાષાના પ્રચાર થાય તે માટે જૈનાને આ સંમેશન ભલામણ કરે છે કે તેમણે પાતાના બાળકાને આ ભાષાના અભ્યાસ કરવા યાગ્ય પ્રેરણા કરવી અને ઘટતા પ્રગંધ કરવા.

કરાવ : ૬ જૈન ગ્રાનભંડારાનાં સચિપત્રા શાસ્ત્રીય પહિતિયા તૈવાર કરી પ્રસિદ્ધ કરવા આ સંત્રેલન તે તે ગ્રાનભંડારાના વ્યવસ્થાપકાને આગ્રહપૂર્વક વિનંતિ કરે છે.

ડરાવ : ૭ મું અઇરાજ્ય માટે શ્રી મહાવીર કલ્યાણક—જયંતિના દિવસ સરકારે ગેઝેટક તહેવાર તરીકે જહેર કરેલા છે. મુલ્કા કચેરીઓમાં તે દિવસે રજા રાખવામાં આવે છે. વડાદરા પ્રાંતમાં વિપુદ્ધ જૈનમુંખ્યા છે. તેથી વડાદરાની દિવાની કચેરીઓમાં મહાવીર જયંતિના દિવસે રજા પાળવા આ સત્ર વડાદરાના હીસ્ટ્રીક્ટ જહજને આમ્રહપૂર્વક વિનંતિ કરે છે.

ક્શવ : ૮ શ્રી યેગ્રેલિજયછ સારસ્વત સત્રને પોતાને આંગણે આમંત્રી તેની લબ્ય રીતે ઉજવી અને શ્રી સંધર્મા સંપ સંગઠન સાધવા ખદલ ડેબાઇના શ્રીસંધને હાર્દિક અલિનંદન આપે છે.

કરાવ : હ આ સત્રના જન્મદાતા અને પ્રેરક સાહિત્યપ્રેમા મુનિશ્રી યુગ્રોવિજયછ મહારાજ પ્રત્યે આ સંમેદ્યન પાતાનું ઋજુ વ્યક્ત કરે હે અને તેમના પ્રમૃતિકારક વિચારા અને ભવ્ય આદર્શ વદલ તેઓશ્રીને તથા તેમને સંપૂર્ણ સહાયક તેઓશ્રીના ગુરુદેવો — પૂ. આચાર્ય શ્રી વિજયપ્રતાપસ્રીયરછ મહારાજ તથા પૂ. આચાર્ય શ્રી વિજયધર્મસ્રીયરછ મહારાજને અભિનંદન પૂર્વ ક ધન્યવાદ આપે છે.

નોંધ — ૩૦ વરસતા લૂતા જસ્ત્રેસશાક જામેશા ઝવહાના આવેશા સુખદ અન્તના સમાચારના "જૈત" પત્રમાંના ઉતારા.

ડે લાઈનું સુખદ સમધાન

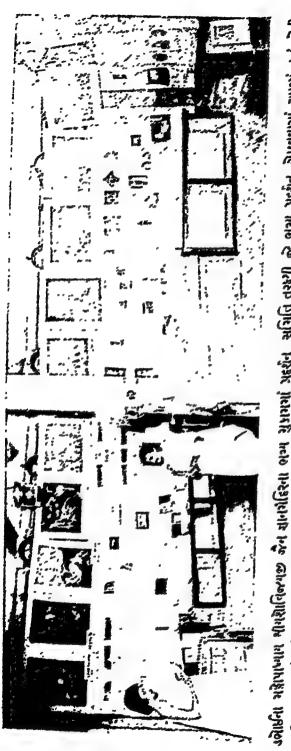
ડભાઇમાં વિજયદેવમૂરિ પક્ષ અને સાત્રર પદ્મ વચ્ચેના દુઃખદ ક્લેશના લાંબા વરસે જે સુખદ અંત આવ્યા તે સાંભગીને રથાનિક ને બહારના ભાઇએાને આનંદ થયા અને પૂ ઉપાધ્યાયછ યુગ્રાવિજયછ મહારાજના પ્રભાવ વધુ પ્રશંસનીય બન્યા, કારણ કે આજ સુધીના અનેક પ્રસંત્રમાં થયેલા પ્રયત્ના શક્ય નફોતા બન્યા, તે આજે બની ગયા.



ધાંગધાના મુંળઇવાસી શેડ પુરસાત્તમ સુરચંદ પ્રદર્શનને ખુલ્લું મૃકયું ત્યાં-ઝડપાએલી તરવીર. ળાજીમાં સત્રાત્સવના આયાજક પ. મૃતિવર શ્રીયરાહ્વિજયછ ઉભા છે.



સત્રતા પ્રયુખ અને સર્કિટના સબ્યાના હિન્દિયા સંત્રેષ્ટ્રમથના અન્કાર છ યુ. મૃતિમહરેડહિંજનઇ પાતાનું લખભ રજ કરી રજા છે.



. તસ્તીર : આ પ્રદર્શનમાં ૫, ઉપાપ્પાયછ ભગવાન શ્રીમદ્દ પશિવિજયછ મકારાજના સ્વક્ષ્ય્તાકારની ભગ્મકૃતિમા. તેમાંભીનું મન્ય ક્ષરતિાપ્પિત સાક્ષિત્ય, તેમ જ તમામ શ્રુદ્ધિત સાબ્રિતા, તથા સ્પપ્રગટ કૃતિઓ વગેરે મૂકવામાં સાવેલું. તેમજ જૈન સિશ્પ—સ્થાપત્ય તથા સિલકળાની પ્રાથમિ અવીચીન ડબોઇના મક્રોપાપ્નામ શ્રીમશોનિજ્યજી ઐન શાનમેક્ટિના ભગ્મ યુકામમાં પ્રદર્શન સમિતિ તસ્કર્મી જે ભગ્ય પ્રદર્શન ગાહનામાં આવ્યું હતું, તેની ભલ્માર્માર્મતિઓ પથ્ય રેજ્ય કરવામાં અાળી હતી. આ સંપ સાધવામાં એ તા જાણીનું જ છે કે મહત્વની આદ્ય પ્રેરુણા પૂ. વિજયમાન્ ત્યરિશના શિષ્યોની હતી. તેઓ છેલા મહિનાઓથી એ ઇન્જા રાખના હતા કે પૂ. ઉપાધ્યાયછ શિયરો:વિજયજીની પ્રતિષ્ઠા તથા સત્રાત્સવ પ્રસંગે એકતા થઈ જાય તા ઉજવણી એર દીપી ઉદે. તેમાં પૂ. મહારાજ શ્રી યશાવિજયજીને તા આ બાબનમાં ખૂબ જ ધગશ હતી. તેઓ સહુ પધાર્યા બીજ બાજી પૂ. આ. શ્રી જંખસૂરિજી મહારાજ પણ પધાર્યા એટલે બંને પક્ષના આચાર્યોના આશીર્વાદ તો હના જ, પણ એ શક્ય કેમ બને ! તે વિચારા ચાલના હતા. ત્યાં પૂ. ઉપાધ્યાયજીની પ્રતિષ્ઠા ને સત્રાત્સવ નિમિત્ત જ ખાસ ભાગ લેવા મુંજઇના આગેવાન શેઠ છત્રવતલાલ પ્રતાપસી, રોઠ વાડીલાલ ચર્વું બુજ, રોઠ પરસાનમ સુરચંદ, તથા શ્રી ખદામીસાહેબ પ્રસન્નમુખભાઈ આવી પહેલિયા. પૂ. આ. શ્રીવિજયમાદનસૃરિજીના શિપ્યોએ આ ત્રિપૃડીને પ્રેરણા કરી, એટલે ફાગણ વિદ સાતનની ળપોરે પ્રતિષ્ઠાના અને સત્રારંબના પહેલા જ દિવસે બંને પશ્ના આગેવાના બેગા થયા. પાંચ વાગનાં સમાધાન થયું. તે તે જ દિવસે બંને પક્ષના આગેવાના વિજયસભાની વાડીમાં સાથે બેસીને જમ્યા.

એની ખુશાલીમાં તે જ વખતે સત્ર ને પ્રતિષ્ઠા પર આવેલી મુંગઇવાળી શ્રીમંત ત્રિયુડીએ આદ્રમના દિવસે સત્રમંડપમાં જ પોતાના તરફથી નવકારસીજમણની જાહેરાત કરી એટલે મંત્રમાં વધુ આનંદ પ્રગટપો. આમ સત્ર અને પ્રતિષ્ઠાના પ્રસંગે મુંગઇના આગેવાનાનું આવવાનું થતાં આ સમાધાન સુલસ થયું. મુંગઇના આગેવાનાની સજ્જડ મહેનત સફળ થઇ હતી. એ માટે સદુ કાઇ પૂ. ઉપલ્ધાયછના પુરુષપ્રમાવને પ્રશ્નેશી રહ્યું છે. આ સમાધાનમાં શીનારવાળા નાયાલાઇ તથા વડાદરાવાળા વદ્ર વાડીભાઇએ પણ ઘણી પ્રશંસનીય મહેનત ઉઠાવી હતી. બાકી, પૃત્રય ગુરુદેવાની અંતરની નિખાલસ દિલની ભાવનાનું આ સુંદર ફળ આવ્યું.

卐

विनयनं स्वरुप त्रेलोक्येऽपि चिनीतानां दृदयते सुम्वमंगिनाम् । त्रेलोक्येऽव्यविनीतानां एश्यतेऽसुखर्मगिनाम् ॥ शानादिविनयेनैव पूज्यत्वाप्तिः श्रुतोदिता । गुरुत्वं हि गुणापेक्षं न स्वेच्छामनुघावति ॥ × शुश्रुपति विनीतः सन् सम्यगेवाववुष्यते । यधायत् कुरते चार्धं मदेन च न मायति॥ दोषाः किल तमांसीय झीयन्ते चिनयेन सा प्रसृतेनांशुजालेन चण्डमातंण्डमण्डलात् ॥ श्रुतस्याप्यतिदोगाय प्रहणं विनयं विना । यधामहानिघानस्य विमाण(न)घनमद्विधिम् ॥ छिग्रते विनयो पस्तु शुश्रुपोऽपि पर्रगपि। तैरव्यप्रेसरीभृय मोक्समार्गे विद्यव्यते ॥ [विनयशिविधिः ઉપા. શ્રી યંદ્રાવિજયજ]

સત્રનાં પ્રમુખનાં બાષણા તથા પૂ. મહારાજશીનાં પ્રવચના

*

નોંધ : સ્વાગતપ્રમુખ શા. ગાલચંદ જેઠાલાલે આપેલા ભાષ્ક્રના ઉતારા અત્ર આપવામાં આવ્યા છે.

॥ श्रीङै।डणपार्श्वनायाय नमोनमः ॥

સ્વાગત પ્રમુખનું વક્તવ્ય,

શ્રીયરોાવિજય સારત્વન સત્રના પ્રમુખ મહાદય, વિક્રજાના, અને અન્ય સન્જાના.

. શ્રીયગ્રોવિજય સારસ્વત સત્રમાં ભાગ લેવા આપ ત્રી કુરફરથી અમારી આ નાનકડી નગરી હેસાઈમાં પદ્માર્થી છા, તે પ્રસંગે આપને આવકાર આપતાં અને આપતું સ્વાગત કરતાં મને અત્યંત આનંદ શાય છે.

અમાર્ રેલોઈ લગલગ ત્રીશ ડ્લારની વસ્તી ધરાવતું નાતું છતાં સોડાયલું તાલુકાતું મથક છે. તેના ઇતિડાય ગોરવર્શના છે. તેનું પ્રાચીન નામ દર્ભાવતી હતું. શાર દેશના મુખ્ય નગરામાં તેની ગણના થતી હતી. પૂર્વ દક્ષિણ શુજરાતમાંથી ઉત્તરમાં જવાના અને પૂર્વ દેશમાંથી દરિયા દિનારાના પંસાત વળેરે લંદરા તરફ જવાના ધારી માર્ગ રસોઇનાંથી પસાર થતો હતા. વેપારના મથક તરીકે તેમ જ ધામિક સંસ્કૃતિની પ્રલલતાને અને તેની આખારી સારી હતી; શુજરાતની દક્ષિણ સરહદના મથકરૂપ આ નગરના સંરચણ માટે નગરની ચારે ય બાલ્યુ મંત્રીશ્વર નેજપાયે લગ્ય કિટલા બંધાવેલા જે આજે સાંગી તૃરી હાલતમાં છતાં પ્રાચીન ગીરવ માથા માતા હતુ પણ વિદ્યાન કે આ કિટલાના દરવામાં આને પ્રાચીન ગીરવ માથા માતા હતુ પણ વિદ્યાના કે આ કિટલાના દરવામાં ઓની લગ્ય અને કલાત્મક કાંતરણી અને તેનું સરેખ સ્થાપત્ય, પ્રતિવર્ષ અનેક કલાપ્રેમીઓને હોર્ણના દર્શને ખેંચી શાવે કે. કિટલાના તમામ દરવામાંઓ પૈકી હીરાસાગાનું સ્થાપત્ય અને તેથીએ વિગેષ એ મહાન સ્થાપત્યના મર્જક દ્વારા કડીયાના રામાંચક અને રસિક ઇતિહાસ, તેના પરિણામે લંધાવાએલું નેનત્રશાય, આ સો કાઈ સેઈ, સાંસગી હમેઈ તા પરાસી તેના છત્રંત સ્થાપત્યને બિસ્ટાવે કે.

આ ઉપરાંત અહીંના અતિલવ્ય અને ક્લાયક ગળનકૃષ્યિ જેનમંદિરા, તેમાં ત્રિરાજમાન મહાપ્રસાવક શ્રી સાહ્યુપાર્શ્વનાથ પ્રસુ વર્લેર મંગલપથ સ.વોહપાદક પ્રતિમાસ્ત્રા અને તેના આધ્યાત્મિક, સંસ્કૃતિ પાયક ભૂતકાલીન ઇતિહાસ, પ્રતિવર્ષે સંખ્યાળંધ જેંન યાત્રિકાને આત્મકલ્યાણના અમૃતપાનનું આમંત્રણ આપે છે. મહાગુજરાતના મંત્રીશ્વર તેજપાલે તેમ જ માળવાના મહામાત્ય પેઘડશાહે ભૂતકાલમાં આ રમણીય જિનમંદિરા બંધાવેલા; એટલું જ નહિં પરંતુ અહિંતું વેદાનાથ મહાદેવનું મંદિર તેમણે બંધાવી આપેલ; એમ આ નગરીના પ્રાચીન ઇતિહાસ જ્ણાવે છે તે સમયમાં આ દર્ભાવતી નગરી શુજરાતની પાંચ મહાનગરીઓ પૈકીની એક નગરી તરીકે ગણના ગણવામાં આવતી હતી.

આ એ જ મહાનગરી છે કે, જ્યાં — જેની ગરખીએ ગામગામ ગુજરાતણા હછ ગાય છે તે — ભક્ત કવિ શ્રી દયારામ જન્મ્યા હતા.

આ એ જ મહાનગરી છે કે જેની પુરુષસૂમિમાંથી પૃ. પંત્યાસ શ્રી રંગવિજયછ મ. તથા પૃ. શ્રી જયવિજયછ મ. તથા પૃ. શ્રી અમરવિજયછ મ. આદિ લગભગ ૬૦ મુનિ-મહાત્માઓ દીક્ષિત થએલા હતા. અને આજે ય સાધુ સાધ્વીએ ઘઈને લગભગ ૪૦ પુરુષા-ત્માએ દીક્ષિત તરીકે વિદ્યમાન છે. આજના ઉત્સવના મુખ્ય પ્રેરક અમારા ઉપકારક, અથાગ પરિશ્રમી, સાહિત્યપ્રેમી, અવધાનકાર પ્. વિદ્રાન મુનિવર શ્રી યશાવિજયછ મહારાજ અહીં જ ખીરાજેલા છે, તેઓ પણ જન્મે હલાઈના જ છે.

આ એ જ મહાનગરી છે કે જ્યાં, આ સત્ર જેના શુભ નામ સાથે સંકળાયેલું છે, તે મહાન ઉપાધ્યાય શ્રી યશાવિજયજી વિ. સં. ૧૭૪૩ માં સ્વર્ગવાસ પાગ્યા હતા. સત્તરમી સદીમાં થયેલા પહ્દર્શનવેત્તા, ન્યાયાચાર્ય, ન્યાયવિશારદ આ 'વાચકજશ'નું નામ તત્કાલીન સંતા, મહાત્માએ અને વિદ્વાનામાં માખરે છે. તેએ શ્રી પાતાની અપ્રતિમ વિદ્વત્તા, વિપુલ સાહિત્યસર્જન અને વિવેચન શક્તિથી લઘુ શ્રી હરિભદ્રાચાર્ય તથા બીજા શ્રી હેમચંદ્રાચાર્ય તરીકે પ્રશંસાને પાગ્યા છે. છેલ્લા ત્રણસા વર્ષમાં તેમના જેવી તાર્દિક મહાન વિભૂતિ જૈન સમાજમાં પ્રકેટી દેખાતી નથી. તેએ શ્રીએ પ્રાષ્ટ્રત – સંસ્કૃત – શુજરાતી અને હિંદ્રી–મારવાહી ભાષામાં ગદ્યપદ્યમાં લગભગ ૩૦૦ જેટલા અન્યા રચેલા છે. જેમાંના કેટલાક પ્રસિદ્ધ છે જ્યોરે કેટલાક અપ્રસિદ્ધ છે અને પ્રાપ્ય છે.

કલિકાલ સર્વત્ર શ્રીમદ્ હેમચંદ્રાચાર્ય પછી જેન સમાજે વિપુલ સાલિત્યના સર્જનકાર અને નવ્યત્યાયના પ્રખર વિદ્વાન તરીકે ખીજા 'જ્યાતિર્ધર'ની ગુજરાતને ભેટ આપી છે.

તેઓશ્રીના સ્વર્ગંગમન બાદ બીજે જ વર્ષે વિ. સં. ૧૭૪૫ માં પ્રતિષ્ટિત તેમની પાદુકા અહિં સ્થાપિત થયેલી છે. તે પાદુકા સ્થાને નૃતન ગુરુમંદિસ્ની રચના થઈ છે. તેની પ્રતિષ્ઠાના શુભ ટાંકણે, અહીં જ બિરાજમાન, વર્તમાન શ્રી થશે.વિજયજી મદારાજની પ્રેરલાથી ઘણાઓને એવી ભાવના થઈ કે સ્તૃપ – પ્રતિષ્ઠા એ તેં આપણી ઘલા – ભાવનાનું જીવતું પ્રેરલાદમક પ્રતીક હોવાથી જરૂરી છે જ: છતાં એ એક બાદાબદિત કે આંજલિ છે. તેમની સાચી બહિત કે આંજલિ તેં તેમની વિદત્તાને છાએ તેવી વિદ્રત્

પસ્પિદ્ર દ્વારા તેઓશ્રીની કૃતિઓનો, તેઓશ્રીનાં સાહિત્યની, તેઓશ્રીના સિકાંતાની ચર્ચા થાય અને ગ્રાનગાપિ દ્વારા કાઇ સ્થાયી યાજના ઘઠી કઢાય તેમાં રહેલી છે. તે બાવનાતું પરિભામ એ આજતું "સારસ્વત સત્ર" છે.

સારસ્વત સત્ર એ સંસ્કાર ઉત્સવ છે અને માનવજીવનમાં તેની કિંમત ઘણી છે. આવા હત્સવ અમારા ગામમાં ઉજવાય છે તેથી અમે ગીરવ અતુભવીએ છીએ.

રાશન પ્રભાવક પૂ. આચાર્ય શ્રીમદ્ વિજયમાહનસ્દૃશ્વિરછ મહારાજના પદ્ધર શિષ્ય પૂ. આગાર્ય શ્રીમદ્ વિજયપતાપસ્દૃશ્વિરછ, તેઓશ્રીના પદ્ધર વિદાન આચાર્ય શ્રીમદ્ વિજયધમંત્રદ્દશ્વિરછ, તથા તેઓશ્રીના શિષ્ય મુનિશ્રી યશે વિજયછ મહારાજના હું અભિ વાદન સહ આભાર માતું છું. જેઓએ જૈન ઇતિહાસમાં યાદગાર રહી ભય તેવા અનેરા પ્રશંગ ને લાભ અમને અપાત્રી છે.

દૂર દૂરથી દરમજલ કરી પધારતાર પૃ. આચાર્ય શ્રીમદ્ર વિજયમતાપસ્રીશ્વરછ મ. તથા પરમપૃત્ય આ. શ્રીમદ્ર વિજયમાણેકસ્રીશ્વરછ મહારાજ તથા પધારેલા પૃ. સાધ્વીછ મહારાજાઓને પણ દું વંદન કરું છું.

ધીજી એક કૃતન્નતા મારે વ્યક્ત કરવી જોઇ એ; તે એ કે એક પિતા પાતાના પુત્ર તરફ જેવા વાત્યસ્થ માવ ધરાવે તેવા જ સાવ સ્ત્ર. પૃત્ર્ય આચાર્ય શ્રીમદ્ વિજયમાહન- સ્ત્રિયરજી મહારાજ અમારા શ્રેત્ર પ્રત્યે ધરાવતા હતા. ત્યાર બાદ તેએાશ્રીના વિદાન અને શાયન પ્રસાવક શિષ્ય – પ્રશિષ્યો પળુ અમારા પ્રત્યે તેવા જ સાવ ધરાવતા આવ્યા છે. દેશાં કના કાર્યિક શુપ્યત્માઓના મ્હાપ્રા સાળ તેએાશ્રીના આન્નાવર્તિ છે. દેશાં કંતું આયંબિલ ખાતું, સેવાયદન સંસ્થા તેએાશ્રીની પ્રેરભાતું જ પરિભામ છે અને પૃત્રય ઉપાધ્યાયજી મહારાજનું જેન સંઘ ઉપરના અને કે ઉપકારનું ત્રણ અદા કરવાના સૌથી વધુ ધમશ, પ્રયાય તેએાશ્રીના જ યસુદાયને છે. જે વાત જેન મમાજને નાબીતી છે. અને પ્ ઉપાધ્યા યજીના આજે ઉજવાતા નાન – ચારિત્રાત્મવના મહાન પ્રયંગ પણ તેમના જ સગારા સંઘના ઓરવરુપ સાધુરત મહારાજ શ્રી યશાવિજયજીને વિનમ્ર વિનંતિ કર્યું છું કે આપે જે ઉત્યાહ ને ધગશ્રથી કાર્ય આદર્શ છે, તે આપના શરૂકેવના શુસાશીવાદથી અવસ્ય પૃર્વુ કરશા. અમે અમારા અતી સહકાર જરૂર આપીશું.

થીજી એક વાત કહું કે, આજથી પંદર વર્ષ ઉપર અમાને આ મહાપુરુષના સમાધિ સ્થળના પુનરાહાર કરવાની ભાવના લાગી, જંગલમાં ખુલ્લા પડેલા સ્થળને શ્રી સંદે નલું છવન આપ્યું અને આજે તા તે સ્થળે, લગ્ય આદિજિન પાદુકા, ભગવાન મહાવીરની નિવાલુભૂમિની ભગ્ય યાદ આપતું રમણીય જલમંદિર, પરમવિભૂતિ પૃ. ઉપાધ્યાય શ્રીમદ્ યશાવિજયજીતું શરુપાદુકા મંદિર, દેસાઈમાં જ સ્વર્મવાત્રી થયેલ પ્. આગાર્ય શ્રીમદ્

વિજયમાહનસૂરીશ્વરજીનું ગુરુમંદિર વગેરેથી એક પરમ શાંતિના ધામ સમું આધ્યાત્મિક સ્થાન ખની ગયું છે. બહારના યાત્રાર્થીએા ત્યાંની પવિત્ર અને આધ્યાત્મિક હવાના કાઈ જદા જ અનુભવ લઇ ને જાય છે.

આ સ્થળના પુનરાત્કારમાં સ્વ. પારેખ શેઠ જીવણલાલ ગુનિલાલ તથા પટેલ શ્રી ચાંદ્રલાલ હી'મતલાલ અને તેમના સાથીદારાના ફાળા મહત્વના છે. ઉપદેશદ્વારા આર્થિક સહાય કરાવનારા જુદા જુદા પૃ. સુનિરાજો ને સાધ્વીજી મહારાજાએ৷ પણ યાદ આવ્યા વિના રહેતા નથી. હજુ અમાર્ કાય અપૂર્ છે. પૂ. ઉપાધ્યાયજી સમસ્ત જેન સંઘના હતા, તાે ગતવિધ જૈન સંઘે જેવા સહકાર આપ્યા છે તેવા. અલ્કે તેઘી વધુ સહકાર આપશે तेवी डूं विनंति ४३ छूं.

પૂ. ઉપાધ્યાયજી આપણે માટે મહાન છે. તેએ નજીકના જ મહાન ઉપકારી છે. भगवान डिभास्वातिवायक्षनी ' बम्यग्दर्शन ज्ञानचारित्राणि मोक्षनागःं 'नी डिप्ति प्रभाहे पू. इपाध्या-યજીની માક્ષપ્રાપ્તિના કારણભૂત કેવી મહાન શ્રદ્ધા, કેવું અગાધ અને અખૃટ જ્ઞાન, અને કેવી અનુપમ ચારિત્રશીલતા હતી; એ અહીં પધારેલા વિદ્રાનાના પ્રવચનાથી સાંભળશા જ. હું તા તેઓને મારા શત શત વંદન કરીને શાસન દેવાને પ્રાર્થના કરું છું કે આવા અનેક ઉપાધ્યાયભૂઓ સમાજમાંથી પાકે અને જૈનશાસન અને જગતને પ્રભાવિત અનાવે.

આ સત્રના હતુ એક જ છે કે પૃ. ઉપાધ્યાયછ જેવી મહાન વ્યક્તિને ખુંવદ્ શુજરાત અને ભારત ઐાળખતું થાય, આટલી ભૂમિકા આ સત્ર ઊભી કરવા માગે છે. જેથી તેમાંથી ભાવિ કાઈ સક્ષિય પરિણામાં જન્મ પામે.

અમારે આંગણે પધારેલા સજ્જનાની સેવા – લક્તિ માટે સ્વાગત સમિતિએ ઉચિત તમામ પ્રભંધ કર્યો છે, છતાં મનુષ્ય સર્વશક્તિમાન તાે નથી જ. શ્વેમ સમજીને અમારી ઉભ્રેષા લાગે તેા ઉદારભાવે શમ્ય ગલુશા તેવી નમ્ર વિનંતિ કરું છું.

આપ સૌ વિદ્વાના જે મહાપુરુષના નામ સાથે જેડાએલા આ સત્રમાં ભાગ લઈ રહ્યા છા, તા મારી આપ સહ્ને વિનંતિ છે કે તેમના અધુરા રહેલા કાર્યને વેગ મળે, તેમની જ્ઞાન, વિદ્વત્તા અને મહાનતાના આમ જનતાને લાબ મળે, એવી કાઈ ચાજના ઘડી કાઢ્યા તા આ સત્રની ઉજવણી સાર્ધક ઘશે.

ફરી એક વાર આપ સીનું અંતઃકરણપૂર્વંક સ્વાગત કરી વિરસું હું.

शिवस्ते सन्त पन्थानः । ॐ शांतिः

દ. યામાગાવામા વિ સં. ૨૦૦૯, ફા. વ ૭-૮, શનિ-રવિ તા. ૭-૮. ૧૯૫ટ વીર સં. ૨૪૭૯

શ્રીયશાવિજયજી સારસ્વત સત્ર ઉદ્ઘાટન પ્રસંગનું વક્તવ્ય

प्रमोदमासाद्य गुणः परेषां, येषां मनिमेज्ञति साम्यसिन्धौ । देदीप्यते नेषु मनः प्रसादा गुणास्त्रयेते चिद्यदीमदन्ति ॥ —श्री यद्यादिशयछ [वक्ष : श्री प्रसन्नभुण सुरुष'६ णदाभी

ગ્રી એનું ગ્રી એસસીનું બાર-એક્સ્પ્રેસ કે.પી બન્ન, સ્પ્રેલકોય કોર્ટ, મુંબદી

મુજારતા અને મુજ્ઞાદ્યાઓ,

"શ્રી યશોવિજયજી સાસ્ત્વવ સત્ર"ના સમારંભનું ઉદ્વાટન કરવાં મને ઘણા જ આનંદ ધાય છે. દું અત્યારે મારી યાેગ્યના અયાેગ્યવાના પ્રશ્ન ચર્ચતા નથી. દું માનું છું કે આ કાર્ય માટે મારા કરતાં વિશેષ લાયક વ્યક્તિને સત્રના સ્ત્રધારા જરૂર મેળવી શક્યા હાેતાં છતાં પણ તેમણે જે મારા તરફ સદ્ભાવ દર્શાવી આ કામ મને સાંખ્યું છે તે માટે દું તેમના આલારી છું.

અન સ્થળ (ડેલાઇ) એ પૃ. શ્રી યગ્રાવિજયછના જીવન પ્રવાસનું અંતિમ સ્થાન હાઇ આ સમારંભ અહિં યોજાય એ સર્વ રીતે યાંગ્ય જ છે. ઘણા લાંબા કાળે પણ આ કાર્ય હાય ધરવામાં આવ્યું છે તે માટે સમારંભના યાજકા અને આ સત્રના અન્ય પ્રેરદા તેમ જ પ્રગઢ અપ્રગઢ સર્વ કાર્યકરાને હું મારા હાર્હિક અભિનંદન આયું હું.

ળ ધુઓ! શી ચગ્રાવિજયજી કાળ હતા, કચાર એમના જન્મ થયા, એમની જીવન થયાં શી હતી, એમણે સાહિયકોંગ શું શું કહું, એમના સમયમાં દેશકાળ અને ધર્મની કેવી પરિસ્થિતિ હતી અને એ પરિસ્થિતિ પરત્વે એમના શું કાળા હતા, એએમ કચાર કાળધર્મ પામ્યા ! વગેરે વિષયો ઉપર વિસ્તૃત વિવેચન કે વિવસ્ત્ર કરી હું આપના સમય નહિ શકે. એ કાર્ય હું અહિ પધારેશા વિકદ્વર્ગને સાંપુ છું. હું ફક્ત દુંકમાં એટલું જ કહીશ કે એમની એમળ આપણે આએ એમણે કરેલી શુતની હપાયનાથી કરીએ છીએ. એ શુતાપાયના એટલી ઉચ્ચ કક્ષાની હતી કે એમને લગવાન શી હરિસદ્ધાર્ અને કલિકાલ સર્વન્ન શી હેમચંદ્રાચાર્ય પછીના પ્રથમ અને અરમ શુત્રધર કહેવામાં આવ્યા છે. લારતીય દર્શનશાસ્ત્રની તલકાલીન એક પણ શાખા એવી ન હતી કે જેમાં એમની પ્રતિસાએ અમકારા ન માર્ચો હોય. એમણે સંસ્તૃત અને પ્રાકૃત લાપામાં લખ્યું એટલું જ નહિં પણ સામાન્ય જનતા માટે શુજરાતી વખેરે લોકલાયમાં પણ વિયુલ સાહિત્યના સ્ત્રચાળ ધર્યો છે. નત્રમચાયના એક પ્રખર અને અદિવીય દ્વીતક તરીકે તેઓ ખ્યાતિ પામ્યા છે, અને કૃશાં શે શારદ, ત્યાચા ચારે વિશાસ્ત્રાદિ અનેક બિઝદોને તેમણે પ્રાપ્ત કર્યો છે.

ગ્રાનની એમની અદ્યોકિક ઉપાસના એતાં ઉપાચ્ચાયશીને દું તે એક "મડાતપસ્તી" કડીને સંબોધીશ. સન્તાના ! આજે આપણે સફગ્રાનની સુસાધનાને અભાવે ફક્ત આદ્મતપના ઉપાસકને જ તપસ્તી કડી સંબોધન કરીએ છીએ. આપણે જાણીએ છીએ કે આદ્મતપ એ તે અભ્યંતર તપની પ્રુર્શને અર્થ જ છે, અને તેથી જ અભ્યંતર તપને બાદ્યતપ કરતાં કોંચી કક્ષામાં મૂક્યું છે. છતાં અલ્યંતર તપના એક પ્રકાર 'સ્વાધ્યાય' છે, તેને આપણે તેઈ એ એટલા આજે અપનાવતા નથી. વિચારા, કે ઉપાધ્યાયશ્રીએ પાતાના જીવન દરમિયાન જે વિપુલ સાહિત્ય સન્ન્યું છે તે માટે તેમણે કેટકેટલા સ્વાધ્યાય કર્યા હશે; અને તેમ કરી કેટકેટલા તપસ્યાના ભાગી થયા હશે! એમણે એ મહાન તપસ્યા કક્ત એકલા પાતાને જ માટે નહિ પણ સ્વ અને પર અન્નેને ઉપકારક નીવડે એ રીતે આદરી અને અપનાવી. એથી જ હું એમને આજે " મહાત પસ્વી" કહી સંબાધું છું અને જૈન સમાજને ભારપૂર્વંક અરજ કરું છું કે કેવળ બાહાતપના ચીલે ન ચાલી, જરા આગળ વધી, આજના સમારંભ જેવા અનેક સારસ્વત સત્ર યાજ સ્વાધ્યાય રૂપ અલ્યંતર તપની સાચી આરાધના કરે.

જેન સમાજ ઉપર ઉપાધ્યાયશ્રીના અનહેદ ઉપકાર હેાવા છતાં જેંન સમાજના અક્ષમ્ય અપરાધ એ છે કે અઢીસા વર્ષના દૂંકા સમય દરમિયાન પછુ એ એમના અમૃલ્ય શ્રંશોને સંપૃષ્ણું પણું સાચવી શક્યો નથી, અને એમના અનેક બંધા હજી અલબ્ય રહ્યા છે. આ માટે આપણું ગમે તે હહાના કાઢીએ પણ મૂળમાં તોઈએ તા આપણા જ્ઞાનાપાસનાની—સ્વાધ્યાયરૂપ તપસ્યાની — જ ખામી છે. છતાં હજી પણું આશા રહે છે કે આપણું અત્યંત ખંતપૂર્વ કે શે હતા રહીશું તા આપણું શુમાન્યું છે તે પૈકીનું ઘણું પુનઃ પ્રાપ્ત કરી શકીશું.

આ ઉપરાંત એક વાતના ખાસ ઉલ્લેખ કરવા જરૂરી ધારૂં છું અને એ, એ છે કે ઉપાધ્યાયશ્રી એક સાચા ક્રિયાહારક અને શુહાચાર પ્રરૂપક પણ હતા. તાતકાલીન ધાતાંબર જેન સમાજમાં જે બગાડા વ્યાપ્ત થઈ ગયા હતા તેને દૂર કરવા એમણે પ્રખર પુરુષાર્થ સેવ્યા હતા. એમના પ્રબળ પ્રતાપી આત્માએ અને એમના સમકાલીન શ્રીસત્યવિજયજી અને શ્રીઆનંદલનજી મહારાજોએ એ કાર્ય એ વખતે કર્યું ન હાત તા જેન સમાજ ભ્રષ્ટાચારના ગર્તમાં કેટલા ખૂંચી જાત તે કલ્પનું સુશ્કેલ નથી.

ઉપાધ્યાયજી જૈન શ્વેનાંબર સંપ્રદાયના હોવા છતાં એમની વિદાવિષયક દરિ એટલી વિશાળ હતી કે પંડિત શ્રીસુખલાલજીએ કહ્યું કે તેમ "એ પાતાના સંપ્રદાય માત્રમાં સમાઈ ન શકી." અને તેથી જ એમણે પાતંજલયાગસ્ત્ર અને દીગંબર સંપ્રદાયના અપ્ટસહસ્ત્રી નામના શ્રંથ ઉપર પણ વ્યાખ્યા લખી છે.

એ મના સમકાલીન શ્રીમાનવિજયજી ઉપાધ્યાજીએ એમને 'શ્રુતકેવલી' કેદી સંભેષ્યા છે. આવી મહાન વિભૂતિ આપણને કલિકાલ સર્વત્ત શ્રીહિમચંદ્રાચાર્ય પછી લગભગ પાંચસા વર્ષે સોપઠ છે. 'હૈમ સારસ્વત સત્ર ' પાટણમાં ઉજવાયા પછી ઘણે વર્ષે આજે આપણને શ્રી યશાવિજયજી સારસ્વત સત્ર સમારંબના પ્રસંગ પ્રાપ્ત ઘયા છે. એના ઉદ્વારન વિધિ આપની આત્તાને વશવર્તી ઘઈ કરતાં પ્રારંભિક શ્લાકમાં જણાવ્યા પ્રમાણે હું ઈચ્છું છું કે ઉપાધ્યાયશ્રીના શુણા વડે પ્રમાદ પામીને અહીં પધારેલ સર્વ વ્યક્તિ સમતા સમુદ્રમાં ગયા બને; તેલાના મનની પ્રસત્તતા ખૂબ વિરાજે. તેમ જ તેમના પણ તે તે શુણા ખૂબ નિર્મળ બને.

અંતમાં આપની મારા તરફની સફભાવનાની લાગણી માટે ફરીયી હાર્દિક ઉપકાર માર્ના, મારા વક્તબ્યની સમાપ્તિ કરતાં આ સત્ર સમારંભને ખુલ્લા યચેલા જહેર કર્યું છું. આપ તેને સહુર્ય વધાવા લેશા એમ ઇચ્છી, ગિવાસ્તે સન્તુ પશ્ચાનઃ, એ પ્રાર્થના સાથે વિરસું છું.

શ્રીયરોાવિજય સારસ્વતસવના પ્રમુખ, તકે, ન્યાય, ચીમાંસારત્ત દાર્શનિક પંડિત શ્રીઈશ્વરચંદ્રછતું પ્રવચન

[વિદદ્વમં, અનેક સાયાવિદ્ શીઇપાસ્થંડજીએ પ્રમુખસ્યાનથી વિદ્વાસમું અને પ્રાજ્યાન પ્રવચન કર્યું હતું. તે પ્રવચન હત્ત્વા શ્રે નારું એ મંત્રમુખ ખનીને સાંસત્યું હતું, અને તે સારે પ્રશ્નેસા પાસ્યું હતું, તે સાયબની પ્રાપ્ય નીધ અત્ર રજ્ કરવામાં અવી છે. સંયુર્ણ વક્ષ્યામ રજ્યું ન કરી શકવા બરસ દિલ્સીર છોએ. સેપા૦]

प्राग्नवर्षमें बहुन चिन्हाछते नाना छोड़ जीवंक छन्यागंक छिये विचार हरते गरे हैं। इसके छिये छोगंनि जीवका संसान्क साथ क्या संवंच है; इस विषयको गंभीर पर्गछा की। इस पर्गछांक परिणायन्वरूप विचारकेंकि प्रधानरूपमें हो विभाग हो गये। एक और वे छोग थे, जो वेदकों प्रमाण मानंन थे, दूसरी छोर वे थे, जिनके छिये वेद प्रमाणभून नहीं था। द्रगुनशाप्तके गंभीर विचार बादमें प्रगट हुए। पहेंछ पहछ जीवनंक श्राचार—स्मवहान्छों छेछर मनमेद हुआ। जो छोग वेदिक थे; उनमें श्रेनेफ इस प्रधानके मां थे जो यज्ञमें प्रशाहमाकों घर्म मानंन थे। उनझी हिंहमें यज्ञकी हिंसा पायक्य नहीं थी। यज्ञमें प्रशाहम छन्ने उनके विचारके श्रमुमार स्वर्गकों प्राप्त होती थी। "श्रित्रेनोमिये पश्चमाछमेन" इत्यदि वेदबाक्यको प्रमाण मानकर मिस्र विस्त यज्ञीमें मिस्न मिस्र पश्चाकों काने थे। इसके श्रीता था। इसके श्रीतिक इस कारने वेदिक छोग जन्मके छारण घंगीको स्ववस्थाको स्वीकार करने थे। यदि छोई श्रमण कुरुमें उपस्न हुआ हो; और उनके गुण—कर्म माद्यागीचिन न हो, उनको शासका ज्ञान न हो, और वह पिष्यामाप्रमिद दे;पेनि द्रिन थी हो. नो भी वे छोग उपको माहण कुरुमें उपस्न होनेक छारण प्रवर्गय मानने थे।

इस फाउँक वैदिङ छोगीर्म प्रायण छोगीकी प्रधानता थी .

दूपी और कुछ स्वतंत्र विचारंक छोग थे। जिनहा बेहिक छोगंकि इन हो पिद्वान्तों पर्
प्रधानरूपछे विगेष था। यद्यार प्राचीन कालमें इस प्रकारंक बेहिक छोगं थी छे; तो यहाँ पद्मुवचको
वेतंप विरुद्ध मानते थे। और वर्णस्यवस्थाको जन्मिनिमिन न मानकर गुग-कर्म निमित्त स्त्रीकृत कर्ते
छ। परंनु इस प्रकारंक छोग रस समयमें अन्य संख्यामें हो गये थे। इस जिये बेहिकचर्मक नामसे
"यहाँ पद्मुवध" और "जन्ममूलक वर्णस्यवस्था" इन हो विद्यान्तिको छिमा जाना था। इसी कालमें
वेतंकि मानत्वालीमें इस प्रकारंक छोगं भी धुंथे जिन्होंने कहा कि वेदंक यहाँस स्वर्गीय पर मिल सकते
हैं पर पद्मिमां के कारण को पाप होना है उसका छुछ दुश्व सीगना पहना है। ये विचारक
माक्त्यमनके अनुपायों थे। पदाभारतमें और सांख्यक छुछ प्रस्थिम यहाँक पद्मुवचको दुश्वका
कारण माना गया है। प्रतिपीमांसिक प्रभावन और कुमिरिक यह आहि आचांसीक मतानुसार यह की
हिसा सबीया थमें है। उसमें पारंख्य भी नहीं। इन सनसेहींक कारण विष्ठ प्रकारंक गैमीर विचार

होने छगे वादमें जब संसारके मूछ कमीं पर विचार होने छगा तब वेदवादी छोग आत्माको और कुछ अन्य पदार्थीको नित्य कहने छगे । पर जो वेदको नहीं मानते थे; उन्होंने मूल कार्णको सर्वथा नित्य नहीं माना। भगवान बुद्ध: जिन्होंने सब पदार्थीको क्षणिक और अनाःमक कहा। भगवान महावीरने वस्तुमात्रको उत्पाद-ज्यय और श्रीव्यसे युक्त बतलाया । इन बचनो पर बादमें होने बाटे चौद और जैन तार्किकान क्षणभंगवाद और अनेका-तवाद-स्यादवादकी दार्शनिक ऋपमें प्रतिप्ता की इन वादोंको समझने के छिये एक सग्छ दृष्टान्त देना उचित सगझता हैं। एक वग्नुको देखने पर साधारण छोगोंकी और विचारकोंकी बुढ़िमें बहुत बड़ा अंतर होता है । (जेवमेंसे रुगान्र निकान्कर) मेरे पास यह रुमाल है। यदि यह पूछा जाय कि इस रुमाल के कारण कीन हैं। और उनका इस रुमाल के साथ क्या संबंध है ! तो साधारण लोगोंकी अपेक्षा विचारकोंके उत्तर बहुत मित्र होंगे । साधारण छोग स्थूल दृष्टिसे देखते हैं और स्थूल वस्तु प्रायः सबको समान दिखाई देती है। इमाछ न्वेत है या पीला है या लाल है ? इस विषयमें तो किसीका मतभेद नहीं हो सकता। यदि श्वेत होगा तो श्वेत कहेंगे, पीला होगा तो पीला कहेंगे । परंतु यदि पूला जाय कि यह रुमाल सुन्दर है या नहीं ! तो सबका उत्तर एक समान नहीं होगा । कुछ फहेंगे, 'मुन्दर है,' कुछ फहेंगे, 'मुन्दर नहीं है ' और कुछ कहेंगे ' मुन्दरता है सही परंतु कुछ अल्प परिमाणमें । ' श्वेत और पीत ऋपके समान सुन्दरता सर्वेथा धाँखोसे नहीं दिखाई देती । उसका संबंध मनके साथ भी है। गन सबका समान नहीं होता । इसिछये एक ही वस्तुमें सीन्दर्यको बुद्धि भिन्न हो जानी है । जो वस्तु बात इन्द्रियोसे अनुभवमें न आवे, जिस पर मनके हारा विचार करना पट्टे. उसके विषयमें मनभेद हो जाना स्वागाविक है।

कमालके कार्य कारण भावका विचार इस प्रकारका है, साथएण लोग इनको उल्टा मनव बैठ हैं. वे तो यह कहने लगते हैं कि रुमालमें तन्तु रहते हैं. परंतु यह विचार दार्शनिक—दिश्में संगत नहीं है। तन्तु कारण हैं। पैट कार्य है। कारण विचा कार्य नहीं रह सकता। कारण कार्य है विचा रहता है। तन्तु दुकान पर परे गहने हैं उस समय न रुमाल होता है, म धोनी होनी है, न कुरता होता है। जब रुमाल या धोनी बनती है, तब रुमाल या धोनी विचा तन्तु और नहीं दिगाई देती। 'तन्तु पटके साथ होने हैं' इस विचयमें न्याय, वैशेषिक, मांत्य, पूर्वभीमांना, घीड और जीनीका कोई मतभेद नहीं।

परंतु प्रश्न हुआ कि तन्तु और पट परम्पर भिन्न हैं या अभिन्न है ने। सब नीगेंफ़ विनार भिन्न हो गये ।

गौतमीय न्यायको माननेवाहीने कहा - 'तन्तु और पट गर्देश भिन्न है। पट नन्द्रीवें पहेले नहीं होता । तन्तु पटको टापल करने हैं । पट स्वयको है । तन्त्र व्यवक हैं । व्यवकी अवयवेषि सर्वया भिन्न है । जब हमको पट दिखाई देना है नव केवल पट्ही नहीं दिखाई देजा किन्तु तन्तु और पट दोनों ही दिखाई देते हैं. वैद्योपिकोंका भी यही मन्त्रव्य है ।

सील्यों हा सत है 'पट नन्नुओं में सबेशा भिन्न नहीं परंनु नन्तुश्रीमें विश्वमान है। केवल अल्यक रूपने हैं। जब सहकारी कारण निलंत हैं तो तो पट तन्नुश्रीमें अल्यक रूपने रहता है वहीं प्रयट हो जाता है। संसारमें अनेक पदार्थ हैं। जो पहिले प्रयट नहीं होते। पर वादमें सहकारी कारणके योगमें प्रयट हो जाते हैं। जैसे दूशमें दहीं, दहीं में मक्तन, तिलमें तेल । इसी प्रकारने हृशमें दहीं में दहीं शें महत्त्वन ही जोर बादमें उत्पन्न हो जाता है। तो मिर्झान कहता अनुचिन है। यदि दूशमें दहीं सबेशा न हो और बादमें उत्पन्न हो जाता है। तो मिर्झान भी दहीं अल्यक हो जाता काहिये। पट सी नन्तुओं पहिले अल्यक क्षते रहना है। वादमें सहकारी कारणके योगने व्यक्त हो उठता है। सील्योंका यह मन 'सत्कायेवाद' नामने प्रसिद्ध है।

चीड तार्किकीन कहा — उन्तु कीर पट हैं तो मिन्न, पर नैयायिकीन मनके समान सर्वया मिन्न नहीं हैं। तन्तुकीके समृहको पट कहने हैं। उन्तु मिलकर जब विशिष्ट आक्रार वारण करने हैं तो उनका नाम पट हो जाना है। एक एक तन्तु पटके क्यमें दिखाई देना है, पर उनका समृह पटके रूपमें दिखाई देने कराना है। बीडोंका पक्ष 'संघानवाद' नामने असिंह है।

नैन नृत्वंबचाओंने इहा — नृत्तु और पट न सर्वथा दिन हैं या न सर्वथा अभिन हैं। छित्तु दिन और आमन हैं। उत्तुओंने पट सिन हैं इसाछ्ये नृत्तु और पटका संबंध है। यदि पट सर्वथा नृत्तुओंने अभिन हो नो उनका संबंध नहीं हो सकता। जिस प्रकार नृत्तु अपने स्वत्यमें अभिन हैं इसिंखें उनका अपने स्वत्यमें साथ छेड़ें संबंध नहीं प्रनीन होता। पटकी दृष्टिं उसका नृत्तुओंने साथ मेह है। परंतु नृत्तुओंने दृष्टिं पट नृत्तुस्य है। अर्थन उसका नेह नहीं है।

त्ति परिमापित अनुमार तन्तु और पर इत्यही द्राष्ट्रं अपित-एक और प्यांस्क्री द्राष्ट्रं पित्र-अतेक हैं। सन्ति तिनदर्शन अनेकान्तवाद पर अधित है। अनेकान्तवादका प्रतिपादन जैन आगनप्रश्रोमें संक्षित नरमें है। उसका दिन्तार जैनस्टके अनेतान्तर और दिगन्दर दोनों संप्रदायंकि आनार्योन अपने अपने प्रत्योमें क्रिया है। अनेतान्दर संप्रदायंक उनान्द्रान, मिदसेन दिवाकर, निनन्द्रगणि, मह्मादी, इतिमहम्पि, बादीदेदप्ति, हैमनन्द्रान्त्रीय, उपान्याय यदोविजयत्ती, आदिने इन्छा विश्वन निक्रण क्रिया है। दिगन्दर संप्रदायंक समन्त्रप्त, प्रत्यक्रके, विद्यानदेन न्द्रामी, ममान्द्रन, आदिने अपने प्रत्योमें उसका विन्तार क्रिया है।

में मनश्ता हूँ — प्राचीत शाखेत वैदिश और अवैदिश अनेश तार्थिक अनेशास्त्राद्धा स्त्रीकार ऋते थे। गीटर्नाय न्यायन्त्रीनंते चतुथे अध्यायमें कुळ एकान्यवादीका नत देखर उनका स्त्राहत क्रिया है। त्यायद्गीनंते अनुसार कुळ एकान्यवादी सब बस्तुबीको अमाव-स्वरूप सानने थे। कुछ वैसे थे, जो सब वस्तुओंको सत्स्वरूप कहते थे। कुछ कहते थे बिना निमित्त पदार्थेंाकी उत्पत्ति होती है। कुछ कहते थे केवल एक तत्व सत् है। इन सब मतोंका निपेध करनेके कारण यह सिद्ध है कि न्यायदर्शनके कर्ता एकान्तवादको युक्त नहीं मानते थे।

निःसन्देह नैयायिकोंके अनेकान्तवादमें और जैनोंके अनेकान्तवादमें भेद है। पर उसमें अत्यंत विरोध नहीं।

नैयायिकोंके अनुसार कुछ पदार्थ सर्वथा नित्य हैं और कुछ पदार्थ सर्वथा अनित्य हैं। परंतु जैन सिद्धान्तके अनुसार प्रत्येक पदार्थ नित्य और अनित्य है। अनेकान्तवादके कुछ अंशोंमें वैदिक दर्शनोंका मत सर्वथा मिछता है। मीमांसक छोग कारण और कार्यको सर्वथा मिन्न और अभिन्न मानते हैं। वास्तवमें मीमांसक ही नहीं सांख्य और पातञ्जल योग सिद्धान्तके अनुसार मी कार्य-कारण भिन्न और अभिन्न हैं। गुण और गुणी, सामान्य और विशेषका भी भेदाभेद है।

अद्वैतसिदिकी टीका — छघुचन्द्रिकामें श्रीव्रह्मानन्दनी जैन, सांख्य और पातस्रल मतको गुण और गुणो भादिमें भेदाभेदवादी मानते हैं। प्राचीन चौद्ध भी इस प्रकारके थे; जिनके अनुसार कारण और कार्यमें भेदाभेद वाद था। अभिधर्मकोशकी आचार्य स्थिरमितने व्याख्या लिखी है, उसके अनुसार सर्वास्तिकवादी सत्कार्यवादको मानते थे। और सत्कार्यवाद भेदाभेद पर प्रतिष्ठित है।

एकान्तवाद और अनेकान्तवादमें चाहे कितना भी विरोध हो; परन्तु इस विषयमें कोई मतमेद नहीं होना चाहिये कि 'अनेकान्तवाद एक आस्तिकवाद है।' कुछ प्राचीन छोगोंने नास्तिक़ कहकर जैन सिद्धान्तकी उपेक्षा की है। परन्तु यह उचित नहीं। जिन छोगोंने जैन मतको नास्तिक कहा है उसके दो कारण मुख्य रूपमें थे।

पहला कारण यह था कि जैनाचार्य जगत्के कर्ता स्वरूप परमात्माकी सत्ता नहीं मानते । इस कारण जैन मत उनकी दृष्टिमें नास्तिक मत है । परन्तु जगत्कर्ताकी अस्वीकृतिके कारण नास्तिक कहना अनुचित है ।

पूर्वमीमांसा के आचार्य प्रभाकर, क्रुमारिल भट्ट, मण्डनिमश्र वैदिक और आस्तिक हैं। इसमें किसीका मतमेद नहीं हो सकता। इन तीनों आचार्योंने कमसे बृहती श्लोकवार्तिक और विधिविवे-कमें जगत् कर्ता ईश्वरका निषेध किया है। इनके अनुसार वेदमें जगत् कर्ताका प्रतिपादन नहीं है। जगत् कर्ताको न मानने पर भी पूर्वमीमांसा के वे आचार्य वैदिक और आस्तिक माने जाते हैं तो जैनमत भी उनके समान आस्तिक माना जाना चाहिये।

दूसरी वात-जिसके कारण जैनोंको नास्तिक कहा, जाता है-वह है "वैदिक यज्ञोंका विरोध।"
परन्तु वैदिक यज्ञोंका विरोध कई सांख्याचार्य भी करते हैं। फिर भी वे नास्तिक नहीं

माने जाते । उन सांख्याचार्योक समान जैनमत को मी दैदिक यज्ञों के दिगेव के कारण नांग्तिक नहीं कहा जाना चाहिये ।

ब्रह्मसूत्र के साध्यमें सगदापाद शुंकराचार्य 'पाक्रगत्र' सनको आछोचनामें एक वचन उद्देन करते हैं। जिसके अनुसार ब्राण्डिस्य सहिष्टि चार्ग वेदोंमें परम निःश्रेयसको न प्राप्त कर 'पाक्रगत्र' शासका प्रवचन किया था। इनना वेद दिरुट कहने पर भी 'पाक्रगत्र' मन के माननेवांचे नास्तिक नहीं माने जाने इस अवस्थामें जैनमन अवैदिक होनेके कारण नास्तिक नहीं हो सकता।

आत्माको सर्वथा नित्य मानने के कारण वेदवादी दार्शनिक अनेकान्तवादं मिन हो जाउँ हैं। नैयायिक-वैदोषिक हो या सांख्य पातखन्छ, वेदान्त्री, नीर्मासक या कोई मी क्यों न हो। यदि वैदिक है तो वह आत्माको मुर्वधा नित्य मानता है। बीट और जैन इम विषयमें मिन्न मत ग्लेट हैं।

मांज्य इहते हैं "अगरिजानिनो हि सर्वे सात्राः, खते चिति शक्तेः" अर्थात् सत्र पदार्थ कुणकार्ये परिजानी हैं । केदछ चैतन्य खक्स आत्मा अपरिजानी है ।

चींद इहते हैं सभी मीतिक और अमीतिक पदार्थ कांणक हैं। आला भी कृणिक है।

जेन तार्किकोका कहना है—एव परार्थ अभिक माँ हैं। अश्रीप्तक माँ हैं। नित्य माँ हैं स्थानत्य मी हैं। जिस प्रकार एवणे करक, कंक्रम, अंग्री आदिमें अनुगत है परंच करक, कंक्रम आदि अनुगत नहीं हैं. इसी प्रकार वन्द्रमार्थमें द्रव्य अनुगत गहता है और पर्याय परिवर्तनशील मिन गहता है। चेतनतत्त्वमें हर्ष-विषाद, मुल-दुःख आदि पर्याय परिवर्तनशील—मिन मिन हैं और ज्ञान—चेतन्य अंश अनुगत है। ज्ञानका हर्ष-विषादादिक साथ मेदानेद है।

अनेकान्द्रवादका अव्येत विस्तृत निक्षण इत्सिक्ष्त्रि कादि आचार्योने क्रिया है।

केनदर्शनंत्र साथ अन्यदर्शनोका अनेक विषयमें महमेद मी है। इन सब मनसेदंकि ग्हांते हुए भी आसम्बक्षो स्वीकार करनेके कारण अन्य आसमादियंकि अनुसार जैन आसमाद मी प्राणिमानका कर्म्याणकारी है।

जैनदर्शन के प्रधानतथा दार्शनिक आचार्योमें प्राचीन काष्टके चार आचार्य प्रधान हैं (१) आचार्य सिद्धमेन दिशाकर (२) स्र्रिमञ्जादी (३) जिन्मद्रगणिकनायनण और (३) आचार्य हिर्न्सदर्शि । अपने काष्ट्रमें इन निर्मे आचार्योने कन्य-दर्शनीक मतीका निगकरण करके चैनतत्वकी प्राचाणिकता की प्रकट किया है ।

रयाग्हरी शनान्दीमें पिथिकांक गेंग्झोपाच्यायन दब नव्यन्यायका प्रधानन्त्रणे प्रकाशन क्रके युगान्तर उपस्थित क्रिया और उसका प्रभाव माग्तके प्रवृति समन्त दशेनी पर पड़ा टबरे हैन, क्रहेन, विशिष्टाहेन कार्तके मानने बांके मुनी विद्यानेते नव्यन्यायकी ग्रैकीका आश्रय केकर क्रपने अपने मनका निक्षण करना आरंभ किया। न्याग्हरी सदी के अनंतर होनेबांके जैन और बीहसनुके विद्वानोंमें कोई इस प्रकारका नहीं हुआ कि जिसने नज्यतर्ककी शिलीका आश्रय लेकर अपने मतका

प्रन्तु अठारहवीं सदीमें 'न्यायविद्यारद' 'न्यायाचार्य' उपाध्याय यशोविजयजी इस प्रकारके विद्वान् हुए; जिन्होंने नव्यतर्कका आश्रय छेकर जैनतत्त्वो—सिद्धान्तोंकी प्रामाणिकता प्रतिष्ठित कर दी।

आचार्य हरिभद्रसूरिजी आदि प्रकाण्ड विद्वानीने जिस तर्कका—हेतुओंका आश्रय छिया था; उसके साथ नये हेतुओंका आविष्कार करके उन्होंने अनेकान्तवादकी पुष्टि की थी। उसके दो चार उदाहरण छीजिये.।

अनेकान्तवादके अनुसार प्रत्येक वस्तु अपने द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावकी अपेक्षासे सत् है । और पर द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावकी अपेक्षासे असत् है । इस दो प्रकारकी प्रतीतिके कारण आचार्य हरिमद्र-स्रिजी आदिने वस्तुको सत् और असत् वताया । यशोविजयजी उपाध्याय कहते हैं कि भाव पदार्थ अभावके अभाव रवस्त्य है; इसल्ये सत् और असत् रूप है । साधारण रूपसे घट आदिका भाव-रूप (विना !) अपेक्षा से प्रतीत नहीं होता । पर यदि उस भःवको अपने अभावके अभावरूपसे निरूपण करे तो उसका ज्ञान भी विना अपेक्षासे नहीं हो सकता । अभावका ज्ञान यद्यपि सदा अपेक्षासे होता है, पर जब प्रमेय आदि रूपसे किया जाय तो उसमें प्रतियोगी आदिकी अपेक्षा नहीं होती ।

इसी प्रकार यशोविजयजी महाराजने चित्रक्रपके दृष्टान्तसे भी पदार्थोंको एकाकार और अने-काकार सिद्ध किया है। जब किसी वस्तुमें नानारूप प्रतीत होते हैं। तब चित्रक्रपकी दृष्टिसे वह क्रम एक प्रतीत होता है। पर शुक्छ, भीत आदिकी दृष्टिसे वही अनेक प्रतीत होता है। चित्रक्रम के समान प्रश्येक दृष्य एक भी है अनेक भी है।

"श्री महावीरस्तव "की व्याख्या-न्यायखण्डखाद्यमें श्री यशोविजयजी कहते हैं कि दीिष्ठति-कार रघुनाथ शिरोमणि महाचार्यके अनुयायी तार्किक एक द्रव्य में संयोगी के भेदको अव्याप्यवृत्ति मानते हैं। जब अन्य स्थलों मेद व्याप्यवृत्ति होते हुने भी संयोगी द्रव्यमें अव्याप्यवृत्ति हो जाता है। तब सत्त्व और असत्त्व भी एक वस्तुमें अपेक्षाके भेदसे विना विरोधसे रह सकते हैं।

इस प्रकारके अनेक हेतु हैं। जिनका श्री यशोविजयजी महाराजने अपने प्रन्थोंमें पहछा ही आविष्कार किया है।

महात्मा श्री यशोविजयका पाण्डित्य वड़ा व्यापक था । उन्होंने अनेक प्रन्थ छिखे; जो अनेक विषयों पर हैं । अनेक विषयों पर विस्तृत गंभीर प्रन्थोंकी रचना करने वाले विद्वान अन्यमतों में भी इने गिने ही हुझे हैं । अद्वैतमतमें माधवाचार्य १५० से अधिक प्रन्थोंके लेखक हैं । व्याकरण, मीमांसा, वेदान्त । आदिके विषयों इनके प्रन्थ पाये जाते हैं । अद्वैत मतके विद्वान श्रीअप्यथदीक्षित

भी १०० में अधिक प्रन्थंकि रचिया हैं। विशिष्ठाईनके श्रीकवि, तार्किक केसरी चेंकटाचार्य भी अनेक दार्शनिक प्रवन्धी और अनेक महाकाव्यंकि रचयिना हैं।

इस प्रकारमे श्रीयशोविजयजीने भी ३०० में अधिक प्रत्थ छिखे हैं । सिर्फ संस्कृत में ही नहीं, प्राकृत, हिन्दों, सारवाडी, और गुजरानी सापामें भी अनेक प्रत्थोंकी रचना की ।

ऐसी पुण्य विश्वित यदि यूरोप देशमें जन्म छिया होना नो उस महासाका घर घर पर प्जन होना, और उन्होंक माहित्यक प्रकाशन और प्रचारक छिए प्रा पूरा प्रयन करते तो सारत, गुजरान और भारतक जैन समाज ऐसी महान विश्विक छिए, उसके साहित्यके छिए, करम उठानेमें क्या आछम्य करेगा है

यह दुःख की बान है कि अठाग्हवीं सर्दोंमें होने पर भी उनके अनेक प्रन्थ मिछने नहीं। हम छोगाकी असावधाना आदिके कारण उनके अनेक प्रत्थ दुर्छम हो गये।

यदि आप छोग उनके धन्थां के प्रकाशन और पठन पाठनके लिये मुख्यवरियन प्रयन करेंगे तो उसने जैन समाजका हो नहीं, समन्त सार्तीयीका महान उपकार होगा। 🗙 🗙 [अपूर्ण]



ગુરુ આશાનના વિષે

न्नमञ्प युतस्यापि शुरोराचारशालिनः । धीलना सस्मसात् कुर्याद्गुणं विद्यग्विन्यनम् ॥१॥ शक्त्यप्र ज्यल्नव्यार्लीसहकोचातिशायिनि । यनन्तदुःखजननी कीर्तिता गुरुधालना ॥२॥

प्रकृत्या सद्रकः धान्त्रो विनीतो सृदुक्तमः । स्रे मिथ्याद्रगप्युक्तः परमानन्द्रसागतः ॥

ઉપા શ્રી ચંધાવિજયજ]

[કાર્લિ'ફિલ્લ

प्रयन्थाः प्राचीनाः परिचयमिताः खेळितितराम् , नर्वाना त्रकांळी इदि विदित्तमेतत् कविकुछे । अस्तो तेनः कार्याचित्रुचचित्रयप्राप्तिकदो, मुद्दो यच्छत्यच्छः समय-नयमीमांसितत्रुपाम् ॥

ક્યા. શ્રી મંદ્રાવિજયજ]

[न्यायणष्ट्रणाद्य प्रश्नहित्त

પૂ. આચાર્ય શ્રીવિજયધર્મસૂરિજી મહારાજનું પ્રવચન

[બીન્ન દિવસની સવારની સત્રની બેંઠક પૃર્ણ થતાં, સત્રના મત્રીની ખાસ વિનંતિથી, સત્રસંથાન મુનિશ્રીના ગુરુછ પ્રખરવક્તા વિદ્વાન આચાર્ય શ્રીમદ્ વિન્યધર્મ સ્ટ્રી જેરજી મહારાજે આપેલા દ્રેકા પ્રવચનના સાર લાગ]

મંગલાચરા કર્યા બાદ-તેઓ શ્રીએ જણાવ્યું કે મહિષ એનાં જીવન મુગ ધથી મલમલતા અને અતિમનાહર બગીચા જેવાં હાય છે. અનેક આત્માઓને તે મુગ ધી બગીચા મુંદર મુવાસ આપે છે એટલું જ નહીં પરંતુ એ બગીચાની મુગ ધમાં એટલી શક્તિ હાય છે કે કાઇપણ પ્રકારની દુગ ધ તેને અસર નથી કરતી, પણ પાતાની તીવ્ર મુવાસથી દુગ ધની બદબાનું નિવારણ કરવામાં તેને વિજયની પ્રાપ્તિ થાય છે.

પૂ. મહાપાધ્યાય શ્રીમદ્ યશાવિજયછ મહારાજનું છવન પછુ સુગંધથી મદમદતા ખગીયા જેનું છે. અનંતકાળથી કામ, કોધ, માન, માયા, મમતા વગેરે બદબા—દુર્ગ ધથી આપણા સંસારી આત્માઓનાં હૈયાઓ ઉકરહા જેવાં બની ગયાં છે. એ બદબાનું નિવારછ્યું કરી એ જ હૈયામાં સદ્યુણાની સુવાસ ઉત્પન્ન કરવા માટે તીર્થ કર ભગવંતાએ ધમે તીર્થ રૂપી સુગંધી અગીચાની સ્થાપના કરી છે. જેન શાસનમાં છેલ્લા તીર્થ કર શ્રમણ ભગવાન મહા વીર થયા. વિશ્વના ઉદ્ધાર માટે એ મહાપુરુષે ધમે તીર્થ રૂપી અગીચા સ્થાપ્યા, જેને આજે લગભગ અહી હન્નર વર્ષ પસાર થવા છતાં યે તે અગીચા, આજે પણ અસુક પ્રમાણમાં સુવાસિત છે. તેમાં કારણું ને કાઈપણ હાય તો પૂ. શ્રીમદ્ યશાવિજયછ મહારાજ અને તે પહેલાના કાળમાં થયેલા તેમના જેવા શુત અને સંયમસ્થવિર મહાપુરુષા જ છે.

જેમ કાઈ શ્રીમ'તની શરાકી પેઢી સાત સાત પેઢીઓથી એક જ નામવાળી અને સારામાં સારી શાહુકારી સાથે ચાલી આવતી હોય તો તેમાં, એ પેઢીની સ્થાપના કરનાર વ્યક્તિનો વારસદારાની વકાદારી કુશળતા અને ભાગ્યળળ સુખ્ય હાય છે. તે જ પ્રમાણે પ્રભુશાસનની પેઢી, અઢી અઢી હજાર વરસા પસાર થવા છતાં આજે પણ જે વિદ્યમાન અને વિજયવંતી છે, તેમાં કારણ એ પેઢીના સુવિહિત આચાય ભગવંતા વગેરેની વકાદારી, અને તેઓની સમ્યક્ષ્યુત અને સંયમની અતુપમ આરાધના જ છે.

એ મહાપુરુષની બાલ્યવયમાં દીક્ષા, દીક્ષા બાદ અખંડ ગ્રુરુકુળવાસ, ગ્રુરુકુળવાસમાં જૈન દર્શનના સુંદરતમ અલ્યાસ, કારી અને આગા જેવા સ્થાનમાં જઈ ને ન્યાય, ભૌદ વગેરે છએ દર્શનના અલ્યાસ માટે અવિસ્ત પરિશ્રમ, ધનજી સુરા નામના શ્રાવકે તેઓશ્રીના એ અલ્યાસમાં કરેલ સંપૃષ્ટું સહાય, દરેક સ્પળે સંયમની આરાધનામાં સદાય જાગૃત પૃ શુરુદેવ શ્રી નયવિજય મહારાજની છત્રહાયા અને તે કારણે પૃથ્ય શ્રીમદ્ યશ્રીવિજય મહારાજની પણ શ્રહા અને સંયમમાં ખૂબ ખૂબ અલિકચિ તથા આરાધના, આ ખધાય કારણે પૃ. શ્રી યશે(વિજયજી જેન શાસનમાં એક મહાન સમર્ષ કુર'ધર મુક્ય તરીકે પંકાયા છે.

પૃ. ઉપાધ્યાયછ યહારાજનું આજે સંસ્કૃત, પ્રાકૃત અને ગુજરાતી લાષામાં જે વિપુલ સાહિત્ય ઉપલબ્ધ છે, તેમ જ અનુપલબ્ધનો જે નામાવલી પ્રાપ્ત થાય છે; તે ઉપરથી તેઓએ પાતાના છવનમાં સમય ગ્રાનની ખૂબ જ ઉપાયના કરી હાવાનું સિદ્ધ થાય છે. કાઈપણ સ્વ કે પરપક્ષના વિષયને વર્ણવવાની તેઓશ્રીની અદ્દુસ્ત શક્તિ, એ ગંગાકિનારે સરસ્વતી દેવીએ પ્રયત્ન થઈ આપેલા વરદાનની પણ પ્રતીતિ કરાવ છે. એમ છતાં શ્રદ્ધા-સમ્યગ્દર્શન અને સમ્યક્યાસ્ત્રિની આરાધના—ઉપાયના પણ એ મહાપુરુપની જરાય એાછી સમજવાની નથી. એ મહિપેએ કરેલ અત્યુત્તમ તીર્યો કર પદ પ્રાપ્ત કરાવનારી શીવિશાનિસ્થાનક તપની અદ્દુસ્ત આરાધના સંયમની ઉપાયના માટે સ શીસ્ત્રરૂપ છે. જેનશાસન ઉપર શરૂ થયેલા સ્વપસ અને પરપક્ષના આક્રમણે સામે તેઓશ્રીએ ઉપાયલી તું છેશ, તેમ જ તે અગે તેઓશ્રી ઉપર આવેલ અનેક આપત્તિઓ વગેરે બાબતા વીચ્યાસનની વફાદારી સાથેની, તેઓશ્રીની સમ્યગૃદ્ધાની અનુપમ આરાધના માટેની સચાર પ્રતીતિ કરાવે છે. પૃત્ર ઉપાધ્યાયછ એટલે શ્રદ્ધા, ગ્રાન અને સંયમ એ ત્રિવેણી સંગમનું જંબમ તીર્થ છે.

ચહા અને સંયમના જળ વિનાતું જ્ઞાન ગમ તેટલા વિશાળ પ્રમાણમાં કાઈપણ વ્યક્તિએ સંપાદન કરેલ દાય તાં તે એકલા જ્ઞાનની કાઈપણ ધમં કે સંપ્રદાયમાં કીંમત અંકાઇ નથી. જ્ઞાન લેલે કાઇનામાં એકલે કે વધુ દાય, પરંતુ જે મહાતુલાવતું જીવન શહા અને સંયમથી ગુવાસિત ખન્યું છે તે મહાતુલાવાનાં જીવન જ ધન્ય છે, અને એવા મહાત્યાઓનાં જીવન જ વળે ય કાળમાં વંદનીય, પ્રત્નીય બન્યાં છે. શહા અને સંયમ વિનાતું જ્ઞાન તે ઉપરથી રળીયામણા દેખાતા મુગંધ વિનાના કુલ જેવું અથવા ઇમીટેશન આબ્રાણે જેવું છે....આ પહાસુઝપમાં તા શહાજ્ઞાન—ગ્રાસ્ત્રિગ્રેપી ત્રિવેલ્ફોના જે સ્પેગ થયા હતા, તેથી તેએ જીવનને ધન્ય અનાવી બયા અને અન્ય આત્માઓ ધન્ય અને એ માટે અતુપમ લગ્ય વારસો અને આદર્શ મૃકતા ગયા. આપણે એ વારસોને કાપાયીએ! અને એમના આદર્શીને અપનાવીએ! એ પ્રાર્થના !

સત્રના જન્મદાતા પૂ. યશાવિજયજી મહારાજનું મનનીય પ્રવચન

卐

*

પંચવર્ષીય કે દશવર્ષીય યાજના તળ

ઉપાધ્યાયજીના અક્ષરદેહને પ્રકાશિત કરા !

[પ્રત્ય સનિરાજ શ્રી યશાવિજયછ મહારાજે સત્રની પૂર્ણાદ્વતિ પ્રસંગ જે પ્રેરક વક્તાવ્ય કરેલું તેના હપયાળા ભાગ 'જૈન ' પત્રમાંથી અહીં રજૂ કરવામાં આવ્યા છે.]

મારંભમાં મંગલ શ્લાક બોલી, અન્ય પ્રસ્તાવ કર્યાં બાદ મહારાજશ્રીએ જ છુાવ્યું હતું કે-

પૂ. ઉપાધ્યાયજનું સ્મરા એટલે એક દિબ્ય વિભૂતિનાં દર્શન.

પુ. ઉપાધ્યાયજી એટલે ભૂતકાલીન કુત્રિકાપણ સરખી રત્નત્રચીની નાણે કુત્રિકાપણ.

ં પૂ. ઉપાધ્યાય**છ એટલે જિનશાસનના વિજય ધ્વજ ક્**રકાવનાર મહાન જેહો.

પૂ. ઉપાધ્યાયભ એટલે જવનચરિત્રના તેજઃપુજ.

'પૂ. ઉપાધ્યાયજનું વાહ્મય-સાહિત્ય એટલે વિવિધ જ્ઞાનરતનના અખૂટ ભંડાર.

પૂ. ઉપાધ્યાયજની યાદ એટલે સાચા મહાન્ ક્રાન્તિકારીનું તેજોમય દશધન.

. પૂ. ઉપાધ્યાયજના પુરુષાથ એટલે મહાન્ કમધ્યાગીની મહાસાધના.

પૂ. ઉપાધ્યાયભની વાણી એટલે મહાન આષ દર્શના દિવ્ય પયગામ.

પૃ. ઉપાધ્યાયજાતું દર્શન એટલે અવતરેલી સાક્ષાત્ સરસ્વતી.

પૂ. ઉપાધ્યાયભ એટલે શ્રી સિહસેન દિવાકરભ શ્રીજિનભદગણ ક્ષમાશ્રમણ્ય શ્રીહરિભદ્રસૂરિભ, શ્રીહેમચંદ્રાચાર્યજી, અને શ્રોમલ્લવાદિભના જ્ઞાનાવતાર.

પૂ. ઉપાધ્યાયજ એટલે પરસ્પરવિરાધી, અવિરાધી મહાન શક્તિઓનું એકીકરનુ. આવી આવી તેા અનેક ઉપમાંએા આપી શકાય.

ૂં, ઉપાધ્યાયશ્રીજીને હું જેટલાં ખિરદાવું એટલું ઓછું જ છે. એમના અખૃટ ઉપકારા તરફ જેઉં છું ત્યારે સ્તગ્ધ થઇ જાઉં છું. વધુ કહું તાે એમના અગણ્ય ઉપકારાતું અસિ-વાદન કરવા માટે શબ્દકાષમાંથી શબ્દો પણુ મળી શકે તેમ નથી. ખરી વાત તે। भे જ છે કે મહાન્ વિભૃતિઓની મહાનતા, મારા જેવાં વામણા કિ માપી ન શકે તે તે। गगनं गगनाकारंની ઉદિત અતુસાર તેમના જ જેવા કાઈ મહાન પુરુષ જ માપી શકે.

પ. ઉપાધ્યાયછની સાગ્રી વિદ્વત્તા અને તેથી કૃક્ષિત સચ્ચારિત્રની પ્રભાશી છો.પતી મહાનતા—એ અન્તેના વિસ્તૃત દર્શન—પસ્થિયમાં તેમનું સમગ્ર છત્રન સમાઈ જાય છે. આજે તેમનું એ છત્રન કહેવાના સમય નથી; છતાં એએ!શીના શ્રાટા પશ્ચિય નિર્ણય દિશાસ તમને મહ્યા છે ને મળશે.

હું તા અત્યારે પૃ. ઉપાધ્યાયછ લગવાનના વર્તમાન પ્રસંગ જે ઉજવાઈ રહ્યો છે તેનું ખીજક શું, તે ? તથા માર્ં જે કંઈ કથયિતવ્ય છે તે જ કહેવા માર્શ છું.

ભગવાન ઉપાધ્યાયજી માટે 'કંઇક ' કરવાના મનારચ તા ગૃહસ્થાશ્રમમાંથી જ અસ્પષ્ટ-પણ જન્મેલા. ચારિત્ર લીધા બાદ તે પુટ થતા ગયા. તેઓશીના અજર અમર કાર્યની અલ્ય-અંખી થતાં તે સતેજ થયા. અને અન્તે તેમના સમાધિસ્થળના પુનરાત્કાર કરવાની ભાવનાતું બીન્નરાપણ થયું. એમાંથી તેમના ગુણાતુવાદ ઉત્સવ ઉજવવાની ભાવનાના અંકૃરા જન્મ્યા વિ. સં. ૨૦૦૦ માં મારા પરમ ઉપકારી શાસનપ્રભાવક પૃ. આચાર્ય શ્રીમદ્ વિજયમાહન-સ્ત્રીશ્વરજી કે જેઓશ્રીને પ્. ઉપાધ્યાયજી ભગવંતના અન્યા પરત્વે અમાપ પશ્રપાત હતા, તેઓશ્રી સાથે આ જ (મારી જન્મન્યિ) હેલાઈમાં ચાતુમાંસના પ્રસંળ અન્યા ત્યારે તે ભાવનાને મૃતસ્વરૂપ આપવાના પ્રયત્ના પ્રારંભાયા. ત્યાં તા તેઓશ્રીને જ્વલેલ જરે ઘરી લીધા અને આજ ધર્મઅમિમાં કાલધર્મ પાત્રયા અને મારા પ્રસ્તુત પ્રયત્ના સ્થિત થઈ ગયા.

છે વર્ષ ઉપર અત્ર બિરાજેલા અન્તે પૃત્ય-શિરહત્ર ઉશ્લય ગુરુદેવાની મદદથી, તેઓ શીનીજ છત્ર છાયામાં લારતની મહાનગરી સુંબઇમાં 'કંઇક કરવાના મારા મનારથને માર્ગ મસ્યા. સદ્ભામ્યે ભાયખલાના ચિરસ્મરત્યાય ઉપધાન તપ પ્રસંગે ભાયખલા દેરાસરના મંદપમાં જ ૨૨, સંસ્થાઓ તરફથી સુંબઇને સદા યાદગાર રહી નય તેવા છે દિવસના 'ગુણાનુવાદ મહાત્સવ' ઉજવાયા. ત્યારે મુંબઇના મહાજનાને આ મહાન પુરુષની મહાનતાની આંખી કરવાની પહેલવહેલી જ તક મલી. તે જ ઉત્સવ પ્રસંગે એક સ્મારક સમિતિ પણ નીમાણી અને દેશાઈના સમાધિસ્થળના છાંદ્યાં હાર કરી તેઓ શીને છાજે તેવું સ્મારક કરતું અને તેઓ શીનું પ્રામાણિક અને આદર્શ જીવન તૈયાર કરાવતું, એવા નિર્ણય કરવામાં આવ્યો. એમાં યુદ્ધા અને ભાવનાના પ્રતીક સમું અને સદા ય આધ્યાત્મિક પ્રેરણા આપતું સ્ત્ર્લ સ્મારક તો લગ્ય રીતે તૈયાર થયું છે. ખાકીનું જીવનચરિત્રનું કાર્ય હવે અનુકૃળતાએ હાય પર લેવાશે. અને અમારા વિદ્વાન મિત્રોના સહકારથી એ ભાવના પણ સફળ થશે.

નૃતન શુરુમંદિરની પ્રતિષ્ઠાના નિબુધ માળશર સુદમાં લેવાયા. જો કે તે અબાલ પ્રતિષ્ઠા પ્રસંગ વિકાનાનું નાનું સરખું સમેલન યાજનું એવા વિચાર ઉપસ્થિત થયેલા. પરંતુ અનુકૂળ સાધન અને સંજોગોના અબાવ વિચારના અમલમાં રફાવટ કરતા હતા. છેવટે ક્રાંપેક સંજોગા અનુકૂળ થયા અને પૂજ્ય ઉપાધ્યાયછ મહારાજની મહત્તા, તેઓશ્રીનું પવિત્ર છવન, આધ્યાત્મિક ચિંતન, વિશદ પાંડિત્ય, તેજસ્વી શક્તિઓ, તેમનું અગાધ અને સવ'દેશીય પાષ્ટિડત્ય અને તેમના સાહિત્યના વિપુલરત્નરાશિને; માત્ર જૈના જ જાશુ—સમજે એમ નહિ, બલ્કે ળૃહત્ ગૂજરાત અને યાવત્ ભારત એાળખતું થાય, એ ભાવનાને મૂત'રૂપ આપવાના સંયાગ ઊભા થયા. મારી એ ભાવનાને પરમકૃપાળુ ગુરુદેવા તરફથી આશીર્વાદ અને મિત્ર યુનિઓ અને વિદ્વાના તરફથી પ્રાત્સાહન મળ્યું અને પૂજ્ય ઉપાધ્યાયછના જ્ઞાન-ચારિત્રાત્સવ ઉજવવાના મંગલ નિર્ણય લીધા. તે માટે એક સમિતિ નીમવામાં આવી. વિચારણાને અંતે પ્રસ્તુત ઉત્સવને 'શ્રીયશાવિજય સારસ્વત સત્ર' એવું નામ આપવામાં આવ્યું. અને પ્રસ્તુત સમિતિએ નિર્ભયની માગણી સાથે એ પ્રસંગમાં ઉપસ્થિત રહેવાની વિનંતિ કરતું એક પરિપત્ર પણ પ્રગટ કર્યું અને તે ભારત અને ભારત અહારના યાગ્ય વિદ્વાનાને માકન્ લવામાં આવ્યું હતું. અલબત સમય ઘણું જ દૂંકા હતા અને તેથી જ અમને પાતાને જ અમારા માર્ગ કંઇક મુશ્કેલીવાળા દેખાતા જ હતા. છતાં જે અને જેવી રીતે બની શકે, તે અને તેવી રીતે પણ, ઉજવણી તો કરવી જ. એ નિર્ણય દ્રદ કર્યાં. કારણ કે કાલની કાને ખબર છે ?

અનેક વિદ્વાનાએ અને જનતાએ અમારી યાજના અને તેના કાર્યને હાદિ'ક અલિ-નંદન પાઠ્યાં. આ રીતે અંકુરામાંથી પત્રા–પુષ્પા ખીલ્યાં.

ત્યારબાદ તેઓશ્રીએ સંસ્કાર અને સંસ્કૃતિની જરૂરિયાત, તે માટે આજની સામા-જિક ને રાજકીય પરિસ્થિતિ વર્જુવીને સંપત્તિથી નહીં પછુ સંસ્કાર અને સંસ્કૃતિથી બીખારી ન બનવા બેરદાર શખ્દામાં અપીલ કરી હતી. આગળ બાલતાં કહ્યું કે—

અમજે આપણુ ત્યાં બે પ્રસંગા ઉજવાઈ રહ્યા છે. એક છે તેઓશ્રીના વંદનીય સ્થ્લ સ્મારકના અને બીજો છે શ્રીમદ્ યશાવિજય સારસ્વત સત્રના એટલે કે તેમનાં જ્ઞાન અને ચારિત્રાત્સવના.

तेमना स्थूद स्मारक्षनी प्रतिष्ठा ते। सवारमां करी अने आनं हमं अण वर्तां क्ये।, पखु तेट्रहुं क करीने संतेष मानवाथी आपछुं कर्तं क्यं कंध पूरं थतुं नथी. तेमनी साथी प्रतिष्ठा ते। त्यारे क करी बेआय के क्यारे तेन्नाश्रीना अध्रा कार्यने पूरं करीन्ने, तेन्नाश्रीना आहेशा अने अपेट्रिशानी प्रतिष्ठा आपछा हृंदयमं हिरमां करीन्ने अने तेन्नाश्रीना प्रभाविद्या मार्गने अनुसरीन्ने, ते। क तेमना तथा तेमना अमृह्य वारसाना वारसहारा अनवाने पात्र करीन्ने. तेन्नाश्रीनं सायुं अवतुं कारतुं कंगम स्मारक पछ के क छे. स्थूद स्मारकनुं कहान्य पतन थाय पछ कनताना हृंदयमां थयेद्या स्मारकनुं कही पछ पतन थतुं नथी, को वात पूर्ण पूर्ण ध्यानमां राभवा केवी छे. ले आपछो साया वारसहारा अनीने तेन्नाश्रीनं सायुं स्मारक करवा मागता हाई को ते। तेमने कणतना क्रया माटे निःस्वार्थकाचे महापरिश्रमे सिकत करेद्यी ज्ञानसमृद्धि के भोवायेद्यी; हटाक्येद्यी अने वेरवीभेर थयेद्यी छे तेने तन, मन अने धनना करहार प्रयासा द्वारा श्रीधी क्राहीक्ये. उपवर्ध सुद्रित अने असुद्रित अन्यसंपत्तिने

પુનમું પ્રવૃ કે, પુના સંપાદન કરાવીને દેર દેર પહોંચતી કરીએ અને તેમના શ્રન્ય અધ્યયનના નાદ શાજતા શ્રાય એવા કાઈ સક્રિય—સંગીન પ્રયત્ન કરીએ તા જ આપણે તેમનું ચઢેનું ઋતુ અંશે પણ અદા કરી શ્રદીશું. આડી એમનું પૃરૂં ઋતુ અદા કરવા માટે તા અનેક જન્માની સેવા એાછી પેટ. આજ સુધી અમે તે બન્યું. પણ હવે આજથી જૈન સંઘની આંખા ખુલી જવી એઈએ.

ર્ધીજે પ્રસંગ છે સત્રની ઉજવણીના. આ ઉજવણી પાછળ ઉપાધ્યાયજના શુણાતુ-ગુગોઓએ ઘણી માટી માટી આગા અને ચાજના પાર પડવાના અતુમાના કર્યાં છે, અને કરે તે સ્વાભાવિક છે. પરંતુ આ તકે મારે સ્પષ્ટ કરવું જોઈએ કે અલ્પ સમય અને ખીર્જા કેટલાંક કારણે પ્રથમથી જ અધાએ અમારૂં ધ્યેય અને તેતું ફળ મયૌદિત રાખીને જ કાર્ય કર્યું હતું અને તે એ-કે સત્રની ઉજવણીનું અદુ માટું કળ મળે કે ન મળે; પણ અમારા આ પ્રયત્નથી જો જેન સંઘ અને ભારતના વિદ્રાનાતું લક્ષ ખેંચી શકવા જેટલી ભૂમિકા પછ્ ઊલા કરા શકીશું, તા ઉજવણીની સફળતાના સંતાષ માનીશું, અને એ બૃમિકા ઉપર અમા અમારા ભાવિ કાર્યની ઇમારત ચણી શકીશું. પણ મારે એ પણ સ્પષ્ટ કરતું જોઇ એ કે અમાર્ મર્યાદિત ધ્યેય પાછળથી વિસ્તૃત અની ગયું અને પરિભામ એક માટી પરિપદના રૂપમાં ફેરવાઈ ગયું. જે આજે સદ્ર દાઇ પ્રત્યક્ષ બોર્ડ શકે છે. અત્યારે ભગવાન ઉપાધ્યાયજી અને તેના કાર્ય ઉપર, શુણાનુવાદ ને પ્રશંસાની જે પુખ્યવૃષ્ટિ ઘઈ રહી છે, તે જેતાં મને લાગે છે કે અમારી આશામિશ્રિત થકા જરૂર ફળી છે. ફળી છે એટલું જ નહિં ખલ્દ ધારણાથી ઘણી વધુ ફળી છે. અમારા એક ખૂળામાં ધયેલા પ્રયત્નથી હવે ભારતના વિદાના તેઓશીની મહાનતા અને વિદ્રત્તા તરફ જરૂર આકર્ષીંગ, તેમના બન્ધાનું પ્રકાશન ઘટો. અધ્યયન-અધ્યાપન વધશે, જન્તાને ગ્રત્ય માર્ગની પીછાળુ વધતી જશે અને એક વીશીને અન્તે આજના વાવેલાં ખીજોનાં સમ્યગ્ કૃળા વિપુત્ત પ્રમાણમાં જોવા મળશે.

ગમા ધ્યેય જે રીતે પાર પડ્યું છે, તે માટે ખરખર સત્રસમિતિને, પ્રત્યક્ષ કે પરાક્ષ રીતિએ સહાયક બનેલા જેન-જેનેતર વિદ્રાના, પ્રોફેસરા અને અન્ય કાર્યકરાને હાર્દિક અભિનંદન આપવાનાં વેગને દુ રાઇી શકતા નથી.

બીજી વાત એક ખાસ ધ્યાન રાખવી ઘટે કે-મૃતકાળના ઇતિહાસ તરફ આંછા દીટવાત કરીશું તો સામાન્યતા કાઈ શુગ શ્રહાપ્રધાનના, કાઈ શુગ ગાનપ્રધાનના ને કાઈ શુગ ચાન્ત્રિની પ્રધાનતાના દેખાશે. આજના શુગ ગાનવાદ કે ખુદ્ધિવાદના ચાલ છે. ખુદ્ધિ-વાદી લેખાં એ કાઈ પળ વસ્તુ શ્રહાથી માની લેવા તૈયાર નથી, તેઓ તા તર્ક-દર્શીયા દારા વસ્તુ માનવાને તૈયાર દાય છે. આ કારણે તર્કપ્રધાન ઉપદેશ કે પ્રરુપભાની ખાસ જરૂર પટે છે અને એ જરૂર્યાતને સંપૂર્ણ શ્રતાપી શકે તેમ દાય તા ઉપાધ્યાયજીનું પાંદિત્ય- લરપુર શ્રાહિત્ય અને તેઓશીની વિંગારધારાઓ છે.

ઘડીલર એમ પણ વિગારસ્કુરણા ચર્ક જાય છે કે બાવિસુગનાં એ ધાણુ કદ્યાને જ

તદ્દવિષયક સાંહિત્ય સર્જન કરવાના ભગીરથ પ્રયાસ તા નહીં કર્યો હાય! અસ્તુ.

ં આથી વંદનીય જૈન શ્રમણા અને શ્રમણીઓને આ સત્રમંડપમાંથી વિનંતિ કરૂં છું, કે જો જૈન પ્રજાને શ્રદ્ધામાં ટકાવી રાખવી હાય તેા તક પ્રમાણુ ને ન્યાયથી ભરપૂર એવાં ઉપાધ્યાયજીનાં ખહુમૂલ્ય ગ્રન્થાનું અધ્યયન કરવાના અચૂક નિર્ણય કરે.

શ્રહાવાદના જમાના ખતમ થતા આવે છે. સાચા શ્રહાવાદ કે આત્મવાદ ટકાવવા પ્રહિગમ્ય ઉપદેશ અને સમજાવટની અનિવાર્ય જરૂર ઊલી થઈ છે, આ ઉઘાડું નગ્ન સત્ય છે. તો આપણે સહુ તેમના ગ્રન્થાનું અધ્યયન અને પારાયણ કરવામાં લાગી જઈએ અને, તેથી આપણાં પાતાનાં જ્ઞાન, દર્શન ને ચારિત્રની ખૂબ જ પુષ્ટિ કરી શકીશું. શાકચપુત્ર ખુહનાં बहुजन हिताय घटुजनसुखाय સ્ત્રને નહીં પણ ભગવાન મહાવીરદેવનાં " सर्वजनहिताय- सर्वजनसुखाय" આ ત્રિકાલાઅધિત પૂર્ણસ્ત્રને જીવનમાં ઉતારી સર્વોદયની સાધનાના ખરેખર સાચા મંગળ આદર્શ ખડા કરી શકીશું, અને એમાં જ આપણું અને પરનું:કલ્યાણ સમાએલું છે.

મને અથાગ અને અગાધ શ્રદ્ધા છે કે ઉપાધ્યાયછ લગવાનની નિમલ રચનાના એક એક અક્ષર અમૃતબિન્દુ જેવા શીતળ અને મધુર લાગશે. એક એક શખ્દ ઝગમગતા અધ્યાત્મના તેજસ્વી દીવડાઓનું ભાન કરાવશે. તેમની એક એક પંક્તિ આત્મિક દીવાળી માટે દીપમાળાઓની યાદ આપશે, ને તેઓ શ્રીના એક એક ચન્ય, અલુમાલ રત્નમંજૂષાનું ભાન કરાવશે.

યાદ રાખા કે જહવાદના અળાએ પૃરેપૂર્ માશું ઊચકશું છે. ભારતની આય' સંસ્કૃતિના પાયામાં સુરંગ ચાંપનારા જીદાં જીદાં અનેક અનિષ્ટવાદાનાં વિવિધ ઝેરા પ્રજાના વિચારદેહમાં પ્રસરવા લાગ્યાં છે. અશ્રહા, અજ્ઞાન, અનીતિ, અન્યાય અને અસદ્ આચારના સૂર્ય સોળે-કલાએ ખીલી ઊઠયો છે. સર્વજ દુ:ખ, અશાંતિ અને ત્રાસનું ભયંકર સામ્રાજ્ય જામ્યું છે.

જડવાદનાં એ ખળાને ઝેર કરવા, અનિષ્ટ્વાદાનું દક્ષ્ત કરવા અને પ્રજાદેહમાં વ્યાપેલા ઝેરને નીચાવી નાંખવા, આજથી મહાન પ્રયાસ કરવાના નિરધાર કરીએ ને અજ્ઞાનનાં દ્યાર તિમિરાને મિટાવવા સત્ય અને જ્ઞાનના મહાદીષ પેટાવીએ.

આટલું કહીને, હવે હું જૈન સંઘને ઉદ્દેશીને કેટલાંક ટ્રંકા સૂચના કરૂં છું. તે એ કે-પ્રથમ તા

- (૧) ઉપાધ્યાયભનું ભવન અને કવન પ્રગટ કરવું.
- (૨) તેઓશ્રીના ઊપલાવ્ધ તમામ બન્યોનું સમાન ધારણે, સમાન પદ્ધતિએ વ્યવસ્થિત રીતે સંપૃષ્ણું શુદ્ધ પ્રકાશન કરતું. એ પ્રકાશનાને મૂળ બન્યકારના આશયને વધુ સ્પષ્ટ કરતા ટીકા, ટિપ્પણા અને નિખધાથી સુવાસ્ય અને સરળ બનાવવા, જેથી અલ્યાસીઓ સુવાસાથી રસપૂર્વંક અધ્યયન કરવા પ્રેરાય.
- (૩) તેઓશ્રીના સમગ્ર ગ્રન્થાની વિશદ સમીક્ષા કરતું એક પુસ્તક પ્રગટ કરતું, જેથી અનેક વિદ્યાના તેમના ગ્રન્થાનું અધ્યયન કરવા પ્રેરાય.

(૪) તેઓ શ્રીના શ્રન્યાનું અધ્યયન અને પ્રચાર કયારે ચઈ શકે કે જ્યારે તેમનાં નામ સાથે સંકળાએલ એક સ્વતંત્ર સંસ્થા સ્થાપવામાં આવે તેા જ. વળા એ સંસ્થામાં જેનદર્શન અને નવ્યન્યાયના પ્રખર વિદાના પણ તૈયાર કરી શકાય.

એ માટે શ્રી જેનસંઘને સાઘદ અનુરાધ કરૂં હું કે આ કાર્ય રેપાય સ્થળે અવશ્ય કર અને એનું અધ્યયન વિષયક સંચાલન તદ્દવિષયક અનુલવી શ્રમણા અને ગૃદસ્ય વિદાના સંમીલિત થઈને કરે.

- (પ) જીગતી પ્રજાના શ્રહાના પાયા મજળૂત અને, વર્તમાન અને ભાવિ પ્રજા ચાસ્ત્રિ વાન ખની રહે, તે માટે તેઓશીનાં શ્રંક્ટ્રન, પ્રાકૃત કે શુજરાતી કૃતિનાં આભાલો પાસાપયાગી શુંદર બાળાન્તરા, નાની નાની પુસ્તિકા રૂપે પ્રગટ થાય તે ખૃબ જ આવકારદાયક અને જરૂરી છે.
- (ક) સંશોધિત અને શુદ્ધતાપૃત્રંક પ્રકાશિત પ્રકાશના અહાર પડ્યા પછી તે ૬૫રથી દર્મકની ડસ્ત લિખિત પ્રતિ દરેક બંડામાં મુકાવી જોઈએ, જેથી તેઓશીની કૃતિએા ચિરંજીવી અને.
 - (છ) ખીજા પણ કેટલાંક ઉપયોગી સૂચના રજા કરા શકાય.

પૃત્ ઉપાધ્યાયછના વિલમાન બન્યાનાં પુનમું દ્રષ્ટનું કાર્ય પણ ઘણું જ ખર્ચાળ છે. અરે! એમનું એક ત્રર્યાં બ ત્રંપણું છવન તૈયાર કરતું એ કાર્ય પણ ઘણું કપરું અને ખર્ચાળ છે. કપરું એટલા માટે છે કે તેએાશ્રીના અંતરંબ છવનને અને તેમની આપંવાણીને શાબ્દિક અલંકારા કરી ન્યાય આપી શકે તેમ નથી. અને ખર્ચાળ એટલા માટે છે કે તેએાશ્રીનું છવન તૈયાર કરવામાં તેઓશ્રીના બન્યાનું લંદું અધ્યયન, મનન અને અન્ય વિગ્રારણાએ! માટે પ્રકળ ત્રમય ખર્ચાંના પટે તેમ છે.

શું થાય ? જેન સંઘમાં બેઈએ તેવી એકતા નથી, પરીખુમ કાઈ પણ ચાજના કે કાર્યક્રમ સફળ રીતે પાર પડી શકતા નથી. આજે સંઘ પાસે પંચવર્ષાય જેવી કે દશવર્ષાય જેવી કાઈ યોજના જ નથી જેનધર્મ તેના સિદ્ધાંતા અને તેની સંસ્કૃતિના અહારની દુનિયામાં પ્રચાર કરવાની વિચારખાઓ—આચરબાએ એાઇી જરૂર નથી. તેમ છતાં આવી આખતમાં તા હદાપણતું કાર્ય તા તે જ કહેવાય કે પ્રથમ પાતાના ઘરની મજબૂર્તા અને સલામતી કરે, ત્યાર બાદ બીજના ઘરતું બર્લું કરવાની વાતા કરે. આજે જેન સંઘમાં ગ્રાન, ફિયા, સંસ્કૃતિ અને કલાના ક્ષેત્રમાં હજારો જેતાને તેયાર કરવા એઈએ. આ પ્રસ્થી છે શબ્દો વધુ કહું તા શ્રી સંઘની વર્તમાન સ્થિતિ એતાં આપણા બાવિની કેવી કલ્પના કરવી તે જ નથી કરયી શકાનું! અલળત મરવાના તા નથી જ, તે ચાક્રમ વાત છે, પણ કેવી દશામાં છત્વશું? એ ખ્યાલ બારે ચિંતા ઉપનવે તેવા છે!

શું ચતુર્વિધર્સઘતું ખાદ્ય અને આબ્યાતર સ્વાસ્થ્ય ચિતા કાપક્રતવે તેનું નથી લાળતું? કાઈ ગ્રુગમુરુષ પાંકે અને આપણી ચિતા શીલ નષ્ટ કરે તેવી શાસનકેવને પ્રાર્થના કરવી જ રહી! અસ્તુ આ તા પ્રાર્થિક વાત કહી. હવે આપણે મૂલ વાત પર આવીએ, ઉપાંધ્યાયજના ગ્રન્થાનાં પુનર્મું દ્રણનું કાર્ય ખર્ચાળ હોવા છતાં 'પંચકી લઠ્ઠી એકકા બાજ'ની જેમ ભારતના જીદા જીદા શહેરાના સમૃદ્ધ સંઘા આ કાર્ય ઊપાડી લે તેા તે કાર્ય સુલભતાથી પૂર્ણાંહૃતિને પામ.

દા. ત. મુંબઇ, અમદાવાદ કે અન્ય સંદા નક્કી કરે કે દર વધે પાતાની જ્ઞાન-ખાતાની આવકમાંથી સેંક્ડે સાઠ ટકા પૂજ્ય ઉપાધ્યાયજીના ગ્રન્થાલેખન કે મુદ્રશુ માટે ઉપયાગમાં આપવી, તા દશેક વર્ષમાં તેમના તમામ ગ્રન્થા પ્રકાશિત થઈ જાય. અરે! આ કાર્ય ધારે તા એક મુંબઇ કે અમદાવાદ કરીને અમર અને ધન્ય બની જાય તેમ છે.

પણ મને લાગે છે કે આ માટેની પહેલ તા હલાઈએ જ કરવી ઘટે. મને આશા છે કે હલાઈ તેના સુંદર જવાબ વાળશે જ.

'ચલા હેલાઈ'ના નાદ હિંદના ખૂણે ખૂણે પહોંચતા થયા એટલું જ નહીં, પરદેશી વિદ્વાનામાં પણ તે જાણીતું થયું એનું કારણ હલાઈ નહિ પણ લગવાન ઉપાધ્યાયજી મહારાજ જ છે ને એમના ચશસ્વી પુષ્ટ્યધેયનામથી હલાઈ સદાને માટે ઉજળું અન્યું છે. જૈનશ્રમણા માટે તા ખરેખર એક તીથંદ્રપ છે, માટે જ હલાઈ પ્રતિવર્ષ તેઓશ્રીની સાહિત્યસેવા માટે યાંચ્ય ફાળા આપવાના નિર્ણય જરૂર કરી શકે તેમ છે. હલાઈ અવસર આવે ત્યારે કમર કસીને નગારા પર દાંડી પીટે છે. અને ખલેખલા મીલાવી, અવસરે ઉજળા અની, પાતાની શાન જળવે છે. એવા મારા જે કંઈ અનુલવ છે એ અનુલવને સાચા પાહશે જ.

હેલાઈને આદ્ય સંપત્તિથી ઝાંખું પડવાના પ્રસંગા લહે જીલા થાય, તે સંનેગામાં પશુ સંસ્કારસંપત્તિથી તે કહી ઝાંખું નહીં પડે, તે માટે તાે સદાય તવંગર રહેશે જ જ અને અધે પદ્માસને બિરાજમાન શ્રીક્ષિહણુપાશ્વેનાથ પ્રભુની કૃપાથી પુનઃ સુખના તપતા સૂર્ય જરૂર તેશે.

ત્યારખાદ હલાઈના જિનમ દિરા, જ્ઞાનમ દિરા, શિલ્પ-સ્થાપત્ય, કલાની વિશિષ્ટતાએ વર્ષુ વી, હલાઈમાંથી સંખ્યામ ધ યુષ્યત્માએ સાધુ-સાધ્વીજરૂપે વિચરી રહ્યા છે તે જણાવી હલાઈને દેવભૂમિ અને ગુરુભૂમિ તરીકે તીર્થરૂપે જણાવી, હલાઈ ઉપાધ્યાયજ માટે બનતું બધું જ કરે એવી આશા વ્યક્ત કરી હતી.

હું પણ જન્મે હેલાઇના જ છું, ખઠ્ઠુ બાલવા કરતાં કાર્યમાં વધુ માનનારા છું એટલે વધુ ન બાલતાં એટલું નહેર કર્ં છું કે પૂ. ઉપાધ્યાયજીની સાહિત્યસેવાને અમર કરવામાં મારી ખનતી તમામ શક્તિઓને કામે લગાહીશ. તેઓશ્રીની સેવા મારા લાવિ જીવનમાં પ્રધાન કાર્યરૂપે રહેશે. શાસનદેવ, પૂ. ઉપાધ્યાયજી તથા પૂ. શુરુદેવાના મહાન આશીર્વાદથી મારા મનારથ કૃળીબૂત થાય જેથી જૈનશાસન, સંવ અને તેની પરંપરાની સેવા કરવામાં મારા આશીક કાળા નોંધાવી શકું!

ે પણ અહીં એકેલા અન્ય સુધાના પ્રતિનિધિએ અને નતળીતા જેન આગેવાનાને એક્કું સાથે જ કહું છું કે અમારી સફળતાના આધાર તમારા સહકાર ઉપર જ છે.

એથી અમારા આ કાર્યને સક્લ કરવા છું અપીલ કરૂં છું દે અહીં બેઠલા જેનસંઘના આગેવાના અને જેન શીમતા શ્રારા વિમર્શ અત્યારે જ કરી લે, અને મને જણાવ દે તેઓશીના બ્રન્ચપ્રકાશન માટે અને ખનતું ખહું ય કરીશું. દેશને દાઓના કમારદા પાછળ લાખા કરારા ખરચાય છે. ભાષના નામ પાછળ હજારા લાખા ખરચાય છે. તો આ નિઃસ્વાર્થ ઉપકારી આ જન્મ ગ્રાનથન્નની ધૃણી જગવનાર, આપણા પરમપિતાના આપણું કલ્યાણ કરનારા મહાન વારસા માટે બ્રમાજે શું ન કરતું તેઈએ ? અલું જ કરતું તેઈએ. ખનાડે શેલા એક એક શબ્દ માટે ચૂરાપ એક એક પોંડ ખરચે, વડાદરાના સ્વલ્મ સ્થાજીરાવના જીવનચિત્ર લખવા લેખકને એક એક શબ્દ એક એક રૂપિએ મળે તો જેન સમાજ એમના માટે શું કરવા તેયાર છે? મને તો એમ પણ કદેવાનું મન શાય છે કે આવા પુરુષ ચૂરાપમાં જન્મ્યા હોત તો એના નામનાં હારેહાર તારણા બધાત અને ઘર ઘરે એમનાં ગ્રાનનાં પૂજન ચાલ! અને દેવે હૈયે ગ્રાનના દીવડા પ્રમાર શાત!

અહીં એકેક્ષાં ભાગ્યવાન આરમાંઓ ! આપણ નિકટના મહા ઉપકારી પુરુષ માટે કંઈ ને કંઈ ચેવા કરવાના હદ નિક્ષય કરીને જહો.

અન્તમાં મારા પરમ દ્રપકારી શુરુંદ્વો, સ્વર્ગસ્થ શાયનપ્રબાવક આયાર્પદેવ વિજય માહનસ્ટ્રાયળ મહારાજ ને વિદ્યમાન અત્રે બિરાજેશ પરમપૃત્ય આયાર્પ શ્રીમદ્દ વિજય-પ્રતાપસ્ટ્રાયરાળ મહારાજ, પરમપ્ત્ય આરાર્થ શ્રીમદ્દ વિજયમાં સ્ટ્રાયરાજ, પરમપ્ત્ય આરાર્થ શ્રીમદ્દ વિજયમાં સ્ટ્રાયરાજ મહારાજ મહારાજ એએ માર્રા હેરેક સદ્ધ્રાયનિને સહાય ને આશીર્વાદ આપના આવ્યા છે તેઓશ્રીના હું પરમ ,આંભાર માર્નુ છું. બે દિવસના દેટલાક વક્તાઓએ આ કાર્ય માટે મને ધ્રત્યવાદ આપ્યા છે. પણ સાચા ધ્રત્યવાદને પાત્ર હું નહિં પણ અહીં બિરાજેશ શુરુદેવા જ છે. આ સ્થળીએ સફળતાના સુયદા તેમને જ ફાળ જાય છે. હું ના એક નિચિનમાત્ર છું. તેઓશ્રીની કૃપા—સ્ડ્રાય સિવાય આ કાર્ય પાર પાહી ન જ શકાન!

અ'તમાં અતે પ્રતિકૃતિરૂપે બિરાજેશા ક્રયાધ્યાયછ લગવાનને એ ડાય જેડી-વંદન કરી, આજથી ક્રયાધ્યાયછ લગવાનની વાળી સમગ્ર જેન સંઘમાં જ્ઞાન, દર્શન અને આરિત્રની જ્યાતને સવિશેષ પ્રકાશિત કરતારી નીવડે! એવી પ્રાર્થના કરી, ક્રુપ્લેચ્છા રાખીને ધાર્ વક્તવ્ય સમાપ્ત કર્ફ છું. કે શાંતિઃ



મુંખધ્ય વસતા શેદ જીવતલાલ પ્રતાપસી પાતાનું વક્તવ્ય રળ્ કરી રહ્યા છે



પ્રદર્શનનું વારીક અવલાકન કરીને પાછું કરતું સુનિમંડળ



ડેબાર્ડ−ફર્બાવના શરેરમાં નોંદાદી દરવાલ ખ્યાર વ્યાવેલી ચરોાવાડિકાનું વ્યાધ્યાસ્થિક સંવેદના જગાડનું પ્રશાન્ત સ્થળ

: પરિચય :

- (૧) પારાપૂરી જલર્ચાદરતા અનુકરણએ નૈયાર ચએલું રમણીય જલસંદિર
- (ર) આ યુગના આદ્યતાર્ધકર છા ઋપમદેર બગવાનના ચરણપાદ્કાનું મંદિર
- (ટ) જ્યાંતિકેર, બારતીય બર્લ્યાવસૃતિ વાચકવર-મદાપાધ્યાય શ્રીમદ્ યશાવિ-ગયછ મદારાજનું સંગેમરમરનું તૃતન ભવ્ય સમાધિર્મીદર, જેની અંદર ઉપ.ધ્યાય ભગવાનની પ્રતિત્ર પાદુકા અને આરસ્તી તૃતન કબ્પિત સૃતિ પ્લસ્તિશ્રી છે.
- (૪) પરમપુત્ર આગણે શીમદ રિવળન માદનમૂરીયર સમાધિ મંદિર

શ્રીયશાવિજય સારસ્વતસત્ર પ્રસંગે આવેલા લેખ-નિળંધાની યાદી

	विषयनाम	लेखकनाम	,
٤.	ઉપાધ્યાય શ્રીયશાવિજયજી મહારાજ અને તેમની શાસન સેવા	સુનિ શ્રીજ ખૃવિજયજી	ચાલીસગોમ
₹.	અમર યશાવિજયજી.	શ્રીદ્દલસુખ માલવિશ્યા	ં બનારસ
Э.	વાચક યરાાવિજયજી.	- પં. શ્રી ભદ્રં કરવિજયજ	. સુરત
ጸ.	પૂ ઉ. શ્રીયશાવિજયજ મહારાજના વચનનાં રહસ્યા અને વિશેષતાએા.	મુનિ શ્રીભાતુવિજયજ 🦿	મુ અઈ
	ત્રિપષ્ટિશલાકાપુરુષ ચરિત મહાકાવ્યમાંનું સમાજ દર્શન.	શ્રીજયંત પ્રે. ઠાકર એસ. એ.	વડાદરા
9, u	મહાન યાંગીર્થર શ્રામદ્ યશાવિજયજી મહારાજની જ્ઞાન દીપિકા (જ્ઞાનસાર અષ્ટક)	શ્રી અમરચંદ માવછ શાહ	ંભાવનગર
	તાકિ હરિયાળી સ્વાપજ્ઞ વિવરણ સહિત. ન્યાયાચાર્યને વ'દન.	પ્રાે. શ્રી હીરાલાલ ૨. ક્રાપડીઆ એમ. ગ્રે	_
	ઉ. શ્રીયશાવિજયછ ન્યાયાચાર્યનું ભવ્ય જીવન.	શા. નરાત્તમદાસ ભગવાનદાસ.	સુ 'અર્ક
Ŀ.	ન્યાયાચાર્યની વિશિષ્ટતાઐા.	આ • શ્રીવિજયલિમ્ધિમ <u>રિજી</u> મહાર	
20.	્રપ્રાચીન અતે નવીન ન્યાય.	સાધ્વીજી શ્રીસુગાવતીશ્રીજી.	કલકત્તા
	(स) तत्वार्थगीत (व) यशोविजय उपा० कत तत्वार्थ गीत, विवेचक श्रीमद् द्वानसारजी	શ્રી ભ 'વરલાલજી નાલ્ડા.	બીકાનેર
૧૨.	G. શ્રીયશાવિજયજીના આપણા છ વન	સાધ્યીજ શીમ ભૂલાયીજી.	ખ'ભા ત
23.	ઉ. મહારાજ અને તત્કાલીન પરિસ્થિતિ	શ્રીરાજપાળ સગનલાલં વારા.	ખાખરેચી
28.	પ્રાચીન અને નવ્ય ન્યાયની વિશિષ્ટતા	શાજિતેન્દ્ર જેટલી, એમ. એ:	અમદાવાદ
6 <i>7</i> i.	શ્રીયશાવિજયજી મહારાજની જન્મ- ભૂમિ કનાડા.	શ્રીકતૈયાલાલ ભાઇક્ષંકર દવે.	પાટણ
.25.	જૈન સિદ્ધાન્ત અને સ'સ્કૃતિના સાચા પ્રચાર	મુનિ શ્રીમલયવિજયજી.	ખ ભાત
20.	(૧) ત્યાયાચાય° શ્રીયરાવિજયછ, એમની કેટલીક ગજ²૨ કૃતિઓની સાલવારી.	શાહ ગારધનભાઇ વીરંચ દલાઇ.	
£5	(ર) શ્રીયશાવિજયજી, ઐમની મૃતિ'ના અનાવરણ વિધિ. (૩) વિશિષ્ટ પુરવણી:		11 40

ેર્દ.	શ્રીમાન યદાવિજયછ.	ોં• શો ભ પત્રાતદામ પ્તમુખબાઈ ચડે	
色	अध्यात्मतत्त्ववेना श्रीमद् देवचंद्रजी	શ્રીઅપ્સર્વદ નાલ્યા.	બીકનેર
₹ 0,	અતિસા ધર્મ અને નેના સંસ્કૃતિના વિકાસક્રમમાં ઉપયોગ	શીપ્રદ્રશાદ ચંધ્યોષ્યર લિયાનછ, એન એ એવ એવ એવ. એમ	સું'વર્જ
₹₹.	જૈન દર્શનનું ચિંતન કાવ્યા	શા પી. કે. જાદ	અમદાવાદ
55	મહાપાંધ્યાય શ્રીયગ્રાવિજયુજી.	ो॰ श्रीत्रसूरनसम् संटेम्यंह श्राट्र	वरेष्ट्रा
?3.	0	કું. ચ િછ સાયચંદ ગોંધી.	ખેલા ત
₹%.	ગુર્જસ્લ્યુપણ ન્યાયવિશાસ્ત્ર ન્યાયાચાર્ય ૬. શ્રીયદ્યાવિજયછતું છવન અને પ્રાણુપ્રતિષ્કા યાતે આપણું કર્ત્તવ્ય દપાધ્યાયછતું ગીત.	શી જમીલશસ ક્રેસ્ટીચંદ સંસ્ત્રી	ખ'ભાત
રૂપ્.	પ્રખર સ્યાદ્વારી ઉ. શ્રીયરોવિજયજ મ.	સુનિ ઇ.વિક્સવિક્ષ્યા	ખ ભાગ
29.	શ્રી. મહા. મહા. યદ્યાવિજયજી.	धे॰ वहभ्दास रेज्सीसार्ध	ધાર્ ી
7,5,	અકારમી સદીના પ્રખર જ્યાતિકેર ઉ. શ્રીમદ્ યદ્યાવિજયછ.	શીમારનથાલ દાવચંદ ચેહ્સા.	સું જાર્ગ
₹€	મદાન્ વ્યાનિર્ધર દે. શ્રીધદ્ થયાવિજયછ.	રા ફેટેડ્ચંદ ઝંગુસંદ	સું ભુક
3,2	अरुणन्महेन्द्रो मशुराम्-	श्रीपार्श्वकर्षु अध्यक्ष	કાર્ગી
29.	ઃ રાજ્યુદ્દીની સોન– લ ંડાસ્તા શિલાલેખ.	યંકિયાલન પ્રેમાન્દ શાદ એવા	
રક	ગુજરાવની વાકિ'ક વિભૂતિ ઉ. શ્રીયરોા- .વિજયજનાં સંસ્મરણે.	ર્યા. શ્રીક્ષાદ્રચંડ સ્ટર્વાનદાસ ગીધ	ો. વડેલ્સા
₹.	અ'તરલાપિકા (કવિતા <mark>)</mark>	मत्त्रः श्रीसुण्याद्यः	હોંદ્વાલ
23.	મદ્રા૦ શ્રીયદ્યાવિજયજ મદ્દારાજ		ધુરેન્દ્રનગર
5%.	જૈન શાસનના સમજે પ્રભાવક મદ્દાન જ્યાતિકરિન્યા વિ. યદ્રાવિજ્યાઇ મદ્દારાજ	र्थ. शास्त्रस्तिहरूक अवि	n
	દ. શ્રીયરોાવિજયજી તથા અવધૂત : શ્રી આનંદ્રયનજીએ એ ક્રમાતિક રાની બિલન ક્રમાત.	क्षुत्रसिद्धं भूति विस्थिति	મું જાર્ટ
25.	શ્રીયદ્યત્રિત્ય સૃતિષંત્રક.	મહારામ પ્રોગ્લાનંદી ગાળછા,	
25.	. શ્રીયરોાવિજય સ્તુનિ.	સુતિ ચીસ્તકનિગભ્ઝ મહાના.	25
35.	्रस्तिहरू	स्ति श्रीप्रकृतिस्थल	37 \$123:141:0014
22	- श्रीयशीविज्ञ ः	2142 10 10 10 1 1 2 2 2 2 - 3	
Zo.	. શ્રીયરાવિજયછ માટે અને સાનગાર કીની	200 200 200 20 San	
K.	, પૃ. કૈયાલ્ટ આજે પણ અજ અમર છે	. स्थार् श्रीविश्वंत्र्ध्यस्थि एक	2:20
	نا ۔		37

ન્યાયવિશાંરદ — ન્યાયાચાર્ય મહાપાધ્યાય ૧૦૦૮ શ્રીમદ્દ યશાવિજયજી દર્ભાવતી સારસ્વતસત્ર 'ગીત શુંજન'

*

ર્સ. ૨૦૦૯ ફાલ્યુન કૃષ્ણ ૭–૮ શનિ–રવિ

*

પ્રેરક : મુનિશ્રી યશાવિજયછ રચયિતા—શ્રી મણિલાલ માહનલાલ પાદરાકર

> — : શ્રી સુયશ મંગલસ્તવન : — (રાગ દુર્ગા)

જય સરસત સરસ ગવૈયા ! નય^૧ અજય સુયરા રસવૈયા^૨ !

અંજય તું ન્યાયવિશારદ તાર્કિક, શ્રુતધર ધન રસવૈયા! અદ્દુબુત ગ્રાની સુરમણિ લહેરે લધુ હરિભદ્ર લહરિયાં ! હિમચંદ્ર! સુમરાવત હરપાળ, પ્રંથ <u>બહલ સ્થેયા !</u> સત્લક્ષણસદ્દગુષ્યુ, નિજયુષ્યુ નિત્ય રમૈયા ! સ્વાનુભવ દ્રવ્ય—ગુણ—પર્યાય—સનય, નિક્ષેપ લાંગ સગરેયાં ! રસરાસ રમણ રસવૈયા ! ગુજુરત ચાગાધ્યાત્મ સ્વગુણ, ડાલત દિલ અનન દેવન પેખત, આનંદ પંચ ચલેયા! €પાધ્યાય બિરદેય!! શાશનસુલટ, પાઠેક, વાચક, ગુજ ર—મહાગુજ ર યશ— ખધુ, પદ્મ પરાગ છવૈયા ! કુલાવત સ નારાયણ—સૌભાગ્યદેવીકે, કતૈયા ! રેહવિલય દભવિતી હાલત, જૈનપુરી જયજૈયાં! નિશ્ચય—અરૂ વ્યવહાર સાધુ શુદ્ધાયારી લખલૈયાં ! સારસ્વત સત્રે યશુષ્વજ યશ-ધમ-પ્રતાપ ગવૈયા! ગુરુ-ગૌરવ ગાયારવ ગુંજન, ફાલ્ગુન સપ્તમી સૈયા ! મેધાવી ભક્તન મુનિ સરિવર, યશ ચંદન ચરચૈયાં! દુભાવતી દેવા બુમિ મણિમય—પ્રસન શારદ મેર્યા!

^{1.} શ્રી નયવિજય = સરાવિજયજીના ગુરુ. નય = સપ્તનય. નય = ન્યાય. ૨. જ્ઞાનરસામૃત પીનાર અને પાનાર.

—; આઘ યંગલ : — (શ્રંકા—નગ`)

પરંભ ગાનસૂર્તે કેંઘે

સલભ આત્મમાંથી કરે, નિયતનંદસોગી કરે

જગરી છવન ત્યોનિ કરે

જન્મના એ હેમી કરે પરંભ.

પંચયરદાદન રહ્યાળ, સ્વ-પર દ્વા પ્રતિપાળ આત્મન્યોત રૂખવાળ!

ઉપાધ્યાય સુધરા કરે પરંચ.

ન્યાયવિદારદ મહાન, સુકતિ નય સુવર્ક જાણ!

ચામ તે અધ્યાત્મ ભાણ!

અમર દ્વા છવંન વાણ! પરંભ.

શાસ સુનાન કરે, પલપલ સાળમ કરે રમણ કિરામ, કરે સાધક— મહ્યુ — સિદ કરે પરંમ.

— : સુષરા ચેવ :— (માલ્કાશ—રાવ)

મુણ્યા રસ મેલન કે હમ માર !

દગદમ¹ અંતન ત્રાનશલ્યકા, ખાલન સુરત કિંદાર સુવર.

ખાલન ઓર ખિલાદન અખિલા !

આતમ સુન રચિંદાર ! સુવશ્ય દમલી **સુવરા** અબિદમ નિરમન, કાટન કર્મ કેંદાર સુવશ્ય.

આનમ—સૂન પ્રસુપથ જારે !

જેને ચંદ—ચંદાર સુવશ્ય સુર્ય સુવશ્ય.

-: 24144:-

(३१%-न्धर)

સંત સુજત તરતાર ! પદ્મારા ! કવિ પીઝત અમ દાર ! રાજ્યદંસ સુમાનસ-સરના, ત્રાત ગાતિ ચિરતાર ! પ્રેમપૂર્તિ જોફ શત્રિની હ્યા, દર્ભાવતી સરકાર ! પ્લારા !

^{1. 47 -} With

રસરાજલ રસતરસ્યાં ઉતર્યો, **७**भतगिरि वसनार ! યશાવિજય સારસ્વત સત્રે, રસ અધ્યાત્મ પીનાર ! પધારા ! **ધમ[્]—સુયશ** રસરાજે ખાેલી, જ્ઞાન પરણ પીનાર– इंक्ट्रंक रसतरस्या पीली, છેડી હૃદય સિતાર ! પધારા ! પીનારા. . ભકત—સંત—નરનાર ! ચાનરસાયતના અભેદ થઈએ આવેા લાંદુ, ક્રીક્રી કર્યા મળનાર ! પધારા ! મહાકવિ-પંડિત-વાદિવિજેતા. યાગી ન્યાયઅવતાર ! ઉપાધ્યાય જરાવિજય ગુણાત્સવ, દર્ભાવતીને દાર ! પધારા ! ગીર્વાણીના ગરવા गायक, गुल्रेरीने। व्यवतार ! મહાગ્રંથ આલેખક, ભારકર શાશન નભ ઝળકાર ! પધારા ! સપ્તમી શ્યામલ કાગુન શનિચર, ચઢતે પહેાર ઉદાર! પ્રતાપ-ધર્મ-ચરાા^દવજ લહેરે. જયવ્યાન'દ મહહાર ! પધારા ! કવિ--તત્વત્રાની યાંગી કે, હશા ભક્તિઆગાર ! સ્વાગત-મણિમય-દભવિતીનાં, લ્યા શાશન શણગાર ! પધારા !

—: દેવભૂમિ દર્ભાવતીને દરશન: — (એક જ્વાલા)

રસ રાસ રસે રસી રાસ રમે, આજે **કર્ભાવતી** ખલહાર ખતે. શશી-સરજ દિવ્યપ્રકાશ રચે, યશ-સ્વર્ગ ભૂમિ ખલહારં ખતે. ં ગતવૈભવ દેવ વિશ્વાસ હતા ! અહા આનંદ ઓર અપાર હતા: સિતાર જતા— આજે દર્ભાવતી. રેલી સંગીત વર જન્મભૂમિ મુનિય'દ્રસૂરિ ઉપાધ્યાય જય'ત ને જ'ભૂસૂરિ. યુરા^ર રૂ'ગ^ઢ અમર^૪ જ્યવિજયતણી—આજે. દ્યારામ કવિ અહીં જન્મધરી, સંયમ સાઠ સાધુ ને સાધ્વી પ્રહી. સરાવર દ્દષ્ટિ ઠરી---આજે. શિતલાઈ યરાક્ર્યાંલીશારદ યુગસ્ત્રષ્ટા, એતા ત્રિદશાયુરુષ્રીષ્યહસ્પતિ શા ! યુગપ્રધાન હતા—આજે. કલિકાલના યાદકા વિજયપ્રભ-માહનસરિ, યશ શાસસંશહ ગાનમંદિરની.. યશાવાહિકા ને જલમ દિરછ. આજે. દિવ્ય ટ્વ વિમાન છ મંદિરીયાં, વસ્તુપાલ પેયડશાનાં સર્જનશાં! અહીં પાધડી—હાટ કેસારા તથાં—આજે. લબ્ય ક્રાટ તે કિક્ષો પાયાજુતણાં, લબ્ય દરવાજા સ્થાપત્યનાં સ્મરણાં: હીરાભાગાળ—હીરા કડીયાતથાં—ંગાજે.

ર મૂકાળીશારદા. ર શ્રીયરોાવિજયછ. ૩ શીર ગવિજયછ. ૪ શ્રીઅસરવિજયછ

સારસ્વતસત્ર તહેં આદરીનાં મામ-ત્રાન-પૂજન રગરંગ ભરીમાં ! શામે રાજસહંસાયી સત્ત્વરીમાં — આજે. સરસાયર આજ જીંગળ સખે – દર્ભાવતી હાલ હાલાવ સખે. ફૂંજફ્જે કાળજાં ખાલાવ સખે — આજે. ગત ગૌરવ લાવ ફરી તું ફરી, સંપ સ્વાર્પણ સંસ્કૃતિ દેવિલારી! મહિમય બની જ ફરી દર્ભાવતી — આજે.

—: શ્રી સુયરા-છવન સંજવની: — (શૈલા—ગાશા)

गरे**वे। जे हत्तर गू**बरात ! આમ્રમંજરી ક્રાયલ ટકુકે, ગાતી રાગ મહ્યાર ! અંબર નીલવરણ તરૂરાછ, ધારે ભાર અઠાર! ગરવા સરીતા કાતર વાંધાં રાયણુ, ઝૂકી સ્થા સહકાર ! ક્રુતકાનના ગામ ક્નાઢા, પુનિત તપાવન દ્વાર ! યત્ર યુગલ જરા-પદ્મ પિત-મા-નારાયણ સૌભાગ્ય ! સાળ ઇકવાસી નય ગુરૂ પાડાલુ, દક્ષા ઉભવ વિરાગ ! ગરવા. સાળ નવ્યાતાં રાજનગર, દે ધનજી સુરા રહાય! ગુરુ–સરિત કાશી પરવરીયા, કરતા શાસ્ત્ર અભ્યાસ ! ગરવા. ર્ગગા—તટ ચારાધન શારદ, પ્રસન્ન—પર્ત્રટ થાય ! ન્યાયવિશારદ પદ પંદિત સૌ તાર્ટિક થશા બિસ્દાય ! ગરવા. भागप स्थागरा क्रेयसभेरे—विकथदेव सन्तिष ! ઉપાધ્યાય પદ કેતા થશ—વાચક—પાઢક કહેવાય ! ર્ત્રવાવડી છાણી વડપુર શર્ષ્ટ—નગર પાસ્તા જય ! લસ્ય સરત રોટે. આયુ—યરાધ્વર/ નલ લહેરાય! અવધ્ત આતમતાની યેણી, આનંદવન મળી કત્ય! યુગલ જ્યાતિર્ધાર અદ્દસત એટી, ત્રાન ગંગમાં ન્દાય ! ગરવા. र्भावाधी-नृतंती सुध्ये, ज्ञान सरीत छवक्षय ! ત્રાનિક્ષા તિથમ વ્યવદારે, પ્રમાસ સંય ગસાય! ગરવેL वियरंता इक्षिति ६१३, पंचारता अशराय ! અનસ્ન પૂર્ણ સમાધિ—સત્તર તેતાલીજ યરા પાય ! ત્રરેતા. યુનિન પાદુકા સ્થાપન, પ્રનિમા, સમાધિ મંદિર ઘાવ ! પુષ્યમૂમિ યરા—યરા પાકાર, સાસ્ક્સત્ર સ્થાય ! લધુ હરિસ્ક શ્રા હેમપ્રતિકૃતિ—અન્નેક તાર્ટિક-યાય! 'મણિમય' તત મસ્તક યશ ચરુરે, અક્તિ મુખ્ય અર્પાય ! ત્રરેવા,

—: જરા જ્યાત:—

(राज-भिम्न पढिराप-क्रिक्षार सुरक्ता है।!)

એક જ્યાત જરા જગદા!

યાનીકી એક લહરસે, વા જ્યાતિ ઝગમગા**દા** ! એક

છલમલકા રાજ શાશન—

દેખાજ હાલ સળકે

આગમ સુનાયકે હમ દુકરાતે, પથ દીખાદા ! એક

ચ્યાત્માડી ગ્રાનજયાતિ—

રહે જલતી દમત્રદમ મેં!

જીસ જ્યાતકા કિરનસે, વીરધર્મ કા સિખાદા l એક

યે સચ્ચી સચ્ચી બતીયાં—

સત્ત્રાન એાર ક્રિયાકી

ખન ખાધીખીજ પલમેં, મુક્તિપંચ પ્ઢાંચાદા ! કંક્રટ છૂડાકે 'મણિકા '—અસ્માન યે પૂરાહા ! એક

— : વિદાય : —

લાડીર્લા વીરનંદનીર્યા સૌ વ્યાવજો.

અમ માનસસર રાજ**લહંસ ર**સાળજો.

પધારીયા શ્રીયશાવિજય ગુહાઉત્સવે.

સુદાવના યશ-ધમ-સુયશ દરભારને લા•

આબ્યા આંગણ રસતરસ્યા રસરાજવી,

નિજાત્મતત્વરસામૃત કરવા પાનજો.

પીર્ધા પાર્યા દિવ્ય રસાયણ શાશ્વતાં,

હાય કડુતા વિસારસા મહેમાનનો લાં

સાગરદિલ વિદ્યાસ સ્કારી આપ તા,

ચાતક ગુરુવર નયનામૃત અભિરામને.

ધમ⁰પિયાસ અધ્યા રતેહ નિભાવજો,

થાકથા દિલના વ્હાલા ગા વિશ્વામજો. લા•

ધર્મ પ્રતાપે સુયશ જયધ્યજ લ્હેરાતા,

આવ્યા ! સત્કારી ન **શક**્યા મહેમાન**એ**. ્

ક્ષમાક્ષર્યાં હૃદયામૃત પાન કરાવજો,

'મણિમય' દ્રવતા દિલની આજ વિદાયજો. લા•

:

ત'ત્રીસ્થાનથી

धन्यवाह

ગત ફાઝણ વિદ ગ્રાતમ-ચાઠમના દિવસા દરમ્યાન, દેશાઈ મુકામે મહાપાધ્યાય શ્રી યગ્રાવિજયછ મહારાજના ગ્રુરુમંદિરની પ્રતિષ્ટાના શુમ અવસરે, એ પ્રતિષ્ટા–મહાત્સવની સાથાયાય, મહાપાધ્યાયછના સર્વતામુખી વિશદ પાષ્ટ્રિત્યને ભાવભરી અંજિલ આપવાના દિદ્યથી શ્રીયગ્રોવિજયસારસ્ત્રતસ્ત્રની ઉજવણી કરવામાં આવી તે બીના પ્રત્યે અમે અમારા હવે વ્યક્ત કરીએ છીએ.

ગુરુમંદિરની પ્રતિષ્ટાની સાચાસાય આવાં ગ્રાનાત્સવ ચાળવાના જે મહાતુભાવાને વિચાર સ્કુપોં અને જે મહાતુભાવાએ એ વિચારને વધાવી લઇને એને મૃત કરી અતાવ્યા તે અધા ય મહાતુભાવા—મુનિવરા, વિદ્વાના, વિચારકા અને ધગશ ધરાવતા આપણા કાર્યકરાને આવું અતિ સમયાપયાળી કાર્ય કરવા માટે અમે હાર્દિક ધન્યવાદ આપીએ છીએ. તેએ આ કાર્ય કરીને સમાજ ઉપર ઉપકાર કર્યો છે, તેથી તેએ પ્રત્યે અમે સમાજની વતી આભારની લાગણી વ્યક્ત કરીએ છીએ.

અમ સારસ્ત્રત ઉત્સવ કેવા માટા પાયા ઉપર આપનુ ઉજવી શક્યા, અથવા એમાં આપનું કેટલા અંગે સફળ થઈ શક્યા, કે એમાં આપનું ધારનું મુજબ કેટલું કાર્ય પાર પાઢી શક્યા વગેરે ખીતા અમારે મત હાડી મહત્ત્વની નથી. અમારે મત તા આવા ગ્રાનાત્સવની એક યાજના તૈયાર કરવામાં આવી અને તેને સમય સ્થળ અને સંયાગોને અનુસાર પાર પાટવામાં આવી એ ખીતા જ લારે મહત્ત્વની છે; અને આ મહત્ત્વની દિષ્ટિએ જ અમે આ સારસ્ત્રત ઉત્સવનું મૃત્યાંકન કરીએ છીએ, એની પ્રશ્રંસા કરીએ છીએ, એનું સ્ત્રાગત કરીએ છીએ.

આપણે ત્યાં દર્શનના એટલે દે શકાના પાયક અનેક નાનામાટા ઉત્સવા દેર ઠેર, વારંવાર યાજવામાં આવે છે, પણ ગ્રાનના ઉત્સવાની અને તેમાં ય જે ઉત્સવાથી સમાજમાં ગ્રાન પ્રત્યેના આદર વધે એટલું જ નહીં પણ દરેક વ્યક્તિને દિલમાં એમ થાય દે ગ્રાનને પ્રાપ્ત કર્યા વગર ન તો આપણા પાતાના ઉત્કર્ય સધાવાના છે; દે ન તો સમાજના ઉત્કર્ય સધાવાના છે. એવા ઉત્સવોની અને એવી પ્રવૃત્તિઓની આપણે ત્યાં ભારે ખાસી છે. શ્રહાના શ્રેત્રને જેમ આપણે સમાજ વ્યાપક બનવા દીધું છે; તેમ ગ્રાનના શ્રેત્રને આપણે વ્યાપક બનાવો દીધું નથી; એમાં તો આપણે અશુક વ્યક્તિઓને ભળાવીને જ સતીય માની લીધા છે. પશ્ચિમિ જેન સંસ્કૃતિની પ્રગતિ રાકાઈ લઈ છે અને એનું કાર્યક્રેત્ર વધુ ને વધુ સંકૃચિત બનતું થયું છે. સમાજના યાજફેમની દેહિએ આ સ્થિતિને દ્દર કરવાની ખદ્દે જરૂર છે. શ્રહા અને ગ્રાન-એ અને પરલાં સમતુલાવાળાં બને તો જ જેન સમાજ પ્રત્રતિ સાધી શકે, અને પાતાની વિશ્વકસ્થાણની છાય છી ત્યારે લાદી શકે.

કેવળ શ્રહાનું રટન કર્યાં કરીએ તા પરિલામ જ્ઞાન પ્રત્યે અભિરુચિ જાગવાના અંદલે અંધશ્રહા તરફ જ આકર્ષે શ્રુ વધી જાય; અને છેવટે જ્ઞાનનું ક્ષેત્ર વધુ તે વધુ ઉપેક્ષિત અની ગયા વગર ન રહે. આપશું જ તત્ત્વજ્ઞાન, આપશું જ ઇ તિહાસ કે આપશું જ સાહિત્ય આપશું યથાર્થ રૂપમાં ન પિછાણી શકીએ એ ખીના આ વાતની જ સાક્ષી પૃરે છે. સમાજમાં ચારે કાર આવી પરિસ્થિતિ પ્રવર્તી રહી છે, અને આપણા આગેવાનામાંના ઘણાખરા હજુ પણ પાતાની શક્તિએ આવે માર્ગે જ વાપરતા દેખાય છે ત્યારે આવે! એકાદ, લહે નાના સરખા પણ, જ્ઞાનાત્સવ ચિત્તને આપમેળ જ આકર્ષી લે છે, અને આપણી પ્રશંસા માગી લે છે. આ સારસ્વત ઉત્સવનું આ દિષ્ટેએ અમારે મન બહુમૂલ્ય છે.

એક દિષ્ટિએ કહેવું હાય તા એમ જરૂર કહી શકાય કે, આ સારસ્વત ઉત્સવના યોજકાએ એક નવા ચીલા પાડવાનું શુલ કાર્ય કર્યું છે. આ કાર્ય સહુ કાઈએ અનુકરણ કરવા જેલું ઉત્તમ કાર્ય છે. અમે ઈચ્છીએ છીએ કે, ડલાઈમાં ઉજવવામાં આવેલ આ જ્ઞાનાત્સવને એક શુલ શરૂઆત માનીને ઠેર ઠેર અનુકરણ કરવામાં આવે અને આપણા પ્રત્યેક દર્શન-ઉત્સવની સાથાસાય, તેમ જ સાવ સ્વતંત્ર રીતે પણ, આવા જ્ઞાનાત્સવા યાજવામાં આવે અને તેની જ્ઞાનના મહિમાને છાજે એ રીતે સંપૂર્ણ ઉદારતાપૂર્વ હજવણી કરવામાં આવે. જ્ઞાનની ઉપાસના કરતાં કરતાં શ્રદ્ધા ડગી જવાના સુદ્ધ લય સેવવાની જરૂર નથી. ઉલદું જ્ઞાનથી પરિમાર્જિત અનીને શ્રદ્ધા વધુ અળવાન જ અનવાની. અને એમ કરતાં શ્રદ્ધાને વળગી એઠેલું અધ્યાશું તો અળશું થઈ જતું હાય તા, તે તો સર્વથા ઇઈ જ ગણાય.

આ સારસ્વત ઉત્સવમાં ગ્રાનના નિર્ભેળ સગપાંથી આકર્ષાઈને મુનિવરા અને ગૃહસ્થાએ તેમ જ જૈન અને જૈનેતર વિદ્વાનાએ આત્મીય ભાવથી ભાગ લીધા એ આ ઉત્સવની બીજી કયાન ખેંચે એવી વિશેષતા છે. બીજા, બીજા કર્મા પ્રત્યે જ્યારે સહિષ્ણુતા રાખવાની અને એમની સાથે સમન્વય દર્ષિમૂલક અંધુભાવ કેળવવાની ખૂબ જરૂર છે ત્યારે આવા ઉત્સવા બહુ ઉપયોગી સેવા બજાવી શકે, અને માણુસ માણુસ વચ્ચેની જીદાઈની દીવાલને સારા પ્રમાણમાં દૂર કરી શકે એમાં જરાય શક નથી. આ દર્ષિએ પણ આ ઉત્સવ અનુમાદના માગી લે છે.

અને મહાપાધ્યાયજી સરખી વિભૂતિની વિદ્યાનાં અનેક ક્ષેત્રોનું મૌલિક અને તલસ્પરી જિતે ખેઠાનું કરવાની વિરલ શાંકત પ્રત્યે આપણે જનતાનું ધ્યાન દારી શક્યા અને એમના સર્વં બ્યાપી સાહિત્યનું પુન્ચસ્મરન્નું કરી શક્યા એ આ ગ્રાનોત્સવની એક વધુ સફળતા છે. ઉત્સવમાં નક્કી કરવામાં આવ્યું છે તેમ, આપણે કચ્છીએ કે મહાપાધ્યાયજીના અત્યાર સુધીના અમુદ્રિત રહેલા બ્રંથરતના મુસંપાદિત અને સંશાધિત રૂપમાં વહેલામાં વહેલી તકે જનતા સમક્ષ રજૂ કરવામાં આવે અને જે બ્રંથા મુદ્રિત થઈ ચૂકેલા છે તેમાં પન જે ફરી સંપાદિત કરવા જેવાં હાય તેને ક્રીથી મુદ્રિત કરવામાં આવે, આ ઉત્સવની ઉજવણીથી જ આવી મહાગ્રાની વિભૂતિના ગ્રાનખનાના જનતા સમક્ષ મુચેપ્ય રૂપમાં રજૂ થવાની આશા ઊભી શઇ છે. આ આશા વેળાસર ફળીબૂત થાએ એમ પ્રાર્થીએ છીએ. આ ઉત્સવના નાના—માટા બધા પ્રયોજકા અને કાર્યં કરોને ફરી ધન્યવાદ આપીએ છીએ, અને આવા સુંદર કાર્યનું સર્વંત્ર અનુકરન્નું થાએ એમ ઇચ્છી વિરમીએ છીએ.

સત્ર ઉપર સફળતા ઇ^રછતા અને અભિનંદન આપતા આવેલા સંદેશાએા

િ ગાંધ—મુત્ર ઉપર પત્ર અને તાર કાશ પૃત્ય-જિનાચાર્યો,—સુનિવરા-સાધ્વાછએા, તથા રાજ-કમાંચારોઓ, સુનિવસિડી કોલેજ વગેરે રાષ્ટ્રાબિક સંસ્થાના કુલપતિ-ઉપકુલપતિ, પ્રાધ્યાપકો આદિ વિકાના, પંડિતા, શાસીઓ, તથા જેન સમાજના સંસ્થાએ જેન સમાજના કાર્યકરા, અને બીછ અનેક મુસ્યાઓ વગેરેએ તાર કપાલફાસ જે મુદ્દેશાઓ પાઠ્યા હતા તેને અહીં રજ્ય કર્યા છે. પ્રથમ પત્રફાસ આવેલા ને પછી તાર કાશ આવેલા મુદ્દેશાઓ, તેના ઉપયાગી ભાષ સાથે પ્રદ્યા છે. તે એઠલા માટે કે પૃ. ઉપાધ્યાયછના વ્યક્તિત માટે, તેમના કાર્ય માટે સમાજના ન્હાના-મ્લાઢા મૈયાઓમાં કેવી છાપ પડેલી છે? તેમને અગે અને તેઓશીના સાહિત્ય અગે શું કરતું તેઈએ તેને અગે કેતું દિશ્લિન્દ, અને શાં સ્થનો કે ભાવના છે? તે સાલું કાઈ અર્બુ શકે અને તેમાંથી તેઓશીના અભૂમાલ અને અદ્ભુત માહિત્યના અધ્યયન, પ્રચાર અને વિકાસ માટે સહુંના મહકાર માંપડે અને તે કારા કંઈક ક્લાધાયક પરિભામાં ઊભા થયા. સદેશા બધાય શુજરાતી ભાષામાં જ મૂક્યા છે. ૨૦ વિ૧]

ડપાલ કારા મળેલા સંદેશાએા

મદામદાપાંધાયજી શીયગ્રાવિજયજી સાદેષની ચરવુપાદુકા — ફેરીના પ્રત્યિમદાન્સવ પ્રસંગે એએાંશીના રમરવાર્થે શ્રીસારસ્વત્સત્રની જે યાજના ઘડવામાં આવી છે તે જણી આનંદિત થયા છીએ અતે તે સંપૂર્ણ સફળ થાય એમ અનાકરવ્યી ઇચ્છીએ છીએ.

ચ્યા શુભ પ્રસંત્રે થલારથી પધારેલા ધળા વિદ્વાનોનો સમાત્રમ થશે, એઓની વિદ્વાનો લાભ અગશે તો આ શુભ પ્રસંત્રે તેઓશીજની દમેશનિ માટે યાદગીરી રદે અને જેનસમાજ તેઓશીજનું નામ સ્મર્ચ કરતી રદે એટલા સાર્જું અને ભારપૂર્વેક ભલામળું કરીએ છીએ કે એઓશીજની દરીની સમીપમાં એ સ્માને એઓશીજના શુભ નામથી શ્રીસંસ્કૃત પાકશાળા સ્થાપન કરવામાં આવે અને એમાં વ્યાકસ્ત્યું, ન્યાય આદિના અભ્યાસ કરાવવામાં આવે. એમાંથી નીકલા વિદ્વાના જેનધમંત્રો અને એઓશીજના શુભ નામતા જિત્યવાવી ક્રમાર્ય એમ અમા શુલ અન્દરસ્ત્યુયો આદીએ છીએ.

—આચાર્યી વિજયવદ્યભસ્ત્રિક, કાર, મુંત્રાર્ધ.

શ્રીષરા વિજયસાર વનસત્રની ઉજવણી દારા ત્યાયવિશાસ, ત્યાયાયાર્થ મદાપ્રાધ્યાય શ્રીષગ્રાવિત્રાયજી ત્રણિવરના શુણાસિવાદન દરવાના અને તેઓશ્રીના વિપુષ્ટ અને વિશ્વિષ્ટ સાહિત્યના વિદ્વાનોને પરિસ્થ દ્યાવવાના તમાંગ આ પ્રયત પૂત્ર સફળ ભના એન પ્રચ્યું છું. બે-ચાર દિન પૂરના તેમનાં શુણુમાન કરી સંતિષ્ય ન માનવા, તેમના જીવન અને કવનને સાક્યાદી ખનાવી સાક્રાયકારના એ પવિત્ર ઉદ્દેશથી તેમણે સાહિત્ય સર્જન કર્યું છે તેને પૂર્ણ કરવાનું મંત્રલકાર્ય અનવરન આલુ રહેવું એઇએ.

ડબાઇમાં તેમનાં જીવનની અંતિમ પળા વ્યતીત ચએલી હોઇ ડબાઇના શિરે આ જવાબદારી વિશેષ રૂપે રહે છે.

—આચાર્યશ્રી વિજયક્ષિધસૂરિજી, ખંલાત.

મહામના વિદ્દર્શંદમાન્ય મહોષાં ખાયછ શ્રીયશાવિજયજી મહારાજના ઉત્સવ જે ડમાઇના સંધે મનાવવાના નિર્ણય કર્યો છે અને તેમને માટે અનેક પ્રકારની સામગ્રી સંગ્રહ કરવામાં તત્પર છે એવા પત્રા દારા સમાચાર જાણીને અત્યંત આનંદ થયા છે. કેમકે શ્રીઉપાં ખાયછ એક સામાન્ય વ્યક્તિ નહિ ખલ્કે શાસ્ત્રનિષ્ણાત, ષટ્–દર્શનમાં વિખ્યાત અને પૂર્ણપ્રતિભાશાળી હતા, જેમણે અનેક ગ્રંથાની રચના કરીને જેન સમાજનું ગૌરવ સમુન્નત ખનાવ્યું એવા મહાયુરુષાની જેન સમાજમાં આજે પણ જરૂરત છે. અને એવા યુરુષાના જન્મ થવાથી જ જૈન જગત યુનઃ પૂર્વ માફક સંસારમાં ચમકા ઊઠશે. વિશ્વહિત-ચિંતક ઉપાં ખાયછની જયંતી પ્રતિવર્ષ પ્રત્યેક ગામ અને શ્રહેરમાં શાનદાર રીતે મનાવવી જરૂરી છે. મહાત્સવની સફળતા ઇચ્છોએ છીએ.

—આચાર્યજી વિજયહિમાચલસ્રસ્છિ બમનગર.

શાસનના મહાન ઉપકારી પૂર્વ ઉપાધ્યાયજી મહારાજ શ્રીમાન યશાવિજયજી મર્વ તે! સારસ્વતસત્રરૂપ મહાત્સવ કરવાનું નિરધાર્યું છે તે જાણી અત્યંત આનંદ થાય છે. આપશ્રીઓના હસ્તે પૂજ્ય ઉપાધ્યાયજી મહારાજના ચૂમ — ગુરુમંદિરની પ્રતિષ્ઠા કરવાનું થાય છે તે તે!ટે! પુષ્યંના ઉદય છે. અમે આ કાર્યં તે માટે શ્રીવિજયદેવસૂરિ સંધની કાર્યવાહક કમિટીને આ કાર્ય વધુ યશસ્વી બનાવવા માટે ધન્યવાદ તેમ જ શુભ આશીર્વાદ આપીએ છીએ.

—આચાર્યાં શ્રી ચંદ્રસાગરસરિજી, સાળરમતી, અમદાવાદ.

યશાવિજય સારગ્વતસત્ર મહાત્સવની સફળતા ઇચ્છું છું.

—૫'. સુનિશ્રી ભદ્ર'કરવિજયજી, સસ્ત.

યશાવિજય સારસ્વતસત્રના મહાત્સવના ઉદ્દધાટન પ્રસંત્રે અભિનંદન.

—મુનિશ્રી પુષ્યવિજયજી, અમદાવાદ.

યશાવિજય સારસ્વતસત્રની અમા સફળતા ઇચ્છીએ છીએ.

પૂર્વ યશાવિજયજી મહારાજનું સર્વાંગી ચરિત્ર તથા અપ્રગટ સાહિત્ય જલદી પ્રકાશિત થાય એ પહેલી તક જરૂરી છે.

—મૃતિશ્રી દર્શનવિજયછ ત્રિપુરી, રાણીગામ, રાજસ્થાન.

પૂજ્ય ઉપાધ્યાયજી મેદારાજ પ્રત્યે ભક્તિસાવ વ્યક્ત કરવાના અને તેઓ પૂજ્યશીજીના દર્શનશિક્ષિ કરનાર સમર્થ સાદિત્યના યચાચિતરૂપમાં પ્રકાશમાં લાવવાના આ પ્રસંગ વ્યતુમાદનીય અને તેઓથી, પ્રત્યે ભક્તિભાવ ધરાવતા આત્માને આનંદપ્રદ છે. એ પ્રસંગને દીપાવવા તેમા યયાશક્ય તમારી પ્રકૃત્તિમાં સફળ ખેતા.

—૫. મુનિશ્રી ધુરધરવિજયજ ગણિ, મુંબર્ધ

તેઓશ્રીના ક્રમકારા આપણા પર દેશ, સમાજ તથા સંસાર પર અનેકવિધ છે. તેઓશ્રીની અફ્સુન મેધા, અસાધારણ પ્રતિભા તેમ જ પ્રચંડ વિદ્વાએ જેંગ શાસનમાં શક્વની ઇતિદાસ સર્જ્યો છે.

૧૪૪૪ શ્રંથ રતોના સ્થયના સમર્થ વિદ્રાન મૂરિપુરંદર શ્રીદરિસ્ડમ્સીશ્વર, તથા દલિદાલ સર્વત્ર આચાર્ય ભગવાન શ્રીદેમચંદ્રમ્સીશ્વર, આ બન્ને સદાન પુરુષોના પગલે પગલે જનશાસનમાં તેમજ સાહિત્ય સંસારમાં અપ્રતિમ પુરુષાર્થ દારા પાનાની શક્તિઓના પરમાત્દ્રષ્ટ વિકાસ સાધો જે ભગ્ય વારસા આપણી સમક્ષ તેઓશ્રી મૂર્ય ગયા છે, તે માટે તેઓશ્રીના આપણા પરના મહાન ઉપકાર આપણે કદી ખૂલી શક્યોએ તેમ નથી.

એએાશ્રીએ જે વિક્ટકાલમાં નાતપાય, કર્મયાય તથા ભક્તિયાયતા વિશુદ્ધ માર્ય પ્રચાર્યો, પ્રસાર્થી તેમ જ તેની સ્વામ વ્યાવતાં આક્રમણેતા નિજરાક્તિથી (એક્લપણે) જે પ્રતીકાર કરી, જૈનશાસનની અનુષ્ય પ્રભાવના તેમણે કરી તે ખરેખર અદિનીય છે.

વ્યાવા અડામહનીય, પરમયેાગી સહાન પુરુષના શુજાાનુવાદનું જે વ્યનુપમ કાર્ય તમે સહુ ગુજાાનુરાગી ્સન્જનોએ વ્યારંભ્યુ છે. તે સાચે જ પ્રશંસનીય છે.

પૂ. ક્યાંધ્યાયશ્રીના સાહિત્યના પ્રચાર વર્તમાનયુગમાં વિશેષ રીતે શાય તે ઇચ્છનીય છે. અને તેમા જે સત્ર કજવી રહ્યા છે! અને તે દ્વારા પૂ. ક્ષ્યાધ્યાયશ્રીના આપણા પરના ક્ષ્યકારને ભવ્ય અંજિલ અપંદ્ય કરી રહ્યા છે! તે અભિનંદનીય છે.

પ્_{રત}્ય ઉપાધ્યાયજી બહારાજગ્રીનાં જીવન તથા કવનના ગંભીર અન્વેયજીપૂર્ણ અભ્યાસપૂર્વક એક વિશાળ ગ્રંથ આ પ્રસંગે પ્રસિદ્ધ થાય તે ઇચ્છનીય છે.

તદુપરાંત તેઓશ્રીનાં જીવન તથા સાહિત્ય પર વિવિધ દિષ્ટિકાણથી જીદા બુદા નિર્ભધા; તુલનાત્મક અલ્યાસર્ય લેખા, ઇત્યાદિ સામગ્રી તૈયાર કરવા શક્ય પ્રયત્ના થાય તા તે પણ આવસ્યક છે. તા પૂ જ્યાંધ્યાયજી મદારાજશ્રીના વ્યક્તિત્વના સંસારના મુમુક્ષુજનાતે, અભ્યાસકાને, સંગાધકાને તેમ જ વિદાન વર્ષને પશ્ચિય પ્રાપ્ત થાય.

તમે સહ પૂ. ક્રિયાંમ્યાયછ મહારાજશીના છવન-ક્વનને જે અંજશી અર્પવા આજે ફિલ્સાડ પૂર્વક સજ્જ બન્યા છા, તે માટે મારા તરક્યી યુનઃ અક્ષિવંદન આપવા પૂર્વક હું એને અંગે મારી નન્ન મૂચના તમને આ રીતે મૂચર્લુ છું. જે માટે તમે પણુ આ દિશામાં પ્રયત્નશીલ હશા જ.

અ સત્રના પ્રોત્સાલક તથા આઘપ્રેરક વિદ્વાન સુનિયુંગવ શ્રીષરોાવિજયજીને મારા તરફથી સાદર-અનુવંદના સુખરાતા.

—૫. સુનિશ્રો કનકવિજયજગણિના પત્રમાંથી

્યશાવિજય સારસ્વતસત્ર પ્રસંગે અત્યંત આનંદથી તમારી સાથે અંતઃકરણપૂર્વંક સહાતુભૂતિ. દર્શાવું છું. —સુનિશ્રી રમણિકવિજયજી, અમદાવાદ.

પૂન્ય ઉપાધ્યાય શ્રીયશાવિજય સારસ્વતસત્ર મહાત્સવનું જાણી આનંદ તથા યૂલ—ગુરુનીમ'દિર પ્રતિષ્ઠા કરવાનું થાય છે. તે માટે પુણ્યના ઉદય છે. આ મહાન કાર્ય'ની સફળતા ઇચ્છીએ છીએ.

—સુનિશ્રી ચ'દ્રોદયસાગરજી, સાખરમતી-અમદાવાદ

પૂર્વ મહાપાધ્યાય શ્રીયશાવિજયજીમહારાજના સ્થાપણા ઉપર જેવા તેવા ઉપકાર નથી. તેમની સ્મૃતિ નિમિત્તે તેઓશ્રીના પ્રાંથાનું સંરક્ષણ તથા પ્રકાશન વગેરે જેટહાં શક્ય બને એટહાં કરી છૂટનું. જ્ઞાન એ તા દીવા છે. તેના ઉપર જ શાસનના ટકાવ છે. તેની જ્યાત જેટલી વિશેષ ઝળહળ તેટલા શાસનને વધુ લાલ; છે.

—મુનિશ્રી રાહિતવિજયછ, વાપી

અમે આશા રાખીએ છીએ કે, હજી તમે ધર્ણુ માર્ટા કાર્યો કરીને જેમ બને તેમ જૈન શાસનના વિજયધ્વજ ક્રિક વા અને સાથાસાય એ અભિલાષા રાખા કે, જેવી રીતે આ મહાન પુરુષે પ્ર'થા રચીને આપણા પર ઉપકાર કર્યો છે, તેવી જ રીતે આપણું પણ તે જ માર્ગે અનુસરી આપણાં બાળકા અને સહધર્માં બાઇ એ પ્રત્યે ઉપકારકદત્તિથી વર્તીએ.

—સાધ્વી કેવળશ્રીજી, ખંભાત

તમે જે શ્રીમહામહાપાધ્યાય યશાવિજય સારસ્વતસત્ર મહાત્સવ મનાવવાના નિશ્ચય કરીને ગુરુલક્તિના પરિચય આપ્યા છે તે પ્રશ્નંસનીય છે. મહાત્સવ સર્વ પ્રકારે સફળતાને પ્રાપ્ત કરતા કાઈ રચનાત્મક કાર્ય સમાજની સન્મુખ ઉપસ્થિત કરે, એ જ અલિલાયા.

—સા^દવી શીલવતીશ્રીછ, ક્લકતા.

આ મહિનાની તા. ૭–૮ મી એ ઉજવાતા શ્રીયશાવિજય સારસ્વતસત્ર મહાત્સવ માટેની આમંત્રણ પત્રિકા ખદલ શ્રી ય. સા. સ. ની સતકાર સમિતિ અને તેના પ્રમુખના તેઓ આભાર માને છે. પણ આ પ્રસંગે પહેંચી ન વળવા ખદલ દિલગીર થાય છે. તેઓ આ પ્રસંગે મહાત્સવ માટે ભાવભરી ભલી આશાઓ વ્યક્ત કરે છે.

—સેક્રેટ**રી, લીમસેન સાચર**, ચીફમિનિસ્ટર(વડાપ્રધાન[:]), પ**ં**જાખ.

શ્રીયશાવિજયજી મહારાજશ્રીના અંતિમ સમાધિ સ્થંળ જે ઉત્સવ યોજવામાં આવ્યા છે તે આનંદની વાત છે.

: મામ ત્રણુ માટે ખૂબ આભાર. આકરિમક આમંત્રણથી આવવાનું બની શક્યું નથી. તમારા કાર્યક્રમ પ્રણા રસપ્રદ છે. તમારા પ્રયત્નાની સંપૂર્ણ સફળતા ^{મું}ચ્છું છું.

—છ. વી. માવલ કર, લાકસભા સ્પીકર, દિલ્હી.

આષ્ની આમંત્રસુ પત્રિકા બદલ આબાર પણ અર્ડીના કાર્યભારના કારણે તેઓ આવી શકે એપ નથી એ માટે દિલગીર છે. તેઓ આ પ્રસંગે ઉત્સવ માટે લક્ષી આશાઓ વ્યક્ત કરે છે.

—મણિલાલ સી. શાહ, ડેપ્યુટી મિનિસ્ટર ફીનાન્ય ઇન્ડિયા, ન્ય્ સ્થિદી.

શ્રીવરોલિજપછ સારસ્વતસત્રના મહેત્સવ વિ. સં. ૨૦૦૯ ના કાલ્યુન સાસની કૃષ્ણ પક્ષની સપ્તમી—અપ્ટમીની તિથિઓએ ક્ષ્મેઇ નગરીમાં ઉજવાનાર પ્રસંગે આપે શ્રીમની દ્રસાવદન મહેતાને ગ્રાનોલ્સવસત્રમાં હાજર રહેવા આમંત્રણ આપ્યું તે માટે તેઓ આપના આભાર માને છે. પણ તે તિથિઓએ તેઓ ક્ષ્મોઇ આવી શકે તેમ નથી માટે દ્રિલગીર છે. છતાં ઉપરાક્ત સત્ર વધી રીતે સફળ થાય એમ ઇચ્છે છે. —હંમાબહેન મહેતા, વાઇસ ચાન્સેલર, સ્થાજરાવ શુનિવર્સિટી

વાઇસ ચાન્સેલરે સતે ૧૯૫૩ ના માર્ચની ૭–૮ મી તારીએ ડસોઇમાં કરાતા શ્રીયરોાવિજય સારસ્વનસત્ર પ્રસંગે શ્રી હી. એમ. પડેલ (દર્શન–શાસ્ત્રના વ્યાખ્યાના અને કળાવિભાત્રના નિયોજક) અને શ્રી. જે. પી. કાકર (એાસ્એન્ટલ ઇન્સ્ટીટ્યુટના છપાયેલા ગ્રંયવિભાત્રના સુપરિન્ટેન્ડેન્ટ)ને પ્રતિનિધિ

तर्हि भेाध्यवानी भुशी भतावी छे.

—રજીરદાર મહારાજા સુયાજરાવ શુનિવસિંદી, વડાજ્ઞા

ર્યાયગ્રાવિજય સારસ્વતસત્ર મહાત્સવમાં હાજરી આપવાના નમારા માયાળુ આમંત્રણ માટે ખરેખર, દું પણ આભારી છું. પરંતુ પરિષદમાં હાજરી આપવાને મારા કાળ્ બહારની પરિવિધનિએ હાજરીને અશક્ય બનાવી રહી છે એ માટે મને ભારે ખેર ચાય છે. દું બધી રીતે પરિષદની અમત્ય સમર્જું છું અને સમયપણે સકળના ઇંચ્હું છું.

—એમ. એન. ચીનિવાસ,

ત્રા. મહારાજ સ્યાજરાવ યુનિવર્સિંગ ઑફ ખરાય, સેત્રિયોલાજ અને ફેક્ક્ટી ઑફ આર્ટસ વિસાય.

પૃત્યપાદ યશોવિજયજી મહારાજ સમસ્ત ગુજરાતનું શેરવ છે, એટલું જ નહીં પણ ભારતનું બૃર્ણ છે. આવી પંતિ અને પવિત્ર વિસ્તિના માનમાં મહાતસવતી જે યોજના કરવામાં આવી છે તે સર્વથા દિવત છે. કેટલાંક વર્ષો પહેલાં પાટણમાં કજવાયેલ હંમ સારસ્વતસત્ર જેવા આ અક્ષિત્વ હેમચંદ્રાચાયેના સારસ્વતસત્ર સર્વને પ્રેરણા આપનારા લનશે એ વિશે શંકા નથી. ગુજરાતની અસ્મિનાને વેગ આપનારા આ મહાતસ્વની યોજના માટે સમિતિ ધન્યવાદને પાત્ર છે.

આ સમારંભ સર્વથા સફળ થાય જેવી પ્રસુ પ્રતિ પ્રાર્થના છે.

—ગાવિંદલાલ હરગાવિદદાસ, ઓરિએન્ટલ ઇન્સ્ડીટ્યુટ ડિરેક્ટર, વહેદદા.

શ્રી કેમચંદ્રાચાર્ય છ પછી ગુજરાતમાં સંસ્કૃત તેમ જ પ્રાકૃત શાળામાં સંખ્યાવ્ય અપ્રતિમ શ્રંથદેખન દ્વારા ગ્રાનન્યોતિ પ્રદામ રાખી 'ક્યાંથી શારદ'નું વિરુદ પ્રાપ્ત કરનાર સાદિત્યસ્ત્રાયી કૈયાંચાયછ શ્રીયશાવિજયછના સાસ્ત્રત સત્રના પ્રથમ દિવસે દું દાજરી આપી શ્રક્તા નથી તે બદલ દિવસીર હું. પછુ તે એંગેની વિદત્સભાના અધિવેશનમાં દું અવસ્ય દાજરી આપોશ. સારસ્વતસત્ર મહાત્સવની સક્ળતા તેમના ગ્રાંથસ્થ વાક્સ્મના અધ્યયન, અધ્યાપન, સંશોધન અને પ્રચારની વ્યવસ્થાને જીવંત અનાવવામાં રહેલી છે.

હું મહાત્સવની સફળતા ઇચ્છું છુ.

—હિરિપ્રસાદ છ. મહેતા, વડાદરા. પ્રિન્સિપાલ, ખરાેડા સંસ્કૃત મહાવિદ્યાલય, એમ. એસ. યુનિવર્સિટી ઑફ ખરાેડા.

ખાપના તરફથી મહાત્સવમાં ભાગ લેવા માટેના નિમંત્રણ ખદલ હું આપના આભારી છું. ન્યાયાચાર્ય શ્રીયશાવિજય ઉપાધ્યાયનું પ્રકાંડ પાંડિત્ય અને સવિપુલ ખહુમુખી સાહિત્યપ્રવૃત્તિ હરિભદ્રસૃરિ અને હેમચંદ્રાન્યાર્યનું સ્મરણ કરાવે તેવાં હતાં. તેમની અપ્રસિદ્ધ અને અપ્રાપ્ય રચનાઓના ઉદ્ધાર થાય, તેમની વિદ્વતાનું યાગ્ય મૃશ્યક્રિન થાય અને તેમની ખહુશ્રુતતા પ્રેરણાદાયી ખને એવા પ્રશસ્ય હેતુ સાથે સંકળાયેલા શ્રીયશાવિજય સારસ્વતસત્ર મહાત્સવને સંપૂર્ણ સફળતા ઇચ્છું છું. આવી ન શકવા માટે ક્ષમા ચાહું છું.

—હરિવ**દ્ધભ ભાયાણી,** મુંખઇ. પ્રાપ્થા. ભારતીય વિદ્યાભવન

જેમણે વિવિધ પ્રકારની સાહિ લિક સેવાથી એ સમયના ક્ષેત્રમાં વધુબંસ્યાં પાદ ચિન્હાે પાડ્યાં છે, તે ગુજરાતના પ્રખર અભ્યાસી સંત મહાસમર્થ વિદ્વાન સુનિ શ્રીયશાવિજયના માનમાં યાજાતા યાદગાર સારસ્ત્રત સત્ર પ્રસંગે આવવાને તમારૂં માયાળુ આમંત્રદ્યુ મળ્યું તે માટે આલાર માનું છું. આ પ્રભાવ- શાળા બક્તિને અમારી ભાવભરી અંજલિ અપંવા, આ સંસ્થાવતી હું તમારી સાથે અને તમારા સાથી- દારા સાથે જોડાઉં હું અને સત્રની ભબ સફળતા ઇચ્છું છું.

ભલી આશાઓ અને માયાળુ વિનંતિઓ સાથે હું છું આપના

—આર. એન. કાંડેક્ર, લાંડારકર એારિએન્ટલ રિસર્ચ ઇન્સ્ટીટયુટ ઍાનરરી સેક્ટેરી, પૂના

ગુજરાતના મહાવિદ્વાન શ્રીયશાવિજયના માનમાં તમે જે સારસ્વતસત્રની નિયોજના કરી રક્ષા છા તે પ્રસંગ આવવાને તમે માયાળુ આમંત્રણ આપ્યું તે માટે હું આપના ખૂબ આલારી હું. આ સત્રની સુંદર સફળતા ઇચ્છું છું. આ સત્ર પ્રસંગે કાઈ લેખ વાંચવામાં ભાગ લેવાની વિનંતિ વિશે મારે જસ્યુવનું જોઈએ કે, મહાન યશાવિજયના કાર્યો અને જીવન વિશે અથવા જૈનધર્મ સંબંધી કાઈ વિષય પરત્વે ચર્ચા કરતા કાઈ લેખ હાલ તરત મારી પાસે તૈયાર નથી.

—પી. કે. ગાઉ, બાંડારકર ઐારિએન્ટલ રિસર્ચ ઇન્સ્ટીટચુટ, પૂના.

ડબાઇમાં સને ૧૯૫૩ ના માર્ચ મહિનાની ૭–૮ મી તારીખે ઉજવાતા શ્રીયશાવિજય સારસ્વતસત્ર મહાત્સવર્મા હાજરી આપવાના તમારા માયાળુ આમંત્રણ માટે હું આપના આભારી છું. એ મહાન જૈન સાધુને મારી નક્ષ અંગતિ અપૈતાના આ વાદમાર પ્રયંગ ટું હાજર રહી શક્યો દાન ના મને પૂજા આતંદ થાત; પણ બારી સામે પડેશી કાંયી મને એમ કરની લાકો દર્શ છે.

શ્રાયશાવિજયના ઝરન અને કાર્યો માટે એપિક લેખા, જેઓ વાંચવામાં આવશે, એ સબા-સરતી પ્રાપ્તના કરવાના તમારા વિચારને અભિનંદન આપું શું અને ખેતે શંકા નથી કે, શ્રા ઇધરસંદ્રજી જેવાના સબાપનિત દેશ્યા જે અર્થીઓ થશે ને જેનદર્શન અને સંસ્કૃતિના અધ્યવનમાં સક્યાના પૃચ્ચા કરશે. રિક્તમુશાનો લાયણો અને કાર્યવાદી સંસ્કૃતમાં થવાની છે, એની નીધ પેનો મને દર્ય થાય છે.

મંદાત્મવતી અધી રીતે દું સફળતા ઇન્ધું ધું.

—એસ. એમ. ક્યું, ડેક્કન દેહિંગ દિરેક્ટર, પુના.

થ્યા આસ્ત્રન સત્ર મેરાેન્યુવને ખારી શુંબેચ્છાએ: પાદવું હું, સમ્યગ ન્નાંતર્ધાહિ વખતે હું લાજર રહી શક્તા નથી એનું મને દુઃખ છે.

– લસિનચંદ્ર દ્રલાસ, જિલ્લા કંસક્ટ, વંદાસા

આપ શ્રીએ મેડાપાધ્યાય શિવશાવિજવછ સાસ્ત્વતાસ્ત્ર ફંપ આ મેડાત્સવતા ધાજના કરી જેત-જૈતિત સમાજ ઉપર ઉપકાર કંપો છે. સત્તરૃષ્ઠતા ધાળ અને તેમાંએ વળી મહાન પુરુષના છવન અને સાહિત્યની ઝાંખી આપના પ્રસંત્ર કાઈક્ત્રિયર જ અને છે. આ કાળમાં આવ્યવાદ્યા અકિન થઈ પ્રસાવમાં આપણે પૂખ એનપ્રેપ્ત થઈ જવા છીએ. આવા પ્રશંત્રા આત્માને નિજમાવમાં જામન રાખનારા અને તેમ પ્રમંત્રની મહાન સિદ્ધિ લેખાય અને સમાજ ઉપર ઉપકાર થયા જણાય.

—હાદ્યાભાઇ અ. મહેવા, વડાસા.

શીયદ્ ક્ષ્યાંથાય યટેલિંગવછ મુખ્યા નાનના માયુર અને વિષુય હોય વારસામાં પિયાસુએ: માટે યુષ્ટી વર્લા છે, તેમીથી મુખ્યવદાનની પરેલા દેર દેર મીડાય, તે દ્વારા તે હરાતું જગાયાન કરાય અને કરાયાય તેવી ક્રે.ઇ મેલીન ચેલ્ગના વિશ્વાસ્થ એ જફ્દી છે.

તેઓશનું કમસ્યું તેન, તેનેતર વર્ષમાં ચિસ્સ્યાનો ખંત ને માટે શેમ્ય્રેનિંગત્મછ અધ્યાપન મંસિ અગર વિશ્વવિદ્યાલય માટે કેઇ ચેલ્બનોના વિચાર જન્મે તો તે સુંપ્રે ગ છે, આ ધાજના સમાજ પાંચે તત, પન, ધનેના નાગ તેમજ કેડલાક પ્રખર વિદાન અને પહિનાનો પાંચે આ છવન સમર્પણ તૈવાદીની અપેલા રાખવાના ધ્યેત પહેંચની સમય લાગે ને કવામાનિક છે. દ્રમ્પિયાન તેમનું (શાધ્યું હતાધાય મશાસિંગ્યાછોએ) પ્રિસ્થેયી વાનગી-સમસ્યાપનું આસ્ત્યાદન સમાજમાં છે. શેર થાય તે માટે એકાદ માસિક અપેલ ત્રેમાસિક પ્રસિદ્યિતી મેજના વિશાસ્ત્ર તેને પણ કંઇ અર્થ વ્યક્ષ અના થયાના સતિય અનુક્રવાદો

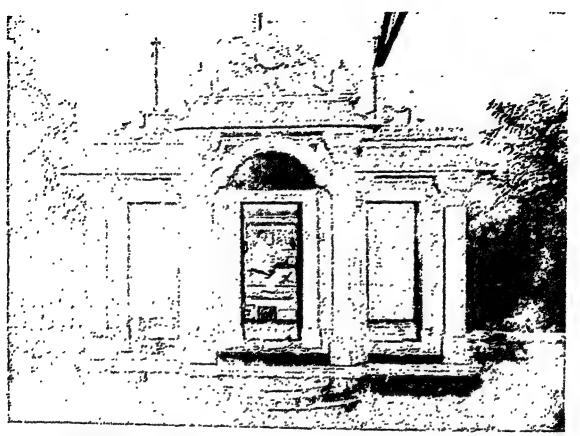
સામતેલ મતની વિજયો પૃષ્ડું-ફિલ્મો અને ફ્રક્સવેલ સાવતાએકોનો પરિપૃર્ણતામાં મહાવક અને એમ અન્યર્થતા!

—લાલચંદ ન દેશાલ, ગોાસ ટોડોપાય



પ્. ઉપાધ્યાયજી લગવાનના પુણ્યપ્રસંગ નિમિત્તે ૩૦ વરસથી ડબોઈ જૈનસંઘમાં પડેલા ક્લેશના અન્ત આવ્યા પછ શ્રીવિજયદેવસૂર જૈનસંઘના ઉપાશ્રયહૉલમાં બંને પક્ષાની હાજરી વચ્ચે ગાદવાએલું પ્રવચન અને આનંદ મિલન

દ્રત્વનીમાં નવા વૈયાર ઘંચોલા આરસના



ન્યાયવિશારક ન્યાયાચાર્ય મહેલપાધ્યાય શ્રીમક ૧૦૮ યટાવિજયજી મહારાજના —: સમાધિસ્તૃપ:—

દિલગીર છું કે, અન્ય રાકાણાને કારણ મહાત્સવમાં હું હોજર રહી શકીશ નહિ

પુગણ પ્રસિદ્ધ દર્ભાવતી નગરીનું મેવહું સદ્દભાગ છે કે, ભક્તકવિ દયારામભાઈ ઉપરાંત એક મહાન દર્શનવેતા અને ત્રાનની વિવિધ શાખા–પ્રશાખાઓને સ્પર્શતા સંખ્યાળધ અભ્યાસ પ્રથાના રચયિતા, સક્ક્ષશાસ્ત્રસંપન ઉદારચરિત સાધુપુરુષે પેતાના દેહોત્સર્ગનું પુષ્યસ્થળ બનાવવાનું તેને સદ્દભાગ્ય અપ્યું !

વ્યાજના પ્રસંગ હત્રાઇના સરકારજીવનમાં એક મહાપ્રસંગ છે-ધન્ય પ્રસંગ છે; અને માટે જ એ પ્રસંગની ઉપસ્થિતિમાં કારહુંબૂન સૌ ધર્માનુરાગી બાઇ-મહેના સર્વના અભિનંદનના અધિકારી છે.

આ મહાન પ્રસંગનું મહત્ત્વ કાયમી સ્વરૂપે જળવાઈ રહે એ અર્થે, પૂજ્યપાદ ન્યાયાચાર્યજી શ્રીમદ્ યશાવિજયજી મહારાજના સર્વં પ્રાંથાનું સમ્યક્ પરિશીલન થાય એ માટે તેઓશ્રીના અપ્રસિદ્ધ પ્રાંથાની હેસ્તંપ્રતા મેળવવાથી માંડીને તેમના પ્રકાશન વગેરેની સર્વ વ્યવસ્થા થવી ઇષ્ટ છે. વળી, આ 'ગુર્મેદિર'ના આશ્રયે શ્રીયશાવિજયજી દ્યાનમેદિર જેવી સંસ્થાની સ્થાપના વિચારાય એ પણ અતિયાગ્ય લેખાશે. આશો છે કે, સમિતિ અને અન્ય વિદ્યુજનગુણાનુરાગીએ! આ વિષયમાં ઘટતું કરશા.

જેમની અનન્ય પ્રંતિલાંશકતાં અને અપ્રંતિમ જીવનસવાસથી ગુજરાતનાં જૈન અને જૈનેતર નરનારીઓ ધન્ય ખન્યાં છે. અને જેમની વિભૂતિમત્તાનાં તેજ કિરંણાએ કેટલાંયનાં જીવન અજવાંત્યાં છે, એવા ગુજરાતના એ અલિનવ 'કલિકાલ સર્વત્ત' હેમચંદ્રાચાર્યજી સમા પુષ્યાત્મા આ પ્રસંગ આપણને સૌને ધર્માલિસુખ અને પરિશાલનાલિસુખ થવાની પ્રેરણા આપા એજ પ્રાર્થના !

સમાર લની હું સંપૂર્ણ સફળતા ઇચ્છું છું.

—ભાઈલાલ પ્ર. કાંડારી, વડાસા

શ્રી. યશાવિજયજી મહારાજનું સ્મેરણુ કાયમ રહે તે માટે જૈન સધી જે કામગીરી કરી છે તે માટે તે સધ ધન્યવાદને પાત્ર જ છે. કારણુ, શ્રીયશાવિજયજી જેવાં મહાન સાધુને યાત્ર જ સ્મારક થવું જોઇનું હતું તેઓશ્રીનું મંદિર સ્થાપન કરી વ્યાપ તે મહાત્માનું ચાડા અંશે ઋષ્ણ અદા કરી રહ્યા છો. ઇધિર આપના કાર્યની સફળતા અને યશ આપે.

—પ્રા. માણિકરાવ, વડાદરા.

શ્રીયરાિવિજયજી સારસ્વતસત્રની ઉજવણી સંગીન રીતે ઉજવાય ને પરિણામે જૈન સમાજ તેમનું સાહિત્ય વિકસાવ ને જૈનં જૈનેતર સમાજમાં ઉપયેગી તેવું પ્રકાશન કરે તેમ ઈચ્છું છું. સત્રના ઉત્સવની સફળતા પાઠવું છું.

—ગુલાયચંદભાઇ, તંત્રી 'જૈનપત્ર' ભાવનગર.

શાનિષિયાસ ક્લોઇ શંહેરને આંગણ જેન સમાજના એક અત્યંત તેજરવી તારકની રમૃતિમાં ઉજવાતું સારસ્વતસત્ર સફળ થાઓ તેમજ જેન સમાજને પથપ્રદર્શક બના એ હાર્દિક ભાવના.

--- રાજપાલ મગનલાલ વારા, ખાખરેચી.

પૂન્ય ક્રયાધ્યાયજી મહારાનશ્રીના શુરૂમંદિની પ્રતિધા માટે આ સબા અને દું સંપૂર્ણ આનંદ વ્યક્ત કરીએ છીએ

સારસ્વતસત્ર મેરોત્સવની સંપૂર્ણ સફળના આ સમા અને અમા ઇચ્છીએ ઇએ.

—વલ્લભુદાસ ત્રિભુવનદાસ, પંત્રી. આત્માનંદ સભા, ભારનગર

આ સંસ્થાના સંસ્થાપક પૃત્યપાદ શાઝતિશાર જેનાચાર્ય શ્રીવિજયલમ*સ્ટ્રીયરજી ઉપાધ્યાય શ્રીયશાવિજયજીશીના અકાટમ પોઝિય અને શુષ્ટ્રોના અનુરાગી દ્વા. તેએાર્શાએ ન્યાં ત્યાં સંસ્થાઓ સ્થાપી છે ત્યાં ત્યાં શ્રીયશાવિજયજીના નામને સો પ્રથમ અપનાવેલ છે. અને જેન સમાજની કાયમ માટે યાદ આપી શ્રીક્રમાધ્યાયજીની યાદી સીપી છે.

આપ આ સત્રના કાર્યવાડોકા આ પરમ ન્યોતિર્ધારનું સાહિત્ય જનતાને ઉપયોગી ચાય એમ પૂરતા પ્રમાણમાં પ્રસિદ્ધ કરવા પ્રયત્નશીક્ષ બનશા તેવી આશા રાખીએ છીએ.

> —**ભાઇચંદભાઇ અમરચંદ શાહ** મંત્રી—યદ્યોરિજ**ય જેન** ગ્રન્યમાળા ભાવનગર.

વ્યાપ શ્રીયશાવિજયછ સ્લારાજનાં સમાજને પ્રત્યક્ષ—તાજ દર્શન કરાવ્યાં છે.

—ગુલાભચ'દ લલ્લુભાઈ, (મદાદ્ય પ્રેમ્ર) ભાવનગર

પૃત્ય પરમક્રપકારી દ. મ. શ્રીષક્ષાવિજયછ મહારાજશીના સબાધિરયાને ગુરૂમંદિરની રચના કરવામાં આવી છે તેની પ્રનિધા સમયે સારસ્ત્રસ્ત્રની મહાત્વરૂપે યાજના કરવામાં આવી છે તે ધર્ણ જ પ્રશ્નસ્ત્રનીય છે. આપણા સમાજ એ કર્ફેલના પરમ ઝાણી છે. તેમણે આપણે પ્રકાશ આપનાં સમય સાહિત્યર્હી વારસામાં આપ્યાં છે. 'તાનસાર' 'અટક' જેવા ગીતા આપી છે. તેઓશ્રોના નામથી ચાલતી સંસ્થા શ્રીષદ્રીવજયછ જેન કર્ફકૃળના દું બ્તપૂર્વ વિદ્યાર્થી છું એટલે મને તા આ પ્રસંત્રથી કેવડા આનંદ થાય છે. તેઓશ્રીના 'તાનસાર અટક'થી મને જે આનંદ, શ્રાંનિ અને સાધનાના બાર્ગ મત્યાં છે તે બદલ દું અત્યંત જણી છું. આ અંત્રેના એક નિબંધ અત્રાદ્ધ લોદરા માક્લાવેલ છે. આપની સમિતિને દું હાર્દિક અલ્પિતંદન આપું છું. એક આ પ્રસંત્રના ખાસ અંક જે સ્મારક્રફેપ ચિરંજીવ રહે તેવા તૈયાર થાય તો પ્રશી પરા જેતું છે.

—અમરચંદ માવછ શાહ, શાવનજ

યું. ઉપાધ્યાયછ શ્રીયરેપ્રેરિક્યુ અલારાજશીની સાદિત્ય જીપાસના સંજયની હતી એ સાદિત્ય-સર્જનથી જનતાને ઘણા જિપકાર થયા છે.

સત્ર ઉજ્જવવાના પ્રયત્ન પ્રશ્નસનાય છે. અને અનુમાદનીય છે. એથી સમિનિને મારા હાર્દિક અસિનંદન પાદતું છું

—સામચંદ્ર દી. શાહ, પાલીવાજા.

જગત આપ્યું જ્યારે હિસાના પંચ અધિળા દાટ મૂકી રહ્યું છે ત્યારે જૈન ધર્મ પ્રણાધેલા અહિસાના માર્ગ જ જગતમાં શાંતિ રથાપી આપણને માનવ ક્રદ્યાણના પંચે લઈ જશે એમ મને લાગે છે. શ્રીયશા-વિજયછ મહારાજશીના મંચાનું અધ્યયન કરી થાકું આચરણ કરવામાં આપણે ફળીબૃત થઇશું તા મને ખાત્રી છે કે આપણું લાવિ ઉજળું હશે. એમણે લગીરથ કાર્ય કર્યું છે અને તે સદા અમર રહેશે.

વ્યાવા ત્રાંતસત્રા સમાજમાં સંસ્કારિતા ફેલાવવામાં તથા સાહિત્ય પ્રત્યે લાકાની વ્યક્તિસ્થિ કેળવવામાં ખૂબજ મદદગાર થઇ શકે છે. તમારા આ પ્રયાસ સ્તુત્ય અને અિલનંદનને પાત્ર છે. આ સત્ર સફળ થાય . તેવી મારી શનેચ્છા છે.

— ભાગીલાલ મગનલાલ, (મહાલક્ષ્મીમીલ વાળા) ભાવનગર.

શ્રીયશાવિજય સારસ્વતસત્રની સંપૂર્ણ સફળતા ઇન્ધ્રું છું. આ પ્રસંગ ભાગ લેનાર આપ સર્વેન ધન્યવાદ ઘટે છે.

> —શિવલાલ નેમચંદ. મંત્રી—મુક્તાળાઈ જૈન જ્ઞાનમંદિર, પાટશ.

શ્રીયશાવિજયજી સારસ્વતસત્ર મહાત્સવ ખૂબ સારી રીતે ઉજવાય તેવી મારી અલિલાષા. -કરતરભાઇ લાલભાઇ, અમદાવાદ.

ં આપ બધા મળાતે ત્યાં પૂજ્યપાદ શ્રીયશાવિજયજી મહારાજનું સારસ્વત સત્ર ઉજવાે છા જાણી હર્ષ યાય છે. મારી કોલેજ ચાલ છે એટલે હું ત્યાં પ્રત્યક્ષ હાજર નથી રહી શકતા તા જરૂર ક્ષમા કરશા.

..' ' પૂજ્યપાદ ઉપાધ્યાયજીના નામતે શાબે એવું જ તમે સત્ર ઉજવશા એમ માનું છું. તમતે ખખર હશે જ કે તેઓ એક મહાન આધ્યાત્મિક પુરુષ હતા. તેમના દાહસા ગાયાવાળા સ્તવનમાં તેમના અંતરના વિચારા મૃત્ થયા છે. 'ધૂમધામે 'ધમાધમ મચી' એ તેમનું વાક્ય યાદ રાખી વ્યર્થ આડંબર ન કરતાં આત્મભાવને પાષણ મળ એ રીતે તમારી યાજના તમે ઘડી હશે. આજ હજારા વર્ષથી જૈન પરંપરામાં વિદ્યાભ્યાસંગની ધ્રણી ખાંગી ગાલતી આવે છે. તે આવા નાગી મહાયુરુષાના ઉત્સવને બહાને ક્રેંઈ એાછી થાય અને વિદ્યાની ચિત્તશુદ્ધિકર અંતર પ્રવૃત્તિ શાહી ઘણી પણ ફેલાય તે આ ઉત્સવ જરૂર આદર્શ લેખાશે. તે મહાયુરુષતું સમગ્ર સાહિત્ય પણ આપણે જાળવી શક્યા નથી એ આપણી માટી શરમ છે. છતાં જેટલું क्णवायुं छ ते सुंहर रीते संपाहित थर्छने दीक्रमाञ्य काषामा तैयार हरिक्रो ते। ये धर्षु छ. व्यापना समारंक સફળ શાય અને ઉપાધ્યાયજની બક્તિ આપણને પ્રેરણા આપે એ જ ઇચ્છા.

—પ' બેચરદાસ જીવરાજ, અમદાવાદ.

શ્વિમારીને લીધે તેમાં ભાગ લેવા. ચ્યાવી ગ્રાકું તેમ નથી માટે દિલગીર હ્યું. ગ્રાનવારિધિ શ્રી ૧૦૦૮ यशाविकय् अक्षाराक केवा स्थापणा शुकरातना विद्यासंस्थारना सद्धान क्यातिष्टरने भाटे स्थापा अधारने। સાર્સ્વતસત્ર મહોત્સવ આપ ઉજવા છા તે ખહુ જ યાગ્ય છે. મહાત્સવમાં આપને સફળતા મળે એવી ફું પ્રાર્થના કરું છું.

–રત્નપ્રણિરાવ લીમરાવ, અમદાવાદ.

સત્ર ઉપર રંબોઈ આવવાના અનાભાવ હતા પરંતુ છેલ્લા ચાડા દિવસથી પગે સંદેજ છેતા થઇ છે, તેયા રેલ્વેના પ્રવાસ સુરક્ષેલ બનવાના ભાષ લાગવાયી આવવાના વિચાર બંધ રાખવા પડયો છે. સ્મારક પ્રાથ માટે એકાદ લેખ લખવાના અનાભાવ તો છે જ.

સત્રતા મહાત્સવ સફળ રીતે ઉજવારો એવી આશા રાખું છું. મુખ્યત્વે શ્રીષણાવિજયજીની સાહિત્ય કૃતિઓ સંગાધીને પ્રસિદ્ધ કરવામાં આવે એ બહુ જરૂરી કાર્ય છે. આ મહાત્સવમાં એ કાર્યના આરંભ થવા પામે એવી આશા રાખું છું.

ત્યાં આવવાથી ઘણા સાહિત્યરસિક મિત્રાના સમાગમના લાલ થાય, તે પણ ગુમાવવા પહે છે તેથી ખિત્રના અનુસન્નું છું પણ નિર્પાય

—ચુનિલાલ વધ[િ]માન શાહ, અમદાવાદ

વ્યાપની નિમંત્રજુ પત્રિકા મળી, ખીકને રાકાણાને લઈને દું હાજર રહી શકતા નથી તે માટે દિલમીર છું.

મદ્રાપાધ્યાય શ્રીયશાવિજયછ, એ જેંત સંપ્રદાયના જ નહિ પણ સમસ્ત ભારતના સંસ્કૃત રિદ્રાનોની હારમાળામાં એક ઉજ્જવળ સન છે. તેરતું સ્મરણ તાજી કરવા માટે આપ જે મહાત્સવ ઉજવા છા તે યશસ્ત્રી અને કળપ્રદ નીવડા એવી પ્રાર્થના કરે છું.

માનું હું કે તમે ઉત્સવ ઉજવીને જ અટકી જશા નહિ પણ સારસ્વત શ્મારક કરશા.

—રસિકલાલ પર્યાખ, ગુજરાત વિદાસમા નિયામક, અમૃદાવાદ.

શ્રીયશાવિજય સારસ્વતસત્રમાં ભાગ લેવા માટેનું આપનું નિમંત્રભુ મબ્યું, એક ન્રાનવાારિધની શારસ્ત્રેવાનાં વિવિધ અંગાનું જ્યાં સ્મરભુ થવાનું છે એવા ન્રાનસત્રમાં હાજર રહેવાના લાભ તા ધણા છે. પણ માંસ્ત્રી આઢે આવી છે. જે સમારભમાં સ્થાને સ્થાનેથી વિદ્વાના ભાગ લેવા આવવાના હાય તે સફળ થયા વિના રહે જ નહીં. છતાં મારા તરફથી સમારભને સફળના વાંચ્યું છું.

—ચરાવ'ત પ્રા. શુકલ, પ્રા. મુજરાત વિદ્યાસભા

. શ્રીષદ્યાતિજય સારસ્વનસત્ર યાેંશ્કને જેન સમાજની એક મહાન વિભૃનિને વધુ પ્રકાશ્ચિત કરી સ્ત્રા હા એ માટે અભિન'દનને પાત્ર હાે. સત્રના કાર્ય'ક્તાંએાની નામાવલિ જોઈને એની સફળતામાં શ્રુંકા રહેતી નથી. અર્થપરાયણ જેન સમાજમાં આવા ગ્રાનસત્રા જેનામાં પ્રવેશી ત્રયેલ જડવાદને ઉડાડશે.

> —માલાભાઈ વીરચંદ દેસાઈ (જ્યાંભખ્યું) —રતિલાલ દીપચંદ દેસાઈ —અંગાલાલ પ્રેમચંદ શાહ

શ્રીષગ્રાવિજય સારસ્વતસત્ર મહોત્સવ પ્રસંગે હાજર રહેવાનું નિર્મત્રણ મૃત્યું. આસાર, ગુજરાતના મુખ્યાત્રાદયા ન્યોતિવ રાર્યાના એક ન્યોનિર્ધરને અંજનિલ આપવાને તક મળી હોત તે પૂર્વ જ આનંદ થાન, પરંતુ કેટલાક અનિવાર્ષ કારણોને લઈને હાજર નથી રહી શકતો તો માક કરશા. ' કૂર્ચાલી સરસ્વતી ' એ શીર્ષ કે શ્રીયશાવિજયજી મહારાજ પર એક લેખ તૈયાર કર્યો છે. ત્રાનાતસવ સત્રની સંપૂર્ણ સફળતા ઇચ્છું છું.

—ધીરજલાલ ધનજભાઈ શાહ, અમદાવાદ.

સારસ્વતસત્રની સફળતા ઇચ્છું છું. શ્રીમદ્દ યશાવિજયજીએ આપણા માટે સાહિત્ય ને જ્ઞાનના અમૃલ્ય વારસા મુક્રયો છે. આપણે બધાંએ એ વારસાને અનુરૂપ થવાના અને એ દીપાવવાના પ્રયાસ કરવાના છે. ક્લાઇની જનતાએ અને શ્રી સથે શ્રીયશાવિજયનું સ્મારક રચી પાતાની શાલા વધારી છે.

—પી. કે. શાહ, અમદાવાદ.

પ્રાચીન કાળના યત્તસમા વ્યા વત્ર તમે હબોઇ મુકામે યાજયા છે. યત્તની કાર્યસિલિ તા થાય કે ન થાય પણ ત્રાનયત્તની સિલિ તા જરૂર થાય.

80 શ્રીયશાવિજયજી મહારાજ જેન શાસનના પૂ. આ. શ્રી હરિબદ્રસરિ, પૂ. સિહસેન દિવાકરસરિ, કલિકાલ સર્વાત્ર શ્રી હેમચંદ્રસરિની માફક ચાથા સ્તંભ હતા.

કાળની શાસનસૌરભ અને ઝલકર્મા તેમના અપૂર્વ ફાળા છે.

—પં ભારતલાલ ઝવેરચંદ, તંત્રી 'દિબ્યપ્રકાશ', અમદાવાદ.

ે મહાપાધ્યાયછ શ્રીયશાવિજયજીએ તેમની કૃતિએ મારફત તેમના અગાધગ્રાનના લાભ જેના તેમજ જૈનેતરને આપ્યા છે તે ઉપકારના ખદલા વાળા શકાય તેમ નથી, પણ તેમની સ્મૃતિ તાછ રહે તે માટે આવા મૃદ્ધાત્સવો ઉજવવા ઇન્ષ્કૃતીય છે અને તે કાર્ય ઉપાડી લેવા માટે શ્રીયશાવિજય સારસ્વતસત્ર સમિતિ ધન્યવાદને પાત્ર છે. આ મહાત્સવની ઉજવણી કાયમને માટે ફળદાયી નીવડે એ આશા સાથે વિરસું છું.
—હિમચંદ જશાવીર મહેતા. અમદાવાદ

પરમપૂજ્ય ઉ૦ શ્રીયશાવિજયજી મહારાજ સાહેળના આપણે ફક્ત જેના નહિજ પરંતુ સમસ્ત ગુજરાતી ભાષા ખાલનાર જનતા ઋણી છે. તેમણે તા ગુજરાતી ભાષામાં સમગ્ર આગમનું દોહન, એટલી સરલ, નાના ખાળકા પણ સંમજી શકે, છતાં વિવેક્શ ભાષામાં આપણેને પીરસ્યું છે કે તેની જેટલી પ્રશ્નાસ કરીએ તેટલી એાક્ય છે અને એ રીતે આપણે આપણું ઋણ યત્કિ ચિત અદા કરી શકોએ.

તેઓશ્રી તા અગમણહિ વાપરી આપણા ઉપર જે ઉપકાર કર્યો છે, કદી બુલાય તેવા નથી જ. તેમની પૂજાઓ, સ્તવના તથા પદા કાઇ પણ જૈનેતરને વાંચવાનું મન થાય અને સુલભ રીતે જૈન દર્શનનું મહત્ત્વ સમજ્ય તેવાં છે.

" શ્રીયશાવિજય સારસ્ત્રતસત્ર "ની સંપૂર્ણ પણે કતે કે કેચ્છાં છું.

—કાન્તિલાલ લખ્ખભાઈ પરીખ, અમદાવાદ.

પ્રાવિદ્યાવિજયજી મ• ના સ્મારકની સ્થાપનાના કપક્રમ અને તે પ્રસંગે વિદ્રાન સંમેશન મેળવવાની જે પ્રસંગ આપે રાખ્યા છે તે જાણાં આનંદ

—પ્રાદ કેશવલાલ એચ. કામદાર, આવુંદ.

પૂત્ય આચાષ શ્રી વિજયપ્રનાષસ્રીયરજી નયા પ્. આ. શ્રીવિજયલમંત્રીયરજી તેમજ પ્. સુનિવર શ્રીષશાૈિવજયજી, આપ સીના ખૂત્ર લુદ્ધત્વ અને અયાત્ર મહેનનથી આ પ્રસંત્ર ઉપસ્થિત થયા છે. તે માટે આપ સીને સુત્રારક્ષ્યાદી આપું છું અને આ મહેાત્સવની સફળના ઇચ્છું છું.

મળિલાલ ન. દાસી, આશુંદ

. ત્રાનમદાત્સવ નિવિધને પાર પડવા સાથે ત્રાતાદોત અડે કંઇક વ્યપૃત્ના કરપત્ર થાય કે જેથી આપશ્રીએ લીધેલ કાર્ય પૂત્ર ખૂત્ર સફળતામાં પરિષ્ફાય પામે તેત્રા સાર્યર્થ ચિંતન માટે શાસનદેવ પ્રત્યે પ્રાર્થના કર્યું છું.

—૫'૦ છમીલદાસ કેસર્રીચ'દ સંવવી, ખંબાત

આ કાર્ષમાં ખારી સરાનુષ્ટ્રિ છે અને સફળતા ઇચ્છું છું. આપ આવા ધર્મના કામમાં દમેશાં જામૃત રહી આવા મહેત્સવાે ઉજવાે એવી મારી દાશિક કારના છે. આપ સર્વને યશ મરા અને ધર્મમાં આપળ વધા એવી શુધેમ્છાથી વિસ્ધું છું.

—નદ્રવરલાલ સી. દલાલ, ભ્ર્યા

શ્રીષગ્રાવિજયજી સાસ્ત્રતસત્ર રૂપે આપે ધાજેલા મહાત્ય શ્રફ્યા થાયા એવી પ્રસૃતે પ્રાર્થના કર્ છું. એ નિમિત્તે ગુજરાતનું પહિત્વ એક મેડા પ્રવાદમાં વહેતું થાય, ગંબાર થાય, વેશવંત થાય અને ચારેકાર નવજીવન પોપે એમ ઇન્પ્યું છું.

—પ્રા. વિષ્યુપસાદ ત્રિવેદી, સુરત

વિક્તાનોના કર્યુંનના લાલ ખાવા અને જૈનધર્મને પર્મકપકારક સાહિયનાદ્વારા કર્યાધ્યાર શ્રીષદાવિશ્યના જીવન વિશે તથા એમના કપસ્ટીલા અહિંસા, સ્યાદાદ વગેરે મહાસ્કિતો પરના વિવેચના સાંસળવાની તક શ્રુપાવવી એ હક્યને અર્ચિકર છે, છતાં નિર્પાય કૃષ્યી જ સંદેશા પાકવાને સંતાષ્ટ્ર માનવા પડે છે.

આષતા સારસ્ત્રસત્ર પંદેહસ્ત્ર સફળ થશે એમાં શંકા નથી. જળવતે એ આરળ વધતું હો, સાચી વિધશીને એ પ્રકારતી હશે તો અક્તિ અક્તિના તેમજ પ્રજા પ્રજાના જીવન અવહાર સાચા દિલથી અહિંસાને અતુસરનારા કરવા જ પડશે, મતમતાંતરને શ્રમાવનારી સ્યાદ્વાદની દૃષ્ટિ પણ અપનાવવી જ પડશે. આપના સમાર લની સાચી સફળતા એ પરમ ધ્યેયની સિદ્ધિમાં છે.

—માહનલાલ પાર્વતીશંકર દવે, સુરત.

ધારાસભા (બામ્બે લેજસ્લેડીવ ઍસેમ્પ્લી) ચાલુ છે એટલે આવી શકાય તેમ નથી તે માટે દિલગીર ધું. જિલાના જૈન અને જૈનેતર ગૃહસ્થા જેઓ જૈન ધર્મના અભ્યાસમાં ઘણા રસ લઈ રહ્યા છે અને જેઓની વિક્ષ્તા જગજાહેર છે તેઓ એક સ્થળે મહાત્સવ માટે બેગા થાય છે તે જાણી આનંદ થાય છે. આવા પ્રસંગે મહાપાધ્યાય શ્રીયશાવિજયજીના પ્રથાના અભ્યાસ માટે કંઈક રચનાત્મક કાર્ય હાય ઉપર લેવાય અને તે ચાલુ રહે તે માટે કંઈક યોજના કરવામાં આવે તે કળદાયી થશે અને આવી કંઈક યોજના થશે એવી આશા સાથે—

— કાઢાલાલ ૪૦ સુતરિયા, (વડાદરાવાળા) મું જઇ.

યશાવિજય સારસ્વતસત્ર મહાત્સવની ભારે સફળતા ઇચ્છીએ છીએ.

ં શ્રીયશાવિજયજીએ જૈન સાહિત્યના સર્જનમાં મેટા ફાળા આપ્યા છે તેથી આપણે ભારે ઋણી ખન્યા છીએ. તેમણે કરેલી જૈન સાહિત્યની અદ્ગિતીય સેવા આપણને ન કેવળ આવા ઉત્સવા યાજવાની ફરજ પાડે છે પણુ આપણા ફળદાયી ઉદ્દેશને પહોંચવા માટે એક સ્થાયી યાજના માટે બાધ્ય કરે છે.

—મહાવીર જૈન વિઘાલય, મુંબર્ધ.

આપના સતત પરિશ્રમ અલિન-દનીય છે. યશાવિજયજી મહારાજની સાહિત્યગરિમાથી પરિચિત છું. - નાશુરામ પ્રેમી, મુંબઇ.

અતિવાર્ય કારણા છે એટલે આપના લાવભીના નિમંત્રણને માન આપી શકતા નથી મને જરૂર માફ કરશા.

સદ્દગત યશાવિજયજી એક મહાન વિશ્વતિ છે. હું તો એમના ખાસ. અભ્યાસી છું. વાચક ઉમારવાતિ, સિલ્સેનસ્રિ, હિંગલદાચાર્ય અને હેમચંદ્રસ્રિ પછી નજર કરતી હોય તો તેમના ઉપર જ કરે છે. આમ તો કોને નાના અને મેટા ગણવા એ જ સવાલ છે; કારણું કે સૌ વિદ્રાન સુનિએ એક ખીજને આંટી ખવડાવે: એવા થઈ ગયા છે. એટલે કાઇની પણુ પ્રશંસા કરવા જતાં અન્યને અન્યાય ન થઈ જાય એ ખાસ તકેદારી રાખવી પડી છે. મને તા સદ્દગત યશાવિજયજીમાં જે અવનવું અને અસાધારણ લાગ્યું છે તે તેમની દાશેનિક અતિતીક્ષ્ણું છુલિ અને તરલતા. ન્યાયશાસ્ત્રનું એમનું ગ્રાન એટલું પ્રકાંડ, ગાઢ અને વિસ્તીર્ણું જણાઈ આવે છે કે, આપણને ઘડીલર એમ થઈ જાય છે કે, હવે એમનું સ્થાન લે એવા કાઈ ખીજો પાકશે કે નહિ. આટલું ગ્રાન હોવા છતાં એમનું માદેવ, આજેવ અને એમના વૈરાગ્ય પણ અદ્દસ્ત્રત હતા. આપણું એમના અપ્રગટ સાહિત્યના પુનરુદાર કરવા જોઈએ. એ જ એમનું સાચું સ્મારક છે. અને તર્પણ છે. મારે તા આ વાત સાથે જ સંબંધ છે એટલે આટલું જણાવી સત્રની સફળતા ઈચ્છતા—

—અમૃતલાલ સવચ'દ ગાપાણી, મુંબર્ધ.

સુષુપ્ત સમાજને ડેંડાળવા માટે એમણે માગેલા શખદપ્રદારના સખ્ન ચાળપા પરંચી કંઇક ધંડા લંઇ, આપણા સમાજ અધ્યક્ષદાની ઘાર નિકામીથી જાણન ભની તેમણે અર્પોલી વિશ્વપ્રાદી વિશાળ તત્ત્વદીઇ અપનાવશે તે તે જ શીષશાયિજ્ય જેવી મહાવિશ્તિનું જીવનુંજાગતું રમારક ખની રહેશે.

—૩ા૦ લગવાનદાસ મનસુખબાઇ મહેના, સુંબર્ધ

ટ્ નમાગ કાર્યને અસિનંદ્રં છું અને નમારા પ્રયત્નની ક્નેલ ઇચ્છું છું.

—ગાસ્ત્રનભાઈ વીરચંદ્ર શાહ, મુંબઇ,

શ્રીયશાવિજયજી સારસ્વનસવતી યાજનાને અંતાકરણથા આવકાર, છું. એકવ થયેલા મહાનુભાવા શ્રીયક થયાવિજયના જીવનચરિત્રને સાચા સ્વક્ષે ભહાર લાવવા માટે કૃષ્ટિંગઢ થશે અને તેમનું સાહિત્ય સુંદર રીતે પ્રકાશન પામે તથા તેના અવદિયત પ્રચાર થાય તેવા કાઈ સંગાત ચાજના અમલમાં લાવશે, કારણ કે તે એમનું સાસું જમારક છે.

અા સુબાના પ્રેરક ૫૦ પૂ૦ આચાર્ય અહારાજ શ્રીવિજયલમં મૂઇ શ્વરછ તથા મુનિયજ શ્રીયજીક વિજયજને મારી પુનઃ પુનઃ વૈદના.

આપના આ પત્રિત્ર પ્રયાસને સર્વાંગ્રે સક્ળના કચ્યું છું.

—ધીરુજલાલ ઢાકરૂકી શાલ, મુખ્યક

આપના પ્રયાસા માટે ઋણી જું.

શાસનદેવ ક્લોરતીને આ સત્કાર્યમાં પૃષ્ સુરક્ષ આપા.

—મધ્યુલાલ આહુનલાલ પાદરાકર, મુંબર્ધ

દું વડેક્ટર દાત તે જરૂર સ્થારત, પરંતુ શાડી શ્રાંતિની ઈચ્છા દાવાયા દું અહીં એ-ઝર્લુ માટ રહેતા માટે સ્થાન્યો છું અને નળિયનના કારણે આવી શકતા નથી તેથી માફી ચાદું છું.

આપના સત્રતે દું પૂર્ણ સફળતા ઇચ્છું છું. આપની સમિતિનાં પ્રતિક્રિત નાંચા ત્રાંચા આપના સત્રની સાર્થકના માટે મને ખાનદી છે.

—રમળુલાલ વસુતલાલ દેસાઈ, ગેરેત્રીંટ

શીયશાવિજયજીના જીવન અને જીવનદાર્ય વિશે જે ધાડીઘણી માહિની પ્રાપ્ત થઈ છે તે હયાથી લાંબે છે કે, તેઓ શ્રંકૃચિન ધર્માંધ મનાવૃત્તિવાળા નહીં પરંતુ વ્યાપક નત્ત્વ્યાહી મનાવૃત્તિવાળા હતા. આશા છે કે, એમનું બીરવ વધારવા માટે એક્સ થએલા વિદાના તે જ દિષ્ટિકાળુ નજરમાં રાખીને પ્રવચના અને વિવેચના કરીને રાષ્ટ્રજનોના સંબદનના કૃજ્ય-૭૦૦ વર્ષ શક્ય બનેલા શુભ કાર્યમાં પાનાના કૃષ્ણ આપશ્ર

—પ્રક્લાસ્યાંદ્ર દિવાનજી, મુખઈ

ં ંઓવા મહદ્દ ત્રાની અને સંત મહાત્માના માર્ગે આપણે સહુ સ્થિર શુદ્ધિથી વર્તાએ તે જ તેમનું માહાત્મ્ય આપણે સમજી શક્યા છીએ તેમ ગણાય. શ્રીમદ્ યશાવિજયજીના ત્રાન માટે અને આત્મસ્થિરતા માટે તિ:શંકપણે એમ લાગે છે કે, તે એક અજોડ અને અદિતીય પુરુષ હતા.

માવા મહદ્દ પુરુષના ગુષ્યુગાનાથે માવા સત્રા વાર વાર યોજાય એ એક લહાવા છે અને તેમાં ભાગ લેનારા દરેક જીવ પુરુષવાન મધ્યાય. —નગીનદાસ ગિરધરલાલ, જૈન સિદ્ધાંતસન્ના મુંબઇ.

ચ્યાવા સારસ્વત સત્રાત્સવ નિમિત્તે ગુજરાતના વિદ્વાનાનું એક સંગઠન સધાય છે એ માટે સંચાલકાને ધન્યવાદ.

શ્રીયશાવિજયજીએ જેનાચાર્ય છતાં વેદાન્તનિર્ણય, વેદાન્તવિવેક સર્વસ્ત વગેરે વૈદિકધર્યના પ્રન્થા લખીને અમેદલાવ પ્રદર્શિત કર્યો છે.

ખાસ કરીને ખહુદ ગુજરાનના વિદ્વાનાએ એકત્ર કરવા અને સત્રમહાત્સવ ઉજવવાની કરેલી યાજના આદરણીય છે. સમિતિમાં વૈદિકધર્મ પાંડતાને સ્થાન આપી સત્રને વધુ દીપાવ્યા છે.

—શાસ્ત્રી રેવાશ'કર મેઘજ દેલવાડાકર, મુંબઇ.

નિમંત્રણ માટે તમારા ઉપકાર માનું છું. દિલગીર છું કે આ પ્રસંગે હાજર રહી નહિ શકું. તમાએ યાજેલા સારસ્વતસત્રને હું સંપૂર્ણ સફળતા ઇચ્છું છું. —પરમાન ક કુંવરજી કાપડીઆ, મુંબઇ.

્ર. . આપના કાર્યની અનુમાદના કરું છું અને ઇચ્છું છું કે શાસનદેવ ધર્મની પ્રભાવના સાથે સત્ર પૂર્ણ કરે. —નગીનદાસ કરમચંદ, મુંબઇ.

સેંકડા ત્રંથાના રંચયિતા, ગુજરાતના મહાન કંચાતિષ્દર, ન્યાયનિશારદ મહેંધાષ્યાય શ્રીમદ્ યશાવિ-જયજી મહારાજના પુષ્યરમરણુ રૂપે પૂન્ય આચાર્ય પુંગવાની સાનિષ્યમાં ઉજવાતા ગ્રાનસત્રના ઉત્સવની અંતઃકરણુપૂર્વક સફળતા ચાહું છું અને શાસનદેવને પ્રાર્થના કર્યું છું કે પુષ્યધામ ક્રમોઈ એ આવા એક–ખેજ નહિ પણુ જૈન શાસનના અભ્યુત્થાન માટે અનેક યશાવિજયા પ્રગટાવા.

— માવજ દામજ શાહ ળાણુત્રી પનાલાલ હાઇસ્કૂલ અધ્યાપક, સુંબધ

ક્લોઇ સત્રના સમાચારા જાણી અત્યંત આનંદ થયા છે. જૈન સાહિત્ય અને સંસ્કૃતિના વિકાસ અને પ્રચાર માટે એની ખાસ જરૂર હતી. તેની પૂર્તિ આપશ્રીએ કરી તે બદલ અલિનંદન ઘટે. —માશુકલાલ ડી. માદી, મુંબઇ.

ં શ્રીસંધે ઉચિત કાર્ય ઉપાહેલ છે અને તે યાગ્ય કર્યું છે. ત્યાં હાજરી આપી શકતા નથી માટે દુઃખ યાય છે, પણ તમારા કાર્યની સફળતા ઇચ્છું છું. ક્રેઇ સ્થાયી થાય અને ઉપાધ્યાયજીના પગલે ચાલનાર સુનિવર્યો વધુ થાય તેમ કરાય તો વધુ ઉચિત થશે.

1. 30

નિર્ભાધા આવે, વ્યાખ્યાના થાય, ચર્ચાઓ થાય. તેની નોંધ ખરાખર રખાય અને ઉપાધ્યાયજનું પ્રકાશમાન જીવન તેમાંથી સંપૂર્ણ લેખાય તેવી વ્યવસ્થા કરવાની જરૂર છે.

—લલ્લુભાઈ કરમચંદ્ર દલાલ, મુંબર્ધ

પરમપૃત્ય શાસન શિરામણિ સરસ્વતીકંકાભરણ શ્રીમાન્ મહામંદ્રાપાધ્યાય શ્રીમદ્ યશાવિજયછ મહારાજ સાહેયના આસ્ત્રના નવીન ભવ્ય શૂસ ગુરૂમંદિરની કરવામાં આવેલી રચના નિમિત્ત આપે જે સમારંભ યોજ્યા છે તે સમારંભની દરેક પ્રકારે સફળના અને મુત્રારકળાદી ઇંચ્હું હું.

તેમના જેવા પરમ પ્રભાવક પરમ શ્રૃત—સકળ સિદાંત પારગામી, સારિત્યના ઉપાસકની સાથે નવ, સ્યાદ્રાદ, સપ્તમંત્રી જેવા તત્ત્વતાનના વિષયાને બારીકાઈથી છળુનાર, તેમના જેવા મદાપુરૃષા બદુ એાછા થયા હશે.

આવા પરસ સુર્દેવનું સત્ર ઉજવી આપે અલાન પુરુષ સંપાદન કર્યું છે. દ્રવ્યાનુરોપ્તના નિષ્ણાન આચાર્ષ શ્રીમદ્ વિજયધર્મ સુરીચરજી અને સાહિત્યપ્રેમી વિદ્રાન શ્રીયરોહિજયજી મહારાજ સાહેલ આદિની હાજરીમાં આ સત્ર ઉજવાય છે તે જણાવર્તા અત્યાનંદ થાય છે.

શ્રીમદ્ યરોાવિજયછ મહારાજ સાદેખતે વિનંતિ સાથે લખવાનું કે જેન શાસનના ભાવીર શ્રીમાન્ મહામદેાપાધ્યાય શ્રીયરોાવિજયછ મહારાજનું સત્ર ઉજવી તેમના જેવા થવા સ્થાપ ભગીરથ પ્રયત્ન કરશે એજ અંતિમ ઇચ્છા છે. છેવડે સત્રની દરેક પ્રકારે સફળતા હચ્છી વિરમું છું.

—રા કરલાલ ટાહ્યાભાઈ કાપરિયા મુંબર્ધ

પરમપ્તમ મહાપાધ્યાય શ્રીયગ્રાવિજયજી મહારાજની મૃતિંની પ્રતિકા, સારસ્વનસત્રનું હૃદ્ધાટન વ. કાર્યક્રમા તેમ જ કુ. જાસુરમેનના દક્ષિા મહાત્સવ પ્રસગાની આમંત્રજી પત્રિકાઓ મળી છે એ વાંચી ધળા આનંદ થયા છે.

આ ટીલ પ્રસંગે દું ડાજર રહી શક્યો દાત તા મને અનહદ આનંદ યાત પણ ધારાસસાની બેક્ક ચાલુ દાવાથી અને બીલ્ન કામ પ્રસંત્ર દાવાથી આવી શક્તા નથી. આવ્યા દાત તા પૂ. આચાર્ય દેવશ્રીના દર્શનો લાભ પણ મળન.

સદ મહાત્સવ આનંદયી ઉજવાય અને સફળતા પામે એવી મારી અંતઃકરણ પૂર્વંકની ગુમેચ્છા છે. —માણેકલાલ વખારીયા, મુંબઇ. એમ. એલ. એ.

પ્રયાસ ઉત્તમ અને અબિન દર્નીય છે.

—ભારતીય સ્વયંસેવક પરિપદ, મુંત્રષ્ઠ મંત્રી-માહનલાલ દાપયંદ ચાક્સી

મંદિયાના કારણે દું ત્યાં આવી શકતા નથી તો ક્ષમા કરશા. ઉત્સવને સર્ગ પ્રકારની સફળના ઇચ્છું હું. પૃત્ય આચાર્ય શ્રીવિજયપ્રનાષપ્રસ્થિ તેમજ યુ. આ. શ્રીવિજયધન મુર્ગ કરા અત્યંત કાર્યદસ્ ને ગ્રાની પુરુષની રાહળરી હેઠળ ઉત્સવ સંપૂર્ણ સફળતા પાયશા. આજે જ્યારે સોતિકવાદને અધ્યાત્મવાદ વચ્ચે સામસામી યુદ્ધ છાવણીએ જેવી સ્થિતિ પ્રવર્ત છે ત્યારે ઉપાધ્યાયજીની વિભૃતિપૂન્ન દ્વારા જ અધ્યાત્મ તત્ત્વની ગુણુરતવના કરી શકોએ તેમ છીએ. એવી વિબૃતિપૂન્નદ્વારા જ આપણે સત્યપરીક્ષા ને સત્ય– આરાધનાના તેજ પંચે સફળ પ્રવાસ ખેડી શકોએ. —વસ'તલાલ કાન્તિલાલ ઇધિરલાલ, મુંબઇ.

પરમપૂન્ય મહેાપાધ્યાય શ્રીયશાવિજયજી મહારાજની આરસની પ્રતિમાની પ્રતિષ્ઠાના શુલ પ્રસંગ ઉપર ક્લોઈ આવવાની ઇચ્છા હતી પણ સંજેગા અનુકૂળ નહીં દ્વાવાથી આવા શુલ પ્રસંગના લાલ લઈ શકાય તેમ લાગતું નથી.

મા શુલ કાર્ય શાંતિપૂર્વક નિર્વિધ્નપણે પૂર્ણ થાય એમ ક²ક્કોએ ક્રીએ.

—રમણિકલાલ માહનલાલ તારાચંદ, મુંબર્ધ.

સમારં લમાં હાજર રહી શકતા નથી તેથી મન ધહું ખિલ થાય છે. કેમકે આવા સુનિમહારાજની મૃતિ સ્થાપના કરવાનું લાગ્યશાળીને જ સાંપડે અને આવે! અપૂર્વ અવસર કાઇકવાર જ આવે છે. છતાં સમારં લની સફળતા ઇ²છું છું. —મૂલચંદ વાડીલાલ દાલતરામ એન્ડસન્સ, મુંબઇ.

પૂન્યપાદ મહાપાધ્યાય શ્રીયશાવિજયજી મહારાજના પુનિત નામથી જૈનસમાજની કાઇપેશુ વ્યક્તિ લાગ્યે જ અંબાશુ હશે વિદ્વાના માટે તો તેઓનાં વાકયો અને સાહિત્ય આગમાના સચાટ પુરાવારૂપે મનાય છે. શાસ્ત્રોના વાકયના અર્થમાં ન્યાં ન્યાં કંઇપેશુ વિરાધાભાસ ઊભા થાય ત્યારે પૂન્ય ઉપાધ્યાયજી મહારાજ જે ફરમાવે છે તે સર્વમાન્ય રહે છે. એવા મહાન ઉપકારી ગુરુદેવના સમાધિસ્થાને લબ્ય ગુરુમંદિર બંધાય તે ઘણું જ આવકારદાયક છે અને તેમની પ્રતિષ્ઠા સમયે શ્રીયશાવિજયજી સારસ્વતસત્રના મહાત્સવ યાન્ય તે ઘણું જ પ્રશાસનીય છે. અમા તેની સંપૂર્ણ સફળતા હદયપૂર્વક ઇંગ્છોએ છીએ.

—પાનાચંદ રૂપચંદ ઝવેરી, મુંબર્ધ.

પૂ. ઉપાધ્યાયજીના પ્રગટ તથા અપ્રગટ પુસ્તકાના ખુખ કેલાવા થાય અને તેઓશ્રીનું જે ગુરુપંદિર બંધાવ્યું છે તેમાં તેઓશ્રીનાં દર્શન કરી પ્રેરણા મેળવાય, જૈન–જૈનેતર તે લાભ મેળવે એજ ભાવના.

પૂ. ઉપાધ્યાયજનું ગુરુમંદિર તથા તેઓશ્રીની આ સમયમાં ઓળખ કરાવવામાં અને જેન તેમજ જૈનેતરાને પૂ. ઉપાધ્યાયજના ખ્યાલ ઓછા હતા તેને ખ્યાલ કરવામાં ખરા પરિશ્રમ ઉપાડયો હોય તા તેના યક્ષ શ્રીયશાવિજયજી મહારાજ સાહેખને ફાળે જાય છે.

આ પ્રસંગ નિર્વિંદને પાર પાંડે અને સમાજની કાયમની સેવા થઈ શકે તે માટે અપ્રગટ, પ્રગટ પુસ્તકા ખહાર પડે તથા પૂ૦ ઉપાધ્યાયજનું જીવનચરિત્ર (ખધી હક્કાકતા મેળવા) ખધી ભાષામાં પ્રગટ થાય એજ ભાવના. —શાન્તિલાલ મગનલાલ શાહ, મુંખઇ.

મુંખઈમાં મહાપાધ્યાય શ્રીયશાવિજયજી ગુણાતુવાદ મહાત્સવ સમયે પૂ મુનિરાજ શ્રીયશાવિજયજીએ કલ્પેલી ગુરુમ દિરની યાજના મુંદર રીતે પાર પડશે તેવી ગુણાતુવાદ સમિતિના મંત્રી તરીકે મને પણુ કલ્પના નહી હતી. જાણીતા જૈન આગેવાન શ્રીજીવતલાલ પ્રતાપશીએ પણુ આવા કાર્યો પાર પાડવામાં નંકતી મુશ્કેલીએ વર્ણું વી હતી તેની સ્મૃતિ થાય છે, ત્યારે પૂ મુનિશ્રી યશાવિજયજીની સાચી ધગશ અને કબોઈ તથા અન્ય રથેલાના ઉત્સાહિત સજ્જનાના સહકારે જે ઈ તિહાસ જાગૃત થયા તે ખદલ ધન્યવાદ સત્રની સફળતા ઈચ્છું છું. —નદીપચંદ મગનલાલ શાહ, મુંબઈ.

ક્યાંધ્યાયછ શ્રીયગ્રાવિજય મહારાજની મૃનિંના પ્રનિશ ચહાત્સવ કરવા માટે લાંબા વખતથી આપશ્રીની શુક્ષિપૂર્વકની યાજના, જેન જૈનેતર સર્વની વચ્ચેનું સમ્મિલન, સાહિત્યની દિષ્ટિએ વિદાન સાક્ષર વર્ગમાં કરાતું સન્માન, તેમ જ ધર્મને પ્રાધાન્ય દિષ્ટિએ રાખી આવે અપૂર્વ અવસર ક્લોઇના શ્રીવિજયદેવસર સંધ હજવી રહ્યો છે તે ગૌરવેના વિષય છે. તે માટે ત્યાંના કાર્યકર્તાએ ખરખરા ધન્યવાદને પાત્ર છે.

ં વધુમાં આ સમયે જેવા મહાત્સવ ઉજવાય છે તેવા જ ઉત્સાહથી જગનમાં ઉપાધ્યાયછ મહારાજે આપણી આપેલા વારસાર્પી સાહિત્યને વિકસાવીએ એજ ભાવના અને પરમાત્મા પ્રત્યે પ્રાર્થના.

—સ્યયંદ મગનલાલ શાહ, મુંખર્ધ

ચાલુ જમાના તથા વાતાવરણમાં જનસમુદાયમાં આવા મહાન પુરુષોના જીવનની રૂપરેખા ધર્મ ભાવના અપૂર્વ વિદ્વતા તથા તેમની કૃતિઓનાં દિલ્હાન કરાવવા આવા સત્રોની ઉજવણી થાય તે ધર્ણ જ જરૂતું છે. જેન ધર્મના મૃગ પ્રિન્સિપલ અહિંસા અને સત્યને સમળવવા તથા જેનધર્મ માટે ઇતર સમુદાયમાં ફેલાયેલી ખાટી માન્યતાઓ દૂર કરવા અને જનતાના નિક્ટમાં આવવા માટે અન્ય બાબતાની સાથે આવી ઉજવણીઓની ખાસ જરૂર છે. ગાન તથા ધર્મ બન્નેના આથી સુંદર પ્રચાર થઇ શકે છે. સત્રની હજવણીની સફળતા ઇચ્છું છું.

—કિશનલાલ ઝુનિલાલ, મુતામ–શ્રી કાર્વા જેન દેશસરના પેડી.

આવા પ્રસંગા ઉજવવાથી શ્રીષ્ણાવિજયજી મહારાજશીના જૈનસંધ પરના ઉપકાર બ્રેસી જૈન જનતા જરૂર જાણી શક્યો કે શસનના કોહિતર સભા શ્રીમાન મહાપાધ્યાયજી સત્તરમાં સદીમાં એક વિરક્ષ મહાન પુસ્ત થઈ ગયા છે. —માસ્તર ઉમંગલાલ જે સાહ, શ્રિનારવાળા. શ્રી ગાંધરા વીશાનીમાં જૈન પંચ કાર્યકર

'My presence would have sewed the purpose' (મારી લાજરી એજ સાચા જવાળ દેવ). પરંતુ લાલના સંધાગામાં સત્ર માટે લાજરી આપી શકતા નથી તેથી પહેલ દિલગીર છું. 'Hero worship' શુજાનુરાત્ર એ મુક્તિપુરી માટે અનન્ય અને સંદેશું સાધન છે. તેને આવા પ્રસંગા પાતાની લાગણી દ્વારા વ્યક્ત કરવાની સુવર્શનક આપે છે.

પૂ. ઉપાધ્યાયછ જૈનાના જ નિર્દ, ગુજરાતના જ નિર્દ, કિન્દુ અખિલ માનવજાતના છે. ગૂર્જરી ગિરાના લાંડારમાં તેઓએ સુચાર વધારા અવસ્ય કર્યો છે. એકલું વાસ્પ્રમા જ નિર્દ પરંતુ ગૂર્જરી મારફતે છવન વિકાસના મહાનલા મંત્રા આપ્યા છે. પૂર્વ પુરુષોનાં વચના લાંકમાયામાં આલેખા લરઆંગણે અમૃત આબું આપ્યું છે. ગુજરાતી જ જ્વારાઓને તે 'Cultural development and spiritual uplift' સાંસ્કૃતિક વિકાસ અને, આધારમક ઉન્નતિ માટે અનન્ય સાધન છે. પૂ. ઉપાધ્યાયછ મહારાજનું છવનકવન અને સાદિત્ય વગેરે છવન્ત પ્રેરણા આપે છે. તેમના એટલું 'Tolerance' ઓદાર્ય, સર્વ દર્શનના કરા અભ્યાસ, તેમજ સમન્વય કાઇક વિસ્ત વિશ્વનિ જ સાંપરે છે 'સિદ્ધિ'ની કસાએ પટ્રેસિલ લણા મહારાઓને જડરો પરંતુ યોજ 'વિનિયાય' લણાજ શારાને લાએ દાવ છે. ૧૯મા સદાનું ચિત્ર આજે અન્ય મૃત્યકારાના મન્યાયાયા પણ સાંપરે છે. તેવા Orthodov કરિત કાળમાં 'કાશા' જઇ જૈનેતર વિદ્દાના પાસે તેમના પ્રેમ સંપાદન કરી ભળવું, એ કેક્લું કપર કામ ? પૂ. ઉ. મ. ના સાદિત્યમાં વેદન

ગીતા વગેરેનાં Traces પ્રમાણા ધણી જંગાએ જોવા મળે છે. તે તેમના અન્ય દર્શનના ઉંડા અભ્યાસને દ્યોતક છે. તે સદીના તેઓ ' Martin Luther' હતા, ગુજરાતના ગ્રાનેશ્વર હતા જેઓ મહારાષ્ટ્રીય ભાષા સંપુત્ર કરવા માટે ગર્વ ધરાવતા અને 'મ્હારી મગઠીમાં આખોએ વેદાંત ઉતારીશ' એવી ભાષા .વાપરતા એ હતું સ્વભાષા માટે અભિમાન! એ હતી જનતાના અભ્યુદયની, કામના! તેવી રીતે પૂ. ઉ. જીએ દ્રવ્યાનુયાંગ જેવા ગહન વિષય 'દ્રવ્ય–ગુણ–પર્યાયરાસ ' વગેરે ગૂજેરીમાં ઉતારી ગુજેરગિરાને શિખરે ચઢાવી અને ખીજાની હરાક્ષમાં 'મ્હારી ગુજ'રી' જેવી તેવી નથી એ ખતાવી આપ્યું. તેઓ ગુજેરીના સાચા લકતં હતા. લક્તિ-ન્નાન વગેરે વિષયા સહેલીમાં સહેલી ભાષામાં ઉતારી ગુજરાત ઉપર મહાન ઉપકાર કર્યો છે. આજે બધા વિદ્વાના હિમાઇના આંગણે બેમા થઇ જાત-સંપ્રદાય અને ધર્મના બેદ સૂત્રી મહાન વિભૂતિના ગુણગાન કરશા અને એ વિભૂતિની શક્તિથી સંગદિત થવાતું સૌભાગ્ય પ્રાપ્ત કરશા. તેમણે વારસામાં આપેલ સાહિત્યને કરી સંદર રીતે સંપાદિત-સંશાધિત કરી પૂ ઉપાના 'Compleie works' સંપર્ણ મન્થા છેલ્લી હળે ખહાર પહે, તા આપણે કાંઇક અંશ તેમના ઋષ્ણમાંથી મુક્ત થઇએ અને મહાગુજરાતના સાંરકૃતિક-ધાર્મિક વિકાસમાં કાંઇક કર્યું, એમ ગણાય, ખહદ્દ યુજરાત પાતે ' ભારતના ચરણે ' યુજરાતના આ રસથાળ પીરસી, પાતાની ઉદારતા અને સહદ્યતાને પરીચય કરાવશે. જે જે વ્યક્તિઓએ આ કલ્પના સત્ય સૃષ્ટિમાં લાવી આપી સત્ર ઉજવવામાં નિમિત્ત થયા છે, તેઓ સવે ધન્યવાદને પાત્ર છે. જેના માટે તા તે એક વ્યાન દેતા વિષય છે. તેઓએ તન–મન–ધનથી સેવા આપી પાતાના જૈનત્વેતા પરિચય કરાવવા જરંરી છે. 'Nothing goes unamarded' डे। धिष्णु वस्तु निष्कृण करती नथी' ओ अध्यात्मिक નિયમ છે, પછી લલે 'Sooner or later' વહેલા યા માડા હાય. પૂ. હપા. મહારાજના જેવા જન-ઉપકારી કાર્યો વધુને વધુ કરવાનું ખળ સત્ર ઉજવનાર સૌ ક્રાઇને પ્રાપ્ત થાઓ અને આ જીવનમાં એ —ચીમનલાલ લક્ષ્મીચંદ શાહ યુના સીટી દશ્ય જોવા મળા. એ પ્રયળ ભાવના છે.

શ્રીયશાવિજય ત્રાનસત્ર ઉજવવાની જે યોજના કરી છે તે માટે હું આપ સાઢેખોને હાર્દિક ધન્યવાદ આપું છું. શ્રીયશાવિજયજી જેવા અદ્દસત ત્રાનાપાસક માટે આપણે જેટલું કરીએ તેટલું એાર્ધ્યું જ કહેવાય. આપણા ઉપર એ વિબ્રુતિએ જે અનંત ઉપકારા કરી મકચા છે તેના વહેલા તા આપણે વાળવા અશકચ જ છે. તાપણ ક્રાગતી પેઢીને એ મહાસંતનાં દર્શન આપણે કરાવીએ અને તેમની યથાશક્તિ સેવા અને એમના સારસ્વતનું અધ્યયન કરવાની પ્રેરણા આપીએ એ આપણી કરજ છે. આપની આ યોજનાને પૂર્ણ મશા મળે એ જ અબ્યર્થના. —બાલચંદ હીરાચંદ, માલેગામ (મહારાષ્ટ્રી

સાહિત્યાકાશમાં શ્રીમદ્ સ્વ૰ યશાવિજયજી મહારાજનું પોતાનું એક વિશિષ્ટ સ્થાન છે. તે સ્થાન કર્યા છે! આપણે તેમના અનુયાયો — તેનાથી હજી સુધી અપરિચિત છીએ – એ કેટલું વિચારણીય છે તે આપણે સમજીએ. આ મહાત્સવની પૂર્ણ સફળતા ઇચ્છું છું અને શ્રી દર્ભાવતી શ્રીસંઘની તેમના આ મહાત્સવ આયોજન માટે સહાનુભૃતિ ખતાનું છું. — દાલતસિંહજી લાઢા (અરવિદ) ધામિશ્રુયા, રાજસ્થાન.

શ્રીયરોાવિજયજી મહારાજના વિશાળ સાહિત્ય અને તત્ત્વજ્ઞાનના સંબંધમાં વિવેચન કરવા, તેના પ્રચાર કરવા અને આજની પરિસ્થિતિમાં તેનાથી જેટલા વધુ લાભ ઊઠાવી શકાય એ દિષ્ટિએ આ આયોજન મહત્ત્વપૂર્ણ છે.

આ સમાગદની સફળના ઇચ્છું છું. અને આશા કર્વું છું કે આ આંધાજનના પરિણામ સ્વરૂપ ગુજરાત અને રાજસ્થાન બને પાંડાશી તથા સાંસ્કૃતિક દર્ષિયા દહ યુત્રામાં આળદ પ્રદેશાને પ્રેરણા અને —જવાહિસ્લાલ જેત. રકર્તિ પ્રાપ્ત થશે.

' લાકવાણી પત્ર કાર્યાલય'. જવપુર.

શ્રીયુક્ષાવિજયુક મહારાજની સ્વર્ગભૂમિમાં એ યાગનિષ્ટ મહાપુરુપનાં સ્મારક તાજાં કરવા અને ફેલાવવા આપે જે સદ્પુર્પાર્ય આવ્યો છે એની સફળતા ઇચ્છોએ છીએ.

- ધીરજલાલ કે. તરખીઆ, कीन अर्धण किस्रण अंध, ज्यावर,

આપનું નિર્ભાગળ ખુબું, એ વાંચીને અત્યંત આનંદ થયા કે, આપ એક એવા દિબાજ વિદાન તથા વારતવિક અર્થમાં ક્રયાધ્યાય–સબ્રાટના મુણ્યસ્બ્રુતિમાં મરાત્સવનું આયોજન કરી રહ્યા છે. જેમની પ્રતિભાગ્રે તરેન સારિત્યની, એવા મુશ્કેલ સમયમાં, અનુષ્ય સેવા કરી છે. ત્યારે અનેક ળાધાંઓ ઉપસ્થિત થઇ સૂધી દત્તા, વિવિધ વિષયકૃષ્યળ તેમની સેખિનીયા સંભવનઃ સારિત્યની કાં**ઇ મદત્ત્વપૂર્ણ શાખા અર**પ્યુટ નથી રહી म्भते नव्य न्याय केंद्रा शंकीर विषय पर पूर्व मधिक्षार भेणवीन तेमुं पानानी अप्रतिम विश्वतानी પશ્ચિમ આપ્યા છે.

> —પ્રિન્સિપાલ પૃથ્વીરાજ જેન, आत्यानंद कीन हासित पंजाण.

—તે ૧૫૧ત નાંધેના મચળેથી પણ સત્રના સફળતા ઇચ્છતા પત્રો આવ્યા હતા.

* મુનિયી સુંબોધવિજયજી * શા. ફેત્તેહર્યાદ ઝુંવરુબાઇ મુંબઇ * પાટડી શ્રાવક મદઃજન સંઘ * ખારસદ જૈન સંઘ (ઐાસવાલ) * શ્રી ચીમનલાલ કેશવલાલ કડીઆ અમદાવાદ * શા. અમનલાલ લર્જીવનદાસ ભાવનગરી કૃંઢિાયાક્રે અમદાવાદ ∗ શા. સામચંદ મંત્રળદાસ–અમદાવાદ ∗ થા બીર્ગદ નાગજનાઇ યુંબઇ 🛪 ટૉ• ચશર્વતરાય દામુમાઇ વૈદ્ય * શ્રીરાય્યંદ્વ ગુલાળયંદ વ્યચ્છારી હા. અનિલાસ * મે. શ્રી જટાજ કરા કારણ--યાય-ગાહિત્યાયાર્ય તથા મે. શ્રી દીનાનાયછ વ્યા. ન્યાયાત્રાય' વ્યયકાવાદ * મારતર શિવલાલ તેંગમંદ પાટળ.

તાર દ્વારા મળેલા સંદેશા અને અબિનંદના

નોંધા—તાર દ્વારા આવેલા સ દેશાઓમાંથી જે તારા પૂ ઉપાધ્યાયછ મહારાજ તથા ઉત્સવ આયોજનાદિ અ ગે કંઇક વિશિષ્ટ સૂચના કરતા હતા તેને અહીં અતુવાદિત કરી મૂક્યા છે. ખાષ્ઠીના સફળતા ઇચ્છતા અને અભિનંદન આપતા તારાના ઉદ્દેખ, કરનારના નામ—ઠામ દ્વારા કર્યો છે.

સારસ્વતસત્રના આ પ્રસંગે અમારા હાર્દિક અિલનંદન. જૈન સાહિત્ય અને શ્રાસ્ત્રોમાં મહારાજ બ્રીની સેવાઓના અમૃહ્ય હિસ્સા આપણા સંસ્કૃતિ વારસામાં એક ઉજ્જવળ પ્રકરણના ઉમેરા કરે છે. દ્યાનની જ્યાત પ્રગ્રેટ અને આવા મહાન તર્ક શાસ્ત્રીના પ્રયાસાને કારણે તે પ્રકાશિત રહે, આપણામાં ઉત્સાહ અને પ્રેરણા આપે અને આ મહાન સેવક પ્રત્યેની આપણી ફરજો અદા કરવામાં સહાયરૂપ નીવડે એમ ધ્ય્યાએ છીએ. મહાત્સવ નિમિત્તે એકત્રિત થયેલા મહાન વિદ્વાનાની ચર્ચા–વિચારણા, આ દિશામાં શરૂઆત કરે એવી આશા રાખીએ છીએ.

—શ્રીજૈનશ્વેતામ્બર કૉન્ફરન્સ, મુંબઇ.

યશાવિજયજી સારસ્વતસત્ર મહાત્સવ ઉજવવા માટે હું હૃદયાનંદપૂર્વંક અભિનંદન પાઠેલું છું. ગિંધુવર મહા તાંખાય શ્રીયશાવિજયજીના નીડર અને સચાટ જેન તત્ત્વત્તાનના નિર્દેશા (ખરેખર) દુનિયાભરના રકાલરામાં સ્થાન પ્રાપ્ત કરે છે. તેઓ શ્રી રકાલરામાં પણ રકાલરરૂપ (સર્વંશ્રેષ્ઠ) હતા અને તેઓશ્રીની ભગ્યસિદ્ધિ જગતના સર્વ ધર્મોનું સાર્વભોમ સત્ય સમજવામાં હતી. તેમની કૃતિઓ આપણને જેન તત્ત્વતાન અને સાહિત્યમાં મુખ્ય તર્કશાં આવે ધરીના સરળ અને સચાટ ખ્યાલ આપે છે. આધુનિક જમાનામાં, આજની રીતે, અલગ ભાષામાં પૌરાણિક જેન તત્ત્વતાનને સમજવંવા માટે આજે તેમની ખાસ જરૂર છે. આપણા બહુ જ વિશાળ અને રહસ્યભર્યા સાહિત્યને જીવનું જગતું બનાવવા માટે કાર્ષ એક બધારણીય યાજના સિદ્ધ કરવામાં ઉજવાએલા સારસ્વત મહાત્સવ સફળ થાવ. પૂર્વ મહાત્મા પુરુષની પુરુયભરી યાદમાં યોજવામાં અને ઉજવવામાં આવેલા આ મહાત્સવ ખરેખરે બધી જ રીતે હિયત છે.

—ચ**ં**દુલાલ વધ⁸માન શાહુ, મુંબઇ.

હયાં ખાયછ શ્રીયશાવિજયછ મહારાજશ્રીના સ્મારક મહાત્સવ સાંભળ અત્યંત આનંદ થયા. આમંત્રણ માટે આલારી છોએ. પુન્ય મહારાજશ્રીના કાર્યોના દેશપરદેશમાં પ્રયાર થાય અને જનતાનું કલ્યાણ થાય તેમ ઇચ્છીએ છીએ. આચાર્ય મહારાજશ્રી અને અન્ય સુનિયહારાજશ્રીને વંદન.

> —ગિર્ધરલાલ છાટાલાલ, અમૃતલાલ જેસિંગભાઈ —માહનલાલ છાટાલાલ, શાન્તિકુમાર જગાભાઈ, અમદાવાદ.

રેસમણે કર્યા કર્યા અને કયારે કર્યારે વિહાર કરતાં સ્થિરતા કરેલી તેયા સામાસા કરેલાં, ત્યાં કાળ કેવી રીતે નિર્ગમન કરેલાં, તેના પત્તો મળે છે. કાશીના અભ્યાસ પછીની ચાર કૃતિઓ સં. ૧૭૦૯ની કાળ મર્યાદામાં આવી શકે. તેમાં 'દ્રવ્યગુણપર્યાયરાસ—સ્વાપત્ત સસ્તબક' ગુણુક્રમે પ્રથમ છે જ પણ રચનાનું સ્થાન અન્ય લાગતું નથી. એમાં કાશીના અભ્યાસના પરિપાકરૂપે મળેલી સફળતાને જણાવી છે. રચનામાં પણ બહુશ્રુતતા, પ્રેચુર પાંડિત્ય, તત્ત્વચિંતન અને તેના સ્વાનુભવનું તાજગીભર્યું સ્કુરણ દેખાય છે. એમાં એમના નવા ઉત્સાહ તરી આવે છે. પદ્ય તા ઠીક છે પણ ગદ્ય—જે અત્યારના કાળ જેટલું ખેડાયેલું નહાતું એવા વખતે—એમણે ગૂજ ર ગિરાને પસંદ કરી દર્શનિક પરિલાષાને તેમાં ઉતારવાના સફળ મનારથ સિદ્ધ કર્યાં, એ આપણા અનુમાનને પુષ્ટ કરે છે.

'એકસો પચીસ ગાથાના સ્તવન 'ને અમે છેલ્લું યા સં. ૧૭૧૮ પહેલાંનું માનેલું પણ વિચાર કરતાં તેને બીજું માનવાનાં કારણા પણ છે. સાધુઓના આચારા અને વિચારા વિકૃતપણાને પામેલા અને તેનાથી જે જે સ્થિતિ ઉપસ્થિત થઈ અને દુઃખમાં પરિષ્ઠુમી—એ દુઃખ-પરિણામને લોકોની નજર સમક્ષ લાવવાના—અને તેના નિવારણનો—અને એ રીતે સ્વચ્છ કરેલા વાતાવરણમાં પવિત્રતા વસાવવાના એ સ્તવનમાં પ્રયત્ન છે. આ જોડીની અસરથી પાતાનાં દૂષણાને ઢંકવાના જે દાંભિક ખરાવા કર્યા તેના શ્રીયરો વિજયએ ૩૫૦ ગાયામાં સખળ અને સવિસ્તર ઉત્તર આપી નિર્થક ઠરાવ્યા છે.

" નવિ નિંદામારગ કહેતાં, સમ પરિણામે ઘટ ઘટના ! િં કાઇ કહે નવી શી જોડી, શ્રુતમાં નહીં કાંઈ માડી. જે જેવા જેવાં જેવાં જેવાં

" જન મેલનની નહીં ઇહા, ઇહાં દ્રુપણ એક કહાય, જે મલન પીડા થાયે… 🤌 🥳 ખલવયણ ગણે કુણ સુરા, જે કાઢે પેયમાંથી પુરા જ

આવા પાતાના ઉદ્ગારા-હાળમાંથી રમતાં કાઢ્યાં છે એ એમની રચનાઓ માટે-જે કાંઈ ખાલાતું તેની અસરમાંથી ઉદ્ભવેલા છે. એટલે આ સ્તવન પહેલાં કેટલીક જેડી જેડાઈ હશે. ૩૫૦ ગાંથાના સ્તવન પછી 'સમતા શતક' અને 'સમાધિ શતક 'ને મૂકી શકાય.

આ પછી આપણને સં. ૧૭૨૧ સુધીમાં એક-સં. ૧૭૧૮ માં વિજયપ્રભસૂરિએ વાચકપદ આપવા સિવાયના-ખીજા ખનાવા તથા સં. ૧૭૩૯ થી સં. ૧૭૪૩ કે જે વર્ષમાં તેમનું ડેલાઈમાં અવસાન થયું એ ગાર વર્ષના ગાળા કેવી રીતે નિગમન કર્યો, એ નક્કી કરવા માટેનું સાધન બહાર આવે ત્યારે ખરૂ.

એમના આંતર જીવનનું ઊંડાલુ અમે બીજા લેખમાં જલાવ્યું છે. એની પૂર્તિમાં કહેવા જેલું એ છે કે, આ લેખમાં એમની કૃતિઓને કાલકમમાં ગાઠવી છે. તેના એક હેતુ એ છે કે, એમના આંતર રહસ્યના પ્રકારને જોવા જાલુવાનું આશી ખની શકે. પાંડિત્ય ખતાવવા તેઓ સંસ્કૃતમાં રચના કરતા હાય એલું નથી. તેમણે લાકભાષા પ્રાકૃત, ગૂજરાતીમાં લખવાની અંગત્ય કેટલી છે, તે પણ એમણે પ્રમાણસર—' દ્રવ્યયુણપર્યાય રાસ ના ટખામાં સમજાવ્યું છે તેમ દ્રવ્યાનું યોગ વિષય એ શું છે? એના અનુસેવનથી ફળપ્રાંતિ કઈ કઈ થાય એ વિષે તેઓ ઉલ્લેખે છે.

ગેરહાજરી હોવા છતાં માનસિક હાજરી આપી રક્ષો છું. અને પ્રસંગની સફળતા ઇચ્છું છું. —ચીમનલાલ કડીઆ, અમદાવાદ.

ઉપાધ્યાયજી મેમારીઅલ સાધુ સંધને તેમના પગલે ચાલવાની પ્રેરણારૂપ ખતે!

—ડૉ૦ વદ્ધભદાસ, મારબી.

ત્રાનાત્સવ—સત્ર મહાત્સવને સંપૂર્ણ સફળતા ઇચ્છોએ છીએ. આ ઉજવણી પર્વ ગાઠવવા માટે સમિતિને ધન્યવાદ ધટે છે.

—રતિલાલ જવણુલાલ, અયજનાઈ. વઢવાણ.

મહાત્સવની સફળતા અને શ્રીયશાવિજયજી મહારાજથી જૈન યુવાનાને પ્રેરણાર્ય બને એમ ઇચ્છું છું. —માતિલાલ વીરચંદ, માલેગામ.

તાર કરનાર અન્ય વ્યક્તિએાની યાદી—

😘 આ ૦ શ્રી વક્ષસસૂરિજી તથા આ ૦ શ્રી સમુદ્રસૂરિજી, મુંત્રધ. 🛊 વિજયદ્વેવસૂરિ સંધ, ગાડીજી દહેરાસર, મુંખર્ઈ. * મહિલાલ નાહાવડી, મુંખર્ધ. * અમૃતલાલ કાળીદાસ શાહ તથા ધીરજલાલ ટાકરશી શાહ, મુંખર્ઇ. * રમબાલાલ દલસુખભાઈ, મુંખર્ઇ. * સકરચંદ મુળજીલાઈ માતિલાલ, મુંખર્ઇ. * મૂળચંદ વાડીલાલ દાલતરામ, મુંખર્ધ. * હરિચંદ માણેક્ચંદ, મુંખર્ધ. * ભાષચંદ નગીનદાસ, મુંખર્ધ. * રતનલાલ યુનીલાલ દાલીઆ, મુંબર્ધ. * શાન્તિલાલ અને ગાકળદાસ અને દીપચંદ શાહ, મુંબર્ધ. * જવાહર ગુલાબચંદ અને લીલીબહેન, મુંબઇ. * લક્ષ્મીચંદ સરૈયા, મુંબઇ. .* કાન્તિલાલ કુસુમગર, મુંખર્ક. * જમનાદાસ એપિવજી તથા નેમિદાસ અનેચંદ તથા મુળજીળાઈ અભેચંદ, મુંબર્ધ. * અંબાલાલ નાગરદાસ પરીખ, મુંબર્ધ. * જૈન સંઘ, ક્લિપારડી. * એ. એમ. હપાધ્યાય, કાલ્લાપુર. * દલીય'દ વીરય'દ શ્રાફ, સુરત. * દેસાઈ પાળ જેન પેઢી, સુરત. * છાપરીયા * ભાગુલાઈ સતરિયા, અમદાવાદ. * હાલાલાઈ લાયચંદ, અમદાવાદ. શેરી જૈન સંધ, સુરત. * જૈન સેવા સમાજ મંડળ, મહુધા. * મં. અમૃતલાલ, પાટણ. * સિલ્ચક વ્યારાધક સમાજ, મુંબઇ. * જેસિંગલાઈ ઉગરચંદ, અમદાવાદ. * ચમનલાલ સકરચંદ ચાકસી, અમદાવાદ. * શાન્તિલાલ શાહ, ભારસી. * ગઢુલાલ, ધાર. * ભરૂચ, વેજલપુર જૈન સંધ, ભરૂચ. * ડા. રતિલાલ ભદુ, પાલીતાણા. * શ્રી જૈન સાહિત્યમ દિર, પાલીતાથા. * પ્રપા• જમનાદાસ વડાલ, જમનગર. * અમ્યતલાલ लह्वू राज्हार. वगेरे

શાસ્ત્રત્યત્રના પ્રમ મદલ આપને દન્દરાયાર દર્દિક અસિનદિન છે.

—મુનિવર શ્રીપૃત્યવિજયજી, અમદાગદ

આ ગુમારં કરવાં કોઇક એટા તેરવાઈ કરા જેવી ડીક ડીક નાળાં એકડાં થાય પછા એના ઉપવે!ય માત્ર વેંગા લુખવાનાં જ થાય. જૈન જૈનેનર જે અસાધારણ વિકાતા તમે તેમની પાંચેથા કામ લઇ શકાશે. રાહ્યે શાંઉ કાઇ કામ આપ્યે તા તે બંબાર ન દાય અને પૃત્તા વખત આપી લખે તા પૃત્તા બદેશ મળ આપવા જ પડે.

્લુપાંચાયજીના પ્રત્યાપાંથી કેટલાક જિલા અંટી, તે તે જિલા લાયર સાંગ લાયગાનું, જેમાં કેન્દ્રસ્થાને લુપાંચાયજીનું લખાળ રહે; પણ એની જ્યિકાર્ય એ વિષ્યતા સમય જૈન પરંપરાંત સ્પર્યતા ઇતિહાસ અને જૈતિતર પરંપરાના એ વિષય લગના વિચારા સાથે સરખાંચણી એ બધું આવે.

રા. ત. 'તપવાર' શઈએ તે પહેરેથી આબ સુધી જૈંત પરંપરામાં જે 'તપતે' વિચાર ક્રમિક તિકરેના છે તે દર્શવતા શાધે તેનું શાહિત્ય પણ નિર્દેશાય અને છેલ્ટે ઉપાંભાયછ શ્રંક્ત, પ્રાકૃત, ગુજરાતી કે ધારવાડી આપામાં તે સિંપ જે જે કરેતા હોય તે અર્ધુ જ સ્ટ્રેપ્પમાં પણ વ્યવસ્થિત નિક્ષાય અને એવા વિચારા ક્રાઇપણ જૈતેનર પરંપરામાં થળી આવતા હોય તે હશનાકાશ ક્રમોવાય.

આવા જીવન પણ વિષ્યા ઘણા છે, તાનને લગના અને આચણેન લગના કેમ્પના કેમ્પ્ર કેમ્પ્ર કેમ્પ્ર કેમ્પ્ર કેમ્પ્ર કાર્યો આશીને પણ નિયમા લખાવા શકાય.

અત્યારે આતી દાખાંધા આપવા હોય તે કે આપવા દાક થશે કે દમાનું જ દ્રા માસવણાઆતું ત્રબુધવાદનું ભાષાંતર પ્રસિદ થયું છે તેની પ્રસ્તાવના તેમ જેમ જ નહીં. કેમ શ્રેપૂર્ણ છે કેમ હું નથી કહેતી પણ કે કેમણી તમને ખ્યાલ આવશે. કેવા બ્રાજી કૃતિકેમ પણ ક્લાલી શ્રકું દમાનું જ અપ્રજીમાં એ પાંત્ર કેવા પ્રસ્તા પ્રસિદ થયા છે. કેમણે અને તા સાધારણ લખાણાથી અતિષ થતા જ નથી. કપાય્નાચ્છની 'સ્તવન' સન્ત્રાય આદિ મુજરાતી કૃતિકેમ કપર પણ વિચારની દ્રષ્ટિક લખવાની પુષ્ટમ સાધ્યો છે.

દું કેંગઇ કરી ધું કે જ્યાં ત્યાં જયતિ અને કમારકના પ્રયત્ના થાય છે, તે ચાકું પણ છે. પરંતુ જ્યાંપ્નાયષ્ટના સ્મારક માટે તૈયાર થતાર પ્રશ્તકની ક્યાંદી સારી દ્રષ્ટિએ જુદા દેવના કંત્રઇએ. અને તે એ કે તેવું પુસ્તક કેંગેન્સ જવતમાં ખાસ કરી જ્રેચ્ચતર વર્તૃજ્ઞામાં જંચાયા અને ખરીદાયા કેંગું બને.

રોત સમાજમાં જનાખિદ સ્પાચક જેવા અતે રચૂલ જ રહ્યા છે. જ્યાધ્યાનજી સાંઠ આવું ન અંતે તે સાંઠ જાદ્દી છે કે તે તે શન્ય જ્યાર એનિટ્યાસિક તુલનાત્મક અને તાન્વિક નિક્ષણ ઘરના હાલ ચોહા, પણ સેખા લખાવવા એ કંઈ પાંચ પંદર સ્વિસમાં ન અંતે, વળા એ માંઠે લખનાર શરળનાથી ન પણ ઘળ અને તે માટે પુષ્કળ ખર્ચ પણ કરવા પડે; છતાં કાંઈ પણ ઉજવણીનું તત્ત્વ તા એ રીતે જ સંધાશે. અન્યથા સમારંભ એ આરંભ ખનશે, ચિરસ્થાયી સાહિત્યનું કામ એનાથી નહીં સરે.

—૫. શ્રીસુખલાલજી, અમદાવાદ.

શ્રીયશાવિજયજી સારસ્વતસત્રની યેાજના પ્રશ્નાંસનીય છે. તેમાંએ વિદ્વતપરિષદનું સંમેલન ખરેખર રચનાત્મક કાર્ય માટે અત્યંત આવશ્યક છે. આશા છે જૈનસાહિત્યના વિકાસ વર્ધ ન માટે ક્રાઈ રચનાત્મક યોજના ધડી કાઢવામાં આવે તા સમાજ માટે ભારે હપયાગી થઈ પડશે.

—શ્રમણ

શાસનપ્રભાવક પુરુષના, સમાજ ઉપર કરેલ ઉપકારના અંગે આપ જે પ્રવૃત્તિ કરી રહ્યા છા તે અતિ પ્રશ્નાંસનીય છે. અને નવી પ્રજાને તેઓની પીછાશુ ચાલુ રહે તે અતિ જરૂરી છે. આજ સુધીમાં તેઓશ્રીનું સમાજ કંઈ કરી શકેલ નથી તે દુ:ખની વાત છે. આપે આદરેલ કાર્યને શાસનદેવ દરેક રીતે સહાય કરી આપની ભાવના સફળ કરે.

સમાજ તેઓના માટે જેટલું કરે તેટલું ઓછું છે. આવા અતિમહત્વના પ્રસંગ માટે વધુ સમય અગાઉથી લીધા હોત તા ઓર વધુ સારી રીતે ઉજવાત! છતાં આપે ઉપકારીના રમરણાર્થ ધર્ણ જ કિંમતી કાર્ય કરેલ છે.

—શેઢ જીવતલાલ પ્રતાપસી ગુંબઇ.

પૂ ઉપાધ્યાય છ શ્રીના કાર્યને અને તેઓ શ્રીએ જૈનધર્મ ઉપર કરેલા ઉપકારાને ધણા થાડા જાણતા હતા. આપે આ કાર્ય ઉપાડ્યું અને તેઓ શ્રીને જૈન-જૈનેતર ઓળખતા થયા અને તેમના કરેલા કાર્યને અને અપ્રગઢ સાહિત્યને બહાર લાવવા પ્રયત્ના કરા છા તે યથાર્ય જ છે. સત્ર ખૂખ જ પ્રખ્યાતી પામે અને પ્રેરણારૂપ થાય તે જ ભાવના! ઉપાધ્યાય છના ગુણુગાન ગાવા અને ગવરાવવાના કાર્યમાં તેમના નામેરીના ફાળા છે એ કુદરતના કંઈક સંકેત છે.

—મીશાંતિલાલ મગનલાલ શાહ, મુંખર્ધ,

પૂજ્ય · આચાર્યશ્રીને પત્ર લખતાં—

કુનેહ પૂર્વંક પાતે ધારેલા કાર્યંને પાર પાઠવાની અનુકરણીય ખંત, કયા માણસને કશું કામ સોંપલું તેના યાગ્ય નિર્ણય, ધનિકા પાસેશી ધન વ્યય કરવાની, લેખકાની કલમના ઉપયાગ કરાવવાની, કાર્યંકરાને પ્રોત્સાહિત કરી પાતાને અનુકૂળ કામ હેાંશયી કરાવવાની, સાહિત્ય અને કલા રસિકાને સમજવાની જે શક્તિ આપના સમુદાય ધરાવે છે તે ન બ્ર્લાય તેવી છે.

—સેવાભાવી કાર્યકર, દીપચંદ મગનલાલ શાહ, મુંબઇ. પ્રાષ્ટ્રાજિત્ય સારસ્વતસ્ત્રની રોજનાની દ્રષ્ટીકન જણી આપે આ કર્ય રણ વર્ષ પહેલો સુંબર્કથી સુનિયત કરવાના વિચાર જ્યાવેશ તે ક્રમ ક્રમે ક્રમીસ્ત થેના જાય છે તે જાણી પ્રશસ્ત અને ર ચાવ છે. —શ્રી ફે**ન્નદ્રચ**ેદ જવેરભાઈ ભાવનગરી, સંજઇ.

આગાર્યું કહે કહીસફાઇ મ. તેમાં કહેલુંગ્રેલિયક મહારાજ સોના પ્રેસ્યુનિ પરિષાદ અહત્યન જ નીત્રામે

—અજિલાલ ધારનલાલ પાસ્પુકર, મુંબર્ઝ.

ઘણાં નંધીની કચ્છા અને આક્ષા હોાકમાં ખદ્ર ફરી દીવે પરિષ્ણું મકે, તેથી આપ સોને સંતિષ્, પ્રસ્ત્રના અને ક્ષાંતિ મકે હશે. આવનામાંઓને પણ આવવાથી પ્રસંત્રની મહત્તા, મદાપુરંગની અફસ્ત મહિત, ફરાય છુંદિ, શાઓના અમ્યાસ, અને અત્રને આપેલ અવ્યુપાલ સાંદિવના વાસ્ત્રા આ વધી દિવાક કિમ્સાનું એક જ વિષ્તૃત્રનાં મંદલ એક્ષાકરણ-આ માત્ર ૨૧૦ વર્ષ પહેલાની જ અનિદાસિક, અને પ્રયાણકૃત દક્ષિત દેવાથી તે મહાપુરંત પ્રતે પ્રેય, અકિન અને શક્યાય શ્રીના દિલામાં સ્થયાએશ એમ શ્રીના વાંતા હપાયા સમજન છે.

અતિ અંગ એત્ર તપ ક્લન કરવાનું ધાંગ્ય લાંગ છે. કે તેમના પુસ્તકાની શાકભાળ, સંઘદ માંડનું ક્યાન, પ્રકાશન અને પ્રથાર જરૂરના છે અને તે પ્રાથમિક પરલો કૃષ્ય છે. પરંતુ તેનું કાર્યું ધ્યેય એ દોતું હતાઈએ કે દેશાં કંધો તે સાંડના નાનનિક્ષ્યાં એ અર વિદાના પંતિને કે અમ્વાસીઓ દાશ મન્ય વર્ષ ક્યાઈ અને સ્થિતા પૂર્વક રેલેના હતાઈએ, પાંત અમ્વાસ કરે અને બીજને કરાવે અને સાંચા સાથ સુજરાતીઓ મુક્તકાનું પ્રકાશન કરે. પુરન્દેશથી નાનના સાંચા પ્રયાર નહિ શાય.

એટલે કાયમી એવતવંદ્ર ચિલામંદિર ભવતું તેઈએ. કાયમી મંદિત ત્યાં રહેતા તેઈએ. પદિવાર્ધક ક્રમ્પર્ગ્ડ અધા પુરતકારો અમ્યાસ છતારા સ્પાર્ટના કાયમી પ્રજાય એ આપ્યો પ્રતૃતિનું દ્વારે અન્તું તેન્ઇએ.

> —યાયાણજીવન હ, શાંધી, સંત્રાસવ પછા આવેલા પ્રસાધી

સપય પ્રતિપ્રદ્રિતિ પણ બિત્ર જનાવે છે. કાઈ કાયમ માટે પ્રતીષ્ઠ્રણનો દેતના નથી, તેની પ્રતીની દર્સાની શે સંવર્ષ આ સત્ર વખતે વર્ષય છે. પંચીષ્ઠ કે પોરીષ્ઠ વર્ષથી સહતા પહેલો હો હાથ પ્રિયાનના તે સર્વ સ્ત્રાર્થ મુખ્ય છી કે પાંચાયછ અપ્રવંત શ્રીષ્ટ્રોપ્તિસ્થ્યણ મહારામના પ્રસાય છે. એક દર દ્વિ કે માર્ગ્યાય છે તે તેનાથી શ્રી તેન દર્શનની વિદાન વર્ષમાં પ્રસાયના થયેલ છે અને સાયાન્ય સત્યામ, સર્વ્યુચે શ્રુષ્ટ્રાન, આ મહાન વિદ્યુનિયા પરિચિત થવા પાન્યું છે. તેના સર્વ વિદ્યુનિયા પરિચિત થવા પાત્યું છે. તેના સર્વ પણ તેના સર્વા પણ સ્ત્રાર્થ સર્વ સ્ત્રાર્થ સ્ત્રાર્થ પણ પણ પ્રમાય પ્રસાય પ્રસાય પ્રસાય પ્રસાય પ્રસાય પ્રસાય પણ અનાઓ છે.

—મોવાડીલાલ મગનલાલ વેઘના સંત્રણ્યવ પછી આવેલા પત્રમાંથી

શ્રીયશાવિજયસારસ્વતસત્રનાં સ્મરણા

લેખા-ડા. શ્રીયુત લાગીલાલ જ. માંડેમરા. વડાદરા.

(8)

અહારમા શતકમાં થઇ ગયેલા મહાન નૈયાયક, અદ્દસત વિદાન અને અતુલવી સંત ઉપાધ્યાય શ્રીયશાવિજયજી મહારાજના મૃક્યવાન અને વિપુલ સાહિત્યસર્જનની સ્મૃતિરૂપ સારસ્વતસત્ર એમની નિર્વાણુલ્ર્મિ હિમોઇમાં સને ૧૯૫૭ની તાન્ ૭—૮ માર્ચના દિવસામાં યોજાયું હતું. આચાર્ય શ્રી વિજયપ્રતાપસ્રિજી તથા આચાર્ય શ્રી વિજયપ્રતાપસ્રિજી તથા આચાર્ય શ્રી વિજયપ્રમે સ્રિજીનાં માર્ચ દર્શન અને વિદ્યાવ્યાસંગ મુનિરાજ શ્રીયશાવિજયજીની પ્રેરણા અને પુરુષાર્ય આ સારસ્વતસત્રના મૃળમાં હતાં. હમોઇમાં આ સત્ર ઉજવવાનું હર્યું ત્યારથી એક અથવા બીજી રીતે એની આ યોજના સાથે મારા સંબંધ રહ્યો હતો એને એક સદ્સાવ્ય ત્રણું હતું. વહાદરામાં કાંદીપાળના ઉપાશ્રય મુનિશ્રી યશાવિજયજી મહારાજના નિવાસસ્થાને તેઓશ્રીની હાજરીમાં આ કાર્ય માટેની સમિતિઓમાં અનેક વિદાનો અને કાર્ય કરો સાથે આ સત્ર અંગેની વિવિધ યોજનાઓના પરામર્શ થયા હતા અને એની અનેક ક્રીયુમિટી વિગતા નિક્ષિત થઈ હતી, તથા સત્રને લગતાં પ્રસ્તુત વિગતભરપૂર પરિપત્રા દ્વારા ગુજરાતમાં તેમજ ગુજરાત બહાર આ વિષયમાં એકંદરે જૈન સાહિત્યમાં રસ લેતા વિદ્રદ્વર્ગમાં આ સંમેલન અંગેની યોગ્ય લ્યુમિકા તૈયાર થઈ હતી.

સત્રના દિવસોમાં સંખ્યાળધ વિદ્વાન સાધુ સાધ્વીઓની ડેબાઇમાં ઉપરિથતિ હતી, એટલું જ નહિ અનેક આગેવાન જૈન ગૃહરથા તથા સુપ્રસિદ્ધ વિદ્વાના આ સત્રમાં હાજરી આપવા માટે જ ડેબાઇ પધાર્યાં હતા.

એમને વિષેની સાહિત્ય સામગ્રીના પ્રદર્શનતું ઉદ્દધાટન ધ્રાંગધા નિવાસી શેઠ પરસાતમદાસ સુરચંદને હસ્તે. થયું હતું.

સત્રતા પ્રારંભ તા. ૭ મીએ ખપારે દાઢ વાગે થયા હતા એ માટે વિશાળ અને સુશાભિત મંડપ બાંધવામાં આવ્યા હતા, ઉપાધ્યાયજીના પિતાનું નામ 'નારાયછુ ' હોવાથી આ મંડપને 'નારાયછુ મંડપ ' એવું નામ આપવામાં આવ્યું હતું. એમની માતાનું નામ 'સૌભાગદે' હોવાથી એ નામના પછુ દરવાને જ્ઞભો કરવામાં આવ્યા હતા. એ મંડપમાં ઉપાધ્યાયજી કૃત સંસ્કૃત, પ્રાકૃત અને ગુજરાતી બૌહિક સુભાષિતા અને ઉપદેશ વાક્યો ટાંકવામાં આવ્યાં હતાં.

સત્રનાં રવાગત પ્રમુખ અને ડેમાઈના જેન આગેવાન શ્રી. ધ્યાલચંદ જેઠાલાલ શાહનું સ્વાગત પ્રવચન થયા પછી મુંખઈની સ્માલ કેંદ્ર કાર્ટના જજ શ્રી. પ્રસન્નમુખ સુરચંદ ઘદામીએ સત્રનું ઉદ્દ્ધાટન કરતાં ઉપાધ્યાયજીને અલોકિક જ્ઞાનાપાસનાવાળા એક મહાન તપસ્વી તરીકે વર્ણવી, જેન સમાજને કેવળ ધ્યાલ તપને ચીલે નહિ ચાલતાં જરા આગંળ વધી સ્વાધ્યાય રૂપ તપસ્યાની ખામીને દૂર કરવા પશુ ઉદ્દેશોધન કર્યું હતું.

એ પછી, સત્ર નિમિત્તે આવેલા સફલતા ઈચ્છતા સેંકડાે સંદેશાઓનું વાચન તથા નામાલ્લેખ શ્રી. સાન્તિલાલ માતિલાલ શાહે કર્યાે હતાે. ત્યાર ખાદ સત્રસમિતિના મંત્રી શ્રી. નાગકુમાર મકાતીએ સત્રની લત્પત્તિ કેમ થઈ તેના ટ્રંક અહેવાલ આપ્યાે હતાે તથા સત્રને ચોતરકથી મળી રહેલા આવકારનાે પ્યાસ આપ્યા હતા. સમય થાંડા દ્વા છતાં પૂન્ય શ્રમળુદ્ધે ત્યા કેંગ-કેંગેતર વિદાતાએ નિળેલા લખતિ તથા બીછ અતેક રીતે મમતા લખો સહકાર આપ્યા તે બદલ આપણ માત્યા હતા. મહાગુજરાતના એક અને ગાંતનોનિર્ધર કુપાંધ્યાય છેને પાંછાજુરાતી આ અલુપાલ તક કુલા કરતાર વિદાન સુનિર અવધાતકાર મુનિયા યુગાવિજ હતે તેમણે અધિન દન આપ્યાં હતાં. તેમણે કહ્યું કે 'આ હજવણીના પ્યાય યુગા તેમને જ કાળ લગ્ય છે. અયારા સાચા સેનાપતિ તેઓ છે. તેઓશીના હદાત વિચાય, વિશાય આદર્શ, અવહાર લુકિ અને સીતે આકર્ષવાની ત્યા પાતાનામાં સમાવી દેવાની શકિત અને ખીતા છે. તેમના દેવામાં શાસન અને સમાવના સેવાના એક લાગ ક્રમ્યા રહ્યે છે, જેનું પરિલામ આ સરતી ક્રમના દેવામાં માસન અને સમાવના સેવાના એક લાગ ક્રમ્યા રહ્યે છે, જેનું પરિલામ આ સરતી ક્રમના પ્રાયા પરિસામ આ મહાકાર્ય થયું છે. તેઓશીની કાર્યક્ષમતા અને વ્યવહાર કુશ્યાનએ જેવા મહુનાના પ્રાયતી જેમ ગ્રુજરાતી સાથ્યા અને સંસ્કૃત વિદાતાને આ મંત્ર કપર એક્સ કર્યો છે. તેમાની આવનાઓ અને આદરો કાર્યો કોર્યા છે. '

પ', શ્રી લાલ્યક ત્રાંધીએ સત્રના વર્સયેલ પ્રમુખતા પરિચય આપ્યા બાદ પ'. ઈલસ્વંક્ટ પંજાયીએ પ્રમુખસ્થાનેતા સ્લીકાર કર્યો હતા અને ક્રમાધ્વાયછના અન્યો વિશે રાખુબાળમાં એટલું વિકલાયુર્ણ તેટલું જ રૃષ્ટિક પ્રત્યન સત્ત દાહ ક્યાક સુધી આપ્યું હતું, એક દાર્શનિક રિદાન ક્રમાધ્યાયછ જેવા મહાન દાર્શનિકના અન્યોના અને એખલી પ્રતિસાંતા આ રીતે સ્મર્લ્યાય પરિચય આપ્યા હતા.

પ્રમુખશીના વ્યાખ્યાન માદ પં. સાક્ષ્યંદ સંધીએ સત્ર પ્રસંધ આવેલા નિર્ભાધાંના નામે લેખ કરીતે પ્રત્યેક નિર્ભાધના ટુંક પણ્ચિય આપ્યા હતા. એ પછા વંદાસા યુનિવર્સિકીના તત્ત્વનાન વિશાયના હી. પ્રા. શ્રીકીનુક્ષાઇ પટેલ, વદાદરા પ્રાત્ય વિચાર્પાસ્થના શ્રી જયંત દાકાર, જાણીના વિદાન શ્રા. હીરાલાલ કાપદિશ, લગ્નમાં લગ્ની આપવા માટે ખાસ પંજાવથી આવેલા વંદાયક શ્રાસ્ત્રી હૈસરાજ્ય આદિનાં પ્રત્યતા પથા, પછા સોર્ગ પેલ્યુ હ વાગનાં પહેલા દિવસની એક કૃતું વિસ્તર્યન થયું હતું, ત્રાંત્ર ક્રેપાંધ્યાયયનાં પ્રાથમિક શ્રુણપીના અને તેમનાં પદાનાં રહ્યલા સ્ટાયના સ્ટાયના કરી હતા

તા. ૮ મીએ સરાવે સાડા તર વાગતાં સરાતી બીજ દિવસની એક્કના આરંબ વડેક્સાયા આવેલી બાળાઓના સંકૃત ક્વારતથીનથી પંચ હતા. આકરણ સાદિત્યાઓ પં. કાલિકાપ્રસાદ શુક્સ, વેદાન્તલાઓ ધાંબળનસાલ બિજનર્સકર જેલી, પં. લગકાન્ત ઝા, વડેક્સા સંસ્કૃત મહાવિદ્યાલવના પ્રિન્સિયાલ શ્રીલુન્પ્રિસાદ પરેતા, વ્યાકરણ-કાર્યતાં પ્રેશિયાનારાવણ પાદક, સાહિત્યામાર્થ પં. શ્રીઆપીર્સાદ સ ઓ, વડેક્સા સંસ્કૃત પદાવિદ્યાલવના તિરૂન બિલ્સિયાલ શ્રીલક્ષ્મીનાય બદાનાય શ્રાહ્મી સ્થાદિનાં પ્રવચતા સર્થા હતાં, અતે ક ઈન્દ્રયતી, કે કેકિક્શ વંબરેએ સંસ્કૃત બાળા સરાય છે, એ વિષય કેલ્ડ સંદર સંસાદ સંસ્કૃતમાં જી કર્યો હતો.

બધાર સ્ત્રની બેરક રફ થતી પહેલાં ક્રયાં ખાલતા સાહિત પ્રકાશનની ધારતા કઈ રીતે આત્રળ ધપાવતી એને લત્રની અવિધિયતની વિચારણા યુનિશી થશાવિત્રપછની અધ્યક્ષનામાં થઇ હતી, અને સ્ત્રની વિધિયતની બંધારની બેરક અઠી વાએ શરૂ થઇ હતી. આવેલા નિયધામાંથી કેટલાક મહત્ત્રના નિયધાનું વાયત પં. લાલચંદ બાંધોએ કવું હતું એ પછા શ્રી આહતાલ દીપમંદ સાકરો, તે. બેરિગીલાલ સહિયદા તથા પ્રમુખર્સાનાં પ્રાસંત્રિક લાવવા થયો હતાં. ક્રયાં આવછના સાહિત પ્રકાશન અંગ યુનિશી યુગાંવિત્રપછએ હેદેલ નાંખનાં એ જ સ્પળ સારી એવી રક્ષમાં વ્યત મન્યાં હતાં. ક્રયાં આવછના અફરેડને પ્રકાશિત કરતા માંડનું યુનિશી યુગાવિત્રપથ્છનું પ્રેરક પ્રવચન આ શ્રંથમાં અન્યત્ર આપ્યું છે. ક્રયાં વ્યવભાગ સાહિત્યના સંપાયત્ર પ્રચાર થયા બાદ (જેની વિજેતા અન્યત્ર છે) આ સત્રને અને અધ્યત્રને સત્ત્રના સપ્યાયલ દાવા પ્રસાર થયા બાદ (જેની વિજેતા અન્યત્ર છે) આ સત્રને અને અધ્યત્ર ચર્મ કરાવનાર હેનાઇ નિવાસી શ્રી જાયુસાઈ તેને આયારવિધિ કર્યા પછા સત્રના સપ્રકૃત સ્તરેલ સાંધે શ્રી છતા પ્રત્યા હતા.

શ્રીયશાવિજયસારસ્વતસત્રનાં સંસ્મરણા

[લેખા-શ્રીયુત નાગકુમાર મકાતી વકીલ, વડાદરા.]

(?)

શ્રીયશાવિજય સારસ્વતસત્રનાં ખીજ મું બઇમાં રાપાયેલાં. ડેલાઇમાં ઉપાધ્યાયજીએ વિ. સં. ૧૭૪૩માં પોતાનું અંતિમ ચાતુર્માસ કરેલું અને ત્યાં જ તેમણે પોતાના નશ્વર દેહ છોડેલા ગામથી થાડે દૂર સીત તલાઇના કાંઠે આવેલા નાનકડા ઉદ્યાનમાં તેમના સ્તૂપ આજે પશુ વિદ્યમાન છે. શ્રીઉપાધ્યાયજી ન્યાયશાસ્ત્રમાં એટલા પારંગત હતા કે તેમના સ્તૂપમાંથી તેમના સ્વર્ગવાસના દિવસે આજે પશુ 'ન્યાય'ના ધ્વનિ નીકળે છે એમ કવિ કહે છે.

સીત-તલાઈ પાખતી તિહાં થુલ અર્હે સસનરારે, તે મહિથી ધ્વનિ ન્યાયની, પ્રગટે નિજ દિવસિં પડ્રા. (સુજસવેલીભાસ)

ન્યાયના ધ્વનિ ખરેખર જ નીકળે છે કે તેમના સ્વર્ગવાસ દિને નૈયાયિકા તેમના સ્ત્ર્પ પાસે ભેગા થઈ ન્યાયચર્ચા કરતા હશે એને માટે પ્રમાણભૂત માહિતી એકત્ર કરવી રહે છે. છતાં આ ઉપરથી એટલું તો ચોક્કસ થાય છે કે તેઓ અદિતીય નૈયાયિક હતા. તેઓશ્રીને લગતા કાઈ પણ સમારાહ તેમના અંતિમ શાસો-શાસથી પાવન થયેલી ભૂમમાં ઉજવાય એ સર્વ રીતે યાગ્ય હતું. ત્યાંના ધર્મ પ્રેમી સમાજ પણ પાતાના આંગણે આ પ્રસંગ ઉજવાય તેમાટે ઉત્સુક હતા. ઉપાધ્યાયછની અંતિમ રાખ ત્યાં પહેલી તે ઘટના ઉપરાંત પણ હનોઇની આ મહાત્સવની ઉજવણીની, અનેક રીતે યાગ્યતા હતી. હને પ્રાચીન ગુજરાતનું એક ઐતિહાસિક શહેર હોઇ લાટ દેશના મુખ્ય નગરામાં તેની ગણના થતી હતી. દક્ષિણ ગુજરાતમાંથી ઉત્તર તરફ જવાના ધારી માર્ગ ત્યાંથી પસાર થતા હતો હોઇ, વેપાર વણજ માટેની તેની ખ્યાતિ અને આખાદી સારી હતી. ગુજરાતના બણીતા શરૂવીર મંત્રીયર તેજપાલે આ નગરના પ્રખ્યાત કાલ્યો ભધાવેલા જે હજુ પણ તેમની કીર્તિકથા ગાતા બીસમાર હાલતમાં ઊભા છે. કાલ્લાની કાતરણી અને સ્થાપત્ય બેનમન છે. તેની હીરાભાગાળના તાતીંગ કલામય દરવાજો, અને તેની આલુખાલુની કાતરણી અને સ્થાપત્ય બેનમન છે. તેની હીરાભાગાળના તાતીંગ કલામય દરવાજો, અને તેની આલુખાલુની કાતરણી અને સ્થાપત્ય બેનમન છે. તેની હીરાભાગાળના તાતીંગ કલામય દરવાજો, અને તેની આલુખાલુની કાલરણી કરી અમરત્વ પામેલા ધણાખરા ઉપલા ચરમાંથી આવેલા છે. કવિએ અને લોકકથાકારે પણ આવાને જ પાતાના કાબોમાં સ્થાન આપે છે. પરંત્ર કડીયા જેવા શ્રમજીવી વર્ગમાંથી આવેલાની પ્રણ્યુયકથાને અમર કરનાર ગુજરાતનું હેબોઈ એક અને અનેાપ્યું છે. જે આમવર્ગના એક પ્રણ્યોનું રસારક ચિરંજન કરવાનું માત્ર ખાડી જય છે.

શ્રીલાઢિશુ પાર્શ્વનાથનું મંદિર, શ્રીવૈદ્યનાથનું મંદિર, તેનું સુંદર સરેાવર જેનું વિશાળ તલાવ વગેરે ડેબાઇની અતિ પ્રાચીનતાના ખ્યાલ આપે છે. અહીં ગુજરાતના લાહીલા લકત કવિ દ્વારામ જન્મ્યા હતા; જેમની પ્રેમલક્ષ્ણાયુક્ત ગરળીએ ગરવી ગુજરાતણા આજે ય ધેરધેર ગાય છે. આ પવિત્ર ભૂમિમાંથી 'સાઢ' જેટલા નરનારીઓએ ત્યાગ, વૈરાગ્ય અને સંયમના માર્ગ સ્વીકારેલા છે. આમ લાક્ષણિક રીતે જ ડેબાઇ ઉપાધ્યાયછ અંગેના સમારાહ માટે સર્વ રીતે યાગ્ય હતું.

પણ અમારા જેવાને તે દેબાંઇનું એક ખીજું પણ આકર્ષણ હતું. પશ્ચિમના દેશમાં એક એવી માન્યના પ્રવર્તે છે કે ફીનીક્ષ નામના પશ્સિની રાખમાંથી નવા ફીનીક્ષ પશ્ચીના જન્મ થાય છે. હંમોઇમાં ઉપાધ્યાય શ્રીયશાવિજયજનો રાખમાંથી અહીસા વર્ષે એક ખીજા 'ચશ્ચાવિજય'ના જન્મ થયેલા છે. સાહિત્યપ્રેમી અને કલાના અનન્ય ઉપાસક છે. ઉપાધ્યાયછ માટે તેમને 'લાએ! અવિહુડ રંગ' એમ કરીએ તા ખાંકું નથા. તેમની 'ચરાાભાઈન 'ને નરસિંહ કે સીરાંની કૃષ્ણબાર્કત' સાથે સરખાવી લકાય. આ સુકલકડી, એકવડા બાંધાના, નાજુક શરીરવાળા સાધુ ભારે મનાળળ ધરાવે છે. આ સમારાહને ભવ્ય વીતે ઉજવવાની તેમની નમનાએ સોને મુખ્ય કર્યા. તેમણે મન ઉપર લીધું ન હોન તા આ સમારાહ શક્ય ખન્યા ન દેશન. એમણે પેલાની જન્મભૂમિ દેબાઇનું ત્રાણ અદા કર્યું' એટલું જ નહિ પણ ઉપાધ્યાયછ પ્રત્યે આખા તેનસબાજનું જે મહાન ત્રાજ્ય છે તે ફેડવા પણ કંઇક અંશ પ્રયત્ન કર્યા. સારા યે જેન સમાજ આ માટે તેમના એપિશે એપિશ છે.

* * *

વર્તમાન શ્રીયગ્નાવિજપછ ઉજ્જવળ પરંપરાના વાસ્ત્ર છે. તેમના ગુરુવર્ષ આત્રાર્યશ્રી વિજ્યધર્મસૃરિછ આજે સુવિહન જૈન સાધુંઓમાં આગળ પરંતુ રયાન ધરાવ છે. તેમના વ્યાપ્યાનશ્રી અને પ્યાપ્ય સને ચારદાર છે. તેઓ જ્યાં જ્યાં વિચર છે ત્યાં ત્યાં પ્રણાસિકાળદ ધર્મકાર્યાથી 'આર્નદ મંગલ 'પ્રવત્તિ છે. જૈન સમાજ ઉપર તેમની દીક દીક પકડ છે. તેઓ શક્તિશાળી છે અને ધારે તા નવા જુનાના સુમેળ સાધી ધર્મ અને સમાજની ઉદ્યાનિની દિષ્ટિએ નવયુમને દારવધી આપી શકે તેમ છે. તેમના શરુવર્ષ આચાર્યશ્રી વિજયપ્રનાપગ્રિગ્છ એક નિરાડંબરી, નિર્દંબી, આત્રમક્ષ્મી આચાર્ય તરીક સુવિપ્યાત છે. તેમને પગલે પગલે પશ્રીમાં શ્રાન્તિ કેલાય છે અને ધર્યણ હૈાય તા સબા જત્ય છે. તેમના શરુવર્ય આચાર્યશ્રી વિજયમાન્તિ કેલાય છે અને ધર્યણ હૈાય તા સબા જત્ય છે. તેમના શરુવર્ય આચાર્યશ્રી વિજયમાન્ત્રિશ એક પ્રસિદ્ધ વક્તા અને પ્રતિભાશાળી સાધુ તરીક જાણીતા હતા. તેમના અગાઉના આચાર્યોને મેં નજરે જોયા નથી પરંતુ આખી પરંતરા અતિ ઉજ્જાવળ છે એમ ઇતિહાસ કહે છે. શ્રીયશ્રીવિજયછ પાત્રે અવધાનકાર છે અને 'શ્રીજયાનંદવિજયછ' શ્રનાવધાની શ્રિષ્યના શરૂ છે.

મું જાઇમાં રાષાપેલું બીજ વડાદરામાં ઉત્યું અને તેની ક્લમ ડમાઇમાં થઈ. વડાદરામાં ઉત્સવની યોળના વિચારવા વડાદરા, ડમાઇ અને બહારના ભાઈ એક એક્સ થયા લગ્ન પ્રસંગ અને કાય છે કે "મામા વિના કેમ ચાલગે રે " તેમ કાઈ પણ આધૃનિક સંસ્થા કે સમારાહમાં મંત્રીએક વિના ચાલતું નથી. "શીયગ્રેલિંગ્ય સારસ્વનસત્ર સમિતિ "ની રચના કરવામાં આવી. અને બોજનોની સાથે મને પણ મંત્રી તરીક જેનવવામાં આવ્યો. દું પોતે મંત્રીપદ માટે લાયક હતા કે કેમ ! તે બાબત મને ત્યાર—આજે પણ પૂરી શકા છે. છતાં તે પરે મને નિયુક્ત કર્યો એક્સે હું તે માટે લાયક દ્રાઇશ એમ ખારે માની લેલું પડશું. બારે માટે આશ્વાસનનું એક બીજું કારણ હતું, બીજન મંત્રીએમાં ગુજરાનના સુપ્રસિદ્ધ સાક્ષર પ્રાધ્યાપક શ્રીએનોપીસાલ સર્િસરા, લખ્ધપ્રનિષ્ટ વિદદ્વપં પંતિ શ્રીલાલચંદ્ર ભગવાનદાસ ગાંધી અને દર્માઇના એક સંદર કાર્યકર અને સમાજ સેવાની બારે ધગશ ધરાવના ભાઇશ્રી જશુભાઇ જેન હતા. આ સોની સાથે કામ કરવાના લલંવો પણ હું કેમ જેના કરી શકું! વળા ઉપાધ્યાયજની પ્રતિભાએ હું કાલેજમાં અભ્યાસ કરતા હતો ત્યારથી મારા મન ઉપર જખ્બર અસર કરેલી. મહાત્મા મધીજની ' આશ્રમ ભજનાવલિ 'માંથી વચિલી તેમના ભજનાની કડીએક પ્લારા મગજમાં સતત શંજના કરતી હતી.

" ચતન! અળ ધાહિ દર્શન દીજે, —હુમ દરનિ શિવસુખ પાસી જે, હમ દર્શને ભવ છીજે. ચેતના! " તેમના જીવન, સાહિત્ય અને શક્તિથી પ્રભાવિત થઈ મેં તેમના વિશે એક નાની પુસ્તિકા મારા લૉ કોલેજના અભ્યાસકાળ દરમ્યાન લખેલી, જે વ્યાલમંથાવળી અને વિદ્યાર્થા વાચનમાળાના સંપાદક મારા પરમિત્ર શતાવધાની શ્રીધીરજલાલ ટાકરશી શાહે પ્રસિદ્ધ કરેલી. શ્રીહેમચંદ્રાચાર્ય પછી એક પ્રતિભાશાળી પુરુષ તરીકે ઉપાધ્યાયજીનું સ્થાન આવે છે. છેલ્લા અહીસા વર્ષમાં તેમના જેવા કાઈ મહાપુરુષ અને પ્રખર પંડિત જેન સાધુસમાજમાં પાકચો નથી એવી મારી અંગત માન્યતા છે. આવા યુગપુરુષને અંજલિ આપવાના અનાયાસે પુનઃપ્રાપ્ત થયેલા યામ હું ક્રમ જતા કરી શકું !

મંત્રીઓ અને સભ્યા તરીક સૌ ગાઠવાઈ ગયા. પણ રજ્ઞા એક શ્રીયશાવિજયજી, સારાયે સત્રના ઉત્પાદક અને પ્રેરક! ગૃહસ્થાના ટાળામાં તેમને કર્યા મુક્રવા! એક માટી મું ઝવણના પ્રશ્ન હતા મને એક વિચાર સૂઝી આવ્યા. મેં સ્યવ્યું કે તેમને 'સરસંચાલક' નીમા, જવા રમૂજ અને હળવા મિજાજમાં ' ડીકટેટર'ના અર્થમાં મેં આ શખ્દ સ્યવેલા. તે નહિ સ્વીકારાય અગર હસી કાઢવામાં આવશે એવી મને પાકી ખાત્રી હતી. પરંતું તેમનું યાગ્ય સ્થાન શાધવામાં મૂઝાએલા સૌને આ શખ્દ કે આ ઉકેલ ગમી ગયા અને વધાવી લીધા. તેઓ 'સર સંચાલક' બન્યા ખરા, પરંતુ 'ડીકટેક્ટર'ના અર્થમાં નહિ પણ આખાયે સમારાહના સૂત્રધાર— સુકાનીના અર્થમાં.

જૈન અને જૈનેતર વિદ્વાનાની એક સમિતિ નીમવામાં આવી. જેમાં હંમાઇની દયારામ સાહિત્ય સભાના પ્રમુખ સાહિત્યભૂષણ શ્રીમમનલાલ ગિરુજાશંકર શ્રાસ્ત્રી, વહાદરાની રાજકાય સંસ્કૃત મહાવિદ્યાલયના નિષ્ટત્ત પ્રિન્સિપાલ પ્રખર વિદ્વાન શ્રીલક્ષ્મીનાથ ખદ્રીનાથ શ્રાસ્ત્રી. વહાદરા દાલેજના અર્થશાસ્ત્ર અને ઇ તિદ્વાસના ભૂતપૂર્વ પ્રાફેસર શ્રીકેશવલાલ હિમતરાય કામદાર વગેરે મુખ્ય કહી શ્રકાય. સમિતિએ એક પરિષત્ર તૈયાર કરી પૂ. ઉપાધ્યાયછના છવન, કવન, ન્યાય, સાહિત્ય, જૈનદર્શન અને તેની સંસ્કૃતિના ભિષ્ન ભિષ્ન વિષયો અંગે નિષ્યંધા તૈયાર કરી માકલી આપવા સેંકડા વિદ્વાના ઉપર માકલ્યા. તેના જવાળમાં ઘણા સારા નિષ્યંધા મેળવવા સમિતિ ભાગ્યશાળી થઈ હતી.

સારસ્વતસત્ર ધાર્યાં કરતાં પણ ધણી સફળતાથી જીજવાયું. સત્રના દિવસા સારી રીતે જ જ્ઞાન અને જ્ઞાનાનંદની અમાધ લહાણીના દિવસા ખની ગયા. ડબાઈ ગામના સંધના અને ત્યાંના પ્રત્યેક જૈનના ઉત્સાહ અવર્ણુનીય હતા. મ્હેમાનાનું સ્વાગત, ભાજન, ઉતારા, મંડપા, ધ્વન્ળપતાકા, રાશની, સત્ર અંગેની સધળી અવરથા વગેરે માટે સૌએ ખડે પગે કામ કર્યું. સત્રનાં સ્વાગત પ્રમુખ શ્રીષ્માલચંદ જેઠાલાલ શાહ ડબાઈના યુવાન અને ઉત્સાહી કાર્યં કર છે. ડબાઇમાં સંમાજ હિતકારી નહેર પ્રવૃત્તિઓમાં રસ ધરાવતા કાર્યં કરાનું એક સાર્ચં જેનું લુથ છે. શ્રીશાન્તિલાલ માતિલાલ શાહ, શ્રીસું દરલાલ ત્રિકમલાલ શાહ, શ્રુવાન ચિત્રકાર રમાણું કે ચુ. શાહ, શ્રીચ'દ્દલાલ હિંમતલાલ પટેલ, શ્રીડાલાલાઈ નાથાલાઈ શાહ, શ્રીત્રિકમલાલ સવાઇચ'દ વગેરે. શ્રીષ્માલચ'દલાઈ તે પૈકીના એક પ્રમુખ કાર્યં કરે છે. ઉત્સવની સફળતાના યશમાં તેમના પણ ડીકઠીક હિસ્સો છે. આ યુવાનપેઠી સાથે ડબાઇની વડીલપેઠીના હંમેશા સહકાર હાય છે. શેઠ નગીનદાસ દાલતલાઈ, શાહ ફેક્શરચંદ મગનલાલ, શાહ હિંમતલાલ બાયુલાઈ, શાહ જવણલાલ ગ્રલાબચંદ શાહ જવણલાલ કસ્તુરચંદ નગેરે માટાઓના ઉત્સાહ પણ યુવાના સાથે આ ઉત્સવમાં હરિફાઈ કરતા હતા.

^{: ..} ડેલાઈ તા શ્રીમાળી વગા એક નાનકડી જૈનપુરી જેવા લાગે છે. ત્યાં બહુધા જૈતા જ વસે છે. જૈન

મંદિરા, ઉપાશ્રંયા, ગ્રાનમંદિરા, અને અન્ય જૈન સંસ્થાએ આ હનામાં જ આવેલી છે. સ્પ્રના દિવસી દરમ્યાન આપ્યા શ્રીમાળીવાળાએ ઉત્સરના સ્વાંગ ધારણ કરી લીધા હતા. ધ્રુરત, પ્તાકા, ગ્રુસાપિતાના બેડીં, તેરિણો, કમાના વગેરે ફ્રુપ્યારાયેલા રાજમાર્ગ અને ઉત્સવધેલા આપ્રુર્પણ, યુવાના વગેરેની અવરજવર દેશદા, નાના બ્લુકાઓની ધ્રમ્માચકડી, ક્લિકિલાટ, વાજીએ, ચાલડીયાંના મધુર સંગદા વગેરેયાં તેને અમે ત્યાં કૃષ્ય, આપ્યું વાનાવસ્ત્ર ઉત્સવમય જ શામનું હતું. ખહારના મ્ફેમાનાન નવીન ચંદેરા અને પ્યામેક સાધ સાધ્યીઓની હાજરી પણ ઉત્સવ રંપના વધામણી દેવી હતી.

ઉત્સવ કત્યવસીયે ફેર દાય છે. સામાછક કત્યું કરતાં ધાર્મિક કત્યુંગાં, સદત્વ અતામું છે, ત્યાં સર્વ આંમાદ પ્રેમારનું સ્વરૂપ સાત્તિક દાય છે. અને સર્વ કાંઇ પ્રમુખક્તિ-પ્રાપ્ત સ્પર્વ બ બાવધા થતું દાય છે. જેનસમાજમાં આવા કત્યુંગાં માટે બાગે કાંઇ એકાદ સુખ્ય સાધુ કે આસાર્યના રાજદી તીંગે કજવાના દાય છે. એટલે સર્વપ્રસંગાને ધાર્મિકનાના 'ડ્ય'-રંગ લારેલા દાય છે જેન સાધુ સાચા અર્થમાં ત્યાગમનિ છે. ભગવાન પદાવીરે સાધુના આચાર વ્યવદારની જે પ્રયાદાઓ બાંધા છે તેને અનુસરીને સાલનામ સાધુ સરાકાળ વંઘ છે. તેને દાય યાજના કત્યુંગા વાત.વર્જને આધ્યાત્મિકનાથી સલર ભરીકે એ શક્ય છે. તેમ થાય તા જ કત્સવનું આયોજન સફળ ખતે છે. કત્સવના યોજકની દાંઇ પણ શક અને નિષ્કામ દાવી જોઈએ. દાલના ઘણા કત્યુંગા યોજકની યશ્ર-પ્રાપ્તિના પ્રચાદાય જ જરેવ તે દાય એવા ઘણી વખત લાગ થાય છે. કત્સવ, કત્યવ મેદી આદંબર બની જત્ય છે. વાદવાદમાં જ કળ પ્રાપ્તિના ઇનિયા થઇ જન્મ છે. કત્યુંગાનું મુલ્ય તેના ચિરંજીય તત્યા શ્રાને પરિભાગોની દિવસો અંકાનું જોઈએ. જીવનમાં કિલન તત્રાની સીનગારી આ કત્યુંગા માબુનારમાં પ્રમુશી જેનઈએ. આપણા કત્યુંગાની સફળના કે નિષ્કળના આ દિવસી અંકારી જોઈએ. કત્યુવ યોજકોની પાતાની દાંઇ શુદ અને નિષ્કામ છે કે કેમ તેનું પૃથ્યણ તેમએ કર્યું જોઇએ અને તેના રેજ પણ અશુદિતા અંશ દેવના તે કર કરવા જેઈએ.

પથાસ સાધુ સાધ્વીએની લાજરી, એ પાતે જ એક પ્રેરક પ્રસંગ હતા. બ્રિક્ત્યલ એક સરખા પાપાક વાળા, સ્તિમત ત્યાગના અવતાર સમા, લાધમાં દંઢ ધારણ કરેસા, કાઇ પણ જાતના પશ્ચિહ વિનાના સદ્દાર્ઝના આદર્શસમા, હંમેશા 'ધર્મસાસ'ના જ આશીવાંદ આપના, પંચમહાવતઘારી સાધુએક જૈનમંધનું ગોરત છે. લગવાન મહાવીરની પરંપરાને સાચવવાનું ખદ્યાન તેમને મળેલું છે. તેમને હેત્તાંજ મસ્તક તથી પડે છે. સાસ્ત્રતસ્ત્રની પર્યદાએમાં તેમની દાજરી એક અદ્દસ્ત્ર અને સ્ત્ર્ર દ્રમ્ય પડ્ડ કરીરેની હતી.

જૈનસમાજના ત્રોરવર્ષ સાધુસનાજે અને ખાસ કરીને સાચાસાધકાએ વર્ષમાન પરિસ્થિતિનું પૃથક્ષ્યુ અને જરૂર લાગે તેા શુહિકરુણ કરવાની જરૂર જેવું ખરૂં કે સાધુ સંસ્થાની ભવ્યના ને વધુ ભવ્ય યનાવવામાં કંઇક ખટકતું દેવય એવું નથી લાગનું શું કે

સત્રના પ્રમુખ નરીક દાર્શનિક પં. પંજબા શ્રીઇંધરચંડજીના વરણા થઇ હતા. કહેવું એઇએ કે તૈયએ ચત્રનું સુકાન સારી રીતે સંભાળ્યું હતું. તૈયના પ્રસલ્સવિકના અને ન્યાય-દર્શનશાસ્ત્ર ઉપરના અનન્ય પ્રસુત્વે સત્રને યાત્ર્ય પ્રમુખ મન્યાના ખાત્રી કરાવી આપી. સંસ્કૃત્રિકામાં તૈયન દિદામાં તૈયના અલ્પક્ષિત્યારાળદ વ્યાખ્યાન પ્રવાદે શોને મંત્ર મુખ્ય કર્યો હતા

સુષ્યું હૈદ્યારન જૈન સુમાળના જાણીના વિદાન અને સુંઅર્દના સ્થાલકાઝ કાર્ટના બજ શ્રીષ્ટ્રન

પ્રસંત્રમુખ સુરચંદ્ર ળદામી બી.એ.બી.એસ.સી. ળાર ઍટલાૅના હસ્તે થયું તે પણુ યાગ્ય હતું. સમાજસેવા અને વિદ્વત્તા તેમને તેમના પિતાશ્રી તરફથી વારસામાં મળેલ છે. આ વારસાનું જતન કરવા તેમણે મું'બઇથી વડાદરાના પ્રવાસ પ્રસન્નમુખે ખેડયા હતા. નવ્યન્યાયના મહાન ધુર'ધર પ'હિતના સત્ર સમાર'ભનું ઉદ્દ્વાટન એક ન્યાયાધીશના હસ્તે થાય એમાં પણુ ક્રાઈ સંક્રેત હશે !

અાજીયાજીના ગામામાંથી આવેલા સેંકડા નિમંત્રિત—અનિમંત્રિત સ્ત્રી પુરુષા ઉપરાંત જૈન સમાજની અનેક નામાંકિત વ્યક્તિઓની આ સમારાહમાં સારી હાજરી હતી. શિલ્પ—સાહિત્યનું પ્રદર્શન જેમના હાથે પુલ્લું મુકાયું તે ધાંગધા નિવાસી શેઠ પુરુષાત્તમદાસ સુરચંદ, જૈન સમાજના જાણીતા અત્રણી અને વિશિષ્ટ વ્યક્તિત્વવાળા શેઠ છવતલાલ પ્રતાપસી, સખી શીમંત શેઠ વાડીલાલ ચત્રસજ, સમાજ કલ્યાણની નિરંતર ધગશવાળા શ્રીપ્રાણ્છવનદાસ ગાંધી, જૈન સમાજની અનેક સંસ્થાઓના પ્રાણ્રૂપ જૈન વિતાંબરકૉન્ફરન્સ અને સ્વયંસેવક પસ્ત્રિદના માવડી શ્રીમાહનલાલ દીપચંદ ચાકસી, પીઢ સાહિત્યકાર પ્રા. હીરાલાલ ર. કાપડીયા, આપણા ગણ્યા ગાંદવા પંડિતા પૈકીના એક પ્રખર પંડિત શ્રીલાલચંદ્ર ભગવાનદાસ ગાંધી, પંડિત શ્રીમફતલાલ સંધવી વગેરેની હાજરીથી હત્સવમાં જેમ અને જેશ આવ્યું હતું. જૈન–જૈનેતર સમાજમાંથી બીજ પણ ઘણી નામાંકિત વ્યક્તિઓની હાજરી આગળ તરી આવતી હતી. જણીતા ગ્રજરાતી સાક્ષર પ્રાપ્યાપક ડૉ. હિાગીલાલ જે. સાંડેસરા, શિલ્પ અને મૂર્તિશ્રાસ્ત્રના પ્રખર અભ્યાસી અને સંશાધક ડૉ. ઉમાકાન્ત પ્રેમાનંદ શાહ, ઇતિહાસ અને અર્થશાસ્ત્રના નિષ્ણાત પ્રા. કેશવલાલ હિંમતલાલ કામદાર, મહારાજ સયાજરાવ યુનિવર્સિટીના પ્રતિનિધિ પ્રા. દીનુભાઈ, આરીએન્ટલ ઇન્સ્ટીટયુટવાળા શીજયંત ઠક્કર, રાજકીય સંસ્કૃત પાઠશાળાના પ્રિન્સિપાલ શીહરિપ્રસાદ મહેતા વગેરેની હાજરી ખાસ પ્રેરણાદાયી બની હતી. કબાઇની જૈનેતર પ્રજામાંથી વક્કીલો, ડૉક્કરો, નેપારીઓ વગેરેની હાજરી ખાસ પ્રેરણાદાયી હતી. હતી. હતી. હતી. હતી.

તા. ૭–૩–૫૩ ના રાજ વ્યપારના સત્રના પ્રારંભ થયા. સ્વાગત પ્રસુખે ભાષ્ણુમાં હનાઇના ટૂંકા ઇતિહાસ આપી સૌને સત્કાર્યાં. બહારગામથી આવેલી જાણીતી વ્યક્તિએ સંસ્થાએ, આચાર્યો, સુનિવરા વગેરના સંદેશા વંચાયા. સત્રસમિતિના મંત્રી તરીકે સત્રની ઉત્પત્તિના ટૂંકા ઇતિહાસ મેં પણ રજૂ કર્યો અનેક વિદ્વાન લેખકાના નિબંધા આવેલા, તેના સવિસ્તૃત પરિચય પંહિત લાલચંદ્રજીએ આપ્યા. શેડા નિબંધા વંચાયા. પ્રા. દિનુલાઈ, શ્રીજયંત ઠક્કર, પ્રા. હીરાલાલ ર. કાપડીયા અને શ્રીહંસરાજજી શાસ્ત્રીએ પ્રસંગાનુર્ય પ્રવચતા કર્યો અને ઉપાધ્યાયજીને માનભરી અંજલિ આપી.

આ સત્રની કાર્યવાહી વિવિધ અંગામાં વહેં ચાયેલી હતી. શિલ્પ સાહિત્યનું પ્રદર્શન, ઉપાધ્યાયછના છવન પ્રસંગાનું પ્રદર્શન, ઉપાધ્યાયછની મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા, સત્ર સમારાહ, સંસ્કૃત વિદ્વત્પરિષદ, ઉપરાંત ધાર્મિક પૂજાઓ, પ્રભાવનાઓ, વરઘાડા, જમણવારા વગેરે પરંતુ આ સૌમાં સંસ્કૃતિવિદ્વાનોની પરિષદે ખાસ આકર્ષા જમાવ્યું હતું. આ પરિષદ્ એટલે શ્રમણ સંસ્કૃતિ અને ધ્યાદમણ સંસ્કૃતિનો સભગ સમન્વય. જૈન સંસ્કૃતિ અને વૈદિક સંસ્કૃતિ વચ્ચે કાઈ અનેલ દિવાલ નથી. બન્ને એક બીજા તરફ પૂંઠ ફેરનીને બેડેલાં નથી. બન્ને એક બીજા તરફ પૂંઠ ફેરનીને બેડેલાં નથી. બન્ને એક બીજા તરફ પૂંઠ ફેરનીને બેડેલાં નથી. બન્ને બાપે માર્યાં વેર નથી, પરંતુ બન્ને વચ્ચે કેટલુંક સામ્ય છે. અસુક બાબતામાં તો અદ્દસુત સામ્ય છે અને બન્ને અરસ પરસ સખી ભાવે સાથે બેસી શકે છે, એનું ખાસું ઉદાહરણ આ પરિષદ્ હતી. સ્યાદ્વાદ દષ્ટિવાળાને કાઇની સાથે મમત, દેષ કે કદાગ્રહ હોઈ શકે નહિ. તે હંમેશા સામાનું દષ્ટિબિન્દુ સમજવા અને પોતાનું દષ્ટિબિન્દુ પ્રેમપૂર્વક સમજવા તૈયાર હોવો જોઈએ. આવે સ્વાદાદી હંમેશા

(33) એ પ્રમાણે તાર્ક કશિરામણિ ન્યાયાગાર્ય ન્યાયવિશારદ ઉપાધ્યાય શ્રીયશા-વિજયજ મહારાજનું આ જવનગરિત્ર—ઉપાધ્યાયજ મહારાજના સદ્દશેણાના અનુરાગથી અને તેમના અપાર ગ્રાનાદિ ગુણાનું અનુકરણ કરવાની ઈચ્છાથી અતિસંક્ષેપમાં કહ્યું છે. વર્તમાન સમયમાં ઉપાધ્યાયજનું અથથી ઇતિ સુધીનું સવિસ્તર યથાર્થ જવનગરિત્ર મળતું નથી, જેથી જેટલું મળી શકે છે તેટલામાંથી ઉદ્ધરીને સારભૂત આ જવનગરિત્ર ખહું ટુંકમાં કહ્યું છે. આ સંક્ષિપ્ત જવનગરિત્ર વાંચીને અથવા સાંભળીને અને તેવા ગુણાની સેવના કરીને, હે ભગ્ય જીવા! તમે પરમ ઉત્રતિ એટલે પરમ કહયાણને પામા!

(૩૪–૩૫) વિ. સં. ૧૯૯૩માં જે દિવસે શ્રીગૌતમસ્વામીને કેવળજ્ઞાન પ્રગટ થયું તે પવિત્ર દિવસે અતિઉત્તમ શ્રીજૈનશાસનની આરાધના કરવામાં રસિક એવા ઘણા શ્રાવક સમુદાય જેમાં વસે છે તે જૈનપુરી સરખા રાજનગર–અમદાવાદમાં પરમપૃત્રય ગુરુવર્ય આચાર્ય શ્રીવિજયનેમિસ્ટ્રીશ્વરના શિષ્ય આચાર્ય વિજયપદ્મસૂરિએ પ્રિયંકરવિજયજ નામના સાધુને ભણવા માટે આ ઉપાધ્યાયજ શ્રીયશાવિજયજ મહારાજના જીવનચરિત્રની રચના કરી.

મહાપાધ્યાય શ્રીયશાવિજયજી મહારાજે બનાવેલા ગ્રંથાની હંકીકત એક સ્વતંત્ર નિખંધમાં જ આવી શકે એમ હાવાથી અહીં ન આપતાં તેમની સાહિત્ય રચનાએ સંખંધી હંકીકત આ ગ્રંથમાં જ મારા બીજા લેખ (પૃષ્ઠ; ૧૮૯)માં આપવામાં આવી છે.

> आत्मायमर्हतो ध्यानात्, परमात्मत्वमण्जुते । रसविद्धं यथा ताम्रं, स्वर्णत्वमधिगच्छति ॥३०॥

જેમ રસથી વેધાયેલું તાંછુ સુવર્ણું બને છે તેમ અરિહ તના ધ્યાનથી આ આત્મા પરમાત્મપણાને પામે છે.

દાત્રિશિકા]

[શ્રીમદ્ યરોાવિજયછ

.કાળા આપ્યા છે. આવી સંસ્થાએ કુલેકાલે અને તેના લાભ લેનાગ આપણા સમાજમાંથી સારા પ્રમાણમાં નીકળે એ જરૂરી છે. આવી ઉપયોગી સંસ્થાની પ્રેરણા આપવા જદલ આચાર્યશ્રી વિજયજ ખૂસ્રીશ્વરજીને અભિનંદન લટે છે. તેએાશ્રીની જન્મભૂમિ ક્લોઈજ હાઈ પાતાની જન્મભૂમિ જનની પ્રત્યેનું ઋણુ અદા કરી, ત્યાંના શ્રીસંધને આવી અમૃશ્ય સંસ્થા આપી ઋણુ બનાવ્યા છે.

અમા એ ઉત્સેવા પ્રસંગ ક્લાઇના સંધમાં એક ખીજા પણ શુલ પ્રસંગ ખની ગયાં. સંધમાં લાંખા વખતથી એ તક પડી ગયાં હતાં. તે શ્રીજીવાલાઈ પ્રતાપશી, શ્રીવાડીલાલ ચત્રસુજ, વહાદરાવાળા શ્રીવાડીલાલ મગનલાલ વૈદ્ય, શ્રીપુરુષાત્તમ સરચંદ, શ્રીગુલાખચંદ ગફલલાઈ વગેરેના પરિશ્રમથી અને સૌ આચાર્યો અને સુનિવરાના આશીર્વાદથી સંધાઈ ગયાં અને સૌ બેગા એસી નવકારશી જમ્યા.

અમા ઉત્સવે મહાપાધ્યાયશ્રી યશાવિજયજી મહારાજના સર્વતામુખી પ્રકાષ્ટ્ર પાંડિત્યના પરિચય જૈન સમાજને કરાવ્યા આપણા સમાજને પૂરી ખત્રર નથી કે તેણે કેટકેટલી મહાન વિભૂતિઓ, જગતના મહાન્ પુરુષા અને જ્યાતિષ્રાની હરાળમાં ખેસી શકે એવા પરમ અહીંતા તેણે પેદા કર્યા છે. ભૂનકાળની આ ગૌરવભરી યાદ આ ઉત્સવે સૌને તાજી કરાવી.

અમ કેવળ વ્યક્તિપૂજના ઉત્સવ ન હતા. એ ગ્રાનના — નિર્ભેળ ગ્રાનના પરમ મહાત્સવ હતા. વિદ્વાનાના, ત્યાગીઓના અને ગ્રાનિપપાસુઓના સાત્વિક મેળા હતા. સર્વધર્મ પ્રત્યે સહિષ્ણના કેળવવાના તેણે સંદેશ આપ્યા. ગ્રાનચર્ચામાંથી પ્રગટતા પરમ આનંદના અમૃતરસના સ્વાદ કેવા હાઈ શકે ! તેના અહીં પ્યાલ આવતા હતા. આવા રસ ચાપ્યા પછી તે રસ ચાપ્યનારને બીજા રસમાં સ્વાદ આવે તેમ નથી. ઉપાધ્યાયજીએ પર્જ કહ્યું છે કે: —

'જે માલતી કુલે માહીયા, તે ખાવળ જઈ કેમ ખેસે રે.'

卐

આત્મા શુદ્ધક્રિયા ક્યારે કરી શકે ? 📜

પાઠ ગીત નૃત્યની કલા રે, જિમ હોય પ્રથમ અશુદ્ધ રે; મન૦ પણ અભ્યાસે તે ખરી રે, તિમ કિરિયા અવિરૃદ્ધ રે. ગુણ૦ ર મણિશાધક શત ખારના રે, જિમ પુડ સકલ પ્રમાણ મન૦ સર્વિકયા તિમ યાગને રે, પંચવસ્ત અહિનાણ રે. ગુણ૦ ૩

કંપા, શ્રીયરોાવિજયજ]

١٠

[સીમધર સ્તવન. ઢાળ ૨

મેધ—મુત્રોત્સવના ઉજવણી ખાદ પ્. ઉપાધ્યાયછ મહારાજના શ્રન્થ પ્રકાશન માટે એક સમિતિ નામવામાં આવેલી તેના નોંધ; કાર્યવાહી અને તે પ્રમુગ પૂછેલી પ્રક્રાવલી અહીં રજૂ કરી છે.

ા શ્રીથીસય નમ: ા

સબય : સવરિ સ્ટા. ટા. ૯–૦ २थ्या :

ક્રોદીયાળ, શ્રીમુક્તિકપ્તલ જૈન માહન નાનપીદર યુ. વડાદરા

નિવેદન ન'. ૧

આયી જણાવવાનું કે, ગત કાત્રણ વદ ૮ તારીખ ૮-૩-૧૯૫૭ના રાજ ૮ લાઇ મુકામે ઉજવાએલ શ્રીયક્ષાવિજય સારસ્વનસભ્યાં રુત્ યએસા, ન્યા. ન્યા. પૃ. ઉપાધ્વાયછ શ્રીયરાતિજયછ બદારાજ રમારક અંગના પ્રથમ દરાવ ઉપર બાલના શ્રદ્ધી જીવનલાલ પ્રનાપસીલાઇએ જણાવેલું કે, અતિસપ માટી અને બુદા બુદા રૂપેળાનાં નીમાએલા સબ્ધાની રમારક સમિનિયાંથી એક કાર્યવાદકસમિતિ ૭ કે ૯ સમ્યાની ખનાવવા કેમેઇએ; જેથી અપશું કાર્ય વ્યવસ્થિત અને ઝડપા ખતે. સદર મુચનને સવના મંત્રીએએએ આવકાર્યું હતું અને યાત્ર્ય કરવા જણાવ્યું હતું.

તેની કાર્યવાદક સમિતિ અંગે અને પૃ. હયાધ્યાયજીના શ્રંથ પ્રકાશન વર્ગરે બાળનાના નિર્ણય કરવા સ્મારક સમિતિના સમ્યાની એક સભા તા. ૨–૬–૫૩ ને મંત્રળવારે ઉપરના સ્થળ અને સન્યં રાખવામાં આવી છે, તેા આપ અવસ્ય પધાર્શો.

સદર સબામાં પૂ. સુનિવર શ્રીપુણ્યવિજયજી મહારાજ નઘા સાહિત્ય ગ્રેમાં પૂ. સુનિવર શ્રીયશાવિજયજી મહારાજ હાજર રહેનાર છે

તેમજ ૫. પૂ. આચાર્યશ્રી વિજયપ્રનાપયુરીધરજી મહારાજને હાજરી આપવા વિનેનિ કરેલ છે.

ના. ઢ-૫-૫૩ / વંદાસ્યા (થી અાપના, લાલચ'ક ભ. ગાંધી નાગકુમાર ના. મકાતી મંત્રીએા, થી ય. સા. સ. ડબાઇ

તારીખ ટ•-પ-પટ તા જ્રપશક્ત તિવેદત પ્રમાણે મળેલી સંસામાં તીચે પ્રમાણે કાર્યવાહી થઇ છે. નામ : --- આ શેરવાતું નામ " શ્રી યેશાભારતી પ્રકાશન સમિતિ " રહેશે. સંસાએ, સમિતિતા સંસ્થાતી તીચે પ્રમાણે ત્રણ વિસાયમાં, સર્શનુમને વહેંચણી કરી હતી

કાર્યદક્ષ મુનિ સમિનિ—1. મૃ મુનિવર થ્રી મુખ્યવિજય અદારાજ

- ર. પૂ. મુનિવર પં. શ્રી જઈ કરવિજયજ મદારાજ
- ર. પૂ. મુનિવર થી **વરોાવિઝ/વજી મ**દારાજ .
- ४. प् सनिवर थी अञ्जविजयक सदाराज

કાર્યવાલક સમિતિ: — ૧ રા. થ. શેઠ જીવતલાલ પ્રતાપમીસાઇ ૨ વડાલ નાગકુમાર ના. મકાની (મંત્રી) ઢ શા. લાલચંદ નંદલાલ (મંત્રી) ૪ શેઠ વાડીલાલ ચવલુજ ગાંધી જે. પા. પ પંડિત ઇધ્ધર્ધ્યંદ્રજી પંજાળી ૬ પંડિત લાલચંદ ભ ગાંધી છે. ડો. બાપીલાલ જે. સર્ડિયરા ૮ શ્રી જાગુબાઇ મે. જેન કંનાઇતાળા.

સહાયક સભ્યા:—પંડિત શ્રીસુખલાલ સંધવી, શેઠ પુરૂષોત્તમ સુરચંદ, શેઠ રમણલાલ દલસુખલાઇ જે. પી., બ્રાં. હીરાલાલ ર. કાપડીચ્યા, પંડિત શ્રીદલસુખ માલવણીચ્યા, બ્રાં. કેશવલાલ હિ. કામદાર, શ્રી. ચુનિલાલ વર્ધમાન શાહ, શ્રીરસિકલાલ છાટાલાલ પરિખ, શ્રીધીરજલાલ ટાકરસી શાહ, શ્રીકૃત્તેહચંદ ઝવેરચંદ, શ્રીજિતેન્દ્ર જેટલી, શ્રીપ્રસન્તમુખ સુરચંદ લદામી (સ્માલ કોઝ કોર્ટ જજ), શ્રીમાહનલાલ દી. ચાકસી, શ્રીરતિલાલ દીપચંદ દેસાઈ, શ્રીષ્યાલચંદ જેઠાલાલ ક્રમાઈ, શેઠ છગનલાલ લદ્ધમીચંદ વહુવાળા, શ્રીવાડીલાલ મગનલાલ વૈદ્ય

જરૂર પહે કાર્યવાહુક સમિતિને વધુ સભ્યાે ઉમેરવાની સત્તા આપવામાં આવે છે.

ઉદ્દેશ: — ડબાઇખાતે 'શ્રીયશાવિજય સારસ્વતસત્ર'ના પ્રથમ કરાવ મુજય, જે અગાઉ જાહેર થયેલ છે.

ઠરાવ : — ૧ શ્રીયશાવિજય સારસ્વતસત્રનું અધૂર્ રહેલું ક્રાર્ય હવે "શ્રીયશાભારતી પ્રકાશન સમિતિ "એ કરવું એમ ઠરાવવામાં આવે છે.

કરાવ: — ર શ્રીયશાભારતી પ્રકાશન સમિતિના સરસંચાલકા તરીક પૂ. સુનિવર શ્રીયશાવિજયજી મહારાજ તથા પૂ. સુનિવર શ્રીયુણયવિજયજી મહારાજને નિયુક્ત કરવામાં આવે છે.

કરાવ : — ૩ શ્રીયશાભારતી પ્રકાશનસમિતિના ળધારણુના કાચા ખરડા મંત્રીઓએ તૈયાર કરી કાર્ય'લાલક સમિતિમાં મંજૂરી માટે રજૂ કરવાનું કરાવવામાં આવે છે.

હપર મુજબની કાર્યવાહી સર્વાતુમતે થયા બાદ હાજર રહેલા ત્રણે પૂ. ગુરુવર્યોએ માંમલિક સંભળાવ્યું હતું. તત્પશ્ચાત્ સભાની કાર્યવાહી આનંદના વાતાવરણમાં પૂર્ણ થઈ હતી.

विशेष विज्ञिसि

સ્વિસ્તર રૂપમાં સધળી કાર્યવાહી આપની સમક્ષ રજૂ કર્યા ખાદ આપશ્રીને વિશેષ વિજ્ઞપ્તિ કરવાની કે સંસ્થાના કાર્ય અંગે આપણુને કાઇ પણુ જાતની વધુ સલાહ-સચના અને માર્યદર્શન કરાવવાનું ઇષ્ટ લાગે તા તે સમિતિને જરૂર આવકારદાયક થઇ પડશે. સમિતિ આપના કીંમતી સહકારની અપેક્ષા રાખે છે એ ઉમેરવાની લાગ્યે જ જરૂર છે.

પત્રવ્યવહારનું સાંપ્રત સ્થળ : શ્રીનાગકુમાર ના. મકાલી દે. હાથીપાળ, વડાદરા હી. સેવકા, નાગકુમાર ના. મકાતી લાલચંદ નં. શાહ મંત્રીએા, શ્રીયશાભારતી પ્રકાશન સમિતિ, વડાદરા.



11 25 11

શીયથે સર્વી પ્રકાશન સમિતિ C/o નાત્રકુમાર ના. મકાની ડાર્યાપાયા, ખાખાજ્યુરા, ચંડાસા.

સ્કાર્યો,

. : .

શાયરો બારની પ્રકાશન સ્થિતિ તચ્ચા અંધા આપતે નીરંગી પ્રશાવસિંધાકલવાની રૂત લઇએ છોએ. કાર્યના મુશ્યોગુષ્ય પ્રારંભ વચ્ચે આપના ઉત્તરના અપને ઘલા ઉપયોગી થઇ પડશે. આપ અનની ઉતાવેશ ત્રેના અવાય ધાકલી આબારી કરશે.

: પ્રશાવલી :

- મું મું કૃષાધ્યાય શ્રીષ્ટદ્ રહ્યોજિત્યુજી મહારાજના કૃષા કૃષા મહાનું પુનર્નું જ ક્ષારનું જેઈ છે કે
- ર. પુનર્યુક્ષ્ણ કરાવવા ધાવ્ય અચાને પત્રાકારે, ધુમ્તકાકારે કે કોરુય પ્રકારે જપાવવા અંતે તેની સાઇઝે ... કઈ રાખવી.!
- ર. શુરુતાની કૃતિ-સાંધા દેખ જનાં તેના લિપિ ટેરનાયટી રાખના કે કેમ ?
- જ. અનેક મુખ્યત્વી ફેટ્ટી પ્રતિએક જયાવથી ?
- મું કુપાંધ્યાયજની કર્ક કર્ક કૃતિના અવરાંદા કરાવરાનું જરૂરી ધાંતા છા ક
- કુ. વ્યાપને પાતાને ઉપાધ્યાયછની કાઇ પણ કૃતિના વ્યબ્ધાલ દેવ અને સંપાદન તરીક આપ કાર્ય કરી ક્રોકા તેમ દેવયું તો તે પણ મુણજૂરા દિન્તિ.
- . છે. જે જે જે જે જે જે માન્યુનિએોનું સંપાદન કરવા માટે આપની અન્યુર્ણ, જે જ્ઞાઇ ચાંઝ્લ વ્યક્તિએ! દેવ તેના કું નાંધા કરાવશા.
- ક્રિયોકન બાબન સિવાય એ કોઇ ચામ સલાદ-સ્થાના કરતા ઘઢ ને કરવા વિનિતિ.

અંધા કાંચે, આપના બનાળના પ્રતેક્ષેકા, નાગકુખાર ના. ખકાલી લાલચંદ્ર નં. શાહ્ય પંત્રીધ્યા

×

^{*} આ પત્રિસ રેઇએ રૂપણે ધાર્ક્સર્ટ્સ, લોડું રૂપોથી પ્રશાવસિતા જાયાંથી અત્યા દ્વા. અને સંપર્ધાની સર્પવાદી પ્રત્યે સ્ત્રિય અલ્લ કર્યો હતે. સ્પાહ

न्यायविशारद न्यायाचार्य महोपाघ्याय श्रीमद् यशोविजयजीकृत यन्थोनी यादी [वि. सं. २०१३]

संस्कृत-पाकृत थाषाना उपलब्ध ग्रन्थो

१ अध्यातममतपरीक्षा स्तोपक्षटीकासह २ अध्यातमसार ३ अध्यातमोपनिषद् ७ अनेकान्त [मत] व्यवस्था [अपरनाम-जैनतर्क] ५ अनेकान्तवादमाहातम्य विशिका ६ अस्पृश्चद्गतिवाद् [बादमाळातुं एक प्रकरण] ७ आध्यातिमकमतपरीक्षा [अपरनाम आध्यात्मकमतखण्डन] स्तोपक्षटीकासह ८ आत्मक्याति*

आराधकविराधक चतुर्भेगी सोक्दर्शिकावह
 शापिभीय महाकाव्य**

११ उपदेश रहस्य स्वोपइटीकासह

१२ पन्द्रस्तुतिचतुर्विशतिका स्वोपहरीकासह

१३ कूपद्यान्तविद्यदीकरण स्वोपक्षशिकासद

१४ गुरुतत्त्वविनिश्चय स्वोपद्गरीकासह

१५ जैनतर्कभाषा

१६ ज्ञानविन्दु

१७ ज्ञानसार

१८ ज्ञानार्णव× स्वोपहरीकासह

१९ तिङन्वयोक्ति*×

२० देवधर्मपरीक्षा

२१ द्वात्रिशन्द्वात्रिशिका स्वोपद्यीकासह

२२ धर्मपरीक्षा स्वोपहरीकासह

२३ नयप्रदीप

२४ नयरहस्य

२५ नयोपदेश स्त्रोपहरीकासह

२६ न्यायखण्डनखाद्य टीका [स्तृष्टत 'महावीरस्तव'मूळ उपर]

२७ न्यायालोक

२८ परमज्योतिः-पञ्जविद्यतिका

२९ परमात्मपञ्जिषशतिका

३० प्रतिमाशतक स्नोपइटीकासह

३१ प्रतिमास्थापनन्याय

३२ प्रमेयमाळाः×

३३ भाषारहस्य स्वोपइटीकासह

३४ मार्गपरिश्रद्धि

३५ यतिलक्षणसमुख्य

३६ वादमाला

३७ वादमाला वीजी*×

३८ वादमाला त्रीजीक्ष

३९ विजयप्रमस्रिस्वाध्याय

४० विजयप्रमसूरि उपर पत्र#

४१ विषयतावाद#

४२ वैराग्यकल्पलता

४३ वैराग्यरति#X [अपरनाम मुकाशकि]

४४ सामाचारी प्रकरण स्वोपहरीकासह

४५ स्तोत्राव्छी

९ आदिजिनस्तोत्र [शत्रुञ्जयमंडन]

२ गोडीपार्श्वनाय स्तोत्र [का. सं. १०८]

३ वाराणसी पार्श्वनाथ स्तोत्र

[का. सं. २१]

४ शंखेश्वरपार्श्वनाथ स्तोत्र

[का. सं. ११३]

५ शंखेखरपार्श्वनाय स्तोत्र

[का. सं. ९८]

६ शंखेश्वरपार्श्वनाथ स्तोत्र [का. सं. ३३]

७ शमीनपार्श्वनाय स्तोत्र [का. सं. ९

८ महावीरस्तव स्तोत्र

४६ स्याद्वाद पत्र



^{*} आर्ड चिष्क हवे पछी सुद्रित थनारा प्रन्योर्जु छे. × आर्ड चिष्क खण्डित कृतिओ माटेर्जु छे.

प्रतिचार्यकृत सं. या. ग्रन्थो उपरना उपलब्ध टीका ग्रन्थो

9:	यनाध्यग्यन्य	उपग्न	। डाहाआ
7	उरपादारि	रासाह	,अक् रण
	टीका		
	-		

२ कस्मपयदि (कमेंग्रस्ति) युदद् टीका

३ कम्मपर्याट लघुटीका [प्रारंथ पाप्र]

४ तन्यायम्बरीका

[उपसम्य प्रयमाध्याय मात्र]

५ योगविधिका-धका

६ बीनगगर्नोब-अष्टमप्रका-शनी यणदीकाश्रोक्ष× [ब अर्थं, 'स्याद्वाद्रहस्यं प्रां]

७ शास्त्रवार्गासमुद्राय शिका

८ पोडग्रक दीका

श्रम्याद्याद्मञ्जरी टीफा (?) दिगम्या य्रन्य उपर श्रीस्थ

१ अष्ट्रसद्धी दीका जैनेन्द्रम्य स्पा टीहा

१ काञ्यप्रकाश दीकाश्र

२ पात्रश्रख्योगदर्शन टीका

३ जिद्धान्त्रमञ्जरी टीका

-उभ्य संगोधिन ग्रन्यो

१ घर्षसंग्रह

२ उपदेशमाळा याळावयाव* [अञ्च-गुअर]

हाद्गारनयचक्राद्वार-आलेखनाटिक

व्यक्रन मे.−प्रा. अछभ्य ग्रन्थो अने टीकाओ

१ अध्यातमयित्द २ अध्याखीपहुँडा ३ अनेकान्त्रयाद्यवेश ४ अन्द्रारच्डामणी शका दिप फाम्यानुधायनना स्त्रा-कः 'अन्हाःचरायाम' श्रेष रपर श्रेषा

'३ थात्मस्यानि

६ आखोषाँसत्तावाद

७ छन्द्रन्युदायणी दीका

हिम छन्दोनुवायनदी म्बो-पद छन्द्रम्बुटार्मान टीछा चया टीहा

८ द्वानपार अयवर्णी

% तन्याळीक विवरण

^{१०} विस्तृत्यालंक (विवि) चित्रगण

?? द्रध्याखेक स्त्रीपह-**टीफाय**ह

१२ न्यायविन्द

१३ त्रमारहस्य

१४ मञ्ज्याद

१५ चादाणंच १६ बाइरहस्य

१७ विधियाद १८ बद्दान्तनिणय

१९ बेदान्तविवेकसर्वस्य

२० दाद्यक्रारण

२१ श्रीपृज्यकेष

२२ सप्तमंगीतरिङ्गणी

२३ सिद्धान्त्रकपरिष्कार

२४ थी ४२-१९ विशिष्टाप्रहर्गो (दारिमहीय) उथरता १९ दीकाप्रन्यो, ते उपरांत अन्तर्या "रहस्य" पद्यी अपेकृत अनेक्याची, अने हे छिपायती अन्य इतिओ अप्राप्य बनी गई है.

ગુર્જર, મિશ્રભાષાની ઉપલબ્ધ કૃતિએા

અગિષ્માર અંગ સન્ત્રતાય અગિઆરગણધર નમસ્કાર अद्वारपापस्थानक सक्ताय અધ્યાત્મસતપરીક્ષા-બાલાવખે ધ અમતવેલીની સજગાયા આનન્દધન અષ્ટ્રપદી આદદષ્ટિ સન્ઝાય એક્સા આદ બાલસંગ્રદ * क्षायरिथति स्तवन* ચડ્યા પડ્યાની સન્ઝાય ચાવાશાઓ ત્રણ વિષ સં.३३६] જશવિલાસ=આધ્યાત્મક પદ્દા पि. सं. २७२] જ'ખરવામિરાસ જિનપ્રતિમાસ્થાપન સંજ્ઝાયા જેસલમેરપત્રાે—હરરાજ શ્રાવકવાળા ગ્રાનસાર–ખાલાવબાધ તત્ત્વાર્થીધિગમસત્ર-ખાલાવખાધ* तेरभारीया निष्धं દશમત સ્તવન દિકપટ ચારાસી બાલ દ્રવ્યેગ્રહ્મપર્યાયરાસ-સ્વાપન ટબાર્થસહ

નવપદપુજા नविनिधान स्तवन [प. सं. ४५] नयरदस्यत्रक्षित सीभंधरस्याभि વિન'તિરૂપ સ્તવન ખાલાવણાધ सह पि. सं. १२५] નિશ્ચય-વ્યવદારગર્લિત સીમંધર जिनस्तवन [प. सं. ४१] નિશ્ચય-વ્યવદારગર્ભિત શાંતિ-िलनस्तवन [प. सं. ४८] નેમ-રાજાલ ગીત પંચપરમેષ્ટિંગીતા વિ. સં. ૧ ફર્ગો પંચગણધર લાસ પ્રતિક્રમણહેત્રગભે સન્નઝાય પાંચકગ્રુર સન્ઝાય પશ્ચિમદાવત ભાવના પિસ્તાલીશ આગમ સન્ઝાય વ્યક્ષગીતા જિંખસ્વામિની] મૌનએકાદશી રતવન યતિધર્મ ભત્રીસી વિચારભિન્દુ [ધર્મ પરીક્ષાનું વાર્તિક]*

विद्रामिकिनविश्वतिम पि. सं. १२३1 વીરસ્તુતિરૂપ હુંડીનું સ્તવન સ્વેત્પત્ત ળાલાવગાેધ સહ [प. સં. ૧५**•**] [ब्लिनअतिभास्थापनस्व३५] શ્રીપાલરાસ–ઉત્તરાધ ભાગ સમાધિ ગતક સમુદ્ર–વહાણ સંવાદ સંયમશ્રેણી સન્તઝાય रवे।पन ट्यार्थं सद# સમ્યકત્વના સડસંદ્રણાલની सक्अाय पि. सं. ६५] સમ્યકત્વ ચાપાઇ-२वे।पज्ञ टणासद≉ સાધવંદના સામ્યશતક સ્થાપનાચાર્ય સજઝાય સીમ ધરજિન સ્તવન સિ**હ**ાંત. वियारगर्भित [प.सं. ३५०] રવાપત્ત ટળાસદ* સુગુરુ સન્નઝાય

—अन्यकर्तृक ग्रन्थडपर अनुवादित गूर्जरमापानी अप्राप्य कृति—

૧. આનન્દધનબાવીશી — બાલાવબાધ

૧. ઉપરની ગૂર્જર કૃતિઓના માટા ભાગ ' ગૂર્જર સાહિત્ય સંગ્રહ ' લા. ૧-૨માં છપાઇ ગયા છે.

ર. સન્નઝાય એટલે સ્વાધ્યાય સમજતું.



मुन्धान्यं जीवनं यस्य छिन्नितं यत्र छेमकैः। समात्रोज्यं स्मृतिप्रन्यः सप्रेकस्याणकारकः॥

